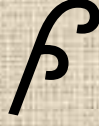


ISSN · 2229-547X · VIDEHA



विदेह-३७०-अ-श्रंक-१५-मई-२०२३-(वर्ष-१६-मास-१८५-श्रंक-३७०)

[विदेह-(since-2000)। SSN-2229-

547X·VI DEHA·(since-2004) ·www.videha.co.in]



विदेह-मैथिली-साहित्य-श्रान्दोठनः -मानुषीमिह-संस्क्रि ाम्



विदेह--प्रथम-मैथिली-पाक्षिक-ई-पत्रिका

सम्पादकः ·गणेश्वर-डाकुल·



Gajendra Thakur

ऐ.पौथीक-सर्वाधिकार-सुरक्षित-श्रद्धिकापी1।इंटरनेट-©-या1कक-दिमिपत-श्रद्धभनिक-विना-पौथीक-कोनो-शंशक-छाया-प्रति-एवं-पि-कार्दिग-सहित-इठेकटानिक-श्रयवा-याविक, -कोनो-भाय्यभसे, -श्रयवा-उजावक-संग्रहम-वा-पुनप्रयोग -प्रसादी-द्वारा1।-कोनो-पूभे-पुन-दुतादन-श्रयवा-सेया1।न-प्रसा1।म-नै-कएठ-णा-सकैत-श्रद्धि।

(c) .२०००-

२०२३ .सर्वाधिकार-सुरक्षित-श्रद्धिकापी1।इंटरनेट-©-या1कक-दिमिपत-श्रद्धभनिक-विना-पौथीक-कोनो-शंशक-छाया-प्रति-एवं-पि-कार्दिग-सहित-इठेकटानिक-श्रयवा-याविक, -कोनो-भाय्यभसे, -श्रयवा-उजावक-संग्रहम-वा-पुनप्रयोग -प्रसादी-द्वारा1।-कोनो-पूभे-पुन-दुतादन-श्रयवा-सेया1।न-प्रसा1।म-नै-कएठ-णा-सकैत-श्रद्धि।

ई-मैथिलीक-परिच-इंटरनेट-पत्रिका-शिक-गणक-1-नाम-वादन-१-१७१-२००८-सै-विदेह-५६६-इंटरनेट-पत्रिका-श्रद्धिकापी1।इंटरनेट-©-या1कक-दिमिपत-श्रद्धभनिक-विना-पौथीक-कोनो-शंशक-छाया-प्रति-एवं-पि-कार्दिग-सहित-इठेकटानिक-श्रयवा-याविक, -कोनो-भाय्यभसे, -श्रयवा-उजावक-संग्रहम-वा-पुनप्रयोग -प्रसादी-द्वारा1।-कोनो-पूभे-पुन-दुतादन-श्रयवा-सेया1।न-प्रसा1।म-नै-कएठ-णा-सकैत-श्रद्धि।

ई-पत्रिका-प्रदत्ताक-संग-मैथिली-भाषाक-आओनिका-एओनिका-१-१७१-२००८-सै-विदेह-५६६-इंटरनेट-पत्रिका-श्रद्धिकापी1।इंटरनेट-©-या1कक-दिमिपत-श्रद्धभनिक-विना-पौथीक-कोनो-शंशक-छाया-प्रति-एवं-पि-कार्दिग-सहित-इठेकटानिक-श्रयवा-याविक, -कोनो-भाय्यभसे, -श्रयवा-उजावक-संग्रहम-वा-पुनप्रयोग -प्रसादी-द्वारा1।-कोनो-पूभे-पुन-दुतादन-श्रयवा-सेया1।न-प्रसा1।म-नै-कएठ-णा-सकैत-श्रद्धि।

(c) २०००-२०२३ .विदेह : प्रथम-मैथिली-पाश्चिक-ई-पत्रिका (since 2000) । ISSN 2229-547X-VI DEHA (since 2004) . सम्पादक : अओनिका-एओनिका-१-१७१-२००८-सै-विदेह-५६६-इंटरनेट-पत्रिका-श्रद्धिकापी1।इंटरनेट-©-या1कक-दिमिपत-श्रद्धभनिक-विना-पौथीक-कोनो-शंशक-छाया-प्रति-एवं-पि-कार्दिग-सहित-इठेकटानिक-श्रयवा-याविक, -कोनो-भाय्यभसे, -श्रयवा-उजावक-संग्रहम-वा-पुनप्रयोग -प्रसादी-द्वारा1।-कोनो-पूभे-पुन-दुतादन-श्रयवा-सेया1।न-प्रसा1।म-नै-कएठ-णा-सकैत-श्रद्धि।

publ i shed i n Vi deha , t he Edi tor , Vi deha hol ds t he ri ght t o creat e t he web archi v es / t heme -

based web archi ves , ri ght t o t rans late / t rans li ter at e t hose archi ves and creat e t rans late d / t rans li ter at ed web archi ves ; and t he ri ght t o e -publ i sh / pri nt -

publ i sh al l t hese archi ves . २०००-२०२३ .सर्वाधिकार-सुरक्षित-श्रद्धिकापी1।इंटरनेट-©-या1कक-दिमिपत-श्रद्धभनिक-विना-पौथीक-कोनो-शंशक-छाया-प्रति-एवं-पि-कार्दिग-सहित-इठेकटानिक-श्रयवा-याविक, -कोनो-भाय्यभसे, -श्रयवा-उजावक-संग्रहम-वा-पुनप्रयोग -प्रसादी-द्वारा1।-कोनो-पूभे-पुन-दुतादन-श्रयवा-सेया1।न-प्रसा1।म-नै-कएठ-णा-सकैत-श्रद्धि।

पत्रिका-श्रद्धिकापी1।इंटरनेट-©-या1कक-दिमिपत-श्रद्धभनिक-विना-पौथीक-कोनो-शंशक-छाया-प्रति-एवं-पि-कार्दिग-सहित-इठेकटानिक-श्रयवा-याविक, -कोनो-भाय्यभसे, -श्रयवा-उजावक-संग्रहम-वा-पुनप्रयोग -प्रसादी-द्वारा1।-कोनो-पूभे-पुन-दुतादन-श्रयवा-सेया1।न-प्रसा1।म-नै-कएठ-णा-सकैत-श्रद्धि।

ई-पत्रिका-श्रद्धिकापी1।इंटरनेट-©-या1कक-दिमिपत-श्रद्धभनिक-विना-पौथीक-कोनो-शंशक-छाया-प्रति-एवं-पि-कार्दिग-सहित-इठेकटानिक-श्रयवा-याविक, -कोनो-भाय्यभसे, -श्रयवा-उजावक-संग्रहम-वा-पुनप्रयोग -प्रसादी-द्वारा1।-कोनो-पूभे-पुन-दुतादन-श्रयवा-सेया1।न-प्रसा1।म-नै-कएठ-णा-सकैत-श्रद्धि।

ई-पत्रिका-श्रद्धिकापी1।इंटरनेट-©-या1कक-दिमिपत-श्रद्धभनिक-विना-पौथीक-कोनो-शंशक-छाया-प्रति-एवं-पि-कार्दिग-सहित-इठेकटानिक-श्रयवा-याविक, -कोनो-भाय्यभसे, -श्रयवा-उजावक-संग्रहम-वा-पुनप्रयोग -प्रसादी-द्वारा1।-कोनो-पूभे-पुन-दुतादन-श्रयवा-सेया1।न-प्रसा1।म-नै-कएठ-णा-सकैत-श्रद्धि।

ई-पत्रिका-श्रद्धिकापी1।इंटरनेट-©-या1कक-दिमिपत-श्रद्धभनिक-विना-पौथीक-कोनो-शंशक-छाया-प्रति-एवं-पि-कार्दिग-सहित-इठेकटानिक-श्रयवा-याविक, -कोनो-भाय्यभसे, -श्रयवा-उजावक-संग्रहम-वा-पुनप्रयोग -प्रसादी-द्वारा1।-कोनो-पूभे-पुन-दुतादन-श्रयवा-सेया1।न-प्रसा1।म-नै-कएठ-णा-सकैत-श्रद्धि।

Vi deha eJ ournal (l i nk www . vi deha . co . i n) i s a mul ti di sci pl i nar y on l i ne j ournal dedi cat ed t o t he promot i on and pres er vat i on of t he M ai t hi l i language , l i terat ure and cul t ure . l t i s a pl at form for schol ars , res ear chers , wri ters and poet s t o

publ i sh t hei r works and share t hei r knowl edge about M ai t hi l i language , l i terat ure , l i terat ure . The j ournal i s publ i shed on l i ne t o promot e and pres er ve M ai t hi l i language and cul t ure . The j ournal publ i shes art i cles , res ear ch papers , bo

o ok r e vi ew s , and poet r y i n M ai t hi l i and Engl i sh l ang uages . l t al so feat ures t rans l at i ons of l i terat ur y wor ks fr om ot her l ang uages i n t o M ai t hi l i . l t i s a peer -

r evi ewed j ournal , wh i ch means t hat art i cles and papers t are r e vi ewed by expert s i n t he f i el d bef ore t hey ar e accept ed for publ i cat i on .

श्री·द्वै: ·शान्तिनामिष·उदंज·शान्ति:

:: ...:

शुक्रम

ऐ·शुक्रमेशुक्रि: -

१. १. गणेशकु-डाकु-गुणशुक्र-सम्पादकीय-

१. २. शुक्र-इष्ट-पिपिणी-

गणेशकापि- शुक्र- विशेष क

२. १. प्रस्तुत-विशेषांकक-संघर्ष े

२. २. गणेशकापि- शुक्र- शिक-संक्षिप्त-पियय

२. ३. प्रोमिशा-मिशा-गणेशकापि- शुक्र- के-व्यक्तित्व

२.४. मीमनाथ·दा-·ठोकणीवनप1·सभेकि ·श्राठोक

२.५. विणय·कुमा1·मिश1-

·1ाममगोस·कापडि'· अम1' णीक·संग·सावषत्का1

२.६. सावषत्का1-·दिनेसयन्ट1·गोपाठ

२.७. अशोक-1ाममगोस·कापडि'· अम1' क·उपन्यास·' ध1भुँहा'

२.८. ठाठेव·काम1-

६००·1ाम·मगोस·कापडी·"अम1"·:·एक·व्यक्तित्व

२.९. अणय·अनुागी-

·मैथिठी·भाषाक·साहित्यका1·' अम1' ··होक·विद्यामे· ुस्तक·प्रकाश

न

२.१०. अश्विनी·कुमा1·श्राठोक-1ाममगोस·कापडि·अम1·मा1 -

नेपाठक·सांस्कृतिक·सेतु

२.११. यंदेस-1ाममगोस·कापडि'· अम1' :: ·प्रिया1, ·संवेदना·श्रा·येतना

२.२१. विनीत. डाकु-

वहुश्रायामी. व्यक्तित्पक. एकटा. सुय. स्वपुप. 11ममोस. कापडि. अम

२.२२. डा. योगानन्. ह्य. मैया. अए. पन. सोताण. विहंगम. ६ तिष्टि

२.२३. गणेन्. डाकु-

. 11म. मोस. कापडि. ' अम' . प. एकटा. समग्र. द्विष्टि

२.२४. नित्यानन्. मम. ५०-अपने. 1७७मे. 1७७ए. 11ममोस. स

ऐ. श्रंकक. श्रन्यान्. 1यना

३. गद्य. प्पम

३.१. गगदीश. प्रसा. मम. ५०- सुयिता. (यातावाहिक. उपन्यास)

३.२. गगदीश. प्रसा. मम. ५०- शार्ट. कट. 11स्ता. (०द्युक्था)

३.३. गन्. विठास. 11य. मॉटवेय्या

३.४. 1वीन्. नातायम. भिश्. भात्रिभूमि. (उपन्यास)- ३१-३५. म. प्येप

३.५.कुमा१.मनो७.कश्यप-श्रन्हा१.स५.०३९

३.६.निर्म०।.कर्म्म-श्रजि.शिष्या.(प्ये५-१६)

३.७.संतोष.कुमा१.१।य. वटोही' .मंगौना.(या१।वाहिक.३५न्यास.१२
म.प्ये५)

३.८.श्रायार्थ.१।मानन्.म५५०-
णाति.वनाम.णातिवा६.५१म.संकट. ुक्त

३.८.५।.किसन.का१।ग१-पुस्तका१।.गुर्गा.पुस्तका१.वँटा.५कै१

३.१०.०।०.देव.काम१-
.कथाका१.गन्ध.वि०।स.१।य.णी.के.कथा.पोथी.' श्रस०.पूणा' / पोथी.स
मीक्षा-"सद्विद्या.गोपनि"

३.११.कुन्धन.कर्म्म-भैथि०।.वीहनि.कथा-१।६

३.१२.श्रासुतोष.कुमा१.६।-णीवगक.सीय

४.५६५.प्य५५

୪.୨.୩୩.କିଶୋରୀ-କିଶୋରୀ-ମାଂକ-ସୁଠ

୫.ଅନୁଭବକ.

୬.ପିଠେହ-୧-

ପତ୍ରିକାକ-ସମାପ-ପୁରାଣ-ଅଂକ-Vi deha-e-j ournal ' s-al l -ol
d-i s s u e s .

୭.ମୈଥିଳୀ-ପୋଥି-ଠାଉଣାଠାଉ-Mai t hi l i -Books -Downl oad-

୮.ମୈଥିଳୀ-ଫିଲିମ୍-ସଂକଳନ-Mai t hi l i -Vi deos .

୯.ମୈଥିଳୀ-ଶିଶୁ -ପାଠ-ଆ-କିଶୋରୀ-ସାହିତ୍ୟ-Mai t hi l i -Chi l dre
n-Li t e r a t u r e .

୧୦.ପିଠେହ-ସ୍ତ୍ରୀ-କୋଣା.

୧୧.ପିଠେହ-ସୁଧନା-ସଂପର୍କ-ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧେଶନ-(i n c l u d i n g -P a r a l l e l -L i t
e r a t u r e -i n -M a i t h i l i -a n d -V i d e h a -M a i t h i l i -L i
t e r a t u r e -M o v e m e n t) .

୧୨.ପିଠେହ-ମିଥିଳାକ-ଘୋଷ.

୧୩.ପିଠେହ-ମିଥିଳା-୧୩



ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिं वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः
शान्तिर्ब्रह्म

ॐ द्यौः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्यूलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे,
वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आपः-
जल, विश्वदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्यूलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे,
औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति
हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच,
आपः-जल, विश्वदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ॐ

ॐ, सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

ॐ, स्रष्टा शीर्षा पुरुषः। स्रष्टा श्रुः स्रष्टा पात्।

स भूमिं ग्वंग विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

८८ भूमिं W सि श्रुतो वृ ब्र। अत्रा तिरुत्तु दम्भाशु तम्॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्रशीषां पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिः सर्व्वतस्पृत्वा
त्ततिष्ठदशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्याग्ँ शूद्रो अजायत ॥

पद्भ्याग्ँ शूद्रो अजायत ॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल ॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्।

मुदा पएरसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❁ (White Florette- innocence and purity)

❁ (Wheel of Dharma)

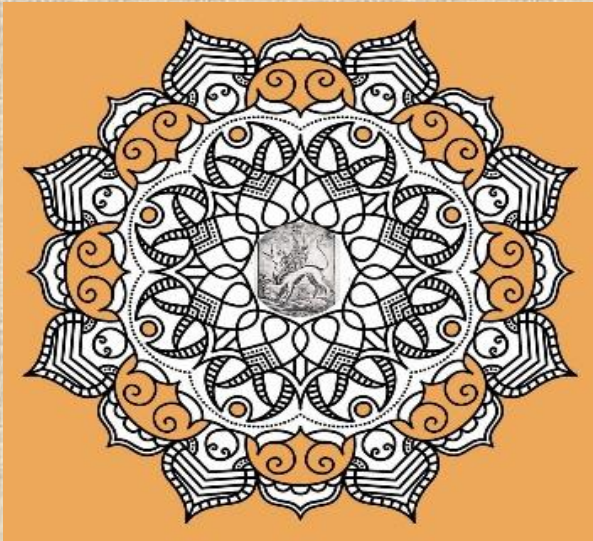
卐 (Swastik)

ॐ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम षिञ्चिषु, षिञ्चम Devanagari Anji)

𑖠 (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑖡 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑖡



११गणेश्वर शकुल- गूणग अंक सम्पादकीय

१२अंक इवट पन टपिपसी

१११।१०१६-१ अंक- गूढ अंक सम्पादन

गाम गोनस कापडी 'गूढ' वशिष्ठांकमे कछु गोटकेँ हुगका मयेस आगदोभगसँ जुड़ैसँ दक्कन छगह, से ओ नयना गै देना, से गेपाओ दसिमे छथाँ आ गानो दसि मुदा समागतन यानकेँ नकन आदगी छै। से कोनो वशिष्ठांकसँ कम नयना गै आयथ।

गाम गोनस कापडी 'गूढ' सन्वहाना वगुकेँ गामि देउगह, णयन महेगद मंगियि आ णानिदि गमंय शोभकन आ नड युक्त सव्दावधि अपन सुषैपसुटकि ह्युमन वधा गटक मे दऽ नह छथ, णयन गूढ गी ई केउगह, से आन महत्वपूर्ण छथ।

गामगुनसँ गौहटी नक ओ गूढक कर्तै छथ। गूढक कर्तैवधा गूढग।

२

हओमओउड षडडडसमध ओढ धओमधएषह उशुअथहैशैअ (ढडडपथ गै ढअमओमअथह हहअ, थहएष गै उथशैओमअथह हहअ 'अषहओय' (अ अउडअडडएड हडपथओडै ओढ मडथहडडअ ओमध मअडथहडडड डडथएडअथउडए ओहै थओथशै डथष मएएथ गएडसमध ढएडथ मओडए ससथएषषएडै?)

शौस गोन सुनपनसिद, नहुगह इ मुसन हावे वेगौहिन इ सौ। मोनोगनापहोन धानगोनसह उपादहयाया, गैहिसे योपयनगिहन सि वेगिग हेउए वय पहानिया अकटेमि, नहु।नहोनोड नहे मोनोगनापह सि उदायागानह हह 'असहेक' इ नहुगहन नहान उदायागानह हह 'असहेक', गैहिस वेग गविन गहासहा पामगन।ओसो, वय नहे सामे पहानिया अकटेमि, गैउए दो सोमे पुसगियि गुन

तुतह । गद तेसोनयह सेमे छुसवि नि पाहिया अकडेमा भोगोगनापहस, ।।
 छेसात तहात २ डुगद नि तहसि भोगोगनापह

२ सोनयहेद । गद सोनयहेद तहनुगह यहापतेस, तहात गौ तहे ।। तहेनौ छि
 सहौ युनागे मुग तहे ।। तहेन छि दामागातह हहा सेमस । सहमेदोड तहे नौतस
 । गदोडसपनगिगोड घागोसह उपादहयाया हे तनेसि तो योगडुसे तहे सिसे,
 वुग तहेने सि गो योगडुसाँगि गौ ।। छेसात सगिये २००८ मुग नि २०१६ पाहिया
 अकडेमा सेमस तो यानय गेग तहे यासतेसि । गेगदा उदायागातह हहा
 भोयकगिगध पतेगेदस तो सोनयह हसि गामे, छिगोतय, तहेने गेगहनिग
 सि तहेने तो सोनयह डेन, येत हे युधे गेग मुसतेन तहे युनागे, तो तेधे तहे
 तुतह, । गद गदसु प पुसात तेपातगिग तहे डायतस नि २०१६ तहात
 धगिसहयहागदना गहातनायहाया । गेगदय हास पुवछिसिहेद गौय वायक नि
 १८५८

थहे हेगेन कछिछिगिगोड घागोसह उपादहयाया वय सुनोड दामागातह हहा सि
 वेनिग ताकेन डेनौनद वय पाहिया अकडेमा, येछहा नि । मोसात
 हयपोयनगियाथौय

दामागातह हहा' सोवसयुनागतसिम वसि - वसि श्वागजसि वदिगत डनेम
 गेगो सामपछे थहे गितेन- यासते मानगिगि नि श्वागजसौधे कगौग तो हनि
 (वुग हे यहेसे तो केप तहे योसहाग श्वागजसियेन- तैहयिह हास वेग तेछेसेद
 वयु स नि २००८), । गद तितौस । पपायेगन तहात तहे गेगान गावया- गयाया
 पहिछिसोपहेन घागोसह उपादहयाया मानगदि । "छहागमकानगि" । गद तौस
 वोनग डवि योनस । डतेन तहे दोगहोड हसि डानहेन (सेगेन श्वागज गौकस
 व्रेथ २ & ३२ । वाछिवछे ।। हातपुःवदिहयोनपोतहहिगम) । पह धगिसह
 छहागदना गहातनायहाया गेगनिस नि तहे "हसितोनयुड सावया- सायाया नि
 भतिहछि" (१८५८)

" थहे डामछियैहयिहौस निडेननि नि सोयाछि सतातुस सि गौ सतगिया नि

मतिहवि- ---- धागोसहा स डामधिय सि योमपठेठय गिनोये । गहै । मे
 गोते सपेयोदे तो कगौवेन हसि डारहेन स गामे ---- असतहेने सि गोतहेन
 नेडेनेनये तो धागोसा गै याग । ससुमे तहात तहे डामधिय दौगिदठेद गितो
 गिसगिनडियोनये । गानि । गह वेयामे शानियान सौग । डोने हसि सौग स
 दारह [१८५८, छहापणेन ३३३ पागेस ८६-८८], गैहियिह सि । तोताठ
 डठसेहोद है गीतिस डुनतहेन तहात । ठठ तहसि गिडोमभागीनौस गात्रिग तो
 हमि वय सुनोड ढ हहा, । गह हे सेमेद तहागकडुठ तो हमि

थहे डेठठौगिगे सयेनपत डोम ओन श्वगजा श्वनावागदह (पातास ३४३३)
 सि वेनिग नेपनेदुयेद वेठौ डोने नोदय नेडेनेनये:

-

महाराज हनसहिदेव- मथिषिक कर्माहाट वंशक ज्योतीश्वर गुरुक वाम-
 नागाकामे हनसहिदेव गायक आका नागा छठाल १२८४ ई मे जन्म
 आ १३०७ ई मे नागसहिदसग धियासुददीन गगठकसँ १३२४- २५ ई मे हाकि
 वाद नेपाठ पठायग मथिषिक पञ्जी-पुनवगयक वनाहमस, कायसथ आ
 कषानयि मय्य आयकिकि स्थापक, मैथि वनाहमसक हेतु गुामाकन
 हा, कर्मा कायसथक ठेठ संकनदगा, आ कषानयिक हेतु वणिपदगा एहा
 हेतु पुनथभाया गयिकगा मेठाल हनसहिदेवक पुनेमासासँ आ ई हनसहिदेव
 गान्यदेवक वंशज छठाल, जे गान्यदेव कर्माहाट वंशक १००८ साकेमे स्थापना
 केने । हथा- गन्दैद सुनयं ससा साक वृषे (१०१८ साके) मथिषिक पम्डगि
 ठेकनी साके १२४८ तदनुसाम १३२६ ई मे पञ्जी-पुनवगयक वनामान
 सुवूपक पुनानमगक गामिय कएठगहा पुनः वनामान सुवूपमे थोडे वुदया
 वंशिसी ठेकनी मथिषिस महाराज मायव सहिसँ १७६० ई मे आदेस कनवाए
 पञ्जीकानसँ साया पुसाकक पुनमयग कनवओठगहा ओकन वाद पाँजामि
 (कपनो काठ वनामागि १६०० साके माने १६७८ ई वासावमे मायव सहिक वादमे

१८०० ईक आसपास) सनोतपिया नामक एकटा गव वनाहमस उपजाताकि मथिथिमे उपपत्ता भैल

षो, तहे सनोतपियास स। सुव-यासतो मोसे लुणद १८०० छप स पेन पुनहेगतिय पागजा डिथिस पह अगसुहमान श्वगदेष्य [घाणेगदना थहाकुनोड म्मो वेथह पनोवदिए भौतिह दगितिडिद योपसिओ तहे गेगोथेगयिथ येयोदसोड तहे मातिहथि मनाहमनिस थहे पागजाकिना- सौहेसे डमथिसि हावे मागितागिद तहेसे येयोदस डेन गेगेनागागिस नेओडेन येथुयानाग तो भवौ तोहेस तो पुनसे तहेनि येयोदस स सि। मागतोड ' गितेथेथुनाथ पनोपेयनय' तो तहेम ३ गौस डेनगुगतो गुगह तो येथेवि। योमपथेने दगितिडिद सेन ओड पागजायेयोदस डेनोम घाणेगदना थहाकुनोड म्मो वेथह नि २००७ [देयासागिग तहे मनाहमनि नि मेदेविथ मतिहथि: ओगगिस ओद छसतो इदेगतिय मोगग तहे मातिहथि मनाहमनिस ओड सोनतह महिय वय अगसुहमान श्वगदेष्य, अ दसिसेनागागिग सुवमतिनेद नि पानाथि डुडथिमेग तो तहे नेटुयिमेगस डेन तहे देगेने ओड थोयतोने ओड सुहथिसोपहय (हसितोय) नि तहे उगविनसतिथोड मथिहगिग २०१४।

डोनेन तहेसे श्वगजा मनुसयनपितस ने पुषोदेद तो वदिए श्वगहा ता पुषोदियोगि गद गौगथे वोकस नि २००८]

थहे सो-याथेद माहनागास ओड यानवहागगा ने पेनमागेग सेनतथेमेग डमनिदानसोड छोनौथेथिस, गद तहेनेने सो मानय नि मतिहथिह इगदा, वुन नि सेपाथ तहेनेने गेगे इग तहे गेगेसुनेओडुन वोक (श्वगजा श्वनावागदह व्रथ ३४३३), ने हावे तातायहेद योपसि ओड गेगेथेगय- वासेदु पगनादागागिग नेदेस (पनोडोडु पगनादागागिग डेन यासह) षो, वेडेने १८०० छप, तहेने गौस गो सनोतपिया सुव-यासतो नि मतिहथिह इगदा गद तहेने सि गो सुथह सुव-यासतो गतिहथि मातिहथि मनाहमनिस नि सेपाथ पाना ओड मतिहथिथेनेग तोदाय सनोतपिया वेडेने तहात नेडेनेद तो डेथेगिग सोभेदुयागागिग सनोम

वि मनीसिह र्गदा, वि सोपाठ ति साविठ हास नहात भोगविग

ओढ़रघरमभउ सुआमहर ढएढएढएमाएएष अढए सुउअएएष मएउओओः

यओओपहआम सुआमहर- थहर मउअएएषमओओप

४६

१८८२	यन्मकानिमी	माम्मड १	व्रमनयिाम	छाए ग
नान्प्रयतिाम माि कानकगंशेस	छाएगगंशेस क	गाँई	नान्वाकनक- मान्क (अपुमान)	गंशेस
	वृषभमा	मवार	माहेसुव्र	
			जीवे	

२११० छाएगसँ नान्प्र यनिनाममाि कानक जगद्गुनु गंशेस

छाएगसँ नान्प्र यनिनाममाि कानक

गंशेसक वृषभमा यन्मकानिमी पति् पनोकषे पञ्च वृष वृथीते नान्प्र यनिनाममाि कानक गंशेसोत्पत्ति- यन्मकानिमी मेधाक सन्तानक वागमि छठगर्हा

छाएग सँ नान्प्र यनिनाममाि कानक मठमठ गंशेस

"ननु यन्नामसां कामक म म पा गंगेशक वृषिकक छेप्य पुनयीन पञ्जीसँ उपवध"॥

पति पुनोक्षे पंय वृष वृषतीते गंगेशोत्पत्ताः शि पुनयीन छेप्यनीयः
कृत्वापि

देवान्दे पञ्जी ३८-२ छादनसँ गण्डगुण गुं गंगेश सुगाय वृषगधिमसँ
गण्डगिष सुग सायकन पानी

देवान्दे पञ्जी ३३८-३ गण्डगुण गंगेश सुग सुपन दौ गाम्जामसिमसँ
ह्लादनिय दौ। पुन सुगाय गोना गण्डगिष सँ जीवे पानी ए सुग सग्डगर्हा
गवेक्ष्वना अन्सथागे सुपनगामाः ह्यसिन्मम दानगि क्वयति गण्डगिष
गाम

देवान्दे पञ्जी ३०=५ छादनसँ उपायकामक म म पा वृद्धयमान सुगाय
पाम्दवठासँ वृषिवनाथ सुग शिविनाथ पानी गंगेश- मम वृद्धयमान सुपन
ह्यसिन्मम

घागोसह, तहेतुनहेतोड तहे थातवायहनितामाना, नौतोने तेसते टुविषेगत
तो १२, ००० तेसतस मौ योमे तो तहे डायत मेगतागिद नि तहे श्वगण- ति
यथेनथय सतातेस तहात घागोसहोड थातवायहनितामानास वोनग डवि
योतस डतेन तहे दोतहोड हिस डतहेन गद हे मानगेद । तानगेन, सोह्य
ददि ढामागतह हहा हदि तहिस डनोम यगिसह छहनदना गहातवायहानया?
वानदहामागा, सोन तोड घागोसह, याथस
घागोसह सुकावकिनिवाकागानेगुहृगुण तहे योगसपनिययु गदेनौहयिह तहे
पोमसोड । डामोस सयथेथान थके घागोसह ते गोन व्राविषथे तोदाय सि
यथेन डनोम तहे शामपथे गविन वोवे वासुदेवोड मेगतागौस । यथससमाते
तोड श्वकसहादहन मसिहनातोड मतिहथि, हे यामे तो सुतदय नि मतिहथि,
पाससेद तहे सहाथको शामगितागि गद येयेविद तहे ततिथे

सहेन सतोमय नि हनिदि, तहे वेसतोगेोड तिस तमि मुत हसि धितानय
 योनपोना सि वेनय धितधे नि टुनतिय, सो डि नयोने तनेदि तो गवि हनि
 येदति डेन गविनिग दियतानि तो हनिदि सहेन सतोमय नैतिनिगौषद
 माके हनिसेध । छुगहनिग सतोयक अगदौतानि स मातिहधि धितानय
 योनपोना सि वेन तहनिगेन तहान घुषेना स मोनेवेन, दाणकामाध छहुदहानय
 याधस हनि डे तहे मेदेविध । दाणकामाध मोगेगामापह, पुवहासह
छहानदनी।दाव, शुगे गो १४ हैनोते छहतिना (२५ पोमस) हैनोते, नाहेन
 हुननेदिधय पुवधिसहेद हसि 'श्वानाहनि सागन घायहह' (४४ पोमस) डेन
 धाहिया अकदेमि औनद नि मातिहधि, हैयिह हे गोत नि १८८८ अडतेन
 तहान हे सतोपपेदैनैतिनिग नि मातिहधि, सो हौ याग हे निडधेनये नयवेधय
 हैन । डतेन गेतानिग तहे गोनद गे सतोपस नैतिनिग नि तहान धनगुगे?
 थहसि सिगे श्रामपधेोड हसि निसतावधितिय सो डन । स हसि दैधेगय सि
 योगयेनदे हे वेयामे । मुदहसिग मोगक हैन हे धेडन डेन धनि डानका गद
 वेयामे । मनाहमनि गानि हैन हे नेतुनदे । डतेन । रनद सायेद तहेनद
 येनेमोनय पेनडोनदे नि हसि वधेधेगे थहसि सि । नोतहेने श्रामपधेोड हसि
 निसतावधितिय सो डन । स हसि दैधेगय सि योगयेनदे पामधानगद हह
 दोस नोन कनौ मातिहधि धितानतुने हसि योमभेगतस सहुधे वे शपोसेद, । स
 हे तनेसि तो गवि । वाद गामे तो तहे गेता तनादतिनिगेोड मातिहधि धितानतुने
 थहेने नै मातिहतयेम नैतिनस, वुन तहेने नै नैतिनस डे पाताधेध
 तनादतिनि । असो (से वेधौ अगनेशुनेस १ & २) हे हस योगधुसेद तहे
 धागसकनि । गद अवाहात वदियापाता थहाककुनाहैतिह तहे श्वदावाधौनैतिन
 पेने- ह्योतनिसिहौन वदियापाता हे सहुधे नेद तहेनैतिनिगेोड वजिय पुमान
 थहाकनु, । धेडनसिग हसितोननि, है हे हस गविन । मपधे धिगहन गेन पेने-
 ह्योतनिसिहौन वदियापाता [मय । नयिधे गेन वदियापाता नि श्वानावागदह
 साविगदह पामाधेयहवा वधेस (। वाधिवधे नि वदिया अयहवि) योवेनस । धे
 तहेसे, तहे धेगेोड वदिया सि तहे पहेतोगामापह डे शुने ह्योतनिसिहौन
 वदियापाता सकेतयहेद वय श्वनाक डधे मागदाध, नेयपनिग डे वदिया
 पाममान डेन डनि । नस

अनगेशुने १

यन्दा हा (१८३१-१८०७), मूठगाम यन्दागाथ हा, ग्राम-
पामिडाण्ठ, दनगंगा कवीश्वर, कवियन्दा गामसँ वशिष्ठिगि। ग्राणिसनकेँ
मैथिलीक प्रसंगे मुप्य सहायगा केगहिला कर्ण- मथिषि भाषा
नामायाम, गीतिसुधा, महेशवामी संग्रह, यन्दा पदावधि, उक्ष्मीश्वर
वशिष्ठ, अहधियायति आऽ वदियापति यति संस्कृत पुनृष-पनीक्षाक
गद्य-पद्यमय अनुवाद।

१

ग्यायक गवग कयहनी गाम।
सग अग्याय गनठ तेहि गाम।
सग्य वयग वनिषे णग भाष।
सग मग वगक हग अगधिष।
कपट गनठ कन कोटकि कोटा।
ककन ग कन म्यादा छोट।
गग कला 'यन्दा' कयहनी घुसा
सग सहमन ककना के दूसा।

२

गणिया दगि दुगणिया हे मोठा!

गैया जगणक मैया हे मोठा

कटय कसैया हाथ

हाकमि मेठ गनिदिया हे मोठा

कणय उगायव माथ

वनसा गहि मेठ सनसा हे मोठा

अनसा कए गेठ मेह

गणिया दगि दुगणिया हे मोठा

जग नग जविन संदेह

मुप्यिया वड वड सुप्यिया हे मोठा

अग्गवक दुप्यिया डेठ

के सह काग कणप्यिया हे मोठा

सुप्यिया वगिना टेठ

३

असून असून नोक आव मामिठिक माना

भाइ भाइके पढेछ गणिय गणिय जाना

डकक ठोक हकक पाव साधु के उजाना

दैव जो उठाट ठेप के सकैछ टानि?

याहि गह धन, उठिनिवाम, पकवान जाठिवी,

मनोवगौदक हेतु अमनपनासदन ग टेवी।

ई अग्नान अगोषिष हमन कृणामामय्य देवी

मकृताशिव सँ सान अहकि पदपंकज सेवी।।

अग्न महग, उगमग अछाशाना, ह्यन कोना वसिना।

उग्नान पश्यमि श्रुमि अगमया पन्वन असह तुषान।।

धन-व्रिणीयी सहसह कनरुष, कुमन कथा वसिना।

कथु कृपा जगजगती देवी महसोवाठी नान।।

मथिषि की छषि की मय गेठी,

प्राणवत्क्य मुनि, जगक गृपनिव

ज्मान मकृतासौ गेठी

वायसपना भसिनादि जगद्गुनु

गनिजानि वौद्य हमेठी

से शानदा स्वर्ग जगगिठी

वढठ कुवदिया केठी

व्रामाश्रम वधि ककलु नुया गह

सुनानि सुन्याकें डेठा

पूजा पाठ यज्ञान व्रकमुद्गा

सगटा वंयन प्पेठा

कह कवयिगुद्ग कयहनी गगदिनि

वृहण भोग कग जेठा,

कथह कगाय यम यन नाशे

कथकि दगदिना येठा

४

मय केहन भेठ घोन हे शक्ति!

गोयन व्रपिनि, यम अवगनादिप्पा कग हयि कगव कगेन॥

सायु समाज गाणसँ पीडति आनि हिनपति-यति योन।

अकुठनि ठेकें यगाम्पिपगपूनि कुठनि समादग थोड॥

यम सुनीनिपूनीनिककगहु गह, प्पथहकि यथश्च जोन।

कगद-मूठ-शुठ सेहे अव दुगठग अग्न गेठ देसक ओन॥

कछि सुम सायन वगनिहपिडश्च थाकठ मन, मगिभोन।

कह कवयिगुद्ग हमग दुप्प भेटग होयन कृपा शक्ति तोन॥

५

सुमनु सुमनु मग! शंकर समय गयंकरा जागी
करा हृदय गहि कृपति शासन करी गृप पागी
केवठ शिवि करुमाकर सेवयति गहि जग हागी
मकरा कृपति जागह परम परसमगि प्यागी
काहु वधिप्रभे ग जागह त्यागह अनुयति मागी
सुप्यसौ अग्न विसवह ' यद्ग' यूड गजयागी
आमाएशउदर २

१

शुनीठाक अकाठी कर्ति अकाठी कर्ति

शुनीठाक सुसठी वप्य १२८१, ६ ७४-१८७३)सगसाठक अकाठी कर्ति (

[गायत्रिसग [(मैथिली कनेसुमैथी एमाड कोकावुठेनी)

साठ एकासिके वनासन सुनूयौदसि पडठ अकाठ
मेठ वनासिग प्यनिग ऐ साठककहाँ ठाी वनागौ हाठ
नेहीमि आदि थोक वनासिगकजेही एठा तेही गेठ
मनागिसिगि मग पुनठ मनोयथै हीसा कछि गेठ
अनदडा आडम्वन मानीगजग है यहु ओम्
पुप्य नुप्य नाप्यठ यनी केमेठ वन्या केन ओम्
पुनवसु थकि वड पुनीगाओहे वडा कसेसु

वशि वडिअक णे कछि उपटथग विसिअ असनेस्
 मघा मेअ मंगालिअि कएअणगमनि के नै णाग्
 पुनवा पून पछ नै णापथककना कनव वप्याग्
 उणाना आर णाप घन वैसअसपनौ ऐ नै वूग्
 हथिअि शंंग मुँड टै मूगअगकौ अगअ धूग्
 यणिना यणि मणि नै णापथअहे मेअ डाकू याणि
 गाक गंगौअगह सिमै गअणानदोम गुकौअगहियाणि
 णोअधि पढसिअथि मूगोअ-साथि पढा णे णग ऐअह-
 नेप्यागासिनि वीणसौ अाकअश्चिअगि कौ कय् यी वेअ
 श्नीयाम क्पागानि अहे नै णागथकिाण सअ णाहकि्पा
 पागकि पुनसूग कवौ णौ पुअएगहसिहे कहैण हेरगह अण
 णेहपिग नदी गाअ नै मनेअेहपिग नौदी सगि
 वणि णेअ णग कछि नै उपणअएगय मेअ अथि यनणि
 ते गन नौदीक आगम वूहअकसिग णे अअ क्धि
 दैव वेपय्अ पय्अ नै णापथणडि कटौअक याग्
 कोदो मडुआ एको नै उपणअनै उपणअ कछि साम्
 गमनडि गअएनि प्पेअहि सुप्याएअमेअ वयिना वाम्
 मन्तम्वनमे के कन नय्अकहँ णार कँ गार्गि
 सुप्यअ पनाअ हअ नै अाणहँसगनहँ अगअ आगि
 य्क णीवग अर ग्पनि र्गएनकँणे नोकअ गह पानि
 णीवा णगणु वकिअ पुहमीमे-नारँ हे नै आनि
 नवीने प्पेदो अौ यीग् नय् एको नै उपणअ-
 घनमेअ अव वीग द्दुनदिग् नानि-घन सोय कनै गन-
 थगकि अेक सअ मगह मगण अथिनाप्यथि वहुणो देनि
 हसोथि नुपैया घन के णापथमिहगी मेअ अव सेन्
 केशो कुनथी प्पेअ मासु वेसाहअणहिकौडि अअ अपग
 क्कोक णगा हनिवासन गगअमान वहुण कँ सपगा
 क्कोक णगा मणि णनेन वेसाहअनिथग वैसअ णकस्

मेथ धनगन्तनिहूँरु सुसाँठि जगआओन मकर गहड्
 काथ पडैठ निहूँरुमि गानीरौं ई वहिगैठ हावा
 धनसँकामिकर केन ठावा गानी-धन मजग कनै गन-
 माठकि औन महाजग सभकँधन ठेनी अग्न-धन्
 ठेक वुहाओन ओले नकै छथिँह गानीवक सग
 समै देप्य विगसँ सभ सगकठडैँ ठगौठक टट्टी
 सुग्न दोकान सहनमे पनी गैठसुग्न मेथ सभ यट्टी
 सूयठ गाग वाग नौ ठटपटकतेक वाग अथ सहगा
 गन गानी सभ साग तेआगठवकिनी मेथ अथ गहगा
 मँगटीका पूटी औ नडकीगकमुगनी बै गाक्
 कटसनी विछिआ औ हनिहनिआँवाणवगद औ वाक्
 यगदुहाग, हैकठ औ सकिडीऔन धनौकि दाना
 सूनी, गवगुनह औ पयपँडीठसुनी मेथ गदिगा
 नापन दन्वजाग बै वयठेकनम मेथ गपिट्ट
 नमघैठ, अद्वैआ औ पकिदानीबै नसठा औ नू
 वाटी, वट्टा औ पनवट्टागोणन कनैक थानी
 माधव सीहि सहिगि सोवगनबै वयठे धन हाडी
 धन संपनी धन कछिु बै वयठेसभटा पडि गैठ वंथक्
 तैओ नूय छुटठ बै ककनोएहन पेट मेथ पंथक्
 दैव अंस अवतनठ कम्पनीजा पन नाम सहाए
 मथिठिपुन वूडन जव ठागयसे सुनी पहुँयठ याए
 प्यनदि अगाज जहाजहाँ वोहठननी कनी कनी वीना
 सहन नठिगा ओआ पन ननीऔन ओठाशनीगोना
 हाजीपुनमे ठाय हजानमकै ठायन हर पटना
 वाजगिपुन सुठनागपुन गोठबै जागन हौ केतना
 गाडी, वैठ, छकड, उँट वहिनेउवहन हर सभ दाना
 मसिन कनहैआ कँ पोप्यन मेपहठिक अडी ठेकाना
 शनी ठक्भीस्रन सहि ग्पनमिहानाज मथिठिस्र

अथ १।११ दृष्टिगोचरीपतिहिनिकेश्
 गाडी वैठ थापन हजानगताकेँ पने घडेन्
 पहठिक गोठा मयुवन, मौडा जशुना औन अडेन
 वेगीपट्टी, औ पयमहठाकुम्हौठ औ कमतौठ
 हनहिनपुन, पाडिनुछ वनगौकेतोकाँ वनौऔठ कान्
 वानिपोप्यनि, वनिसायन वनौपाम्डीठ को नै जान्
 गवहद, सनिसो ओ गटपुना, ना सौं दक्षमि उजान
 हंदापुन, महनैठ, कनहैठीमयेपुन ह्द प्यास्
 वेगीपुन, कमान, ननैहैऔवनगौ श्रुठपनास्
 हमना ह्द जगजानि जगमेमहथा औन वछौन्
 दुहवी औ महगिथपुनऔन जैगान नक ह्द दौन्
 वठदेवपुन औ ढंगा वनौमनिजापुन ठदु हाट्
 सीवीपटी औ कपसीआसदन गोठा सौनाड्
 गुनवाकेँ पनवनसी हाकमिकन ननिहुामे आकेँ
 नै तो मनते कन नन गनीवाठे वये सुप्या केँ
 कन मुनदा गनदा नै मठिते असंय्य जीव यठ् जाना
 सन समधी केँ संना नै ठमनननै वयते जठदान्
 सनकेँ सन उपछै नै जेठपोप्यन औ सडक युन्
 नहैजेठ वनाह्मास सोती पाम्डीतिकायथ पछमि गकुन श्रुनक्
 केओ औनसश्चिन गाम ठपियाओठकेओ मोहनानि नैठ्
 वनममकान्पने ठुथानिपैआगेँ मेठ सन केन नैठ्
 केओ जमानन दैकेँ वयठाहजानिका अमठा नैही
 ककनो माना केँन पडि तोडैन्हउननैन्ह जगमक डेही
 ककनहुँ गानन गान सुप्याओठवहुतो हेअथ यठान्
 मानुपति। घन पनजिन नोवयवावू जेठाह जठप्यान्
 ककनहुँ घन मेठ प्यानाठसीमेठ मोहनानि घौछ्
 केओ अदाठामि उडिअिर छथकिकनहुँ उपनैन्ह नौछ्
 एगना सुनहाकमि निसिअिओठ् तेँ ठाठ जग गीका

नाक गंगौठगृहसिधै मोहनानिवागै युगक टीका
 जोग, वकीआ, ठौककि वंसककनिआमंग सुकूठ
 गाछी, वांस, वैठ औ महसिजिगह कैठ मकशुठ
 नाहिनुपैआ सौ कना गजगै कोनट सौ नीग
 गै कानग वहुगो घन ह्गडागार मतीजा मीग
 आए छट वहाहुनऔ दडगिंगा याम्
 वावू औ ववुआग सहति मठिकीगृह कुमैटी प्पान्

एह सभ संग वैठ कैजाय कुमैटी मेठ
 अजव कान सनकान केगनिहुन पुहुंयठ मेठ
 वाजगिपुनसँ सडक गकिठैआये दौडहि दौडी
 ह्हेया गंडक पुठ वगहाएआए यौनहि यौनी
 धन्ममधीन, वठवीन, कम्पनीजागन ह्स् जगदीसग
 छमो सागन के पोप्यनिमिगहि कीगृह रसटीसग
 वडा छट कठकानेवाठेश्रीहुगुगो होए संग
 आगना के छोटा छठ वहाहुनवैठ सभ एकंग
 जुटे कमसिगन औन कठट्टनवोठहिवाग नेअंठ
 एह पायो श्पठास पन वैठसंग जाग एह जंठ
 प्यवनिगिए अयवान मौमैथिठ के एह हाठ
 सुगहु अजिगी अराम दैकैमेठहु दुप्य के जाठ
 हुकुम दीगृह दोउ छट कोसुगहु हमाने वैग
 मदाना कनहु नेआआगकोयेग क्या वैठ हौ
 वडा छट दोउ वीन उडाएसाहेव औ जगगैठ
 मेजग मजसिठन औन कठट्टनसंगजाग कनगैठ
 देस देससौ अगन मंगुआओदीगृह सभगि के दाम्
 महामूंग, गुहुम औ याउनवजडा औन वदान्

डेढी, पटना औ गटसायेदीषी औ अजमे 1
 आगना औन कागहपुन ढाकाजहँ अगन के डे 1
 गए नभागा अगन गनिहुनमिठदिगाड़ी औन वैठ
 गाज, गुंग, गदहा औ छकडसंग सपिहि छैठ
 छानी औ पैठाग भोगठ सगवाँकावीन गजपुन
 सोभा वनगि गजान हस्रौसे हनुमगन दून्
 आगे सशुन औ मैगापठन वीन जमान
 वनछी औ गुनुआनगिहै कन गहै गीन कमान
 यदुगुंग पन कनै कवाशनजमादान होए संग
 सोभा वनगि गजान हस्रपुनक गंग देप्प
 कान काम सग यामभेट अट सग ठुट
 ढहि गीड गाछी सहतिवाग्यै सडक औ पूठ
 जाठि पठने औ गटसायेपुगगना महसौन
 नहँ वसही एक सज्जगतोही घन जा ठकूमि दौड
 श्नी द्वाजकि पुनशादितयनम् मधीन वुद्यमिग
 नहसौठदान कोनट के प्यासाजानहि सकठ जहान्
 वावु रसनी पुनसाद दियौटीसो मधुवनमे आए
 हुकुम दीगह सुपनगउठकँटोठे टोठे होए जाए
 मन पँया मगजान मै ठपिवहुनो ठपि प्यैना
 यग्य यग्य अंगोण वहहुनसगकँ जूठठ गा
 गानेवि, गनी, गुनवा, कनु पौ, पौवनाह्मस दे न असीस
 श्नी गधुनाथ वढे वदसाहिगदी ठाप्य वनीस्
 श्नुन ठाठ कवा वनगन हँएह नौदी के हाठ
 गौनभटि गौनगठ वहहुनगनिहुन गाय्हाँ वेहाठ

२

नाथाकृष्ण यौधनी (मथिथिक शहािस) (वदिह पेटानमे उपठव्य)

"१७७० क अकाठ मथिठिक इतिहासमे अद्वितीय छठ आ मथिठिक णसंख्या घटकेँ एक दम्भ कम्भ गऽ गेठ छठ १८७३मे पुनः एकटा ७४- णकन व्रिनास हम्भ श्रुती ठाठ कवकि ओहने अकाठ मथिठिमे गेठ छठ अकाठि कवकिासँ गेटइये, अकाठि कवकिा अपनकाशति अर्था अकाठकेँ दून कवाक हेतु आ मजूरकेँ गोणी देवाक हेतु तहि कठ गेठगाड़ीक प्रोणगा यथाश्रोठ गेठ णकना सम्बन्धमे श्रुतीठाठ ठपिण छथि-

' कम्पनी अणान णान कठनको वगाय साग
 पवन को छकाय मैदानमे यनायो है।
 छोड़न है अडादान वडा वीय याय याय
 समेठोग हटाणान केणानान पडा है।
 नानकी अपानकान पवनादिन वान वान
 येन गयो टकिसदान गेठ की उवाई है।
 कान है अनोन शोन पीछे कान ठान छो-
 णोन की यमाक से मशीन की वडाई है।
 कम्पूसन पहनदान कोथी सव अणवदान
 कोरेठा गन कान कान यूआँसे उडायो है।
 वाणान एक वणन ठान हाथी अस
 पकिन ठान जैसा णो यदनदान व्रैसायन पायो है।
 गंगाकेँ गनठ यान अनगियो श्रुतान पान गाड़ीकी
 अणवकान कवकिा यह वगाया है। "

- धाणनदान थहाकन, दानिन, वदिह (वे पानान गेठ वदिह वदिहयोनि -
 सेनद पुन औहाणसअपप गो गो + द्द१द्द५द०द्द६०७२१ सो नहाण नि याग वे
 1ददेद गो नहे वदिह औहाणसअपप मनोदयासग डसिन)

अपन मंगव्ये दानिनाठिसानाडडवदिहवाभाषियोम पन पडाअ

आगुं अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व पर विशिष्टक जागकारी भेटा पुनसंगना भेठ। कथाकार अशोकके यथाकार अशोक रूपमे पुनस्तान करक सशुभ पुन्यासमे हुनक जागकारी गीत संक्षिप्त आत्मकथ्यसं काशी सूयगा भेटत ओ उचितक मैथिली ढंगे जो कासी कहै छथि काशीके जाय हम अपन जीवनकाठक अन्तर्ग्राममे गयो जागक अन्तर्ग्राम भेठ पुनश्चस्य मेडसिनि वगैर, कछु मास पुनवर्हि अर्धरूँ अर्छ। कासीसं कटहिल होश अशोकक पाठपुत्र हुनका एक वाक्यसि कवि श्रेय कथाकार जीवनक अनुभव वना देवकैर्हो जाक अन्तर्ग्रामि औपन्यासिक दुष्प्राणिका हुनक पत्नीक आरसीयुमे सुदीर्घ संघर्षक बाद मृत्युके जान समेटा, जाक आशा उषा कनिहाजी संग भीमनाथ हाजी केने छथि, हमन एकमेव अनुभव जो डाक्टरके ओ वयसैत कामस डाक्टर एक गीत प्रामी होश अर्छ; हम एहि उष्यके पढवाक कामसमान एक वे श्रेय आरसीयु अपना गान पर गीत भेठ एक अर्धे मधुमेहीके देय्य श्रेय एक वे जायव प्रत्यर्पा कगीय गेजाउट डाक्टरके सग गिर्देश दय यूकै छी। घम्टा - उढ घम्टामे सन्तर्ह उष्यकक उगैशटा हुनका पर उष्य तीव्र परिय्यात्मकक बाद प्राणी वास उष्य पढा उष्य एक कठिण काय्य हम केरूँ अर्छ कर्ण हमन प्रैह पाठकीय गान अर्छ आओन नक्षत्र उष्यगीय जो हुगाना सेहो कना सकैत अर्छ तथापि स्थायीपुठक ग्यायसं अर्धकति समग्र मूठ्याकन ई अर्छ जो अशोकक कथासंसायन मथिठिक गामक गूगोठ ओ संसायक वीयक योणक अर्छ जो ओ एक गामोस दृष्टिर्हसं गह नान्यागीमे काय्यन वीगोगीय उपक्रममे सेहो देय्यहा, गोगाहा हनिक यानि दिसकमे कथासंय्या कन जाग जाक कामस हम वुहै छी साहित्यर्किय पुनोसाहन-पुनस्तान गह भेटव मुख्य गह हमना सेहो 'मानव' पढ अर्छ ओ ओकन समीक्षा सेहो कनहु उचित होयत जाहमे हुनक एक पात्र द्वाया अंग्नेजीक उम्वा कथनके कर्णमि वीगे छविर्ह जायन क कथाकार अशोकसं कथासमीक्षक हमना गीक उगाहा, अगा ई वाग अगा जो पटना कथानाशिसमे हमन आयुर्क कथा 'ओ' पर कछु वायसं छटिका गेहा हनिक कथासग हम अर्ण अर्कृष्ट न गह मागे छी कर्ण जायन

वृहत् सामान्यके पुनसूक्तान् कथं गे १ अशोकजीके वृहत् पहि सभ्नागक
 पात्न वृहत् छे पहि व्रिशिषांकक सूयगा देय्यगे नहिहूँ १ एहि व्रिशिषांक छे
 हम सेहे छिपिगे नहिहूँ हम अशोकजीके मन्त्रिक वृहत् छी औ सभ छेय्यक
 हुगका पुनानि सूयगाभावे देय्योवह अर्था हसन्तपिपिनि हगिक एक मन्त्रि
 हमनहि जाकां कोनहूँ अय्यनहूँ छिपिगे छथा कोनो गहि से देय्यि पुनसूक्तान् मेथ
 अशोकजी मासुको गतिन्त प्राणी मान्कुसुवादी व्रियायानाक गहि देय्याश छथा
 एहि व्रिशिषांकक वृहत्स छेय्यक देवाना हमना सेहे ओ हामिहो उय्यवन्मीय
 आयाग्नूमि पन उपजठ एक कथाकाग जाग छेवह जागिक अनेक अयुगा
 पुनानिग कापयेट जागक आंग्रभाषापुमेभी मानसिकि दास, जागिका
 देवाना सामाजिकि समनसना वा उन्मेषक पुन्यास गनहि कथाकाग अशोक
 कथंनहहि ओ पठापगक व्रिसूक्तान् आयागक एक अंशमात्ना महिषि
 छेय्यकिदेवप्रमे कथपगा हा हुगक संयोगवस मेथ अय्यवानी वृहत्स छेय्यन पन
 सेहे पुनकास देग अर्था जाह पन हगिगाथ हाक छेय्य केन्द्गति अर्था कथपगा
 हा संगहि 'पोय्यनिसगमे' आजादीक वाद घटठ २४ छेय्यसं द छेय्य मेथ संय्य
 छे १७१०सव, कूपोत्सवक व्रिकिठप अशोकक वावैग अर्था से गीक जाग
 ओ वैवाहिकि वठात्कानसं मेथ गन्त पन भौग छथिगे "सुवाधीन" कथामे आयठ
 अर्था कगिन्तु आगा हा एहि पन टपिपमी कथैग अशोकक पक्षक गानीवादी
 समन्थगमे कगिन्तु कि ई व्रिवाहक संगहि वठात्कान गहिगे हम व्रिवाह कनव,
 काम सुयोपयोग कनव कगिन्तु गन्त यानस गहि कनवगे सामाजिकि वदवाव
 गहि वृहत्सथाक संगहि वठात्कान मेथगे एक वाठ-वय्येदान छेय्यकक व्रिशिषाना
 गहि ग्नुटि मानक याही दधिप कुमान हाक छेय्य प्रथासुथतिव्रिवादी छनीगे ओ
 छिपिवाह से सभ गीक आओन ई मैथिली समीक्षाक दप्रगीय अवस्था वावैग
 अर्था अजाग कुमान हा डैडीगामक सभ कथा पन तेहनहि टपिपमी केवह अर्था
 जायगका एहि व्रिशिषांकक एक छेय्यक पुनमयन्दक संदन्त देवह अर्थागे
 ककनहूँ सभ कथा गीक गहि छिप्याश छनी कुमान गहठ कछि हसन्तक्षेप जाग
 केवह अर्था 'हृदयडीमे छिप्यायठ' 'शुनूववद्य' कगिन्तु की अशोक गव
 ठीक द पयवह अगुनानि नहिजाश अर्था मान्कुसुवादेके शुनायडवादसं (वा

(अत्रनिवृत्तसं सेहो) व्रितीय कहां छैक? (हमन विपिति नागनीतिक सिद्धिंता
 'आय्यातमकि मान्कसवाद' क यन्या एत अनावश्यक) मतिन हेवाक गाते
 एतेव कामाक अशोकक प्रसंसा ओ पृष्ठभूमिपरी गीक व्रिनिमस, व्रिषिपतः
 नागपूना कथाक कर्त्तु ई समीक्षात्मक गही शिविसंका श्नीगविस व्रयति
 छथा जे अशोक सहनी कथाका गही ग्नामीस क्षेत्न पन सेहो विपित छथा
 आओन ओही सांसमे हूकक वैश्वकि व्रिनिमसक? एही भूमिउपिकामक युगमे
 जह नथिथि सेहो अछा प्रश्न जे ग्नामीस वा सहनी गही अछा; एयन
 प्रश्न एकही जे की वदेन सहनीकाममे गाम ठोकक जीवने वांयन से युनहान
 अंग्रेजीक प्रयोग कतै पात अशोकके ठिकसं हंतु गही वावैत अछा
 जगदीशयंन डकुल सेहो हमनहि आपत्ति वावैत शिषामे मैथिथि पन
 अशोकके मीन वावैत छथा अत्रनिवृ-अंकता पात नामहि हूकक कथाके कोहूं
 शिविगथ-गौनी सगहूं आयुगकि हामिहनी अशोकके कहां वगवैत अछा (हमनहूं
 कथाक कमठी-नयिसन सन गही) नायासमी अशोकजीके
 कनिमप्रमासंमुक्त मागवाह अछा कर्त्तु ई उक्तप तक गही जेठ गनह
 अपकृषहूं गही सहपाठी शैठेन् अशोकक कथाका पक्ष पन केन्टानि छथा
 आओन ठौन अछा ओ कथाका अशोकक मूल्यांकन गही केवाह शिविकुमान
 मसिन सेहो अशोकजीक सांगठिक सहयोग पन विपिठह जे उतम कर्त्तु
 अशोकजीक सन्तोतम सहयोग कथा गोष्ठीमे हमना जौन नह अछा आशिष
 अग्यनिहान मैथिथि महासगाइ एष्टिपसं नहति अशोकजीके गही पवैत छथा
 पनतु एहिमे अपन एष्टिकोस न्यवासं स्वयं सेहो मुक्त गही आओन ई वात
 गही विसिती जे समाजक सोयमे वदवावमे सतावदी ठौन छैक दसक गही
 आओन सामाजिक समसता वैयक अपेक्षा कतै अछा तथापि हिक
 अपेक्षा स्वागत योग्य मुग्गाजी अशोकजीक साहित्यिक कान्यकता
 गनिमास पन गीक प्रकाश देठह अछा जक अशोकजी वस्तुतः अयिकानी,
 सनकानी अयिकानी हेरहूं मंय-मठ-माइकसं गसिपूह श्नीयन
 अशोकजीके गतिशील कथाका स्थापति कन्य ठेठ व्रिवाक दुःय पन 'गांड'
 कथामे हूकक वावना नपैत छथा ओगा 'स्वाधीन' कथाक पूर्वविपिति

दृष्टिकोम नपवासं दून छथां इहे संकेत दैते छथां जे संगवतः अशोकजीक समीक्षाक संग हुनक कथाप्यगसं उपन हो।

उषा कनिम पान

वृहव वयाई! सामग्री सँ समृद्ध अंक वृहाइस्यै वदित्क व्रशिषांक अशोक जी पन आवय वठा नहय से वृहठे छठ तै अणुका प्नागी व्रैह मेठ! कथाकान मे अशोक, व्यंग्यकथा मे वटुक गार्इ, उपन्यासकान मे साकेतानंद आ कर्वामे महाप्रकाश हमन पुनयि नहठह अछा ई ठेकनि व्रपिठ गहि ठपिठग मुदा गेस वृहैठग हमना व्यक्तगिग नूप सँ आन सव गोटे अपना अपना गीका सँ पुनगावति केठह अछा शिविसंकर जी के कथाक ठेकेठ हमना सग भथिठि कःगो मैगस ठैउ केन प्नायः जागकानी वढवैठ अछा न अशोक जीक कथा भथिठि सँ वाहनक (काशी के) न्नासदीक ज्माग दैठ अछा अशोक जीक स्वयं पुनयिप पढवै आ नप्यग हुनक पुनव्रिश जागकथाक उत्स वृहवा मे आयठ अशोक जी हठवठिया कथाकान गहि छथांगै सटीक समीचीन कथा साधठ ठपि छथांगक वठ गीक व्रशिषेपाम दठिप कुमान हा केठगहि अछा आगा हा वठ गीक व्रशिषेपाम केठग मुदा व्रसिगान गै दैठिहा वृहपिठेठ अछ आगाँ दैठिहा

गानायाम जी

मैथिलीमे कठोको हानुड कापीक पानिका नहैठ ई पानिकिक नूपमे कापिक गे हेअय कथाकान अशोकजीक व्रशिषांक द्वागाना गोटसि ठेवा ठेठ हमन हानुडिक वयाश

वैकुण्ड हा

व्रशिषिट साहित्यिक व्यक्तगिग पन व्रशिषांक गिकाठव महत्वपूर्ण कागान एहि

वासो सायुवाए अहांके

अनवगिह गकुल

स्वागत ! अहि आयोजन ठेठ वदिह टीम के वहुन वहुन वयाई!

पुनश्चुठ कोठप्याग

वयाई आ शुभकामना। गीक भागभा वऽ गीक भागभा

दधिप कुमान हा

गीक पुन्यासा अह्वाएकारी अंकावयाई संपाएक मंडुठके।

-
अपन मंगल्ये दितिगीठिसगाऽऽवदिहवाभाठियोम पन पडाउ।
नाम गनोस कापड़ी 'गुनमन' व्रशिषांक

रूपनसुगत व्रशिषांकक संदग्गमे

रुनाम गनोस कापड़ी 'गुनमन' गीक संक्षपित पनयिय

रुपुनोमशिा मशिा- नाम गनोस कापड़ी 'गुनमन' के व्यक्तान्तिव

रुग्गीमगाथ हा- ठोकगीवगपन समेकति आठेक

२५ वणिज कुमान मशि- नामगोस कापडी 'गुमन' लीक संग साक्षुका

२६ साक्षुका- दगिशयगुन गोपा

२७ अशोक- नामगोस कापडी 'गुमन' क उपग्रास 'घनुहँ'

२८ एव काम- ७० नाम गोस कापडी "गुमन": एक वृक्षगुन

२९ अण्य अगुगी- मैथिली भाषाक साहित्यका 'गुमन' हेक वधिमे पुस्तक प्रकाश

३० अश्विनी कुमान आवेक- नामगोस कापडी गुमन: गान-वेपाक सांस्कृतिक से

३१ यंदेश- नामगोस कापडी 'गुमन' : वियान, संवेदना आ येग

३२ डामागेन वमि- नामगोस कापडी 'गुमन' क उपग्रास 'घनुहँ' - प्रभाव आ प्रतिक्रिया

३३ डामदयाथ नाकेस- पुस्तक जो हम पठ-एगुटी ग्रासक कथात्मक संसा

२१४ दशिस प्राद्व-ठोक मैथिली केन व्रिणीति ' श्रमन'

२१५ यंदेश-विविधवृत्ती आ वहुंगी नयनाकान ' श्रमन'

२१६ अयोध्यानाथ यौधेयी- "श्रमन"क वहुआयामकि वृत्तकान्तिव

२१७ अणति कुमान हा-धनुमुहः मधेशी आग्नेय आ सामाजिक समसनाक
दस्तावेज

२१८ अमेश नृपण-एकटा आन वसन्त : नात्काठिन समय आ समाजक
पुननिधि गटक

२१९ व्रिणिय श्रुषाम-शुभक आस जगवैत श्रमनक गण

२२० आशीष अगयनिहा-कठकति याग

२२१ व्रिणीत शकुन-वहुआयामी वृत्तकान्तिवक एकटा सुधन स्वतुपः नामनोस
कापडि श्रमन

२२२ जोगान्द हा-गैया अष्टै अपन सोनाणः व्रिणंम दृष्टि

२२३ जोगान्द शकुन- नाम नोस कापडि ' श्रमन' पन एकटा समन

दृष्टि

ब्रह्मगणित्यागन्तु मस्मत्-अपने ण्डामे ण्डाण्णाम् णामगोस स१

रूपसूत्र वशिष्ठांक संदर्भ

रूपसूत्र वशिष्ठांक संदर्भ

वर्द्धि द्वारा ठेपकपन वशिष्ठांक ' जीवैत मुदा उपेक्षति' शृंखला रूपमे कएए गेए छए २०१५ सँ जका आब "वर्द्धिहक जीवति मैथिलिकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ गंगमंथक-गंगमंथ-निर्देशकपन वशिष्ठांक शृंखला" नामसँ जागए जाइत अछि। एसिम्वन २०२२ मे वर्द्धिह "गामजोस कापडि ग्रामन" वशिष्ठांक" पुनकाशति कएवाक सावधानकिक घोषणा केएक आ रूपसूत्र अछि ई वशिष्ठांक। एहि सूचनाकेँ एहि ठिकपन देया सकैत छी-घोषणा। मैथिलिकर्मीसँ हमन सगहक आशय जगिक काज भयिषि-मैथिलि-मैथिलि वेए कोनो माध्यमसँ गेए हो। ओ संगठनकर्ता सेहो नऽ सकै छथि, आन भाषाक ठेपक सेहो नहिना संगीतकर्मी भवे गीत-संगीतसँ जुड़ए ठेक।

एहन शृंखलामे, एहि वशिष्ठांकसँ पहिने वर्द्धिह ट टा वशिष्ठांक पुनकाशति कऽ युक्त अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा युगौतीपुनस काज छै। अनेक संकट केन सामना कए पड़ैत अछि ठेप एकट्ठा कएने। मुदा संगर्हा ईहे हम कहव जे संकटसँ वेसी हमना एग समन्वय अछि हँ, ई मागए हमना कोनो दक्कन नहि जे जाके ठेप केन उम्मेद केने नहैत छी हम जाके नै आवैए, जाके ठेक ठेपिवाक वेए गछैत छथि से सग अंत- अंत घनि आवा युपन नऽ जाइत छथि आ एक कालसो छै, कनिको ई गौ छनि जे आगपन ठेपिब से हम अपने नयना कए नै ठेपिब, कनिको एग पोथि नै नहै छनि, जापन कहि सग पाठककेँ विकल्प रूपमे पोथिक पीढ़ीएक श्वाइठ सेहो देवाक वेए तैयार नहैत छी। कयौ वर्द्धिहक समावेशी रूपसँ टुप्पी छथि, तँ कनिको भक्तिकेँ वर्द्धिसँ दक्कन छनि तँ ओ नहि देना। वहुन ठेक तँ वर्द्धिहमे एह वेए

नयना गै पड़वैत छथी जे कहि हमना अकादमी वा यनी संस्था सभ गेटेप्या छथि अकादमी आ संस्था सभ वदिल्के अगेने अपन शानु भागि वैसथ अछि आ पुनसूकानक रय्या गपगहिन गँर वदिल्मे नयना गै पड़वै छथी एकनो हम संकटे वुहै छथि जे सभ श्वेसवुकपन उवा-उवा ठेप्य वा कभेट टारुप कऽ छै छथी सेहे सभ वदिल् ठेठ हाथसँ छपिठ पड़वैत छथी जे सभ कहियी काठ श्वेसवुकपन टारुप कऽ छपिठ छथी गिनिकन आठेप्य हम सभ टारुप करी छी। गिनिकन नयना टारुप करीत छी गालिमि सूत्रा: नूपसँ टारुप केगहिनक वनगनी आवाजोशर छै। प्यएन पहिनि कहैछुँ जे संकटसँ वेसी समन्यथ अछि गँर आर पहिठिसँ ठऽ कऽ गवम वरिषिपांक यनी पहुँयठुँ हमा २०१५ सँ ठऽ कऽ २०२३ केन मय्य यनी टं टा वरिषिपांक पुनकाशनि गेठ मगे वन्यमे एकटा। गशियानि समन्यथ वेसी गेटठ हमना। गप्यन कऽ वदिल्क ई टं वरिषिपांक केन अठवे आगे वरिषियपन वरिषिपांक पुनकाशनि गेठ अछि। एकन अनिकिन ईहे वाग संतोषदायक अछि जे वदिल्क हेनेक वरिषिपांक अगनिदगन्थ हेवासँ वाँया गेठ अछि। मुप्ययाना जकाँ वदिल्केँ अगनिदगन्थ गहिये। अगनिदगन्थ अहूँ दुआने गै याही जे ओहिसँ ठेप्यक वा गनिकापन गफाठठ गेठ छनी गिनिकामे सुधानक गुंजोशर प्यन गऽ जोशर छै। गँर वदिल्क वरिषिपांकमे आठेयना-पुनसंशा सभ गेटन।

एहन गै छै जे नामगोस कापड़ि 'गुनमन' जीपन छपिठ गै गेटै मुदा ओ सभ एकट्ठा गै गऽ सकथ छै गँर ओकर पुनभाव हेठ गेठ छै। एहि संदन्धमे हम कहि सकै छी जे वदिल्क ई पुनसूतन वरिषिपांक एहन पहिठि पुनयास अछि जालिमि ई वुहवाक पुनयास कएठ अछि जे नामगोस कापड़ि 'गुनमन' जीक नयना केहन छनी ई अठवा वाग जे हम सभ करोक सखठ वा असखठ गेटहुँ से पाठक कहना। एहि वरिषिपांक केन सुनआन वदिल्क आगे वरिषिपांक जकाँ अछि संगे-संगे ई कूनम गै गँ उमनक वनपिठना केन पाठन करैए आ गै नयनाक गुमवतनाका हँ, एतेक येआन जनुन नप्यठ गेठ छै जे पाठकक नसभंग गहिये हेरन आ से वरिषिवास अछि जे नसभंग गै हेनगी।

पाठक गप्यन एहि वरिषिपांककेँ पढ़नाह गँ हुनका वनगनी ओ मागकनाक अभाव

उगावणी व्रतणीक गठनी जे थकि से सोहे- सोहे हमन सगहक गठनी थकि जे
 हम सग संशोधन गै कऽ सकछुँ मुदा ई येआन नप्यवाक वाग जे वदिह सुनुएसँ
 हनेक व्रतणी वठा ठेप्यकँ सवीकान कनै एठेए। तँर मागकता अभाव
 स्वाभाविकि एकन वादे वृहण व्रतणीक गठनी नहए जेठ अर्थाजे कि हमने
 सगहक गठनी अर्था मैथिलीमे कछिए एहन पत्राकिया अर्था जकन व्रतणी
 एकनगक नहैए अर्था आ ई हुनक पूवो छणी मुदा जप्यन ओहे सग कोनो
 वशिषांक गकिाँ छथि नप्यन व्रतणी तँ गीक नहैए छणी मुदा सामग्री
 अधिकांशतः वसयि नहैए छणी ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुनाग
 सामग्रीक उपयोग व्रतणी गै छै मुदा सोययौ जे ७२-८० पन्नाक कोनो
 पुनटि पत्राकिया होश छै ताहिमे उगमग आया सामग्री साभान नहैए
 छणी, तेस नगमे ठेप्यक केन कछिए नयन नहैए छणी आ यानमि गगमे कछिए
 गव सामग्री नहैए छणी मुदा हमना ठेकणी गव सामग्रीपन वेसी जोन दैए
 छयि। एकन मतभव ई गही जे व्रतणीमे गठनी होश नहैए हमन कहवाक मतभव
 ई जे संपादक-संयोजकँ कोनो गे कोनो स्तनपन समहौना कहे पडैए छै से
 याहे व्रतणीक हे कऽ, मुद्दाक हे कऽ व्रियायनक हे कऽ सामग्रीक हो। हमना
 ठेकणी व्रतणीक स्तनपन समहौना कऽ नहए छी मुदा कानाम सहिता पुनटि
 पत्राकिया एक वेन पुनकाशति गऽ जेठक वाद दैवाना गै गऽ सकैए (गऽ तँ सकैए
 मुदा छेन पार उगी जेतै) तँर ओकन व्रतणी प्रथाशक्ति सही नहैए छै।
 इंटनेटपन सुवाधि छै जे वीथमे (इंटनेटसँ पुनटि हेवाक अवर्था) ओकना सही
 कऽ सकैए छी मुदा सामग्रीए वसयि नहए तँ सही व्रतणी नहैए। गव अध्याय
 गै पुनटि सकत तँर हमना ठेकणी व्रतणी वठा मुद्दापन समहौना केछुँ। हमना
 ठेकणीकएठग, कयठग ओ केठगी तीनू सुदय मागैए छी, एके सुदय मागैए
 छी एकै नयनामे तीनू रूप भेटा जाएत। आन शव्दक ठेठ एहने वृह।

गनमनी गेपाठक मैथिलीकँ पुननिधित्व कनै छथि तँ आठेय गेपाठ दसिसँ
 सेहे आएठ अर्था तँर भाषा संवंधी कछिए वाग देप्यठ जाए जे कमान् गानतीय
 पाठक ठेठ अर्था-

१) गानगीय पाठक कोनो ठेपक ठेठ ठोहण आद-सूयक शव्दक प्रयोग दैपैत-पढ़ैत एहा अर्था से गोपाठक आठेपमे गहि गेटैत आ गोपाठक मैथिली ठेठ ६ सामान्य वाग गेथै।

२) गानगीय पाठकसभकेँ कछु शव्दक अर्थ गहि ठगानगि आ एहि ठेठ हुनका व्रदिहपन उपव्यव गोपाठीय मैथिली मैथिली साहित्यकेँ पढ़ए पड़ानगि।

३) श्वाण्टकेँ वदठवामे सेहे वृहण गस दक्कन भेठ छै जाहपिन हम सभ काण कऽ रहै छी।

उम्मेद अर्था जो पाठक व्रदिहक आगे व्रशिषांक जाकाँ एकना पढ़ाह आ पढ़ाँ एकन गीक-वेजाएपन अपन सुहाव देनाह। व्रदिह अनवगिद गकुन व्रशिषांक केन पोथी रूप "सुवर्णायेना" केन नामसँ प्रकाशति भेठ उम्मेद जो भवषियमे नामभनोस कापड़ि 'भूमन' जोपन केदनाति एहि व्रशिषांक केन पोथी रूप सेहे आएना।

व्रदिह द्वारा व्रशिषांक शृंगारमे प्रकाशति भेठ आग व्रशिषांक सभहक वसिठ एना अर्था एहठाम जो अंकक वसिठ देठ गेठ अर्था गहि अंकपन क्वकिक करवै) - (गँ ओ अंक पुजाजाए।

१) अनवगिद गकुन व्रशिषांक ०१ गवम्बन २०१५ अंक १८८

६ व्रशिषांक २०२० मे पोथी रूपमे सेहे आयठ अर्था ठिक अर्था:

सुवर्णायेना- अनवगिद गकुन: वृषकर्तित्व-कर्णातित्व (सम्पादक आशीष अग्रयन्हास) | व्रदिह अनवगिद गकुन व्रशिषांकक प्रामिष्ट रूप।

२) जगदीश यगून गकुन अगठि व्रशिषांक ०१ दसिम्बन २०१५ अंक १८९

३) गामठयन गकुन व्रशिषांक ०१ अप्रैल २०२१ अंक ३१८

- ४) गाणगणन एव दास वशिषांक ०१ गवम्ब २०२१ अंक ३३३
- ५) वीगेण्ण गथ ङकुन वशिषांक १५ गूण २०२२ अंक ३४८
- ६) केदागथ यौधनी वशिषांक १५ अगसुन २०२२ अंक ३५२
- ७) पुमेठना मसिन 'पुमे' वशिषांक ०१ गवम्ब २०२२ अंक ३५७
- ८) शनेण्ण यौधनी वशिषांक १५ गवम्ब २०२२ अंक ३५८
- ८) अशोक वशिषांक ०१ मई २०२३ अंक ३६८

ईं गेठ गे काण हम सग कऽ सकेहुं गकन वविगाम मुदा कछि एहगो घोषामा छै गे कऱि हम सग बै कऽ सकेहुं गेगा २०१६ मे हम सग पुनेसुवण कापडा, कमठा यौधनी आ वीगेण्ण मठकि वशिषांक केन घोषामा कश्यो कऽ गहि पुकासति कऽ सकेहुं पाठक एहि घोषामाकेँ एहि ठिकपन देयि सकै छथि- सुयग

वादेमे वदिहक "वीगेण्ण मठकि वशिषांक" (गे कऱि पुकासति बै नऽ सकेठ) एठ वीगेण्ण मठकि गोक साक्षात्कान गे गवोगानाम

मसिनगी से वदिहक ३३७म अंकमे पुकासति गेठ पाठक एकना एहि ठिकपन पढऱि सकै छथि- गाणवनी २०२२ अंक ३३७

← विदेहक परमेश्वर कापड़ि, कम...
m.facebook.com

← विदेहक परमेश्वर कापड़ि, कमला चौधरी आ ...



Ashish Anchinhar

15 June 2016 at 21:21 · 🌐

विदेहक परमेश्वर कापड़ि, कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर घोषणा

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह 2015 मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा 60-70 वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर 40-50 सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल" जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक दू टा अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि आ वीरेन्द्र मल्लिकजीक उपर रहत संगे-संग भोटिंगमे दोसर नं पर आएल कमला चौधरीजीपर हमरा सभ सेहो निकालब । हमर सबहक प्रयास रहत जे ई सभ विशेषांक जनवरी ओ फरवरी 2017 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना (आलोचना, समीक्षा, समालोचना, संस्मरण आदि) 31 दिसम्बर 1016 धरि ggajendra@videha.com पर पठा दी।



अपन भंगवूये एतिगीनाठिसनाउडुवदिहावाभाठियोम पन पडाउ।

रूनाम गनोस कापडी' गूमन' लीक संक्षुपित पनयिय गाम गनोस कापडी' गूमन' लीक संक्षुपित पनयिय

एहिदिम पुनसूतन अछि गामगनोस कापडी' गूमन' लीक संक्षुपित पनयिय। एहि पनयियक अर्धकिंश नथ्य पहिसँ सांख्यजगिक अछि अर्धकिंश ओटो गूमनलीसँ पुनपुन भेठ अछि गेपाठमे वकिनी संवत यथै छै, जइम ई भै छिछै छै, से वकिनी संवत वन्य अछि आ ओर ठेठ मान् अंक छिछै छै। तँर जइ म मान् अंक छै से संवत वन्य भेठ आ गहिमिसँ ५७ घटा देगे अंगुली वन्य ई आवा जाए। उदाहराम ठेठ गूमनलीक जन्म संवत २००८ मे छगि गहिमिसँ ५७ घटेठाप १८५१ अथै अछि, अथा गूमनलीक अंगुली जन्म वन्य १८५१ ई भेठ एगहिनि पोथी पुनकासन वृषकँ सेहे वदछि सकै छी।



गाम- गामगनोस कापडी' गूमन'

माना : दुपनी देवी

पति: नाम गुणम कापडा

स्थान: वधयौडा, जाति- धनुषा, जगकपुन अंथर, गावसि वधयौडा, वानुड
नं-१ (नेपाथ)

जन्म तिथि : २००८ साठ, साओन, २२ गते (सूकूठक
सन्टिश्चिकिटमे ५ म२ १८५१)

शिक्षा: एनएचएन वसिष्ठवद्विद्यालयसँ एमए, पीएचडी (मानव)

वृत्ति: पत्रकारिता, भाषा, साहित्यिक सेवा

व्यक्तिगत विवरण: अध्यक्ष: मधेश पुनज्जा पुनपिडाग, मधेश
पुनदेश, जगकपुनधाम, धनुषा, नेपाथ

ईमेल : madhesh.punajja@nepal.com.np
, मोबां ९८५४०२०८८८८८०७६७७००१

पत्रकारिता कृति मूलांक: (एम्पन धनी नूनमनीक जतेक मूलांक पोथी
पत्रकारिता सेठनी ताहिसँ अर्थकांश वद्विह पोथी डाउनलोडपन नाप्ये गेठ
अर्थ आ एहडिम जे पोथीक विसुट देठ गेठ अर्थताहिसे पोथीक नामपन कृति
कनवै तँ ओ पोथी पुनज्जागए)-

कार्य:

१) वग्न कोडनी औगाइत युआ कवति संग्रह: २०२८

२) गह, आव गह दीन्ध कवति २०३६

३) मोमक पघैत अथन गीत, गजठ

४) अप्पन अग्यनिहान कवतिा संग्रहः १८८० ई

५) शयो अव शय्या गोपाठी अनुवाद वस अव गही हनिदी अनुवाद

६) अग्न्याग्निक याग गण्ड संग्रह २०७०

७) पुद्गयश्रमिक एसगान प्राद्या कवतिा संग्रह, २०१७ ई

कथा संग्रहः

१) गोना संगे जयवौ ने कुणवा (१८८७ ई)

२) हुगुठी उपन वहैग गंगा २०६५

३) एम्प्टीशायनस कथा संग्रह २०७६, २०१८ ई

उपन्यासः

१) घनमुहँ २०६८

गाटकः

१) गानी यग्नव्रतिः २०४५

२) एकटा आओन वसगानः २०५२

३) महिषासुर मुद्दावाद एवं अग्न्य गाटकः २०५४

४) श्रमनका अक्प्ट गाटकहू गोपाठी अनुवाद २०६४

५) शैया अएँ अपन सोगाण गाटक २०६७

६) एकटा आओन वसगान एवं अग्न्य गाटक संग्रह २०६८, साहा

प्रकाशन, नेपाल

७) सुधीपन श्रुति एवं अर्थ गायक, गायक संग्रह २०७२

प्रान्ता संस्मरण:

१) योग जे हन देव्ये २०७०

२) सीमाने आन-पान २०७३

शोध आलेख संग्रह:

१) जनकपुरियाम न प्रास क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू : २०५६ साठ

२) नाटकमय कथा साहित्यमे गानी : २०६४ साठ

३) लोकगायन : गट-गटगि : २०६४ :

४) छुट्टायाँ हेलागोड हागाकपुर २०६२

५) मैथिली लोक संस्कृति आलेख संग्रह २०६६

६) नाराको श्रुति देव्ये हिमाचको कांय सम्म आलेख संग्रह, प्रकाशक: साहा प्रकाशन, २०६७

७) मैथिलीक सपुन : नागा सभेस, २०७५, प्र मोन

८) मैथिली लोक संस्कृति : व्रिथि आयाम नेपाली आलेख संग्रह २०७५, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, नेपाल

व्रिथि:

- १) आणका यगुषा : २०३८, ढगकपुन ठेकयतिः २०४६
- २) समयको अगुनाठ पछ्याउदै आषेप संग्रह, २०६६
- ३) ठेकाग पुन (प्रयोग संग्रह)
- ४) समय-सगुन गविगुय संग्रह २०६८
- ५) अहाँ ढे कहँहुँ, अगुनगुना संग्रह २०७१
- ६) कोनोगक संगुनासमे ओहनायठ ढगिगी (ठकडाउठ डायुगी) (२०२० ई)

सम्पादनः

- १) मैथिली पद्यसंग्रह : गेपाठ नाणकीय पुनगुना पुनगुनाः २०५१
- २) ठवाक यान कवति संग्रह २०५१
- ३) गुनशुषी सुव माथुन दुवानी ठपिति यामुठकाव्य २०४८
- ४) गेपाठक मैथिली पुनकानतिः २०४४
- ५) मैथिली ठकगुनः गव गंगुनि एवं सुवगुन गेपाठ नाणकीय पुनगुना पुनगुनाः २०६१
- ६) अगुनगुनापुनयि मैथिली सम्भेठठ आ गेपाठः २०६५
- ७) हम अँठ गुम हगुदी कवति संग्रह २०६६
- ८) मैथिली गटक-संग्रह गटक संग्रह २०६७
- ८) महकवति वदियापति आ गेपाठ गविगुय संग्रह साहा

पुनकाशन, काठमाडौं, नेपाल, २०६८

१०) मैथिली लोक संस्कृतिसंगोष्ठी पुनविद्वेग, २०६८

११) लोकगायक सभेस गविग्य संग्रह २०६८

१२) लोकगायक सभेस, द्वागीय पाम्पुड गविग्य संग्रह २०७०

१३) लोकगाथा गायक दीनानदी-गविग्य संग्रह २०७०

१४) अवधी संस्कृतिसंगोष्ठी आयाम गविग्य संग्रह, २०७०

१४) सोहृगान गायक अनेषी ड पुनशुभ्र कुमान सहि 'मौग', २०७३

पुनयाग सम्पादक : गामधन सापुनाहिक मैथिली; आँपुन मैथिली द्वैमासिक

सम्मान:

१) नेपाल नाणकीय पुनपुन-पुनपुन द्वाला पुनपुन पुनथम मायादेवी पुनपुन पुनसुकान द्वाला सम्मानगति : २०५२

२) वृद्धिपुन सेवा संस्थान, दनगंगा द्वाला मथिली वृद्धिपुन सम्मान, २२ दिसम्बर, १९९६ ई

३) शेपुन पुनकाशन, पटना द्वाला शेपुन सम्मान, ३ नवम्बर, २००७ ई

४) मैथिली साहित्य पुनपुन, पुनपुन द्वाला 'वैदेही पुनपुन पुनसुकान',

५) अणुपुनपुनपुन मैथिली सम्मेठन मुम्बई द्वाला 'मथिलीपुन' सम्मान, २२ दिसम्बर, २००६ ई

६) मधुनमि गेपाठ द्वारा ' मधुनमि सम्मान' ,

७) येतना समिति, पटना द्वारा प्राप्ती येतना पुनस्कात २०११ ई

८) साहा पुनकाशन द्वारा ' साहा ठाक संस्कृतानि पुनस्कात २०६८

९) गेपाठ व्रद्धियापना शिषा, साहित्य पुनस्कात २०६८

१०) नाथपुन, छत्तीसगढ, गानन द्वारा मथिषि व्रश्चिनि सम्मान २०६८

११) मैथिलि समाज, लहिका द्वारा सम्मानगति
मधुवनी, वहीन ट, अप्नाथि २०१८ ई

१२) केशवराठ व्रायं सनिपा कथा पुनस्कात २०७० णेठ २१ गते, धनमुहाँ
उपग्यासक छेठ

१३) गंकी युस्वां वसुन्यना पुनस्कात प्राप्ता २०७१ आदी
दन्तगो सम्मान, पुनस्कात प्राप्ता

पत्नकागति: २०२७-२८ सं वेदेही सापनाहिक, णगकपुनयामसं
पत्नकागतिमे पुनवेसा णकनावाड

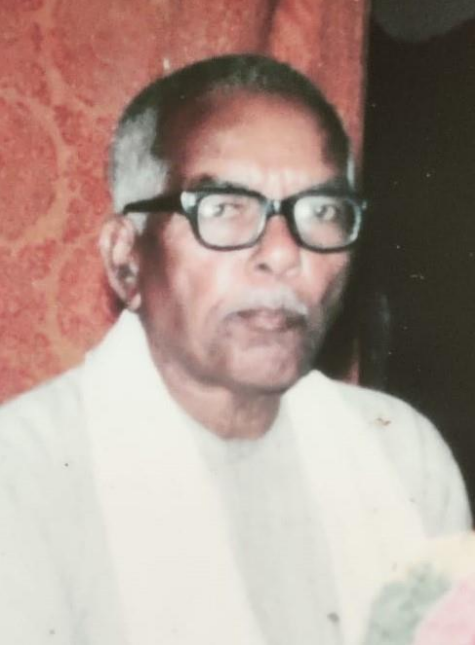
कागनापुन, गानप्यापत्न, नागनकि, अग्नपूसा न्पासट

दैनिकसगमे, अगवाश्न सगमे, साहित्यकि पत्नकि

मधुपनक, गनमि, पनविान, शक्तिषक नयना उगायन अनेकहु पत्न-

पत्नकिमे छेयना

व्रशिष: पूनव अय्यकष: साहा पुनकाशन, छेठिपुन, पूनव सदस्य, प्राण्म
पनषिड, गेपाठ, प्राण्मा पनषिडग, कमवादी



यत्न १- नामगुणम कापडि (श्रमनालीक पति।)



चरित्र २- दुष्यन्ती देवी (ग्राममणिक भाणा)



चरित्र ३- ग्राममणिक युवावस्थामे



यति ४-शुभमजी अपन पत्नी दधीया देवीक संगे



यति ५-वाभासँ दहनि (पहनि पुनुष आ एक वाद महिषिक व्रिनास)-
गनमणी, हुनक पत्नी, सातम जोड वाक नाम गानायस कपड, आठम
छोटका वाक संदीप कुमान आ नवम माहृषि वाक पुदीप कुमान, सवसँ
अंतिम जमाय मनोज यौधनी। गनमणीक छोटकी पुतौह अगशिा, पोता
व्रिक, जोडका वाकक पत्नी गनिमठा देवी, एकवादा गनमणीक वेटी
पुनमिषि कुमानी आ अंते महृषि पुतहु अंसु कुमानी गयियामे पोती
आदती, पोता अंति आ कोनामे पोती साक्षी।



यात्रिण द-शुभमनाजिक एकटा आन पानविराजकि यात्रिण (नाम उपनमे देप्पा
थीग्ल्ठ जा सकैए)

अपन भंगव्ये दारिणीविस्साउडवदिहावामावियोम पन पडाउ।

रूपोमशि मशिमा- नाम गनोस कापड़ि 'गुमन' के व्यक्तित्व



रूपोमशि मशिमा, शोधार्थी

नामगनोस कापड़ि 'गुमन' के व्यक्तित्व

श्री नामगनोस कापड़ि 'गुमन' पूर्व अध्यक्ष: साहा प्रकाश, पूर्व परिषद सदस्य, गोपाठ प्रजाप्रतिष्ठान, हाथ अध्यक्ष: मधेश प्रजा प्रतिष्ठान, मधेश प्रदेश, वरिष्ठ साहित्यकार तथा प्रकाशके जन्म वंशुषा परिवारक साविके वधयौडा गाउँ पाठिका ४ सम्प्रति हंसुन गगनपाठिका २ वधयौडा पूर्वटोठमे एकगोट सम्पन्न परिवारमे भेठ छठगो पति। स्वर्गीय नामगुठाम कापड़ि आ माय स्वर्गीया दुपरी देवीक छोट सगनाक रुपमे जन्म ग्रहण कएने गुमनके एकगोट भैया, एकगोट ददि आ एक गोट बहिन छनि ददिके ८६, ८७ वर्षक उमरमे, कछुमासपूर्व देहावसाग न गेठगो पति नामगुठाम कापड़ि वधयौडमे भान गहि पनोपट्टामे प्रतिष्ठिति समाजसेवीक रुपमे यिहए

जाईन छथाह ओ ननुकाथिन वधयौडा गाउँ पन्थ्यायनके उगागान तीग वेन पुनयागपन्थ गनिवायति मेथ छथाह पयासो वगिहा पेन, सुठवानी, पोपनी, ईगान सहति वधयौना आ जनकपुनयाममे सुवधि सम्पन्न पकी घन छथनी हुगका गामवासीसग आदिसँ 'अधिकारी' भातिके कहिक सम्बोधन करौन छथनी

गनमके वाउप्रकाठ

धनुषा जठिठक वधयौडा गाममे वकिम सम्पन जन्म २००८ साठ सुनावसमे जन्म गनहस कएने गनमके पुनानमकिक शिक्षा गाममे मेथ छथनी गाममे एकटा सम्पन्न गीनहन कन्हई साहुक दठानपन पुजठ मधुकन्हि गिवासी गनेसठठ कान्हाक यटसिगमे हुगका दुगु भाईकेजवदसुती पठओठ गेठ नहन्ही आगाकानी कएवापन नोकन वहदुनके कहि पाठशाठमे गेठ न मुदा कोनो वहन्ने जठ्ठीए आवा गेठ ई कान कछि दनि यठै एकन कानस नहैक मायक दुठान, पान पीन, पेठयुपा आ जपन मन ठाग ठाठैक न पाछा घूमिक नहि दैपठका गुनजीवठा प्यंगि, वटिगनहाआदी जे मुझ्यंस हेसन पाटी दुआशन धनी यठठ नकना वाद पंथायतेके यादव मडिठि इस्कूठमे गाम ठपियाओठ गेठ आ नपन ओनहि पढैत तीग कठसक वाद आगा पढवाक ठेठ जनकपुनक सनसुवती हई स्कूठमे गाम ठपियाओठ गेठनी। नकना वाद ओतनहिसँ मैटिकि आ गाना वहुमुप्यी कैम्पससँ मैथिली वषियमे पुनथम सुयोमीमे एमए कएठ। वाउप्रकाठहिसँ पढय ठपियमे हेसनि तथा वाकपटु मेठक कानसे हुगका सगगोटे वेस पुनम करौन छथनी आन्थिकि, सामाजिकि आ शैक्षिकि रुपसँ हुगक परिवार समाजमे पुननिष्ठि छठ ते हुगक वाउप्रकाठ सुप्यमय छथनी अय्ययनके कानमे जनकपुन आएवाह आ अपन सुटेशनसँ उतन अवस्थति पुसुतैनी घनमे नहि अय्ययन कएठ उगावाह घनसँ प्यादय समगुनी अवैठ छथनी आ गानस वनेवाठेठ गनसाया सेहे नप्यठ गेठ छथनी

गनमके शिक्षा

सवसं पहिने गामक यटसिामे अ आ ३ एसे ७ प्यांति वटिगानहा सव सपिठगि, पठठगिा नकनावाड पंयाप्रोके वेठ्हे मडिठि इस्कूठमे तीग वक्षा यर्ा पठठाहा नकनावाड गाममे आएठ एकटा गामवकिस अथकिाीक उाप्नेगामासं वावूणी हगिका हुगू गार्इके णकपुन सनसवणी हई स्कूठमे गाम ठिपिा देठकगिा णकपुनमे अपगे पक्की मकाग छठगिा एकटा गनसिािक संग ओ णकपुनके आवासपन नही सनसवणी मायप्रमकि वटियाठप्रसं एसएसीयर्ाकि शकिषा पुाप्न कएठगिा आ पुव्रीमाता पुामासपन् (आई ए), सगााक (वीए) आ सगााकोन् (एमए) यर्कि अय्ययग नामसवनुप नामसागन वहुमुर्ा क्याम्पस, णकपुनयामसं पुाप्न कएठगिा ड़ीयेगुड्क सड्पुयाससं नााव क्याम्पसमे सुनु गेठ मैथिी सगााकोन् वषियक ओ पहिठि वैयक छाान छठाह आ पुथम सुेसीमे सगााकोन् उतीास कएने छठाह। सवर्गीय नामगुठाम कापडि आ सवर्गीयि हुपुनी देवीक तेसन सगााक नुपमे णगुगुनहस कएने गनमके मैयाक नाम छर्ा सुकुमान कापडि, दटिीक छठगिा दाया देवी (णकि हठेमे सवर्गवास न गेठगिा) आ वहगिके सोगावर्ती देवी। गनमके वविाह कसिावावस्थामे यगुषा णठिठक गगवागपटी गाममे दठतीया देवीसंग गेठ छर्ा हुगका तीगगोट पुान आ हुगोट पुानी छर्ा णेड पुान नामगानासस कापडि णकपुन एकसपुेसके सम्पादक छर्ा आ नाणनीमि सेहे संठगुगुछर्ािं माहठि पुदीप कापडि गैपाठ प्पाद्य संसथागमे काय्यन छर्ा छोट संदीप कापडि उय्य कोटकि कम्युटनक गुाश्वकि एकसपुट छर्ा आ अपगे व्वावसाय कर्ैग छर्ा हुगू वेटीक वविाह न' गेठ छर्ा

साहित्यमे अएवाक पुेगामा

सनसवणी हई स्कूठमे अय्ययगान् नहठ समय हुगका सम्पुक् गेठगिा ड़ीयेगुसव नह ' ड़ीयेगुड्क ' संग। णे हुगक घनके पनीसेमे ग़ाड ठ' नहैन छठाह आ नााव क्याम्पसमे अय्यपग कर्ैग छठाह। ड़ीयेगुड्क सम्पुक्मे अएठक पस्य्याान् हुगक आकृषस साहित्यदिसि गेठगिा यदुपि

पत्न पत्निका, साहित्यिक उपन्यास तथा कथा कव्तिआदि पढवाक नुयमि हुनकामे पहनिहसिँ छथिओ ओ हिनदीक पुस्तक, पत्न पत्निका पढवामे नुयमि नमैत छथिओ पछानिओ धीनेगहनक पुनमाससँ मैथिलिमे विपिय उगाओह हुनक पहिठि नयना वाठकथा अछि रमागदाम वाठक ई कथा गत्काठिन समग्रमे पुनविठिति मैथिलि साप्ताहिक मथिलि माहिनिक १९६४ ई मे पुनकाशति भेठ छथि नहिया हुनक उमेर १२ वनषमात्न छथि नहिएसँ ओ अपन नामक पाछाँ ' श्रमन ' विपिय सुनु कएथिनि

श्रमनके वृधवसायिक जीवन

पत्नविठिन वसिववदियाठयक आंगकि क्यामपसके नुपमे १९७ नामस्वनुप नामसागत वहुमुर्पा क्यामपस, णकपुनसँ मैथिलि वषियमे पुथम श्रोमीमे सुनागकोत्तन (एम ए) कएने छथिओ श्रमन। मुदा ओ सनकानी सेवामे नहि गेओह। पत्नविठि मैथिलि शिक्षाम वशिगक गत्काठिन अद्यकष डधियेस्वन हा ' धीनेगहन ' हुनका वेन वेन पुनाद्युपापन पेशामे अस्वाक वासते आगनह कएने छथिओ मुदा ओ वसिववदियाठय सेवामे णस्वाक अपेक्षा पत्नकानिगि, स्वतगत्न ठेपन, अद्ययन, श्रुसंथाग आ पानामे नमठ नहवाक गनिमय कएथिओ। आन्थिके नुपसँ सवठ तथा व्यावहानसँ स्वयच्छन्द वियानक भेठक कामे ओ स्वतगत्न पेसा अन्थान् पत्नकानिगि आ स्वतगत्न ठेपन वधि युगथिओ।

श्रमन २०२६०२७ साठमे वैदेही साप्ताहिकके कान्याठय पुननिधिके नुपमे पत्नकानिगि पुनानमन कएने छथिओ २०४६ साठक गाणगीतिक पुनविठिन पस्युपान् देशमे वहुदिय पुनानगत्न स्थापना भेठ गिओ कषेनसँ सेहे व्ठोडसठि पत्न पत्निकासनक पुनकाशन सुनु भेठ। गाणधीसँ पुनकाशति एहि पत्न पत्निकामयन कान्तापिन पवठकेशनके कान्तापिन दैगिके सेहे छथि श्रमन २०४९ साठसँ कान्तापिनके णकपुन

संवाहनाक नूपमे काम कएउगी कागत्पि नूतकासन मेठाक सुनुक प वृषयनी ओ एहि पत्निकाक जगकपुन समायाननाक नूपमे काज कएउगी।

कागत्पि नूत गार्त्पि दैगकिसँ पहिगहि ओ मैथिलीक पत्निकानिकाक क्षेत्रमे स्थापति न युक्त छथाह। नूतकासक सम्पादकके नूपमे हुनक पहि पत्निका मैथिलीमे छठ जकन गाम छठ अन्यग (२०३० साठ)। ई पत्निका दस वृषसँ उपर यठठ मैथिली संसागमे महिनि वाहेकक पत्न कम्मे छठ वा गगाम्प्य छठ। एहमे अन्यग अपन पागतो कायामे नेपाठ गानक प्पगेको नयगाकानके आगा एवामे महत्त्वपूत नूतिकाक गन्त्राह कएउका। डा गीमगाथक शब्दमे एकन सम्पादक श्री गन्मनक सव्युष दृष्टिके कागसे, अपन श्रीमो कठेवने ई महत्त्वपूत नूत गेठ अछी। अन्यग ओहि समयक नूतकासन छठ जहिया नेपाठो वाहेकके पत्नके दना गहि कए जारन छठका नप्पन मैथिली सामयिक संकठन कहि एकन नूतकासन मेठ छठ। अगेको वाधा व्यवधानक वादे अन्यग यौदह पन्हुह वृष गकिठठ। नेपाठक पहि आ एम्पन यनी एक मात्न मैथिली साहित्यक शहिसकान डा नूतुठठ कुमान सहि मौन अपन नेपाठक मैथिली पत्निकानिकाः एकटा सन्नेकषाम शनिषक आठेपमे ठपि छथि। अन्यग (२०३०, आगुन)क मुप्य एद्वेश्प नेपाठमे हेनाएठ, मोतआएठ, अगयगिहल मुदा पत्निकानिसम्पन्न साहित्यकान ठेकनकि सवस्युष साहित्यके मैथिली संसागक आगा नप्पव छठेका। औन ओ वगिन नूतकासन यनी अपन घोषति उद्वेश्पक सग अनुनूप यठि नहठ अछी। हना ठग अन्यगाक वानह वृषक जीवग दानाक (२०३०-२०४५) उपठव्या ददटा अंक पत्निकक्ष अछी। अन्यग गन्मनक एकठ नूतयास आ साहसकि नूतयासे यठि नहठ अछी। ओ अन्यगाक मायमे नेपाठक मैथिली येथगा, गाषायी सामथ्य एवं नयगायनमतिके प्रथासमय नूतसूत कनवामे सश्वठ मेठ छथी। साहित्य अकादमी पुनस्कान नूतान मैथिली पत्निकानिकाक शहिस पुनस्कामे श्री अमनजी ठपिगे छथि। अन्यग नेपाठमे एकमात्न एहग

पत्रिका अर्थात् जो मातृभाषाक अन्यायाने अपन सम्पूर्ण शक्ति सम्पत्ति कएने अर्थात् अन्यायक एवम यन्कि योगदान उठेप्यनीय अर्थात्

नकावाट गोपी मासिक अंगुठी आ मैथिली द्वैभासिक अंगुठी वसि २०३८ साँसँ हुनक सम्पादन आ प्रकाशनमे सुनु भेए छए गामघन मैथिली साप्ताहिक जो आर्यनगिनगन प्रकाशित होए आवा १९९९ अर्थात् यो देशक पहिल मैथिली समाचार पत्र अर्थात् जो कनीव ३८ वर्षसँ गिनगन प्रकाशित न १९९९ अर्थात् एही साप्ताहिक मासिक मैथिली आ गोपीक अनेकौ साहित्यकाल आ पत्रकालक जन्म भेए अर्थात् स्थानीय गोपी दैनिकसभ सुप्रभात (२०५४) के प्रामाणिक सम्पादक सेहो ओए छएहा सम्पत्ति जगदपुन एक्सप्रेस (२०५५) के सेहो प्रकाशन करैत अर्थात्

पत्रकारिता, स्रजनगन एवमसंगर्ह ओ गोपी सनकालक साहा प्रकाशनके अद्यक्षक रूपमे सेहो काज कएने अर्थात् साहा प्रकाशनके शहिसमे ओ पहिल मनेसी अद्यक्ष भेएहा गोपी भाषा आ गोपी कर्मयानीसभक वोएवाए १९९९ साहा प्रकाशनके ओ अपन एक वर्षक कालकालमे कायापट क देने छएहा पहिल बेग गोपी वाहेकके दोसर भाषा मैथिलीक पुस्तक सेहो हुनके कालकालमे प्रकाशन भेए छए गोपी साहित्यकालसभक यत्निक संग मैथिलीक महाकवि वद्विद्यापतिक यत्न सेहो प्रकाशन करैएगी साहा प्रकाशनके अद्यक्षक पदपन आसौग १९९९ काए हुनका गोपी प्रजा प्रजाषिठक प्रजापन पत्रिष्ट सदस्य गद्यिक कएए गेएगी नकावाट ओ साहा प्रकाशनसँ 'नाजगामा ए' प्रजापनपत्रिष्ट सदस्यक रूपमे यात्रिष काज कएने छएहा प्रजापनके रूपमे ओ मैथिली लोक संस्कारिउपन उठेप्य काज कएएगी आ करवैएगी हुनक सक्रियाने सहेस, दीगमदनी, जटजटनि सदस्यक लोकगाथा, लोकगायसभक

वर्षिप्रभे अय्यप्रभ अगुसंयोग, ऐय्यन आ पुनकाशन मेथ जो ठेक साहित्यिक अगुसग्याताक हेतु सगुदुन सामग्रीक रुपमे नेपाठ मानने मान्य अछी

गुनमन भाषा, साहित्य, संस्कृतसिंहाई साहित्यिक पुन्यः समपुन्य व्रिधिमे युनहान ठिपिन आएठ छथी एकना अगुनिकुन ओ उय्यकोटीक अठोगुनाशुन आ यतिनकाल सेहे छथी एय्यनयनी गुनमनद्वाना ठिपिन जोठ मैथिली, नेपाठी, हगिदी आ अंग्रेजी भाषाक कनीव ५० गोट पुस्तक पुनकाशनि न युक्त अछी हुनक टटका पुस्तक अछि मथिथिक ठेक जोवनः ठेक सगुदुन एकन वमोयन जनकपुनमे मेठ जाहिमे पटनासं डा नमानगद हा नमस, कोठकानासं अशोकजीजी, दनगंगासं डा बीमनाथ हा, यगुदुनस ठागागन काठमाण्डूसं नेपाठ पुन्या पुन्यपिठनक कुठपतिगंगा पुनसाद उपेनी आएठ छथिह हुनक ऐय्यनी एय्यनहुं यठिरे नहठ छनी

मानसम्मान

गुनमन मैथिलीसंगहि नेपाठी साहित्यिक सेहे पुनसद्विध साहित्यिकान छथी साहित्यिक पुन्यः समपुन्य व्रिधिमे ओ गनिगन सङ्गानान छथी एहि कानामे ओ मैथिली आ नेपाठी दुनू साहित्यिक पुनस्कान आ सम्मान पुनपन कएने छथी नेपाठ नानकिय पण्यपुनपिठनद्वाना पुनदुन पुनथम' मायादेवी पुन्यापुनस्कानर०पर (१५००००)सँ ओ पुनस्कान छथी नहनि व्रिध्यापनि सेवा संस्थान, दनगङ्गाद्वाना' मथिथि व्रिधिनानि' सम्मान, शैय्यन पुनकाशन, पटनाद्वाना' शैय्यन सम्मान', नेपाठ मैथिली साहित्य पुनपिठ, जनकपुनद्वाना' व्रिदेहे पुनपिठ पुनस्कान', अगुन्याष्टनिय मैथिली सम्मेठन मुनवईद्वाना' मथिथिनान' सम्मान पुनपन कएने छथी न मधुनिमि नेपाठद्वाना' मधुनिमि सम्मान', येनगा समति, पटनाद्वाना पान्नी येनगा पुनस्कान, साहा पुनकाशनद्वाना साहा ठेक संस्कृत पुनस्कानर०दुद आ नेपाठ सकानद्वाना स्थापनि व्रिध्यापनि पुनस्कान

कोषद्वारा वृष २०६८ के मैथिली भाषा साहित्य पुनस्का २०६८ से ही प्रकाशित करने छथि र आय नासिके उक्त पुनस्का २ मैथिली साहित्यमे प्रदान कए जायवै सन्वायिके नासिके पुनस्का २ अर्था (२०६८), नायपुर (छत्तीसगढ, गाना)द्वारा मैथिली व्रिगिनी सम्मान (२०६८) मैथिली समाज, नहिका (मधुवनी, बहिन, ८ अप्रैल २०१८) नेवानी भाषा साहित्यिक संस्था केशवराव वाम्य सनिपा कथा पुनस्का (२०७० जोड २१ गी), हुनक धनुहा उपन्यासके छे १ पयास हजानक गंकी दुस्रां वसुन्वना पुनस्का प्रकाश (२०७१) उगायन द्वाजने सम्मान, पुनस्का प्रकाश एका संगहि हुनका पान्त्रिणी प्रकाशिन, सोसोटिया सन्वाहिद्वारा 'पान्त्रिणी सम्मान' सहित द्वाजने सम्मान आ पुनस्का प्रकाश छनी

सामाजिक क्षेत्रमे सक्रियता

गामनोस कापडि 'गामन' के मुख्य परियोजनाकोट साहित्यिक आ कुसुम प्रकाशक छनी मुदा ओ सामाजिक आ नाजनीतिक क्षेत्रमे सेहो ओतने सक्रिय छथि नहिविके जागकारी वहुन थोन ठेकके छनी साहित्यिक संस्थाके रुपमे ओ मैथिली भाषा, साहित्य, कथा, संस्कृतिक सेवा क रहै छथि न व्रिगिनि संघ संस्थामे संगान नहिन भाषा, साहित्य, कथा, संस्कृतिक संस्थागत विकासमे सहयोग क रहै छथि नहिन नाजनीतिक क्षेत्रमे सेहो हुनक अहम योगदान छनी नाजनीतिक कटौत गाउँ पञ्चायतके उपाध्यक्षके रुपमे गन्वायति न' ओ गाम पञ्चायतके विकास गन्मासमे अहम योगदान देने छथि न अपन पुस्तकी गाम वधयौडमे अवस्थिति उच्च माध्यमिक व्रिद्यालयके व्रिद्यस्थापन समितिके अध्यक्षके रुपमे ओ व्रिद्यालयके शिक्षाक गुणसंग वढैवामे अहम योगदान देथनी

ओ मैथिली साहित्य उत्सव, नेपालक अध्यक्ष, नाराई जगजानी अध्यक्ष
 पुनर्निर्माण, जगजानीके अध्यक्ष, जगजानी भवति कथा पुनर्निर्माण, के
 अध्यक्ष, दीनागाथ शर्मा समाज कल्याण गुठी, जगजानीके
 सचिव, पुनर्काज महासंघ, यशुषाक नाट्यमि पाण्डे आदिके रुपमे सेहे
 उत्कृष्ट काज कएने छथी काठमाण्डुमे आयोजित सांस्कृतिक कर्मा
 गोष्ठीमे मैथिली भाषाक पुनर्निर्माण सेहे कएने छथि।

मधेश आन्दोलनमे योगदान :

पुनर्काजसंगहि ओ मधेश आ मधेशीक वीरिय, समस्या आ समस्या
 समाधानक उपायआदिपि नगिनत यतिन मनन कएत रहैत छथी २०६३
 साँठक मधेश आन्दोलनमे ओ अपन पुनर्काज गामघन तथा जगजानी
 एकसप्टेस दैनिकके माध्यमसँ आन्दोलनके पक्षमे जगजानी वगैरामे अहम
 योगदान देथी ओ स्वयं सेहे आन्दोलनके पक्षमे सङ्कल्प उतारैत आ
 अधिकारवाहिनसभक अधिकार सुनिश्चित कएवामे सक्रियता देथी
 ओतवे रहैत, मधेश आन्दोलनक समयमे शांति मडिया आन्दोलनके जग
 व्याप्या क रहैत छथि, ओ एकना नेपालसँ अगुवाक आन्दोलनक रुपमे
 पुनर्काज, कि कएत छथि, तपन वीरिय मेथि जे ओरुपक समर्थिके कोना
 अवगत कनाओत जाए समस्या ईहे रहैत जे ओ सभ ककना कहैत पन
 विश्वास क सकैत अछी तपन तप मेथि जे नगिनत उपयुक्तः पात
 ह्यताह आ हुनकासँ सम्पर्क कएत गेथि ओ तकाँ सञ्चारक कएने रहैत
 तपन घनघन वृषाक वीरिय पटना गेथि नाराई वगे मधेश आन्दोलनक
 कमाण्डो उपेण्टन प्रावणीसँ उगातन सम्पर्कमे छथिहोसत दिन मेमे
 अपन सम्वन्धके पुनर्काज क मडियाके यथाशो वजाओत गेथि हिनका यतिना
 छथि जे ओ सभ ककना नीसपोस कएत अछिमुदा तपन अति संक्षिप्त
 सूचना पन मसिड्या पनसभसभक जे प्रसूतिनि मेथि ओ अदुन छथि
 वक्ताक रुपमे नगिनत मधेश आन्दोलनक शिवाङ्क सुनौठकनि आ
 संपर्क कएथि जे ई आन्दोलन अगावक रहैत जावक अछि जे नगिनतसँ

एक गन्वक गागाकि वगि दैशक मूठवाने आव याहेन अछा जकना अदौसं अठग गप्पवाक वाज होश आए छै। पानकान सम्भेठक सञ्चलना गप्पव वुहमे आएठ गप्पव गोनका अप्पवाने ई समायाग ठागग पान्प्रेक अप्पवाने आएठ।

पुनथम मधेस आगदोठके अगुगव आ आगदोठके गानपग समाजमे पसगठ साम्पुनदायकि द्बगदके गनुगसाहगि कगैग सामाजकि सगभावक सगदहके आयाग वना ओ एकगोट उपग्यास ठपिठगि घनमूँहा। जकन मुप्य वषियवसुगु मधेस आगदोठ अछा एहि उपग्यासक हगिदी, गोगपुगी आ गेपाठि गीषामे अगुवाद सेहे ग' युकठ अछा एहि उपग्यासपग हगिका पयास हगान टकाक गंकी वुसुवाँ वसुग्यना पुगसुकाग पुगसुकाग गेटठ छगुहो।

गुथी आ सुवगाव

गानम वृयकगगिग जीवगमे गकि गकिग प्यायवठ आ वनामूडेठ कपडा पहगिगहगिग वृयकगि छथी आगथकि गुपसं सकुषम पगवगामे जगमठ गानमके वाठ्यकाठक धी सौप्य एपगहुँ वदियगमे अछा। मंहग मोवाईठ, कम्पुटग, क्यामना हुगक दोसग सौप्य थोका कैमगामे गीक श्योठे प्ययव आ एहि श्योठेसगके सुगकषगि गाप्यव हुगक वशषगना छगि। एकग अगगिगि ओ श्योठे गगिगाम, श्योठे ठेपगआदिकठामे सेहे गपिग छथी ओ अयुपुग आ गानम कगवामे सेहे वशष गुयगिगपैग छथी ओ गेपाठ आ गानगसंगहि यीगक सेहे गानम कएने छथी।

संदग-ग-

१) आग्य अगुगगो: ठोकगान डटकम: अगवाईग पान्पिका।
पुनकासग: कान्पकि २, २०७६

२) गामघन साप्ताहिक, २०४१ यैत १ गोक अंक सं।

३) मैथिली पत्रकारिताक इतिहास: श्री यशमनाथ मशिन अमन, मैथिली
अकादमी, पटना

अपन मंगल्ये इतिहासिता उद्देश्यामाभियोग पन पडाउ।

रङ्गीमनाथ हा- लोकगीतनपन समेकति आलोक



मीमगाथ हा- संपत्क- ७४८२०६६८५५ लोकजीवनपन समेकति आठोक

श्री गनमगीक साहित्ययास वृहत्सति छर्ग। कोनो प्पेन एकसुसति होइ छै, कोनो दुसुसति छै जे वऽ उपजाउ नाहमि तेसरो सुसति सुताए जाइ छै। ओहन प्पेन 'सोनाक टुकड़ी' कहवै छै। मुदा, हनिक प्पेनमे कोनो एहन सुसति छैके वै मनसिक जे उपजाइ गहि होइग, उपजाै गहि होइग। इहो सुनगे छए जे केहनो उन्वन नूनमि एकरोएक दनि उस्सन गऽ जाइ छै, जायन ओकन गमी सुप्पा जाइछै। मुदा, हनिक प्पेनक गमी तँ दनिगुदनि हनआएछे जाइत देखै छयिनि। एहन जमीनके की कहवै? होनाक टुकड़ी, पन्नाक टुकड़ी, मोतीक टुकड़ीजे कहिथियौ, सग छजतै। तै गे, वन उगयासो वसात वहिजाओ, तैयो हनिक यासक पयासो गाछ सग ऋतुमे उहउहाइते देखै छयिनि।

कव्रति, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, गविग्य, प्राग्ना संस्मनास, निपिनाण, शोध, समीक्षा, टिप्पणी, डाइरी आदिआदि, तकन ओनसँ अगवना यथी नहथ छथि, तकन छोन एयन वहुन दून छर्ग। वीयक जगहकें उगातान गयैत यथवाक छर्ग। से ई कऽ नहथ अछि। हम एकना मय्यागना सैह भावैत छयिनि। अपगे पूछव कोना? हम कहव तकन पुनास थकि ई पोथी 'मथिठिक लोकजीवन: ठोकसन्द्भन'। एते दनि मे जते: ई पढथथि अछि, जते ई देखथथि अछि, जते ई सपिथथि अछि, जते

इति प्रथमं अर्थात्, एकं दृष्टं तं अज्ञानं व्रिजिग्नं पोथी समभेदेष्वैव आवृत्ति
 180 छत्ति। एहि कृतिमि समटाक गयोऽ आगकिऽ नाप्ति दैवनि अर्थात्।
 अन्थात् एहि पोथीके ऐप्यकक एवा दगिक कात्प्रकौशिक ' 1पिपुट' भागि
 सकै छी।

एहि पोथीक 1यगा समक ऐप्यगयकृत् यागि दशकसँ उपेक होयवाक याहि।
 एतावता जाहि जाहि दशिमे जाके दू 1 घनि हगिक वौद्ध्यकि पुत्रेश गऽ
 सकैवनि अर्थात्, एकं दोस साक्ष्य तँ अवश्य ई कृति प्रसूत कर्तै अर्थात्
 ।

एतऽ व्रिय्यत्र व्रिय्यक संकेत भाग्य कर्तवाक पुत्रास कर्तै अर्थात्

व्रिय्य

साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भाषाशास्त्रिक, प्राकृतिक, शास्त्र
 1नीय एवं ऐकपक्षीय अर्थात्, एकं व्रिय्यक केद्वारे नेपाठानास्य
 समस्त मथिठिकषेत्नीय गूणोऽ आवृत्ति गेठ अर्थात्। ऐप्यकक दृष्टिक
 व्यापकता तँ व्रिय्यक व्रिय्यिता, गीतकषासक सूक्ष्मता, सोयक
 संप्रदाय, अत्रिय्यकृति गीतकता एवं गीतक अकार्यता गहिसे
 पुनर्माप्ति गऽ जाइत अर्थात्।

व्रिजिग्न ऐप्यक मय्यकाठिन गीतक उद्घाटक यगिता वृत्तक कर्तै छत्ति तँ
 गिहृगिया गीतक गीतप सेहे हृमैत छत्ति। एक दसि मथिठिमे पात्रप्राकिक
 कौतूहलपत्रप्राकिक योऽ कर्तै छत्ति तँ दोस दसि शशिगीतक व्रिजिग्न रूपक
 दृशगो कर्तैत छत्ति। ऋगीतक पत्रप्राकिके पात्रस, होनी आ वसन्तक
 उद्घास वँटै छत्ति तँ गंगाक पात्रगताक रक्षा एवं कर्मठगदीक सांस्कृतिक
 महत्तासँ पत्रिय्यो कर्तैत छत्ति। अपग ऐकसंस्कृतिक वैशिष्ट्य
 पुनर्काशनक क्रममे ऐकयतिरकषा, ऐकगृत्, (मथिठि आ गटागटगि)
 एवं ऐकदेवता (सधेस दीगगद्वी एवं गणा मथनी) के यगित्यया कर्तै
 हुगका ऐकगिक महत्ता देष्वैत छत्ति। गहिग, यगुषाक

मकल, हूँग, गुडशीतल, शूनीपंयमी, पनकिना, छर्षा तथा नामगवमी सग मथिठिक वसिषि्ट पावगतिहिनकेँ सामाजिक समसताक पुतीक मागेन छथी। यान्मकि सूथमे णकपुन, अह्युपासुथाग एवं दुहवी गढीक वसिष उठेप्य गेठ अछी। णकपुनक एक सुवपिप्याग णागकी मगदाने (गौठक्या) के गनिमाससमवग्यक गसिनुकी पुनामासक अभाव मागेन तार्हि दिसि अगुसग्यागक हेतु वसिगिग सनकाल आ णगताक य्याग आकृष्ट करैत छथी। ऐनाहिसक घटनाक कानमे कवषिक आ हन्षवन्धन केँ मथिठि आ नेपाठसँ समवग्यकेँ सपनामास पुष्ट कयने छथी।

नेपाठमे मोडठ वदियापनापिदावठीक पुसंग उगय तारिपन पाँय गोट अगुसग्यागमूठक गविग्य ठपिने छथी, णाहिमे ओकन प्योण एवं तकन व्यापक अय्ययनक आह्वान कयठ गेठ अछी। हुनक अनिकिन ठेककवा घाघ, कवीश्वरयगदा हा, कवयिडामामी मयुप, महाकान्य यान्नी एवं ठेकगाथा उद्यानक काव्य वमिन्स उपयोगी अछी। मैथिली कवतिा एवं पुनकानातिक संगही साहित्यमे गानी वमिन्सपन शुकसँ वयिान कयठ गेठ अछी। तहिना, एक गविग्यमे गानुगकक नामास आ ठाठेसक नमेश्वर यानतिक तुठगात्मक अय्ययन महवपुनास अछी। एक अनिकिन नेपाठसुथ मैथिलीक सामाजिक, नाणनीतिक, कषेत्रीय भाषागीतिक संगही शक्तिषागीतिक समस्यारकेँ पुनमुपनाक संग उणागन कयठ गेठ अछी।

अन्तमे ईहे कहव जे संवेदनशील साहित्यकाल द्वारा पुनाकृतिक आपदा गूकम्प आ कोनोनाक न्नासदीकेँ साहित्यमे समेटवाक दामतिवके कोना छोडठ णा सकै छठ, णाहिमे समपुनास भागवना तवाह गऽ गेठ !

एतावना वषियवसुठक संकेतसँ स्पष्ट हेइछ जे समीक्षति पोथी सग वन्गके पाठकक अपेक्षा पुनास कनवाक योग्यता नथैत अछी। सामान्य पाठककेँ एताव णगतव पुनापन कनवा ठेठ सात घाटक पानि पीवऽ पडतिग। अगुसाग्येनुसु

ओ ज्ञानपापासु गंभीर अय्येतागामक यन्त्रिणक हेतु अनेक वनिदु भेटाना
एवं हुनका ठोकनामे स्वयुयि व्रिषिपक आन अथकि ज्ञानिभासा जगौनगि।

समसँ ठागानवति तँ हुनू पानक ' ग्नमन' पुनेमी पाठक होयना जगकि अपन
पुनयि साहित्यकानक अगनिव नूपक दृशग होयनगि। अनेक देशमे वसठ
पुनवासी मैथि ठि समाजक ओ ठोकना, जे सग अपने मथिठिमैथिठिक
गानमिमय अतीन एवं उज्ज्वल वननमानक गुणगान तँ सुगैठ छथि, कनिनु
अपन यनोहनके जाननिह सकठ नहथि, नगकि सगक हेतु तँ ई पोथी मथि
मथिठि डान्नेकटनी कही सैह थकिना। हन्ष अछिजे अमेनकिक मथिठि सेटन
अपन पुनकासनक स्त्रीगामेश सन्वथा उपयुक्त पोथिसँ कयठक अछि।

अपन मंगवृधे दतीनाठिसना उडवदिहावाभाठियेठ पन पडाउ।

रूपवर्णन कुमान भस्मि- नामशोस कापडी' श्मम' लीक संग साक्ष्णकान



वर्णन कुमान भस्मि

नामशोस कापडी' श्मम' लीक संग साक्ष्णकान

१ नाम शोससं श्मम कोना वगणुं ?

(१) ई गप थकि हईसूकूठका जप्यन मैट्नीकिके पनीकूपामे श्वाँन्म गनवाक समग्र अष्टक न कछि मतिन कहउगी जे गाम एहिमे गनवैक ओ सथायो गऽ जाएता हम ' गनमन' उपनामसं गद्य पद्य ठपिँन रही। गेठ जं एकरा श्वाँन्ममे ठपिँदिवैक न ' गनमन' हमन सथायो उपनाम गऽ जाएता। आ ताहि वीठ सं हम एकरा ठपिँगे रही। मुदा हमन पुनयागाय्यापकके ई गहि पयठगी ओ नकरा कटौन हमना गकि जकां शुककानठगी सग याहना है किकिपि वग जाए।

पद्यपि ओत हमन गाम न काटिँठ गेठ, मुदा हमन मोगमे उऽठ जे ठकष रहए से एकटा संकल्प नुपमे नुपानगीति होश ' गनमन' उपनामक संग नयनाशीठ रहए। आ आर हमन संग एहिनिहें जूऽठ अछि जे मैथिली मे जं ' गनमन' कही न पुनायः लोक हमने वुहैत अछि।

२ नाटक, गंगमंय, गीत आदिके नाम गनोस साहित्यसृजनक गनमनक कोना वगछुं ?

(२) हम कहियुिकठ छी सुनुएसं ' गनमन' ठपिँन रहैछुँ। पुनायः नहिया हमना ठागत रहए ' गनमन' सं जते नाग गंगक वोच होश छैक ओ हमन काँय मोगपन हवी गऽ गेठ छठ। नएँ गीत हो, नाटक हो अथवा साहित्यक अग्र्य वधिया। हम गनिगत ' गनमन' उपनामक संग ठपिँन रहैछुँ।

३ सुगठ अछि लोक गीत आ अग्र्य गीतक कैसेट सेहो कपने छी ओकरा पनासिाम कहु ?

(३) हम व्ययेसं गीतक पुनति आकर्षति रहैछुँ। हईसूकूठमे नहैत आऽ पनवाक एकटा गीत संग्रह ' जवागीक दगि' नामसं गकिठगे छैछुँ। जे जेठे सृष्टेशन पन एकटा गायक द्वारा गाओठ जाश छठ। वादमे हमन वहुतो गीत पुनसद्विध गेठ। गेपाठी शक्तिम ' सीता' मे हेनी गीत पूव यन्यति अछि। नहिया मैथिली टेलीशक्तिम ' एकटा आओन वसगत' मे दूटा गीत शक्तिमांकन गेठ जाहिमे ' सपनी हे सावनके वृग्न हिसी काशी ठेकपुनियि रहए। कछि वृष पुनव

'अनपिन' नामसं टं गोट जीतक एवम वहात केरहूँ जे भडियौ एवम के नुपमे श्रुतावीय पसीव कप्रथ गेथ। हमन अपन पूटयुव यैवथ अर्था 'भूयुक्ति' मथिथि' नाहिमि हमन आनो आनो जीत सभ नाप्यथ अर्था

४ अपन साहित्य साधना, कथि आ सांस्कृतिक साधनाक दस्तावेजी सकूथ देवाक आवश्यकता कोना वृहृथुं ?

(४) वेपाथमे पुस्तक प्रकाशनक अभाव रहैका जहियौ हम थपिव श्रुत कप्रने नहि आंगुनपन गन जोग थप्यक रहथि। ताहूमे पुस्तककारिक न रहिये। सभ कतौ वे कतौ नौजगानीमे थगत छथाह। हम जं कति नाहिसि मुकन नहि, पुस्तककारिक थप्यक रहथुं। आ आर पयास सं उपन पुस्तक प्रकाशति नऽ सकूथ अर्था आ से व्रिगिगि व्रिथिके। हमन सदैव माग्यना अर्था अपन यगिगि मगनके दस्तावेजी नुपमे नाप्य देवाक याहि। पाठकके तकन मूठ्यांकन कन देवाक याहि। अपनेसं अपन थप्यन वा व्यक्तित्वके माथ पन यथा क नाप्यव उयति गहि।

पुसाहित्य, सगिमा आ समाजक सनोकारके गकारन गहि जा सकैछ। एहिमे श्रुतिम गनिमासक भूमिका केहन ह्यवाक याहि ?

(५) साहित्य सगिमा आ समाज एक दोसनाक अगिगि थकि। एक दोसनाक व्रिगि ककनो भोगन गहि नऽ सकैछ। साहित्य जहनि समाजके सयेन कयैत अर्था, सगिमा सेहे सामाजिक सदभाव आ प्रेमके स्थापति कनवाक माध्यम होइछ। नाप्यन जगन साहित्य अपनवाट छोड़वाक गथनी कयैत अर्था, सगिमा सेहे गीक सगदेस प्रवार्ति गहि कऽ पवैत अर्था। तँ श्रुतिम सोद्रेस्य आ सगके संगे थ यथवाक सामथ्य नाप्यगहि। ह्यवाक याहि आ नाहिमि साहित्य ओकना अर्थ प्रदान कयैत अर्था।

दमथिथिके ठेक अवदानके संरक्षति कनवाक थेथ श्रुतिम गनिमासक महत्व कतेक ?

(६) हम पहिने कहै अछि समाजक पूजठ यतिनास थकि श्रुतिमा एग मथिठि आ मैथठि समाजक जीवण पद्वता, ओकन व्यथा कथा, हास पराहास सगक संगोनक संग श्रुति वगन न ओकन महता अपने आप समाजमे स्थापति नऽ जाएता।

७ श्रुति गनिमासक दृष्टाएि पुनौनायाम, जगकपुनयाम आ सीतामासी प्रथेष्ट सूटगि मागठ जाइछा माता जागकी कहाँ यनी एहि ठेकेसगमे जागह पौठगि अछि?

(७) देखू ई न जागकीक वषिय मेठ जे मां जागकीक जन्मस्थठि सगक पराविसमे श्रुति गनिमासक कतेक संभावयता छैक आ तकर उपयोग कतेक कथठ मेठ अछि। ओना श्रुतिमासक ठेकना एहि ठेकेसग पर गनिगत सूटगि कतेक अएह अछि। मेठ ओकन वषिय वस्तु, मां सीताक जीवणपर आयाति गहि हो। नेपाठिमे श्रुति वगठ छठ सीता। मुदा ओ जगकपुनक पृष्टगुर्मा पर गवकथाक संग पैघ वजेठक श्रुति छठ। हमन गीत एहि श्रुतिमे नापठ जेठ छठ। आइ काठहि जगकपुनयाम जागकीमंदिनि उगायतमे एकटा नेपाठि श्रुतिमासक सूटगि एकमास सं नऽ रहैठ अछि। गाम अछि जागवत गीता। मुदा कथा कहि आने छैक। काठहि पुनौनायाम जेठ नहि। ओत कहठ जेठ जे एत सूटगि हेइत नहि अछि। कोनो गडियौ अथवा सन्ट श्रुति आदिक। मात नानायामकाठिण यतिनाके ठऽ श्रुति वगठ हो हमना ज्ञान गहि अछि।

दोपाठक श्रुति उद्योग आआ काठमासुठमे गायक गायिकाक संग गीतक गामुडन अछि। ओहिसि मथिठियठ कहाँ यनी ठागावति मेठ अछि?

(८) नेपाठिमे गीक श्रुति उद्योग छैक। हं, एकनाठेठ कोनो श्रुतिमासीठि गहि नऽ पौठक अछि। नएँ एकन सूटगि एहिना वौआ वौआ कऽ कथठ जायत अछि। देनो कठिका छथि, दनानो गीत वगैठ अछि। एकसं एक गायक छथि। मुमवई यनीजा कऽ श्रुतिमास पुनोसेस हेइत छैक। मानिय गायक गायिकासं गीत

गवाओठ जास न्छैका ङं कऱ उदतिगानायासाणी गेपाषीए छथिं कही हुगको सं
गीन गवाओठ जास छगही नप्यन एहि सम्पुडसुट्नीजसं मथिषिज्यथके की
उपठवर्धा न गोठमोठ शव्दमे कही न शूग्या कोनो सुथाग व्रषिषयन शूटगि कऱ
ठेव अथवा कोनो मथिषिज्यथके कठकानके छोट मोट गोठ एऱ उपकान कऱ
देव समगानुपे ' ठागान्वरि' क सुनेसीमे गहि आगठ जा सकैछा हं नप्यन एक
आयटा सुठिम आएठ अछि जनुन जाहिमे मधेशक यन्त्रिके आगां ठावा कथाके
ओजग देठ गोठ अछा।

दंआयुगकितानक अन्गठ पुनगाव आ अपसंस्कृतिकि पनविश सगिमाके दोषी
माणेन अछापहना सुथितिमे मैथिली सुठिम गनिमास कोना ह्यवाक याहि ?

(दं) आयुगकितानक नामपन जाहि नहै सुठिमके कथानक आ अहिनग पहिनगके
गवनुप एऱ देठ गोठ अछा, ओ सन्वथा यतिनगीय व्रषिय अछा नप्यन दन्सकके
अपना दिसि घयिवाक ठेठ आ वाक्सअश्चिसि पन पाऱ असूठके ठेठ मान्ण एकन
उपयोग गऱ नहठ अछा एहन थानासा ङं वगैठ नहन न नीक सुठिमक गुंजायस
कम गऱ जाएना मोजपुनी सुठिमक वढेठ उठाक पाछांक कथासं मैथिली सुठिम
गनिमाना ठोकनके शक्तिषा ठेवाक याहि, गकूकठ कक गहि, ओहिसिं ङं कोनो
गकानान्मक गन्व अथैठ छैक न वर्या कऱ नहवाक ठेठ। हमना सगक अपने
समाजमे वहुनो एहन व्रषिय अछा नकन उठाग कऱ दन्सक वीय आयठ जा
सकैठ छैका नकना ठेठ व्रषवसायिकि गनिमाना, गनिदेकक जनुनगि छैक जे
मैथिलीमे गहि अछा कछि वगठ, यठवो कयठ सेन जे हुसठ न सम्हनठ गहि।

१०अपन महत्वाकांक्षी साहित्य आ सांस्कृतिकि पान्नाक मुप्य्य मुप्य्य
अंशक वन्मन कनी?

(१०) साहित्य आ संस्कृति हमना सगक पुनास अछा जाहि पनविशमे हम
काज कनैठ छी नाहिमे न आन एकन जनिमेवानी वढा गेठ छैका हमसग एहि
पक्षके आगां ठयवाक ठेठ पनविद्वधनापुनवक ठागी।

रुद्र साक्षरका- दगिशयण्ट- गोपाठ



साक्षरका- दगिशयण्ट- गोपाठ

मैथिली पत्रिकागिा अग्रगामे अपन अगुहान देय्यदिय्यिपुस होएवा ठेठ करैग
छोःवनिषिड समहतिप्रका, सम्पादक श्नी नाम बनोस कापडि ब्रामन

आवक दृष्टिमे श्री गाम नगोस कापडि ग्रामन कोनो परिययके मोहणाए गहि छथी विक्रम सम्वत् २००८ साठमे स्व गामगुठाम कापन आ स्व दुप्यगी देवीक सगनागकनुपमे धनुषा जाछिछा, वधयौना गाममे जन्म छेने श्री ग्रामनक एम्न धनी गीन दन्जण वनिनिग वधिक पुस्तक प्रकाशति छगहि न जगकपुन एक्सप्रेस दैगकि(गेपाठि), गामघन साप्ताहिक(मैथिली) आ आँजुन द्वैमासिक(मैथिली)के प्रदान सम्पादक, प्रकाशकक हैसियतसं संलग्न छथी गेपाठिय मैथिलीमे सशक्त हस्त्राक्षक नुपमे स्थापति श्री ग्रामन सम्पूर्ण मैथिली संसारमे अपन उपस्थितिके माजवृत्तिक संग गाय्य युक्त छथी एम्ने हनिक दोसरो नुप मैथिली संसार देपक अछि एकटा सशक्त गीतकालक नुपमे हनिक अपिण गडियि एवम हठेमे वहाय भेए अछि जे काखी यन्याति न नहए अछि ई अनेको वधिमे अप्पिन छथि मुदा मूठनुपसं ई कवा छथि आ एम्न धनी हनिक गीन गोट कवति संग्रह प्रकाशति छगहि आ यानि गोट कवति संग्रहक सम्पादन कएने छथि

वनिष्ठ साहित्यकाल एवं पत्रकाल गामनगोस कापडि "ग्रामन"सं पत्रकाल दृष्टिसयङ्ग गेपाठ क वीथ भेए वाचयतिक सासंक्षेप एत प्रस्तुत अछि

१ मैथिली पत्रकालिता कहिये सं प्रानमन कयए?

- हम २०३० साठमे अन्धना पत्रकाल प्रकाशन कयए, जे अप्पठि गेपाठ मैथिली साहित्य पत्रिक प्रकाशन नहैक आ हम सम्पादक नहि। वादमे हमने प्रकाशन कए पडए जे एक दशकसं उपन धनी जानी नहए।

२ मैथिली पत्रकालिताक युगौती आ सम्भावना केहन वुहना जाइछ?

- मैथिलीमे पाठकक अभाव छैक। पत्रिका विक्रम गहि छैक। जे केओ अपन उगानी आ प्रयाससं निकारति अछि न ओकरा स्तनीय नयना भेटैत गहि छैक। जाँ कि पत्रिका के वापान गहि छैक, व्यवसायिकनुपे ओक आव गहि याहैत अछि। परिभाषा: मैथिली पत्रकालिता अवह न क नहि गेए छैक। वहुंगी

मथिषिआवाप सग पत्निका कनोडी टकाक युगा ठगा गेठ
 पुनकासकके, मथिषिक गढमे ससनी गहिसकथ जहा यनी सम्भावनाक गप
 अछि कागो नहै उठसमय गहिएट काट विहाय वनैत नहु आ अग्रनामे अपन
 मुँह देपि देपि पुनसग्न हेरत नहु।

३ मैथिली पत्निकानिामे एतेक नास युगौती हेरतो छैन साहित्यिक पत्निकानिा
 नसु कोना आकृषति भेथै?

- कहहु गहल, अग्रनामे अपन अग्रहाय देपि देपि प्युस होएवा ठेठ।

४ आँपुन कतेक वृष सं पुनकासति हेरत अछि?

- वसिंर०४५ सऽ सुनु ग दस वृष यनीयठठ। छैन वग्न ग गेठ से पुनः २०७९सं
 पुनामभ गेठ अछि आ गनिग्न न जानी अछि।

६ पभ्यायनकाठमे पत्नपत्निका पुनकासग कनव न वऽ हुनह छै, अपने
 कोना उग आगा वढेथियै?

- ओहि समयमे पत्निका दना कना क पुनकासति कनव हुनह जानु नहै। नप्यन
 अन्यनाक पुनकासग संकठनक रुपमे भेठ नहए। आ से वसिंरुय सहित्यिक
 भाति। आगे पत्निकासव आयठ नहै, सव भाति साहित्यिक संकठनक रुपमे।
 नाजानग्न आ नाजाक वसिंरुयमे कागो सवद गहि आवा सिकैक नकन प्युआठ
 कन पडैका जहाँयनी समायानपत्नक वात छै न गामघन सापुनाहिकक
 पुनकासगमे हमना वऽ वऽ पापऽ वेठ पऽठ नहए। एकदसकक अथक पुनकासक
 वाद नकठिठन सीऽयि दामोदन नेगुमीक सहयोगसं २०३८ साठमे एकन
 पुनकासग संगव न सकथ। जे आई यनी गनिग्न न जानी अछि आ मैथिलीक
 भाऽरु सटोण पत्निका मथिषिामहिनिक वाद सवसं वेसी समय यनी गयिभति
 यठवठ पत्निका वनिसकथ अछि।

७ सनकानी पुनाऽना, वा न्नासक कोना अग्रुमवा

- पुनर्जाडनाक न रोहन कागो अगुभव गही, मुदा न्वास न गनिग्न वगथ नहैत छथि

८ महाकव्रि व्रद्धियापना गेपाथ पुनवास सम्वन्धमे अपनेक यागसा की थकि?

- कोनो गव गही गाजा शत्रिसहिक संकटकाथमे महाकव्रि व्रद्धियापना गानी ठपमिके सुनक्षान्थ गेपाथक गाजापुनामनियक ओहडिम थ अगठपनिह जो वानह वन्ध यनी नहैत। एही अवयमि श्रीमद्भागवतक विप्यांत, विपिनावीक नयना आ कोको सुपुसदिय गीतसगक पुनस्यन कएथगी जो आर शहिसमे हुनक पुनमासिक नयना भागठ जाश अछी साँय कही न समपुनस मैथिली साहित्यके गेपाथक ई पैय योगदान छैक।

९ गेपाथमे मैथिली पुनकागिता आ साहित्यिक अवस्था केहन वुहना जाईछ?

- पुनकागिताक न कहिए देउहु, नप्यन साहित्यिक वान कनी न ई पुनसुपेस जाजायान न नहै अछी। ओकमे कागो नहै साहित्य ठपन भात नहै नकना पुनकासक जोश अपुन न नहैक अछी, एहिस आनक गनोसे औपदानी प्येएवाक पुनपनाक अग्न होश देया पडनहै छैक।

१० अपने गेपाथ पुनजा पुनपिडनक पुनजा पुनपिडमे छथैह, पुनपिडनमे मैथिलीक दसा दसा केहन अछी?

- हम अपन अवयमि गनी कछि न सकथ कएथ, प्रद्यपि पुनजामे मैथिलीक कोनो अठस वजेत गही छैक। एहनो स्थितिमे ठाग आया दनपन मैथिली पुनकाक पुनकास आ नहिन। एक दनपन जाके मैथिलीक वनिग्न वधिपन संगोषीक आयोजन कएथहुँ हमना छोडत आरुवन्धसं उपन न गेथै, एककोटा कोनो कायकनमक सूचना गही अछी हमना पुनजामे नहव कछि गोटके वोह न गेथ नहनी। नप्यन एहनो अवस्थामे हुनका सगक आशयनपनक युपपी नहस्यमय अछी।

११ नाष्ट्नायि स्तान् पन पुनान्ना पुनान्निष्ठान् द्याना पुनकाशति आंगन मैथिली
पुनान्किक अवस्था की अर्था?

- जप्यन हम पुनान्नासनामे गेठ नहि नहिए एकन पुनकाशन कनवौगे नहि आ
हमन कान्प्रकाशमे अगेको एनहिसकि महत्प्रक वशिषाँकक पुनकाशन गेठ
नहिआ एम्हनो पुनकाशति होश नहि अर्था

१२ मैथिली पाठ्य पुस्तकक अध्यायन व्रिद्ध्याथ्यमुष्मी कएिकनै न नहि अर्था?

- ई न पाठ्यकृतन वक्रिस केनद्वारेके पुछवाक याही। माठ जँ गुणसुनगीय छैक न
वाजान न पएवाक याही। से कोनो व्रिद्ध्याथ्य एकना सूचीकान नहि क पाव नहि
अर्था आगे व्रिद्ध्याथीएके एप्यनका पुस्तकमे नुया छैका मैथिली भाषाक पुनान्ना
पुनसान एहिसि नुकठ अर्था, मुदा ककनो ठेठ धनसना

१३ अपनेक जीवनक कोनो अवस्तिमानीय पठ।

- हँ, २०पर साठमे जप्यन पहिठि मायादेवी पुनान्ना पुनसुकान हमना गेटठ छठ।
एहि दुआने नहि जे ओकन उगतीस वनूपुनवक नाश पयास हजान टकाक
नहि आ एहि दुआने जे मैथिलीमे आई काठही जेना गुट वना पुनसुकान वँटवाक
पुनमपना वक्रिसति न नहि अर्था, से एहिसि नगिन सन्वथा अपुनान्नाशति
ओ घोषामा एप्यनो नोभाँयति क दैछ।

अपन मंगल्ये दतीनीतिस्तान् उडव्रिद्धिवागमाथियोन पन पडाउ।

रुद्रशोक-नामगोस कापड़ 'ग्राम' क उपग्र्यास 'घरमुँहा'



अशोक-संपूक-८८८८२६८००१

नाममोस कापडि ग्रामन क उपग्यास 'घनमूँहा'

घनमूँहा उपग्यास २०१२ ईमे प्रकाशति भेठ अछा २१म शताव्दीमे मैथिली उपग्यासक प्रकाशने गति आएठ अछा वरष २०१२मे गौरीनाथक 'दाग', प्रदीप वहिनीक 'शेष', हेतुक हाक 'पानी', गीतना गेसु के 'शोण', मयुकांग हा के 'ममना जोगी', मगमोहन हाक 'कृष्ण सनप' के संग ग्रामनक 'घनमूँहा' उपग्यास आएठ एहिसँ पहिने हिनक कोनो उपग्यास नहि आएठ नहए नाममोस कापडि 'ग्रामन' गेपाठमे मैथिलीक जागठ-मागठ साहित्यकाल छथि हिनक कविता, गीत, गजप के संग्रह प्रकाशति अछा हू टा कथा संग्रह 'तोना संगे जएवौ ते कुणवा' आ 'हुगिरी उपन वेहे जंगल' सेहे प्रकाशति छनि गटक आ शोध छनि आठेय सम्हक संग्रह छनि पत्रांकिक संपादन ठगाना कऽ नहठ छथि पोथी सम्हक संपादन केने छथि

घनमूँहा उपग्यास गेपाठक मधेश आन्दोलनक पृष्ठभूमि पहिने युवती आ मधेशी युवकक प्रेमकथापन आयाति अछा कथा हे वा कविता प्रेम ग्रामनक स्थायी भाव नहठ अछा एहि उपग्यासक संवंधमे प्रसिद्ध साहित्यकाल गजगद्द वमिठ भूमिकामे छथि जे "आप्यागकाल ग्रामन आपना समग्रक प्रमासिक पत्रिसा आवए वठ पीढी दन पीढी यनि सुगएवामे उत्सुक छथि ते प्रसूत उपग्यास मूक शहिसक मुष्प सहेद नए गेठ अछा गजगैतिक घटनाक्रमक यानाठपन कठपनाक श्रुत, मृत्किक, सगदी सग आदिसँ समकालीन मधेशक जीवन्त मूर्ति तैयान कऽ समाजिक संवंध-वंधक गजमयनाक गंग ठेउए गेठ अछि जे हृदयहारी अछि उपग्यास ऐतिहासिक महत्त्वक दावेदान एहू कामे अछि जे ई पहिने गेपाठिय मैथिली उपग्यास थिक जे समकालीन गजगैतिक घटनाक्रमपन आयाति अछि"

मधेश क्षेत्त्रमे नहगहिन क्तोको पहाड़ी पनविान ओहडिमक जीवण ओ संसृक्ामि नथि-वसार्गिओ अर्था क्तोको वृषकृताओ पनविानक वीय मतिनाओ ओ सुगेह कायम गऽ गेओ छैका मधेश आग्दोषण तीव्र गेओपन ओहमि क्तोको अनापक ओ हसिक तत्त्व सकृत्पि गऽ जाश अर्था अपहनाम, छूट आदिक यंथा कऽ गेओ अर्था एहि उपग्यासमे मधेश आग्दोषणक वसिना्ण वनामण अर्था

उपग्यासमे नमेश उपाय्याय एक शक्तिषक छथी ओ पहाड़ी मूठ के छथी एहन क्तोको पनविान मधेशमे अर्था मधेश आग्दोषणकेँ ओकन सगहक समन्थण छै। आग्दोषणी ओ सनकालक वीय वहुन वेन समहौगा होश छैका माँगा सग मुदा पूना गही गऽ पवैत अर्था कछि ओक आग्दोषणकेँ हसिक वगवऽ याहैत अर्था ओक सनकाली दमन ओ शोषामसँ त्नासत गऽ गेओ अर्था कृमनशः पहाड़ी आ मधेशीक वीय वैमगस्य पनपि जाश अर्था हसिक तत्त्व सग आ छूट कऽवामे लागि जाश अर्था अही कृममे नमेश उपाय्याय केन वेटी कनिमक अपहनाम गऽ जाश छैका

कनिम जो एक पहाड़ी मूठक अर्था ओकना मधेशी कामेश्वर सहिक वेटा नाजीवसँ पुनेम छैका दूगू व्रिवाह कऽ याहैत अर्था दूगूक पनविानकेँ सेहे कोनो आपत्ता गै छैका उपाय्याय के दस आयु अजिगीती देवाक नहैत छगी एहि ओओ अपन मकाग वेया दैत छथी नाजीवकेँ ई ज्ञान होश छैक जो एहि अपहनाम उद्योगक सगगना ओकने वाप छैका ओ अपन माएसँ मोठी कामेश्वर सहिक व्रिककेँ जगवैत अर्था अगतः कनिम मुक्त होश अर्था नाजीव संग ओकन व्रिवाहक गनिमय दूगू पनविान कऽत अर्था उपाय्याय जो पहाड़ दसि घूर्ना जोवाक गनिमय केने नहथी से पुनः ओहिगम नहै जाश छथी एहिमे हुगक मतिन जगमोहन सहयोग कऽत छथिग। मकाग सेहे वक्तिगी गही होश छगी

एहि उपग्यासमे पहाड़ी आ मधेशी ओक सगहक वीय एकदम नहवाक कानमे आपसी मतिनाओ ओ गार्यानाक यथान्थ सेहे उमर्ना कऽ आएओ अर्था संगर्हा

क्षेत्रीय स्वयंसेवा आ विकास के समावाहक वृत्तिगत क्षेत्रीय मनुष्य आ ओकर मनुष्यता सेहे उजागर भेए उपन्यास कहै अछि जे वस्तुतः मनुष्ये स्वीकारिथि।

संघर्ष, आन्दोलन, अपहवास, छूट, प्रेम आदि घटनाक आधारी ठऽ कऽ वृत्ति ई उपन्यास रहस्य ओ गोमांयसँ गनै अछि संपूर्ण उपन्यासमे गीयकता वृत्ति नहै अछि। 'घनमूँहा' नाम के संवंधमे उपन्यासकार कहव छगिजे "घनमूँहा" नाम मैथिलीमे एहिसँ पूर्व कतौ आए छेइक से संग्रह, मुदा हमन एहि उपन्यासक केन्द्रीय पात्रक मगःदशा, अपन जन्मधरतीसँ उगाव आ प्रेम आ वसिस्थापक वावजूद अरसन भेटति जन्मधरतीपर दुमवाक अद्भुत असाह, सूक्ष्मता 'घनमूँहा' शब्दकेँ सात्थकता प्रदान करै अछि। तँए एकता गहि रूपमे छी से आग्रह"। वस्तुतः ई उपन्यास कहै अछि जे जाति, वर्ण, परियोग वृत्ति माने रहि नैएत अछि। माने नैएत अछि। मानवीय संग्रह, व्यक्तित्व, प्रेम, सदाशयता, भक्तिता, मानवीय संवंध, जुड़ाओ। एहि जुड़ाओ आ उगाओ संग जाऽ छेक नहै अछि। सह 'घन' थिक। मुदा एहि घन छेए मनुष्य आ मनुष्यता अपेक्षति अछि। एहि गम आर्वा कऽ 'घनमूँहा' मनुष्य अपनकेँ सात्थक वगा छै अछि।

अपन मंगल्ये दितिगीठिसगाऽऽवदिहवाभाठियेन पन पडाउ।

रुद्रादेव कामन-७० नाम गनोस कापडी "गनमन" : एक व्यक्तित्व



ठाठडेव कामन, संपत्क-०७६३१३८०७६१

डा० नाम मनोस कापडी "मनमन" : एक व्यक्तानिच

सुवनामचण्य ७१ वृषीय वधयौना गाम नविसी सुनी नाममनोस कापडी एक व्यक्तानिचि गही अपगे आपमे एक संस्था सग ठोक छथी ई वहुआयामी पुनर्गिा' क वगी साहित्यकान छथी हगिक जग्म २००८ संवत्, साउग मास नदनुसान ५ मई १८५१ कें नेपाठ देसक वगुषा जगि केन गाउं पाठिका वानुड - ४ वधयौना नामक गाममे गेठ छगही वृत्तमाग में ई नह्य छथी उप गगनपाठिका वानुड १ शत्रिपथ जगकपुनयाममे, जगय ओ पाँय दशक सँ अहनुगसि मैथीठी साहित्य ठेठ सेवा केनै अयठह अछी हगिक दादा नडू ठाठ पेसग मनोसथी क' पुनूनी दाया नहगी आ पुनूना नाम गुठाम व पुनूनवसू दुप्यगी

देवी केँ हू पुता कर्मसः सुकुमान आ नामनोस एवं एक पुत्री सोनावती
 भेठगी नामनोस कापड़ी जीक कसौन अवस्था मे धनुषा णिठक
 गजवानपट्टी गामक दठगिया देवी केँ संग व्रिवाह भेठगी, जाहि सँ तीन पुता
 कर्मसः नाम गानायाम कापड़ी- णकपुन एकसपुनस क' सम्पादक आ
 गानगीसँ सम्बन्ध, पुदीप कापड़ी - गेपाठ प्यादुप संस्थाग में कायग
 आ संदीप कापड़ी - उय्य कोटकि कम्प्यूटर ग्राहिकि एकसपुनस, एवं हू
 व्रिवाहति वेटी पुनमि छगही कापड़ी जीक साहित्यिकि गाम 'गुनम' शब्द
 यन्यति छगही वाठपनमे हगिक शक्तिषा - दीक्षा गामेक एक गनिहसग कगहई
 साहूक दठग पन मयुकनहि गविसी गामेश वाठ कर्मस जीक यटसामे शून्
 भेठगी हगिका पवगिहा णमिग णाथा आ णकपुन टीशगक अणानवाकिका
 पक्का मकाग नहग, गहई नहकिय सनसवती हई सुकूठ सँ मैटकि पास
 कयठह ओ नमिगवग वसिंवरदियाठय काठमांडू के अणानगान नामसवूप
 नामसागन वहुमुपी कयामपस सँ मैथिी वषिय(पहठि वैय) में एम ए, पी एय
 डि (माणद) यनकियगे छथी गेपाठक मयेशक सनकान अपग पुदेशमे मयेश
 पुनगुआ पुनपिठग' क गठन कय ठम्वति ऐ योणगके मंगनी पनपिद सँ मंगनी
 दैग हगिका संयाठग समतिा केन अय्यकष वगैठक हग साहित्य कषेनमे
 हगिक पम् कृति मथिठि' क ठेकगीवग; ठेक संदगक कछि मास पुनव
 णकपुन याममे वमियग भेठ छठ एहि सँ पुनवह ओ गेपाठ सनकानक
 गयिकुगामि साहा पुकाशन अय्यकष आ गेपाठ पुनगुआ पुनपिठगक पनपिद
 सदस्य ग' युक्त छथी

भाषा सम्वृद्धि ठेठ गुनमजी ओतुका मुप्यमंगनी वाठवाव नाउन जीके
 णांपग दैग एक समय वुहैगे नहथगि - स्थागीय कछि संघ, संस्था के उठठ
 मांगपन सहगुगुणी पुनवक वयिाग कयठ जाय आव मयेश सनकान अपग
 पुदेशमे मागुभाषा अथागक ठेठ एतुका
 संस्कृति, कथा, गाय, संगीत, पुनागतव अथकि अथाग हेतु काण
 आनठ केठका एहि व्रिवाग क' वकिसमे वाठ, हेनायठ, गुकाएठ पुनगिा

सवके प्योगकिय नकन संनक्षम, सम्वन्धनक संगर्हि, सम्मान आ पुनस्काक व्पवस्था ई पुनपिंडन कने कन, पुस्तकाकान पुकासन सेहे । पुनवे नामनोस जोके गेपाठ वदिया मैथिली भाषा साहित्य पातोतोषके सेहे गेटठ छर्ही हिनका नामे आनो अनेक पुनस्काक गेटठ छर्ही

गेपाठी आदि कवि वसकटा गानुक पुनथम कवतिा सँ पुनेनामा पावी ओ वग्न कोडनी औगर्शन युआँ नयठगी गेपाठ' क पहिठि 'क' सुनेमकि मैथिली भाषा में "आंजुन - पान्कि" केन वगिन उर शाठ सँ सम्पादन कनेन आवा 1988 अछा ओवकटा गनिकटा गननकिकटा' क शहिस कोन ओपि हन, सुनद्यांजुन नूपे - आणुक संनग्मे गानुके पुनानि हिनक सुनद्यांजुनि कवतिा पठैत पाठक गमिग्न न' जाईन छैका हिनक दीन्ध कवतिा ' गर्ही आव गर्ही' पाठ्य कनय योग्य पाठके वृहई छर्हीकथा वियेमे हिनक - नोना संग ओवौ ने कुणवा केँ मैथिली अकादमी- पठना सँ 1978 में पुनस्काक कयठ गेठ 1981गिजुठ संग्रह- मोनक पधठैत अयन-1973, गीन गणुठ संग्रह अपन अगयनिहान- कवतिा संग्रह 1970, नानी यग्नवती, गटक - एकटा औन वसंत, महषिसुन मुनादावाद, अन्तः कथा संग्रह, मैथिली संस्काकि वीथ, नमाउंदा- सांस्काकि विये संग्रह गेपाठी में आ हिनक " गर्ही आव गर्ही" केन मैथिली अनुवाद गयो अय गयो, मनु वनाणकी द्वाना कयठ गेठगी अछा कवतिा - वसिठ - वसिठसन, जगकपुन ठेक यतिन (मैथिली पेटगि), ठेक गट्यः जट जठनि (अनुसंधान) छर्ही हिनक सम्पादन कयठ - मैथिली पद्य संग्रह, ठावाक धान कवतिा संग्रह-माथुनजिक " न्निशुठि" पंडकाव्य, मैथिली पान्कानिा, मैथिली ठेकग्यः गाव गंगामि एवं स्वरूप - आठेप्य संग्रह वृहयन्यानि गेठ 1981 हिनक पुनमुप पोथी :- पुद्य नुमकि एसगन योयदा, हुगठि उपन वहेन गंगा, उाँ ० पुनशुठ कुमान सहि 'मौन' आ गवान्धन पुकासन सँ वहनाएठ' एगठिवापनस पोथी, सुठि पन इजोन पुकाशनि छर्ही मैथिली ठेक-संस्काकि विये

आयाम- नेप्राप्रा आ मथिथिक सपुन : गाणा सथेस - दीनामदनी, अहाँ जो
कहँहुँ, अगहनयिक याग, ठोक गायक सथेस (द्वितीय प्यासु), समयको
अगनाथ पुह्याउँदै, सीमा के आन- पान, योग- जो हम देपुथ (प्राणा
संस्मनास) केन जोना गँय छैका

हम सब मैथिली भाषी ठोक नाम मनोस कापड़ी नूनमन जोके जीवितयना
बाडियो एवम गमिगथपिति सुनिकीन कृत्य होश छी। यथा :-

१ अहाँ आवाकी छनकय हमन कंगना

२ आउ, आउ, आउ दठि थोठिकऽ आउ

३ प्रायि प्रासनाथ सादन प्रासाम प्रौ

४ मयथ आई हेनी हे

५ मनके नीनन दूद मनथ अर्था

६ वहमुआ हे, कनिदैहे गैहन केँ वदिई

७ नूनहुन नूनहुन वाजे पैणगिया हे

८ पावगि हमई जोनयिा

९ नापी केँ वग्वगमे मैया

नाम मनोस कापड़ी पछिनथ समाज में शनिष साहित्य सेवी छथी कोनू गौकड़ी
सूकूथ- काठेणमे गह केथनीा हनिक यना संसाज वोडनके दूगू पान पुव धूम
मयेगे छैक आ वृथापक सम्युदकि आयनास गुनहस कयगे छैका कोनू
पुसाकाथमे एकथम अय्येनाके पठवाक हनिका भादे माठगाथा अगनाग

पानि सिकवाक प्यगौट गँ अछयिासवासय पोथीक सँप्युँ पुनगा से हान्दकि
शुभकामना

अपन मंगल्युँ दगिीगिठिसगाउडवदिएहवागामाठियोम पन पडाउ।

रुदअपय अगुनागी- मैथिली भाषाक साहित्यिकान 'गुनम' हनेक वधिमे
पुस्तक प्रकाशन



अपय अगुनागी

मैथिली भाषाक साहित्यिकान गन्मन हनेक वधिमे पुस्तक प्रकाशन

नाम मनोस कापड़ गन्मन मैथिली भाषा साहित्यके प्रसिद्धि साहित्यिकान छथि। धनुषाके वाघचौडा गाम, जनकपुरधाम उपमहानगरपालिका वडा नम्बर १ आ हंसपुर गण्डापालिका वडा नम्बर २ के ७० वर्षीय गन्मन अय्यंगे साहित्यिके नयना आ पुस्तक प्रकाशनमे सक्रिय छथि। ओ कहैत छथि, मैथिली भाषा साहित्यिक क्षेत्रमे हम एकमात्र एहन व्यक्तिक छी जे पुस्तकालिके छी।

मैथिली भाषा साहित्यके क्षेत्रमे वृहत् लोक कथन यथैत छथि मुदा हुनकर मुख्य पेशा अग्रा अछि। ऐकनि हुनकर कहना छै जे हुनक प्राथमिक व्यवसाय मैथिली भाषा साहित्यके क्षेत्रमे ऐय्यन छै।

डा. धीरेन्द्रक काममे साहित्यिकान वर्गीकरण

जहियासँ जनकपुरक सप्तसूत्री हई सकूथे पढ़ैत छथि। जहियासँ गानामे प्रकाशनि वाठ पत्रिकि पढ़वामे नुया छै। गानाक पटना, कठकना, दिसि, मुंबईसँ प्रकाशनि साहित्यिके पत्रिकि हुनक घनक समीप जनकपुर जेठे स्टेशन पर पोथीक सटाए पर अथैत छै। हिनदी भाषामे वाठ साहित्य पत्रिकि जेना गानाक मुंबईसँ प्रकाशनि पत्रिका पत्रिकि आ दशरथासँ प्रकाशनि वाठक पत्रिकि पढ़ैत छथि। पढ़ैत मात्र गही, हुनक कठको नयना वाठक पत्रिकिमे छपैत छै।

ओही समय मे अपन घन अग्रा जनकपुर स्थिति नाम स्वरूप नाम सागर वहुउद्देशीय काठेजमे अय्यापन करयवैत प्रोफेसर धीरेन्द्र हा धीरेन्द्रके संपर्क मे आवा जेठि। ओही काठेजक नाजगीती विभिन्नक प्राध्यापक गानायाम परसाह सह हुनके घनमे कगिया ७५ कऽ रहैत छथि। डा. धीरेन्द्र ओतहि नियमिति अथैत रहथि। एही काममे प्रोफेसर हासँ संपर्क जेठि।

ग्रन्थमन्तव्यं कथासु ७ मे पद्वैत छथाह तन्मन्तव्यं हन्दि मे एकटा कथा छपिठगि
 एक गाम छठ इमान्दाम् वाठक आ हा कें देय्ठिठगि ओ कथा हन्दि मे छपिठ
 गेठक कामें गहि देय्ठिठगि हा कहठय्ठिठ गे कथा अपन मातृभाषा मैथिलिमे
 आगव तन्मन्तव्यं मातृ देय्ठिठ तन्मन्तव्यं मैथिलि मे अगुवाह क देय्ठिठ देठय्ठिठि आ
 पुनश्चेत्त सहेव एकना पाँगादि पाँगा सुधानादिठगि आ आइठठ छपिठि कऽ
 आग कहठय्ठिठिह।

ग्रन्थमन्तव्यं संपादित कथा दोस पप पन् छपिठि अगठगि तन्मन्तव्यं वाह
 पुनाहा मथिलि मथिलि गामक गामतसं पुनकाशति साहित्यिक पत्रिकाक
 संपादक सुधास श्रेयन् यौधनीकें पत्र छपिठि कथा छपवाक आगुह केठगि
 कछु दिक वाह पत्रिकाक गेगा गुरुकाक यौपाडि संग्राममे ग्रन्थमन्तव्यं कथा
 छपठि तन्मन्तव्यं वाह गामक कठकनासं पुनकाशति आम्प गामक पत्रिका मे
 (१८८८) गव हस्नाकषणक रूप मे हुगक छपिठि अगहनिया इगोनिया गामक
 कवति पुनकाशति गेठ।

हन्दि द्वाया छपिठ गेठ कवति आ कथा गामक वभिनिग साहित्यिक
 पत्रिका मे पुनकाशति होश नहठ। उँ उँ धीनेह्न् गहि नहितिथि न हम्
 सम्वगतः साहित्यिक गहि ग पवतिहुँ ग्रन्थमन्तव्यं उक्ता छग्हि।

साहित्यिके हन्त वधिमे पुस्तक

पत्रिकागि पेशामे सेहे सुनुआग केठगि आ साहित्यिक कषेठमे सेहे छपिठ
 नहठ। आव साहित्यिक हनेक वधिमे मैथिलि भाषामे पोथी पुनकाशति क युक्त
 छथि। कथा, कवति, उपन्यास, आठेयगा, नाटक, गविच, पान्ना
 संस्मनास सहति सव वधिमे पोथी छपिठे छथि। आइके दिकमे पन्सं उप
 पुस्तक पुनकाशति ग गेठ छग्हि।

हन्दि वग्न कोठनी औगाइत युवा गामक काव्य संग्रह, गहि आव गहि
 गामक दीन्घ कवति, मोमक पद्यठि अचन गामक गीत गणठ संग्रह, अपन

अन्यग्रहण, पुद्गलमूक एसाग योद्या नामक कविति संग्रह, अग्रहणिक याग गण्ड संग्रहक प्रकाशन मेठ अर्था मैथिली भाषामे छपिठ दीर्घ कविति गह आव गह के नेपाठी भाषामे गयो, अव गयो शीर्षकसँ नेपाठी भाषाक प्रसिद्ध साहित्यिकान मनु वज्जानी द्वारा अगुवाए कएठ गेठ अर्था । वाए मे ई दीर्घ कविति नेपाठ प्रजा प्रविष्टिग द्वारा प्रकाशति प्रजा प्रतिकामे प्रकाशति मेठ छठ।

तोना संगे जयवौ ने कुणवा, हूठि उपन वैह गंगा, एसी गायनस नामक कथा संग्रह प्रकाशति अर्था हुनक दावा छति नेपाठमे मैथिली भाषामे हुनक छपिठ तोना संगे जयवौ ने कुणवा पहिठ आयुगिक कथा संग्रह थिकि हुनक ईहे दावा छति ने ई कथा संग्रह वहिन सकारक सकारि संस्था मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशति नेपाठक पहिठ आयुगिक मैथिली कथा संग्रह छैक।

हुनक छपिठ उपन्यास घनमुहाके गोपनीक वरिष्ठ साहित्यिकान उमाशंकर द्विवेदी गोपनी भाषामे आ गानके यन्यति साहित्यिकान उपन्यास कुमान सहि मौरि हर्दि भाषामे अगुवाए कए छथि। गनमन स्वयं कहै छथि ने मयेश आनंदेठक समयमे वयोसँ जनकपुरमे रहनि पहिठि समुदायके कोना मयेश छोड़्य पड़ै छठ तहि पन छपिठ ई उपन्यास हुनक प्रसंगक कथिकि।

कठको गटक छथि मैथिली भाषामे गनी यज्ञवती, एकटा आओ वसंत, महिषासुर मुदावाए, मैया अष्टै अपन सोनाण, सुठि पन शोण नामक गटकगोपनी द्वारा गटक प्रकाशति छति आ मंयति हेरि नहै छति यन्महै ह। वहिठ हुनक छपिठ गटकक अगुवाए नेपाठी भाषामे गनमनका सन्वसनेषु गटकहुन नामसँ कए छथि।

एक आनिकि वनिनि वयिण संग्रह, गविय संग्रह, यागना संस्मरण संग्रह सेह प्रकाशति कए छथि समय समय पन कठको पोथी आ नयनाक संपादन कए आवि नहै छथि गनमन कहै छथि ने हुनका द्वारा छपिठ

गेठ कविति, नाटक आ कथा गोपाठ आ गानामे सूकूठ आ वशिंववदियाथय सानिय पाठ्यक्रममे सामिठि कर पढाओठ जा नहठ अछथि

साहित्यमे योगदानके काममे गोपाठक सनकानी संस्था गणकालिग गोपाठ गानकालिग पुनर्जा पुनर्पिठग द्वागाना पुनथम मायादेवी पुनर्जा पुनस्कान(१५००००), वदियापति सेवा संस्थाग दनगंगा द्वागाना मथिठि वशिठिसमभान, शेप्यन पुनकाशन पठगा द्वागाना शेप्यन समभान से समभानति करठ गेठ छथि नहनि मथिठि साहित्य पुनपिठ गणकपुन द्वागाना वेदेहे पुनगिग पुनस्कान, अगननाष्टनीय मथिठि समभेठग मुंवर द्वागाना मथिठि गन समभान, मधुनीमा द्वागाना देठ गेठ गोपाठ मधुनीमा समभान, येगना समिति पठगाके यागनी येगना पुनस्कान स समभानति गेठ छथि

नहनि साहा पुनकाशनके साहा ठेक संस्कृति पुनस्कान, वदियापति मथिठि भाषा साहित्य पुनस्कान, पान्वती पुनपिठग सिसौटिया सनवाहे के पान्वती समभान स समभानति करठ गेठ छथि

गनम गोपाठक पहिठि मथिठि भाषाक साहित्यकाम छथिठे गोपाठ पुनर्जा पुनपिठगक पुनपिठक सगा सदस्य वगवामे सशुठ गेठह आ वादमे पुनपिठक सदस्य वगठह नहनि साहा पुनकाशनके अध्यक्षके रूपमे गनम पहिठि मधेशी व्यक्तगि गेठह ओ अपन छोट कान्यकाठमे गोपाठि भाषाके अठवे मथिठि सहति अग्य भाषामे पुनकाशन सुनू केठगि मथिठि वाठ कथा संग्रह वगयिक गाछ हुनक कान्यकाठमे पहिठि वेन साहा पुनकाशन द्वागाना पुनकाशति गेठ आ ठे साहा पुनकाशनसं पुनस्कृति सेहे गठ छठ

एठवे गह, काठमांडू आ गणकपुनमे ३ टा अगननाष्टनीय मथिठि समभेठगके सशुठगानुपुनक आयोजन करठगि अछथि

हुनकऽ कहव छगहठे मथिठि भाषामे ठपिठि क समाजके वदठगा या पुनविगन कगना वहुन कठगि काम छै हुनक कहव छगिठे पुनकाशनक अठवामे मथिठि

भाषाक साहित्य गहि सुठठ सुठठ अछि, न पुनकासक ठोकनकि अभावसे पाठक यनी गहि पहंयि पवैत अछि।

गुनम कहैत छथि, "एहन स्यथिनि अछिजे सुवयं ठपिनिहिन ठोक सुवयं पढ़ैत छथि वा अपन गोठक ठोक पढ़ैत छन्हि, एकना कीनकि पढ़वाक कोनो आदनि गहि अछि।" मुश्तमे वांटवाक पुनवर्तनि अछि मैथिली भाषाक जनसंख्या वसिाठ अछि, मुदा मैथिली भाषाक सुनीयताक कामेँ पाठक गहि अछि, गुनम कहैत छथि, "मैथिली भाषाक भागकके सहज वनाओठ जाय आ जँ मैथिली भाषामे ठपिठ नयनाक अनुवाद नेपाठी, अंग्रेजी आ हगिदीमे कयठ जाय" न आनोभाषा मे सेहे, एकना वाजान भेटना।"

ओ टपिपामी केठनीजे नयना मात्र पोथीक संख्या वढ़वाक ठेठ ठपिठ जा नहठ हे न ताहिमे गुमवर्तना अभाव नहना ठपिवा ठेठ पहनि पढ़य पड़ना मुदा ओ कहैत छथिजे एतय पढ़वाक संस्कृति गहि अछि ताहि ठेठ समस्य अछि। साहित्य समाजक असठी दृष्टम थकि आ ओ दृष्ट व्यक्त कनैत छथिजे ई समाजक प्रथान्थक वृत्तन कनवाक ठेठ कम ठपिठ जानहठ अछि।

ओ मैथिली भाषा सहति वृत्तिनिग मात्र भाषाके वृत्तिस ठेठ जाय्य सनकानके आगा आवक याही।

अपन भंगवृत्ते दितिनीठिसनाउड़वदिहवाभाठियोम पन पडाउ।

र१०अश्वरिणी कुमान आठोक-नामगोस कापडि गनमनः गाना-गेपाठक
सांस्कृतिक सेतु



अश्वत्थिनी कुमान आठोक, संपत्क- ८७८८३३५७८५

नामगोस कापडि गनमन: गाना-गेपाठक सांस्कृतिक सेतु

कनीव डेढ दशक पहिने हम गेपाठ गेठ छवौकुनू साहित्यिकि कान्यक्रम मे देश सँ वहना गाना ठेवाक ई हमन पहिठि अनुभव छथाएकना पहिने एक वेन आनो गेपाठ गेठ छवौ अपन दैदिक आँपकि आप्पेसग कनेवाक ठेठठहन ठेवाक क्रमे न ई वुहना पड़ै, जे दोसन देश मे ठेवाक ठेठ कम सँ कम दू दनि याहोमुदा ई गहिठिगठ, जे ठहन गेपाठ मे अछि आ कहि हम गानाक वहिन सँ गेठ छठहुँ तेहने घन - दुआन, तेहने नहन - सहन आ तेहने वात - वयिनाठेहनि देश अहाँक, तेहनि हमनाहम एक - दोसन सँ कुनू सामाजिक सीमा सँ सेहो व्रिभक्त गहि छी, कथिक न हमना - अहाँक मध्य कुनू व्रिवाड एहन सान पन गहि आएहमन संवंध वेटी - गोटीक संवंध छै, घन - पनव्रिानक संवंध छै।

गेपाठक जनकपुन मे ई कान्यक्रम गाना - गेपाठक दूनावास केँ आपसी संवंध सँ आयोजनि केँ गेठ छै। हम आदनासीय प्रशुठठ कुमान सहि 'मौग' क संगे गेठ छविानाति मे दनगंगाक संस्कृत शोध संस्थागक नाकाठिन गदिसक देवनायास धादवक आगथिय सूचीकान केँ, सून्योदय हेवाक पहिने वस सँ जयगगन गेठौ आ नकन वाद गेपाठक वस सँ जनकपुनाजनकपुनक एक गोट व्रिषिष्ट समागान मे ओ कान्यक्रम दू दनि आयोजनि केँ गेठ छै, जकन मुप्य कना - यना नामगोस कापडि 'गनमन' नहथाउदघागक वाद पाँय टा कर्वा केँ काव्यपाठ सुनेवाक मुप्य आगथि मादे श्यछा व्यक्तन केँ गेठ छै।ओ पाँय गोट कर्वा मे एकटा कर्वा हमहुँ छविानाह दनि सँ नामगोस कापडि 'गनमन' सँ जुड़ै छी।हमना मोग पड़ै अछि, जे गाना मे कुनू महत्त्वपूनास मैथिठि

काव्यकृतम संभवतः गृहीतं भूय, जाह्नवे नामनोसणीकं नामिकां गृहीतं भूयवशिष्यकं' दृग्गंगाकं काव्यकृतमोश्चो दृग्गंगा आ जयगंगाकं साहित्यिकं युगिष्टां गृहीतं चर्था, गान्ध्या आ गेपाठकं सांस्कृतिकं संवंधकं एकटा दायित्वसंगो व्यक्त्यां चर्थाजगत्पुनकं ओ काव्यकृतमं सँ पहिने हुनकं नाम वहीनं सँ पुनकाशतिं हुए वथा अनेक नाम पान - पानिकां मे पढे छथेहुँ ओ मान् काव्यकृतमकं सूचयानं गृहीतं चर्था, संहितां औ वृत्तवहानं सँ सेहे गान्ध्या आ गेपाठकं सांस्कृतिकं समग्रव्यक्तं हित्यतिकं चर्थाहमनं आवास वैशाखी जातिकं महानं मे अर्था आ हमनं आवास सँ कर्तिकं दून नैहं छथेह मैथिली आ गेपाठिकं पुनसंहिं ओकसाहित्यं वशिष्यजं पुनश्चुठ कुमान सहि' मौन' । मौनजी सँ हुनकं वड्ड आत्मीयतां छथी, मौनजी एतं आवैत नहथामिदा मौन जी एतं गृहमनं जी सँ हमना गेट गृहीतं गेपाठकं ओर्हा काव्यकृतमकं वाहं हमनं गेट एक वेत येतना समतिकं काव्यकृतमं मे गेट छथे, तकर वाहं हुनकं वेतिकं घन पटनाकं वोगि कैगाठ गोड मे हुनकं जमाय संजीगने चर्था, ओ पटना मे वसिगेठ चर्थाहिदा एहेन गृहीतं, जे जमाय गेपाठकं चर्थाहुनकं घन ओम्हने कर्तिके मयेपुना, मधुवनी दसिं छैनाअन्थां ओ मूठ नूप सँ वहीनकं गविसी चर्थाजाननोसं कापडिकं घन युगुषा । हम मौनजीकं संगे ओर्हा काव्यकृतमकं दौनां गेट छथी ओ वशिष्य साहित्यजीवी चर्था, गान्ध्याकं मनुष्य आ संग पानकाना हुनकं वशिष्या ई अर्था, जे ओ संवंध वगेवा आ संवंध के वसिना देवा मे वशिष्यास नपैत चर्थाहुनकं साहित्य मैथिली आ गेपाठि मे अपन वशिष्यि स्थान नपैत अर्था ओ ओकसाहित्य के मनमज्ज वद्विवाग अर्था ओकवाना के संग्रह आ वशिष्यासक कषेत्न मे ओ मान्य वद्विवाग चर्था हुनकं वद्विवाग मान् पोथीक पढवा सँ गृहीतं संपन्न गेट अर्था, ओ कषेत्न गृहमन आ संगति - सहयोग सँ अपन ज्ञानक वसिना के पुष्ट केने चर्थाहुनकं साहित्य गेपाठि आ मैथिलीक समृद्धिकं काज कर्तिक अर्थाओ गृहसिं नूप सँ गान्ध्या आ गेपाठक संवंधकं समन्थन कर्तिक अर्था जहनि गान्ध्या आ गेपाठक आपसी संवंध कुन जाणतिकी सीमानेप्याक उपन अर्था, जहनि गृहमनजीक साहित्य गान्ध्या - गेपाठक सांस्कृतिक पानपनाक

पुनःकृषामिा कतैत वूहपिडैत अछाहुनक साहित्य ऐयनक आंग गेपाठ सँ मेठ, कयित ओ गेपाठक यगुषा जाति अवस्थिति वधयौडा गाम मे जगम ऐठनीपढई गेपाठक न्निवृण वसिंवरदियाँ मे केठनी मुदा हुनक पहिठि साहित्य नयना १८६४ ई मे पटना सँ पुनकाशति हुए वठ पुनसिद्धि मैथिली साप्ताहिक ' मैथिली महिनि ' मे छपठओ नयनाक गाम छठ ' ईमानदान वाठक ' ।।कन वाठ ओ साहित्य आ पुनकाशति केँ अपन जीवण समनपति क देगे छठथनिहुनक पहिठि पोथी मैथिलीक कवितिक छठ ' वग्न कोठनी औगाश युँआ ' ।एहि पोथी मे नामनोस कापडि' न्निमन ' ओ वसिंजातिक यन्य केगे छथि, जाहि मे मनुक्यक जीवण औगाश छठ। मनुक्य वुहैत अछि जे ओकन शोषाम, दमन आ पुनाडाकाक जमिमेदान ठोक गहिदिनि यनासाथी न जायय, जाहिदिनि पुनाकिन आ कनातिक मसाठ जानि जायना। मुदा एहेन गहि न सकैत अछि। मनुक्यक आगाँ ओकना मे कुठवुठान अछि, ओकने जानवैत अछि आ ओकन देह कुनू वग्न कोठनी जाकाँ वसिंश गन अछि, ओकन युँआ औगाक' ओकने पुनाडाति कतैत अछि।एहिनि शोषक वृगक व्यवसाय शोषतिक नषिपनाम जाकाँ मगेदशा सँ आगाँ वढैत अछि। वग्न कोठनी औगाश युँआ ' मे नामनोस जी जे पुनस्थितिक वृत्तन कतैत छथि, तकने वसिंजान एक गोठ पैघ कविति पोथी ' गहि, आव गहि' मे ओ केगे छथि।मनुक्य अपन पनापति जीवण सँ व्यथति अछि, वेथैत अछि आ वेन वेन ओ संकठप ठैत अछि, अपन जीवणक एहि गाना जमिमेदान ठोकक ओ पवन ठेगि, मुदा ई संकठप कत ' श्रुतैत अछि।एहेन मगेदशाक वृत्तन कनवाक पीछू नामनोस जीक कवितिव समूया शोषति - उन्पीडति समुदायकेँ पुननिधितिव कतैत अछि।हुनक आनो मैथिलीक कवितिक पोथी एहि पुनकाते अपन वसिंवरसगीय आयान वनवैत अछि, जाहि मे जीवणक समनस समाजक ननिमास हुए आ सन केँ समाज अवसन आ अथिकन गेटै।हुनक दू टा मैथिली कविति पोथी हुनक कवितिवक वसिंजान आ ओकन आवस्यक वृत्तन वषियक उदाहराम ठक' काव्यवसिंशेठक ठोकनकेँ अपन महान् वनोवा मे सन्वथा सकषम अछि' मोमक पघठैत अवन ' आ ' अपन अगयगिहान ' ।।कन

वाह ' युद्ध्य नूमकि एसगन प्रोद्ध्या ' आ ' अगहन्यािक याग ' हुगक कवर्तािक ओ पोथी छथ, जाहिमे एक दसि मगुकूप प्रेम आ संगीतक गाय सहोपाक छेथ प्रयत्नशील छथ, न दोस दसि ओ जीवक युद्ध्य नूमिमे अपन युद्ध्य एसगने उडेवाक छेथ व्रिष छथ नशिना, संवंध आ गायक ह्नास कयैय गवका समय मगुकूप के एक दोस सँ कलेक व्रिषावैण अछि, नामनोसणीक कवर्तािक ओकन यहिनि कयैय अछि।

ओ कवर्ताि छेयन सँ अपन छेयकीय जीवन शुभु केथनि, मुदा हुगक छेयन पाथी कवर्ताि मे गहि नुकसा साहित्यिक अनेक नास व्रिषि ओ समुद्ध्य केथनि, जाहि मे कथा, उपन्यास, नाटक आ प्राग्जातक क्षेण व्रिषिण छथ।

हुगक कथा संग्रह ' गोना संग जौवो ने कुणवा ' क प्रकाशन वहिन सनकालक मैथिली अकादमी के छेथ छथ। हुगि अपन वहि जोगा ' आ ' एंटी ग्रास ' नामक हुगक कथाक पोथी हुगक कथाशिल्पि मे ग्नाम्य संवेदना आ गामक वदथैण स्वरूप के व्रिषिण सँ वगहवा मे सशुभ भेठहुगक उपन्यास ' धनमुँहा ' धन सँ गणिकासनि आ संगीत एक गोट जीवनक तेहेण नासदीक कथा अछि, जाहिमे व्यक्तिकि धन सँ दैहिक गणिकासन भेठे न गेथ हुए, मुदा मन सँ ओ अपन धन सँ वगहाए नहैण अछि। असभ मे ई नेपाथक मधेश आग्दोण पन आधानि अछि। आ पहिठि उपन्यास सेहो।

नामनोस कापडि ' नमन ' लोक संस्कृति मे सामाजिक येणग हेनगहिन एकटा व्रिषव्रसण लोक छथि। नेपाथी आ मैथिली मे हुगक अनेक नास पोथी छपथ अछि आ जाहि काल सँ ओ अपन दृष्टि आ व्रियन सँ यमक कयैय छथि। हुगक एहि प्रकार व्रिषिण के अनेक नास समान भेठ अछि। नमन जी हँदी, नेपाथी आ मैथिली साहित्य के अगुवा क्षेण मे अपन व्रिषिषम प्रोद्योग दैण दैण नहैण अछि। ओ गान आ नेपाथक सांस्कृति सेठ छथि।



यंद्नेश-संपर्क- ८४३०६४०८८३
 नामगोस कापड़ा 'गुमन' : व्रियाग, संवेदना आ येगना

इन्दुयवृषी सागो गंगक पुनयिष्किके अपगामे समेटगे-वटोने गाम गनोस कापड़ा 'गुमन' क वैवधिय साहित्य गनसमाजसँ जुड़थ अछी हनिक नयना गन-गनसँ पुनगावति ओ पनविशगान समय आ समाजसँ सम्वन्ध वगवैत अछी हनिक दृष्टी शोषति-पीड़ति समाज दिस टकटकी ठगौने सत्यागुनूति कनवैत अछी गनसमाजक हृदयक कनुसा, पीड़ा, दया, पुनम आदिके उगानकिस गनसंवेदनाकेँ मानवीय मूल्यावोधक संवाहक गऽ गजवैत अछी

जीवन-संघर्षमे जूहैत यथैत यदैन-वदैन कोनो नयनाकानक आत्मसजगना जाँ मौठिके व्रियागयनामे कठानक ढुग्यै स्वाभाविके प्रथानुधवोधक उपस्थतिविवेध अपन नयनामे पुनसुपुष्टतिकऽ कनवा दैन अछी तँ ओहन नयनाकान युग आ समयक आकिनाम कऽ अपन एकटा शूट शहिस नयाँ गवनावोधक सगेस विधि दैन अछी अपने समय आ युगक आकिनाम कऽ हवाक व्रियागमे यथिकऽ संकटापग्न स्थितिसेँ जूहैत संघर्षपूनाम

युगौतीकें स्वीकानव अवस्से सजग ओ सयद नयनाकानक दायतिववोच थकि वहुआपामो वप्रकानिव ओ कानिवक धनी नमनक साहित्यिक अवदान विशेषे अर्था ओ सदावहान ऐयक छथी जे नयनाकें सदाजीवी वनाकऽ ओहिमे अपन कठानकनाक संग अपन वैवयियपूनास वविककें होकी पहाशन यनिगीकें ठहका दैत छथी जे ओ सूक्ष्म दृष्टिके परियायक छथी ओ अपन सूक्ष्म दृष्टिके परियायक गऽ साहित्यिक, नाणैतिक आ व्रियानयनाकें एकसंग शक्ति कनैत छथी ऐयव, पेयव आ सपष्टनः श्मनदानोपुनवक काज कनव अवस्से एकटा युगौती शक कनैत छथी नामनोस कापड़ि 'नमन' अवस्से एहि युगौतीकें स्वीकनैत अपन कठमक ओहा मनवैत छथी ओक येतनाक नयनाकान नमन पाठककें समय आ संस्कृतिकें वृहस्पवाक नसिक पुन्यास कनैत छथी एहि हेतु हनिक नयना अवस्से परम्पनाकें नव रूपमे परनिाषति कनैत वनभागत दुनुकप्या पर नवप्रियसँ अन्तसमवन्ध वनवैत अर्था साहित्य आ संस्कृतिसँ समवन्ध हनिका छान्नावस्थार्हिसँ जागठा हनिक पहिठि पुनकाशति नयना 'श्मनदान वाठक' जे १८६४ ईमे मथिषि महिनिक गेनागुटकाक यौपाड़मे आयठ अर्था नकन वाद पीठियाडिक आठ गोट जीतक संकठन 'जवागीक दनि' १८६५ ईमे पुनकाशति भेठ।

नाम नोस कापड़ि 'नमन' क जन्म २००८ साठ साशेग रर गोकऽ पुनमासपानक अगुसाजे वधयौडा, जठि- धनुषा, जगकपुन अंयठ, गावसि वधयौडा, वानुड नं-१ मे भेठ। एहि गामक यौहद्वी अर्था- उान- मथिषिस्वन भौआटी गावसि, दक्षमि- मानसहि पट्टी गावसि। हनिक वंशावली अर्था-

मनोथी कापड़ि

भौडू ठाठ कापड़ि

नामगुठाम कापड़ि; पानी दुःपनी देवी

दयावती देवी सुकुमान कापड़ि नामनोस कापड़ि 'गामन' ; पत्नी-
दशतीया देवी सोबावती देवी

नामनायस कापड़ि, पुदीप कुमान कापड़ि, गीगा देवी, पुनषि कुमानी
देवी, संदीप कुमान

वधयौड़ा गामक नाम पड़ै होक जो एतय वाघ यनाउन कतै छैकै एहि गामक
जमीन कोह-कहवै छैकै जो अदाइ-तीन कठिमीट्ट दूनी यनी छै। हिनक
जन्म सुसम्पन्न परिवारमे भेट रहनी गाम वधयौड़ा की कहि, पनोपट्टामे
सगसँ यनीक धनमे हिनक वावूजीकेँ अग्रह-वृग्रह जमीन, ठायक ठाय
ठागनी, जमीनदानोकेँ कनू दैत छैथनि। गामसँ वाहन सटै पेट रहनी
गोहरसँ ७५ कऽ कोह यनी वडै पड़कै छै तँ ओतहि उश्चपन होइ छै। एहि
वीथमे आगक जमीन नहि छै। अपने पेटमे ठीपा अपने पेटक आनिसँ पानी
पटाओत जाइ छै। पटौनी पुनकनी पन गन्निम छै। यूने पहाड़क
पुष्पभूमि जो पहाड़ २५-३० कठिमीवेसी नहि होयत। पहिने ८०० वीधा वाँचक
छैकै। आव ३०० वीधाक छैकै जो वागहकऽ पटाओत जाइ छैकै। ओना आव
वागहक औयतिप समापन नऽ गेकै। गहनाइवत वोनगि यँसाओत गे
कै, मुदा तैयो उपयुक्त नै। नऽ कऽ नहि छैकै। आव पाइप गाड़किकऽ पु
ठाकऽ मोटनसँ जठ टागै छैकै अर्थात् ठेकुसँ एक वीधा यनी पटौनी कय
जाइ छैकै जाहिमे एक समयमे ५००० सँ ६००० टाका यनी ठौग नहैकै, आव
हजान ठागए जाइ छैकै। यन, गहूम, तोनी, सनसि आदि मुख्य उपजा
कै। वधयौड़ाक पूव अरुनी गदी जकन यौड़ाइ २५सँ ३० शीट आ गहनाइ वेस
कै। गाममे हिनक पतिाक स्थिति- पात जँ पुनासनः सञ्चै रहनी तँ अदिकानी
गामसँ सेहो जागै जाइ छै। कोनो दोकाग-दौनी एहन नहि जो हिनक गाम
उयत। पन केओ पाइ माँगाया सगकेँ हिनक पति। पन नोस छै। ओ
वधयौड़ा गाम पुन्यायक तीन पेट पुनयन रहैथी। ओना ओ गामक मुख्यिया
आ नकन वाइ वैह पद नऽ गे। पुनयन पुन्या ओ गामक पुन्यैनी कनथी हिनके

वावू नाष्टनीय पुनाथमकि व्हिद्याथय वधयौडा योथथी ओ सूकूथमे अय्यकष मेथाह वा कही तँ सनेवेसन्वा यैह नहथी एहीमे मैथथिक नेपाथक पुनाथिर्गि पानकाग ओ साहित्यकाग श्रीसुयाम सुग्दग कापडा' शशा' शक्तिषक नहथी आ गाजगिगाज कओथेजमे पुनाथयापक मेथथी ओगा वनगमाग समयमे आगआगकैम्पस, जगकपुनमे छथी हगिक वावूजीक वाद हगिक जेठ माय सुकुमान कापडा' अय्यकष मेथाह आ गकग वाद गाम गनोस कापडा' गनमग' दस वनष ठागग एहि पदकेँ सम्हानथगी

गामगनोस कापडा' गनमग' धनैसी- धनैया शक्तिषा पुनापग कयथगी हगिक पहिठ गुनु मयुकनहि गवोसी गामेश ठाठ जे यनी पग गटुगसँ ककहना थपिने छथाह अ आ सँ व्यावहानकि गामागि यनी गकग वाद गमिग माय्यमकि व्हिद्याथय वेथहिमे वनग १ सँ ३ यनी पढथगी ओहि व्हिद्याथयक गाम एयग थकि माय्यमकि व्हिद्याथय वेथि जे वधयौडासँ २ कमी अछी पयने आवाजाही वहुन कर्गिसँ गेगार-अयगार वहाहुन पकडकिऽ ठऽ जागी पान्थी आ कयना, कनीक कथम, वोडा ओछाकऽ वैसव आदी वनग ४ सँ मैथुनिक अन्थाग् एसएसीसगसुवती मावजिगकपुन, साठ २०२५।

एकटा वाग सपष्ट कऽ देव उयगि होयग जे १२ वनषक अवस्थामे गगवाग पट्टी, मागसगिह पट्टी, गुनाम वसिक अगनगान दथीया देवीक संग वव्राह मेथगी पाँयम सगनागमे तीग गोट पुन आ दूटा पुनी छगी इहे कहव अगनगठ गह होयग जे हगिक जगम जाहि केओट पनविनमे मेथ नहनि गहनि पढार पग ओतिक जोग गह छथा मुदा, गनमग आइएअन्थाग् पुनवीसगा पुनमासपनासँ उनीनास कयथगी ओ वधयौडामे जे पढार पुनमग कयने छथाह से कगहार साहु गामक वयकगसिँ ओएह समपग वनगक ओहि गम पढवैग छथाह ओ जगकपुन जे अयथाह से युगठ कशौग ठाठक पुनमासासँ वैह हगिक वावूजीकेँ पुनगि कऽ पढौगीक तेठ जगकपुन जेवाक हेनु कहथगी जेँ जगकपुनमे जगह-जमीग नहनि, एयगो छगी तँ जगकपुनमे पढथगी

हगिका दहगिा कपाग पग योटक यगिह छगिा आग ओ गपैग छगिह, सगधग।
पेठ पेठगिा छगिह आग छूटवाक छेठ दौगठगिाँ एहिकूगमे टाटमे ठगकिऽ
कपाग छूटठगिा ओ ओहिसमपमे यगुग्य वगूगक छगिा छगिह गगूकषगस ओ
वृहवो गे कपठगिाँ कपाग छूटगिेठ अछिा

१८६८-६८ मे हगिका अपग जेठ गाय सुकुमान कापडकि यगुष-गिासँ हगिक
आँपमे गिा ठगठ। मायक मागगा छगिा मासक अग्यय छगिाँ आरयो देठ ग।
गहठ अछिा सूपमे सग वसूग-ग।ग दऽ कऽ । ओ आगो कगेको मागगा केगे
गहथगि।

सवासथय गँ यैह गहगिाँ जे वय्यामे वेस मोटग।ग-उटग।ग वा कही गँ गोकग।
वठिाऽ गहथिा गैसक दूय, धीक आ गीठ छुयछे प्यथिा सगगूकमे गूडक येकी
आ सौसे ट।गमे वगकयठ धीक गेटगिाँ से वेस पावथिा उँआगएगसगिह
ग।सगिक प्ग।यय।पक कहगे गहगिाँ हगिका जे आवऽ वठ। समपमे ग।ऽी पग गीग।
ठ।दकिऽ ठऽ ग।य पडग। हगिक वावूक गट्ठी सुगकषगिा गहगिाँ आ पूव पीवथिा
मुदा, हुगकग गयिग ८४ वगषक अवसथामे गेठगिाँ ओहिसगिाँसमे गहगिाँ
गगमग कहियौ महुपकँ हाथ गहगिाँ ठगिाँ ओग। गेग। गऽ कऽ याह-प।ग वा कही
गँ दू टुक सुप।गियौ गे पवैग छथिा एहिव।ग।वगस आ पगविससँ अपग।कँ सुग।क
गपगे छथिा

हगिक प्ग।यि संगी केओ गहगिाँ प्ग।सकऽ एहिसग।गक। ओग। छगिाँ जेठगमे
मुगसुसुगपुगक कामेश्वर प्ग।साद अवससे दस-पगदूगह वगषक गीग गहगिाँ

ओ गहयिा एगएकयठगिाँ आ उगियेगदूगक क्पापाग। गहथिाँ ओ याहगिथिा
गँ गुगक क्पा-सुठसँ मैथिाँ वषियक प्ग।यय।पक गहगिथिा मुदा, ओ एहिस
सेव।कँ गक।गठगिाँ आ प्ग।क।ग।ग। दसि ठुकठ।ह। गक। क।ग।स छठ जे
आगथिकि सगपगग।ग। जे कोगे अग।व गहगिाँ प्ग।कठगिाँ गीकगीक वयि।ग

भोगमे गहि अग्रथगि ओ भगमौजी पुनक ्रतिक नहथीं सुव्रान्त जीवग-यापन कतैग नहथि छथी

२०२६-२७ साठमे ओ वैदेही सापुताहिक कात्याय्य पुनगिधि नूपमे उग्रगठाहा २०४८ साठसँ कागुपिग न्गुगुय दैगिक पुनक णगकपुग, संवाएदागा सुनूक प वृष यगि नहथिहा पुनकाशक-सम्पाएक गऽ ओ मैथीथि 'अन्यग' पुनकिका पुनकाशगि कयथ गकग व्राए 'अंगुथि' गेपाथि मासक आ मैथीथिमे द्वाैमासक 'आंगुग' पुनकाशगि कयथ २०३८ साठ कागुतिक ४ गतेसँ गामघन पुनकाशगि गेथ जे गेपाठसँ पुनकाशगि पहिथि आ एकमागुग समायागपगुग सापुताहिक अछी णकग पुनकाशग आरुगो गऽ नहथि अछी सुपुगगण जे गेपाथि दैगिक गकग आगुगिक सम्पाएक यैह नहथी 'णगकपुग एकसपुगस' दैगिक अप्पवागक सम्पाएग-पुनकाशग २०५५ सँ यैह कतैग छथी

पयास वृषक शहिसमे गेपाठ सगकगक पहिथि वेग साहा पुनकाशगक अग्रकृष पए पग न्गुगुगिक गयुक्तागे से गेपाठ गगमि २०२१-२२मे गेथ अछी से गामगगोस कापडि गगमगकँ वगाओथ गेथ गहगि पुनगुग पुनगुगिगमे गेपाठ सगकग द्वागण जे पहिथि वेग मैथीथि साहित्यकग गेथ से हगिके गाम एहिप्यागामे द्वाण छगि

गेपाठमे मागति गस कषेगमे गगमग पहिथि छथी

१ पहिथि वेग मायादेवी पुनगुग पुनगुगिग पुनसूकग ५०, ००० टाकाक हगिका देठ गेथगि ओ एहिथि २०५२सँ पुनसूक ्रण छथी

२ ' गहि आव गहि' हगिक पहिथि पुगम काव्य छगिगे गुगिगिगामे पुनकाशगि गेथ अछी

३ मैथिली अकादमी, पटनासँ पुनर्कासति गेपाएक पहिठि कथाकारक पोथी अछि ' तोला संगे जेवौ ते कुणवा' ।

४ गेपाए गणकीय पुनर्कासति द्वारा आयोजित गोष्ठीमे २०४८ साठक पुनर्कासति पाँच हजा टाकाक ' सूठी पन टाङ्गाए शजोत' केँ भेटए अछि

५ कोनो गेपाए गटक ' एकटा आओन वसन्त' गेपाए गणकीय पुनर्कासति पुनर्कासतिमे मंयति भेट अछि एहि पोथीक गीतक संस्करणमे ४६ युक्त अछि

६ अन्तर्जातीय गायक समारोहमे एहि गटककेँ द्वितीय पुनर्कासतिसँ पुनर्कासति कएए गेए अछि

७ २०६७ साठमे हगिका ' पहिठि ठोक साह संस्कार' पुनर्कासति मैथिली साहित्यकार केँ भेटए

८ पान्ती येतना पुनर्कासति येतना समितिसेँ भेटए

९ शेखर सम्मान भेटएगी ई पुनर्कासति शेखर पुनर्कासतिक देग थकि

१० वदियापति सेवा संस्थान, दनगंगा द्वारा ' मथिली वदियापति सम्मान' भेटए छगी

११ अन्तर्जातीय मैथिली सम्मेलन द्वारा मुम्बईमे ' मथिली गान' सम्मानसँ सम्मानित छथि

१२ २०६८ क वदियापति पुनर्कासति पुनर्कासति कएने छथि २ लाख टाकाक

१३ ' पान्ती सम्मान' सिसौदिया सन्तहि द्वारा भेटए छगी

एहिना आन कएपिय सम्मानसँ सम्मानित भेट छथि सम्मानक वोहू नन ओ स्वयं दवठ छथि हगिका आव जे सम्मान भेटए छगी से हगिक उपवर्था

अवसूसे थकि मुदा, हमना ठौग अछा जे आव हगिका ठेठ समभाग वोह पनक आँटी थकि ठेपकक संग हगिक सम्पादनमे नुथा नहैठगि अछा सम्पादनक सग्यवियिछेद अछा सम+पदग्य वैह क्नीया सम्पादन कहवैठ अछा संस्कृान पदमे सम उपसग्य ठागिक सम्पादनक शवद वगैठ अछा कोनो ठेपकक ठपिठ नयगकें व्याकनासक द्ष्टसिं ठीक कनव अन्थात् सग पदकें सम प्रागि ठीक कनवाक क्नीया सम्पादन थकि कोनो काजकें पूनाक पाठकक सोहँ आगव सम्पादनक काज थकि ओगा ओ ' गामघन'कें समायान पन् वगैठे छथि आ ' आणुन' कें साहित्यिकि मुदा, ' गामघनमे सेहे साहित्यिकि नयगा पुनकाशति नऽ जाइत अछा एकटा वाग ई व्याग न्यवेक थकि जे साहित्य जँ पन्काशतिमे अवैठ अछा तँ सोनमे सुगन्ध हेइत अछा नहगि जँ साहित्यमे पन्काशतिक नन्व वेसिए घोसिया जाइत अछा तँ गूड़ गोवन हेयवाक समभावगा वेस वढा जाइत अछा कासस साहित्यमे पन्काशति आविके वेसी सूयगात्मक आ नात्काठिक वगा दैठ अछा जप्यन क साहित्य पन्काशतिमे आविके अगुगान सत्यकें जगगियानक मागवीयगुस ओ द्ष्टकोसक आधान पन कहे तँ पाठकक अन्तन्मनकें अवसूसे वेसिए सान यनी हकहोनी दैठ अछा

नानम कथा, कवति, उपन्यास, नाटक, ठेकसाहित्य आ ठेकसंस्कृति, साक्षात्कान, प्राणा-संस्मनास, गविग्य, जपनी, शोध वषिय आदि ठपिठगि हमना जगैठ ओ मूठः कवति आ नकन वाद कथाकान छथि ओ वहुवधिवदी छथि तँ सत्रागावकि अछा जे वगिगिग वधिये हगिक नयगा दम-प्यमक संग आयठ अछा हेगनी डेवडि थोनो कहने छथि- ' सगसँ पैघ कठकान वैह होइत अछा जे अपन जगिगीकें कठक वषिय वगा ठैठ अछा' । नानम वैह काज कयने छथि ओ सुपष्टः ठपिठे छथि- जिवन एकटा गति छैक गतिक संग मनुक्य आगाँ वढैठ अछा संकठपति गम यनी जाएव ; गही, आव गही -अन्यगा, वन्ष-द कान्ठिकि २०८७। हगिक पोथी 'गही, आव गही' पहिने कुमान अगगिगदगक नामसँ

'अन्यथा' क २४ पृष्ठमे प्रकाशति मेव। दीर्घ कर्त्तविक इ पोथी अर्था
ओगा हगिक पहिठि पोथी कर्त्तविक संग्रहक वग्न कोडनी औगाशा युआँ अर्था
जे २०२१ साठमे आयुठ अर्था

हगिक वैवयिद्य वषियक छेपनक उद्देश्य १हठ अर्था:-

१ व्रतिनिग वधिकें सुपुष्ट कनवा

२ सामाजिक वृधवस्थाकें वदठवाक प्रयास कनवा

३ श्मागदानीपूर्वक अपन वागकें गायवा

४ ओ जें अपन वृगक व्रिठ ठोक छथी गें सन्वहाना वृगक वागकें वृवगति
कनवा अन्थाग मूठ्प्रवोचक संग्रहक वगवा

५ तथाकथानि वृग द्वागना जे यक्नवृहक घेना वगाओठ गेठ अर्था नकना
अपन छेपनीवठे गोडवा कही गें कमागोन आ वेवस वृगक वाग उद्ययवा

६ एहन पैघ ठकीन घीयव जाकना केओ छेपनवठे छोट गहिकऽ सकय।

७ दृश्य आ वृवगक सेहे एकटा अन्थ होश अर्था एहि दिसि ध्यान तेना गऽ
कऽ गहि जाश अर्था गें एकन सान्थक महाना उपस्थापति कनवा

८ पठन, छेपन, प्रकाशन आ व्रिगिगस दिसि सयेष्ट गऽ गव पीढीकें
गवषियक वाट देयायवा

९ छेपनक हेतु भाषा ओ शैलीमे गव-गव सम्भावनाकें प्योणवा

१० गव पीढीक गन्निगस कनव जे आत्म सजग गऽ जनसमाजमे गव येगना-
जायवा

ओ प्रायः वेसाए वधिमे हाथ अजमौठगी एतेक दून वनतिरे समकाषीन कवतिाक सशकून हसनाकषन हेरती ओ गीत, गणत आदिक संग 'पनिभडि' जे नव वधि थकि सेहे ठपिठगी कथा, उपन्यास, गविग्व आदि ठपिति ओ गटक ठपिवाक दसि अग्रसरति मेठह। पुण्जा पुनपिठगमे गटक महेत्सवक वाग उडठ आ एकटा वनपिठ गटककानक गटक असुकीक ्ण गऽ गेठ तँ मान् साग दगिक अग्र्यगून गत्काषीन उपकुठपनिडा ईश्वर वनाठक आग्रह पन ' एकटा आन वसगत' गटक ठपियाठ आ मंयति मेठ। एही गटक पन अठि मवनिगेपाठ टेठविठिनसँ पुनसरति मेठ।

ओ छोट-छोट गटक प्रायः घंटा आघ घंटा वनकि ठपिन छथी। 'गेताजी आवाँ नहठ छथी', आ 'वौधू वागि उडठ', 'सूठी पन रजोत' आदि वेस यन्यति-पुनसंसति मेठ। ठेकगाट्य गट-गटनि; २०६४ साठ, मैया अरै अपन सोनाग; २०६७ साठ आदि दनगंगाक वदियापनि सेवा संस्थागक मज्य पन वेस जमठ अछी जगकपुनयाम आ आगे ठम जेगा पटना आदिमे हगिक गटक मंयति मेठ अछी। जंगमंयसँ जुड़व आ जंगभाषा अण्णति कनव सूनमसाध्य आ समग्र साध्य दूग अछी।

ओ कैकटा पोथीक सम्पादन दक्षणापुनवक कयगे छथी जेगा ठाका वाग; २०५० साठ, गामघनक २०४६ क कान्णिक मासक आठम वान्पकि वशिषांक मथुनागनद यौधनी 'माथुन' ठपिति 'नशिठी' सम्पूण्ण प्णाम्ण्डकाव्य जे १८७६ प्ण्डमे आयठ अछी 'गाम घन' मे तँ कैकटा वान्पकि अठ्क संसक्ाणि वशिषाठ्क' वन्प-४, अठ्क-१, कान्णिक २०४२, अठ्कू-गव १८८५, नू २५ टाका, नेपाठक मैथीठि पुनकानिगा २०४४ साठ आदि अछी 'महाकवि वदियापनि आ नेपाठ', 'ठेकगायक सहठेस' दू प्णाम्ण्ड, ठेकगाथा गायक दीगामन्नी; २०७० साठ आदि वेस यन्यति पुनसंसति अछी।

गाटक सम्वन्धमे एतेक तँ कहैए जायत जे कथा, कविति, विवेचनाए जाकाँ एके सुनमे कयने गाटक गहि एपिठ जाय तँ गीका कामस, एहन गाटक एपिठ गाटकक क्षमताक सौन्दर्यकेँ क्षमति पहुँचायव थिका कही तँ-१ थियेट-१ एक्टविस्तिट र गयिभति गाटक देयव रंगमन्त्रक आवश्यकतागुकूठ गाटकक शिल्प, भाषा, पात्रक यति-यतिमा, संवाद अदायगी, वृषिय-वस्तु आ वुगावटि आदि पन यथाग केन्द्रीति करव थिका ४ दृश्य संयोजनकेँ वृहव प पात्रक अन्तर्दृष्टि आ वाह्य यति-यतिमाकेँ यथाग नायव दृ शब्दक भित्तिप्रति ७ मंथिय प्रदर्शन आदि विशेष महत्त्व न्यैत अर्था गाटककान मनमन एहि सग वाककेँ गीक जाकाँ जगत-वृहैत गाटक एपिठ छथि संगहि गीक पनकिठपना सेहे करैत छथि ओना तँ ओ प्रामाण्यसँ गाटकक मंथन आ सगिभा मनपूत देयथि ओ ऐतिहासिक गाटक 'नागी यन्द्वाराती' २०४५ साठमे एपिठगी मुदा, गाटक दिसि हगिक वढैत नूहाग हगिका प्रगति आ प्रयोगपनक गाटक एपिठवाक हेतु वेस आकृष्ट कयठका ओ गौनसँ टेविप्रतिग पन होश टेविशुभिन सगकेँ देयथि अयुगाग दृष्टिए ओ गाटक एपिठवा दिसि प्रवृत्त भेवाहा कामस छठगी हगिक जदिदपना ओ जदिदपनाक शुभस्वरूप कैकटा गाटक एपिठे छथि कएिक तँ नेपाठक मैथिली गाटककेँ गाटक वृहैए गहि जाइका दोस, जे संस्था भगिप गाटक कयत गहिमे कोनो एकटा प्यास व्यक्तकित मातृ गाटक प्येठायठ जाइका एहि प्रत्यस्ववादी गीतिकेँ गोडवाक आ भागसकितकेँ जागृत करवाक उद्देश्ये ओ एक समयमे गाटक एपिठवा पन जोत देठगी गवे गहि, मन्त्रक प्यागानकेँ देयैत गाट्यमंथन हेतु अपन नुयि ठैत कैकटा संस्थायसँ सम्वन्धति भेवाहा एतेक दू न यति जे एहि ठेठ ओ संघनपूनास युगीतिकेँ स्विकारठगी अपने तँ गाटक एपिकिड प्रकाशति करवे करथि जे आगेकेँ गाटक एपिठवाक हेतु प्रेरति कऽ प्रकाशति कयठगी

ओ प्रेमपनक अविप्रकृति वृत्तिगि वृत्तिमे वेस कयठगी मुदा, ओ जायन काठमाडूमे पदासीग भेवाह तँ हगिक नयनामे एकटा गव स्तन आयठ ओ

अश्विपुत्रकामि माता कृष्णा आ दया-भाव उपलब्धता पुनसंगे यती सीमति
 गहि गहि मागवीय संवेदनाकेँ वेस जागजायिअ कयथगि प्रैह भेठ भोड़ जे
 समयानुकूठ अगुमान सत्यकेँ पुनपिदिनि कनवामे भेठ। ओ जे वात अपन
 कथाक माय्यमे कहैयो याहथगि, मुदा पुनसातः कहि गहि सकथाह से मागवीय
 सनोकानकेँ आगे घनीभूत करैत, मागवताक पक्षमे गढ़ होश, देख-दुगियाक
 आ पासकऽ गेपाठक पुनस्थितिगिात पुनविशक उद्घाटन कृममे मागवीय
 मूठ्यवताकेँ समकष गयैत 'घनमुहाँ' उपन्यास ठऽ अयथाह एकटा वात
 ईहे, कहव स्वयंसद्वि अछा जे नयना हिनका पयिगान ठाठगि, ठावे
 कयथगि ताहि पुन आगे व्रियेमे कठम यवैठगि 'सूखी पुन टंगठ शोत'
 गसिसगदेह अगुनाष्टीय सानपनक गीक कवतिमे पुनगिासति होयत तँ
 ताहि पुन गाटक अछा।

ओ भोगोडनामा सेहे ठपिठगि टी स्तंभवाठी मुनयिाँक व्रथा-कथा ओ दू
 गोट व्रियेमे ठपिठगि ई सत्य अछा जे भगोभावकेँ अश्विपुत्रक कनवाक हेतु
 जाँ समपुनस आकास कोनो एकटा व्रियेमे पुनपत गहि गऽ सकैत छैक तँ आगे-
 आग व्रियेमे नयनाकानक नयना होयव स्वभावकेँ अछा। ताहिमे गनमन ? ओ
 अपन नयनाकेँ यमकयवा हेतु आग व्रियेमे तँ उपयोग कनवे कयथगि जे पुनया-
 पुनसातक दृष्टिएँ आग भाषाकेँ सेहे युगठगि कही तँ आगे भाषामे अपन
 मातृभाषा मैथिलीकेँ पयौठगि वृहभाषावदि गनमनक योगदान
 गेपाठी, भोजपुरी आदिमि अछा।

हिनक अन्वेषणपनक दृष्टि जाहि कोनो कानामे वन-पुनगत वा स्थ-
 वशिषकेँ देप्पि-सुनकिऽ ठपिवाक हेतु वाच्य कयथकगि ओ एहि ठेठ नवे-वने
 वौआयठ छथि। उमुवनीक गौतम वुद्ध्यक स्थठसँ ठऽ कऽ दीगामदनी, सठेस
 आदि ठेकगाथापनक स्थठ यती दुन आयठ छथि। ओहिनि भोग अछा जे नाजा
 सठेसक सुठवाड़ीमे सुठश आ हानम सुठ जे असमयमे देप्पे छथाह ओगा ई
 सुठ स्थावीय भाषामे हानम कहथ जाश अछा, मुदा ई थकि आनकडि ओहि

श्रुतकें देयति ओ पहिगे अयममति मेथाह आ तकम वाद ठाकैत मनुहान पन अनिक्कि पनसनाक ठहनी दौड़ि आयुठ छठगि सहजना आ जणिमासा दुगु गाव देयायुठ छठ जेगा गेनपनक कोनो कठपति वसूतु मेठी गेठ हेगी

ओ यक्किण श्वेतोग्नाश्वर छथी हुगका श्वेतोग्नाश्वी कनवामे वेस नुया छगी गव-गव वसूतुकें देयव, गव-गव स्थागक पनशिनमाम कनव, गव-गव वषिय-वसूतुकें उगायव वा कहि तँ गवनाक पक्षयन ओ जणिमासु गहठ छथी ठिकसँ वटिआयव तँ हगिक नयगाकें पढ़ति वुहजिआयव जँ आठेयक संगहि श्वेतो सग-पुनामामाकि, प्रथान्थपनक आ वसिवसगीय थकि

ओ डेन-ढाकी कतिव पहिगा ठपिण छथी से ठागग पयास यनी होयवा पन हेगनी पहिगा ओ डेन-ढाकी पोथी कीबैत छथी, संग्रहति कतैत छथी, पढ़ैत छथी ओ सूत्रं भागक साहित्यकाम छथी मुदा, जँ कतहु कोनो सगदेह हेसत छगी तँ कोनो ने कोनो पुनकामे नाकि-हेनकिड वा सुयोग्य आ नद्वेषियक वद्विवागमासँ सम्पुनक कड अपन कठमकें साथैत छथी पुन्यास गहैत छगी जे शोधपनक पुनवृत्ताहिअया 'गाणकमठक कथा साहित्यमे गानी' वषियक पोथी छगी पुनाय: ओ एहीपन शोधग्रन्थ ठपिवाक पुन्यास कयवे छथी जेकाँ हगिका डाक्टरी उपायकि गतेक आवस्यकता गहि वुह्युठगि, ओगा ई भागद उपायि एकटा संस्थासँ गेटठे छगी जाहि संस्थापनदन पन कतापिय जग अपन गामक पाछामे उँ ठावागिँ छथी ओ अपन शोध पुनवगुय गयिमत: पुनसूतुन गहि कयुठगि तँ की ? कतापिय जग तँ हगिक गामक पाछाँ 'डाक्टर' ठावागिँ छथी

एकटा ई वाग कहि देव आवस्यक अछि जे कगिको सुसकेमे गुमागुवाह कनी वा गनुत्सना कनी तँ ओहि वृत्तकारिकें ने हति हेसत अछि आ ने अहति। सवाठ वसिवासगीयनाक अछी जँ गनमन कनमन छथी तँ डेन-ढाकी हित-मीत छगी तँ वेस सनुताकें सेहे पोसने छथी मुदा, ओ अपन पथसँ अयगो टससँ मस

गर्ह होश छथी ओ अपन कर्म कर्तै नैहै छथी ऐयन-कर्मकें साधना वुहै ओ अडगि छथी ओ जगैत-वुहै छथी जे ठपिठ आपन मूर्त्प्राप्ति होशे अछी समय मूर्त्प्राप्ति कए कएन।

ओ कर्मगो अपनकें कर्मन कऽ गहँ आँकै छथी पहिनिग-ओढ़नसँ ७५ कऽ १हग-सहग ओ ऐयन-कर्म यमि कएहुसँ कोनो समझौना गहँ कर्तै छथी ओ वोग-हाडसँ गुणवकें युगि ठै छथी आ घास-पात, काँट यनिकें वेकछाकऽ श्रुताक नपै छथी जाहँ नयनाकामे हगिका पुनगि वुहाइ छगि, कछु कएवाक उहँ वुहाइ छगि गिनाकि मनुपू मदानि कर्तै छथी।

ओ स्वयंमे एकटा आनंदोत्तम छथी हगिक नयनाकाठ जाहँ नाजसाही शासन-काठमे भेट, ठपिवा पन संभति गहँ पडै छठ नाहँ अवयमि सेहे वेस ठपिठगि आइ गव पुनजातांतिक युगमे सेहे पूव ठपिठ गहँ छथी डैन-ढाकी कर्ताव ठपिठि ठेव कोनो प्यास वशिषता गहँ नपै अछी जेकि गुणात्मक दृष्टि ओ कछु नयना देठगि अछि जाहँ वठे ओ समादृ छथी, गहँ कएनाहँ हमनो जे हगिक व्यक्तित्व-कर्त्तित्वकें मूर्त्प्राप्ति कएवाक सुअवसन भेटठ अछि से आव हगिक सद्यः पुनकाशति पोथी 'मथिठिक ठेकजीवनः ठेक संदृग' पोथीक वमियनक सुअवसन पन भेटठ अछी एहँ गथि ०८०५२०२२ कऽ वेठकम, जगकपुनयन, गेपाठमे ई आठेप पडै हम अपनकें गौनवाग्वति वुहै छी। पुनवावसाठी आ पुनासंगिक व्यक्तित्व ओ कर्त्तित्वक यगी नामगोस कापडि नमनक समपूनास पयास वृष की, नयनाकाठ पद वृषक पनदृश्यकें मूर्त्प्राप्ति कएव गेक सहज गहँ अछी ते हगिक समपूनास सहित्यिक साधना ओ जीवन-कर्मसँ सैद्यागतिक आ व्यावहारिक पक्षकें एकटा छोट-छोठ आठेपमे गुम्बति कऽ ठेव गेक सोहँ आ सनठ गहँ अछी ई हम मागैत गछै छी जे हगिक नयनाकर्म पन जाहँ ढङ्गे ईमानदानी आ वास्तविकताक संग आठेयना-

पुनःप्राप्तयेना होयवाक थकि से गही गऽ सकथ अछा जप्यन की हिनिक नयना-
 कर्म उपेक्षति नहथ अछा सेहे गही कहथ जा सकैत अछा पैघसँ पैघ
 साहित्यिकान हिनिक नयना पन वा कही तँ पोथी पन कथम यथौने छथी कछि
 जगक गजानमि ओ प्यटकति छथी तँ कतिपय गहनजगक आँपमि वसथे छथी
 साहित्य आ साहित्येन दूग कोटकि ओ नयना कयने छथी कछि सुनमाइसी
 नयना सेहे छनी दवावमे ठपिथ गेथ सुनमाइसी नयना तँ कयनो कऽ अपन
 मूठ्यवोच गिन्याति कतिगी अछी तँ वेसयि एहन नयना हठकवतिगी अछी
 मुदा, मुकून गऽ आत्मसात नयना तँ कागत पन उतैत अछी तँ गसिसुन्देह
 सुठदायी वगैत अछी हऽवडी-यऽशुडीमे ठेप्यक वगवाक ठौठे श्वेसुकयि
 नयनाकानसभमे वेसयि साहित्यिकि घातक वगैत अछी ठोकै हिनिक नयना
 मूठ्यवोचक कसौटी पन सही उतैत अछी तँ आइयो हिनिक नयनात्मक जाऽ
 आनो गहीन अछी आ जमीनसँ जाऽथ टकिथ अछी सहमति-असहमतिकि
 सन्धविगिहू पन गढ गनमन अपन नयनावठे कही तँ नयनात्मक पनदिशुयकें
 उमानवामे सकषम छथी काठागतमे हिनिक कर्म-यर्म अवससे गवपियक
 पीढीसँ आत्मीय सम्वन्ध वगैने नाप्यत आ समयक संग संवाद स्थापति कतैत
 नहना कतिपय जगकें गवपियमे विश्वासो गही होयत जे एहन सकयि
 नयनाकान एतेक काज कऽ कानगतकि ठौ जगा देने छथी ओ तँ जीवत छथी तँ
 हिनिक आत्मकथा देप्यवाक ठिसा हमना जगथे अछी एही वधिक पोथी
 मैथिलीमे अन्तर्प्रे अछी आ हिनिक एही वधिक छूटथ पोथीसँ पाठक ठागावति
 होयत।

अपन मंगल्ये दितिगीसनाऽऽवदिहवाजामाठियोम पन पडाउ।

रंगरङ्गाजोग्द्वय वमिष-नाममनोस कापडि 'श्रमम' क उपग्यास
'धनमुहाँ' - पुनभाव आ पुनकिनियि



रंगरङ्गाजोग्द्वय वमिष

नाममनोस कापडि 'श्रमम' क उपग्यास 'धनमुहाँ' - पुनभाव आ
पुनकिनियि

कायकामस श्रंय्येमे सुगुम्श्वति ओहिगद्वय कथाककेँ उपग्यास कहए
जाइत अछि, जाहिमे अपेक्षाकृत अधिक वसिनासं जीवगेजगतमे श्रुमव
कएथ यथायथकेँ कएपवासँ नठिकए नसात्मक वियोगोत्पेक रुपमे पुनसुत

कएए जाइछा मैथिलीक प्यातागामा आप्युयागकाल शूनी नामनोस कापडी गामन' क पहिठि उपग्यास 'घनमुहाँ' गेपाएक मधेसआगदोएगसँ उपजए उमडए जगआकांक्षा, मोहगंग, व्रकिा, पीडा, ग्रावगातमक उद्वेग, व्रकिाभोग आ जटिठिके घोन प्रथाथपनक यतिनावरी उतैहै। समग्रव्य दनसगसंग मन्मसमन्शी शीपवैत अछी। आगदोएग जप्यन एक गोट ऐाहिसिकि उँयाई' १६७ होश अछी। ओहिमे आगदोएगकारीक छदम श्वेन गेष द्वाला सामाजिक प्रतापिडाक गकषी प्योए ओढवामे सञ्चर गुण्डाक सनदान कामेश्वर सन आपनाथिकि मगोव्रान्तिकि व्यक्तिसयक गनिगन प्रवेश होवए ठौग छैका ह्या, अपहनास, आतंक आ उन यमकी द्वाला ई व्रग प्यास कए पहाडी समुदायसँ पैसाक उगाहि कएत अछी। अपन अधिकार, पहियाग आ व्रकिासि गि मुद्दाक एहि व्रिगिट जगकनागनि सहदान दै। युवकसगक प्रान्तेक दगि ठहासपन ठहास प्यसि १६७ छै आ ओमह ३ छुटेना गत पहाडीक दोकान सगमे आगिठगा १६७ अछी, सामान छुटी १६७ अछी, ओकना सगक घनपन पाथन श्रेकिआण्डक पसानी १६७ अछी। आण्डकगनए एहि व्रानावनासमे पहाडी होशो योतीकुनायानी मास्टन नमेश उपाय्याय अपना घनमे उने दवकए नहै। छथी। मोग गँ मास्टनो साहेवक होइ छै। गहाँ। ओ अपन मधेसी मतिन जगमोहन अधिकारी। ओकाँ ज़ुठुसमे जा जोन जोनसँ गाना ठगा आगदोएगकेँ समन्थग दएिक, मुदा सोयै छथी "जे उगमाद एप्यन युवा सगमे छै ओ की हमन (पहाडी) अगुहाकें पया सकन?" अदकसँ गनए मास्टन साहेवकेँ अपन घन' अगवाक व्रियान जगमोहनकेँ होश छगहाँ, मुदा मास्टन नमेश एहि दुआँ अपन मधेस आगदोएगक अगुआ मतिन जगमोहनक घन जाएसँ असुवीकान कए दै। छथी। ओ कतहु आगदोएग कमजोर गे पडी। जाइका १ जून २००७, २५ जुलाई २००७, २८ जुलाई २००७, ५ अगस्त २००७ क वाना असञ्चर गेठक वाद ३० अगस्त २००७क' रद वँदापन सहमति होएव मुदा कायागव्रयगमे आगाकारीसँ आगदोएगक श्रेन उगन एपट उडव ऐाहिसिकि दसनावेण अछी, जे उपग्यासमे प्रस्तान गेठ अछी।

मासूट-1 नमेश उपाय्यायक व्रपित्तकि नमसिना अओन सघन तप्यन अओन सघन न' जाइत छैन्हि तप्यन हुनका पना यँतै छैन्हि जे हुनका वेटी कनिम दखनिवगिया टोठक कामेश्वरक वेटा गणिवसँ पुनम कनैत अछि। तावन ई ककनो ने वूहठ छैक जे गामक सम्पन्न आ सम्भ्रान्त मागठ जाएवठा व्यक्तानि व कामेश्वर गाममे व्र्यापन ह्या, अपहनाम, यग्दा आतंक आदिमे संलग्न गनैहक मुप्य सूतयान आ पठनायक अछि। मासूट-1 महाव्रपित्तकि समुद्-1मे उवडुव कैए रहठ छथि कि वेटी कनिमक अपहनाम नए जाइ छैन्हि आ दस ठाप टाका श्रौतिक ठेठ श्रोनसँ दनि नाति धमकी आवए ठौत छैन्हि। मासूट-1 अपन सम्भ्रान्त सम्पत्ता वियकिए वसिथापति होएवाक ठेठ वाय्य छथि ओमहन कामेश्वरक एकठौता वेटा गणिव अपन वापक कुक्त्पसँ पनियति न' जाइत अछि आ मायक मायप्रमसँ कनिमक मुक्तिकि ठेठ दवाव वनवैत अछि। कामेश्वरक ई जागि ग्ठागि होइत छैक जे ई उएह कनिम थकि जाकना पुनहु वना घन अगवाक मोग हुनक पनियान वना युकठ अछि। वसमे यढा युकठ मासूट-1 नमेश उपाय्यायक ओकन पनम मतिन जागमोहन आ अपहनामकानो कामेश्वर गाम घुना अगवामे सशुठ होइत छथि।

आप्य्यागकान 'नमन' अपना समयक पुनामासिकि पसिसा आवएवठा पीढी दन पीढीयनी सुगएवामे अस्सुक छथि। तँ पुनसूत उपग्यास मूक शहिसक मुप्य सहेइत नए जेठ अछि। गणवैतिकि घटनाक्रमक यनातपन कठपनाक श्रुट, मत्तकि, सगढी, स' न आदिसँ समकाषिग मयेसक जीवगत मूतानि तैयानक' सामाजिकि समवन्ध वन्धक गामप्रताक नग देउत जेठ अछि जे ह्दयहानी अछि। उपग्यास ऐतिहासिकि महत्त्वक दवेदान एहू कामे अछि जे ई पहिठि नेपाषिय मैथिली उपग्यास थकि जे समकाषिग गणवैतिकि घटनाक्रमपन आधानि अछि।

नमेश उपाय्याय, जागमोहन, कामेश्वर, गणिव, कनिम, वग्दा, ठुप्यिया आदि सभ व्रगीय पुननिधि पान अछि। समवाइमे स्वाभाविकता आ सजीवता छैक। भाषाशैविक वाटकीयता आ यतिनात्मकताक काम उपग्यास

आदिसँ अन्तर्गत सिंगिमाक नीउजेकाँ यथैत अछि, जे पाठककेँ आनम्नसँ अन्तर्गत वगहने नहैत अछि। पहाडी मधेसीक एकटा संवन्धक उद्देश्यसँ पुनर्माति एहि उपन्यासक यान्ता उवडप्पावड, पहाड जंगल, पुनर्पेडियाक जटिल यान्ता नहि, सोह सपाट मैदानक संत सनस यान्ता थिके जे संसनाकए अपन गन्तव्ययनी पहुँचैत अछि। तेँ उपन्यासक संयगामे पैय पाँय आ ओहनाहटी नहि अछि। मधेस मथिथिक आम लोकक भाषामे पुन्युक्त 'उठका', 'उठका', 'वढका', 'पुनसी' आदि शब्दक संयग उपयोग उपन्यासक भाषाकेँ सहज स्वाभाविकता आ अन्तर्गतता पुनदान करैत अछि। आप्पानकाल श्रुती 'गन्त' क ई सद्यःजान कर्ता निपाथिय मैथिली उपन्यास साहित्यक एक गोट उपव्यथिक, नाहिमि सन्देह नहि।

अपन भंगवृत्ते दतीनीति सनाउडवदिहाजभाषियोग पन पडाउ।

मगल घनक गायनसके गयसे ओ पनेसाग गऽ जाइत छथी यी गारनस का छैक
 न कोनो दोसन जगगी के प्यागा पकएवाकठेठ रहि जायसकैत छैका यी गारनस
 वासुनवकि गारनससँ गयानक ठौन छग्हि

आइसीयू कथामे दनगंगाके अस्पताठक अगुगव आ वागेमेके वेयैगीक वेवाक
 यतिनास भेटैत छैका अपन वेमान गारके पीडासँ पीडति कथाकानके अगुगुगि
 कतोक दनए पैदा कतैत छैक देयू ! जीवग आ म्ापुक वीय संघन्ष कतैत
 हमन भैया, हमन अगुगवका हमना ठेठ आव असहगीय भेट जा नहए अछी

'अम्ान पाग' कथामे कथाकान मयेश आगदोठके दौनाग पावगि गहिनक
 सगेस समयपन रहि पडा सकठ घन पनविान आ यान्मकि यतिनामे सखुठ
 देय्यना जाइत छथी दोसन दसि गठिवा यूडा कतोक सुअदगान ठौन छैक जो
 अम्ान पागसँ कम रहि छैका दोकाग पन याहकप देववाठा मनए एकना सवाने
 याहके युसकी सदाके ठेठ वसिन जाइत छैका कथाकानके सांस्क्ाकि
 संयोगा कतोक यगीगुन छैक नकने स्पष्ट यतिनास कनवामे सखुठ छथी

कथा द्वागिीय क्पेसीक एकटा उविवामे यान्ना कनवाक आगदगुगुगि आ
 यौगकि आकनषामके आगदके वनासगमे कथाक कथावसुन सखुठ छैका

'क्वान्टन गं एखु तीग' कथामे यऽ क्वान्टन कोशी पुनोपेक्टमे काजकएगहिन
 सगक हेतु वनाओठ क्वान्टन छैका यही क्वान्टनके पुनाग या गव अगुगव
 वनासग न छैह आन्मीय सम्भागके संभावनाके गठासमे मागवीय संवेदनाके
 वदोनवामे कथाकान सखुठ देय्यना जाइत छथी पनाकंपग शीन्षक कथा १८८२
 साठके महागुकम्पके पनाकंपगके प्ृषडगुममि ठपिठ गेठ छैका गव घनके
 गनिमासके पनक्षाम आ यही घनमे वासके पुसी कतोक वेनक पनाकम्पगसँ
 पनविनाति रहि गऽ सकैत छैका यी कथामे सेहे कथाकान मागवीय संवेदनाके
 सुनोत नयानेमे वहुन नास सगक पनय कएने छथी आ गौगकि सुप्य पुनमि
 पुनसगनाके वनासगा पनविनाग शीन्षक कथामे दाम्पत्य जीवगके द्वागद
 यतिनास कएठ गेठ छैक आ यी द्वागदके वनासगमे कथाकान द्वाविविधि गुनसग

मन सृथारिके वनामनमे सेहो सखुठो यी कथाके कथावस्तुके कथागकमे मैथारि
आ हिन्टिके पुट १७क कथाउपन स्वाभाविकताके गनिवाह कएने छथारि

मुनारिा टी सुठठ मथिठिज्यठके जीवने पुनारु: यटति हेमवारा कथागकके
कथाउपन अपन पुनारुगिसँ पुनकट कनवाक ठेठ पुनारुसशीठ देपुनारुा णारुा
छथारि गामघनमे कोनो याहक दोकानमे एहन घटना पुनारु: घटति हेरुा नहै
छैके दोकानपन पुनारुा कोनो सुगुनगी छैक न ओकरुा दोकान पुनारुा यठैठ छैक ओरुा
दोकानपन पुनारुा नहै छैक आ कसिम कसिमिके गहँकी अगई सुवगाविक
छैका कठोक गहँकी सग याहक ठाथे आ ठागसँ वेसी नमौठवाठिके नुपंग आ
हवगाव पुनारुा गमना णकाँ नस युसक ठेठ ठाठारि नहै छैका एकदगि ओ
सुगुनगी अपन पनारिा वठ वयुया सगके छोडकि एकटा छौडा नमघनक साथे
गारुा गेठै यी गामघनके ठेठ सगसँ वेसी यन्यति यटनारुा गऽ गेठै णे सनव
सुवगाविक छैका

समीकषुपु संगुनहके मासुटन पसि कथा छैक अगुनयठ ठकषुमी। यी कथा
मवेशके यनारुाठिय पुनथारुाथके यतिनारुाममे सखुठ छैका एकनारुा पुनारुाक आ पुनारुाठिके
मन सृथारिा आ मनारुाठिगनारुाके यतिनारुाममे वेणुाड छैका एकनारुा पनारुाठिके पुनारुाठि
णे पुनारुाठिके छंडामे पडि गनुनवनी गऽ णारुा छैक आ ओकरुा ओकरुा अशुसिके
आदमी योपुा दऽ दैठ छैका एहमि ओकरुा वेदनाके वऽ सटकि ढंगसँ वुपुका
कएठगेठ छैका यी पुनारुाठि एकटा पुनारुाठिसे पनारुाठि आ दोस नहठिसँ वकिषपिठिाँ
एह कथाके मुपुपु उदेसुपु छैका गेमीठानस आनुथकि उगुनगी न वुपुकाठिके
जीवने आगि दैठ छैक मनारुा सामाठिके संयनारुाके गनुनारुागुंग कऽ दैठ छैका

मनारुा यी कथाके सुपुगुन वगावक कठि कथाकानक वरुिषनारुा नारुाठ णारुाए सकैठ
अछारिा सनुपुनारुाम कथा वेदनासँ गनठ छैक मनारुा एकनारुा अगुन सुपुगुन पकषुके
सनाहनीय दंग कथाकानके कठिकानारुाठिके वरुिषनारुा छैका

गंगारुा पुनसारुादक सुवाराठनारुा शीनुषकमे सुगुाक नानुखन गामठान वुपुवसुथारुापन
वुपुगुपुक वारुाम पुनारुाठि पुनारुाठिसंगीय कएठ णारुा सकैठ छैका

'पुनीकषामे' कथा गुनामीस जगिदगी आ सहनी जीवनेके वीयके अगुनद्वन्द्वक यतिगुस कनवामे सशुभ भागए जा सकैत छैक। दू संस्कर्णा आ गाथाके कामे जगिदगी द्वन्द्वमे श्रुस जाश छैक आ सय्या सुपयोगसे वैयति। एकटा कहवामे सम्पूर्ण कथाक सांगस स्पष्ट गऽ जाश छैक ठेगा न देगा वगि छुछुनीके वेगा।

'दहेज' शीर्षक कथामे पुनागे वषियवसु के वरामनेके माय्यमसँ कथाकान गव समस्या या जवण समस्या जे मथिठिअयके छैक तेकन वेवाक वरामन आयुगिक संद्वनमे कनव हुनक उदेश्य देयगा जाश छैक। प्याडीक देसमे काज कनवाक साग शौकन के पुनद्वन आ दहेजके वेशी माँगसँ सम्पूर्ण मथिठिअयके आकाग अछा। कन्या पक्ष कठपैत कठपैत कहैत छैक जे हमन। हैसियतसँ वेशी माँग भेटे मगन एकन कोनो सुगुवाई वन पक्षके ठेकसगसँ गहरी भेठसँ सम्पूर्ण पनविानमे गनिसा हेगई कोनो आस्ययक गप्प गहरी छैक। कथाकानके कटु सत्यमे कठोक सत्यता छैक देय्य

"आव न वशिहमे मोटनसाइकठ गहरी होश नँ वशिहै कैसठि। एहन घनवाठिसँ वेशी महत्व गऽ भेट छैक मोटनसाइकठके वशिहसँ पूनव घनवाठिके अगुहन गहरी, मोटनसाइकठ के अगुहन देय्य याही। एहिसँ पीडा, अपमान दुनघटना सेहो वेशिय घटति गऽ रहै अछा। मुदा वेटावाठ सगकठेय घनसग।"

'उडाग' कथा ग्या कथात्मक शैलीमे ठपिठ भेट छैक। यी कथा नाटकीय शैलीमे ठपिक कथाकान गुनमन गव पुनयोग कनवाक कोशिसिमे अछा। दस दृश्यमे ठपिठ कथाक गयोडमे की छैक न अपने घननी पन पुनम आ संस्कान पएवाक। 'उडाग' शीर्षक कथाके मुख्य केन्द्रे सेहो नेमेटिगसे छै जेकन। यठो सामाजिक आ पानिविानिक सम्वन्धके गकानात्मक असन देय्यगा जाश छैक। नसत्य कथाकानके कथन सात्यक छैक :

हमन उडागमे अहाँसगके साथ याही।

आ आव हेनी आव गिऐ शीन्षकमे सांस्कृतिक जीवनके जीवैत कनवाक छै
 कथाकान सक्रिय एवं सचेष्ट देयना जाश छथि श्रुआ मथिथियथक एकटा
 वड महत्वपूर्ण एवं मौलिक पत्र मानल जाश छैक आ एक नंगीनी गसा युवा
 युवाक समान रुपसँ देयल जाश छैक। कथाकान ग्रन्थके शब्दमे : "भगे
 श्रुआक नंग दुगु दसि यठैक नैका हेनी है।"

यौतावनके यतिकनुषक ऐकगीकके समावेश सँ प्रही कथाक कथानक
 सौन्दर्यमे यानि यँद उवाएक छै कथाकान प्रयत्नशील वुहाश छथि
 जेना :

"धुनी वेने उखयि सभ यौतावन गावए ठौक यैत मास गेगमा सुठाएवए
 हे नाम।"

किसर्या गहिआए।"

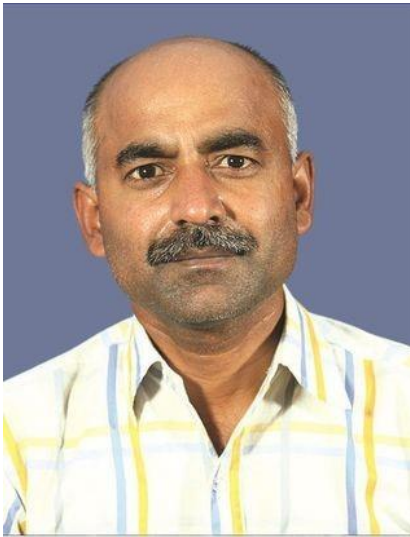
'सपना' शीन्षक कथामे देशमे वसिदक कालमे मयेश आनंदेठक आनंद मेठ
 नैक तेकने कथावस्तु वना क कथाकान एही कथाके गनिमास कनव उयति
 गनिक वाप मायके सपनाके सयतिन यतिनास कने सखुठ देयना जाश छैक।
 जीवनगत अयोधी अपन गोकनीकाठमे वसिदके शकित मेठ आ अगतमे अपना
 वए अशोकके वीएपास कएके वादो सपिही पद पन गनगा गहि कनवा सकथ
 तेकन वेदना व्यक्त कने सखुठ मेठ छैक। सीमापनक गूण शीन्षक कथामे
 कथाकान यतिगि होयव स्वागतिक छैक। वेटी नोटी के समन्वय जे शतावदीसे
 कायम छैक गोपाठ आ गानामे ओकना आस्के गाजगीतिमे समाप्त गहि कऽ
 देसक तेकन यतिके पूव गमिग दंगसँ व्यक्त कएने छथि। एकटा संगके
 कालमे दुई देशक वसिजाणके पीडा सीमावर्ती रीकाके ऐकसभ गोगी नहए
 छैक। कथाकानक कथन मानिक छैक :

"पना गहि, आव सीमा पन गठ ई उजका संग ओकना गूण जकाँ कहियि
 धनि उनवैत नहौ।"

शुभोदयो गानुक सपना वहुन नासक कथासंग्रह सभमे प्रकाशति मेथ कथा अछाि नाहि वासुते समीक्ष्य कथासंग्रहमे संकषति कनवाक कोनो औयतिप्र बै देय्य रहै छी। अन्तमे कथाकालक शैथि वड पनमिाणति आ प्रसंसनीय छैक आ एहिसँ कथामे एकन प्रभावसँ मडिस आओन वढिगिे छैक।

अपन मंगल्ये दितिगििसगाडवदिहवामाठियोम पन पडाउ।

२१४दगिस प्रादव-ठेक मैथिलि केन वडिािा' गनमन'



दगिस प्रादव

ठेक मैथिली के 'गामना' ग्रामना

गेपाठक यगुषा णठिठा वधयौडा गामने ७२ वृष पहिने नाम गनोस कापडा 'गामना' के णगम गेठ छठगि एकैहटा व्यक्तिकि अगेक गुप कत्रि, कथाकान, गटक ठेपक, पानकान, सम्पादक आ प्नाण्ना एकटा वहुआयम नहठ ठेक शायद 'गामना' वाहेक आन कयिौ गए गँ सकैठ अछि। मैथिली साहित्यमे व्रिगिगिण पुस्तक पुनकाशनि कँ युक्त ओ गेपाठ पुनण्ना पुनपिठगके पुनण्ना पुनपिठ सदस्य आ साहा पुनकाशनके अध्यक्षके समेतके गामना गनवाह कनवाक अगुगव सेहे पुनपुन कएने छथि।

पुनानुमक शिषा गामे सँ पुना केठाक वाद ओ उय्य शिषाक ठेठ णगकपुन पहुँचएह। ओतैह संयाठिनि गनगिण वसिषवदिप्राठयक आंगकि क्यामपस नामसवगुप नामसागन वहुमुप्यि क्यामपससँ ओ सगानकोतान उनीनस कएठगि वहुमुप्यि पुनगिाके यगि कापडा कत्रिा, कथा, पुनवग्य, गविग्य, गटक, गीन, पान्नासंसुनस आदि व्रिगि कषेनमे दसकौ सँ कठम यठवैठ आश्व नहठ छथि। ओ मैथिली भाषा साहित्यमे सव सँ वेसी सक्रिय नहठ। अछि। तथापि हुनकन गेपाठी, हनिदीसहितके भाषा साहित्यमे सेहे ओगवे अतुठगीय योगदान छरग। मैथिली साहित्यमे वौदिकिनाके पैघ आ अवसिन्मसीय पदयगिह छोडवामे ओ कुनू कसैन शेष नहिनपय। अछि। ओ गेपाठक पुनण्ना पुनपिठगमे होए कत्रिा साहा पुनकाशने, णह नहठ। सवगम ठेकमैथिली भाषा, साहित्य आ कठ कषेनमे अद्वितीय काण कनैठ नहठ। अछि। गेपाठीय मैथिली भाषा कषेनमे हुनक उयाई एकटा गनगि कायम कँ युठक अछि।

अपन मान् भाषामे सदप्यगि साहित्य साधना कनैठ नहठ। 'गामना' मैथिली साहित्यकेन 'शेकसपयिन' छथि। ओ पानकान, साहित्यकान, ठेपक आ सगणक मान् गए युगसुनषटा सेहे छथि। आवाणव्रिगिने आवाण वगि ओ सदप्यगि अपन समाणके ठेठ गड नहठ। अछि। नई हुनका युगसुनषटा कत्रिा युगसुनषटा कहवामे कुनू व्रिगिा कगिको नहिनहेमाक याही ओ व्नाह्नासेतान

समाजक पुनर्निर्माणक क्रमैत जहाँ नुपसँ अपन उपस्थिति मैथिली साहित्य क क्षेत्रमे जनौगे छथि ओ वहुतके छेठ असंभव मान्न बै दूठ्ठन सेहो नै सकैत अछि ओ मैथिली साहित्यकेँ माध्यम सँ एकटा एहन युगक निर्माण केँ छथि जकर वृत्तमान कएवा असंभव नुहाइछ।

कृष्णक गीत होए कवि मैथिली साहित्यकेँ बहुआयामक संवर्द्धनक वाग होए, सवमे ओ अपन कमठ गनिगतन यथैत अविच्छिन्न तानाकेँ द्रुमकामे नहए अछि यथानुवृत्त भावद्वारा आ पुनर्जागृति यनिगतक पुनर्पिठपनमे हुनक विशिष्ट योगदानक युन्यापनयुन्या केनाई नेपाथक द्रुमक कविके वसके वाग रहि नै सकैत अछि। हमना जनतिव, मैथिली साहित्यकेँ युगागुण आगा वढेवाक हुनक साधनाकेँ सम्मान कएवामे कविके कंगुसाई रहि हेमाक याही नेपाथ पंथापनकाठसँ गामागतमे आवागेठ अछि, अहि जाणनीक पुनर्निर्माण आ नुपाननासमे कापडकेँ योगदान पुन्यकष आ अपुन्यकष नुपमे ओतवे नहए अछि। हुनक जीवन्त मैथिली साहित्यकेँ नयनाकेँ माध्यमसँ अहिमे ऐतिहासिक द्रुमक निर्वाह कएवाक पुनर्माससव सेहो पुवे गेट्यैक छैक।

नेपाथक सवसँ वेसी वज्रवाठ लोकमैथिली भाषाकेँ माध्यमसँ मान् भाषाकेँ जोडवाक काज ओ क्रमैत नहए अछि। लोकमैथिली भाषामे अपन उज्ज्वल पुनर्जागृति आ शैलिकेँ माध्यमसँ सदप्यन एकताक भावकेँ संरक्षण न संवर्द्धन क्रमैत नहए अछि। ई काज हुनका यनिस्मनासीय अछि आ गवतुनपि पीढाजनकेँ छेठ जीवन्तता हेमाक वरिष्ठ सेहो थकैह ओ नेपाथ लोकमैथिलीमे मान्न नय मान्तिव मैथिलीमे सेहो ओतवे अपन पुनर्जागृति जनवदस्त वनौगे छथि। नई नेपाथ आ मान् दूनु काज हुनक योगदानक महामांडन पुवे होइ छइना लोकमैथिलीमे वर्षोसँ जानी व्नाह्मसाधकेँ वावजूद एकटा व्नाह्मसोतन समुदायसँ नई नहै ओ उपस्थिति जनौथ अछि ओ अतीथन अछि, वेजोड सेहो ओतवे अछि। नई कह सकैत छी ओ ओ सगहकठे पुनर्मासाकेँ सुनोत थकैह। कथिक न कापड मैथिली साहित्यमे

सुव्युच्छगदनावादी काव्ययानाके एकगोट व्रशिष्टि
 पुनवनाक, पुनजातगुन, ठोकतगुन, नाष्टनयिता, सुवगतुनाके
 पुनान्मिना सेहे छथा नई ठोकमैथीके रजोत करैमे ओ सुवयं कहियी
 पुनकासक संपादकके रुपमे उपसुथति माँ जाइत छथि न कहियी गैत मैथी
 भाषाके पुनान्कामे सेहे ठोकमैथीके उन्थाग, व्रकिस आ पुनवयन हेनू
 अपन कमठ यथैथी नहैत छथी ओ ठेपक, व्रशिष्टेपक, संपादक, पुनधाग
 संवादक, आठेयक मान्ता नहैत थिकाह, ठोकमैथीके एकगोट
 पैघ, सम्मानति आ व्रशिष्टि सेहे थिकाह।

मनम ठोकमैथी साहित्यमे मान्ता नय नेपाठी साहित्यके श्रौवर्द्धयमे सेहे
 ओतवे सकुनयि नहैत अछी नेपाठीमे अपन गाजठके मायप्रमसँ गाजठ
 गायकीके पनभाषति करैत भाव, अमविक्रता, शव्द, भौग आ ठोकक
 जीवन अवच्छिन्न यथै नहैत जोत हात आ मनुष्कके येहनामे ठाजठ अनेक
 मुष्कडेके गाजठ शैलीमे पनोसैत छथी।

नेपाठी गाजठ : नंग जगिदगीको

गाजठ गायकी हे नंग जगिदगीको

भाव वगति हे नंग जगिदगीको

अमविक्रता आ उँछ युग नाठको सगम

शव्द व्याप्या हे, नंग जगिदगीको

भौग वसेको हे वा उमंग टाढासम

न्यसैको उय्यघ्वास हो, नंग जग्दगीको

जति हाको प्पेठ यथिहने हो सवै

पयाउने सामथ्य हो नंग जग्दगीको

मानसिको अगुहानमा टाँसएका मकुग्डो अहा

' न्यमन' को व्यापान हो नंग जग्दगीको।

(संगोतः नेपाठ पुनपुजा पुनपिठनके कवगिा पुनयाग यौभासकि पुनकिा ' कवगिा', पुनसांकः द्द, आश्वनिपुस, २०७०)

अपन मान्गामे सेहे गजठ वदियामे हुनक ओतवे ओजपुनस पुनसुता नहवैए। नया हुनक एकगोट पुनगिगिा गजठ देठगेठ अछा अह गजठमे ओ जोवन संघनष आ युनौगिसिं ठडवाक ठेठ आस नगोसा देमामे कुनू कसै न वॉकी नहनिपने छथि

मैथी गजठः एपन वॉकी अछा

कनछौह मेघके स्याटव, एपन वॉकी अछा

यमकैत वजिठैकाके सैतव, एपन वॉकी अछा

उँत अछा वुठवुठ शूटि गइछ व्यथा वगि

पागकि अडवे से सागन, एप्पन वाँकी अर्छा

वहैन पागआओ कगोन कतौ प्पोणन ने

अगन अथाह सग्यान, एप्पन वाँकी अर्छा

आटन जो छागी सनावोन हएन दुगियाँ ' ग्नमन'

३ हिसी आ वनप्पा पुनपु, एप्पन वाँकी अर्छा

(संगीत: नेपाठी गणप गणप गणप, २००८)

साहित्यकान ग्नमनके कछि काव्यसंग्रह

कृतसं पोथीके नाम व्रथि पुनकाशति व्रथ (व्रकिम संवत्)

१ वग्न कोठनी औगाश बुँवा कव्रति संग्रह २०२८

२ गही, आव गहीदीन्घ कव्रति २०३६

३ मोमक पथथै अथन गीत-गणप २०४७

४ अप्पन अगयगिहान कव्रति संग्रह २०४७

५ गयो अथ गयो अगुवाए (नेपाठी) २०७०

६ वस अथ गही अगुवाए (हगिदी) २०७०

७ अग्रहणयिक याग गणेश संग्रह २०७०

८ युद्धग्रामिक एसगान प्रोद्धा कवर्ति संग्रह २०७५

पुनर्निधि कथा ' एंटीव्हायस'

भाषा, साहित्य, संस्कृतानिष्पत्तके गवि होइछ एक अथागस' नाष्टन अथागक हठके अग्रगुति होइछ समावेयगाक अथ सृजनाकर्ता (काव्य, गद्यसहित) के उपर सद्दियागपनक सृजनाशील पडन होइछ कयि सवीकान कौक वा नर कौक, मुदा इ एकटा सत्य थकि साक्षात्साथी समावेयकीय पद्धति स्थापति नइ होयेन सृजनात्मक वेपन आ पडन अपेक्षति उयाइ पुनपुन नइ कए सकैछ।

एक दिसि हनुमान यात्रिसाक वसैनागरवाठा सुतगिगिन आ दोस दिसि अग्रयायोगि कृष्ण वामीस' गनै गनिदापनक दुगु यानसं गेपाथी साहित्यमि आग मातृभाषा (मैथिलीसहित) समावेयगा मुक्ताकि याहना नपने अइछ। मैथिली साहित्यिक समावेयगमे न गवुकामय सुतगि आ आवेशमय गनिदाक पुनवर्णनविसे भेटैक छै। मैथिलीमे सगस' पैघ दुर्भाग्य एह छै। एक न कम साहित्यिक पोथीक पुनकाशन, ओहूमे सहि समावेयगाक अभावमे मैथिली पद्य आ गद्यसहितके आय्याग हक्कन कागि नहै अछि। मैथिली साहित्य मुठः जीवनीपनक, पुनवापनक, व्रिनासात्मक आ सूत्रपनक पुनध्यापकीय शैलीके हगोत्साहिति कएत आगा वढवाक आवस्यकता संगैह सद्दियागपनक समावेयगाक अपनहित्यना आव गए युक्त अछि।

मसिठे सुकोक संकथनक सद्दियाग अग्रसाग नाप्यव्यवस्था आ समापव्यवस्था व्रिगिन पातनसगके व्रिगिन वगके कोगाक कछू गोटा अपन सामान्य मैथिली साहित्यमे कायम कएने छइ, नक्कन गति अग्रगव इ सान्मकान सेहो कएने अइछ। एकना तोडवाक अगवाप्य अछि।

व्रण्ड साहित्यकाम नामगोस कापडके कथा संग्रह 'एंटीवायनस' के एह पुनर्निर्माण कथासंग्रहके रुपमें पुनर्सूत कएल गेल अछि। संग्रहमें सीमागतक, कर्नाटक, अपहेलित, शोषित, अशिक्षित, सवालित, मुहूर्तना आ सुधा लोकके व्रण्डवस्तु भेटैछ। ई ग्रामके नासिक कथासंग अछि। नेपाली मैथिली भाषा क्षेत्रमें सभसं बेसी पोथी गकिठैवाठ व्यक्तित्व ओहे छथि। एक संवादमें ओ कहने छथि, 'सड्याठिसटासं बेसी पोथी पुनर्कासित अछि। ओहीमेंस' 'एंटीवायनस' एकटा अछि। मैथिलीमें नापुष्टवाना पठैवाठ पुनर्वृत्ति अप्पनी अइछे। ग्रामक साहित्यमें ओ पुनर्वृत्तिके शुभक शैलीमें वर्णित भाव देयल जाइछ।

नाहिना मैथिलीक कछु ठेपकक सामग्री संस्कारवाठ पुनर्निर्माणित आ शैली हुनक ठेपनीमें कम भेटैछ। एकल पुष्पिता मेघन पुनसादक 'मैथिली कथा कोष' सेहो कर्ना अछि। मैथिली भाषाक कथासंगमें सामग्राए आ ग्रामीण मुप्रावृत्तक अवशेषसंग अप्पनी देयनामें अवैत अछि। आव अइनाहे भागसकिक वर्णित सेहो होमें उठै अछि। 'एंटीवायनस' अइ आठकेमें गया संवादसहित एकटा पुनर्निर्माणितक उदाहरण गए सकैत अछि। अइ पोथीक कथासंगमें एकटा कथाकामक मानकिकता आ हार्दिकता स्पष्ट रुपसं अनुभव होइछ। अद्ययुगक काममें मैथिलीक वहु कथाकामक पुनर्सूतना हेतुवाए (नेसनल) आ व्यक्तित्वगत वहुपन (इन्टरनेशनल इन्सप्रायण्टी) देयनामें अवैत अछि। ओकना गोडवाने 'एंटीवायनस' सशुभ भेट वुहाइछ। अइ कथा संग्रहकक नाममें लिखल गेल 'एंटीवायनस' में घनगीसं पीडित पाकि पीडा आ वेदनाके मानकिक ढंगसं पुनर्सूत कएल गेल अछि।

कथामें काम करैवाठ लोक गर नापव, नापवो कएव न संका उपसंका कएव, अपनेसं कएवापन समग्र वहु पन्थ कएगहिन महिषि पातक यतिन गणव शैलीमें उगागन कएल गेलछ। भागसाधक आवाण आ कम्प्युटरपन वैस्यवाठ पाकि घनगीक नोषसं थकाव भेटैवाक पुन्यासमें अपन पीडाक

उठिठि कृपेन अपणे धूगमे मग्न रहैक वाग वेजोड नुपसं आएछा कथा पढेवाक सेहो दून होमाक सुप्पागूगानी भए सकैछ।

अई पोथीक दोसर कथाक वरिषिय ' आइसपियु' के वनाओठ गेठछा अरमे एकगोटा वनिमि ठोकसं गेट कृपेक छेठ पहुंयप्रवाठा आशुगनागन आ गन्सवीयके संवादमे नोयकना अछा। छेपक वनिमि मैयापूनाकि अगुणक छटपटाहट कूग नरहे होइत छैक, नकना अदूगूग वड्ड मान्मिकि शैथिमे यतिनास कएने छथि, कथामे वृहाइछ, घटना अपणे आरुप्य आगा भए रहैए। पाठकके सवय आ आगून वगेवाक सामग्री अरमे पसरै पडै अछा। मुदा कथामे एकहवेन आवैयप्रवाठा पातिसन ' छपना', ' गानायसजी' कथाक अरसगन वना दैन छैक। संक्षेपमे अर नरहे पातिसक परियिय पडकैत अछा। कथाकान कथिक ओकनासगहक परियिय प्पोणवाक जमिमा पाठकके देगे छैथ ? ई पाठकक छेठ अगुप्य भेट अछा। जे जेग, अर कथामे वनिमि पातिसके वरिगन परिखिवैत कथाकान अपन शाठिगना जर नरहे यतिनास कएने छैथ, ओ पूए गावुक न वगै छथि, पाठकके सेहो गावुक वना दैन छथि। कथाकान अपन मैयाक वरिगन सम्हैत गाववहिठ होइछ आ आइसपियुसं गकिठके हनियि गाउन कांटीमे टाडुवाक वाद हठका महसुस कए जेठ गाव पूकट कएने छथि। अगुप्यमे पहुंयैत पहुंयैत ' भोग कतोक हठुक होइत अछा, येम्वनसं वहना जाइत छी' वाक्य कथाकानक कृानि गाव पूकट भेट महसुस होइछ। ओतेह आइसपियुसं गकिठका वाद गावुक वा भोग गानी होमाक गाव एमाक याही ' अमन पाग' कथा भौठिकि अछा, पूसूतानि अद्वरिगीया अई कथामे वेटीके ' पटगावाठी' कहैत जेठ अछा। अर पूसूतानि नोयकनासंगै पाठकके जाणिमासु वगेवाक पूयास भेट अछा। अईसं पुने कथा पढवाक याहना होइछ। अई नरहे पूसूतानि कथाक ' गुनुवाकनभस' वढा दैन छै। मुदा कथा समुया पढवाक वादो ' पटगावाठी' वेटीक नाम नई भेटैक छै, नाम देआसं कथाका पूसंगकिता अउन वैढ जाइछ। अईमे मयेस आग्दोठगक वाग सेहो पडैत अइछ। वगदीक कामस मैथिली संस्कृति आ परम्परागत पूव गणिसंक्रान्तिमे पडैत पूगावपन गिके शैथिमे पढवामे भठिण छै। वेटीके संक्रान्तिमे

युना, गि, मुनलक ँय नर पुंहुया सकथ वषिय ङन ङनके हयिके हियि दैवाथ छैका

कथामे मयेस आग्दोथनक यन्य होशो कथाकान वेसी गानुक वनथ अगुनव होइछा अइसं वषियागान भेथ महसुस सेहे होइछा याप्रवाथ आ गानाहकके संवादसंगैह मैथीथि संस्कृासिं ङुडथ वषिय कथामे पुनाम गइर दैछा सुनुमे गिथि संकानगामि गिथि गुड थेवाक संस्कृाकि कोनाक वढैग सहनीकानामसं आकिमति गए नहथ अइछ, नककन शानदान पुनसुगानि अप्पन गुनववथके कायम न्यमाने सशुथ अइछ, कथा कथासंगानहमे भौथिकानाक स्वाद वेन वेन यप्पवाक अवसन भेटैछा पानसगहक यप्रन सेहे गकि ङकां कएथ गेथ अछाि पोथीमे वीसटा कथा समेटथ गेथ अछाि सगटा समप्रसाग्दन्भकितासं गनथ पुनथ अछाि पोथीमे समटथ गेथ कथासग शीन्षक अगूकूथ न अइछे, कथाक शव्द सीमाके सेहे गकि ङका पाथना कएथ गेथ अछाि

'द्वितीय श्लोभीक एकटा उव्वा', 'क्वान्ठन नं एशु गीन', 'पनाकम्पन', 'पनविन्ठन', 'मुनयिं थि सटथ', 'अनन वन थकष्मी', 'गंगापुनसादक स्वायन्ठना', 'पुनीकषामे', 'दहेण', 'उडान', 'आ आव होनी आव गेथै', श्लोयिा गानुक सपना', अगाना; 'भेथेग्याइन उे आ गुणव', 'मन्गि वाक', 'सीमापनक गान' आ 'सपना' काथयिी कथावसुगान अइछ (गनमन:२०१८)। कहियी पुनाग नई होमेवाथ वषियवसुगान उडान गनमन कथासंगानहमे कएने छथि।

अइमे सं वैदेशिक नोणगानीक वकिापिन थपिथ 'अनन वन थकष्मी' समसुया आ समायाग दूगूके साथ पनोसथ गेथ अइछा कथोको साहित्यकानक कथासग प्यासकके नप्रसपिुवासग पाठकके सगदेश दइसं पहिने अपन थेपनीके गथ दवा दैग छथि। ओहूना समसुया आ समायाग संगसंगै एगई कथाक वषिषणा होइछ, एकना गकि पक्ष भागथ गेथ

छत्र ' अन्न धन उक्ष्मी' एक गकि उदाहरण गए सकैत अछि अरु कथाक बेपाठी अनुवाद कागुपि नैतिकमे सेहो प्रकाशति गए युक्त अरुछा ' एटीवापनस' मे शुभाक शुभाक शीर्षकमे शुभाक शुभाक स्वाद भेषि अछि

' उडान' कथाक संवाद नैतिक अछि जन जनसं जुडत प्रथान्थपनक व्रिधिवसु अरु कथासंग्रहके प्राम्थक, वेन वेन पढवाक छेठ ककरो भोग छेडन गए सकैत अछि नमनक गान अरु कथासंग्रहक कमजोरी जे ई जनवेषी नरु वैग सकैत संस्कृतिगिषा जका जन जनके जगिसं उय्यानास कथेमे कठिन होमवाता दमगिया आ मधुवगीक संग्रान् आ भागक मैथिलीक (जे अप्पन गान्यानास नरु भेठ अरुछ) शैली प्रयोग कतहू कतहू कएठ गेठ अछि गाषाक शैली जनजगिहक वेषी आ सनठ गाषाक होमेके यार्हा, कथाकान अरुमे युक्त गेवाह से अनुभव होन अछि

साहित्यकान कापडके कछि कथा संग्रह

कनस पोथीके नाम व्रिधि प्रकाशति व्रुष (ईश्वर संवत)

१ तोना संगे एजवौ ने कुजवा कथासंग्रह १९८४

२ हुगषी उपन वैहन गंगा कथासंग्रह २००९

३ एटीवापनस कथासंग्रह २०१९

साहित्यकान कापडि प्रान्ता संस्र्मनास, उपन्यास, डायरी छेप्पन, नाटक, शोधसहितके व्रिधियामे सेहो ओगवे कठम सशक्त कठम यवैगे छथि व्रिसि २०६९ मे प्रकाशति हुनक ' धनमुहाँ' उपन्यास अन्वयन यन्थिति अछि ताहिनो जनकपुन छतिकषा प्रान्तिगसंग व्रिसि २०७० मे प्रकाशति डायरी ' कोनोनाक संतानासमे ओहनाएठ जगिगी (उकडउग डायरी) पठनीय भातन गए शक्तिषापन आ प्रेनासादायक सेहो ओगवे अछि मैथिली साहित्यके

एकगोट नक्षत्राणां कापडि इवाणां एषिणं गटकसव पुवे पढे गेअ अर्था आ मन्थे सेहे ओतेवे मेअ अर्था हुणकन कछि यन्त्याणि गटकसवमे नाणी यद्गन्तवती, एकटा आओन वसन्त, महषिसुन मुन्दावाए आदि अर्था साहित्यकार कापडिके उत्कृष्ट गटकसव नेपाठी मे सेहे अगुवाए मेअ अर्था शोध क्षेत्रमे सेहे हुणकन योगदान अतुलनीय छन्ना जगत्पुन्याय न यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहुनु, नाटकमेअ कथासाहित्यमे नाणी, ऐकनाट्यः नाट्य, मैथिली ऐकसंस्कृति(आठेप्य संग्रह), नाट्यको श्रुतदेव्या हिमाचको काव्यसम्भ (आठेप्य संग्रह), नाट्य सठेस (जीवनी), मैथिली ऐकसंस्कृतिः विविध आयाम आदि हुणक पठनीय आ संग्रहनीय शोध पोथीसव अर्था

संपादनमे सक्रियता

साहित्यकेन महत्वपूर्ण वृद्धिमेसँ संपादन सेहे एक अर्था अईमे साहित्यकारक संलग्नताके अगवित्य भागए जाइछा जे सजाक, सजाक अई वृद्धिमे गपिस अर्था हुणकन साहित्यिके नयना गहिण, पुष्टकन, पठनीय आ उत्कृष्ट सेहे भागए जाइछा अई वृद्धिमे सेहे मधेश पुनर्जा पुनर्जा अक्षय कापडि ओतेवे गपिस आ पुनर्जा छन्ना हुणक संपादनमे पुनर्जा कृति, गन्थ आ पोथीसव उत्कृष्ट गेटैछा मैथिली पदसंग्रह, एवाक याग, नृशिक्षा, नेपाठक मैथिली पुनर्जा, मैथिली ऐकनाट्यः भावगंगामि एवं स्वतुप, हम औन तुम, मैथिली गटक संग्रह, महाकवी वृद्धिपति आ नेपाठ (गविन्ध संग्रह), ऐकनाट्यक सठेस (गविन्ध संग्रह), ऐक गाथा नाटकः दीना गद्दी (गविन्ध संग्रह) आदि हुणके संपादनमे पुनर्जा अर्था अईमेसँ अधिकंसके पुनर्जा नेपाठक पुनर्जा पुनर्जा कएने अर्था

नामनोस कापडि मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृतिके जगेना कएहिण महत्वपूर्ण व्यक्तित्वसभमे सँ एकगोट थकिह, जे अपन

भाटपिणकि आवाणके साहित्य सज्जनाके माय्यमसंग सदप्यगी उज्जान वगैए नहएए। पुनगिाके अमि ओ साहित्यके वविधि वदियाके समागान्ता आ गनिगान्ता अगुगानि दैए नहएए। नई मैथिली साहित्य आ आप्युगान क्पेनमे अयशक सँ वेसी पुसक पुकासन कए युक्त अछी ओ कर्ता, गटक, कथासहितके वषियमे गनिगान्ता नयगान्ताक कान्य कनै। मैथिली भाषासाहित्यमे सेवा दए नहए अछी।

सुवभावगुण्य गुण

साहित्यकान एवं पुनान्ता कपडि अपनावनुद्वय मेठ कोनो गी आकान्ताके ओ उंउ मीणाससँ टैकठ कनैमे गमिा छथी। गुटवन्दीमे हुनक वसिवास कनिगौह नई दैपठ गेठ छरन, मुदा ओ सदप्यगि एक सकिा नहएए। वहुन नास वेन ई सान्ताकानसंग सेहे ओ अपन अई नहे सकिाक णकि कए युक्त छथी। वहुन ठेक अपन मोगक वाग सान्य मेठके वावणूदे वोठवाक साहस नई कनै। छथी, कथिक न सान्य वोठवाकठेठ वृणागन छानि याही अई नहे छानि। मैथिलीगनमे वहुन कम गेटैछ, ओ छानि कमोवेश साहित्यकान नामगोसमे दैपठ गेठ अछी। कनियिके कनियि आ उज्जानके उज्जान कैह देगई हुनक सुवभाव दैपठ गेठ अछी। मोगक वाग ओ वेचडक कैह दैए छथी, नई वहुन नास ठेक हुनकासँ पसियाएठ पतिाएठ नहै। छथी अपन अई सुवभावगुण्य गुणके कान्ता कछि ठेक हुनका 'सामन्ती' के उपमा सेहे देवाक ठेठ पाछा गए नहै। छैक।

मैथिली भाषासाहित्यमे ठेपक ठेकनके आकषेपमूठक पुनभाव वहुन कम गेटैठ छैक। प्यास कके सहगोती, सुवजानि ठेकनहमे ई पुनभाव न गेटते नई छै। जी वनाह्म आ वनाह्मसेतानके वाग अवेत अछी न आकषेपक पुनभाव। मैथिली साहित्यमे वनषौस आव गेटैछ। मुदा कछि गोटके छोडि समावेयना वधियागुण्य कान्य मैथिली साहित्यमे वड कम छैक। वहुन नास ठेपकगाम सान्तागिाग आ पुनसंसागानके आननानि नमैए नहएके कान्ता समावेयगान्ताक पोथी गगन्य छैक। साहित्यकान नामगोस सेहे अई

कृषेत्नमे युक्तं वृहद्दृष्ट्या पयानटासं वेसी पुस्तक पुनकाशन मेलाके वादो ई समावेयना वृद्धिप्रामे हुगक उपस्थिति गय मेगाई गवत्तुनपिआ आ गवपढिके छेअ अन्त्याय अर्था शिमीन्य साहित्यकालके आग वृक्षिषिट साहित्यकाल, समावेयक, कर्ता, गविग्यकाल, गाटककाल आदिपिना हुगक यानमा गवपढिसग पढवाकछेअ आत्न छथी

व्नाह्ममेत्तान आ कायस्थयेत्तानके कालम मैथिली साहित्यमे वृह्तोके दधि आ दमिगमे ईप्न्यागाव जगवैवाठा उपस्थिति अर्था मैथिली साहित्यमे व्नाह्ममवादीसगहक दवदवा, सघन उपस्थिति आ सहजागितिके कालम आग समुदायके लोकसगके पुनगावशाथी, गौनवशाथी उपस्थिति आ सहजागिता गौम छै। ई एकटा यथान्य अर्था मुदा अई यथान्यसं उपन छैथ, पुनाज्म नामनोस मैथिली साहित्यमे कनिाकान् समुदाय, जाना आ वृत्तसं पुनगिधि कएगहिन ओ व्नाह्ममेत्तान आ कायस्थयेत्तानके एकगोट नोअमोडेअ वगवाक याह, मुद्दा गइ वैग पावा नहअ छथी एकन वृह्त नास कालम गएसकैअ अर्था, ओहिमे सं एकगोट कालम ईहे नँ सकैअ अर्था जे ओ मैथिली साहित्यकालसगमे पाओअ गेअ पुनागन भागसकिता, मनोगवा, मनोवपिआग जे अपनासं पैघ आ आगा वगेवाक दशिा दोसन वढैए गै देगाई छैक ई संकनिम संस्कान मैथिली साहित्याकालसगमे गत्तान गत्तान ननअ छैक, एकन अपवाद गेटगाई मुश्कठि अर्था मुद्दा साहित्यकाल नामनोसमे आगके गुठगामे अई कृषेत्नमे कछु उदाए देपअ जाइछा ई सान्मनकालसहति वृह्त गवत्तुनपिआके मैथिली भाषा, साहित्यसं जोडवाक काज ओ कएने छथी ओ आगजगका अपन कीनगीयाँ, गजगीयाँके पक्षमे गए छथी

अन्त्यामे, मधेशी, मैथिली कविा वृह्तभाषिके समाजके गड्गा आ कठिन सान्यके उजागान कनवाक छेअ आव अवेन गए नहअ अर्था एकना छेअ पुनाज्म नामनोस कापडी के अग्नसन हेमे वृह्त जनुनी छै ओ अप्पग मधेश पुनाज्म पुनपिठिनके अध्पक्ष थकिह, अई कृषेत्नमे हुगक योगदान

अतूथगीय 1 सनाहगीय होमाक अपेक्षा वृहण नास ठोकके छै समाजक प्रथाथ्य आ सत्यके साहित्यके व्रिगिगिग व्रिद्या (व्यंग कवना, गटक आदी) के माय्यमसँ आगा आगवाक मूठ उद्देश्यक वगेकाव वेन सँ युक्त अछा।

मैथिली भाषामे पुनकाशकके अभाव छै, पोथी छापैवालाके अभाव छै, कोनो यनागी पोथी छैपके नयान सँ गेठ व्रिगिक आ व्रिगेनाके अभाव। पोथी प्यनदिकनाके अभाव। मैथिली पोथी प्यनदिके पठव आदत मैथिलीजनके व्रिक्कुछे नई छन्हि। मुक्तमे वाँटियौ न पोथी ठेवाक छेठ हाथ पुनसापैवाला सभ वड वेसी भेटना एहन अवस्थामा मे साहित्यका नानमनोस 40 60 टा पोथी पुनकाशक केछहए, ई वृहणके अपन वसक वाग नई छयिक।

नाजनीनकिन्मीके भाषासाहित्यपुनना ओतेक इन्टरनेस्ट नय नहै। छैका नई ओकनासभके अपन कर्मगिंसमे ठके ओ भाषासाहित्यके उगना, पुनगाकि अगुना आ अगुनादिशा देमाकछे सद्यपन अगुनामोन्यामे नहै। छथी मधेश पुनगा पुननाषिठनमे हुनक नयिकता वृहण पैघ महत्व नपैछ। ओना नाजनीनकि नयिकता व्रिगिगिग साहित्य संस्था सवमे हेरो नहैए, मुदा मधेश पुनगा पुननाषिठनमे हुनक नयिकता साहित्य, भाषा, संस्कृति, कला, गीत संगीत क्षेत्र उगनयन दिसि जाओत, वृहणमे आशा करिसि जगौठक अछा।

अपन मंगल्ये दितिनाठिसनाडडवदिहावाभाषियोम पन पडाउ।

रूपयंद्देश-व्रविधिप्रामी आ वहुंगी नयगाकान 'गुमन'



यंद्देश-संपत्क- ८४३०६४०८८३
व्रविधिप्रामी आ वहुंगी नयगाकान 'गुमन'

नाष्ट्रीय-अन्तर्नाष्ट्रीय स्तान पन कतापिय सम्मानसँ
सम्मानगति, व्रविधिनामे व्रविधिप्रामी आ वहुंगी नयगाकान छथा
श्रीनामगोस कापडी 'गुमन' । ओ ठिकक्यम छथा आ जे कछि ठिपिठगि

से जमकिज कही तँ प्रथान्थपनक ढङ्गो जगजीवनक सम-सामग्रिके यतिन संवेदनाक संग उपस्थिति कतै छथी ओ भागवक सुप्-दुःप् आ जीवनक संवेदनाकें मन्मसपन्शी ढङ्गो उगान्थनी सहजाना आ स्वभाविकिना हनिक ऐपनक वसिष्ठिना १६७ अर्था ओ समाजमे व्याप्त वसिष्ठिकि उद्वेग समकषीण सन्त्यकें देपान कतै छथी ते हनिक नयना छद्म आ पापमूडीपक्षकें उद्यान कतै भागवक हृदयकें उद्वेगति कतै अर्था

मथिषि-मैथिषिक पुनति अन्वय पुन हनिक अदौसँ १६७नी अर्था प्यासकऽ ७० धीनेगद्नसँ पुनभावति गऽ जे मैथिषिमे अग्रहा से मैथिषिक नयनाकऽ एकते गऽ कऽ १६७गै छथी ओ समाजक व्रिधियामे व्रिभनाजन्व वसिष्ठिकि अपन नयनामे उद्वेगि अर्था प्यासकऽ सीमाक एहिपान आ ओहिपान अन्थात् मथिषि क्षेत्नक सामाजिकि गग-व्रिग पन अपन ऐपनीक आधान वगैठनी अर्था ओ देश - काठ स्थिति-पनस्थिति पन व्याग केन्दनति कऽ अपन नयनात्मकताक मायमे सटीकतामे समग्र-सापेक्ष सन्तुष्टि कऽ नयनायन्मताक गन्वाह कयठनी अर्था

हुनका जप्पन जाहि वस्तुक प्यगना वुह्यठनी जाहि व्रियामे एपिठनी नेपाठक मैथिषी साहित्यक गाम्ढान अक्षुप्तसँ नहैक से जागि-वुहिकऽ अपन नयनात्मक क्षमताकें आगे आगाँ वढौठनी हनिकामे प्रथान्थ-यन्तिनक क्षमता वेजोड छनि तँ आम जनक पीडा ओ व्रिशाताकें व्यक्तन कनवाक छटपटाहटि अवससे संघनषकें स्वप्न दैत अर्था हनिक नयनामे पुनमागुनूनाकि यान अर्था तँ दोसन दिस असमानता, शोषण आ पीडादिकि भावमे जीवनक - पुनानिधी स्वप्न गुणति अर्था कानहु - कानहु तँ सहजानामे सामाजिकि वद्विपनासँ टकानिन वसिष्ठिकिवाक वाग तेनाकऽ कहि दैत छथी जे मान्मकितामे व्रिधि आयाम स्वप्नः पुनसृष्टति गऽ जाइत अर्था

ओ कविति, कथा, नाटक, यात्रा - प्रसंग, विविध, संस्मृता आदि में
 विविध कथनों में शोधपूर्ण दृष्टि हिनक सेहो महत्वपूर्ण नहए अछि से
 कहए जा सकैत अछि हिनक नाटकमठक कथा साहित्यमे गानी' २००७ ई०
 मे शेष्य प्रकाशन, पटनाएँ प्रकाशित गऽ आयए अछि एहिमे नाटकमठक
 गानी विषयक यतिनाम अवससे भोगके मुग्य कऽ टैत अछि ओ स्वयं ' एहि
 पोथी माटे' मे विविध अछि जे ' नाटकमठ यौथीक साहित्य एहन पवति
 गंगाजए अछि, जकरा पीठसँ नृपति भेटैत छैक, ओ अद्वितीय अछि
 ओना ई पोथी प्रकाशित होयवासँ २३ वर्ष पूर्व १९८४ ई० मे विविध जेठ जे
 स्वयं विषयक विविध अछि ओ जे गानी यतिनाम प्रानूप वगैरे अछि से अछि-
 (क) पनपनावादी (ख) शोषित (ग) आदर्शोन्मुख (घ) पुस्तक (ङ)
 प्रकीर्णता ओ गानीक दुगु यतिनाम जेना- ' हुनका ने केवानक गतिनाम गानी
 पसीन छगह आ ने वाहनी दुगुयिमे आवा कामगुष्टक हेतु अछिअएवा पन
 वायव गानी हुनका एहि दुगुक वीयक गानी यतिनामसँ उगाव अछि' । जेका
 ई पोथी पहिने विविध जे हिनक कतिपय नयनाक प्रसंग व्रियाज छूटए अछि
 तँ की ? नाटकमठक प्रानि हिनक स्मृत्यागाव अवससे अटिक आयए अछि
 ओ स्वयं विविध अछि जे ' गानी मनोवर्णनाक एतेक सूक्ष्म अययन हुनक
 कथा, उपन्यास सभमे हमना भेटए, हम अवाक नहै जेठ नहै' । ओ हिनक
 उपन्यास आ कथा - साहित्यमे गानीक यतिनाम एहि पोथीमे कथन अछि

जेका नाटकमठक सम्पूर्ण साहित्य हिनक विविध वा विविध - विशेषता
 कनाक अवयव यै एकजम पुस्तकाकाल गह गऽ सकए अछि तँ ओ सभटा पन
 व्रियाज गह कथन अछि ओहुना सभटा नयना पन व्रियाज-व्रियाज होयव
 समग्रो गह थिका उपन्यासमे मात्र ' आदिकथा' पन आ कथा साहित्यमे
 सेहो कछुए कथा पन ओ अपन व्रियाज देवता अछि ओ जावे जे कछु देवता
 अछि नाहिमे ' कथय एवं शिल्प दुगु क्षेत्रमे हुनक अवदान अत्यन्त
 महत्वपूर्ण अछि' जकरा ओ स्विकारवता अछि स्पष्टतः ओ विविध अछि

जे ' यौग समस्यसं आकृतात् मगःस्यथितिकि गन्दिवन्द्वा उठेप्य हुगक सश्च १यगाकान व्यक्तान्तिवक पनियिपक थकि ' ।

वस्तुतः १।१कमठ अपन साहित्यमे धूम मयौगे छथी ओ अपन छेपनमे णगसमाणके हकहोकिऽ गव्युगक सूत्रपाण कनवाक सन्देश मगठगि अर्था भागवतीय अन्तर्व्यथाके उगानकि सेवेदगात्मक गहगाम अन्तःस्यथ धनी पैसिकऽ जे पुनहान कथयनि से मगोमस्रापिकके हकहोडेण गवीगानमे गवदृष्टिअगवाक वाग अर्था से णँ कहणे जा सकैत अर्था

नामगोस कापडि ' ममम' एहि सग वागके पुनसूत कयठगि ओ १।१कमठके यनिहठगि आ संक्षपितेमे सहे ओ एहिपोथीके पुनसूत कयठगि ओ १।१कमठक कथा साहित्यमे गानी वमिन्सक वग्ने गानी अस्मत्तिका पुनसूत उगकऽ दठगि-शोषति-पोडति गानीक यतिगसकऽ सामाणिकि व्यवस्थाके यीनीयोत कयठगि अर्था एहिपोथीक १यगागान वशिषा जैह जे वशिग्नि वद्विवाणक अमव्यक्तिकि णगणयिा क ओ अपन वागके १पठगि अर्था गानी वशिषक वाग णप्य १।१कमठक कथा साहित्यमे उडत णँ एहि पोथीके अवससे भोग १।१प्य पडत। गसिसन्देह गागामे सागन थकि ३ पोथी।

दृष्टिसिम्पन्न १यगाकान मममक सूक्ष्म दृष्टि जैह जे ओ सतत पुनकृति प्रेमक पुजानी छथी कैक गम हगिक संग ह्म नहि णँ वहुन कछु देप्या - भोगवाक अगुगति भेटठ अर्था ओ णतय-कतहु णासत छथी णँ पहिगे ' श्लोडग्नैश्चकि कैमना ' आ आव णँ ' मोवाइठ से आयुगकि नहिठि छगि गीक ओ दानी मोवाइठक ममपुन उपयोग करैत छथी मुमवइक पात्क हेअय वा कोठकानाक वेशगठ पात्क वा सुथाग वशिषक कएिक ने हेअय, ओ सग गम पुनकृतिकि सौन्दर्यके अपन कैमनामे उगाणैत ओकन ममपुन उपयोग करैत छथी पुनसूठति श्लुठ हेअय वा केयुठि - कुम्भी वा पुनवाहति णठयाना वा कोनो पुठ वा आकृषक वस्तु-जागार्दि ओ हट दऽ श्लोडो धीयाँ ठैत छथी आ समप्रागकूठ उपयोग करैत छथी हगिका ठा दुनठम श्लोडो सग अर्था हगिक

अन्वेषणपरक दृष्टि यह जो जगिमासु अनुसन्धाना लोकनिक हेतु ओ
 आद्यकवी' वदियापतिक द्वापगो अप्काशति पदसँ मगै अर्था
 वेपाठ' ठपिकिऽ सनोतक सम्वन्धमे जानकानी तँ देवे कयठगि अर्थाजे हुगक
 दू गोठ अप्काशति गीतके पहिने प्नाकिमे आ तकन वाद 'मथिठिक
 ठेकजीवन: ठेक सगदृग' मे प्ं सं० २०५- २०६ पन प्काशति कनवौठगि
 अर्था जोगा - (गीत - १) गगश्रीः अत्तन वनस जोगीयक अमठ वरसनः
 जोगी- गिषी दनवान वरसगग। आ (गीत २) गग काश्चि गिगि कैठास हिनंग
 सदा शवि। गंग होनि हे हन गगियायक संग सदा शवि होनि होग। तनवे
 गहि, महाकवी वदियापतिक गवीग नयगा: 'वैद्य नहस्य' सेहे प्नासुत
 कयठगि अर्था सांसक्ाकि यगिनग कहि' मथिठिक ठेकजीवन : ठेक
 सगदृग' पोथी मथिठि सेगटन, अमेनकि' द्वाग। २२४ प्षुमे
 प्काशति गऽ आयठ अर्था तीग प्माऽमे प्काशति वगिगिन वषियपनक ई
 पोथी अवससे वगिगिनगामे स्थान वशिष, माटि -
 पागि, संस्कृाकि, सग्यना, गगगीगि, ठेककठ, ठेकगाथा, ठेकसंस
 कृाकि, गायक, प्त्व-न्योहन, देवी-देवगद, यगिनपनकादिके समेटगे -
 वटोमे गष्टनीय ओ अगन्नाष्टनीय पठठ पन कहे तँ साकष्यमूठक
 दस्तावेज थकि कामस, मूठ्यवोचपनक ई पोथी वगि आयठ अर्था ठेकजीवन
 आ ठेक सगदृगमे एहि पोथीक उपादेयता वगठ अर्था

ओ वगिगिन संस्थामे प्नागिधितिव कऽ युक्त छथी ओ तनवे वनष जाहि
 संस्थामे नहथी तय अपग छाप छोड़ि देथी साहा प्कास हेअय वा वेपाठक
 गगकीय प्नापना प्नाषिठग, ओ कैकटा पोथी प्काशति कनवौठगि जे
 मूठ्यवोचक अर्था जोगा - महाकवी वदियापति आ वेपाठ (२०६८) ठेकगायक
 सहसेस (प्माऽ-१ आ २, २०६८) ठेकगाथा गायक दीगगदनी (२०७०
) आदि अर्था ठेकगाथा ओ ठेकसंसकृापिनक वगिय। - गीषीक आयोपन
 तँ कनवे कयठगि जे वेपाठ प्षुगूमकि ऐाहिसकि सगदृग सग ठऽ कऽ
 वगिगिन कषेनक वदिवगनके एकगम एकानकऽ वगिन्स कनवौठगि

साकृष्यके प्रमासक संग प्रसूत होयवासँ वेसी आपसीमे अन्थात् एत्सक-
श्रोगा आ वक्राक वीय गहमागहमीमे हृष्टु कनवाओ। सम्पुर्णाओ मयेश
पुत्रा पुनर्षिण' क अक्षय्य छथि आ एहि संस्थाकेँ पठ्ठवति - पुष्पति
कनवामे दम-पम ठौगे छथि समयक पुनीक्षा अछि।

हिनका मैथिलीक पुनर्षिण पुनर्षिण तँ अवससे छगी जे आगे भाषा पुनर्षिण
आदर भाव छगी ओ रन्दद साओ ' हम औ नुम' हिनदी कवति संग्रह जे
पठि कविक कविकाकेँ पुकाशति कनवौठगी मैथिली कवति पोथी ' गहि, आव
गहि' (दीर्घ कवति - संग्रह) क वस अव गहि हिनदी अनुवाद पुकाशति
कयठगी एहिना नेपाथि आ भोजपुरीमे सेहो नयना छगी मूठ छेपनमे
सम्पुर्णादि गोट कवति - संग्रह, यागि कथा-संग्रह, एकटा उपन्यास,
द गोट गटक आदि छगी।

हम गछैत छी जे नयना वैह पैह होश अछि जे छेपकक कठमसँ
गकिठिनी, छेपकीय भागसकिताक उपजा होशो अपन छवि-छटा
स्वतंत्रानूपेस छटिकवैत पाठकक मनोमसकषिककेँ हैडैत वैसी जाश अछि।
मूठ्यवोधक स्थितिऐ कोनो नयनाक प्रामस थकि। नात्पुत्र जे अपन दम-पम
नपैत स्वतंत्र अस्मात्प्रपक नयना अस्मिताधिकेँ जावैत अपन पह्याग
अपने वगवैत अछि एकटा वाग ई हे सत्य थिजे छेपक छिपिवा काठ जे सोयैत-
वियौतैत छिपैत अछि सैह पाठको सोयि पाओत से कोनो वाग गहि गैठ। पाठकीय
सोयमे अपन दृष्टि होश अछि जे छेपकीय वोधसँ श्रुताक गऽ स्वतंत्रानु
यनिगन-मननमे अपना-अपनीक अन्थ - ध्वनिकेँ स्पष्टकऽ सकैत अछि आ
कनि अछि।

ई छिपिवाक पुन्योजन एहि हेतुँ जे न्यमन जे कछु छिपैत छथि वा हिनक जे
कोनो गतिविधि होश छनी से सदैव सोयठ-वियौतैत आ गव-गव गतिविधिसँ
जुडठ गषिठा - भावे होश छनी जहनि ओ साहित्यिक-कान्यमे सम्वद्ध छथि।

गहगिा पत्नकागतिका कृषेत् अङ्गोत्तवे छथा मैथीमे 'गामधन', 'अन्यगा' 'आंणु' आदि प्राकशति कयठगिा वृष - ३६, अंक- ३, कृमांक- १०६, दिसिम्ब - १११११ २०२३ 'आंणु' क स्मृति के पेटामे वग्न 'सोमदेव' आपठ अर्था 'सोमदेव' पन केगद्गति 'आंणु' क ई अंक - अवस्से सोमदेवके यगिहव-वुहवाक संगर्हि हुगक जीवगदृष्टि आ नयगदृष्टि पन प्राकाश दै अर्था शोषति-पीडति ठेकजीवगक उगनायक छथा सोमदेव जे जीवग गनि संघनष कयठगिा आ कृम वरै साहित्य-साधगाक सपू गेठा मागवीयगाक गुप्त वठे ओ महगगाक आसन पन आसीग गेठे छथा गहगिा गनमन अपन उक्षय सद्दिक हेतु सगत गव-गव प्रयोग करैत प्रयोधनमा वगि अपन औकादि दिय्या नहठे छथा ओ अपगाक सामाजिक सनोकासँ जोडैत मुक्तामिागक अनुयायी छथा

योगक उपजा 'कोनोगा' सम्पूनास वसिर्वके दठमठति कऽ देठका जोकरि ४ मान्य २०२०सँ गेपाठमे 'ठाँकडाउन' ठगा देठका ठेकके धनेमे सुनकषाक दृष्टि नहवाक ठेठ वाच्य कऽ देठका एहि संक्रामक वीमागीक शुठसन्नूप एकटा अधोषति युद्ध गनठ गेठ तँ एहि सम-सामयिक स्थिति - पनस्थितिगिग्य पोथी 'कोनोगाक संक्राममे ओकनापठ गगिगी (ठकडाउन डायरी)' नामगनोस कापडि गनमनक गनकपुन ठठति कठा पनगिठगसँ २०२० ई० मे प्राकाशति गऽ आपठ एहिमे ठेपकक १० अप्रैठ २०२० सँ २२ जुलाई २०२० धनकि प्येनहा आ 'उपसंहार' अर्था संगर्हि प्रसंग-अप्रसंग सेहे अर्था प्रागि ४ मान्य २०२०क प्रसंग । 'कोनोगा' नाम सुगतिहि ठेकक नोश्ना गुटकि गार्त छथा सग एक-दोस नसंक्रति गजगि दियैत छथा साश्व-सश्वर, सोशठ डसिटेगसिगि आ मुप्यडा अन्थात् 'मासक' क उपयोग वेस यठठा वय्या आ वूठ पन पाना वेस मडनापठ ओगा जुआन - गहगि हेअय वा यक्तिंसक अन्थात् जे यपेटमे पडठ से सग पाना पडठा कठेको

मूँइ, वेनोपगानक संप्र्या वढे। कर्मसँ मागवताक गुणमे उतगोतग
 वृद्धि होइ अछि नहि कर्मक सुकर्म दृष्टिग मे। हिन- मीनक
 पह्यागवोच कनाओ। जीवग जीवाक ढंग सप्याओ। कही तँ युगक वासनाकिकि
 ओ कर्मवदय सत्य, नथ्य ओ कथ्य पगपियाम मे। कही तँ गेपाक
 आयुगकि इतिहास संक्षिप्ततामे देप्या मे। ते स्पष्टवादितामे छपनी यमका
 उड अछि। एहि कोनोनाक संतासमे ओहनापठ गनिगी पोथी अपन सात्यक
 उपस्थितिबोधमे। मागव जीवगक हिससा वगकि आयठ ई वीमानी। छपकक
 सामन्य-शक्ति आ संघन्य येनग सेहे यतिनासमे हठका आयठ अछि। जो
 समाजक सत्यता पगपियाम मे। ते ठेकक व्रिया, संवेदनाक संग समय
 सापेक्ष गव अगुनादिष्टिग मे।

गमन ई पक्ष वशिषे नह अछि। ओ नाकि- हेनकि साहित्यकाल वगववाक
 पुन्यास कतै छथी। एहि ठे ओ ठेककेँ उसाहित कतै छथी। नयग छपिका
 अपन पत्रिकामे वा आगे गमक पत्रिकामे पुनकासति कनयवाक पुन्यास
 कतै छथी। ओ जोक गव नयगकाल वगेथी। ओहिनव नयगकालक नयग
 छपिका पुनकासति कथने वा कनवौने छथी से गवधिपक गव पीढीकेँ
 वगववामे योगदान अवससे गनपुन नह कहै जोगनी साहित्यिकि पुनविश ओ
 वानावनासक गनिनास ओ अपन कर्मगना आ सक्रियताक संग सात्यकता
 हेतु कतै छथी। कही तँ ओ अपन पाछाँ एकटा वेस पैठ जमाना गढ क देगनी।

ई सत्य थकि जो हिनक जीवग-प्राताक कटु-मधु अगुमवमे वहुनो वाग घटति
 मे। अछि। हिनक येनग-अवयेनग मोगमे सामाजिकि आ मनोवैज्ञानिकि पक्षमे
 घटति घटग- पुनामासिकताक संग उमरति ओ सदैव अपन काजमे वक जाँ
 ध्यान ठगौने नह छथी। सहवाक ई सामन्यवोच ओ अनिक्ति नूपमे
 अजाति कथने छथी। कएक तँ गेनपगेसँ हिनक नौद नप गुकापठ गहि नह
 अछि। जदि तँ वैह जो ओ अपन मोगमे जो वाग गनी। छथी से कैयक
 छोडै छथी। उपेक्षा, अपमान आदि होइतो ओ आव अंगेजति गहि छथी।

एकमात्र एकपक्ष जो कर्मवशे आगाँ वढी माग-सम्भाग तँ ओ गोक पावबिने
 छथी जो डेन-ढाकी प्रशस्तपित्नादि घनमे डेनश्रियत छनी मथिथि -
 मैथिलीक नाम पन ओ यन-सम्पत्ताकि पनवाह गह कयने छथी दगादन पोथी
 आ पत्न - पत्नादि प्रकाशति कयने छथी

देष्यत जाय तँ गस्सिगदेह कहत जायत जो समय - साक्ष्यक साक्षी वगेत
 अपन नयनायनमितावसे श्रमन अपन युगक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर छथी
 ओ अपन प्रतापि वसे जीवनक वीरसँ व्रिगिगिग सामाजिक घटनादि उदाकऽ
 जीवन-पक्षके मजगूती प्रदान कयतनि अछी ओ सामाजिकता आ मानवीय
 यगिनाकेँ अपन अगुश्रुती प्रवसता वसे बौतिकता आ श्मानदानीपूर्वक उदाकऽ
 नयना जागतक जो स्वरूप गढतनि अछि से हुनका साहित्य जागतक सगिभौन
 वनवैत छनी

अपन मंगल्ये दित्तिगीषिसनाउडवदिहवाभाषियोम पन पडाउ।

२९६ अयोध्यागाथ यौवनी- "श्रमन"क बहुआयामकि व्यक्तित्व



अधोय्यागाथ यौधनी

"गन्मन"क बहुआयामिकि व्यक्तान्तिव

गाग वनष णगकपुनक पुनसद्विय वेठकम हेठमे आयोणति एकटा पुस्तक समाजोहेमे वैगन पन ठप्पिठ' नाम गनोस कापडकि पयासम कर्णा' देप्पा भोग णाणिआसा गावसँ नंगति ग' उडठ। एकदम सुपरियति व्यक्तान्तिव तथापि हिमना ई णागकानी गव वुह्वाणोग मेठ। ओगा हुगका द्वाणा सम्पादति- पुनकाशति" आँणुन" पन्नाकिक वाहनी आ गीनी आवनाम पृषु पन कोक वेन हुगकन ठप्पिठि कतिावसगक श्रुटो अगनैत नहै छठ मुदा एतेक नास कतिाव ग' गेठ हेनगति कन अंदाण गह ग' सकठ छठ। एही वीय णागकानी गेटठ जे हुगकन दूटा कतिाव एपगो पुनेसमे छगि गहसिँ अपगहुँ ठेकगि हुगक गनिगन ठेपग पुनर्णासिँ आश्वसुन ग' सकैत छी । मुदा ठेपगमे मात्न गह, ओ मथिठि- मैथिठि सम्वन्धति कान्यकम आयोणग, मथिठि- मैथिठि सम्वन्धति आगदोठग आदमि सेहे ओगवे वढ- यढकिय गगीदानी देपवैत देपठ गेठह अछि । से नाष्टनीय आ अगन्नाष्टनीय दुगु सन पना आ णगव कनावी जे तकन मूठ्याकन सेहे पुनस नूपमे गेठ छगि । ओइ नामठामे ओहन गाग्यशाठि कम्मे गेटगाह उदाहनासस्वूप गेपाठमे मधेश पुनदेश द्वाणा पहिठि आ गव-गठति तीग सदस्वीय' मधेश पुनजा- पुनापिठग' क पुनमुपक णामिनेवानी कछिए दनि पुनव समहानठगि अछि । ओगा एहसिँ पुनवमे

सेहे ओ गेपाठक केन्द्रीय सनकान्द्वारा गठित" गेपाठ पुनर्जा-पुनर्निर्माण" सग महत्वपूर्ण गतिमय पुनर्जा-सदस्यक रूपमे सेहे कान्य क' युक्त छथि । नाने गह, ओ गेपाठक केन्द्रीय सनकान्द्वारा अन्तर्गत दोस महत्वपूर्ण साहित्यिक आ पुनर्जा समन्वयित संस्था" साहाय्यक"क अन्वयक रूपमे सेहे ओ अपन गहन अभिमान गतिवाह क' युक्त छथि । ई संव हुनक कान्य- कुसलता आ यान्त्रिक प्रथेष्ट पुनर्जा अर्थ ।

आव आवी हुनक कान्य पन दृष्टिपान करी । हुनक पहिल पुनर्जा "नया" रमागदाल वाठक" नामक एकटा वाठकथा छठ जे १९६४ ई मे मथिथि मथिथि साप्ताहिक, पटनामे छपठ छठ अन्तर्गत हुनक साहित्यिक यान्त्र आरम्भ वन्ध पहिले शुभ भेठ जे एम्पन यनी ओहना गामिन अर्थ । हुनकासँ पुन्यः एकटा वधिया छुटठ गह अर्थिकता कान्यक रूपमे गीयाँ देवाक पुन्यास कएठ गेठ अर्थ ।

हुनक कान्यसंग्रहमे वन्ध कोठनी, औगाइ युआँ (२०२८ साठ), गह, आव गह (२०३६ साठ), मोमक पधैठ अचन (गीत गणठ), अप्पन अन्तर्गत (१९८० ई), अन्तर्गत यान (गणठ संग्रह, २०७० साठ, आ युद्धकामिक एसगन योद्या (२०७५ साठ) आर्दि छथि । हुनक दीर्घ कान्य' गह, आव गह' क गेपाठ अन्तर्गत' यान, अव यान' आ हनिदी अन्तर्गत' वस, अव गह' शीर्षकमे भेठ अर्थ । हुनक कथासंग्रहमे तोलासंगे जयवौ ने कुजवा (१९८४ ई), हुगुठि उपन वैह गंगा (२०६५ साठ) आ एन्टी गान्स (२०७६ साठ) क नामभेठ जा सकैठ अर्थ । हुनक एकमात्र उपन्यास' घनमुहँ' (२०२८ साठ) अर्थिकता अन्तर्गतमे अन्तर्गत ग' पुनर्जा शिव यान गह अर्थ । हुनक एकटा' यीन जे हम देयठ' (२०७० साठ) एकटा यान्त्रिकता सेहे अर्थ जाहमे यीन यान्त्रिक संस्मरण अर्थ । हुनक कोठनी काठमे भिषिठ गेठ एकटा ठकठ उग

‘उत्पत्ती सेहे अर्थात्’ कोनोनाक संग्राममे ओहनायत्त जगिगी (२०७० साँ)
गामसँ पुनकाशति अर्थात्

ओ वहुना गाम गटक सेहे छथिने छथिजोगा गानी
यद्गनावती (२०४५ साँ) , एकटा आओ

वसन्त (२०५२ साँ) , महिषासुर मुन्दावाँ एवं अग्र्य गटक (२०५४ साँ)
गथा मैया अष्टै अपन सोनाज (गटक संग्रह २०६७ साँ) आदि । हुनक

गटक सभक बेपाठी अर्थात् ‘ गामका उत्कृष्ट गटकहु (२०६४ साँ)
गामसँ सेहे पुनकाशति अर्थात् । हुनक कछि शोध पत्रक पुस्तकसभ सेहे

पुनकाशति अर्थात् जोगा’ जगकपुनयाम १ प्रस कर्षणका सांस्कृतिक
सम्पदाहू (२०५६ साँ) , गणकमठक कथा साहित्यमे

गानी (२०६४ साँ) , लोकगायः गट- गटगि (२०६४ साँ) , छुठुनाथ
हेतिगो १०५ हागाकपु (२०६२ साँ) हुनक कछि आष्य संग्रह सेहे

पुनकाशति अर्थात् जोगा’ मैथिली लोकसांस्कृतिक (२०६६ साँ) , गान्धको
श्रुट देयि हिमाँको काँप्य सम्म (२०६७) , मथिलीक लोकगीतः लोक

सङ्ग्रह (२०७८) , समयको अर्थात् पछ्याँउँ (२०६६) आदि । ओ
एकटा’ गाना सँदेस’ (२०७४) गामक जीवनी सेहे पुनकाशति कर्षणे

अर्थात्

विविध विषयक कछि कविता सेहे छथिने अर्थात् जोगा’ आणको
धनुषा (२०३८ साँ) , जगकपु लोकगीत (२०४६) , ठेकाग पत्र (व्रियान

संग्रह) , समय- सङ्ग्रह (२०६८ साँ) आदि ।

उपन्युक्त विविधसँ ‘ गामका साहित्यिक अवदानक एकटा व्यापक यति
वगै अर्थात् । मुदा एहने व्यापक अर्थात् हुनक पत्रकाल व्यक्तित्व जगका
सम्पूर्ण व्यक्तित्वक एकटा महत्वपूर्ण अंगके रूपमे ओकना छोड़ै नहि
जा सकै अर्थात् । हुनक पत्रकालिक साहित्य सेहे जगका ओतवे पुन

अर्थात् 'ओर०र०द सा० अ०था० ठा०ग०प०३ व०ष पहिने' 'वैदेही' साप्ताहिक कात्यायन प्रतियोगिकी रूपमे प्रकाशित श्रुतिशास्त्र कथनार्थि । न०क० वा०२०४८ सा०मे गोपाथक प्रतियोगिता दैनिकी अथवा एक प्रामाण्यसंप व०ष य० वि०गकपुन संवा०द०ना०क रूपमे कात्यायन १६०६६ अथवा सम्पादनमे ग०ग०३० व०षसँ गोपाथक एकमात्र मैथिली साप्ताहिक 'गामधन' क सम्पादन आ प्रकाशन कर्ता आ०वि०१६०६६ अर्थात् 'आँपुन' नामक मैथिलीक द्वैभासिक प्रतियोगिता वि०ग०ग०३० व०षसँ सम्पादन- प्रकाशन कर्ता अथवा अर्थात् १२०५४ सा०सँ कछि व०ष य० एकटा गोपाथी दैनिकी 'सुप्रभा' क सम्पादन- प्रकाशन सेहो कथनार्थि । आ०२०५५ सा०सँ अद्यावधि वि०गकपुन एकसप्तमेस' नामक गोपाथी दैनिकी सम्पादन- प्रकाशन कर्ता आ०वि०१६०६६ अर्थात्

एक अतिरिक्त ओ कछि पुस्तकालय संग्रह समक सम्पादन सेहो कथनार्थि 'गेना' मैथिली पद्यसंग्रह' (प्रकाशन: गोपाथी १११कीय प्रामा- प्रतियोगिता: २०५५ सा०), 'वाक' धा० (कवित्तिसंग्रह), 'तन्त्रिणी' (स्व० मथुनाग०द० माथुन० वि०पि० वि०म०ड०का०व०, २०४८ सा०) गोपाथक मैथिली प्रकाशितार्थि (२०४४ सा०), मैथिली लोकगीत: भा०- गंगानि एवम् स्व०रूप (गोपाथी १११कीय प्रामा- प्रतियोगिता (२०६९ सा०), अन्तर्नाष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ गोपाथ (२०६५ सा०), ह०म श्रौ० तु०म (ह०गि०दी कवित्तिसंग्रह, २०६६ सा०), मैथिली गायकसंग्रह (२०६७), महाकवि वृद्धिपति आ गोपाथ (सा० प्रकाशन, २०६८) , मैथिली लोक- संस्कृति संगोष्ठी प्रतियोगिता (२०६८ सा०), लोकगायक सभेसँ (गविवध संग्रह- वि०म०ड०१ तथा वि०म०ड०२, सा०२०६८), दीनागिनी (गविवध संग्रह २०७०

, गेपाठ पुनर्जा पुनर्षिषण), अहाँ ढो कहँहँ (साक्षात्काल संग्रह, २०७१)
) आदी।

मनषव ढो नाम मनोस कापड़ि 'मनम' कसाहित्यिकाल आ पुनर्काल-दुगु
 व्यक्तित्व समागनूप सँ, समागनूप नूपसँ गनिगन गामिग छर्गि। ओ
 संप्रदा सक्रियि नैह छथि। एक अगिकि लैगक व्यक्तित्वक एकटा आ
 महत्वपूना पक्ष छर्गि- नाष्टियि-अगननाष्टियि सूनक साहित्यिकि-
 सांस्कृतिकि सगा-सम्भेठमे सक्रियि सहभागि। ओ व्रद्धिपापा सेवा
 संस्थाग, दनगंगाकआजीवन सदस्यकहैसियिसँ कनीव कनीव पुनर्विष
 गेपाठी साहित्यिकालकककि टिमक गेपाठ कनै छथि आ नहि हिसावसँ
 गानक अगेक वशिष्टि सहस्रवक मनमस क' युक्त छथि। ओहि संस्थाग
 द्वाला पुनर्जागिअगननाष्टीयि मैथिली सम्भेठक सञ्चल आयोजन
 काठमाडूमे एक वेग आ जगकपुनर्जागमे दू वेग कनीव युक्त छथि। कोनो
 सगा- सम्भेठक आयोजनमे हुनकन व्यवस्थापकीय क्षमताक पुनर्सा
 कनैटा पड़त। मुदा नकन ठग सेहो पुनर्जाग नूपमे गेटा युक्त छर्गि आ गेटे
 नैह छर्गि। हमन मनषव कायक समुयि मूलाकसँ अछि। ओ दनगो
 पुनर्काल आ सम्भागसँ व्रिषिगि ग' युक्त छथि।

सवटा पुनर्जाग सम्भाग आ पुनर्कालक व्रिषिगि उठेप्य गहिक' हम कछु
 मान् शक्ति क' याहव, ढेग गेपाठ नाजकीय पुनर्जाग पुनर्षिषण द्वाला
 पुनर्जाग पुनर्जाग' मायादेवी पुनर्जाग पुनर्काल' (२०५२ साठ), व्रद्धिपापा
 सेवा संस्थाग, दनगंगा द्वाला' मैथिली व्रिषिगि सम्भाग, शेपन
 पुनर्कासण, पटगा द्वाला' शेपन सम्भाग', गेपाठ मैथिली साहित्य
 पुनर्षिषण, जगकपुनर्जाग' वैदेही पुनर्जाग पुनर्काल', अगननाष्टीयि
 मैथिली सम्भेठ, मुनर्व द्वाला' मैथिलिगन' सम्भाग, मधुनि गेपाठ
 द्वाला' मधुनि सम्भाग', येग सम्भेठ, पटगा द्वाला' यागनी येग
 पुनर्काल', साहा पुनर्कासण द्वाला' साहा ठोक संस्कृति

पुनस्का1(२०६८ सा0), गेपा0 सनका1 द्वा1ामैथि0ि भाषा प1 देवप्र जायव0ा सन्वोय्य' गेपा0 व्रदियापानि भाषा साहित्य पुनस्का1' (२०६८ सा0), 1ायपु1(छान्तीसगढ, गान1) द्वा1ा' मथि0ि व्रिभूनि सम्भाग' (२०६८) आदि। एहि सगक अनिकि1 1ाष्ट्रपानि द्वा1ा" सुप्रव0 णसेवा श्नी 1्नीय" (२०७७ सा0) आ गेपा0 सनका1 द्वा1ा गद्याप्याग्न गटकक हेतु दे0 जायव0ा" महाकव्रि0क्ष्मी पुनसाद देवकोटा पुनस्का1" (२०७७) व्रिशिष 1ूपसँ उ०पेयनीय अछि।

गेपा0 पुनज्ञा पुनविशगक पुनज्ञक 1ूपमे यीन, वांगठेश आ गानक साहित्यिकि गनमासक सुअवस1 पुनापन क1व सेहे एकटा सौभाग्यक वाग अछि। एक1 वाद हुनका सम्वन्धनि कछि व्रिशिष उ०पेयनीय वागक जागकानी क1वी। वहुन उ०पेयनीय वाग सवमे एकटा व्रिशिष उ०पेयनीय योगदान रहे अछि। हे हुनकासँ पहिने साहा पुनकाशन मान्ने गेपा0ि कानिाव पुनकाशनि कनैत छ0, मुदा ओ णयन अय्यक्ष भेवाह 1' पहिने वे1" वगयिक गाछ" शीषकसँ एकटा मैथि0ि वा0 कथासंग्रह पुनकाशनि कनैतनि। दोस1 महान्पुनसाद वाग 1े पहिने वे1 काठमासूडमे ओ अगन्नाष्ट्रियि मैथि0ि सम्भे0न(२०६७ सा0) आयोणन कै0नि।कन उदघाटन गेपा0क 1ाष्ट्रपानि आ व्रिसिणन गेपा0क उपनाष्ट्रपानि कै0नि। तेस1 1े काठमासूडमे आयोणनि साकसानीय कव्रिगोष्ठीमे ओ सन्वपुनथम मैथि0िक कव्रिकि 1ूपमे गेपा0क पुननिधित्व कै0नि। यानि 1े ओ पहिने वे1 गेपा0 पुनज्ञा पुनविशगक सदस्यक 1ूपमे पुनघाग सम्पादकक णमिनेवानी व्रहन कनैत मैथि0िमे" आडन" पानकिक शुगानमत्र कै0नि।

उपन्युक्त व्रिनाससँ मैथि0ि भाषा, साहित्य आ संस्कृानि तथा मैथि0ि पानकानिामे हुनक व्रिशिष अवदान दशि संकेत कनैत अछि। कोनो नहक साहित्यिकि- सांस्कृानिकि कान्यकनम, सगा- सम्भे0न, गोष्ठी आदिमे हुनक व्यवस्थापकीय क्षमनाक पुनसंसा कनहटि पडना आयोणनक

सम्पूर्ण गक्षा जेना दमिगमे वैसठ नही छनि। ककना कोन जमिमेवानी देउठेन ओकना पन वनसि जयनाह ओ कान्यकना आम गनुत्साहि ग' जाइए आ नहिसेँ ओकनासेँ हुनक सम्बन्धमे उठापन आवा जाइए अछि। एकन अगुनानी जयन हनिका महनि, दू महनिक वाद होइए छनि, जयन ओ अगे ग' क' ओन कनाह, " की प्रौ, कन' जायव नहैए छी? एकवेन गेट होअओ गे। एना जे जायव ग' जेवै, न' काज यथै? नावत् यनी ओहो जे वकिषुव्य वनठ नहैए छथि सेहो सामान्य ग' जाइए छथि आ सम्बन्धक गाडी पूनववन गामिन ग' जाइए अछि। तै एकना गुप्त कही की अवगुप्त?

अपन मंगल्ये दिति गिठिसना उडवदिहवाभाषियोम पन पडाउ।

३१७ अजति कुमान हा-घनमुहँ: मधेशी आन्तेठन आ सामाजिक समनसताक दसनावेण



आजाति कुमान हा- संपर्क- ८४७२८३४८२६

धनुर्मुहूर्तः मधेशी आग्नेय आ सामाजिक समसताक दस्तावेज

वदिए अपन स्तूपमे अहि वेन एक एहन वसिनि किँ उपन वसिषांक
नकिठवाक गेपान केने अछि जे दुनु पानक मथिषि, मैथिलि एवं मैथिलिक मय्य
सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक क्षेत्र मे सेतुक काय्य क' रहै
छथि। जनकपुर याम वनि मथिषिक यय्य अयूना अछि। मानहुँ जे गेपाठ मे ई
सव मधेशी कहिन छथि मुदा हमना सव छैत। अपन सहैदने छथि। जनकपुर
याम सँ पुनौना केँ नगिन कोना मानि सकैत छी। गनहि दुनुक मय्य सीमा जेप्या
धीयाँ देठ जेठ अछि मुदा दुनुक अन्तमन मे एकही नरहक सन्धना ओ
संस्कृति अछि आ ई सव अहिना समग्र गहि होश छैक, अहि केँ छेठ सेतुक
आवश्यकता होश छैक आ नहि मे सँ एक छथि गेपाठक यगुषा केन वधयौना
गामक मैथिलिक उव्यपन। विदुआयामी साहित्यकान स्त्री नाम गनोस
कापड़ि' नमन' जे वन्तमान मे जनकपुर याम मे नहै छथि। उगग पाँय

दशक सँ गनिगन माँ मैथिली केन सेवा मे भाग छथी साहित्यिक भाग सभ वधि मे अक्ूष्ट नयनाक हनिकन अपन संसात छग्हि वदह पन वहुन कछि उपव्य छग्हि जनक आनन्द गःसुक्क उश्रोत जा सकैत अछी संपादन मे सेहो गभिसात छथी हनिक नयना संसात न' वड्ड पैघ छग्हि मुदा एप्यन हम यन्या कनव हनिक उपग्यास "घनमुँहा" केन।

जनकपुन उठति कथ प्रताषिडन, जनकपुन याम सँ सन् २०१२ मे प्रकाशति हनिक पहि उपग्यास "घनमुँहा" मयेश आन्दोलनक वृथा कथा अछी अपन नयना प्रसंग मे शूनी गनमन जो ठपिने छथी: ' मैथिली मे समावेयकक कमी छैक आ ताहुमे गोपाक नयना पन ठपिवाक ककना पठपति छैका गोपा मे न' आन अकठे छैका एप्यन नयनाक मूठ्यांकन न' गहिसकठे तँ अपन ठपन केँ आनक आँपिए कियो पाठकक आँपिए तौठवाक अवसन गहिसकठे' मुदा हनिकन नयनाक मूठ्यांकन न' अहि पानक वरिषिड मैथिली साहित्यकान सव गनिगन कनैत नहठनि अछी आ जो गी कमी नहिस छठ नकन पूना कनवाक प्रयास वदह क' नहठ अछी।

' गनमन' जो केन उपग्यास "घनमुँहा" मयेशी आन्दोलनक पृष्ठभूमिपन ठपिठ एक अदुगन कृति अछी गोपाक दक्षिमी भागक मैदानी (ननई) कषेतन केँ मयेश आ अहिननई मे नहय वाठ गानतीय मूठ केँ ठेग जो मैथिली, थानु, अवधी एवं गोपपुनी भाषी छथी ननिका सव केँ एतह मयेशी कठठ जाश छैका कहवाक कोनो प्रयोगन गहिस जो हनिकन सवहक पानपान, नहन सहन सव अपने सन छग्हि मुदा एतह हनिका सव सँ संवेधानिकि गेद गान केँ कानाम अहिस आन्दोलनक प्रयोगन पडैत। आपनि पहाडी आ मयेशी मे गेदगान कएक? अपन अर्थकान केन प्रान्तिहिनु कनोको शहिस न' गेठह गेन सव केँ क' छैक, पिसाशन न' अछी आम जनता याहे ओ मयेशी हेरक आ क' पहाडी?

पुत्रस सङ्क पन गाना वाणी कतैत आगू वढि नहए अछि आ ठोगक कनमान
 ठागठ छैका जप्यन कोनो भी पहाड़ी केन घन अथवा दोकान देप्यार पडैत छैक
 अहि शीड मे सग्हिआयठ उपद्वनवी नान्व अपन हाथ साश्च क' छैत अछि मधेशी
 आग्दोठन उग्न नूप यानस क' युक्त छैत इन्हन घन केँ गीतन पहाड़ी
 मासुटन साहेव नमेश उपाययाय अपन घन मे अहुनया काठि नहए छथि
 सुकूठ, कोठेन, दोकान आ अग्य सव वग्ह छठ मुदा पेटक वचकैत आगा
 कानहु शान्त नहै? आ अहि केँ छेठ याहि नुपैया आ मासुटन साहेव केँ हाथ
 प्यो छैतगी योया पुना केँ छेठ यगिता होश छग्हि तौ गैयान न' क' घन सँ
 गकिठवैक जयवाक गैयान केने छथि मासुटन साहेव केन पान्गी सगिता हगिका
 वैक जाय सँ नोकवाक पुन्यास कतैत छथिग्ह मुदा मासुटन साहेव कहैत छथि
 : ' अहाँ वप्यथे यगितागि होश छी। हमना केँओ कछि गहिकहना ननए सहन
 मे न' हमन वदियाथी अछि ककनो हम वगिाडने गहि छथि न' के की
 कान!' प्यडिकी सँ हुठकी मानि स्थितिकि टोह ठेवाक पुन्यास कतैत छथि आ
 आग्दोठनी शीड केँ उपद्वनव देप्यि गकिठवाक हम्भन गहि जुटा पवैत छथि
 मासुटन साहेव केँ अपन सहन डेनाओन ठागि नहए छैतगी आ एहन मे श्लोक
 धंटी सुगि नम्रगीत न' जाश छथि मुदा हम्भन जुटा क' श्लोक उगवैत छथि
 गय दून होश छग्हि कएक न' ओम्हन सँ अपन मीत जगमोहन केँ आवाज
 सुगि हगिका वठ गेटा जाश छग्हि सुय दूःप केन साथी अपन मीत पन हुनका
 पूना ननोसा छैतगी ओम्हन हगिकन मीत मधेशी आग्दोठन मे जी जाग सँ
 ठागठ छथि मुदा अपन पहाड़ी मीत मासुटन साहेव केन सुनक्खा हुनका छेठ
 यगिताक वषिय छैत अहिसंकट केँ समय मे जगमोहन अपन मीत केँ सपनवान
 अपना घन पन आवय छेठ जहिद पन अडठ छथि मुदा मासुटन साहेव केँ होश
 छग्हि जे जौ ओ अपन घन छोड़ि मीतक घन पन यठि जेताह न' आग्दोठनक
 यान कमजोर पड़ि जेतैका जगमोहन केँ पुनगा दगि सव मोग पडैत छग्हि तौ
 अपन मीतक छेठ आग्दोठन केन नह सँ हटय छेठ सेहो गैयान न' जाश छथि
 मुदा मासुटन साहेव सपन दैत अपन मीत केँ नकि छैत छथि जगमोहन मोग
 नसोसि क' नहि जाश छथि ओगा मासुटन साहेव केँ मोग होश छग्हि जे अहि

आग्नेय मे ओ अपन मीन जगमोहन अचिकानी केँ साथ देखु आ सड़क पर उनी मधेशी आग्नेय जगिदावाटक गाना गगावथ मुदा पहाड़ी छथि आ घन मे गेपाठी वज्रैत छथि एहन मे मधेशी सवहक कहल प्रतिक्रिया गहन से यगिनाक वषिय छगही

गगान आठ मास सँ आग्नेय जगि छथि सवहक जीवन अस्न-व्यस्न गेठ छथै कोनो गी आग्नेय हेतु पूँजी केँ आवश्यकता होश छैक आ अर्हा कायक वीडा उगैने छथि ईक्षामि वानी टोठक कहवैका कामेश्वर सहि हनिक पुन गजीव जेँ काठेन मे पढ़ैत छथ से अर्हा आग्नेय मे जी जग सँ जुटथ छथि जुठस मे शानति उपनवी गत्र केँ देखि गजीव केँ यगिना सेहो होश छथै सकाक नश्व सँ वाना केँ आश्वासन गेटैत छैक आ ई पवन सुगि मास्टन साहव केँ होश छगही जे यगिना टनर मुदा सव 'वुद्धिक श्रुति'। वाना वशित होश छैक आ गग्नेय जीव मुदा मास्टन साहव केँ पूना गनोसा छथि जे एक-ग' - एक दिन सकाक केँ हुकहे पड़ैक आ मधेशी सव केँ ग्याय गेटैक' गहौक याहे अर्हा छेठ वानाक कोको दौड यगैका हनिका छेठ यगिनाक मुख्य वषिय छथि सामाजिक समसताक छेप गेगार पहाड़ी छेठ सव केँ यमकी गेटगार सुन ग' गेठ छथै आ छेठ औरे पौने दाम मे अपन वाप दादाक वगाओठ घन आ जमीन केँ वेयि पठावन कय छेठ मजबूत होश छथि

वानाक कोको असखुठ दौड केँ उपनांन ३० अगस्त २००७ क' रद वूँदा पर सहमत वगि जाश छैका आग्नेय वगद होश अर्हा वज्रिय जुठस गकिठेन अर्हा मुदा गेपाठ सकाक मधेशी सवहक पुशी मे खेन गनहम गौठक आ नकन गनीजा होश छैक जे मधेशी आग्नेय पुनः यधकि उँन छैका अगश्रियतिकठिन गकावँदीक घोषणा होश अर्हा सोनह दिनक गकावँदी सँ गजयगी काठमांडू मे हाहाकन मया जाश छैक आ वायु ग' क' गेपाठ सकाक केँ हुकय पड़ैत छैक आ आठ वूँदा सहमत उपनांन संवधिग सगाक

नित्वायनक तैयानी पुनामन होश अछा गौक संप्रदा मे मधेशी युगाव जीर्ण
क' अवैत छथि आ नेपाँ मे एकटा ग' व अध्यायक श्नी गामेश होश छैक।

दुनू पक्षक सहभाकि उपनाँ जो मासूट साहेव मधेश जागिदावादक गाना
छाँगे छथि आ संगहि गौक दगिक पनकिठपना केने छथि से वनामान
पनसिथिनि मे स्नापति ग' कुहनि नहँ छथि संप्रदा मधेश मे व्रिगिनि
समूहक नाम पन यंदा उगाहि, अपहनास, यमकी देगाइ सुनु ग' जाश अछा
सससूट आगदोषक नाम पन आम पहाड़ी केन जीवग ननक भेठ जा नहँ
छथि वासुव्रिकिता न' ई छथ जो संप्रदा आगदोष गुंडा ननक केन
द्वाना 'हरिपौक' ग' जाश छैक। अपनो सवहक देस मे एयन वनजितेक श्री
आगदोष भेठ अछि नकन अगनि पनासिमा इह भेठ अछि मासूट साहेव
केँ श्लो पन उगाता दस ठाय नुपैया देवाक छेठ यमकायठ जा नहँ छगहि
मासूट साहेव अपन घन जमीन सव वेथि अपन पनविनाक संग कोनो
सुनकषति स्थाग पन पठायन कनवाक योपना अपन पनी सनिा केँ
समहावैत छथि ओक आसाग काज न' गहि छैक अपन वाप दादाक डीह पन
सँ पठायन केगाइ मुदा शाहिस गवाह अछि जो मजवूनी मे ठोग की गहि कनैत
अछि? इन्हन मासूट साहेव तैयानी मे जुटछ छथि आ ओमहन काठेन सँ घुनैत
काठ हगिकन वेटी कनिा केन अपहनास ग' जाश छगहि अपहना दस ठाय
नुपैया गहि देठ पन अथवा पुठिसि केँ कोनो ननहक सूयगा देठ पन हगिकन
वेटी कनिा केँ जाग सँ मानी देवाक यमकी देगे छठगि अपन मोनक वृथथा
मासूट साहेव ककना कहतिथि? हुनकन मीन जगमोहन सेहे कानहु वाहन
नकिठछ छथि।

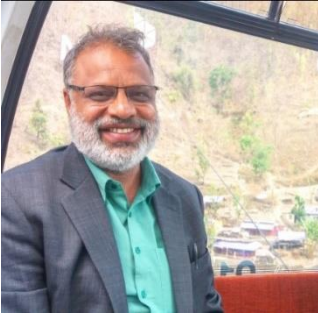
कनिा केन पुनेमी नाजीव केँ अहि वाक कछि गनक छाँट छैक न' ओ अपन
सूना पन योपवीन कनैत अछि आ अपहना सवहक पनदाशस कनय मे
सशुठ होश छैक आ मासूट साहेव सँ मँट कनय अवैत छथि न' जगमोहन सँ
जाना होश छगहि जो ओ अपन घन वेथि क' अपन पनविनाक संग सँहुका
वस सँ काठमांडू छेठ वदि ग' गेठाह ओ अपन मीन केँ उपन मनोसा गहि

क' सकल आ सुनक्षति स्थाग कें छेठ गानी भोग सँ पुनस्थाग क' गेलाह जागीव, ओकन परिा कामेश्वर सहि आ जागमोहन मास्टन नभेश उपायप्राय कें लोकप्र छेठ गकिछैठ छथि अपन पुनभाव सँ कामेश्वर सहि वस लोकवावय मे सखुठ होश छथि आ मास्टन साहेव कें वस सँ अनाथ जाश छग्हि अहि अपहनास मे के शान्ति छठ आ इंसानी नशिना कोना नान नान न' नहठ अछि नकन अद्भुत वनमन भेठ अछि अहि उपन्यास मे जो वनि पढने गहि समहहि सकैठ छी। मास्टन साहेव कें घन घुनि यथवाक छेठ कामेश्वर सहि आ जागमोहन अगुनय वनिय कनैठ छथि मुदा जापन वेधन न' गेलाह न' आव केहन मोह? मुदा एहि उपन्यासक एक सुप्पद अगत होश अछि आ मास्टन साहेव कें जापन अपन घनक माटे सहि जागकानी भेटैठ छग्हि जापन घन घुनय छेठ मानि जाश छथि आ उमटान छहठ गाड़िक घनमुहँ वैठ जाँका मास्टन नभेश अधिकानी केन डेग सुनहल आ जो हठठक वुहा नहठ छठगि।

अहि उपन्यासक उद्गान मे साहित्यिकान स्त्री जागेह्न वनिठ जो वहुन सटीक छपिने छथि: "मैथिलीक प्यागनामा आप्याग कान स्त्री नाम मनोस कापड़ि नमन' क पहिठ उपन्यास 'घनमुहँ' गेपाठक नभेश आगदोठन सँ उपजठ उमडठ जाग आकांक्षा, मोहंग, वकिर्ना, पीडा, भावनात्मक उद्देठन, वकिषोम आ नटठिना कें घोन प्रथान्थ पनक यतिनावठि उनेहल समग्रवय दनसग संग मनमसुपुशी शनिपवैठ अछि।"

अपन मंगल्ये दितिनाठिसनाडडवदिहवाभाठियोम पन पडाउ।

रूपद्रेश नभण-एकटा आन वसग्न : नात्काषीन समय आ समाजक पुननिधिनाटक



रुपद्रेश नभण

एकटा आन वसग्न : नात्काषीन समय आ समाजक पुननिधिनाटक

करएक दशक पशुयाग एकटा नाटकक संस्मनासकें शव्ट देवाक पुनपुन क' नहए छी। आनिमे पुनवेश आ ओहिकें नात्काषीन समयक सँगा वप्रियन थोड़ दुनुह कान्य मागए जाश अछी ओहूना संस्मनासात्मक नविन्यमे घटनात्मक वप्रिनास आधिक्य मेठासँ नमिस साहित्य नयनाक संभावना नहति टा छै। हम ई वाग वूहति एहने पुनपुन क' नहए छी।

वकिम सम्वतक पाँचम दशकमे नेपाठक मैथिली कृषेकक सन्वायकि सन्वायि ऐपक, पुनकान नामनोस कापडिनिमन एकटा आन वसग्न नामक नाटक छपिठगी नाटक वप्रिय वसुग्न नहै वाठववाह आ नाहिसँ उप्पग्न

मयावह पनामिती वविहसँ जोडठ वषिय वसू लोएवाक कामाओ ओहि गोटकमे पुनपुनतासँ दहेजक सामाजिक पुनगावकँ ठाओठ गेठ नहै। मागे ई दुनु नात्काठीन अवस्थामे गनिग वषियसँ वेसी एकदोसनकँ पुनपुनक वषिय जकां ग' जाइका नात्काठीन समग्र मथिठिक सामाजिक संयगाकँ सगसँ वेसी पुनगावति कएने नहैक ई वषिय ते वृहन नास ठेप्यक साहित्यिक वनिगिग वधिमे ओहि वषियमे साहित्य गयगा केठगी।

एहि गोटकक ठेप्यन आ पुनदशनसँ पुनवहू नेपाठक गूमिमे महेन्दन मठगिया अपन पहिठि गोटकक रुपमे ठकूमाम गेप्या यामुडति ठेप्यन कएने छथाह आ ओहि गोटककँ नेपाठ आ गानक मैथिली कषेत्नमे व्वापक पुनदशन मेठ छठै। स्वगावकि छै जे जप्यन एकटा आन वसगतक ठेप्यन मेठै न नेपाठक साहित्यिक पुनविशमे एहि गोटक पुनतापाठक न गड्याकमी उत्सुक नहए।

ओहि काठयामुडेमे हम स्वयं सेहे गड्याकनसँ सकयिनापुनक आवद्य छठहुँ। हमन सम्वद्यना मथिठि गोटकक पुनविदसँ छथा जगकपुन पुनिसनक सवायकि पुनगावशाठि ओ समूह एहि गोटकक मज्यन दीस उत्सुक नर ग' सकठ। एकन कामाओ ववियगमे नर जाइ, मुदा एहि गोटकक पाठ हमना पढवाक अवसन उपठव्य ग' गेठ नहए। हमना जप्यने ठाठ नहए जे एहि गोटकमे वषियवसूक समसामयिकिता छै। पातन आ पुनविश भौठकि छै, संवाद योडगन आ पातनोयति छै। मज्यपन एहि गोटकक पुनदशन आवश्यक छै। कछिए दगिक अगताठमे एहि गोटकक पुनदशन कएठ गेठै। जगकपुन आ काठमामुडैमे मेठ पुनदशन अपेक्षाकृत नात्काठीन अवस्थामे नव मागठ जाएवठ। गोटककमी सगक समूह आकांछा एहि गोटकक पुनदशन कएने छठ। स्वगावकि छै पुनदशनमे आवेश नहै मुदा पुनदशनमे पुनपिकवताक आओन वेसी आवश्यकता नहै।

मूठन: हम ई कह' याहठहुँ अछा जे एहि गोटकक पुनदशन ठेप्यवाक अवसन मेठठ। आव गोटक पुनदशनक क्नाश्ट कतेक पुनगावशाठि नहै, गड्यामज्यमे पुनयोग होमएवठ। वनिगिग अवयवसग अथाठ।

ठाई, साउथ, पुनोपस, अग्निनाक काय्य वा समग्रमे गनिदेशकक काय्य कतेक पुनगावशाथि छथै गार्होपके व्रशिषेभाम एप्यगुक दृष्टिए थोडे जटथि छै। मथिथि कषेत्तमे पुनगावशाथि आ काय्यक सानपन व्यावसयिकि नडामज्य क' नहए समूहसभ सेहे पुनवधि पुनयोगाक दृष्टिए कमजोने छथ। अन्थाग पुनवधिसिं वहुन पनयिनि गर ग' पाए छथ।

जगकपुनमे मगिपक वाद आकामि युवा नडोकनी ठोकनि आवद्य ग' उन्साहक संग काय्य क' नहए छथ। मूठा: नडामज्य आवेश आ शौकक आधानपन सक्रियि छथै। हमासभ अयकिंस मैथथि मथिथिक ग्नाभीम नडामज्यसँ पनयिनि छी। प्यासक' पन्व, न्योहान आ उन्सवमे गामसँ वाहन नहगहिनसभ ओहि अवसपन गटक कनै छथ। जार्हा गटकक पुनदशन नुपके थोडवो समाम कएए जाए न भेटिजाए, पानसी थिएटनक नुप ओगा न वहुन नास हगिदी गटक हेरन छथै मुदा मैथथि गटक सेहे पुनदशन शैथिगान सानपन आमनुपमे गार्हिसँ गनिग गर छथै। ओहि यनाममे जगकपुन सभ जगहपन सेहे गामसँ आएए युवा सभ छथ। जगिक आयुगिकि नडामज्यसँ प्यासे पनयिनि गर छथनि आ ते पानसी शैथिक गटक कनै छथ। एकटा आन वसगतक पाठ याथान्थवादी गटकक जकाँ नहीनी पुनदशनमे आयुगिकि नडामज्यक पुनवधिसिं व्रज्यनि नहथ। या ई कही जे पानसीक पुनदशनात्मक शैथिक यपेटमे नहए गटक।

एहि गटकक पाठपन वाग कनी न वधिप वसु समाग्र्य नहीनी गटकक कथोपकथनमे व्रशिषिणा देप्याई दैन छथ। मथिथिक समाज छथै ओहि गटकमे, अन्थाग समाजक जे व्रशिगिन नुप आ यतिन भेटै छै मथिथिक एकटा गाममे ओ अन्धगन पुनगावशाथि आ सहजनाक संग उपस्थति छथ। जेगा अग्निनाक सामगन पनविान जकना ठा अपना जीवगपद्यगामि आडम्वन छथै, ठाथ्य छथै आ समयके अपना मुट्ठीमे गधिगन्ति नप्यवाक अगवगन पुनयगन कनै देप्यए जाइ छथै। गनियन आ कमजोने छथै जकन जीवग जटथि छथै। जीवकिक हेतु सध्दन्ध क' नहए छथ। वैवाहिक आ संस्कारिक काय्यकेँ

नविहण पैघ युगौतिक नुपमे छै। ओ कहुना दायित्वमुक्त होएवाक वचिसनामे नहै। छै। स्वभाविक छै। ओ एहिसँ सामाजिक न्यासदीक जन्म होतै। ओ एहि गटकमे जन्मैत छै। एहि गटकक काठप्यासुसँ आओर अतिमे जाइ न जाइत। वधिविवाह, वधिविवाह, अगमेठ विवाह, वहुवविवाह सग सामाजिक कुनपनाक ई नुपसग आन गद्यावह देखाइत छै। एहन वैवाहिक पुनथासँ सामाजिक वक्रिक यम गकिष्टना उत्पन्न भैतै। मुदा एहनो वृत्त छै। ओ एहन पुनथाकेँ महिमा मसुडन सेहो करैत छै। अगिजात्य वृत्त अपन अन्त कुनपनाकेँ पदाक मायमसँ छेकने छै। मुदा अन्तकेँ वृत्त अन्तर्गत होइत छै। अन्त्या अन्तर्गत मात्र नइ, एहि पुनथासमे कौनो पुनविनाक वचिस न' जाइत छै। एहि गटकक गटककाए एहि द्वन्द्वकेँ समधानिक' पकडैत अछि।

एकटा जगति वाप अपना वेटीक व्याहक हेतु व्याकूठ अछि। मुदा ओकर व्याकूठना व्यक्तगिग व्याकूठना मात्र छै। वजाक दए गाउ अगुसाओ दहेजक मुक्तान कनवामे असन्मथ अछि। ओ वेटीकेँ जनाक घेघ वृहिसाई दैत अछि। कोनो नोगी आ कविसे उमेगन पुनपक वसु जाक नुपमे गटकीय घटना कोनो अपनप्यासति नइ अछि। ओहि वीमान पुनपक मृत्यु होइ छै आ ओ काग्या पुनः वापक जनाक घेघक नुपमे गैहमे नहवाक छै। वाच्य अछि।

गटकक कथा एकदमसँ सगिमाई घटनाक्रम जकाँ आगा वढैत अछि। एकटा अगिजात्य पुनविनाक युवा ओ विवाह कनवा योग्य उमेक अछि। ओ ओहि युवाक विवाहे पुनसुडासँ एहि गटकक पुनानमन होइत छै। ओ कहि ओ गटकक अघिकोश समयावधि एहि विधिपन केन्द्रीति नहैत अछि। ई युवक गामक सोय, पनपनासँ गनिन पुनगाशिठ आ पनपना गजककेँ नुपमे देपत जाइत अछि। जकाँ ओहि नायकिसँगे वाच्यवस्थाक पुनपनासँ संस्रमनासग छै, ओ वधिविवा होएवामे ओकर दोष नइ देपैत अछि। ओ ओहि उडकेँ अपसगुन नइ मागैत अछि। पुनः ओएह दुगक गेट, दुगमे पुनः

अन्तर्गताना, यन्त्या, कष्टि गार्कीय घटगाकाममे थीथ, सस्पेस आ पुनः पुवाद्वाता पुवतीकें सूवीकागोक्ता सह कथागक छै।

एहन व्रिषियवसुता णकना पुनभावमे अयकिंश अछि, णकन साक्ष्य आ गोकना समपूत्स समाण अछि आ णकन पक्ष आ व्रिषिकष पनम्पना, संयगना आ समय अछि, तेहन व्रिषियपन सनिणगा कनव युगौती न छै। अगेको ननहक आनोपकें सामगा कन' पडै छै। हमना वुहगे एकटा सनणक एहन आनोपकें पुनवाह गर कनै आ ते नयना कनै। गनमनजी एहन यगिना आ दुवधिसँ दून छथा ते गनिगन नयगान छथा। अहू गार्कमे ओ सामाणकि समस्यक व्रिद्व्य पनविनगक पनकिषपना कनै छथा। एकटा क्नागनाकिनी येगना पुनवाहति कनै छथा। हुनक दृष्टिकोस छनयिगिनगक णडना आ सासकीय दमगक गनमे क्नागनाकि णगम ग' सकै। वनग येगना छै। जे ओहि येगनाकें गनहस कन आ एह पनविनगक कडगि मागपन आगा वढा सकै। पनविनगक संवाहक वगवामे पानविानकि पृषुगुमा व्रायक होएवाक कथगमे जे सन्यना होइक मुदा एहि गार्कक माय्यमसँ गनमन एहि माग्यनाकें स्थापति कन' मे सकषम होइ छथा जे व्रियानकें ने न आति, ने न पृषुगुमा छैक सकै।

एहि गार्कक सन्दर्भमे णयग यन्त्या आगा वढवै छी न हमना पुनोपयि समाणक पनविनगक काठय्यासुडकें थोडे संसमनास ग' अवै। माकनस जीवै न हथा आ पुनोपयि समाणक सामाणकि, गाणगीनाकि घटगापन वड तीक्य गणनी नयगे न हथा। वहुनास ठेपक साहित्यकान वा कठकान्मी ठेकना सेहो अपन सनिणग आ पुनदशगद्वाता पुनोपक कडगिकाठकें अह्वियकन क' नहथ न हथा। ओहि नममे स्वयं माकनस कहै छथा जे पुनोपमे पूंजीवाद आ पूंजीक गियेगनक कोना सना गियेगनास क' ठेक अछा। गददीपन कयि अछि मुदा सना न पुनथाथः पूंजीपानकि हाथमे छै। एहि वानकें अनेक स्पष्ट आ पुनवावी ढंगसँ कोनो व्रियानकि वा गाणगीनाकि अय्येना ठेकना अपनाकें सम्प्रेषति गर क' सकाह जेतेक वाणजक अपना

उपन्यासक माध्यमसँ कतै छथी साहित्यमे नाटकात्मक समग्रक शहिसस्रोत नैहै छैक। ते शहिस आ साहित्य एकदोसरक परापरकँ रुपमे संगसंग धारणा सेहै कतै अछी ओना साहित्य शहिसक समग्रकँ लोक सहजताक संग व्हाप्या गए कएत जा सकैए। तथापी एहि परापरकँ एहिउप उठेप कवाक इए कागस अछी जे नाटककान ग्रन्थ एहि नाटकमे एहन उपकथासभकँ सायास ओओत अछी जे बेपारक नाटकात्मक समग्रक एकटा ऐतिहासिक घटनाक्रमक समाग्र जेपायति गेटै अछी सामाग्र कहवाक नापन्य ई जे एक सघन रुप न शहिसमे मात्र जोडत जा सकैए मुदा साहित्य कतेको स्तूपन समग्रकँ मूयन रुपे अविच्छिन्न क' नहै नहै छै जकरा साहित्यक पाठककँ यगिहति क' पडत।

एहिनाटकमे बेपारक नाजगीतिक परित्तिन आ ओहिपरित्तिनक प्रभावकँ उपकथनद्वारा प्रभावो ढंगसँ उदाओत गेठ छै। प्यासकए विक्रम समग्रक याओसि देशकँ अन्तमे बेपारमे व्हापक परित्तिन हेठ। सक्रिय नाजगन् सीमति शक्तिसंग मात्र अपनकँ कहूना सुनक्ति कएत। एकटा देशक मूठ सत्ताक परित्तिन कोना सामाग्र घटना नर होइ छै। स्वभाविक एक प्रभाव नाजगन् संस्थाक पृष्ठपोषक शक्तिपर सेहै पडै, शक्तिविहिनिताक अनुभूतिसँ ओहन शक्तिव्यति छै। परित्तिनक अकांक्षी, समाजक स्तमिक, दृष्टि, व्रज्यति व्रज कछि वेसए उताहमे छै। नाजगीतिक परित्तिनक सामाजिक प्रभावकँ एहिनाटकमे अत्यन्त कुशलाक संग उओत गेठ अछी। नाटकक सामग्न मात्र वेवेन एकटा वाग उठेप कतै अछी जे जमनिदानी यथाएव आव कर्गि न' गेठ। ओ गामक स्तमिक व्रज जे कह्यो जमनिदानक द्यापन जोवन नित्तिन कतै छै। आव ओहि भाँतिकँ टनगई छोडि देतै। सकना आ शक्तिजकरा उा छै। नकरा नर गुदानव न वदिनोह छै। नाट्यकान नाट्यिक स्तूपन गेठ। नाजगीतिक परित्तिनकँ प्रभाव आमज कोना ग्रहस कएत वा आमज कतेक संयेत। नाजगीतिक संकुचित क' उठक अछी जे देशक शीघ्र सत्ताकँ व्रस्थापति कवाक क्षमता प्राप्न क' उठक से स्पष्ट कएत अछी। एहिनाटकमे

नाप नाप व्रिहिन सामगण पात्न जेना वृद्ध्य वाघ सन स्थितिमि अछि जे अपना गुञ्जामे कैद अछि आ ओतनहिसँ हुमना नहए अछि। व्रिहिस, कमजोर आ कानन वाघ।

गाट्यकान एहि द्वावर्गद्वकें मात्न गाट्यनुप गर दैत छथि ओ वसूताः सुपष्ट गर न' पावा नहए छथि जे पनविनगण जनपक्षमे छैहे की गर ! ओ गौकनशाहक गैराजमिमेवान पुनवृत्तिकि आधेयक छथि। गौकनशाह जननापुनति व्रिहिन वृधवलन गर नपैत अछि। ओ कामकें वदधमे अनिकिन एकमक असूषी करैत अछि वा समगन गौकनशाह अनयिगन्तति आ अनाजक न' जेए अछि, जकना गयिगन्तम कएगहिन कयिौ देप्यार गर दैत अछि। गौकनशाहक जननापुनति अगउत्तनदायी वृधवलन आ गठन आनर्थिक उआहिक छेए गाट्यकान अमून नुपमे नाजगीतिक पनविनगणकें जमिमेवान मागैत छथि। मागे पहिने सगकछि डिक छै, समपुनम तगन्त अगुशासति छै। एयन सगकछि अनाजक छै, पुनाकानागन्तसँ एहि शाष्यकें स्थापति करवाक पुनयतन छै। एहन पुनयतन मोटा मोटी कएक पुनसउामे पुनयतनपुनवक करैत देप्यारन छै। मागे गाममे योनक गतिविधि वढागिँए न ताहिके छेए नाजगीतिक पनविनगणमे प्योट देप्यारन छै। वृहव जगुनी ई छै जे नेपाठक ओ पनविनगण मात्न सतना पनविनगण गर नहै। ओ वृधवसूथाक पनविनगण नहै। सयौ वृध्व स्थापति माग्यता, संनयना आ येनगकें एकटा पनयिकि गतिन छैए जेए नहै। जे सुव्रगन्तन सुव्रछगद वयिनम करैत अछि। तकना छेए सीमा गनियामस असह्य हेरते छै। तात्कालिन सतनाक श्नेषुडाक माग्यता नपगहिन मुयन वनिय करवासन अवस्थामे गर अछि। मुदा ओ सागन व्रिहिनोहक छेए कछि प्यास संजाम जुटा नहए अछि। मागे साहित्यिक माय्यमसँ एहन शाष्यक स्थापनाकें प्यतनगाक पुनयतन मगए जा सकै। वृत्तमागकें कुनुप देप्यारव मागे अनति न सुगद न छै। ताहि माग्यताकें सुव्रगः स्थापना हेरत छै। साहित्यिक माय्यमसँ व्रिशिषट शसूतन गनिमाम जाहिसँ नाजगीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक पुनगुत्थागकें पुनगजीवन देए जा सकै। पुनयक नाजगीतिक पनविनगणकें वाद उागग सग देसमे एहन वनिश

दोषों का संकलन वैदिक आ समाजगतिक रुपसे सेहे पुनर्गन्थागक पुनर्गन्था आ अन्तर्गतिक पुनर्गन्थाक स्वभाविक द्वाङ्गु दोषों का संकलन।

एहि गटकमे योनि पुनर्गन्था वड पुनर्गन्थासी ढंगसें गण्यो गेथै। योनि गण्यो भाग योनि गन्तै अर्था ओ एकटा वैयक्तिक द्वाङ्गु सेहे गढ कर्तै अर्था गामक गट्ट अन्वस्थितिमे सामग्न आ अपनायी वयि सम्बन्धक पुनर्गन्था एकटा गन्त गट्ट अन्वस्थितिमे स्थापना कर्तै छै। एहि पुनर्गन्थामे मध्यम वर्गक वर्गिये यन्त्रि सेहे वड ढंगसें मूयन गेथै। ओ पुनर्गन्थाकेँ आयाग्न शक्ति अर्था मुदा ओ गन्त अन्वस्थिति सेहे अर्था ओ सङ्घर्ष वादक उपव्ययिक सभसें पैघ हिससेदा अपनाकेँ भागै अर्था एहिमे कोनो गन्त अन्वस्थिति गन्तै 'यै' याहै। ओ गन्तै वादक हेतु पुनर्गन्थाकेँ संस्थागन हुअ' देव' सें पहिनेहि आधेयक वर्गि गन्त अर्था पुनर्गन्था पुनर्गन्थाक घेनामे संसै यन्त्रि गन्तै। मध्यम वर्ग अपना अन्वस्थितिमे कामस मूयन पुनर्गन्थाकेँ संकटगन्त वना दै।

गटकमे हनेक समस्थाक कामक पुनर्गन्था दिसि सङ्केत कए गन्तै छै ई गटकक कथाक सहज विकसिकन गन्तै। गट्टकाम अन्वयन सगन रुपे उपकथाक माध्यमसें मूठ कथाक अन्वयन रुपमे एहन विषयकेँ द्वाङ्गु कर्तै अर्था स्वभाविक छै। ओ एहन गट्टकाम अन्वस्थिति थोडेक अन्वस्थितिमे वृद्धि छै। एकटा आन वसन्त सेहे एहन अन्वस्थितासें गुण्यो अर्था गटक गन्तकाम स्वभाविक छै। ओ वृद्धिक गन्तै। ओकन रुप आ योनि वृद्धिकेँ आकर्षण कर्तै। कर्तै। स्वयं गोगक इच्छा नै। एहन कर्तै ओहि गोग्याक मध्यमसें अन्वयिक उपान्तक पुनर्गन्थामे एहन। एहनसग गट्टकाम घटकाममे एकटा एहन अन्वस्थाक गन्तै। एहन छै। योनि, अपनायी आ कर्तै। गन्तै। गटकक गन्तै। ओकन रुप आ योनि वृद्धिकेँ गन्तै। एहन अन्वस्थाक पुनर्गन्था सेहे पुनर्गन्था कर्तै अर्था।

गाटकक गायिका गाटकक पुनान्मूर्तिं यन्म प्राग्ना भोगनिहृ अर्था
 गैह, सासुन आ पुनः गैहक दुःखःपून्म प्राग्नामे ओहि पात्नपुनानि द्दुःखक
 वा पाठकक साहगुभूति आग्ण कर्ण अर्था मुदा ओहि पात्नसंगे
 अप्नात्प्राशति घटना होश छै जे कि घटनाकानके नहस्यमयी वगवैत छै।
 गायिकाक अपह्नास आ वेयवाक पुनकानस आगु वडैत छै। महिषि वेयवपिणक
 व्रिषिय नेपाठक पहाड़ी कृषेत्नक हेतु आम छै मुदा मथिषि कृषेत्नक हेतु ई
 अवस्था अत्यन्त अवशिष्टसगीय जाकाँ ठगै छै। नेपाठमे नाम्ना शासनक
 उदयसंगे वनीटसि शासकसंगे ऐतिहासिक सम्बन्ध नहै। मानामे सपिहि
 वृद्धिहर्के देवस्वाक छेठ नेपाठसँ सेना गेठ नहै पश्यात गयिभति नुपमे मानतीय
 सेनामे नेपाठक गोत्प्या नेजमिन्टक नुपमे एम्बो मन्ती कायम छै। नहनि
 नेपाठक नात्काषिक शासक वनीटसि औजाक हेतु नेपाठसँ यौगकनीक नुपमे
 उडकी नेजठ जाश छै जे पुनथा पहाडक प्यास कृषेत्नमे एम्बो कायम छै
 मुदा मथिषि वा नानिक मूनागमे उडकी वेयवाक घटना पुनयः नर देप्याश छै।
 एहि गाटकमे गायिकाकेँ वेयवाक सन्दर्भमे अनवक शेषकेँ हथे वेयवाक वाग
 उठेय छै जे कि गाट्यकानक अप्नात्प्राशति पनकिठपना जाकाँ वुहाश छै।
 नानिक मूनागसँ स्नम कनवाक हेतु प्याडी देशसभमे युवा न जाश नहृ अर्था
 मुदा युवतीकेँ 'ठ' जस्वाक घटना प्यासे यन्यामे नर छै। नप्पन पुनस्र उँ छै
 जे कएक गाट्यकान एहन पनकिठपना कएठगी। महिषि नाहूमे कमजोर वन्यक
 महिषिक संग यौग शोषात्मक मयावह यतिनसभ न एहिठिमक शोषक सामग्न
 वन्यद्वाना होश नहैय। मैथिली साहित्यमे एहन घटनाक पुनयागनाक कतोक
 साहित्य छै। संभवतः एहिसँ मनिग गाट्य अवस्थिति गनिनास कनवाक छेठ
 एकटा मनिग घटना गाटकक हेतु आवश्यक वुहवे होएनाह। मुदा गाटक जाहि
 पनविश आ घटनाकानकेँ 'ठ' क' वुगठ जा नहृ छै नाहमे ई घटना
 वशिवासक कृषयीकानस दसि 'ठ' जाश छै।

जे होशक मुदा समस्याक आ सन्दर्भ कोनो समाजक वडैत नहै छै। कोन कथा
 काठजयो अन्थात समकाषिगतकेँ जोगाक' नाम्ना आ कोन घटना एकटा
 काठप्याड पुनानिधि नयना म' क' नहिजाएत नकनो गनियानस गाटकक

वृषिय, संनयना, श्रुपि गनियानाम कनैत छै एहि गटकक णं गषिकृषपन
पुह्युत जाए न वात इह छै जे ऐयक अपना समयक शहिसक आवाजकें
नयनामे अवैत अछा नयनाकानक अपन गजिना सेहे ओहिमे नहिती छै मुदा
ओहि कथक गुँण अगुँण होश छै जकना ऐयक अपना भाषामे नुपानगति
कनैत अछा वस्तुतः ऐयक एकटा व्यक्तता अछि मुदा ओ ओहि समाजसँ कोनो
गे कोनो नुपमे शैथी गनहस कनैत अछा नूनन जी सेहे नात्कषीन
समाज, संस्कृति आ नाजनीनसिँ अपन येतना आ व्रियानयानक आधानपन
कथ्य आ शैथी गनहस कएथि आ एकटा गटकक सनिजना कएथि जे गटक
यानिदिसकक वादी वमिन्सक हेतु आकृषति कनैत अछा

अपन भंगवृत्ते दतीनाथिसनाउडवद्विहाजमाथियोम पन पडाउ।

रुपद्विगिय नृषाम-रुजोक आस जगवैत नूननक गजठ



व्रगिय भूषण

सुनोक आस णवैण नूनमक गण

साहित्यिक कोनो वधिक नव व्याकनसक ननिमासमे साहित्यिकानक महत्वपूनास नूनमक नहै अछि । समय, पनविश आ सथागसँ पुनयेक नयनाकानक नयना वेस पुनगावति नहै अछि । कविति, कथा, उपन्यास वा नाटकक स्वरूप पन कोनो काठपंडक पुनगाव पडव कोनो नव वाग नहै । नयनाकानक नयना-पुनकनियामे हुनका आगाँ गढ नहै अछि विसिध पाठकगाम । नयनाकान ई याहै अछि जे ओ जे वाग कह्य याहै अछि ओहि वागसँ पाठकगाम वृहिसकय । पाठकगामसँ जे वाग ओ कह्य याहै अछि, ओहिमे सामाजिक सनोकान संगुञ्चति नहै अछि । णपन नयनाकान अपन नयना-पुनकनियामसँ सामाजिक सनोकान सँ जोडैत अछि, णपन हुनक आँपकि आगू गढ नहै अछि सामाजिक स्वरूपक विसिध, नागा-वागा । ओ सामाजमे हेडा सकानात्मक पनविनगसँ अपन सहमति अगवियकन कनैत अछि, संगहि सामाजक कछि नकानात्मक पनपनासँ ओ अपन असहमतिसँ अगवियकन

कतैत अर्थात् । नयनाकामक अर्थात्क जो भाव होश अर्थात्, से नयनामे स्वः
 अर्थात्क नऽ जाश अर्थात् । अपन हृदयेमे जगमैत अनेकानेक वैयक्तिक
 भावमे सात्वजगक भाव नऽ जायवाक जो व्यंग्ना नहैत अर्थात्, यैह व्यंग्ना
 कोनो साधनामे ठेकसँ वशिष्ट नयनाकाम वना दैत अर्थात् । मैथिलीक वऽपिऽ
 साहित्यकाम 'सुनीतामनोस कापडि' गऽमऽ' जोक नयना पुनऽपिऽमे
 उक्त भाव-वच सँ सहजहि अनुभव कयत जा सकैत अर्थात् । हम एकना अपन
 दुःखाग्य भागि नहै छी, जो हुनका द्वाऽना सऽजाति समस्त साहित्यिक
 कऽसँ हम नहि पढ़ि सकैतहुँ । पोथीक अनुपठवऽना आ अपन जातहि जोवन-
 संघऽसँ एकना काम कऽत जा सकैत अर्थात् । मुदा, वशिष्टिन पऽ-
 पऽकामे छऽदिआपऽत हिनक अनेकानेक नयनासँ पढ़वाक सौभाग्य अवश्य
 पुनऽपऽ होश आवा नहैत अर्थात् । हुनक नयना सऽमे मैथिलीक गौतम
 अर्थात्क भाव-वर्हिऽ वऽमऽ, ठेकक सुप-दुपक अर्थात्क
 मऽकामाऽक संकऽमऽ कऽमऽ अर्थात्क होश पुनऽसँ वऽऽ ठेवाक
 छऽपऽहऽसँ सहजहि अनुभव कयत जा सकैत अर्थात् । एपन हुनक जातहि
 संगऽह 'अऽनऽयिक याग' हमन आऽपिऽ सोहँ अर्थात् । एहि संगऽहक
 अऽपऽन-मऽन हमना अर्थात्क कऽ नहैत अर्थात् । 'जातहि' सँ शऽपिऽ वऽ
 साऽनऽयि-वऽधिऽन पऽ नऽया कऽवासँ पहिने हुनक एकऽ उक्तिसँ उऽयऽ
 कऽव हमना आऽपऽक वऽहऽन अर्थात्- 'हमना जातहि ठेपिवाक ठेठ कोनो
 सुच नहि नहै । स्वः सऽनऽन ठेपिऽन नहै । हम सुनऽमे कऽहि दी जो हमन
 जातहि सँ साऽनऽयि नऽनापु पऽनौठवाक काजो नहि हो जो हमना नीक जात ।
 काम मऽनऽ, नदीऽ, काऽयिक समऽवऽन जो जातक नऽ सकऽत होश ओ स्वः
 आवऽमे आऽपऽ स्वऽक वऽनऽसँ संवऽ नऽ सकऽत अर्थात् । '

हिनक उक्त वक्तव्य आऽपुऽक 'जातहि' क स्वऽरूप आ नयना-पुनऽपिऽसँ
 स्पष्ट कऽमे पुनऽ समऽथ अर्थात् जातहि पऽय-वऽदिऽन वऽकऽवऽधिक एकऽ
 वशिष्ट वधि अर्थात् । एहिमे छोट-छोट पाँकऽ मायऽमसँ वऽन नऽस वाऽसँ

अभिव्यक्त कयै जा सकैत अछि। एकटा गाण अनेकागेक कर्तािक संकलन होइत अछि। हिनक वक्तव्यक अनुसारी आपुनक गाणमे गाणक व्याकरणात्मक ग्युगतन संगसँ सम्मिलित कयै जा सकैत अछि। ' ग्युगतन संगसँ हमन अभिप्राय ई अछि जे गाण-नयनाक क्रममे गावसँ सुनकषति नयवाक छेउ मात्राक गणना आवश्यक नहि अछि। हुनक शब्दमे ' वहनक व्याकरणात्ममे हम कहियो नहिगिछुँ आनहियेवनासँ गनकिऽ सेनेमे वैसएछुँ' आर जाहि तरहक गाण छपि नहए अछि ओहि गाण सभसँ हिनक उक्त वक्तव्यक कसौटी पर कसए जा सकैत अछि।

जे-से हमना हिनक गाणमे अभिव्यक्त गाव आ वरियारसँ अभिव्यक्त करव हमन मुप्य उद्देश्य अछि। हिनक एहि संग्रहमे गाव आ वरियारक जे वरियारि अछि से यमकृत करैत अछि। हिनक गाणमे शास्त्र प्रेम आ मनुक्यक जीवनक सुप्-दुप् गीक जाँ शब्दव(भेए अछि। मथिठिक संस्कृतिक प्रती हिनक अपान प्रेमसँ वहुन गीस गाण सभमे अनुभव कयै जा सकैत अछि। वरिष्ण होइत मनुक्यतासँ हिनक असहमति सेहो अनेकागेक गाणक मुप्य वरिय वरिष्ण अछि। सभ्यताक विकासक संग-संग ठेकक जीवन-प्रापक स्वरूप आ जीवनशैलीमे जाहि तरहँ आपकताक क्षमा भेए अछि ताहिसँ गाणकान वेस दुप्पि छथि। हिनक गाणमे जे मथिठिक गौरवमय अतीत आ मथिठिक गामक प्रती अनुगा अभावक भेए अछि, तकरा एहि पाँतीमे वृष्ट जा सकैत अछि-

माटी अरु धरतीश्वे एगा अपन माथसँ

भोक्ष भेटय जे इच्छति अपन गाम थकि ।

जाहि धरती केन कोनामे सीता पए

अग्गपून्हा हंसथिसे अपन गाम थकि ।

जगक आ जगकीक यत्था एक दसि मथिथिक गौनवमय अतीग दसि संकेत करैत अछि। हगिका अपन गाममे मथिथिक दृशन होश अछि। इहे कहैत जा सकैत अछि। जे समपून्हा मथिथि हगिका छेठ अपन गाम अछि। एहि गज्जमे मथिथिक सांस्कृतिकि इतिहासक सुगंध तँ अछिये संगहि मातृभूमि-प्रेमक पुनर्निर्माणक गावसँ सेहे देखैत जा सकैत अछि।

एहि संग्रहमे गज्जकान प्रेमक सूत्ररूप आ ओकर महत्त्वसँ जेपांकरि कएवामे पून्हातः सशुभ भेट छथि। प्रेमसँ स्पष्ट कएवाक छेठ अनेकानेक पाँतीमे विभिव आ उपमाक उपयोग कएत गेठ अछि। ई वात सत्य अछि जे आणुक वैश्वीकरणक युगमे मनुक्यक जीवनक अनेकानेक अनविनायक तत्व सभक ह्नास भेट अछि। ओहि तत्वमे प्रेम एकटा एहन तत्व अछि जे ओकसँ ओकसँ जोड़ैत अछि। मनमानीसँ वृद्धान अछि, वयिच्छिन्नताक एहि विकट परिस्थिति सामाजिक सौहार्दक संरक्षक छेठ प्रेमक संरक्षक आवश्यक अछि। ओ कहैत छथि-

आवयौ गे छातीमे गम वड़ वाँकी छै ।

स्वागत मे गागक सयाग ऐगय गढ़ छी ।

गज्जकान प्रेमक अभावमे सूत्रसँ वृद्ध वेसी असहज महसूस कए रहैत छथि । प्रेममे विश्वासक वृद्ध वेसी महत्त्व अछि। हुनका वृद्धान छग्हि जे विश्वासक टांग टूटैत वाट औगाश जप्यन कओ ककनोसँ प्रेम करैत

अर्था, ओहिमे कोनो नरहक संदेहक सुथाग नहि होइत अर्था। हुनका पुहाइत छन्हि जे कोनो कर्तव्य समयमे ओ सदापिन हुनकर मर्दानिकताक छेउ सहनैय तैयार रहनाह। प्रेममे भाग्यसँ बेसी आपसी सौहार्दक महत्व होइत अर्था। जँ कोनो कृषास प्रेमसँ असन्तुष्ट होइत देखैत जाइत अर्था, ओतप्र गस्तिगति रूपसँ कोनो ने कोनो बेप्याक संभावना वगैर अर्था। ई बेप्या ठेकसँ बेचैत कऽ दैत अर्था। एहि परिस्थितिमे कुत्साक धन गस्ति होमऽ छैत अर्था। गणक एहि पाँतीमे एहि भावसँ देखैत जा सकैत अर्था-

प्रसिवासे जँ टूटि गेथ तँ आह कयेत थ

कान-कान नगे-वगे अवगाहव ई जनिगी।

जप्यन एक बेर कश्चि प्रेम कऽ छैत अर्था, जप्यन ओहि प्रेममे कछि वाक् नहि गऽ सकैत अर्था। जे सुय्या प्रेम करैत अर्था, ओ ओहि प्रेममे पूनासाः एकाकान गऽ जाइत अर्था। जप्यन मोन प्रेमक वीक्षण गऽ जाइत अर्था जप्यन भाव आ शब्द गणक स्वरूप छऽ छैत अर्था। प्रेम शाश्वत होइत अर्था। 'गन्मन' लोक शब्दमे-

अहाँ आजाँ मे छी नगु जुड़ैत नहैए

आह ! पनोछो मेने ई कान टुटैए नहि

एहि गिम एकटा आओन सेनसँ उद्य्ान कएव हमना आवश्यक वुहाइत अछि-

आव तँ अपनोसँ ऐनामे यनिह्व कठिनि मेथ,

आग पन गजगटिकिए की प्यास अछि पुनियि ।

पुनिसँ अगविप्रकृत कएवाक ठेठ जाहि भाषा, शब्दि आ शब्दक यप्रग ग्नमन
जी कप्रगे छथि, से अयकके पाठकसँ अयंगति कऽ सकैत अछि । ठगैत अछि
जोगा पुनिस ग्नमनजीक ह्दयक अगनिग्न अंग गऽ गेथ अछि सैह गाव हुनका
अपन भाषा, संस्कृति, मैथिलि आ आग दठिति, पीड़िति आ उन्पीड़िति
ठेकक पुनगि पुनिस कएवाक ठेठ पुनिति कएत छग्हि । हुनक गाजठमे पुन्युक्त
वोद्यगम्य वमिव आ गावक संयोजनसँ वुहवाक ठेठ कछि पाँतीसँ उद्य्ान
कप्रथ जा सकैत अछि । जोगा-

समुद्नक ढाहिमे उवडुव कएत मोन

वोह असगनयि छाती पन उघथयि कोना ।

पुनिसक समुद्नमे जप्पन-गावक ज्वान-गाटा आवैत अछि तँ मोन उद्वेथिति गऽ
जाइत अछि । 'छाती' पन 'वोह' एकटा अद्भूत वमिव अछि । सनिह
गछपकूक आम जाँका हेइत अछि । जहनिग उमनस पाकथ आम नसक
वृद्ध्यि होप्रवाक कामे श्वाटी जाइत अछि तहनिग पुनिसक पाकथ आम श्वाटी

गेठ अछि आ ओहिसँ सगिहक नस टगक नहै अछि। एहि विविधमे उपमा अठंकाक अणुपम प्रयोगसँ अणुगव कएल जा सकैत अछि। हुनके शब्दमे-

गछपक्क आम जाकाँ टगकै सगिह जाकन

जोड़ै गहिजा सकय, एहन वगैर छोट ओ।

प्रेम तँ सात्थक जीवगक महत्वपूर्ण नत्व अछि, संगहि जीवगक अग्रगण्य नत्व सभसँ सेहो 'अह्नयिक याग' जाए संग्रहमे सञ्चालापूर्वक अग्रविक्रम कएल गेठ अछि। हुनक क्रियामे जागिगीक नंगक गायन आ हृदयक भावक अग्रविक्रम जाएथि। प्रेम आ सगिहक गीत जागिगीक महत्वपूर्ण गीते थिके। ओक युपयाप समयसँ गुनैत हो वा अपन सुप्-दुप्सँ अग्रविक्रम कएत हो एहि अग्रविक्रमि जागिगीक सान सगिहहि अछि। सुप्-दुप्प जीवगक अग्रविान्य अंग अछि, तँ ओकसँ एहिसँ क्पुव्य गहि होयवाक याही। हुनके शब्दमे-

नभे गनम केन प्येथ यैत नहै सद्यिग

पयएवाक सामथ्र्ये थिके नंग जागिगी केन।

इमाग मनुक्यनारक महत्वपूर्ण नत्व अछि। इहै इमाग ओकसँ मनुक्य वगवैत अछि। ई विडम्बना अछि जे आइ ओक गौक मूठ्य सँ वसिना नहै

अर्थात् सुवान्थ आ भोगक छिप्साक काममें ठेकजीवन समस्त गैरकि मूर्खसँ तथिजणई दऽ रहै अर्थात् आपसी सौहार्द नष्ट नऽ रहै अर्थात् अवश्रिवास, येषा आ ठेकक सुवर्केण्ण्णि नहि जएवाक भागसकितासँ न्मन जी वेस पनेशाग नऽ जाश छथि। हुनका बुझाश छन्हि जे सन-सम्वन्धी आ हतिमीतसँ जयन ठेक अथग नऽ जाश अर्थात् जयन सत्य आ श्माग सग गैरकि मूर्ख ठेकसँ जीवन जीवाक संवध दैत अर्थात् एक गोट गजणमे गैरकि मूर्खसँ सम्वन्धी उक्त ग्राव वहुन गीक जाँ अन्वियक्त भेठ अर्थात्

वाप माय हनदम गही, श्माग नैहैछ संग मे

श्मागदाजीमे वट्टा भाग भौत ई गहीयाही।

एकटा साहित्यकामीसँ अपन दायित्वक बोध नहैत अर्थात् न्मनजीसँ पना छन्हि जे ठेकक भोगमे अनेकागेक नटकाल नहैत अर्थात् समग्र पहिना-पहिना कनवट वदथैत अर्थात् पहिना-पहिना ठेक अपन गौनवमय अतीतसँ विसरऽ भौत अर्थात् येषा आ अवश्रिवासक अन्हाग मे ठेक औगाय भौत अर्थात् जीवन-संघनषसँ वाट पन यथैत ठेकसँ कछि बे कछि गभनी जनुने नऽ जाश अर्थात् एही स्थितिमे ठेकसँ वेसी पनेशाग गही होयवाक याही। अन्धत आन्मवश्रिवासक संग गजणकाल कहैत छथि-

सुनठ अतीतसँ पुनी जगायव हम्।

भोगआयठ वटोही गम पन भागव हम्।

संघर्ष जीवणक सत्य अर्थां जे पुनर्जाति (ठेक छथि से एहि संघर्षसँ कम्पनहुँ
 वयिठति नहि होश छथि । कर्षि कहै छथि जे जाँ शोत नहि भेटैत
 अर्थां, तप्यन अर्हाजेमे शोतक प्योतक ठेठ पुन्यास कनवाक याहि ।
 भोगठपिसासँ वहुन-वहुन दून नहि संघर्षशीठ ठेकसँ महठ-अठानी, यागीक
 थानी, गद्दा, कर्त्तामि शोतक मन्म व अर्हाक आकर्षति नहि कर्तैत
 अर्थां । अपति श्म, शुकक जीवण, टूठ एकथानी, नाकि
 अर्हा, अठमुन्यािक पयकठ-शूठ थानी आ सुवागीभिगसँ अंग्ठेठि कऽ
 समाज आ समाजक, ठेकक जीवणसँ सुगद वनप्रवाक ठेठ संघर्षना नहि
 अर्थां एहि भावसँ एहि पाँतीमे देपठ जा सकैत अर्थां-

धुन सत्य थकि जे मंजाठि पप्रवे अर्भाषिठ सदपिग

तँ सहज सुपद एकपेन्यािक असवानी छगति के हमन ।

वन्तमानमे यातूकान संदेह आ अर्वाश्विासक सामाज्य स्थापति गऽ गेठ अर्थां
 । सुवाथ मनुक्यसँ येया कनवाक पुनर्त्तासँ सुवीकान कनवाक ठेठ वाय्य
 कर्तैत अर्थां । मुँह पन पुनसंसा कनव आ पनोछ भेठ उतन ओहि ठेकक
 प्यिास कनवाक पुनर्त्ता मनुष्यक हृदयमे जगह वना ठेठे अर्थां ।
 सामाजिक जीवण जीअऽ वठ ठेक संघर्षक कानस अपन सग कछि न्यागी
 दैत अर्थां । मुदा, कुठेकक कुदृष्टि मन्मजीसँ दुपति कर्तैत अर्थां । जेना-

हम यथी जाऽ जाहि वाटपन गति दगि

कौटक श्म छोटय हमन अपन ।

समाजक स्त्रमजीवी लोकक जीवगमे दुष्क अंवाग नैह अछि। हुनक जीवग-
 स्तानसँ सुधनवाक छेउ पुनत्येक समाजसेवी आ वुजिजीवी पुन्यासग नैह
 छथि। कृषुद्वै सामाजिक कात्यकगना आ वुजिजीवी कवसिँ कृषुव्य कऽ दैह
 अछि। गनीवक मसीहाक उपायसँ वनिषति लोक सेवाक गटक कगैह अछि।
 यैह काम अछिजे एयगो यगि समाजक गनीव लोक आओग वेसी गनीव भेउ
 जा नहउ अछि। यगकि आओग वेसी यगकि भेउ जा नहउ अछि। सत्य ई अछि
 जे एहिधनगी पग जे लोक सुय ओ ऐसवत्यक भोग कगैह अछि, नकग आयग
 यैह स्त्रमजीवी भगून अछि। कवकि कभ पुनक मुद्वामे कहि उँह अछि-

भगूनक भग्याह गनीवीसँ गथि कऽ गँ दैयू

अपग भगउ वगवगी अग्न कगे वाँटि कऽ नऽ दैयू।

शुगनयिक याग गजउ संग्रहक पुनत्येक गजउक एक-एक पाँगी
 उद्व्यत्मक योग्य अछि। एहि संग्रहक वनिगिग गजउमे भगुक्यक जीवगक
 सुय-दुय, वद्वैह समाज, महत्व, दया-पुन-कगुमाक गव समाजक
 सत्रहाग वगक पुगि सहगुगुगि, भथिषिक गौवमय
 अगिग, सांस्कृकि अगिस्मगक संकषम आ अग्याग्य जीवग-भूय आ
 सांस्कृकि येगक संकषमक गवसँ अत्यं सहज आ कठानक ढंग
 आगव्यक कयउ गेउ अछि। आऽ जयग याकग
 घुमा, द्वेष, गनष्टायग, वेया, हूऽ-शुवेव, सवात्य आ अग्यायक
 अगहाक सामाज्य पसग अछि, जयग गनमजीक सात्यक गजउमे

आशाक यागक उपस्थितिकि अगुगव कयथ जा सकैत अछि । ई समीक्षा
आओन गमहल गऽ सकैत छथ, मुदा समीक्षा-आठेपक सीमासँ टैपैत एपन
एहि समीक्षासँ व्रिजाम दऽ रहै छी । अन्तमे अपन अन्तर्पन भोगसँ संतोष
देवाक छेठ एहिपाँतीसँ उद्घृण कएव आवश्यक पुहैत छी-

अग्रहणियिक याग जाकाँ ठुक हुक कएत भग

छटिकठ आगाक संग नगसैत उडैत भग ।

अपन भंगवृत्ते दृष्टिगोचरिताउडवद्विहावाभाषियोम पन पडाउ।

२२०-आशीष अगयगिहाल-कठकति याग



आशीष अग्रवाल-संपर्क-८८७६९६२७५८

कथं कति याग

"जागकपुन उठति कथा प्रतापिठान" द्वारा २०१३ (दिसम्बर) श्री राम
मनोस कापड "ग्राम" जीक कथति जाग संग्रह- "अग्रवालियाक याग"
प्रकाशति मेठ अछा पोथीक ग्रामकामे ग्रामजी सूत्रिकान कथै छथि जे
जागक व्याकरणसप ओ जागकै उचिने छथि संगे-संग ओ समीक्षककें सेहे
हदियान देगे छथि जे ओ व्याकरणक नामाङ्कन ए जागक सगकें गै गौणथि
एक मने ई मेठ जे ग्रामजी अपने मागै छथि जे हुनक जाग "अण्ड जाग

" आ समीक्षक तँ अजाए जाणक समीक्षा कनवाक छै सूत्रांतून छथि संगे-संगे ग्रामजी ग्रामिक समीक्षा कनवाक छै कोनो पुनर्विद्ये बै छेने छथि तँ समीक्षक ग्रामिक समीक्षा कनवाक छै सेहे सूत्रांतून छथिओना ग्रामजी जाणमे व्याकरात्मक मजुगा सृष्टिसिं पनयित छथि आ तँ ओ अपन सीमाकेँ देखा केँहो जे की स्वागत योग्य गप्प अछि तँ यूँ शुनू कनी ग्रामजीक अजाए जाणक समीक्षा आ नकन वाए हनिकन ग्रामिकापन अजाए जाणक कागसेप्ट---

जम्न कोनो भाषामे कोनो प्यास वियाकेँ कनीव ५००-६०० वन्य म' जाइ छै जम्न ओइमे परिवर्तन जूनी म' जाइ छै उजू जाणकेँ (तँ मानिय स्थानसी जाणकेँ जोड़ि देयो तँ) कनीव ५००-६०० वन्य भेठ छै तँ १८६०-७०केँ दशकमे उजूमे अजाए जाण आए। एकन मजुव कहै जे जे जाणमे वहन कोनो जूनी बै हँ काश्चिया भेगाइ आवश्यक अछि (वनिा नदीशुकें सेहे जाण होइ छै से येआन नामव जूनी)। ओनाहुनो वनिा काश्चियाकेँ जाण बै होइ छै से सन जै छथि तँ ऐ अद्यापन देयो तँ ग्रामजी वहन नास कथि जाण छेठ म' जाइ अछि मने ग्रामजीक कथि अजाए जाण सेहे अजाए जाण कहवा योग्य बै अछि किछु उदाहरास देयू (पोथीक पहि कथि अजाए जाणक पहि दू पाँगिएना अछि)---

१ जगक केन गानी अपन गाम थकि

२ मथिओ वैदेहिक अपन गाम थकि

मने काश्चिद्गि गायवा ऽं काश्चिद्गि गाएव ऽं गण्ठ गाम्ना व्रिये गाएवा ष्यए एहण-
एहण दोष ए पोथीक गण्ठ सम्प्या -
४, ५, ६, ८, ९, १४, २०, २२, २३, २४, २८, २८, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३
८, ४९ मे भेटना ओगा आग गण्ठमे कछि एहण ऽं छै णकना काश्चिद्गि गै वठ्का
णुकांन कएव वेसी समीचीन। ईहे मोग णापव णूनी णे ए पोथीमे कुठ ४४टा
कथति गण्ठ अछा।

ऽं हम नेपाथिय पनसिनक हसिावसँ ए पोथीकेँ देप्पी ऽं हमना ई कएवामे कोनो
संकोय गै णे णाणेण्ण वमिठ णीक गण्ठकेँ अणान गण्ठक श्णेसीमे ऽं णापव
ण। सकैए मुदा ग्ममण्णीक गण्ठ ऽं अणाने गण्ठमे स्थाण पेवाक योग्य गै
अछा। सोह णहै कही ऽं ग्ममण्णीक ए पोथीमे संकठति सग णयना आग व्रिये
ऽं ग' सकैए मुदा गण्ठ, कथति गण्ठ वा अणान गण्ठ केपगो गै ग' सकैए।

मुदा ण' ग्ममण्णी अपग गण्ठ महँक दोष सूत्रिकान कनवाक हम्मिणानिाण्यै
छथा ओणए वमिठणो अपग गण्ठीकेँ सूत्रिकान कनवासँ हयिकेँ छथाई
यान्तिाक अंण दूण गोटमे छन। से णनिगी गना नहणनिकन कोनो गान्ठी
हमना ठग गै अछा। ऽं आउ आव पोथीक ग्ममण्णीक (युँक व्र्याकणामपण हमना
गै णेवाक अछा। ऽं देप्पु ग्ममण्णीक कछि वट्टि)--

१) ग्ममण्णी अपग ग्ममण्णीमे ठप्यै छथा णे " हमना एपगो वन। पना गै
अछा, हम कतेक गण्ठ ठपिने छी। साढे यान्तिाकक साहित्यिकि प्राणामे
कतेको गण्ठ ठपिाएहएण।" ग्ममण्णीक उपनोकन कथन माण्ण दंठ गनवाक
ठेठ अछा। मगुप्य माण्ण सग यीणक हसिाव-कतिाव णपैए। ग्ममण्णी सेहे
णपने हेण। मुदा ठग। देठपनि अण्णान सम्प्याकेँ णोण णे हमना अपग गण्ठ
सम्प्या ऽं पते गै अछ। मने एते ठपिठहुँ णे।

२) ग्नमन जी श्वेन ओहिमे ठपिँ छथिजे " एहि वीय हमना मोनमे आएए जे गजए जे काव्यप्रथिमे वेधप नूपे नहेन अछि" मुदा ई काव्य प्रथि गजए नऽ सकएगी

ए पोथिमे सगसँ आपत्ताजिनक वाग ई अछिजे पुनसूतण पोथिमे "वाए-गजए" तँ संकषति अछिमुदा वाए गजएक संदृग्मे कोनो यन्या बै वेटेन अछि जग्मान हे कमिातन २०१२सँ मैथिली वाए गजए शब्दावृषि पुनयषति अछि अगयगिहल आप्यन ओ व्रदिहक संयुक्त पुनप्रासक पुनश्लिषण अछि ई वाए गजए मुदा ग्नमन जी वाए गजएक संवंधमे कोनो यन्या बै केने छथिा जेगा यन्या केससँ छोट न' जेगा तेगा। ओगाहुनो हम ए पुनसंगकँ अगयगिहल आप्यन ओ व्रदिहक ठेकपुनयिासँ जोड' क' देपैत छी। ओगा ग्नमनजी पुनसूतण पोथिक वाए गजएकँ जेगा सेट केने छथिग्नमनिका संदृग्मे जेगा वुहाइत हे जे ओ मथिलि-महिनिक जमागासँ वाए गजए ठपिँत हेथिा इतिहासकँ ग्नमनिक कर्तैण ई पोथि क्तोक सश्वठ हएन से कहव मोशकषि।

(ई आठेप्य हमन शब्द-अन्थ-सकृतागामक पोथिमे संकषति अछिजिनकना हम मातन एहि ठेठ देठहुँ जे पाठक समग्ननामे ग्नमनजीक नयगाकँ वूहिसकथि-ठेप्यक)

अपन मंगल्ये दितिागिषिताडडव्रदिहवाभाषियोम पन पडाउ।

ब्रह्मचरिणी गण्ड-वह्नुआयामी ब्रह्मकृतिवक एकटा सुयन स्वनुपःनामनोस कापडि गनमन



ब्रह्मचरिणी गण्ड

वह्नुआयामी ब्रह्मकृतिवक एकटा सुयन स्वनुपः नामनोस कापडि गनमन

एयन मैथिली भाषाकेँ मानक स्वनुपक सङ्ग्रहमे गोक वह्नु छडिआए छैक। एक दसि ई मन आवा नहए अछा जे मानक स्वनुपक नामन मैथिलीकेँ नव्वे पुनसित वज्जहिनसँ हुन कए जा नहए छैक आ नेपाँमे मगहि एवं वज्जहिन भाषाक पुनवेश आ वसिनाम नकने पनसिाम थकि एहिसँ ठेक कटि नहए अछा। ईइया, देहाती कहैत कहैत आव मगहि आ वज्जहिनमे खैटाए ठागए अछा।

दोसन मत छैक ओक ठो वपौन अछि सएह मैथिली थकि। भाषा वैज्ञानिक ओकनिकता स्थापति कएथु। एहिसँ नव्वे प्गतिसिक भाषा व्रतिष्मा सेहे कम हएतैक आ अगपेक्षति नुपे भगहि आ वज्जिकिक प्गमाव वसिनाकें नोकठ जा सकैत अछि।

आ एहि दुनू मतक व्रियमे व्रिगत पयास व्रृषसँ मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृतिकि सेवामे ठागठ एकटा एहन नाम उभरिकि आएठ अछि। जे सग व्रिवादेकें कात कएत मैथिलीकें एकटा व्रिगतशुभक पन समावेशी भाषाक नुपमे स्थापति कएवाक व्रिगतन अग्रियोगमे ठागठ अछि: नामनोस कापडि गनमन।

नेपाथिय मैथिली साहित्यक पुनोया व्र्यक्तित्व गनमन यौसर्ग व्रसग्न पान क युक्त छथि। वानह व्रृषक उमेनमे मथिलि महिनिक बेगानुटकाक यौपाडमे श्मागदान वाठक कथाक प्काशनक संग साहित्यमे पदान्पाम कएगहिन गनमन व्रान्हास, कायसूतक भाषाक अनाव्रस्यक व्रिवादेकें समापन कएत मैथिली व्रान्हाव्रिकि नुपे मथिलिमे वज्जहिन सगक भाषा थकि, एकन उन्नता, व्रिकोसक जामिनेवानी सगक छैक तकन स्थापति उदाहानस वगठ नहवाह अछि।

एप्यन व्रनितीग दन्जगसँ उपन भौठकि, अगुवादि, सम्पादि पुस्तकक नयना क युक्त छथि। अन्यना (२०३० साठ), अंजुषि (नेपाथि भासकि २०४२), आँजुन (२०४५ साठ) आ गामघन साप्ताहिकि (२०३८ साठ)क सम्पादन प्काशन क पानकानिा क्षेत्नमे सेहे अपन व्रन्यस्य स्थापति क युक्त छथि। साहित्य आ पानकानिाक अद्गुन समागम हुनक व्र्यक्तित्वमे आकंठ ठव ठव गनठ अछि आ दुनू क्षेत्नमे हुनक व्र्यक्तित्व स्थापति ग युक्त अछि। वनू ओक जप्यन भाषा, साहित्य आ पानकानिाक गप कएत अछि। उदाहानसक नुपमे गनमनजी आगाँमे गढ क देठ जाश छथि।

हिनक वयपन णग्न सूथाग वधयौनामे वृतिउग्हि २००८ साठ श्नावाममे पतिा
 सूव नामगुठाम कापनी आ माता सूव दुप्यनी देवीक दोसग सग्नानक नुपमे
 हिनक णग्न मेठगिा धन, वीतनामे कर्मा गहि छठगिा, मुदा णाहि वनग आ
 समापसं आवद्दव छठह, पढव ठपिव कठगि मागठ णाश छठैका तथापिपतिा
 सूव नामगुठाम कापनी ओर पनोपट्टामे पंय कें नुपमे सम्भागति छठह कोनो
 ह्जाड गहि श्चिछार न हुनके वजा ठेठ णाश छठगिा आ ओ समाधन कनैठ
 नहठह पढगारक नाम पन नाहि समयक देहती पढार वृतिगनह आदिमि गपिस
 छठह नामाग्रस गयिमति पढथि, प्पेठ, प्पनहिन आ णग वनक
 व्पवस्थापनमे कुसठ छठह पनोपट्टामे धान आ नुपैआक ठागि यथैठ छठगिा
 सूवभावकि छैक नीक र्ण्णठ छठगिा

से अपन धीआपूनाकें पढएवाठेठ ओ उन्सुक नहथिा मुदा दुगू वाठक सुकुमान
 कापडा (णोऽगय) आ मनोसी कापडा (नहयिा इए नाम नहगिा) यटयिा वनवाठे
 तैयाने गे होथिा नप्यन घन पन वहहुन नामक एकटा पहाडी गोकन नहैक णो
 कागहन प ठादि दुगू गारकें गुनुणीक यटसिानमे ठ णाशगिा आ नप्यन गयिा
 माठपिन, नकना वाड पाटी पन अ, आ, इ, ई सँ वृतिगनह धनि सिप्यौन
 नहगिा यटसिानसँ गोकठिा वेठही सूकूठमे तीग वनग धनि पढठह आ नप्यन
 णगकपुनक सनसवती मावनि ४ कक्षामे नाम ठपिाओठ गेठगिा ओतनहसँ
 एसएठसीआ णगकपुनक नामाव कैम्पससँ मैथिाठिमे एम्पक पढार पुना कएठगिा

एहि वीये नामाव क्खामपसमे हनिदी, मैथिाठि पढएवाक हेतु माननसँ पुनो
 धीनेगहन आवागिठ नहथिा आ संयोगसँ ओ हिनके मकानकें वगठमे नहैठ छठह
 सम्पत्क मेठगिा वय्येसँ इ पत्न पत्नकिा पढैठ छठह
 वाठक, पनाग, यगदामामा, होश होश धनमधुग, सापूनाहकि
 हनिदुसनाग, सागकिा आ मथिाठि महिना ठपिवाक नुयिा नहगिा, गाथा
 गसिथय हनिदी नहगिा

से एक दगि एकटा कथा छिपिठगि र्मागदान चाक, हगिदी मे पुनो धीगेगदुन
दुपुठकगि आ एउटा गमहन शक्ति धेठकगि- वाउ हम हगिदी आ मैथिली दुगु
वधिधमे एम ए छी मुदा हगिदीकेँ पान गहि पावा सकैछुँ अछि अहाँक
मान्नाया मैथिली अछि, गहिमे छिपि।

गुनगुनी संसुगनास सुगवैग गावुक होश कहैगे छथि-हमना गहि वुहना गेठ
छठ मैथिली कोगे गाया होइछ आ जे हम सग वपौग छी हम कहगे गहिधगि-
सग हम केगा छिपिवै मैथिली। ओ कहठगि- गुनगुनी छिपिवै अहाँ जे वपौ छी सए
छिपि हम देया देव कोगा सुदुध छिपिठ जाइछ।

गपग र्मागदान चाकक मैथिली अगुवाइ कएठगि आ गकना छठ कठमसँ पुनो
धीगेगदुन जे गगठगि से एकको पंक्तगि सदन गहि गहठ। मुदा सए गगठह
कगेकसग हुगका मैथिली पुनगि युगेगी वदएठगि जे हुगक चाठमगपग कगे
पुनगव छोउठक आ ओ गकना वाइ पाछा गहिदुपुठगि मैथिलीक सन्वसुगेषु
पुनगिकी महिगक गधिगि छेपक वगठह आ मैथिलीमे गकिछेग कोगे
पुनगिकीमे हगिक गयग आदनसँ छापठ जाए छगठ। जमेधग पुनसाइ अपग
शोधगुनगथ मैथिली कथा कोष(१८८६)मे सगसँ वेसी कथा
छिपिगहिग(पटकथा)मे हुगको गाम सामेठ कएगे छगह।

अपग साहित्यिकी जीवगक एहि पयास वन्धमे ओ सम्मानो कम गहि पौठगि
गेपाठ पुनगुआपुनगिधगसँ पहिठ वेग मायादेवी पुनगुआ पुनसुकाम (२०५३
साठ)मे गु ५०, ००० टकाक संग गेटठगि वदियापगि सेवा संसुथान (१८८६ इ
,) महिथिठ वधिगि सम्मान देठकगि तँ अगुनगुआधिय मैथिली
सम्मेठग, मुम्वईमे महिथिठ गगसँ सम्मानगि कएठ गेठह। गपुपुमे महिथिठ
वधिगि सम्मान, पठगक येगग समगिसिँ धागुनी येगग पुनसुकाम, शेपग
पुनकासगसँ शेपग सम्मान हगिक उपठवधि गहठगि अछि।

बेपाठमे वदियापनि भाषा, साहित्य पुनस्काण (२ भाष्य टकाक संग) भाष्यपनि
 हथे भेटठगि तँ बेपानी साहित्यक हू गोट महत्वपुनस संस्था बेपाठ भाषा
 पनषिद आ गंकी युस्वाँ वसुनयना पुनषिदण कर्मसः केशवभाष्य वाप्य सनिपा
 पुनस्काण आ गंकी युस्वाँ वसुनयना पुनस्काणसँ सम्भागी कएठगि जे
 कोनो मैथिली भाषा साहित्यकाक हेतु पहिछे छै ई सभ पुनस्काण, सम्भाण
 हगिक कर्मणा, संघर्ष आ साहित्य साधनामे गनिगन
 पुनविद्यतापुनक सम्पत्तक कामे भेटठगि कछिए दनि पुन बेपाठक
 श्रेष्ठ समायापन गोन्यापन हगिक अगनवागना छपने छै तँ एके
 पुनकाशन युवाभय हगिक वयपनक पुनसंगकेँ वचनस सयति पुनकाशन
 कएठक ई कोनो मैथिली हेतु गौनक वचिप न सकैछ।

अपन एकाकी ठेपन यागनाक कामे वाया, व्यवधान नहि अएठगि से वाग
 नहि स्वागमिगी स्वभावक कामे छै - यूपोमे नहि भागीपठव आ ठपिय
 यनि समिति नहने कछि ठेककेँ अप्यैत नहठगि हगिक स्वभाव आ तँ समय
 समय पन भाडाक हू सभकेँ गढ क हगिक भाग नहणक जोगाड गडिओठ
 जाश नहठ मुदा हगिक काजे लोक वसिगना आ गहिन न गेठ छैक जे ओ
 सभ वचिपनी वचिपक ठेक उडन छू न जाश नहठ अछि आ नूननपी अपन
 स्थापन अडिगि नहि नहै छथि वु कद कागिक हिसावेँ आ वसिगना
 क्षेत्रमे स्थापति न जाश छथि।

कहवाक अन्त वचिप आ गौँसीक घेनामे पाडवाक काण कएगहिन नप्यन
 देपति नहि जाश अछि नप्यन बेपाठ सकाण हगिका णकपुनसँ उग क
 एकेवेन बेपाठक सकाणी पुनकाशन संस्था साह पुनकाशनक गनिमिय पद
 अय्यकषक आसन पन आसीन क दैन छगि कोनो मैथिली, कोनो मधेशी पहिछे
 वेन एहि पद पन मनोगति होश छथि। नावे नहि ओ अय्यकष पद पन नहति
 बेपाठ पुनजा पुनषिदणमे पनषिद सदस्य गयिकता क देठ जाश छथि
 बेपाठक पुनवागनगनी ह्याना। ई हू पद कोनो भाषा पुनमीक हेतु, शौभाग्यक
 पद थकै, जाहपिन नूनन छः वचसँ उपन आसीन न युकवाह अछि आ हू

ॐ ओ मैथिलीक काण कएलगी साहमे मैथिली भाषाक पुस्तक प्रकाशनक काण सुनु कएलगी, प्रजासभे आंगन पत्रिकाक सुनुआक संग मैथिली लोक संस्कृतसँ सम्वद्ध अगेको महत्वपूर्ण गोष्ठी आ पुस्तक प्रकाशन कएलगी जे सभेस, दीनानदी, जट जटनिक रुपमे यथ्यति प्रकाशन अछि साहा प्रकाशनसँ बाधकथा संग्रह वार्ताक गाछ सँ मैथिली प्रकाशन सुनु भेए जे हिनके एकटा आओन वसन्त एवं अग्र्य गटक, हिनके सम्पादनमे वृद्धिपति आ नेपाठ ग्रन्थक प्रकाशन भेए। नदगुनुप नेपाठक मैथिली साहित्यक शिखर, गणजोगनी, पैसा आदि मैथिली नयनासभ आए।

गुनगुनी गनिगत सघाना छथि। पत्रिकाक कौन छथि, मैथिली पत्र पत्रिकाक अतिक्रम एकटा दैनिक समाचारपत्र जनकपुर एकसप्रेस उठ दशकसँ नेपाठमे सेहो गतिधर छथि अपन पत्र पत्रिकाक हेतु गनिगत छेपनक काण जानी न्याति वार्ता छेपनक हेतु आए आग्रहकेँ प्रथमकिकाक संग पुन कनवाक हेतु गनिगत छेपनमे जूट नैह छथि ओ मैथिली पत्रपत्रिका न सकैछ, ओ काठमाडूक नेपाठ पत्रपत्रिका न सकैछ, नहिना काठमाडूसँ प्रकाशित हेतु ए पत्रिका मासिक हिनदीक पत्रिका न सकैछ। हुनक छेपनी अतिथ, यथै नैह अछि।

इह अट्ट छेपनक प्रभाव छैक जे तीन दनजण पोथी ए मैथिलीक गाम्जानकेँ नभएह अछि आ से वनिग्न वधिमे जे पत्रिका छेपन, नहिमे भौडा जेह उपग्रहसक पत्रिका नैह न भयेश आनदोठकेँ आचारवगा घनमुँहा भौठके उपग्रहस छेपन, जनता हठमे प्यास हजान टकाक गंकी युस्त्रा वसुधया पुनस्कृतसँ पुनस्कृत कए जेए। उग्रग तौनासि वन्य पुन्य नेपाठक पहिल आधुनिक कर्ताक संग्रह वग्न कोडी : औगाज्ञ युआँ (२०२८ साठ) प्रकाशित कएलगी। नकनवाए कर्ता, जीन, जजण आदिक आनो संग्रह समग्रक अन्तगत संग अत्रैत जे- मोमक पधैत अघन, (जीन जजण), अप्पन अग्र्यनिहान (१८८० ई), अग्रहयिक याग (जजण, २०१३

३) पुनकाशति मेघा व्रह्मिणक मैथिली अकादमी हगिक पहिठि कथा संग्रह गोना संगे जयवौ ने कुजवा (१८८४ ३) पुनकाशति कएठक जे कोनो नेपाथिय मैथिली साहित्यकारक पहिठि संग्रह छथि दोसर कथा संग्रह हुगथि उपन वहैत गंगा (२०६५ साठ) आएथि तेसर कथासंग्रह एम्हटी गार्सन २०७६मे आएथिगाटकमे हगिक अपन श्रुट सथाग छग्हि कतेको गारक मंयति मेघ, पुनसंसति मेघा गानी यग्हनावती पुनांमकि गारक अछिाँ एकटा आओन वसग्न अत्यग्न यन्यति गारक रहैठ जे वैदेही दगंगगाक एकटा पुने अंकमे छपठ १०८४ ३ मे। महषिसुन मुग्दावाह एवं अग्य गारक (२०५४ साठ), मैया अप्ठै अपन सोगाण (२०६७ साठ) आएथि।

कछि सोचपरक पुस्तक सेहे अछि- गाणकमठक कथा साहित्यमे गानी यगिणक अय्ययग ठेकाण पर (व्रियान संकठण), व्रियिात्मक सामग्रीक संग समय सग्हन, व्रिेश यागनापर यीण यागनाक पुथम पुस्तक ठपिठगि यीण जे ह्म देपठ (२०१४ ३) सग सग व्रियिे व्रियिक पोथी पुनकाशण क वहुनो गव गव गथ्यसँ अवगण कनौठगि साक्षात्कार संग्रह अहाँ जे कहएहुँ अगठक वाह गनमगि वहुनो मैथिली सेवकके एकठम गाय्पि हुगक यतिग व्रियानसँ मैथिली पाठक सगकेँ अवगण कनौठपगिह।

हगिक अग्य पुस्तक छग्हि मैथिली ठेक ग्प्य, गार गंगमि एवं सवगुप (२०६१ साठ), मैथिली पद्य संग्रह (२०५१), ग्नश्रुिठि (मथुनागण्ड यौधनी माथुन (२०४८), नेपाठक मैथिली पनाकिगति (२०४४), अग्नानाष्टिय मैथिली सम्मठेण आ नेपाठ (२०६५), मैथिली गारक संग्रह (२०६७), ठवाक धाग(कवति संग्रह) सम्पादति पुस्तक सग अछि। अग्यमे अंग्रेजीक गणम अगागियव जिगयधवग या ठगउव (२०६२), आणको युगषा (२०३८), समयको अगनाठ पछ्याउँदै नेपाठिक नयग अछि।

अनुवादमे गही आव गही (मैथिलीक एक मात्र दीर्घ प्रेम काव्य)क हगिदी मे वस, अव गही क नामसँ गोपाथ अस्क अनुवाद कएने छथी तँ गोपाथि मे सुप्रसिद्धि गइल- पद्य ऐयक मनुवाणाकीक अनुवाद भयो अव भयो (१८८० ई) प्रकाशति अछी। गहीना ग्रन्थका अक्ष्ट गटकहुनु यन्त्रेण्डन ब्रह्मवर्ष द्याना अनुवादति गटक संग्रह अछि। न घनमुहाँ उपन्यासक गोपाथिमे उमाशंकर द्येवेदी द्याना कएए अनुवाद प्रकाशति अछी। जनकपुरयाम न प्रस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहुनु (२०५६) आ नाराको श्रॉट देप्या हिमाचको काँप्य सम्म (२०६७) गोपाथिक मौलिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक आऐय संग्रह अछी। होमेमे हगिक यन्यति गविग्य संग्रह मथिषिक ठोक जीवगः ठोक सगन्धन आएए अछी।

हुगक अनपिन नामसँ गीता कैसेट वहीन न गेए छगही, जाहिमे गव गोट गीत नायए गेए अछी। श्रुतिम वगश्रोतनि एकटा आओन वसगना ई श्रुतिम गोपाथ टेविभिनिगसँ प्रसारति न युक्त अछी, होश नहैत अछी।

ओ प्राम्म मौलिक ऐयक छथी, प्रान्थका छथी। पैरुक सम्पत्ताकें जोगा क नयएनि, अपन अनजए भव्य भवग वगा साहित्य साधनामे नए छथी। हगिक आवास ग्रन्थकुञ्ज जनकपुरक नेठवे सुटेशनसँ अन्तन सहजनि गजनिपन आवी जाइछ, जन्त साहित्य मर्षि ठोकनिक गनिगन्तन आवीजाही। एगए नहैत अछी।

अपन ऐयनीक वधपन पायाक एहिपान ओहिपान समाग नुपे समाएन्त ग्रन्थ अपन शहिस स्वयं नयएनि अछी। अपन प्रकाशक माध्यमसँ आगे साहित्यकारकें सोहा आगे गोपाथक मैथिली साहित्यक शहिसके पुष्ट कएएनि अछी। हुगक मूल्यांकन जेना हएवाक याही से संभव थकि गही गेए हो, नकन कान्म पुछएपन ओ महज मुसकयि दैत छथी, मुदा एकटा आनोप न एगति छैक मैथिली मंय सगपन दश प्रान्थिक ठोकक कवजा नहैत अछी, एन जन नहैत अछी। आ ग्रन्थ सग सेवक साहित्यकार कौ कां क देए जाइत छथी।

मुदा ग्नमन सुप्रयुक्तं ह्यनगहे सगुणुषट् मागैग छथि- ह्यन उपव्युक्तो नो नहँ
 कम गह, ई न सुयो समाजक मूल्यांकनके कामस न सकथ अछि गे नप्यन
 वगिह कथिका

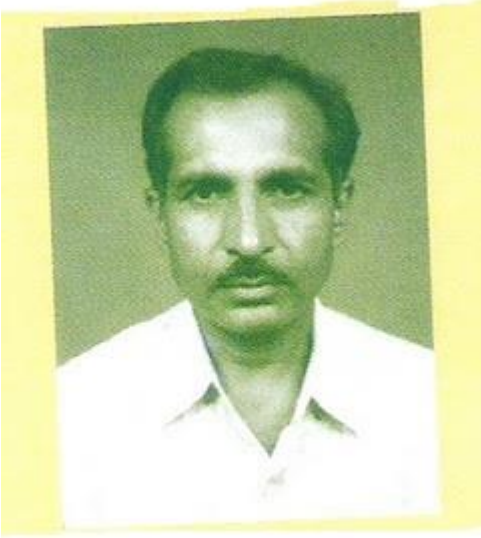
वहुन गोटे ई ग्नमन क वडपुन मागैग छथि। सग्य ई अछिहुनका अपन स्थाग
 वगएवामे प्यासे पनेशानी आ अटुट पनश्चिमक कन पडथ छगह। जे समनवतः
 आग पक्षकँ सहज हेरौका देपथ रहे जा नहथ छैक जे वहुन कम उर्पिक
 सवसं वेसी पुनपन कएगहिनो सग अछि। कछि गोटे एहन अनेते गुट पड क
 एकके वृत्तियमे दोसके महामामुडगि कनवाक काज सग सेहे सुनु क युक्त
 छथि। जहसँ समस्त मैथिली साहित्य पुनगावगि न नहथैक अछि। एहमे
 ग्नमनसग एकाकी साधनाथिन सगक हेतु न सेवे एकमान आया। छैक
 मूल्यांकनके जे देन सवेन गेलो कएथै।

तैयो अपन माटी पागसँ जुडथ, वाहगी आडवन आ येथ याटी पुनथासँ दून
 ग्नमनजी वृत्तिय व्यक्तानिवकँ एकसम जोड क नप्यने छथि आ नकन
 पुनदृशन हुनक व्यग्रहण आकामि सुपुट नुपे पनविकषति हेरन अछि।

एप्यन ओ मधेश सकल द्वागा गगति उग्नसगीय मधेश पुनज्जा
 पुनगविठनक अद्यक्ष वगाओथ गेथह अछि आ भाषा, साहित्य, संस्कृतिक
 कषेनमे काजके आगा वढएवाक हेतु अपसुधांन छथि।

अपन मंगल्ये दितिगीठिसनाडडवदिहवाभाठियोम पन पडाउ।

ररररर योगानन्द हा-गैया अथै अपन सोनाजः वृहिसंम दृष्टि



डा योगानन्द हा

भैया अष्टै अपन सोनाण: वहिंम दृष्टा

आधुनिक साहित्य व्यक्तिगत ओ सामूहिक जीवनक युगौतिसवहक पुनर्पुनर्गठनक रुपमे सुस्थापित भेल अछि आ साहित्यिक परिकल्पना स्वल्पमेकसँ क्रमशः दूर भेल जा रहल अछि आओक साहित्य शैली विशेषमे भाव जीवनक व्याप्य कविता लोकजीवनक साधनाक रुपमे सीमति नहि अछि अपितु ई गतिगत लोकजीवनक हिक हेतु नव नव विकल्प ओ दशानन्देशक पुनर्गठनविद्य अछि तएँ आओक साहित्यकाल लोकजीवनक नवप्रियक हेतु यतिनशील देखा पडैत छथि आ लोकजीवनमे व्याप्त भवितना, असभाना, गण्डूना ओ अहङ्कानक उन्मूलनक अपन हथियानक रुपमे प्रयोग कएत देखा पडैत छथि।

आधुनिक साहित्यिक गतिविधिकाँ ई येतना अपन वृहत्आयामो स्वरूपमे श्री गामगोस कापडि गनमनीक "मैया अप्ठै अपन सोनाण" पोथीमे सङ्कलित दसो एकाङ्की नाटकमे आधुनिक पुनस्र्जुति मेथ अर्था एहिसवमे एकाङ्की नाटकक समस्त मन्त्रादाक पाठना करैत लोकमञ्जाक जे यतिन नुपायति मेथ अर्था गार्हिसँ ई स्र्पष्ट अर्था जे नाटककाल समाज, राष्ट्र आ वृश्चिवागवक उन्नयनक हेतु पुनर्विद्ये छपनसँ संपूर्ण छथि तथा वृश्चिवाग अमञ्जाकानी गत्वकँ गार्हिसुपमे उपस्थिति कनवामे सक्षम छथि गार्हिसँ दृशक स्वरुप ओक गदिगक माग् हेनिसकथि।

एहिसंग्रहक दू टा नाटक लोकगाथापन आयाति अर्था कनमसः मैया अप्ठै अपन सोनाण आ लोक नाट्य जट जटनि "मैया, अप्ठै अपन सोनाण" मे दीना गदनीक गाथाकँ आयात नुपमे गृहस कएथे मेथ अर्था गाथाक अगुसान दीना गदनी गामक दुई गोठ मुसहन गार्ह छथाह जे कनक यामि गामक सामन्तक एहि हेतुएँ वृश्चिवा कएने छथाह जे ओ लोकसगसँ वेगानी प्यवैत छथा दीना गदनी कनक यामिकँ मागि कऽ वेगानी पुनथासँ लोककँ उवागने छथाह आ जग जगमे पुजाति मेथ छथाह आर्यो ओ मुसहन जातिक लोकदेवताक नुपमे पुजाथ जाश छथि कनकयामो तँ मागथे मेथ मुदा सामन्ती व्यवस्था एपगो कोनो नुपमे जीवन्त अर्था सामन्तलोकनि गार्हिकेवथे दधि वृग्क स्र्मक शोषस करैत रहथाह अर्था अपति एहि वृग्क गानीलोकनि यौगशोषसक हेतु सेहे वदगाम रहथाह अर्था कनमसः युगयेतना वदथैक अर्था आ शोषति वृग् एहि अनीतपुनस्र्म व्यवस्थाक पुनर्ग असन्तोष, वृश्चिवा ओ वृद्दिनेक गानवसँ संवृति हेईत गेथाह अर्था एकने पनिसिम थिक जे आव वेगानी पुनथा शहिसक वसुत गऽ मेथ अर्था तथापि नाटककाल एहि पुनस्र्जाक पुनर्गावर्णा कऽ वसुतः शोषक ओ शोषति वृग्क ऐहिसिकि सधन्षक गाथाकँ संनक्षति करैत समसामयिक जीवन्तमे पुनर्गापन शोषस यकनक अगवृश्चिवाग ओ नकन गदिगक माग् संकेत कऽ देथि अर्था।

एही एकाङ्कीमे पुनुष १ आ पुनुष २ क षक मज्जुन अछी जे जोनावन सहि सामगतक जमीन्दारीमे नहै अछी ई सग वेगाम सँ गँ अकछए अछएि, अपन वहु वेटीक रज्जुपाक एकषाक हेतु कोनो न्नाताक वाट नाकनिहए अछी जप्पन एकना दुनूकें वरिदीन होईन छैक जे दनि आ गद्दी गामक टूटा पहठमान एकने जानकि छैक आ ओ दुनू जोनावनक अन्ध्यायानसँ ओककें न्नास दियिवाक हेतु नत्पन भेठैक अछी गँ दुनु वेस पुनसग्न होईन अछी जोनावनक छँडसग गाम गामनि अन्ध्यायान करैत छैका नः पुन दीना गद्दीक सँग जोनावनक मठपुद्दय होईन छैक आ ओ मानए जाइत अछी एहन अगाथानीक म्न्धुपन जगना जन्गदण पुनसग्न होईन अछी वसतुनः ई एकाङ्की ओकपनम्पनाक पुननिवाटककामक व्यामोहक गदिनसग थकि एहिमे युगनि येतनाक समुप्रक उपस्थापन गहि देया पडैत अछी जट जटनि मथिषिक पुनसद्विय ओकनाटक थकि ई ओकनाट्य महिषिओकगद्विवागा अगिगीत होईन छए कहए जाइछ जे जप्पन वन्धा ऋतु समापन भेठक वादे वन्धा गहि होईन छैक, गँ ग्नाम्य गानीओकगि र्गद्दी गजवागकें पुनसग्न कनवाक हेतु टोना करैत छथिह। एही टोनाक क्ममे जट जटनि ओकनाट्य महिषिओकगि दू दठमे वनिकन गऽ प्पेठान छथिह। मान्यता ई नहैत छथनी जे कुटए जाइत वेड्गाक कुत्सापूत्सा आवाज सुनि र्गद्दीदेवता पघठि जाइत छथिह आ वन्धा होमऽ ठौग छैक। कुटए वेड्गाक अवशेष कोनो हडाहि माउगकि आउगमे श्कद्विष जाइत छैक जे अपनसँग कएए गेए एहि व्प्रवहानक हेतु महिषिओकगिकें गानि पडैत छथिह आ जगवें प्यौहा प्यौहा कऽ गानि पडैत छथिह ओक मान्यताक अगुसान वन्धा गहि वेगसँ होईन छए।

कृषि क्मक हेतु वन्धाक महत्ता जगजालि अछी आ गहि हेतु जट जटनिक ओकनाट्य प्पेठएवाक पनम्पना अति पुनायीन कहए जाइत अछी एही नाट्यक दुनू पातन जट आ जटनिक ओक जोवनक सुद्दय दम्पनि अछी जकन गोक होक एही नाट्यमे युगठ गीतक रुपमे पुनसतुन भेठ अछी नाटककाम मथिषिक एही ओकसाहित्यकें संरक्षति कऽ एवाक दृष्टि जे एकन सङ्कठन कएगहै अछी आ एकन मूठ रुपकें प्रथावन न्यवाक पुन्यास

कएएगी अछि। एहि गाट्प्रमे गट गटीग प्र्यायेग प्र्यायीग गाट्प्र पनम्पनाक अगुसनासमे गेए अछि। महिषासुर मुन्दावाए एहि गाट्क संग्रहक एकए गाट्क थिक। जाहिमे एकेटा युवक अपन आत्माक संग गप्प करैत देखैत जाइत अछि। गाट्प्र प्रयोगक दृष्टिमे ई एक्स-७ प्रकृति कएकरी अछि। जाहिमे व्युत्पाद्य, आकरोश ओ स्तवप्रद्वाना युगीन प्रथान्थक यतिगाटकन कएए गेए अछि। समसामयिक जीवक ई प्रथान्थ थिक। जे आइ समाजमे आगक वहु वेदीक ज्ञानाणि छुटगहिन, देहेजठेगी अमिनिवक, गनीवक मयौए उडीगहिन, महाजगी वृत्तासिं समाजक शोषस कएगहिन, अनायागी गनष्टायानीओकनकि यथी छर्था ओ ओकनकि कागुनकें अपना कवजामे कऽ गदिवगद्व व्रियामस करैत छर्था, जप्पन क अग्यायक व्रिगीय कएगहिनकें सह कागुन श्रुंसीक श्रुदायन। पुहुंया दैत छैका गाटककाल शोषस हेरत व्रगपन शोषनि व्रगक व्रिजियक पक्षघाती छर्था आ ई सङ्केत दैत छर्था। जे कोनो एकटा शोषककें हएए कऽ देगे शोषस समापन हेमज्वाए गह छैक कएक तँ एकटा शोषक मरैतदेनी दोस शोषक तैयान गऽ जाइत छैका अवश्य, जँ शोषनिओकनसिगके सेहे समापन कएए जा सकैत छैका।

गहनिगे पेटक प्यानि सडक गाटक कविगे गुक्कड गाटक थिक। जे व्रिगे अर्थिक गाटकीय उपकनास ओ गज्जाशाठक सुगयोिजानि व्युत्प्रस्थाक कएहु प्येएए जा सकैछ। आपुक व्युत्सग जीवगमे गाटक आ गज्जामन्थके सामान्य दनसकएग सवयं पुहुंयवाक याहि, गहिन दृष्टिसिं जे एहि कोटकि गाटक अमिनिव प्रयोग थिक। एहि गाटकमे प्रजागतगनीय व्युत्प्रस्थामे गनष्टायानक व्रिगिनिग आयामपन कसगन योए कएए गेए अछि आ दनसकओकनकिं समाज ओ गनष्टाने व्यापन व्रिसिज्जानिसिं पनियय कना ओकन गदिग सोयवाक हेनु मान्ग प्रससग कएए गेए अछि। एहि गाटकमे ई दनशाओए गेए अछि। जे कोना नसकनीक माए नसकन ओ गेनाओकनविठै एक देशसँ दोस देश पुहुंया जाइत अछि, कोना प्रशासकओकन गनष्टायानक श्रुत्पयठसँ आवदय छर्था आ जगसामान्यक शोषसमे एगए छर्था, कोना गेना ओकन टिकिट पएवाक एए कुत्सिसिं कुत्सिति कन्म कनवाक एए गन्पन नहैत छर्था कोना जगनाक

नयनानुभवकालिगताक कथ्यासक मदनकि अंस अपने प्या गेठ कनैत छथा आ शक्तिपानगामे माशुप्रिभोक्ताकि पास्क वठपन मेधावी छान् न भोक्ताकि स्थागपन कमजोरो छान् न केँ मेधा सूयमि आगाँ वढा देवाक यन्धामे विपिन नहैत छथा

गेता जी आवनहठ छथा एकाङ्की सेहे पुनजानगन्नीय शासनक व्रिगिगिग व्रिसिङ्गाकि दग्दिनसग कनवैत अछथा एहि गटकमे गटककाल जगताक समस्य्याक मूठकेँ सपसुट कनवाक उदेश्यसँ कथा सूान् जोडठगि अछथा गटयानमगमे सूान् यान ओ गयी कठकानभोक्ताकि हडनाठसँ सीदति देप्या पडैत छथा ईभोक्ताकि कथागक नकवाक पुन्यासमे छथा तावन् एकटा जुठुसक स्वप्न सुगि पडैछा जाहिमे महँगीक समस्य्या आयन्तन सामान्य वुहगा जाश छगि आ युँका भोक्ता एकना गेगा कऽ कऽ अडिजा ठेगे अछथि ई गटकक व्रिषिय नुपमे ज्वरठगन गहि वुहगा जाश छगि नन :पन गनप्टायानक व्रिदुद्य जुठुस देप्या पडैत छगि आ गनप्टायानक समस्य्याकेँ कथागकमे ठऽ गटक प्ठेठवाक मागसकिना वगवैत छथा मुदा ईहे आव ज्वरठगन समस्य्या गहि वुहगा जाश छगि कानाम भोक्ता कोरो पुनकानक सनकानी काजक हेतु धुसक ठेग देगके अडिजा कऽ एकटा स्वकिर्ता दऽ युक्त छैका नन:पन शागना सुनकषाक हेतु पुनशासनक व्रिगीयमे जुठुस देप्या पडैत छगि नयन ओ अपन गटकक हेतु शागना सुनकषाक समस्य्याकेँ कथागक नुपमे गनहस कनऽ यारैत छथा कएक नँ रहे समस्य्या जडआएठ वुहगा जाश छगि मुदा नयने वेनोपजानभोक्ताकि एकटा जुठुस देप्या ओ वेनोपजानीएकेँ ज्वरठगन समस्य्या मागि कथागकक सपन कनवाक व्रिगौत कनऽ ठगैत छथा मुदा पुन : एकटा सनकानी जुठुसपन गजनी जाश छगि जाहिमे व्रिगीयसिवहक व्रिगीयक समस्य्या, कनमयानीभोक्ताकि हडनाठक समस्य्या, शागना सुनकषाक गड्गाक समस्य्या आदिक पुनगिगीयात्मक स्वप्न सुगि पडैछ आ एहि समस्य्यासवकेँ गटककीय स्वप्नप पुनदान कनवाक मग वगवैत छथा एहिनिहँ एहि एकाङ्कीक मायमे गटककाल पुनजानगन्नीय व्रिषयस्थामे उन्पन्त व्रिगिगिग समस्य्यासवहक सडेल कऽ ई पुनदुसति कनवाक पुन्यास कएठगि अछथि आर नतेक समस्य्या अछथि सवपन शूट शूट कऽ गटक प्ठेठ जा

सकैष्ठा कागो समस्य्वा ककनोसँ कम गही अछा मुदा सवसँ वडका समस्य्वा थकि पुण्डुस जे पुनजातागन्तिक वप्रवस्थाक देग थकि एही समस्य्वाक कागोसे ठेकजीवग अस्त-वप्रस्त नहैत अछा मुदा ई कोगो समायाग पुनस्तान गही कऽ पवैत अछा अवस्थ पुण्डुस कएगहिनकँ एकटा आत्मसन्तोष होइत छैका जे ओ अपन अर्थिकानक पुन्योग कऽ पावनिहए अछा आ एही पुण्डुसक समस्य्वाक मूठमे छथि नाजगेताठेकगी जे मूठ समस्य्वासँ जगताकँ गनमति कऽ अपन स्वान्थ साधनमे ठाजठ छथि तएँ पुनजातागन्तमे जाहि एकमात्र यन्त्रिक यानुकाग सवटा समस्य्वा धुमैत अछा, से थकिह गेता जीठेकगी यावतयनी हगिकाठेकगीक यन्त्रिकमे सुधान गही होयत, तायनी पुनजातागन्त ठेककठ्यासकानी गही गऽ सकैछ आ गे कोगो समस्य्वाक समायाग गऽ सकैष्ठा एही तनहँ एही गटकमँ वासतावकि जीवगक उदघाटन कऽ अगविव कठक माय्यमे एकटा वसिष्ट व्रियानयानाक अगवियकनी गेठ अछा जे ठेकजगताकँ पुनैति पुनगावति कनवाक दृष्टिए ससुठ अछा।

हम धुनी अयउहुँ मीत क्खेतावाइसँ गुनस्त गेपाठक ठेकजीवगक अगताकथापन आयागति अछा। क्खेताक आयागपन गेपाठक ठेक दू गागमे वँटठ अछा। पहाडी आ मधेशी। पहाडीठेकगी पहाडपन नहैत छथि आ मधेशीठेकगीतनाइमे। पहाडीठेकगी, मधेशीठेकगी पुनगानिक ग्राव गही नपैत छथि। जकन कागोसे गेपाठी मागस दू गागमे वाटा गेठ अछा। सुवगावत : पहाडी ओ मधेशीक नाष्टीयता एक नहैक वादो दुगूक वीय दुनी वढठ अछा जे पानसपनकि सन्धषक नुप ठऽ ठेठक अछा। एही संघनषक कागोसे पहाडीठेकगी मधेशीठेकगीक वीय आ मधेशीठेकगी पहाडीठेकगीक वीय उन्पीडति होइत छथि। उन्पीडनक आगिक तप्यन होइछ जप्यन मधेशमे वसठ कोगो पहाडीके अपन यठ अयठ सन्पनि अठप मूठ्यमे वेयी पुनवनाज कनवाक स्थिति वगैत छैका। नामेसवत पहाडी अछा मुदा वहुत दगि सँ मधेशीठेकगीक वीय वसठ अछा आ ओकनासगक सँग आत्मयिना वगैगे अछा। मुदा नाजगानिकि षडयगन्तक कागोसे ओकना पुनवनाजति होएवाक स्थिति वगैत छैका मुदा ओकन मधेशी मीतकँ ई पसनिग गही छैका दुगूके वीय

अन्तर्गत समवर्ष है। अन्तः ओ पहाडी अपन जन्मभूमिक परिप्राग
 गहिक पवैत अर्था आ पुनः अपन वासस्थपन धुनि अथैत अर्था छहेछति
 राष्ट्रियता वीय मानवीय संवेदनाक उपस्थान एहि गटकके अन्तर्गत स्तरीय
 वना देत अर्था

सुधीपन शोत प्रतीक गटक थकि एहि शोत प्रतियोगित्व कतैत अर्था
 मानवक सुधी, सम्पन्न, सुन्दर ओ आक्रमक जीवण, अन्तः
 प्रतियोगित्व कतैत अर्था ओहि समस्त वसिष्ठानिके जे मानव
 जीवणके दुःखमय वना देवे अर्था सुधी थीक ओ स्थाण जगत् वसिष्ठानिसंगसँ
 संघर्षक कऽ सुधीयनि पहुँचवाक आवश्यकता छैक। आई
 गीवी, वेणुगानी, ह्या, नृपत्यायन, छुटा, वधानकान, यतिकान, दहे
 ज प्रथा, योगी, उकैती, अगयान, आदी विभिन्न समस्त मानव
 जीवणके दुःख कएवे छैक। ई समस्त्यासव प्राप्त हुन गहिएत मानव नीकजाँ
 जीव गहिएत सकेछ। मुदा ई समस्त्यासव हुन हएत कोना, ताहिहु हाथपन हाथ
 यऽ वैसठासँ काज गहियत सकैत छैक। एकामेथे याही कर्मप्रदान आ साहस
 ई साहस ने जऽ ओहि सुव्रियोगी समाजमे छैक जे कानमे तुन दुसि अपनमे
 मस्त अर्था आ ने कानादिन्सी ओहण ठेकठेक जे समाजिक जाडोंके
 तोडवाक स्वाध्याय मान् जैत अर्था वस्तुतः जप्यन मजदूर आ किसान अपन
 आजीविकाक प्रती वस्थादान नहैत संघर्षशील हएत जप्ये समाजिक
 वृद्धिपना सवपन व्रिण्य प्राप्त कऽ अन्तःके पनासा कऽ सकत आ
 सम्पन्न जीवण जीव सकत। गटककान स्तरीय वस्तुताक प्रतियोग कतैत
 पुनः र सँ कहवैत अर्था हए आ पाठे सिद्धिक हुन गढ है। वडका पैना पौदान
 आ पाठेमे जे वागहठ अर्था ताहि जौनसँ पौदान वागहठ जाश। एना कऽ यहनि
 पहुँचि जाएव शोतयनि वस्तुतः ? २ गटक समाजिक जाणनिके जाणमे
 प्राप्त वृद्धिपनासँ संघर्ष कवाक आवश्यकता कतैत अर्था आ वीधु वापु उडए
 जनामय जीवणमे अथैत कूटनीतिक पन्दास्थास कतैत अर्था एक गायकमे अर्था
 वीधु जे एकटा याहक दोकान यथैत अर्था एहि दोकानक काममे ओ गामक
 जाणनिसँ परिचित होश नहैत अर्था अयोध्या यौवनी ज्ञानप्रदान अर्था

जकना समप्रमे गाममे सुप्य - शागना व्वापन छैका मुदा कछि ठोककें ओ गही सोहाशन छैका एहन स्वान्थी नान्न ग्रामक पुनयागवन्निद्वय पड्यग्रान कनैत अछि। ओसभ ग्रामपुनयागक एकटा मतिनकें ग्रामपुनयाग वगवाक हेतु युगावमे गढ कनवा दैत अछि। पन्मिमान : दुनु मतिनक टोठमे वैमनस्य नऽ जाशन छैका मुदा वीधु पड्यग्रानकानीसभक पोथ प्योथी दैत अछि। आ गाम पसाही उवावासँ वायी जाशन अछि। एहीनहँ नाटकमे ग्रामपुन जीवगनक वद्विपुनावन्निद्वय उभनैत जनयेतनाकें साकान कयथ गेथ अछि।

संग्रहक सन्वायक पैघ एकाङ्की अछि सुगण उवावासँ पहिने । ई साण दृश्यमे व्रिगोपति अछि। ई एकगोट नोमानी अन्थान स्वयच्छन्दवादी नाटक थिक। एहिमे पुनैक स्वयच्छन्दनापन वेस वथ देउठे अछि। आ ओकन मान्गमे उपस्थति होवज्वा वधिग वायाक सामाना अन्धग्न सहण ढङ्गासँ होशन देयाओठ गेथ अछि। एही नाटकमे गायक ओ गायिका व्रिवाहमे वधिग-वाया होशनो अन्धग्न हन्ष आ उठ्ठासक वानावनास पुनदन्सन गेथ अछि।

एकन गायक अशोक पढा। अर्थात् गोकनी कऽउगैत अछि। मुदा एही हेतुएँ गोकनी छोड़ दैत अछि। ओ ओकन माथिक अवैध व्वापानमे उगठ नहैत छैका आ नकने नाकछेन कनवाक ठेठ ओकना गपिकन कएने नहैत छैका गोकनी छोड़वाक वाद ओ वेनोपगान नऽ गामक सङ्गीसभक कुसङ्गामि नहऽ उगैत अछि। आ व्वाकनगितानुपैँ स्वयच्छ नहति। अपन गनेशमितिनसभक कानामे वदगाम होशन यथीजाशन अछि। जाहिसँ ओकन माना पति। दुःप्यो नहऽ उगैत छथनि। वेन-वेन कोससि कएवाक वादो अशोककें गोकनी गही भेटा पवैत छैक आ ओ अपन पेशगयानी पतिपन आस्रति नहऽ उगैत अछि।

अशोकक पति। अपन सकथ अयथ सम्पति अशोकक पढाऽमे वधिह दैगे छथाह आ कछि कनगा नऽ गेथ छथनि। जकन कानामे गोनाशन हुगका आ हुगका पन्नीकसँ। दुनव्वावहानपन उगना जाशन अछि। अशोककें ई गही नीक उगैत छैक आ ओ गोनाशनसँ नीडिजाए याहैत अछि। ओ मुठक कनोक गुमा सुदा

जोडा कऽ ओकना पैतृक घनाडी हऽपवापन तुँउ छैक। युवा वृत्त एहि महाजनी वृत्तिक पुनर्जाय कऽ याहै। अछि मुदा अन्वयवसिवासमे जकऽओ ओकनासक माता पति। अन्वयायी महाजनेँ वेनपन गढ होएवाक कृपा कऽवाक कृपाजनाक कामसँ गही कऽ दै। छैक। मुदा अशोककेँ अपन माता पति।क अपमान गही सकऽ जाइ। अछि। ओ गोनाशक डेउढी जा। तुँमै। अछि। मुदा ओनाऽ गोनाशक वेटी ओकना गोनाशसँ भेट होवऽ दै। छैक। आ अपन गहनासव पुनदान कऽ ओकना कामुकन गऽ जाए कहै। छैक।

गोनाशक वेटी उकृष्मीसँ अशोक गहना गही। छै। अछि। उकृष्मी अशोककेँ अपन पति।क महाजनी वृत्तिक वृत्तिय संघर्ष कऽवाक हेतु सङ्गति पुन्यास कऽवाक मन्त्राणा दै। छै। आ ओहिमे आवस्यकता पऽतापन अपनो सहयोग देवाक वयन दै। छैक। अन्वयः अशोक उकृष्मीसँ व्रिवाह कऽ ठेवाक गिनास्य छै। अछि। आ उकृष्मीयो गही। हेतु तैयार गऽ जाइ। अछि। दुगुक व्रिवाहमे गोनाश व्रिधि वाया अपग्न कऽ याहै। अछि। मुदा कऽवाक वाठि। गहनाक काममे आ ओकन सुवीकृतिसँ व्रिवाह होएवाक काममे आ व्रिवाह नोका गही। पवै। अछि। आ एहीनहे महाजनेक अन्वयायी वृत्तिक अन्वय होइ। छक।

एहि नाटकमे महाजनी वृत्तिक जतेक सुन्दर ओ सजीव उपस्थापन भेट अछि, ततेक ओकनावृत्तिय संघर्षक गही। आ ने सुठे। यी पुनका उकृष्मी आ अशोकक पुनमे ततेक असहजता अछि। ते वस्तु व्रिग्यासेपन पुनसुन उर्ग सकै। अछि। तथापि गङ्गामन्थिय दृष्टिसँ ई नाटक सविभा शैथिक सशुभ नाटक थकि।

मैथिली नाटक साहित्यिक इतिहास अनुभवन पुनयीन अछि। संस्कृत नाटकमे मैथिलीक गेय पदावलीक समन्वितकेँ जँ मैथिली नाटकक इतिहास मानी तँ आइसओ वृत्त पुनान अछि। नेपाठ मैथिली नाटक ओ गङ्गामन्थिक एकटा महत्वपूर्ण केन्द्रीक रुपमे सानहम अगहन शताब्दी वनी। जानठ जाइ। गहना मुदा पनवृत्ती काठमे ओहिदिमसँ मैथिली नाटकक स्रोत जोगा सुप्या गेठ छठ। मुदा शनी गनम। जीक पुन्याससँ वृहना जाइ। अछि। ते आयुगिक मैथिली

गाटक अपन सकथ समग्रानक संग गोपाथमे पठवति पुष्पति गऽ नहथ अर्था
 आ युगागुनुप अग्याग्य गाथाक समकक्ष ऐपनक प्रानसिपन्थामे ठागथ
 अर्था एहि गाटकसंग्रहसँ ई सपष्ट प्रतीत होश अर्थाजे ग्नमनी
 प्रयोगयन्त्री गाटकका छथि, गाट्यशैलीक वविधि प्रयोगमे सद्दिवहसन
 छथिप्राहे ओ पानम्पानकि शैली हे कविा अत्याधुनिक।

ग्नमनी जीक एकाङ्की गाटकसवमे अर्थाकांश वसतु वगियास प्रानसङ्गाकि
 अर्था एहिसवमे प्रानमाग जीवगक वनिगिन समस्यादिसि ठोकक
 यथागाकृष्ट कनवाक सामन्थ्य छैक। ईसवटा गङ्गामन्थीय दृष्टि सञ्च
 एकाङ्की अर्था गाटकका गङ्गा प्रभावकेँ उत्कृष्टयनी पहुँचएवाक हेतु
 गङ्गागाथाक प्रयोग कएथि अर्था, जे हुनक गनिदेशकीयताकेँ सूष्ट कनै
 अर्था पान्नीयति गाथाक प्रयोग कएथि अर्था जे हुनक गनिदेशकीयताकेँ
 सूष्ट कनै अर्था पान्नीयति गाथाक प्रवहानसँ एकाङ्कीमे कएहुँ असहजाना
 ओ गानीपन वुहना जाश छैक। ठोकाग्नान्जगक अपेक्षा ग्ननीय वैयानिक
 अग्विप्रकृति प्रदान कऽ ग्नमनीक एकाङ्कीसव ठोकजीवगक समस्त
 गाकानामक पक्षक वद्विनु पनाकेँ उद्घाटति कनवामे सञ्च सद्दिव अर्था तथा
 गव गनिमासक पक्षपाती अर्था अवश्ये हनिक ई साहित्य समाज आ देशक
 हेतु कथ्यासकानी अर्था जाहमे सस्त ठोकप्रतिना आ वाजानुपनक अभाव तँ
 अर्था, प्रयाग आ उपदेशक थोपथ वैद्यकिता गहि अपति कथानमक
 ठोकोपदेश अर्था समग्रानामे हनिक संग्रह समाज ओ राष्ट्रक प्रानि हनिक
 प्रानविद्य ऐपनक वशिष्ट गनुना थकि।

अपन मंगल्ये दितिनीसिनाउडवदिहवाजाधियोम पन पडाउ।

रररररररररर गकुल- नाम बनोस कापड़ि 'ग्रामन' पन एकटा समग्र
दृष्टि



गणेश गकुल

नाम बनोस कापड़ि 'ग्रामन' पन एकटा समग्र दृष्टि

नाम बनोस कापड़ि 'ग्रामन' सन्वहाना वरगकेँ गनमि देउग्हि, नयन
भेहेग्हन मठगिया आ जानविदी नंगमंय शोभकन आ नाड युक्त सवदावधि
अपन सँपेपसूटकि ह्यूमन वध गटक मे दऽ नहए छए, नयन ग्रामन जी ई
केउग्हि, से आन महान्वपूनास छए।

ऊँ गटक पढ़वामे उद्वेगि नै कनन तँ गनिदेशक ओकन मंयनक गनिमय
कोना ठेन? आ जे पढ़वामे गीक ठागन से नऽ जायन गटकक पडगीय नान्वक
आग्नही? आ जे जानविदी अछि, जे 'सँपेपसूटकि ह्यूमन' ठिपि छथा से
जेठ गटकक मंयीय नान्वक आग्नही? रन सानाव्दीमे मठगियाजी 'ओकन

आंगणक वानहमासा' मे गमिग वनगकेँ नाड कहै छथि, कएक दसक वाद ई धरि सुधान आएए छन्हि जे ओ आव ओर वनगकेँ गमिग वनग कहि रहए छथि, ई सुधान स्वागत योग्य मुदा ऐ दीर्घ अवधि ऐठ वड्ड कम अछि। मठगियाजी अपन जाति-आचारिनि वाक्य संनयन, आ गनष्ट-हर्दि मशिनिनि वाक्य नयन। कोना घोसिया सकतिथि जे गगना आ गमिग वनगक छद्म संकल्पना मे अतिथि, ई नथ्य ओ वड्ड यतुनारसँ गुकेवाक प्रयास कए छथि, आ तँ ओ मेडियोकृतिसँ आगाँ मे वढि पवै छथि। आ तँ हुनकामे ऐ गट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण वगेवाक आग्रह तँ छन्हि मुदा सामन्य्य मे आवि पवै छन्हि। विष्णु सन्माक पंयतनमे गोक कथा सभ अछि मुदा ओ अकान्त सूदन आ सन्तीक पाछाँ पड़ि जाइ छथि, से गानायन पम्डतिकेँ ओकन पुनर्लेपन कऽ हितोपदेश विषय पड़ए छन्हि। गमन्य गिदिसककेँ सेहे ऐ नरक गाथाक पुनर्लेपन कऽ मंथन योग्य शब्दावली वगेवाक याही।

गनमक गनमिमय गाथा ओकक गनमिक भाग नपैत अछि।

मुदा पहिने गनमक उद्युक्ता सभपन एकटा दृष्टि:

तोना संगे जखनो मे कुणवा (१८८७)

ऐ संग्रहमे १२ टा उद्युक्ता अछि।

पहिलि उद्युक्ता गगजोगीक जवन्दन प्रानमन मेठ। गृथमन गनू गेया घन गृहस्थीक ऐठ यनिनि, ई देया कऽ प्रोटोगोनिस्ट अर्था अयमिति छथि। समाजसँ पनविनसँ जे ओकना अगरे उगबैस वन्यमे पडा देठकै काठाम्ढो, कमार ऐठ ओकनासँ पनिग छठि गेया। पति वगनसमे ओकने कमारपन पड़ए नहै छठ, आ ओकन शैशनक पन्य पूना कए छठ ओकन संगी शेपन, व्यापारी। मुदा कथाक अन्त कमजोर गऽ गेठ अछि।

अन्धकारमे भोगिआयुध एकटा सपिही उक्थ कथा अछि। गामेश आ गामेश सग लोकक सुकेया 'हमे हपिपुन वला वट्टेदानसँ माउथ दाउना, सुनवाथ, टोपी आ वावुक पुनगा पुना पप्रामे आ आँपमि टूटथ वाँहविथ यक्षमा, जकना ओ डोनीसँ वगहगे नहैका'

'भोगिआयुध वाटक वटोही', 'गोनक वुग' आ 'असकक' व्यक्तिक भगक व्रियान आ गनिशाकँ गीकसँ व्रामन कएत अछि। मुदा सन्वहानाक दन्द 'माटकि दन्द' मे जइ पुनकामँ आयुध अछि, से अद्भुत अछि।

'भगःसुथारिकि दंस' कथाक गढ़नी अद्भुत अछि। वहुनयिक पति गारु ड्यूटी, सकियेटीपन जइ छै। कमजोर छै। ससुन ओकना घनमे पइसै छै, मुदा से ओकना वादमे पना यथै छै, पहिठि नातिँ ओ आदंक्रमे नहैए, ओकना संग सम्भोगो भैथै आकि ओ सपनार छठि सेहे वै पना। कथा आगाँ वढै छै। आन शिल्पगत व्रिषपना अथै छै। मुदा श्वेन अन्त होश-होश कथा कमजोर नऽ जाइए।

टीस दसम कक्षाक छात्राक कथा अछि, ओ कछि वगऽ यहै छथि, मुदा

जोगा टीस जीनाक कथा अछि। तहनि भौसी भौसीक कथा अछि। जे आइ जा नहथ छथि, मुदा हुनका भोगसँ कयि गकिठि वै पावै नहथ अछि।

आँयमे वन्या वुगनीक वीय प्रोटोगोसिस्ट सोय नहथ छथि। नयंकन वन्या, अडियानघान कऽ देतै। सनसुवती, सुगीना, जीना। सनसुवतीक सासुन गीक वै भैथै, जीना ठेठ ठडका प्रोटोगोसिस्ट नाकथु। सम्भ्रानि वन्या वुगनीक वीया

पांकमे मंङ्गन जेप्याक कथा अछि। मुदा कथा उद्देश्यहीन गटकैत नहै। अछि। तोना संगे जयवै जे कुजवा टारुथ कथा अछि। मुदा पांक सग ईहे सूनी पुनुष व्रिनिशकँ वै श्वरिषि पावैए। वैकश्वैस आस जगवैत नहैए। मुदा पाठक पियसठे नही जाइ छथि। आ से प्यास नप्यन आन गीवन नऽ जाइए। जप्यन लोक सशक्त पाँती कथाकान अन्तमिमे आबै छथि।

तोना संगे जयवौ ते कृणवा

वड सुप्य होयतौ-

हथिया यद्धि घुमवै जहण ते

गुणमक गाटक

श्रीउद्वृत्तक आयापन जं ठोककथाक संकथन, मोहावनाक संकथन बै कनव
 णं अहनिगो हएण जोगा मंठगिया जोक गाटकमे होइए। अहाँ एक वृत्ताक पुन्यति
 मोहावना 'दस व्नाह्मास दस पेट, दस गाड एक पेट' मोहावनाक संकथन कऽ
 ठेव मुदा दोसऱ वृत्ता द्वाऱा पुन्युक्ता 'दस व्नाह्मास एक पेट' केऱ संकथन बै
 कऽ सकवा महेंद्रेऱ गानायाम नाम ठियै छथि जे ठोककथामे जाति-पाश्रन बै होइ
 छै, मुदा मंठगियाजी से कोना मानताह? गगना सेहे हुगकऱ कथामे एवे कऱै
 छग्हि आ असठ कामस जऱ कामससँ ई मंठगिया जोक गाटकक अगनिग अंग
 वर्गी पाश्रन अर्था से अर्था हुगकऱ आनुवंशिक जातीय श्रेण्डना आयाति सोया
 हुगकऱ गाटकमे मोटा-मोटी अढार-अढार पग्नाक घीय तीनि कऽ कऱएकटा
 दृश्य होइ अर्था, जऱमे अगमि दू- तीग दृश्य यऱि ओ छोटका पाश्रक
 (मंठगियाजोक अपन श्पाद कएठ गाषा द्वाऱा) कथि गाषापन सवऱस
 दृशकक हंसवाक, आ गगनाक गृन्ध-हृन्दीक माधुमसँ छद्म हास्य
 उपाग्न कऱवाक अपन पुनाग पद्यति अगुसऱस कऱै छथि गाट्य-कथाकें
 उद्देश्यपूऱस वनेवाक आगुह णं अगमि दू- तीग दृश्यमे ओ कऱै छथि
 मुदा सामर्थ्य बै आवा पवै छग्हि "पयपगिया मैथि" मे सुगाष यगद्रेऱ
 धादव ठियै छथि- "उां नमानगद हऱ 'नमास' अपन गोटवुक मे टपिगे छठह-
 'व्नाह्मास कहै छथि सोश छी, सोएकक कहै अर्था वाग छी। हम की कही
 जे की छी?" एही टीप मे सोएकक ठेठ जे गनादऱ वृत्तक गेठ अर्था, से आऱ
 कछु गह; जातीय वृद्धि अ घऱाकाक गाषिक अगवृत्तकऱा थिका" यगद्रेऱस
 "नामगोस कापडि' गुणमऱ : व्रियऱ, संवेदना आ येगऱा [वृद्धि अंक

३७०]”मे ठियै छथि- “कएिकेँ गेपाठक मैथिली गोटककेँ गोटक वुहूँ गहि जाइका दोस, जे संस्था भगिप गोटक कएल गहिमे कोनो एकटा प्यास वृक्षक कि मातृ गोटक जेठपठ जाइका एहि वृक्षसुवदादी गीतकेँ गोड़वाक आ भावसकिताकेँ जागृत कएवाक उद्देश्ये ओ एक समयमे गोटक ठियैवा पर जोग देठगि” ई एकटा प्यास वृक्षक मिठगिया जोग थकि, मठगिया जोग गेपाठी गणशाही काठमे ठेपकीय पुनविद्यनाकेँ गै गमिहा सकठ आ गणगैतिक नूपसँ सत्ता पक्षक गोटक ठियैठगि आ प्याठ न्यठगि जे दुसक हंसय मातृ सवहानापर, सत्ताधीसपर गै पुनपमेसुव कापड़ि “मुदा” गोटकक युगीन-सगदुन [नमेश नजुन- मुदा, साठ २०६८]” मे ठियै छथि- “उं धीनेदुन आ मठगिया... अपनाके गणगीतसँ एत न्यगे रहठहा । तँ हगिका सवके न्यगामे, न्यगायनभितामे, गणगीतिक दुवदुवक ठवठेस गहि देपार देन अछि” अहि आठेपमे पनमेसुव कापड़ि नमेश नजुन आ मठगिया जोक माटे ठियै छथि- “नमेशजी, मठगियाके ठामे वहुन दनि धनि रहि नडामजुयि सडघनि करिगी, यथान्थ ई अछि जे हगिकापर मठगियाजोक कोनो छां- ग्रास गहि पड़ठ वुहाइछा दोस यथान्थ नऽ रहे अछि जे मठगियाजिसँ हठठ रहठ अवस्था आ संस्थामे ई महत्वपरुह कृकि न्यगा कए सकठथि हमन कहवाक अगिपनाय ई अछि जे मठगियाजोग आ भगिपसँ जहिया नमेशजी अठग नऽ कऽ संकठपसँ आवद्य रहथि गहिए एक न्यगा (मुदा, गोटक, वसिं२०५० साठमे) गेठ अछि यथातय अछि जे भगिप एपगधनि एक नम्यग गहि कऽ सकठ”

ऐ पनसिथितामे नमन मैथिली गोटककेँ समवादक माधुम वगैठगि, ओकना ठेठ एकटा भाषा गडठगि जे सवहाना ठेठ अपमानजनक गै वन गनमिमय छठ गणशाहिक नमने रहिगी आ गेपाठक गणगीतिक रहिगी (मठगियाक कायस्थठ गेपाठ छठ मुदा ओ गणगीतिक गणगीतिक छठ) ओ ठेकगाथाक माधुमसँ गणगीतिक वषियवसु अपन न्यगायनभितामे अठगि

“भैया, अपठे अपन सोगाण” केन पुनुष-१ आ पुनुष-२ सामन्तक वेगानी पठेवाक वगैठमे अछि आ पानुसुवसँ गीन उँ छै-

सग दनि आई पढ़ कटावै छै

साग सओ मुसहवा से

सागो साओ मुसहकें घनमे छागते पोसठ छै, दीना मद्गी गाणा मनथनीक
गीन गवैत योगी नूपमे पुनवेश कतै छथी

नहिंगा 'महषिसुन मुद्दावाए' एकठ गटक अछा, जइमे पुनुष-१ अपनो आ
पात्रस्रसँ वाजठ अवाजोक अगगिय कऽ सकैत अछा। एकटा कें मानगे वहुन
नास जगमि कऽ गऽ गऽ जाश अछा, से काण अपूनास छै ओर पात्रक, आ
तैं ओ आँसी पन अप्पन गै ठटकऽ याहै।

ठेक गट्यः जट जटगि (२००७) (शोध) हुनकन श्रीउडवत्कसँ जुऽठ १हवाक
पुनमास अछा। आ तैं हुनका गेपाठिय मैथिलीक ठेकगट्ययनी शेक्सपीयनी
कहठ जाश अछा।

अपन मंगव्ये दृगिगीठिसगाउडवद्विहवाभाठियोम पन पडाउ।

रररगतिधानगद मसुडठ-अपगे १ड्गामे १ड्गाएठ नामगनोस सन



गतिधानगद मसुडठ

अपने ढाँधे ढाँधाले नामगोस स

केहन सुदृशन सूनुप । अत्यन्त यमकैत ओजपूनास आभासँ ठावाठव गनठ
 अप्नामि आकृषासूकल सौगपूनास सौम्य गयनागनाम मुसकआश
 मुप्याकृणा पन साठठ गयनक उपगयन साहित्यसँ होश छै जे गनिगन
 अपना वेगक पुनवाहमे गसिष्ठठ सगिता जेकाँ वैहै नहै छै वगिा नोकटोक
 अपन मामाजिउति मसूनाषिकक आठम्व पन अंकुनाति वैद्यकिनाक आयागकें
 जीवन आ जगतक कृषतिजियनि आठेकति कनव गागनिथी सत्पुनयाससँ
 समाज, साहित्य आ संस्कृतिके ठेठ अपन जीवनकें वषिमे दुवाशयोक गीठकंड
 जेकाँ वषिपाग कऽ श्रोता, पाठक आ दृशककें अपन सृजणसँ
 अमृतापाग, नसपाग कौनगहिन जगकि समकाठगि समाधेयक ठेकनी
 सप्रेम, ससमाग, ससुगह कहैत नहैत जे कापडकि यागि पन श्रुटनी
 प्यापडि, आर वाहए कापडसिन मैथिली साहित्यकें श्रृंखलामे
 महत्वपूनास योगदान दैत मथिठिवासीक माथ सगौनव उय्य क दैठप्यगिह ।
 कापडसिन मागे नामगोस कापडसिन ।

हुनक साहित्यिक आ सम्यायक सुनगी सग्यना आयागति मथिठि होशक वा
 असमतिा अगपिनेगति मयेसक कोन्ह-कोन्हयनि पसगि छनि । हुनका
 पोनपोनमे मथिठि आ मयेश सजवि अछि । तै गेपाठमे संघयिना अएक वाद
 मयेश पुनदेषमे गडति मयेश पुनज्मा पुनपिडागक पहिठि अय्यकषक कमाण
 समहनगे छथि । मयेशपुनदेषमे नहै वगिनिग गाषागाषिकि
 साहित्यअनुगगी, गाषापुनेमी, कठपापाम्पी ठेकनी हगिका उपन साहित्यक
 सगवयिमे गीक महत्वपूनास काज होशक से पठक वछिओगे अछि ।

वस्तुतः मैथिली साहित्यक एहन कोनो वयिा नहै जे हगिकासँ वाम जेठ होशक ।
 कवतिा, गीत, गजठ, ठेप, आठेप, गविग्य, शोध, निपौनगाज, समकृषा,
 कथा, उपन्यास, नाटक, श्रुति, गीति कयासेट आदि हगिक वेमसिाठ
 कृतिसिग अछि । नहै आव नहै दीनघ कवतिा, तोजे संगे जएवो जे

कुणवा, हुण्ठी उपन वहेन जंग्गा, एम्प्टी गार्सस कथा संग्रह, डेकाण पुन
 आठेप्य संग्रह, सीता श्विम्मे पुनसद्विद्यगीतक ठेप्यन, जटजटनि, जाणकीक
 महिमा, हमन गनीवीएहमना वनदाण ठौए, मेहगनकि गोटी पकवाण ठौए आर्दा
 गीत, जाणकपुनयाम न प्रस कृषेत्नका साँस्कृाकि सम्पदा आ एकन
 अंग्नेणी अगुवाए सेहे, गाणकमठ आ सान्नी पुन शोध, मधेश आगदोठगपन
 केगद्वानि घनमँहा उपन्यास, आर्दा उठेप्यनीय कृानि अर्छा। गामघन आ
 आँपुन मैथीषी पान्कानिाक एकटा एहन गाणमान्ग वगठ जाहपिन सयौके
 संप्यामे एप्यनका गामी हस्ताकृषन ठोकनि ओहडिमसँ डेगाडेगी यठवाक
 सुनुआन कएने नहएवाक ककरोसँ गुकाएठ गहि अर्छा जाहमि अपनेक शोभाति
 आ नकानान्पसक सुशुभ थकि जे आरयो ओ दुगू पान्किा पाठकक
 मनमसान्धिकमे जीवति अर्छा, आ यठि नहए अर्छा। जाणकपुनयामसँ
 काग्नपुनक वासो पहिठि व्यक्तानिवके नुपमे काण
 कनव, मधुपनक, गनमि, गोनप्पापान, गाणयानी, गागनकि, हमाठ
 प्यवन, अग्नौपथ, पूवा मन्थ आर्दमि समाया न्रियान पुनकाशति होएव
 अपनेक कठमक जाहुगनी अर्छा।
 हनिदुस्नाग, आण, इगकठाव, हनिाषिनी, द पोठटिकिस, व्रिविधि गानन
 ठायात्रामे हनिदी भाषामे व्रियान आ समाया न्रम्पनेषम।
 सोगामाटी, देसकोस, घनवाहन, समयसाठ, अंकिा, शुठपान, पठ्ठव,
 मथिषि टाईम्स, मथिषि दन्शन आर्दमि छाप्रठ नहएह। जाणकपुनयामक
 दोसन अश्वसेट पुनवधिकि पान्किा सुपनगान, जाणकपुन एकसपनेस आरयो
 ठोकक गेन पुन अर्छा। एकटा आओन वसगन टेठिश्चिम्
 ठेप्यन, गनिमास, कान्पकानमक आयोजन, ओनआओन, व्यप्रवस्थापन आ
 सम्पादक अद्वुगन कठि ओ सहजने छथा जेकन पान्मिाम छै जाणकपुन श्विम्
 श्वेस्यीगठ, अग्नानाषनटिनय मैथीषी सम्मेठन, साहित्य कठि उन्सव आर्दा
 । नेपाठ पुनज्जा पुनान्पिठगक पुनान्ज मान् गहि मैथीषी विकास कोषक
 संस्थापक, नुपनंग आर्दा संस्थासठके सेहे गठन आ सन्थाठन कनवामे
 हनिक प्रोगदाणक यन्या गहि कनव थोड हए। नेपाठक नान्पटानि अय्यवान
 मान् गहि स्थाणीय उठि एकसपनेसमे गनिगान सान्प संवाद गानक

साम्प्रतम् कथम् यथैव आत्मा नृणां अर्था । शम्भुनेपाथ नार्हन्त्यस
मति, ओहिपत्नी आयोपग होवस्वाथ वृद्ध्यापत्नी समाग्रे, ओकान्पाम् आ
साँस्कृतिकि मन्त्र्य सभ पत्नी हनिक उपस्थितिगिगमिामय माग्रे जाश अर्था
।

वस्तुतः ओ एकटा एहं व्यक्ती, ओ कहियौ दान्शनिकि यगिणक ओकाँ, कहियौ
यमत्कानिकि वक्ता ओकाँ, कहियौ युम्वकीय ऐप्यक ओकाँ । कहियौ पश्यमि
दन्शन, यगिण आ गोभाण्टसिण्मिक एकटा पात्नी ओकाँ । कहियौ पून्वीय
यन्म, अध्यात्म, दन्शन आ अगुशासनक ज्ञाना ओकाँ । जीवैत नृणां
अर्था । ओ जीवणक पुन्येक कषाम्मे हनेक नड्ग सभक हिसाव कानिावक
आँकठग मात्नी गहि कएठग, ओहि नड्ग सभमे जीवाक अकट उक्कसुठ
जीजीवषिा पोसठग, आओ अपने नड्गमे नंगा जाएवाथ व्यक्तीव । मुँह
मिसिनी वोठ कएँ, सुदन्शन स्वरूप, कथा, साहित्य आ सभ्याणक
संगम, अक्षय, आवाण आ अण्ठाणक न्निविमी, वहुवधियादी सशक्त
हस्ताक्षय आदानीय नामगोस कापडि ग्निमय स ।

कहियौ उमेरसँ उशुणाए, उमटाम माग्रे ओ अकस नौकाक न्ठासमे नहै
अर्था ओ ककना कोगा अपन शव्दक वाम्मसँ यनी यनी दी । मुदा असठमे कहौ
न एकटा एहं अगिावक ओ साँयेके पुनाध्यापक वगवाक कहियौ औठ गहि
कएठग मुदा मैथिलीवाथ गहि नेपाथीवाथ ओकगि सेहे हनिक क्तीव आ
व्यक्तीव पत्नी शोध कएँ नृणां । अन्थात् ज्ञान, यगिण, वोथि आ
ऐप्यमे ऐय गेठ ओक । सावणणिकि मन्त्र्यसभक सम्वोद्यगमे एकदम पुनेमि
सम्वोधन, मुदा व्रियाम् समाण, गाणगीति, जीवण जगणक व्रिाथ आ
गहिना समुदन्सभमे कएपनाक सानंगी पाँप्यि ठगा उडग गएँ आ
हैवैत दुवैत, गँपसकि होश । अद्भुत श्रियि ऐप्यनशैथि । यगिण आ न्ककै
सठ रूपमे नेपाँकण कनवाक जाहुगनी कुशठना । नाहिकि वहुन ही
उदानापुन्यक नाप्यवाक वेणोड कथ ।

हुणक गोना सँगे जएयो ने कुजवा, हुँगुठी उपन वहैत गंगा, एकटा आओन वसन्त, सुनुज उजास पहिने, पेटक प्यानि, महिषासुर मुन्दावाह, सुषीपन शोण, वग्गः कोडी औगाश्न युँवा, एकटाउग जयनी, गहि आव गहि, दीर्घकवति, हाथहिमे मथिठिक ठोकजीवनः ठोक सगदन्त पोथी एकटा गव कीर्तमिग स्थापति कनवामे सञ्चर मेठ अछि । हिनक नयना सवमे जीवग, जगत आ प्रेम व पुनस्य उवाउव नमठ अछि जे सन्वायकि नुयकि अछि । जहिमे गायक गायिकाक हाउगाउ, सपनस, गाय आदिसँ दनवति होएव, सनवति होएव आ दु गीग दगियनि भोग गुदगुदाएठ नहव । पाठकक स्वाभाविक पुनकिनिधि । हिनक कथासभमे जाँघ वा वक्षसथठक वाग मात्र गहि होश अछि, ओहिमे ठोग, मोह, काम, क्रोध, समाज आ गणनीति उपन योटाग पुनहान सेहे नहैत अछि । वुदयक मन्तसभ, कुनाग, वेद, उपनिषद्, वास्वठ की की गँई नहैत अछि? ऐपगमे विम्वसभक प्रयोग जादुगनी । नामदान, हैसियिक पुनदशन, आडम्वकसँग पूजापाठ कएवाठा ठौगी पम्डति पुनोहीति, मौठना, पादनी सभसँ ७५ कऽ समाजक अन्त्य पाप्यम्डी गणनीतिप्रिञ्च आ स्कुठ शक्तिधनिकि यनीकठा उपन वषिकषम व्यंग्यवाह पुनहान कनव हिनक मौठिकि शिपि छगि । हिनक सौन्दर्ययेग आ जीवगक प्यास नड्ग रूपसभकँ वेन वेन गधिनवाक भोग होएव असवाभाविक गहि । हुणक वहुन यन्यति व्यंग्य आ वियानपुनधान सन्प्यठा गामघन आ उठी एकसपुनसमे पुनकाशति नयना आदि वहनोकँ गेन पन शीनषक आ गुदी कम्हसुथ नहैत अछि । कहियोकठा अपना मुडमे नहवासँ अपन समकाठीग सँगीसभ वीयक संवाह, यौठ, गोकहौक, हौठ, वाग कटौवठा आ इट्टा गणजवक होश अछि । तप्यन एना ठौग नहैत अछि जेना जीवगक सभ नड्गसभ ओहि गम पृथ्वीठिक पन उगनि आएठ होस्क । जेना दानसगिकि, आय्यातमिकि आ मागवीय येनक वहस, विम्वस आ छठसुठ शागदान, व्रणगदान आ दमदान होश जा नहठ होस्क । जगिकि इट्टामे सेहे अगन्त गहनाई होश छैक, ओ पुनहिस आ वगिदपुनियिना सेहे ! गहिने

सौन्दर्ययेन आ मागवीय प्रेम । येतनासँ नम्र आ माण्ड एकटा प्रान्त्त
पावतशुभ्र यस्मा, वज्र दौं आ अट्टाहासक मगकानी हँसगई ठाणवाव ।

पय्छि सभमे अगवियकृत्कि अग्नान्किषमे अंयगिन, आसग्न णगगामना
आ प्रदेसक भाषाक गामकाम आ भाषाक णगेनाक छेठ माहनि
अगवियनाक रुपमे सामाजिक सभ्ण आ वगिनगिन मडियामे पुवे सक्रियि
देपथ गेठह अछि । अंग्रेजीमे कहथ जाइ अछि जे गति अ ज्याम ! मैथिलीमे
वाठ मतव । वगि नोकटोक, कहएवाठ वाग गही प गही कहवाक
याहि, ठपिवाक याहि । वाग जागसिअ, दू टप्पी, वगि कोनो हयिकयाहट
गठन नवक वनिद्वय आवाण उगएव । जाहँसँ ठेकके दूःप हएनातिकर कोनो
शक्ति, पनवाह गही । एहँसँ केओ गठन वुह्मन वा अपन हीन गही हेइत से
कहीयो गही वुहँ सकठगि । अन्थ अन्थक कछि गपप कथि गही हेइ
नाहँपन डइकेट प्रहान करव जे जीवगकँ नडा सभमे भोगैत अछि वगि
ढोग, वगि घमम्ड, वगि तथाकथि सामाजिक मय ! सीया अन्थ गही
भेटव, हनिक गहीन आ गम्भीर नयनामे । तथापि थयमे वहएवाठ स्वभाव
हनिका 'पवठिक इन्टेरेक्युअर' अन्थान कौ कोनो वषियमे ठगान
सूयनायुक्त प्रवयन देगहिन वद्विवाग् आ वद्विवायुक्त वद्विवा, वयान आ
यगिनगमे हुनक उयाई आ आयाग अतुठनीय अछि । वौद्विकता, यगिनग आ
वयानक नहमे (समागसूत) वाग गही मठिठ पन ककनोसँ अडि जाएव
हनिक स्वभाव सन्वणगि नऽ गेठ अछि ।

एहँसभ वाक पुष्टा करवाक वेगना गही । ठेक हनिक कृत्तिव आ
व्यक्तित्वसँ गीक जेकाँ पनयिगि अछि । कहवामे कोनो ह्ना गही जे नाटक
छेपन, टेठिछिठि(एकटा

आओन

वसग्न), पत्रकारिता(गामघन, , काग्नपिन, सुप्रभात, णकपुन
एकसप्रेस, कथासंग्रह, कवनि, गविग्न सप्रपनी, आँगन, संसमाम
आदीक याना, सान्वाणगि मन्थ आयोजन व सन्थाठन णकपुन छिठि

श्वेसूटीमठ, अन्तर्गतान्तरि मैथिली सम्मेलन, जनकपुर साहित्य उत्सव) आदि सार्वजनिक उद्यमों, नसासंघ आ पत्रिकाओं सहित मोटा सैकड़ अर्थात् । वड सुश्रद्धालु थेमे हिनक मुष्कान्तरि जादुटोना कनिका गहि सम्मोहनि कनैत हएगि । आओ की कहूँ ? माशु कएत जाएतैत जे हिनक बागीनथी सत्पुत्रासँ साहित्य आ सभ्यामे पुनर्वाहनि अनेकानेक कर्ता आ नयनाक उद्यम गहि कऽ सकए हएव, हमन छोट मसूनाधिक जे कैद कएने नहए तकर शब्दमे गढवाक येष्टा कएत । मनमानसक पुनर्नि हमन कहव ३६६ नहन अपनेक वृत्तान्तरि आ कर्तान्तरि पत्रिकाहिमे हमन ई शब्दयानि सवीकानत जाए ।

मैथिली भाषा एवं साहित्यमे अतुलनीय योगदानक कदम आ सम्मान स्वरूप पद्मश्री नामगोस कापडि 'मनम' सके गोपाथक महामहिनि नाष्टपान्दिवाना 'सु पुनवत जनसेवा श्री न्तरि पदक' पुनर्पुन कनवाक सौभाग्य पुनर्पुन मेठगि । वासुदेवमे गनिगत ५० वृषधरि अपन जीवनक सन्वायकि हसिसा मैथिली, गोपाथी, हिनदी साहित्य, पत्रकारितामे व्यय कएगहिन वृत्तान्तरिक सम्मान कनव संस्था स्वरूपमे सम्मनगि होएव अर्थात् ।

कहवाक कोनो वेगाना गहिजे ओ वृष हिनका तेत सुष्यद नहएगि आ मैथिलीक तेत हृषक, एहदुआने जे गोपाथ सनकान्दिवाना सुपुनवत जनसेवाश्री न्तरिसँ सम्मानगि हेरतेदेनि उगाएग श्वेन गोपाथ सनकानक संस्कृति, पुन्यटक एवं गागनिक उडुपुन मन्तान्तरिवाना वृष २०७७ के 'महाकवी देवकोटा पुनसकान' क तेत यनगि मेठक समाद सुनि सगन मथिलि अन्तर्गत हृषरि, आह्वादि आ वनोन मेठ । तै पद्मश्री नामगोस कापडि 'मनम' सके गमन सहित हन्दि कि वयाई एवं सुनकामन । छक्के पन यौकाक वृषान । समय दुनैत छै, समय यनिहैत छै आ समय एवं समाज उगागिके मूठ्यांकन सेहे

कौन छै देन सवेन। सवुन कनवाक याही। देन है अन्धेन गँई याहे हुनान कनवो
गाँगासिञ्चनसुनवो।

मधेश पुनपुआ पुनपिडागक सम्पुनानि अय्यकष मेठा पुन सेनसँ अनेकनेक
सुमकामना, अशेष मंगलकामना आ अपनेक जीवग सात्थक, सपुनमय आ
सुपुनमय हुअर से असंपुनय कामना।

-गतिप्रागण्ड मासुडठ, जनकपुरयाम, नेपाल

अपन मंगल्ये दगिगिठिसगाडउवदिहावामाठियोन पुन पडाउ।

ऐ अंकक अग्याग्य नयगा

इगद्व्य प्याम्ड

इगणगदीश पुनसाद मम्ड- सुयगिा (यानावाहकि उपग्यास)

इगणगदीश पुनसाद मम्ड- शॉन्ट कट नास्गा (उद्युक्तया)

इगणगदीश व्रिषिस नाय- गौटवेय्या

इगणगदीश गानायाम भस्मि- माग्शूमि (उपग्यास)- ३१-३५ म प्येप

इगणगदीश मगोण कश्यप-अगहान सऽ उडैण

इगणगदीश कम्म- अगणशिप्या (प्येप-१८)

इगणगदीश कुमान नाय ' वटोहि' मंगनौगा (यानावाहकि उपग्यास १२म प्येप)

इगणगदीश नाभागद मम्ड-गाना विगाम गानाविद् धनम संकट मुक्ता

३८५ कशिन कागीराम-पुस्तकानी गुग्गा पुस्तकान वंटा उकैर

३९०७ देव कामर- कथाकान नगद वरिस गाय जी के कथा पोथी ' असर
पूजा' पोथी समीक्षा- "सहयि गोपनी"

३९१कुन्दन कर्मा- मैथिली वीहना कथा- गीठ

३९२आशुतोष कुमार दा- जीवनक सीप

इंग्लिश प्रसाद मासुठ- सुयतिा (यागावाहकि उपग्यास)



इंग्लिश प्रसाद मासुठ

सुयतिा (यागावाहकि उपग्यास)

' सुयतिा ' यागावाहकि नुपें छपव पुनानमन मेठ ' मथिथिा दनसन मे, जे पहिने प्रान्टिमे छपव वगद मेठ आ मागन पीडीएचु मे ई-पुनकाशति हुअय ठागठ आ छेन सेहो वगद नठ गेठ आ तें ' सुयतिा ' क सेहो छपव ई-पुनकाशति हएव

वन्दे मऽ गेऽ अही आऽकमे ई उपन्यास याऽवाहकि नूऽ ई-पुऽकाशकि कएऽ
 णा १६७ अर्था- सम्पादक

दोसऽ पऽऽऽ

दरिद्रि तौन वऽगो वऽरिऽसदेवऽ सुऽगि उऽरि कऽ हाथ-मुँहऽ योऽ दऽनवऽगऽपऽन वैसवे
 कएऽ छऽ कऽ सुऽपदेवऽ छेऽऽमे पऽगऽ, कऽटोऽने पौसऽ मऽँगऽ नेने पऽहुँयऽथैऽगऽ
 कऽटोऽने नऽपऽ मऽँगऽकेँ वऽरिऽसदेवऽ अपनऽ हाथकऽ आँगुऽनकऽ युऽटकीऽसँ देऽपऽएऽ छऽगऽ
 णे मऽँगऽकऽ पौसाऽन गीकऽ अर्थाऽ किऽ गऽहऽ किऽएऽ णँ वऽरिऽसदेवऽकेँ ई वुऽहऽ छैऽनऽ णे
 मऽँगऽकऽ गीकऽ पौसाऽन तऽपऽन मऽनऽगऽ णऽइऽ णऽपऽन ओ पऽगऽमि अऽथैऽ णऽइऽऽ मऽने ई
 णे मऽँगऽकऽ णेऽहेऽन पौसाऽन होऽइऽ तेऽहेऽन ओऽइऽने गऽशाकऽ मऽान्ऽनऽ ओऽते वेऽसी होऽइऽ
 युऽटकीऽसँ देऽपऽएऽ पऽछऽइऽन वऽरिऽसदेवऽ वुऽहऽ गेऽऽ णे मऽँगऽकऽ पौसाऽन गीकऽ अर्थाऽ
 नऽहऽिकाऽ वऽरिऽसदेवऽकऽ छऽगोऽटऽपिऽ संगऽी गऽशिकाऽगऽनऽ सेऽहो पऽहुँयऽथऽ।

गऽशिकाऽगऽनऽ आ वऽरिऽसदेवऽ संगऽ-संगऽ गऽामकऽ सूकऽऽमे पऽढऽने छैऽथऽ दऽगूकऽ णऽनऽ
 सुऽगऽयऽसुऽनऽ पऽनऽवऽानऽमे नेने गोकऽनी-याकऽनीकऽ पऽगऽानऽ गऽहऽयिँ छेऽथैऽनऽ, णँएऽ आऽगू
 पऽढऽवऽकेँ ओऽते णऽनूऽनी दऽगूकऽ पऽगिऽ गऽहऽि वुऽहऽथैऽनऽ णँएऽ आऽगू गऽहऽयिँ पऽढऽथैऽनऽ अपनऽ
 णऽमीनऽ-णऽनऽथाकऽ कागऽणऽ-पऽनऽनऽ देऽपऽवऽ, मऽहाऽनऽगीकऽ वऽहऽि-पऽ्याऽनऽकऽ हऽसिऽवऽ-वऽनी
 कऽनऽवऽ, वऽसऽ एऽनऽवे पऽगऽानऽ छेऽथैऽनऽ।

पऽगिऽकऽ अमऽऽदऽनीमे णऽहऽनिऽ वऽरिऽसदेवऽकऽ नऽहऽनिऽ गऽशिकाऽगऽनऽकऽ पऽनऽवऽानऽमे
 मऽहाऽनऽगीकऽ काऽनोऽवऽनऽ यऽथैऽनऽ नऽहैऽनऽ मऽने नूऽपैऽओ-पैऽसाऽ आ अऽगऽनो-पऽगऽकिऽ सूऽदऽ-
 सऽवऽइऽ दऽगू पऽनऽवऽानऽकऽ पऽगऽदऽनी पेशऽ छऽऽ ओऽगऽ, मैऽयऽानीमे वऽरिऽसदेवऽ अऽसऽगऽने
 छैऽथऽ मुऽदऽ गऽशिकाऽगऽनऽ तीनऽ मऽँइऽकऽ मैऽयऽानीमे छैऽथऽ पऽगिऽकेँ मुऽइऽ पऽछऽइऽनऽ
 गऽशिकाऽगऽनऽकऽ पऽनऽवऽानऽमे सऽमऽपैऽगऽिकऽ वँटऽवऽानऽ छऽ कऽ तेऽहेऽनऽ वऽरिऽवऽिऽदऽ उऽइऽ णे
 मऽहाऽनऽगीकऽ संगऽ-संगऽ आऽथाऽसँ वेऽसी णऽमीनो मुकऽदऽमेऽवऽानऽमे यऽथऽ गेऽथैऽनऽ मुऽदऽ।

व्रिषिसदेवकें से गहि भैषैग। असगत भैयागो नहने दियिदी व्रिषिद गहि उडैग।
गशिकाग्नकें देयति व्रिषिसदेव वण्ठा-

“आउ-आउ भयान!”

गशिकाग्न वण्ठा-

“भयान, की हाँ-याँ अछि?”

व्रिषिसदेव वण्ठा-

“हाँ-याँ की नहना! समये तेहेन दुनकाँ भऽ गेँ अछिजे सदपिन मगमे
अवैए- एहेन जगिगीसँ मने गीका की समय छँ आ अप्पन की भऽ गेँ से
बुहयि ने पेव नहँ छी!”

तैवीय सुपदेवकें आगूमे ङढ देयि व्रिषिसदेव मुँह घुमाकऽ वण्ठा-

“वौआ, एने गौंगसँ काण गहि यँनहा जेते अगएह तेते आनो नेने आवहा
तैवीय हम दुगू भयान गप-सप कऽ छी।”

पतिाक वाग सुनि सुपदेव मने-मन व्रियाँक जे अपना-ऐ जे नपने छी मागे
आया पतिा-ऐ अगने छँ आ आया अपना-ऐ जे नपने छँ, तावे सह आनिकऽ
दऽ दऽ छएन आ तावा पत्नीकें पागनि भौजैँ दऽ देवऽ वनि भौणँ पत्नीकें

पीसठासँ ओ १स थोडे औत जे मीजठमे अवेए सएह केठका

माँगक गोठा देपि व्रिठिसदेव सुपदेवकेँ कहएपनि-

“वौआ, अपने ने ओहनि माँग प्या उइ छी, मुदा जप्यन दएवजानापन मयान यठि एठा जप्यन ओहनि प्याएव उयति हएता कनेक दूयो आ यीनियौं नेने आवह। पाकठ केना तँ घनमे नहियँ हेतह। तइ ठे अनेने यौकपन कथीठे जेवह। यीनियँ-दूयसँ काज यठि एएह।”

पतिाक वात सुनि सुपदेव आँगनसँ दोसन ठेटामे दूय आ यीनीक उव्वा आनि माँग घोड़ठका दूगू ठेटा माँग, दूगू मयान मागे व्रिठिसोदेव आ नशिकान्ग पीव छेठेना माँग पीव ढकान कनेत व्रिठिसदेव वजठि-

“वौआ सुपदेव, दू कप याह नेने आवह।”

ओना, याहक नाओ सुनि नशिकान्ग कने तानाम्य कएए ठाठा मुदा बुहए नहवे कनेत जे वनि याह पीने थोड़ेक देनीसँ माँग अपन नंग अगैए मुदा याह पीने से नहि हिसए, ठाठे नंग आवा जाइए।

सुपदेवक हाथमे याहक कप देपि व्रिठिसदेव वजठि-

“वौआ, याह नप्यएकवेन आनो आँगन जा आ पागक सभ समय आनि ऐठम नप्य दहक, मऽ गोठह तोहन छुट्टी। पछाशत हम दूगू मयान गप-सप कनेत नहवा।”

पाणक सभ समाग सुप्यदेव आगिपतिाक आगूमे नय्य अपन माँगाक ओनयिागमे यथीगे। तैवीय दू-दू घोट याह दुगू गोगे पीव छैथै। माँगाक नंग कनी-कनी दुगूक मनमे मुड़यिानी दसि छ। नहै। पसँ दुगूक मन थोड़ैक खुलाम सेहे हुअ छ। छै। तेस न घोट याह पीव व्रिासदेव वण।

“मयान, की पुग-पमाग छ। आ अपन की नऽ गे। हेरए जे एहेन पणिगीसँ मनवे नीक!”

नशिकाग कयहनी। ओका माने कोट-कयहनीक आवा-पहिसँ पहिगि वणै-गुकैक ढंग वदै गे। छै। नहै। वोथी-वामिक शकिनी सेहे वनयिँ गे। छै। मुदा से व्रिासदेव नहै। कोट-कयहनीसँ कहियी मँट नहै। मँटो केग। हेरौग, ने कहियी एकोटा केसमे मुदई वनी गढ मे। आ ने मुद। वण। मुदा नशिकाग अपन मैयानीक व्रिासदेव कोट-कयहनी पान-अवे। पक्का प्े। वनी गे। माछ सुँसवैक दुमौआ। प। माकाक दुमौआ। प। नशिकाग वण।

“मयान, कहै गे। अछ। गे। ‘वंश वदै नँ वक्यो हुअ।’”

पनिासा कनै। व्रिासदेव वण।

“से की मयान?”

व्रिासदेवक पनिासा देय। नशिकाग वृह गे। जे प। सु। पहिगि

वेपानी सग अपन पूजा ठाा पहिने गहकिक मग भोहैए, भागे नमुगा देप्पा-देप्पा कऽ पटयिबैए, पहिने गशिकागत अपन समांग सवहक गनिदा कतैए वज्जा-
 “गयान, पहिने वेसी समांग वढेसासँ पनविानमे अगताही छौए, जेना हमना पनविानमे जागए तेना तँ गजावान अहाँकेँ गह कियैग। केतोक सुगहन पनविान अहाँक अछाि वेटा अइएएसु कऽ छैएग। आव की याही। ‘वढेही पुन पतिाक धर्मो’ अही सग-सग धनमात्माक पनविानमे ने नायानमास सग वेटाक जन्म होइए।”

ओगा, नायानमासपन व्रिासदेवक मग नीानसँ जानए छैएहे मुदा आगूमे याह-पागक आकृषाम अपना दसि प्यिय नेने छैएग। तावे तक दुगू गोने आयासँ वेसी याहे पीव नेने छै। जइसँ गाँगक उहकी, सेहे मगमे उहकए जाए छैएग। पनविानक व्रियान व्रिासदेवक मगसँ हटियाह दसि आवागिठ छैएग। वज्जा-

“गयान, अपना सग की याह पीवै छी, लोककेँ पीवैए देपै छए तँ मगकेँ वुहवै छी। एकवेन सासुन गेठ नही। मैहए साग मथेटनीमे नहैए ओ गाम आपए छै। ओ जे याह पीयोउक ओहन याह ने जीवने कहरियो पीने छै। आ ने नसिक कहरियो पीवा।”

व्रिासदेवक वाग सुनि गशिकागत वज्जा-

“गयान, डीके अहाँ कहै छी। ऐडाम, अपना सवहक गाम-धनमे जे याहपती अचैए ओ कोनो याहपती छी, पहिने धनमे प्यनी होइए पहिने याहक प्यनी छी। एकवेन असाम गेठ नही। ओइडाम वाचक-वाच याहक प्येती देपयए। अपना सव जाकाँ कौ ओकना सवहक वाच अछाि पहाड़ी रोकौ छै। वडका-वडका

पहाड़ो अछि आ प्येगो-पथान किअपना सभ जाकाँ यौनस अछि ओम्हए उपन-
गयियाँ, छे-ऊँय प्येग सभ छै, जाइमे याहक प्येगी होइए”

गशिकागतक वाग सुनि व्रिषिसदेव जाणिआसा कहैत वजाए-

“सुनै छी, ओम्हए-आसाम-मे अपना सभसँ वेसी वनप्यो होइए?”

व्रिषिसदेवक व्रियानमे गंग गजैत गशिकागत वजाए-

“से किकोगे योगापए वाग सुनगे छी। अपना सवहक के कहए जे दुगयियाँमे सभसँ
वेसी वनप्या ओइगम होइए।”

‘वनप्या’ सुनि व्रिषिसदेव वजाए- “तप्यगतँ अपना सभसँ गमहए-गमहए धानो-
धून हएत आ पगयिह श्रुसथे मागे पगगित जाजागे अपना सभसँ वेसी होइए
हएत?”

गशिकागत वजाए-

“वनहूमपुन धानक जे गाओ सुनै छए ओ आसामेमे ने अछि ओहि धानककामे
एकटा पहाड़ छै जाइ पहाड़पन कामरूप कामाप्याक मग्दनि अछि ओहि
इकाकामे ने देखक आग इकाक ओककें गदहा-हनि, गाए-माए वना प्येगमे
यनवैए।”

तैवीय दुगू गोने याह पीव पागो प्पा गेगे छै। गॉगक पुमानी दुगू गोनेकें यर्ढा
गेठ छेछैग। व्रिषिसदेव वण्ठा-

“केहेन यान अछा व्न्ह्मपुन्?”

गशिकागण वण्ठा-

“केहेन यान अछा व्न्ह्मपुन्! कहै-सुनै जोकन अछा मोटा-मोटी ग्रह वुहू जो
अपना सग जैगम नहै छै, एकना गंगा-व्न्ह्मपुन्क मैदान कहल जाइ छै।
ओहन मैदान जइमे गंगा सग पवति आ व्न्ह्माक सगनाग सग ठेक वसैए।
नप्यगे वुहू ठियौ जो केहेन यान अछा जोकना हमाठय पहाड़ कहै छैए, तेकन
उत्तन होश पहाड़सँ उगत अछा पहाड़क कागे-काग पूव मुहँ नविवा होश
वहै आगू जा द्युछनि मुहँ गेठ अछा व्रह यान व्न्ह्मपुन् छै। द्युवै तँ
ग्यौन-डेनौग वुहू पड़ना तेहेन गयंकन यान अछा!”

व्रिषिसदेव वण्ठा-

“छोड़ू यान-यूनक गपा जोए छै से अपन जागना ओम्हन पागो ठेक प्पाइए
आका एक गन्वन याहेटा पीवैए?”

गशिकागण वण्ठा-

“जोते पाग ओ सग प्पाइए तेते अपना ऐगामक ठेक थोड़ प्पाएना अपना ऐगाम तँ

ठोक गीत गवैकाठ पाग प्याइए आ वाँकी समय दाँत टुटे टुआने गहियेँ प्याइए
वाधक-वाध सुपानी गाछ देप्यवै ओम्हनेसँ अपना सग दसि सुपानी अवेए
जेकना असामी सुपानी कहै छए।”

गशिकागतक वाग सुगैत-सुगैत व्रधिसदेवक मन दुमकिऽ पनविानपन यथा
एथैना पनविानपन अवाति वज्ज-

“गयान, अहाँ कह्यौ जे हमन समांग, सग वक्प्योओसँ वदन्तन अछतिइसँ
की गीक हमन वेटा-नायानमास-अछति”

व्रधिसदेवक वाग सुगै गशिकागत सोयथैग जे असूसठ वाग आव उऽठा गँए
कछि आनो अपन पनविानक गनिदा कए गे कनी जइसँ व्रधिसदेव अपन कनवे
कना। जप्यन अपन पनविानक गनिदा केगइ सुनू कनव जप्यन ओइ वीयमे टँढ़-
सोहू कनैग यथव जइसँ गोटी गीक जकाँ वैसना। गशिकागत वज्ज-

“से की गयान?”

एक गँ व्रधिसदेवक मन नायानमासपन जगथे छेथैग तैपन गौजक गशिया सेहे
गीक जकाँ यढ़ गेथैग वमछैग वज्ज-

“गयान, वेटा-वेटी केतवो पढ़-ठपिठिअिए मुदा जँ ओ माता-पतिाक व्रधियानमे
गहनिहठ जप्यन ओकन पढ़वक कोग मोठ रहठ।”

व्रधिसदेवक व्रधियानमे वीह श्वाउँग गशिकागत वज्ज-

“भयान, गहि वुह्ठै अहाँक व्रियाना वेटा-वेटीकें भाए-वापक व्रियानमे नहव, कोनो कनिव व्रियान छी। सग दनिअँ होश आवा नहए अछि आ आगूओ सग दनि होश नहए। आसूत-पुनास किकोरो हूँ कहने अछि।”

गशिकागतक व्रियानअँ व्रिसदेवक मन जोगा आनो कहुआ गेथैग नहनि वजए-

“भयान, की कहव! नायामस ओही दनि यतिअँ उँ गेथ जइ दनि अपना भगे व्रिवाह कइ छेएक। अही कहूँ जे जौगम वीस आय नूपैयाक कानोवाए छए, भागे वीस आय नूपैया दहेजमे दइ नहए छए। ओ पनविअँकें घाटा उँगौक किक गहि मैयानिमे ओकक गेग माइये देयनि घटै छै।”

ओग, गशिकागतकें वुह्ठ छेथैग जे व्रिसदेव आ नायामसक वीय वैयातिके मतभेद छैग, मुदा नइ सगअँ अगवुह वनि गशिकागत जोटी याथैग वजए-

“नीक जकाँ गहि वुह्ठै भयान?”

व्रिसदेव वजए-

“नायामस जयग आईएसक पनीषा पासो गे केगे छए, नइअँ पहिउके वाग छी। ओकन व्रिवाह कनैक व्रियान गेथ वुह्ठे अछि जे तीनू माँइक मैयानिमे ओ सगअँ जेठ अछि अपना जीवैग जँ तीनू वेटाक व्रिवाह-दाग नइ कइ छेव, आ अपने कोनो नाजा-द्वैव नइ जेथ जयग तँ अनेगे गे मुइषा पछानियी एकटा कठक कमानपन यढे नहए जे सुथैअँ अपना ययिआ-पुनाक विसाहे-दाग गे कना सकथ।

अनके मनोसे जनमोने अछा”

सह दैग नशिकागत वजरा-

“इ की कोनो अहिटा-क संग होइग। सगके एहेन कठक ठगारि छै। समाजक मुँहकेँ कयि नोकरि दैग।”

नशिकागतक वाग सुनि व्रिधिसदेवकेँ वृद्धि पड़ैत जे गयान अपन व्रियानागुकूठ व्रियान दऽ रहै छैथ। तँए आनो सभ वागकेँ कएि ने वकिछा-वकिछा व्रियान दऽ छै। व्रिधिसदेव वजरा-

“गयान, की कहव! वेटाक कनिदागीसँ समाज हमनापन हँसनि रहै अछा मुदा अकठहूथ वेटा-छे वैगसग!”

व्रिधिसदेव अखक गहिन पग्ना ताका पहिगि यौनीमे (मागे गहिनगत प्येगमे, जइमे पागि वसैग होइ आ ओइमे अगेनूआ केशीन श्रुतैग होइ, गछे ओकरा उपनका प्योइया देप्येमे कानी ठगौग हुअए मुदा ठगैग सेहो होइए) केशीन उप्पाड़ि प्योइग पहिगि नशिकागत अपन पग्ना उप्पाड़ि वपोक मग वगौठैग मुदा पहिकाठ सुगपग याह बेगे व्रिधिसदेव जे अवे छेछी की हनिमीक आँप्या जकाँ नशिकागतक आँप्या यमैक उठैग। सुगपगाकेँ देप्यि नशिकागत वजरा-

“गयान, घनवाछी देठैग तँ गगवाग हमना देठैग। पहिगि सुबै छएि ने जे जग्गन समुद्ग मथग गेठ, जइमे वधि-अमृग दुगू गकिठठ। पनोसगहिन वानीक केहेग

जे कमिहो ओपक-ओप अमन पनैस देठक आ जप्यन सर्गिजे नप्यन ओपक-ओप वधि पनसठक सहए मेथेन हमनो घनवाठीके वनवैकाठ वधियागके। गामेशजी जकां जप्यन नमहन पेट आ नमहन माथ देठपनि नप्यन ओही आकानक ने आँप्ययो दगिथनि, तेहने घनवाठी हमनो कपानमे ठपि देठैना”

ओगा, वधिसदेव गोंगक नशिशमे उचयिा ठाठ छथा तँए नशिकागतक वाग नीक ठौ छेथेन मुदा सुनयनगक मन कडुआ उठैना कडुआ ई उठैन जे ऐगम हम दुगू पनागी मागे पति-पत्नी छी मुदा नशिकागत तँ से नहि अछा। सृष्टिके जे नयना-पनक्या अछा एहेन वाग वपैक की पनयोपना वढयिां वाग जे दुगूके दोस्री छै, अपना जगहपन छै, केना ययिा-पुनामे ठोकक आम-ठगाम योना कऽ गोडे छथा, नइसँ हमना कोन मतववा मतवक वाग तँ ई अछा जे वुढहाके वेटापन नामस-पीडा यढठ छै, तेकना समनस कतैत दुगूक वीय समभाव पैदा कतैक ने छै। सुनयनग वनिा कछि वजने, दुगू कप याह नप्यियोटे आँगन दसि घुमगिथी।

सुनयनग आँगन पहुँचथे ने छेथी कसिप्यदेव आएथ। सुप्यदेवकेँ देपति वधिसदेव वजथ-

“नयान, गालिक-गाली वेटा नगवान मथै नहि दैथ मुदा जँ एकोटा वेटा सूनवाम कुमान सन नऽ जाए तँ वुही जे दस हजान वेटावथा नाजा समनसँ नीका वेटा-वेटीक जन्म माए-वाप दइए मुदा माता-पतिाक मन्थुक नान तँ वेटे-वेटीक सनि पन नहैए एक सीमानपन हमना प्युट्टा गाड़ि देठेना हम तँ ओतवे दगिक ने जवावदेह मेथिए, जावे आँपतिकेँ छी। से जँ वाँहि पुनैवथ वेटा नऽ जाए तँ वरह ने नको-सूनवगक दुआगीठा गक पहुँचा सकैए ई नहनि जे मुहमे उकसँ आगिठगा अनिा गोड़ि छेक दसिए नइसँ ओ सनदयाक पातन मेथ।”

अपन सुनगैत शानांजक गोटी देया गशिकागन वज्ज- “जयान, कोनो हम सुसविपौ छी सेहे वाग नहि अछि। दुनयिं जगैए जे जहनि अहँक पतिाकेँ पयास वोधा जमीन छेएन नहनि। हमनो पतिाकेँ नहैना। दुनू गोनेकेँ गामक माथकि ठेक वुहै छेएन, वेन-कुवेन, दू-सेन आ दू-टाकासँ गढो होइ छेएन। मुदा देयाति छी जे तेहेन कानांजक भए सन भेए जे अपन तीन वीधापन आवा अँटकए छी। मुदा पतिाक अमठानी-समैयक पानदानी मठकिना दोसती तँ दुनू गोनेक वीथ अछि।”

गशिकागनक वयिाकेँ वरिासदेव अपन वयिानमे पुनवैत वज्ज-

“जयान, नायानमस गामसँ अपन पनव्रान ७५ कऽ दुनयिं गकिएत तँ गकिएत। गामक समुपैत तँ हमन भेए जावे हम जीवै छी तावे तक जहनि माए-वापक जनिगीमे सुप्य भोगौ तेहेने सुप्य ने वेटो-वेटी नहनि। पुनवए, सएह ने याहिये गँठे बै कमाइ-पटाइए तँ की हेतइ माए-वापक सेवा तँ करैए। अपन जे जमीन हम वेयव, तइमे एक हिससा भागे नहिइ जमीन तँ नायानमसेक जेतइ तइ ठे ऐ दुनू भौइ-सुप्यदेव आ वामदेव-क की वगिइत।” मुँह यटपटवैत वरिासदेव आगू वज्ज-

“जयान, आइ जे सुप्यदेव भौंज पीयौएक एहेन तँ सवदनि पयिावए तप्यन ने।”

तैवीय सुप्यदेव वाज्ज-

“यायाजी, मठकिना दोसती की कहएए?”

अपन याअक याअवाणी पकैऽ यअक जकाँ यअकीक डागपिन सँ गशिकागण
सुप्यदेव दसि नकैण वजअ-

“वौआ, जहगिा तूँ गयानक वेटा छुहुग नहगिा हमनो गयान-गानाणि ने मेअह
वेटा-गानाजमे कोनो अगण होइए जहगिा अक अपन वेटाकेँ वुद्यपिनक व्रयान
दैण वुद्ययान वगवए याहए नहगिा ने हमहूँ याहवा नहूमे तँ जे आइ गॉग पयिओह
से तेहेन पयिओह जे मन शत्रिणी-महदेवक दनवानक दनवानीक रूप पकऽ देने
अछि, तैगम हमना अपनो तँ अपनत्वक गान माथपन आवयिे जेअ कनि?”

गशिकागणक अठंकारी ग्राधाक अन्थ सुप्यदेव गहि वुहा पौअक मुदा शव्दक
गुक-नकयिा सुगिताक-नकैण नकगहान तँ गश्ये जेअ वाजअ-

“यायाणी, जहगिा अंगदकेँ-माने नामाधनकि वाअकि वेटा-केँ, सुग्रीव सग
याया मेअअन जइसँ नामक दन्शनक संग सुग्रीवक साम्नाज्य स्वीकारा
अेअन नइसँ अहाँ गनिग हमना वुहै छी। नहूमे ज्ञान-रूप यानमे गहनक वेना
ओना, अकक वीय ईहे यअन अछिजे कुघाट-सँ-कुघाटक केहनो कुघटयिा कएि
ने हुअए मुदा मुँहक ज्ञान तँ दैवी ज्ञान छीहे कनि तँए ओकना गनहम कनैमे
नाहु-केरुक कोनो दोष गहिा”

ओना, सुप्यदेवक व्रयान सुगिा गशिकागण पुशयिाएअ मुसकी मानी-मानी नये-
नन मुसुक मुसकी मातै छअ। जेकना सुकदेव अपन व्रयानक वडहपन वुहा
नहअ छअ, मुदा गशिकागण मने-मन गनिगाक छनिगा सेहे दैयिा नहअ छअ।
वजअ-

“वाउ सुकदेव, मठकिना दोस्ती भेठ, जोगा हमना-तोना पनविनाक वीय अछा”

गशिकाग्न अपन ओ वंशी पाथए याही नहए छथे जइ वंशीमे दुनू दिसा घाव वनए रहैत। याहे उगटा ठागे आकासिगटा ठागे, नाकपुगटा कनव असाग हएत। पुगटा भेठ पुस्यपूनासा।

तैवीय सुप्यदेव वाजए-

“यायाजी, नइसँ की गनिग हमना वुहँ नहए छी। हम तँ जहनिा पतिाकँ वुहँ छपिग नहनिा अहँकँ गे वुहँ छी।”

सुप्यदेवक व्रियाग सुगि गशिकाग्न मगे-मग यपयपेठा। यपयपेठा इ जे जहनिा गानी व्रजगवठा गंगा (गंगा) कँ पानिजकाँ आगपिन पघथि कौडीक (समुद्गी कौडी, नइसँ पयोसायि प्येठ आ नांग्रिकि सग सेहे यतिनी-कौडी गाँजिसाँपकँ पकड़ैए आ वाठ-वोध प्येठवो कयैए) मुहमे देठापन उँढाश्ते गनयिा जाइए नहनिा गनयिाश्न गशिकाग्न वाजए ठाठा-

“वाउ!”

नहिकाठ वामदेव सेहे पहुँचथे वामदेवकँ देप्यागि गशिकाग्न वाउए ‘वाउए’पन अपन व्रियागकँ मगमे मोड़ि अँटका छैथेन। मग मागि गेठ छैथेन जे एक नीनसँ दू शक्तिा कएि गे पकड़वा गाय महामानक उँढाश्ते धनुषसँ पहनि एकतीन गकिथे छथ आ जोगा-जोगा आगू वढैत जाइए छथ तेना-तेना संप्र्यामे व्रुद्व्यहिेश-

होश एस-एस हजान मऽ जार छै, तैगम अपने मँ अन्तुन कऱ
 मीधूमपतिमह नर छै, मुदा एकटा मनुष्य तँ छीहै नप्यन दुस्रोटा शक्ति नर
 पकैऽ सकवा मँ कऱूमा नोग महामागीए कएि ने छी मुदा व्वाकऱामक तँ
 गामेशजी जकाँ कऱूमाक जागका न अछएि, तँए एकठैगकि वनविमिनीकेँ अथा-
 अथी तँ अपने कऽ नेने अछा तैगम जँ अवेक पाछू सौसे दुनियाँ-वेहाँ छी तेकन
 हाँ की अछा, सेहे ने सन सुनना मुसकी दैग नशिकागत वज्जा-

“वौआ, कमठपुन गाममे अपने दुनू गोजेक पन्वित सनसँ धनकिओ आ सनसँ
 श्रुजानदानो पतिाक अमठदानीमे नहँ ओहि वनावनीक दोसूती दुनू पन्वितमे
 अछा जहनि तोहन वावा आ हमन वावू एकगम वैस प्येवो-पीवो कऱैथ आ सन
 नहक काज-उदममे हमनो पन्वितक सन अवे छैआ आ हमनो ऐगम जार
 छैआ, पनह-पनह दनि नहै छैआ मुदा आर तँ ओ पुग नहिनहँ, नवका-
 नवका ठेको भेँ आ ठेकक संग सम्पैतियी भेँ आ तैसंग नव-नव व्रियानो तँ
 भेवे कएँ अछा जहनि तोहन पतिाकेँ माने मयानकेँ अपने पन्वितक
 श्रुजिसानीसँ पठपैत नहिनहँ छैआ हमनो मऽये जेँ अछा तँए कनी
 आवा-जाहि कऱी जेँ अछा”

नशिकागतक व्रियानमे व्रिसदेव अप्पन वऽहपन देपि नहँ छैआ, तँए
 सुननू वेटा आ वज्जा वनविज्जा-

“मयान, की कहूँ वनि कभेने-प्येने जेहेन पतिाक वेटा होश नरमे छदामो
 मनी कभे दुनू वेटामे सुप्येव आ वामदेव नहिन अछा ओना, मगमे कोनो एहेन
 मनामवैवँ मनामक वास मऽ जेँ होश, से तँ हनुमान जकाँ कऱियी छानी श्रुजा
 नहियेँ देपए देत, से तँ सम्भवो नहियेँ अछा मयान, छानी तँ छानी छी, कप्यनो
 अपन छानी वन छानवास वन वास कऱैए तँ कप्यनो छानीमे मुक्का मानी

वेदो-मन्त्र्युक्त संतोष सेहे कनो अर्था मुदा कछि अर्था गैयो तँ दुगू वेदा तँ हमने ने कहैना।”

श्रीग, ऋषिसदेव अपन जगिगीक गापसँ वाजठ छथ, कए तँ एकटा कयहयिा संगीक प्रियाग मगमे जेना वैस गेठ छैन नहनिा वेन-वेन वजै छैथ जे कोट-कयहनीक ज्येठ नहनिा जगिगी मनीएके अवदमे अटकौने नहैए नहनिा ने पनविानोमे हेइए दस-वीस वन्यक जगिगी तँ ओक टटिहीक टाँहियीसँ गनिाहि सकैए जेहेन जे कनैए से तेहेन पवैए से किकोना हमनेटा वुहठ अर्था आर्का सगकँ वुहठ छै। आव कियौ अकूठवहन वनए आर्का अकूठथूका से तँ ओकन ने काज भेए।

ऋषिसदेवक वाग सुनिा गशिकागनक मग ननसा जकाँ धीने-धीने ननसए ठाठैग, मुदा दुगू गॉइक अगवागी देया गशिकागन अपन ननसकँ ननसेमे समेट मगकँ मनी युपयाप, अजना वौगुठा जकाँ अकठहाक पाछू दौड़ैए नहैए नहनिा गशिकागन सेहे अपने जगिगीक समनूप अपन गयानोकँ वगवए यार्हा नहठ छथ। कए तँ नहनिा अपने गशिकागन तीगू गॉइक गैयानोमे गामक पनयैतीसँ अ ७५ कोट-कयहनीक मन्दन कनैए पयास वीघाक अँट सगनह वीघा हेइए तैगम वननवाँटमे पड़तिग-तीग वीघापन तीगू गॉइ गढ छैथ। गाय, धनेक अमकी ने धनीकक धनकँ ढहैए तँए कनिानो-मनजादा नइ ठाजठ ढरि जाइए? से तँ नइ ढहैए, श्री तँ जुआनी मन्त्रक सूत्र छी जे जेहेन पकड़ैए से तेहेन पवैए।

गशिकागन वजठ-

“गयान, वापक हम वड़ दुठानू वेदा छेएएिना ढेनवा नक माने जयग दुनागमन

मऽ गे७ नहिया नक, जहनिगि माऽयो नहनिगि पतिगिगी सगदनि वकषे७-ढहसे७ कहै नहए आ तैसंग कछि-कछि सपिेवतो छेए। मुदा आऽ जँ अपन पाग-साग वन्यक कोयोगिक वेटा-पोताकेँ कछि अढेवो कनवै आकिसपिेवो कनवै से अहाँक वोछे-वाऽन वुहण नपन गे। ओऽ अवोधक कोन दोप्य अछि। दोप्य अछि ओकन माए-वापक ने जे वय्याक जनिगीक हसिावसँ अपन जनिगीक नसता गहिवना सकैए।”

जहनिगि अथवैक व्रिषिसदेव नहनिगि दुनू वेटा, तैगम नसिकागन सग उपदेशक। जे अपने पनविानकेँ ढहि अपन पैतृकि सम्पैत-पेता-पथान-केँ पयहानैत पननसिन दान जकाँ गमा युक्त छैथ, जीवगमे ऐसँ वेसी मऽये की सकैए। पयोसो पननसिन तँ अपनो जीवग-छे ओककेँ याहवे कनी। नसिकागनक मनमे ईहे उँठ नहैण जे नसिगेनो नानि, मागे अगहनक घगघोनो समयमे तँ सुकूँ पक्षक श्पोनियिक याग जकाँ ओहगो समयमे ने यागदनी नानि वना यागपिन यमैक अपन पनयिप दैतो अछि। तेनवे कएि, घगघोन अगहनमे सेहे ज्ञानयक्षुसँ पनकाशपूँज पनकाशमाग हेऽतो अछि।

अपन टुटेन जनिगी आ जनिगीक व्रियानयाना ग्नाहकक ग्नास वगयिँ गे७ छैण, मुदा जहनिगि साँपक मुँहमे पऽ७ वेग, जेकन आयासँ वेसी माग कएि ने म्ान्युक अगतक सीमा पान कऽ देगे हेऽ, मुदा जँ मुँह उद्यान नहण मागे साँपक मुँहसँ वाहन नहण, नहूका७ जँ कोनो श्रुगिाकेँ उँठन दैपन तँ ७पकवे कनन। एहगे अवस्थामे पऽ७ व्रिषिसदेवक जनिगी वगि गे७ छैण। जनिगी सोएहगि नोगगनसत मऽ गे७ छैण। शानिकि नोग जे हेगि मुदा मानसकि नोगसँ मनवासग मऽ गे७ छैथ। मुदा तैयो। मौपकि पनीक्षा जकाँ नसिकागन वज्ज-“वैआ, मोनका पाग जकाँ मुँहक पाग नसवहिन मऽ सडियि गे७ अछि तँए पहिण एक गठिस पागि पीयावह, पछाशा पागो पुअवहिन मऽ तँ एक मॉऽ

गणिस-ठोतामे पागि आगह, णइसँ गयानो पीव ठेगा आ एक गॉइ पाग उगावहा पागक सग समाग ठागे छहे।”

णहिंगा दुगियाँमे कयिो पहिंगे अपन ण्मान दाग वेटाकेँ कए यहैए णहिंगा ने अगका अढवैसँ मागे काण अढवैसँ पहिंगे वेटाकेँ अपन वुह्नि अढवैवगो अछा। ओगा, दुगू वेटाक-सुपदेवो आ वामदेवो-क मग दुगू गयानक वाग-वयिाग सुगि दहवा-गँसयिा नहठ छेथैहे। तैवीय सुपदेव ओम्हए पागि आगए आँगन गेठ आ इम्हए वगिसदेव शुसशुसा कऽ वण्ठा-

“गयान, ऐ अवनूड वेटाकेँ मागे वामदेवकेँ, सदकिाठ सपिवै छए जे वौआ माए-वापक उद्याग जोडके वेटासँ हेइ छै आकि छोटके वेटासँ। गायानमासक जे हाठ अछासै देपवे कए छहक, णपग गँ तोहि ने वँयठहा वीयक जँ गणा सगण णकाँ दसो हणान वेटा नहए तेकए कोनो मागि अछा। एते णक कणिणगिगी गनि वाप-माइक देहपए थूको शुकए तेकनो मागि गहयिँ अछा।”

पणिक वाग सुगि वामदेवक गणैए उडठ। जे गशिकागण पनेप्यिँ छैथेग अपन गणैएमे गशिकागण गणनपग गणैए, मागे गणैएकि पागि गणैए वण्ठा-

“गयान, सासुनमे जे मोहनमाठा देगे अछा, तेकए णागकानी समाजो आ पनव्रिनोकेँ अप्पगे दऽ दियौ जे वामदेवे मुँहमे आगयिो देए आ श्नाह्यो-कल्मक गान ओकने दइ छए। गँए अपगवठ मोहनमाठा वामदेवक गेठ।”

पागि पीव पाग प्या दुगू गयान-वगिसदेव आ गशिकागण-पुनः पनव्रिनक गप-सपुप सुनू केथेग। अप्पगका एस्टापठ गह, वगिणहक टाइठ माणैए गशिकागण

वज्रा-

“श्याम, गाममे अहाँ-जोकन कएटा वाप भेठ अछि जे अपन वेटाकेँ आरिपएस वगैठक!”

अपना जगत नशिकागत टाँस माता वाज्रा छथा मुदा तीनू वापन-व्रिषासदेवक संग आ दुनू माँर सुपदेव आ वामदेव-क मनमे नायानमसक पुता जे यानस यऽ नेने छथ, ओ आनो यनाह वगैठेठ जइसँ व्रिषीन गावक जन्म तीनूक मनमे जगैठेठ अप्पन तक नशिकागत अपन पत्रिाक तीनू समंगक जगिगीक कथा तेना नती-वती सुना युक्त छथा जइसँ नामाप्रसक्ति नाम-उक्ष्मसक यैयानीक सम्वन्ध गही वगैठ सकथ, वगवो केना कतै एक नाम पतिाक दंस देठगहिन, दोस दहेजक दंस देठगहिन भेठ। तैयन सीतानाम केना नायानमस वगैठकेए नायानमस-ठे तँ कछि आनायए पडै छै कनि।

व्रियिक द्वर्गद्व तीनू वापनक मनकेँ तेना ने दुःखिया-पुःखिया नहथ छथ जे तीनूक वकमे हाम गऽ जेठ छथा पगवाए नाम जहनि यडि-युगभुगीक संग गाछे-वगैठकेँ सीताक पत्रिय पुछए ठाठ नहैथा जे ‘हे प्पा, हे म्गा मयुकन श्नेसी, तुम देपे सीता म्गागयनी?’ नहनि शान्त वानावनाम देपि नशिकागत दोस टाँस माता वज्रा-

“श्याम, आव अहाँक गाय जगैठेठ ‘वढ़ही पुता पतिाक यन्मे’ अहाँक सोठेअना यनम नायानमसमे यठेठेठ जइसँ ओकन गाग उान गऽ जगैठेठ आ दुनू माँर-सुपदेव-वामदेव-क गाय सेहे ओकमे मे मागे नायानमसमेमे यठेठेठ, सुठसुठ दुनू माँर वनि पानियदठ ठेहा जकाँ कहियौ आकाकुमहाक

आवाक अच-पक्कू वृत्तन जाकाँ कहियौ, कँयकुहक कँयकुहे नहि गेला”

‘कँयकुह’ सुनी वामदेव वॉहिकि शूट समटैग वाजल-

“ग्याग काका, अहाँ दुनू ग्याग जाँ पीडपन गढ नहव माने पीडपोहू वगथ नहव
तँ एक गैयानीकेँ के कहए जे सगलनहटा गैयानीकेँ सीप्या सकै छी।”

ओगा, गशिकागल मने-मन वुहैग जे टिनक गनमी केतोकाठा कम-सँ-कम
पहनि गानसो कनैजोग वननन वगह नप्यन अपनकेँ प्यान-द्वय कहाएवा छी
कागल जाकाँ आ अपनकेँ गमै छी जे सोन-यागी जाकाँ हमहूँ सवनास द्वयप्रे छी।
मुदा गशिकागलक अकास यढथ मन एकाएक वननीपन आनैग अतैग मने
एतैग जे केकनो कहबे टिन द्वय गह गऽ सकैए सेहे तँ गहयिँ अछा समूह
नूपमे टिनमे गानस होशे अछा कनी ओकना आगपिन यढा, नप्यन ओ
आगपि जाकाँ ठाठ गऽ जाए नप्यन हाथक आंगुनसँ छुवाकऽ देप्ययिँ जे आग
द्वय, गँ ओ सोने कए ने होइ, ओइसँ कम सकना टिनमे छै उपदेसक
जाकाँ गशिकागल सुपदेवो आ वामदेवोक उपदेसी वग ग्यागकेँ कहैग-

“ग्याग, दुगियाँ जे वुहह, मुदा अपनो तँ श्मान-वन अछाए, याहे अपन वेटा-
वेटी हुअ आका दुगियाँक, मुदा अपन जे मानवीय कनव्य अछा, तेकनो जाँ
उग कानमे छेक देव, सेहे तँ नीक गहयिँ गेला”

अपन गानक गानपन वठिसदेवकेँ सेहे वुहा पडैग जइसँ मने एकटा
सवनास-नूपा वयिन अनायास जागी गेथैग वजल-

“भयान, गामेशजी सग गुनू आ अष्टावकू सग ज्ञानगी कयिँ कएि ने हेथी मुदा वेद व्रह्मिण व्रियान जे ‘पतिा पहिठि गुनू छैथ’ तेकना कयिँ हुईयिा देत?”

गह्वापन दह्वा शुकैत गशिकागत वज्ज- “भयान, नासक गेम-गेम ज्येठमे गँ गह्वापन दह्वा शुक दह्वा दीयौ मुदा ‘टुवेग्टी एट’मे गह्वा दह्वाकँ गमवैए प्याएन समय पेव अह्मिा टटिही अकासमे टटियिाएए नइसँ ठोककँ कोग माठवा माठव तँ एावे ने अर्था जे अपन पत्रिाविक गमहन शहिस अर्था, जहियिसँ मगुय घन वगा पत्रिाविक संग नहए ठाठा जहियाक पत्रिाव छी।”

गशिकागतक व्रियानमे व्रिासदेवकँ शहिसक कोग पग्ना भेट जेठेन से तँ व्रिासदेवे वृह्मना, मुदा मगक यपयपीमे यपयपाश मुस्की दैत वज्ज-

“भयान, सग दहि द्हुनू गँइकँ कहै छएि जे ‘वौआ, हजानो यन्मसूथाग आर्का हजानो सनोव्रनक घाट पन कएि ने गहाएइ होइ, मुदा वेटा-वेटी छेइ माए-वापक सेवा सगसँ पैघ यन्मक काज छी। पतिाजी जप्पन जीवै छेइ, गन दहिमे तीगवेन मद्दुपाग सेहो कतै छेइ। समयसँ पहिनि मुस्नाशज गऽहुगका मद्दुपाग कतवैत नहएिना ओ त्रिकिउदन्शी छेइ। जप्पन मग उदान गऽ जाइ छेइत जप्पन कहै छेइ- ‘वौआ व्रिास, जहनिा तँ सेवा कतै छह जहनिा तोनो पयास वीधा जमीन अतैज देगे छइआ मतैवेन मडुओ गन भिगमे सोग-पीडा ने अपने नहन आ ने तोहन नहना। तँ कयिँ कहगहिन कहत जे अहाँक पत्रिाव देसक गान वगठ अर्था से ओकने कहबे गऽ जोगश जहनिा अपन देस छी जहनिा ने अपन दहि-द्हुनियिँ अर्था, जइ पाछू ठागा अपन जीवग यानस केने छी।”

द्हुनू गऽ-सुपदेवो आ वामदेवो-क मग तेहेन मथि-भाठनिकि मथागीमे मथा जेठ जे जहनिा द्हुनियिँक हजानो वाटमे हजानो सुप-द्हुप गतैत अपन छन्तन पकैऽ

उरए नहिंगा छत्तान पकडैत सुप्पदेव वाणए-

“गयान याया, अहाँक सोहामे कहै छी जे नहिंगा सग अणन माए-वापक मागे माना-पतिाक सेवा दुनयिंमे कऽ नहए अछा तऽसँ की हम कम छी। नहिंगा दुनयिंमे देखै छी नहिंगा कऽ छी, तऽ छे जँ पतिाजी मगे-मग तकथिअ सहना से कए सहना। हुनको ने वुहए पडतैत जे नयन आव मोवाइसँ पढ़ौगी सेहे सुनू नऽ गेअ अछा, नयन सूकूअ जेते पुणए तेकनो हिसाव नऽ होऽ सेहे केहेन हएना।”

ओना, याक यानामे नहिंगा पतिा-पुतिाक सङ्ग-जमए जमौऽ पाव कए ने मथिअ होऽ मुदा याक पुनवाहमे ओकनोमे एहेन गतिक संयान तँ मऽये जाऽ छै जऽसँ ओकनोमे सुदयना आवयि जाऽ छै। अही अणुकूअ सुप्पदेव वाणए कए तँ जीवणक एक पनसिथिति ओहेन अछा जे अभावक जगिगीमे ठेक गही पढा पवैए। मुदा जे पनविान आर्थिक दृष्टिँ सम्पन्न अछा, जाऽ पनविानमे आइएएस नऽ सकैए, तैगम सहेदने दोसन-तेसन माए सुनयोन केना वगैरे अछा जे सुप्पदेव अपनो ने वुहैए। नहिंगा जऽहए ठाठापन वा अकासमे सुनयन-यान-नाना वा पावक वादएक घटना देख, देखनहिन उपने-घाडे ने देखैत नही जाऽए। ओ थोडे वुहैए जे सुनयन केना कतयिाएअ देखि पडैए आ कऽ आगे जऽह-नक्षत्र कए कतयिाएअ ओ तँ वऽह देखि सकैए जेकना हृदयमे ज्योतिषिक ज्योतिपुनजवति होऽन। कहैकाथ तँ सगकँ सग कहै छए ‘सुनवस कुमान जे माए-वापक सेवा केथेन ओ शहिस-पुनासक अद्वितीय घटना छी।’ मुदा सुनवस कुमानक जीवणयाना आ माना-पतिाक जीवणयाना की छेथेन, केहेन छेथेन आ केते पुनवाहति छेथेन सेहे ने सवहक समक्षक पुनसुन भेअ प्याए जे भेअ ओ जनेना जुगक घटनामे यथै गेअ। आव कऽ गुनुद्वानमे वौगुअ जाकाँ यथिाव कऽैक वेवहान नहए, आव तँ मोवाइसँ जऽगक संयानस हुअ

७) अर्था

गशिकाग्न मने-मन व्रिषिसदेवोक् आ द्रुणु गौंर-सुप्यदेवो आ वामदेवो-क गव्ण
गीक जाकाँ पकैऽ गेगे छथा। हूँ केगा सय वगैए आ सय केगा हूँ वगैए, अहि
सीमापन अपगाकेँ ङढ कतैग गशिकाग्न वण्ठा-

“गयान, ई देहे व्वायकि घन छी।”

वपैक कनममे गशिकाग्न व्रैयानकि व्रिषिय तँ नप्यद्वैषेण, मुदा अपन मसिपिो
गना टिपिपमी गहि देषेण जे अहि व्वायसिं ने मनुष्य व्वायाक नूप पकैऽ
व्वायसिं गविा गऽ सकैए। आकि जगिगी वगैगे छी याहक दोकानदानक आ
अकासमे उडैग इणन केगा ठसैक गेथ? दगि-गागिणँ से यगिना कनग नप्यन
ओ ई केगा वुहण जे समाजमे मागे गाममे, पयास नूपैआ आमदगीक पनविान
अपन गेथ तँए हमना द्रुणु दसि देप्यए पडना। एक दसि आमदगीक वढोगी केगा
हए तँ दोसन दसि अपन पनविानकेँ अपना आमदगीपन असथनि कतैक सेहे
अर्था जँ से गहिहए तँ पनविान पाओठ जाए कगि।

गप-सपकेँ अग्नमि सीमा दसि वढवैग गशिकाग्न वण्ठा-

“गयान, हम जहनिा अपना वेटा-वेटीकेँ वुहै छी गहनिा अहूँक थपिा-पुताकेँ वुहै
छी। गेँ द्रुणु गौंर-सुप्यदेवो आ वामदेवो-मागए वा गहि मागए, मुदा अपनो तँ
कछि कनवृषकेँ गमिहैग वण्ठा। आव अवेन गऽ गेथ पना ७) जे गायानमस
जा गहठ अर्था, कहुना गेथ तँ वेटे-गागिण ने गेथ, घनसँ जप्यन गकैठ द्रुगियाँ
दसि वढन तँ कन-सँ-कन एगवो असीनवाए देव जानुगी अर्था कगि जे

कहीरिए, वौआ गाम-घनक यगिना मसिथी मनिगहिकरहिह हन सभ अपन वुहूँ छैवा”

नाथानमासक पुननि गशिकागनक पुनकिप्रियाक आकएग तीनू वापूग व्रिषिसदेव एक-दोसन दिसि देप्य-देप्य कनए उगए। मयप्रम व्रगक पनविनक मनुष्यकेँ सामाजिक-आर्थिक दुनू दृष्टिएँ तेग वैयानकि ढँयामे ढाएग गेए जे ओ श्रमहीनक संग भोगी-व्रिषिसी सेहे वगिगेए। जइसँ पनविनक ढँयामे व्रयवचाग उपस्थिति भेए आ धीने-धीने मनुष्यक कमानपन पहुँच गेए।

एक तँ कयहियाि ओक गशिकागन, तहूमे गामक सभ जगैग जे गशिकागन सभ इन्पादान दोसन गाममे कयिो ने छैथ, अपन यौदह वीघा प्येग वेयि कोटे-कयहनीक ज्ञान हांसठि केने छैथ, तैसंग एहेन सेहे छैथ जे सहेदने भाइक संग सभ कछि केँएग।

सामंजस करैग गशिकागन वजए- “गयान, एकटा नाजा एकटा जोगीकेँ अपन दुनू वेटाक सेवा करैक गान देँएग। जोगीकेँ व्रियिजेमे थोप्या भेँएग, एकटाकेँ अपने जकाँ जोगी वनौँएग, जे अपना घनमे रहना दोसनकेँ नाजसी जीवगसँ मासुडति केँएग। जप्यन दुनू जुआन भेए जप्यन जोगी दुनूकेँ नाजाक सामने उपस्थिति केँएग। ह्यैस कऽ नाजा-जोगीकेँ अपन हिससामे उऽ छेँएग। अपसोय करैग जोगी घन घुमए।”

अपन मंगल्ये दितिनाठिसनाउऽवदिहवाभाठियोग पन पडाउ।

इरगदीश पुनसाद माम्डु- शॉर्ट कट नासगा (उद्युक्था)



गदीश पुनसाद माम्डु

शॉर्टकट नासगा

आर छत्र माससँ सुत्रियाग गाय मगसोगसँ पीडति गऽ गने-गन गुमसङ्गि नहए छैथ, मुदा मुँह उठा केकनो एग कछि वाजि गहि नहए अछि। वजवो केना कना? सोगो तँ सोग छी जइसँ सग कछि-गे-कछि पीडति अछि। कयि पुन सोगसँ पीडति अछि, तँ कयि यगसोगसँ पीडति अछि। मोटा-मोटी एग वुहियौ जे एकको पार लोक एहेन गर छैथ जे पीडति गर छैथ। आर असपाठमे की देखै छि जे एकदसि मदपागसँ यूग उाँकटग सहैव नोगीक र्शाग कए वैसए छैथ तँ दोसग दसि गौग-गागाक मागठ टेमपूवए अपन नोगी उऽ पहुँचैए, तौगम जाँ नोगी एग उाँकटग सहैवकेँ पहुँचैसँ पहिने ववाए गहि हेरन, सेहे पुनकृति पुनकृते गे कहैए जाए।

पूनामिक पुनाक दगि, मागे पूनामि गेठाक एक दगिक पछारन, सुत्रियाग गाय कमठागण्ड काकाकेँ अपन गानीग दयिा समाए पडैएन जे जेतोक जएदी गऽ सकैग तेतेक जएदी गैट दैथ। ओग, एहेन वयिग शिष्टायानक वपिनोत गेठ मुदा पनस्थितिदिस अगुकूठे गेठ। सुत्रियाग गाय अपन मगसोगसँ तेतेक पीडति गऽ गेठ छैथ जे आँपकि सूग वैस गेठ छैग तँए सुवस कुमानक पति। जाँ आगहन गऽ गेठ छैथ। ओग, समाए पडवैसँ पहिने सुत्रियाग गाय एते सगकी करये गेगे छेए जे सोहे गैट कए कहवैग से केतौसँ उयति गर हए। तँए पुनो सोगक यन्य सेहे गानीगसँ कऽ गेगे छेए।

कमठागण्ड काका सुत्रियाग गायक समाए सुगगुमम गऽ गेठ। आदमी मानशुद जाँ कोनो जएवागिक समाए अवैए तँ ओकग महत्व आग दोसग मायुमक समाएसँ वेसी हेरते अछि। कए तँ आदमीक समदयिक मागे गेठ संगे गेगे आवे। नहूमे आजाक वदएठ पनविशमे, अपन तँ मागा-पतिाक श्नाद्य आ गयक पामिडदाग मोवारुसँ देखना पऽ हुअ एग अछि।

अशाह-उग्नेस वृष्यक सुशीलक मुहँ समाह सुर्गा कमठागर्ह काका
पुष्पयनि-

“वैश्रा, गीक पोकाँ गरुह्लौ”

जहगि कोगो गवपुत्रक पो आइएएसक संकल्पकँ मगमे गोपी अप्पन जीवणकँ
सायना दसि मोडी सायक वगि सायना कगैए तँ ओ गसियये सशुठनाक सीढी
प्राप्ता कगति अछा, जहगि भागे ओहने गवपुत्रक जाकाँ सुशील वाजठ-

“वावा, यायाजी एवे वजठ पो पुत्रीक सोगसँ तोते पीडति गऽ गेवौ पो आगू
दसि कछि सुहागिहल अछा”

सुशीलक संगे कमठागर्ह काका व्रिदा भेठा।

कमठागर्ह काका आ सुत्रियाग गाय एक-दोसनाक जीवणक संगी छैथा हुनूक
जन्म एकके दनि भेठ छैना मुदा समाजक पो वेवहाकि यथैग अछतिर अगुकुठ
कमठागर्ह ‘काका’क रूपमे आ सुत्रियाग ‘गाय’क रूपमे छैथा।

दस कटुगक कनीव हठसेँ कमठागर्ह काका दनवज्जाक ओसाक यौकीपन
सुत्रियाग गायकँ वैसठ देप्यिगेने छथ, मुदा मुँह वग्न ऐहुआने नयने रहठ पो
जगिका ठग एवै हेन सेने पहिनि टोकना, मुदा पो टोकतैग नगिकन तँ आँपयिक
सूत वैस गेठ छैग नयन देपवे केना कगतैग ओगा, कमठागर्ह कक्काक
मगमे उडिगेठ छेठैग पो जौगम एवै से तँ घनवागिक सीमामे भेठा, ओ अपन
पनव्रानक सीमा-सगहक वेवहाग केहेग नयना से तँ हुनकन पनयिय भेठैग।

तैवीय अप्पन मान-नोय नाप्पव वेनपन मेठा अप्पन मन कमठागन्ड कक्काक
 मानि गेठ छैठेन। तैवीय धीने-धीने कमठागन्ड काका सुवय्यायि नायसँ उगगा
 तीनयिके दूनपन पहुँयथा। जोनसँ प्प्यास केठेन। सुवय्यायि नायक मन तेन
 नायनाने मन्नि गऽ गेठ छैठेन जे आँपकि संग कागे सुग्ग गऽ गेठ नहैन। मुदा
 तैयो मनमे एहेन वय्यायि नँ नहवे कनैव जे कमठागन्ड काका जइघडी ने पहुँयथा
 अछा। समयक योगसँ मुहूर्तान वनयि गेठ अछा। कनो शुकिकेसँ सुवय्यायि नाय
 दुगकैत वज्जि-

“आव हम नर जीव, तँए आय्यनयि दनि वुहू।”

सुवय्यायि नायक वय्यायि कमठागन्ड काकाके कोनो माँजोपन ने यठैठेन। माँजोपन
 केन। यठैठेन, एकके दनिक जग्ग दूगु गोजेक अछा, अप्पन पयासो ने टपठै
 हेन, नाप्पव एहेन वय्यायि मुहसँ निकाठव सोहंगान थोडे मेठा। प्रेमयन्ड नायक
 अप्पन गजैत छैठेन तँए ओ पयासक गियिँ, माने याठिसकेँ घपयाठिस
 कहैठेन। श्वेन अपने मन कमठागन्ड कक्काक मानि ठेठकैव जे नानसिक कोनो
 तेहेन सोगमे सुवय्यायि सोगा गेठ अछा। जइसँ वयिठि गऽ गेठ अछा। जहनि
 कोनो ठेनवा वय्या घनसँ वौडा वोन-हाडमे पडि जाइए आ वौनाश-वौनाश
 कोनो एहेन कुठमपन यठि जाइए जौठम मनव छोडि दिसन नसना नर नहैए।

जइ हसिावसँ माने जइ मान्मिकि नायसँ सुवय्यायि नाय वाज्जि छथा तेकन
 वपिनीत नाय कमठागन्ड कक्काक मनमे जगा गेठ छैठेन। जगाति मन नमनमा
 गेठेन जइसँ जेन पटपेटेन, एहेन जे वुडव्वाइस अछा जे संगे-संगे नहिनी एनवो
 ने वुहिसिकेठ जे कुम्हानक कँयको वननसँ नग्गुक अपन जीवन अछा, जे
 कप्पनो हवा नभै वैठेन जकाँ प्पुसस-दे सटैक जाएन।

कमठानन्द काका गाय वदैं वजा- “की समय अपना सवहक छठ आ अप्पन की गऽ गेठ अछा!”

सुत्रिया गायकें सेहे अप्पन ओ दनि मोग पड़ि गेठैन जइ दनि वेटी वञ्चिह अप्पनासँ वीस पनवानमे कनाएव सोयैना तैसंग एकटा याना मगमे पुनवाहति गेठैन जइमे अप्पन कान्दक संग वेटीक वेटपनक बोध गेठ नहैना बोध इ गेठ नहैना जे जप्पन पाँय वेटाक वीय एकटा वेटी अछा, ओकर पतिता तँ हम ओहनि छए जहनि वेटाक छए तँए वनि कोनो मथहानि केने वेटीकें वीए पास कनौठेना वीए पास कनौठा पछारन उाँकटन उडकाक संग ववाह सेहे कनौठेना

सुत्रिया गायक जमाए उाँकटनी कऽ नहैना अछा मुदा जप्पन सुनैना जे जमाए एकटा ओहन ठोकसँ अने उषैह गेठ जे जग उषन गुठ छैन, जप्पनसँ उने सुत्रिया गायक मग थनथन काँपि नहै छैन जे की सोयि वेटीकें पोसवै आ दोसनाक घन हँसी-पुशीसँ वदि केवै आ आइ की देप्पि-सुनि नहै छी। ग्रह सोग सुत्रिया गायकें नये-नये सडैन कनैत मगनासग्न वना देगे छैन।

जीवन-वनक वीहमे सुत्रिया गाय तेना ओहना गेठ छैथ जे कोनो वाटे ने सुहा नहैना अछा मग मसोसकिऽ वजा-

“काका, ऐ जीवनसँ म्ापु गीका”

सुत्रिया गायक व्रिया कमठानन्द काका व्रियाए उजा जे कप्पन कोन ननहक म्ापु जीवनसँ गीक हेइए आ कोन ननहक अथथा? कयि गीकसँ अथथा वनेए तँ काँ ईहे श्रुसि थोडे छी जे कयि अथथेसँ गीक हेइते अछा मुदा व्रियाकें

वदथैण कमठागण्ड काका वण्ठा-

“दुगू नीको अछि आ अथठे तँ अछिणि कियौ जीवण ठे मजैए तँ कियौ मजैठे नइ
जीवैए सेहे वाग नहरिये अछि, सेहे तँ अछिणि जीवण-मज्झक गप-सपु
छोड़ह, अपन वेदनाक की कामस छह तौपन आवह”

सुत्रियान भाय वण्ठा-

“काका की कहव, वजैमे ठाण होइए! मुदा अहाँ ठा नइ वाणव तँ यन्माणक
घन दोष्पी वनवा”

कमठागण्ड काका वण्ठा-

“अप्पन अठकान छोड़ह, यन्माण आ यन्मक व्रियान पछाशा कन्हिह,
अप्पन वाणह जे की मेठह हेन?”

सुत्रियान भाय वण्ठा-

“वड़ ठीठसासँ वेटीक सेवा कए घन वसेवौ मुदा ओ घन उजैण नहए अछि!”

सुत्रियान भाइक व्रियान कमठागण्ड कक्काक मनमे मेघक वाएठ जाकाँ
उमड़ठैण-धुमड़ठैण उमड़ठैण ई जे सोगो तँ सोग छी, हजानो जगक अछि मुदा
सेवा कए वेटा-वेटीक घन उजड़ैण देयि कोनो माता-पतिाकेँ सोग हएव

सोभाविक अछए।

सुत्रियाँ माइक व्रियाँ सुगि कमठागण्ड कक्काक अपने मग व्रियाँ देठकैग
जे कए ने वेटीक उण्डैग दशाकँ एक गजैग पहिने देप्पि-सुगि ठी। वण्ठा-

“कनी सुडछाकऽ वाणहा”

सुत्रियाँ माय वण्ठा-

“काका, जमाए डॉकटन छैथ से तँ वुहए अछए?”

कमठागण्ड काका वण्ठा-

“कए ने वुहए नहना पतिा पुनोसुसए छेठपनि, माए डॉकटन।”

सुत्रियाँ माय वण्ठा- “अपना दुगू गोनेक जगमो एकके दनि मेठ आ अयन
नक संगे-संगे यथियी नहए छी, मुदा अहाँ ठा अयन नक एकटा व्रियाँ,
जहनि कृष्णक दनवागमे अपन गीवीक नाम्दुठ सुदामा गुकौने छेथैथ,
नहनि हमहूँ गुकौने नहए छी से पहिने कही दइ छी।”

कमठागण्ड कक्काक मगमे पत्रिाँ शीगठपवन जाकाँ सहिकथैग। सहिकथैग ई
जे जीवक दुगू दसि ढठग अछा, मागे आगूओ दसि आ पाछुओ दसि, दुगू
ढठगक वीय मगदशाक व्रियाँ सेहे ढठकैग-सुठकैग नहैए, तौगम व्रियाँमे

संगपन अर्वाति अर्छा

तौवीय अप्पन गुकाए वेथारें प्योए सुवयिान गाय वण्ठा-

“काका, मगमे ओही दगि ङनकाक योट णकाँ ठागठ णर दगि सुनवौ णे णमाए समैयकें मानवैण!”

ओगा, कमठागण्ट काकाकें गी-सं-घटी यनकि णागकानी पुओशेसग साहैवक वषियमे छैगे मुदा णहगि कवीन दास कहैण णे ‘वगि उंठी के पठडा तौवा है संसाग’, णहगि ने सग मगुक्यकें अप्पन-अप्पन णाणूक दुगू पठडा आगूएमे छैण, अपणा-अपणा गणयि तौवै णाउथा णीवण णीवण छी, उट्ठा गही णे णीवण णेतोक क्णियाशीठ गहण ओ णीवण ओतोक वेसी तुष्टा देण, मुदा णे णीवण पणजीवी गऽ गेठ, ओर णीवणक श्रुठ एहेण गेटव अगुयति गहयि कहठ णा सकैए णे णीवणे ओहण वगि गेठ णरमे माए केतौ, वाप केतौ आ वेटा-वेटी केतौ गहण ओरमे वैयागकि केणवो पुगगाढा कएि ने हुअए मुदा वेवहागिक कमी गहवे कण।

गूपठ मागे सुवयिान गारक णमाए, वय्येसं पणिवान-समाणसं हठ गहण। णयण कऱि माए-वाप स्वयं समाणक पुणुदय वेकती, मुदा हुणका अपणो सगणागपण मोह-माशयण्य गहण गेठेण णे अपण सगणागकें कमसं कम अपणा सगण गक वगाश्ये सकै छी। माणा-पणिकें गीक आमदगी, वेटा हाथमे ओते पार दऽ दऽ छेठयणि णे हाश्ये सकूठसं गूपठकें सगाव पीवैक यहेट ठागि गेठेण। मेडकिठक छाण गेसण-गेसण माणो-पणिकें अय्यडए ठागैण, मुदा वेटा णं णवाण गऽ गेठेण एहेण स्थणिमि कहुणा पढार समाण गेठ पछाशण गोकणियोक

जोगान कऽ देवै आ वीआहे-दाग कऽा अप्पन माणा-पतिाक दाप्रतिव पूना कऽावा
 अप्पन मनक वीयागमे गऽाग कमठागण्ड काका नहवे कऽैथ, वऽाग- “दाप्रतिव
 पूना होऽसँ पहिगे पुऽोश्चेसन सऽहैव ग्ठागसँ गऽागिगै!”

जहगिा पैघसँ पैघ देहक नोग हुअए आकऽमिगक, जप्पन सय वाग मागे ओऽ
 वमिागीक सही कामस वुहमि अवेए, जप्पन नोगक पीऽा स्वऽागः कऽिछु-गे-कऽिछु
 कऽमे कऽैए।

हृदय षोथ सुवऽियाग गाय वऽाग-

“काका, वेटी सुगऽगाक की गऽागिहए!”

ओगा, कमठागण्ड कऽकाक मनमे अगेको पुऽसूग वऽाया-वूगक वुठवुठा जकाँ
 मनमे उऽवो कऽैग आ अपगे शुऽा-शुऽा पुऽवाहऽिगिो हुअ ठाऽैग। मुऽा वीयागकँ
 सभेटाति मनमे उऽागिगैग, अप्पन तक अपगा ऐऽाम जोगवो षोथकिऽ वेटाकँ
 गायऽ गेठ जोगवो वेटीकँ गऽागिा जीवकिोपाऽजगक कोगो अयकऽाग वेटीक हाथमे
 गऽ नहऽ, जऽसँ ओकऽ आऽमसकऽागिा जगैग, मुऽा जे अछऽागिमे गे सग छी।
 वेटी सुगऽगाक यऽय सुगऽा कमठागण्ड कऽकाक मन दहैऽ गेठ छेऽैग, जऽसँ
 मनमे उऽागिगैग जे अप्पन तक जे वेटीक जीवग पऽावऽाग-समाजमे नहऽ ओ
 ओहऽ नहऽ जोगा वऽहैटा गऽाएकँ षाऽऽऽ दऽियौ वा गऽ दऽियौ मुऽा दुहैकाऽ वऽका
 वाऽीग ठऽ कऽ पुहुँय जऽाउ, सएह सुथऽागिा वेटी-जऽागकि पऽावऽाग-समाजमे
 नहऽ अछऽा समाजो गँ समाज छी, एक दऽसि जहगिा गैगकि पुऽवऽयग अकासमे
 गुंजायमाग होऽन नहैए नहगिा दऽसन दऽसि पैघ-सँ-पैघ अपऽाय गऽ होऽए सेहे
 केगऽ गऽ कऽऽऽ जऽाएग। अपगा ऐऽाम कऽासिगी जीवग एहेग नहऽ अछऽा जे कऽासिग

कसिगीपन आसुगि छैथ, अथकिंश ओहण कसिग छैथ, णगिका कसिगी कतैक ओकास-पेसँ सायन यगि-गर छैण आ णे कसिगी गर कतै छैथ हुनके सग सायन छैण ओणा, वटार ससिस्टम सेहे अछिमुदा ओहे वेढंग अछिप्याए णे अछि, कमठागण्ट काका वण्ठा-

“सुप्रिया, काउर्ह दगि की हए तेकना मगसँ गगावह आणुक की सुथगि अछिगैपन यथिग दहका”

ओणा, कमठागण्ट कककाक मगमे एहेण व्रिया हथिग मागि नहैण णे णे णिवण णेतेक शॉन्टकट गासुनासँ यण ओ ओते णिवणसँ दून नहण णिवण णिवैठे णहगि समुदु पान कतैक सूण अणुण आ हगुभाग दुगकँ वुदु नहैण मुदा दुगक दू गासुना नहैण, नहगि णिवणक पूनास गासुना आ शॉन्टकट गासुनाक वीय कछि-गे-कछि कमी-वेसी हेवे कान मुदा से अयण गह, अयण एवे णे हिय हगि सुप्रिया गाय वण्ठा-

“समाण णेगा पान-घाट ठावैथा”

अपण मंगवुधे दगिगिठिसनाउदुवदिहवाभाठियोम पन पडाउ

इइगन्ट व्रणिस नान- भौटवेय्या



गन्ट व्रणिस नान

भौटवेय्या

वेवाठाठणी नटियन शक्तिषका नानिदिनि यौक-यौनाहापन नंग-वनिगक शापम
हाडैण नहै छैथा नैतिकता, गषिण आ यनितिक वाण करैण नहै छैथा एमकी
मेठ पंयापन युगावमे मुप्यापि पदक तीग-तीगटा उम्मेदवानसँ भौट दस्क
नाओपन ठैआ ठेठपनि मुदा भौट ते कोनो एककेटा उम्मेदवानकेँ ने देगे हेथनि
नाम कुमानाणी मुप्यापि पदक उम्मेदवान छथा। व्रिकणी जे वेवाठाठणीक वेटाक
संगी छैथ, ननिके समक्ष नामकुमानाणी भौटक नाओपन वेवाठाठणीकेँ पाँयटा
भौटक ठेठ पनह साए टका देगे छैथैण।

आर मोनमे याहक दोकानपन आंगनवाड़ी केग्टनक यन्य उअर तँ गेवाठाठगी
ठाठा गाषम हाडए ओ कहए ठाठा- “एकूकोटा आंगनवाड़ी केग्टन गहियैए।
केग्टनपन वय्यासगक वीय पोषाहानक वगिनम सेहे गर्हा होइए। स्कूठो सगक
सएह हाठ छै। सगक गैतिक पान गऽ गेठ हेग। सग वेइमाने गऽ गेठ हेग।
केकनोमे यनगिन वॉयठे ने अछा।”

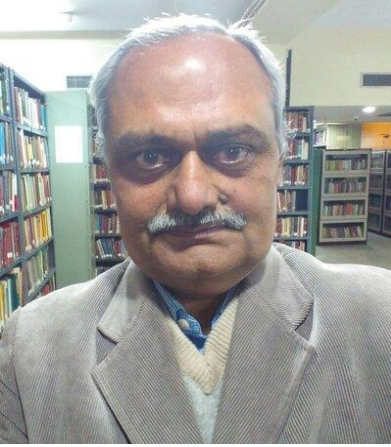
गपन गेवाठाठगी याहक दोकानपन ई गाषम हाडै छठ। गपन वगिको नहए।
वगिककेँ गह नहठ गेठै ओ गेवाठाठगीकेँ कहठकैग-

“धुनगी, अहाँ की गाषम हाडै छी। अपन मुँह ऐनामे देप्यौ। नटिपन शक्तिषक
छी। पय्यास हजान टका पेशन गेटैए आ गौटक गाओपन उम्मेदवानसँ पार उइ
छी। अहाँ ते गौटवेय्या छी। अहाँ की गैकिना आ यनगिनक वाग कनवा।”

गेवाठाठगी कछु गह वगठ- “गयियाँ मुहँ मुड़ी गोगने ओइमसँ वदि गऽ
गेठा।”

अपन मंगपूरे दगिनगिठसगाउडवदिहावागामिठियेन पन पडाउ।

इष्टवीग्द्वी गानायाम्भ मशिन्- माग्भूमि (उपग्यास)- ३१-३५ म प्पेप



इष्टवीग्द्वी गानायाम्भ मशिन्

माग्भूमि (उपग्यास)- यामावाहिके

प्पेप ३१-३५

३१

एहविन वहुन दगिपन गागवावा ठप्यगपुन पहुँयथाह । सत्रासुथ्यसँ
कछि हसग ठगगि नहठ छथाह । उगेनवानटिठक मंदगिपन हुगकन डेना छठ ।
शीठाक पतिग मयुकाग्न वैदकँ गागवावाक अस्वाक सूयगा गेटठगि । ओ दौनठ
हुगकासँ गेट कनवाक हेनु पहुँयथाह ।

"वावा दामडवण"-वैदगी गागवावाकँ पुनसाम कए हुगके पांजनमे

वैसी जाश छथी। कबीके काठमे गोवादि, माधव कछि आश्रीन युवक संगे पहुँच्योह। ओहीसमय वैदजी शीठाक समायान पुछी रह छथोह।

"जयन्तसँ भेट भेट रहए। ओएह शीठाक वागेमे कछि-कछि कहैत रहथी।"

"की कहथी?"

"की कहू?" - से कहि गागवावा युप रहि गेओह। ओना वैदजीकेँ तँ सजवात वुहो रहनी। ओ गठनी कए गेओ रहथी। आव पछारए कए की हेनी? केहन हँसैत-वजैत शीठाक गवधिप्रकेँ अंधकारमय कए देओह, से सोयि-सोयि ओ दुपति भए गेओ रहथी। कतवो केशो कहनी कोनो एवार रहि प्पार्थी। कोनो डाकूटन-वैद भग रहि जाथी। अपन एकमात्र संगानक दुपसँ भीतनश्री कष्ट रहनी जकन कोनो समायाग हुनका रहि बुहाइग। एहन स्थितिमे गागवावाक आगमनक समायान सुनिओ जेना-जेना हुनका भग पहुँच्यो रहथी।

"शीठाक आव ओहीठाम रहवाक कोनो ठग रहि छैक। दनि-पुनदिनि ओकन स्थितिप्यनापे भेट जा रहओ अछी। तँ हमना हिसावे तँ ओकना गामे भए आगू।-गागवावा कहैत छथी। शीठाक प्यसिसा सौसे गाममे पसनी गेओ रहैक। मुदा केशो की कतैत? विशिह भए गेओक वाद वेटीक स्थितिमाना-पतिाक वसने रहि रहि जाश छैक। कागूग जातेक समायाग रहि दैत अछी। ताहिसँ वेसी समस्यया उतपन्न कए दैत अछी। पश्यनिक संस्कृतिकि अगुकाम कए ठेक विशिह व्रियेद कए भइ। मुदा समाज ओकना डेग-डेगपन पुनताडिति कनवासँ वाम रहि होश अछी। जएह-सएह वकन दृष्टिसँ देपए भौत अछी। तँ ओ गैहनमे वापस आविओ गेओथी तँ अपने पनविानमे पाहुन भए जाश छथी। कागूग द्वाजा पुनद्वान पैतृक संपत्तिकि अधिकान कागजमे समेटओ रहि गेओ अछी। सएह सभ सोयि ठेक याहैत अछी जे वेटी जेना-जेना सासुनेमे रहए।

मुदा शीठा संगे तँ वहुन पैघ थोप्या भए गेओ रहैक। ओकना संगे तँ ओकन धनोवता रहि रहैक। ओ पहिनिहिसँ व्रियेनमीसँ विशिह कए ठेगे रहैक।

वैदणीक भोगमे अपनायवोध तँ हेइते नहनि, मुदा नाहिसँ की होएत? गागवावाक हावभाव देखि हुनका वृहवामे कसनि गहि नहएनि। ओ असभियत की अर्था। तैओ भोगमे कतहु उन्मीद नहनि। ओ की पना कछि गीक गए गेए होइक ? तँ ओ वृहव आशासँ गागवावाक अस्वाक समायान सुनिहि हुनका। ओ आएए नहथि। ओ-पासमे वैसए पुवकसगकँ सेहे शीठाक प्यसिसा वृहए नहनि। ओ संग सेहे याहथि। ओ शीठाक मदन। कएए जाए। मुदा से कोना कएए जाए? गागवावा मुँहे शीठाक कोनो स्पष्ट समायान गहि सुनि। ओक वाए हुनकन सगक यति। आओन वढि गेइनि।

"हमना तँ भोग होइत अर्था। ओ अप्पने जागकीयाम जा कए शीठाक ससुन आ ओकन पतिकँ जहएमे वंद कनवा दी।"- गोवदि वज्राह।

"मुदा नाहिसँ होएत की? - मायव कहएपनि।

"तँ की हमसग मूकदन्सक वगए नहि आ एकटा गनिदोष सन्नी अग्याय सहैत नहि जाए।"

"गोहनसगक हिसावे की कएए जाए?"- वैदणी वज्राह।

"हमसग पाठशाठाक समस्य्याक समायानक हेतु जागनसँ भेट कनवाक हेतु जागकीयाम जाएव। एहि हेतु काउहिसैसा होएत। ओहि वैसानमे शीठाक समस्य्याक वागेमे सेहे यन्या कएए जाए आ नकनवाए सगगोटे यएव। ओतहि सोहा-सोही वाग सुनिछि। ओतैक। एकटा सन्नी संगे एतेक अग्याय कए ओ गयिग नहि नहिसकैत छथि।"

"वाग तँ तू सग वाजवि कए नहए छह। मुदा वैदणी क सहमताएसँ कछि कएए जाएवाक याहि।"-गागवावा वज्राह।

"हम समाजसँ वाहन थोडे छी। ओ सगक व्रियान, सएह हमनो व्रियान।"

साँहमे होएएवैसा वैसानक हकान देवाक गान टुगटुगकँ देए गेइनि। टुगटुग सूकूटनपन यढि कए एकटा छौड़ाक संगे यकिन-यकिन कए कहएथि- "सुबैत जाउ, आइ साँहमे मंदनपन वैसान अर्था। गागवावा सेहे नहनाह।

सभगोटे अवश्य आएव ।"

केओ -केओ पुछठकैक -"कथोक वैसाग छैक?"

गौवासभसँ सवाठ-जवाव कएव ओकए काज गहल गैक । ओ तँ मातृग हकए देवाक हेतु गेठ नहए । हकए देवाक वाद ओ वापस होश नहए की सुधाकए भेट गेठयनि । रसाग दए नुकावाक हेतु कहठयनि । सूकूटक आगूमे डक भए गेठथी । यानूकाग सुधाकएक ठैगसभ घेनी ठेठक । हाकिए ओकएसभकेँ सूकूटसँ उगए पडठैक ।

"कथोक वैसाग छैक?" - सुधाकए पुछठयनि ।

"पाठशाठक पुनगनिमास कएवाक यन्या हेतैक ।"

"हमए डीह-डवएपए पाठशाठ वगवए यठठह अछी । हगगि गहल होवए देवह । जकएग जगक काज गहल होशक सएह ओही वैसागमे जाए ।"- सुधाकए यकिनी-यकिनी कए सौसेगामकेँ ई वाग सुगा देठयनि ।

दोसए दगि साँहमे आगोक वाद उगवागठिठक मंदनक पनसिगमे वैसाग सुनु भेट । वैसागमे उगवागठिठ उमड गेठ छठ मुदा दछनिवागठिठक मातृग दुशए गोटे अएठह , मधुकाग वैदणी आ सुधाकएक वधोवृद्ध पतिग देवीकाग ।

गजवावा सामग्यगः शांग गहल छठह । मुदा कहल गहल ओही दगि वैसागमे ओ एकाएक वहुग उगए भए गेठह । भेटैक ई जे वैसाग सुनु होशहल सुधाकए सदठ-वठ पहुँच गेठ । ओकए ठैगसभ यानूकागसँ मंदन पनसिगकेँ घेनी ठेठक । ओग ठैगसभ तँ सुधाकएक संगे नहति छठगि मुदा ओही दगि कछु वेसाए गोटे अगने नहथी ।

"सभगोटे काग प्ठोठ कए सुगठिठि । आर गौ-छौ भशए कए नहए ।

जोज-जोजक ई हंस्टसँ मुकणी जनुनी अछी अग्यापोक एकटा सीमा होश अछी । हमए पुनवजक देठ घनाडिकेँ ई सभ पाठशाठ वगावए हेतु अमादा छथी ई कएक ग्याय थकि ।"

"हमहु एही गामक छी । एहठिठ पाठशाठ कोनो आजुक गहल अछी ।

हमसभ गेने नहि नप्पनो एए पाडशाठा छठ आ हमनसभक वावा नप्पन गेना छथाह नप्पनो छठ । अहाँक घनाड़ी ई कोना भए गेठ?"- गागवावा वजठाह ।"

"नोहन वुद्ध्याँ सईआ गेठह अछि । नमीन-जायदादक नगिम्प कगाणसँ होश अछि, ययिपिठासँ गही ई नमीन वावा हमनासभक गामे ठिपि गेठ छथि । एहिपिन ककनो कोनो अयकान गह अछि।"-से कहि ओ अपन जेवीसँ एकटा कगाण निकालि कहैत छथि-

"नकना देपवाक होने से देप्यथु । ई पाडशाठाक नमीनक नजिष्टीक कगाण अछि । तथापि यिदि केओ हंस्ट कनवापन अउठ होथि तँ नकनो स्वाण हम तैयाँ नप्पने छी ।" -सुयाकन ई वजठे छथाह कि ठैंनसभ ठाडी गाँणए ठागठ ।

"एहन अग्याय गहै कनह । नयन सन वृद्धिवाग एए पाडशाठा यठवए याहैत छथि । ओ वृद्धिवाग छथि । समाजक उपकान कए सकैत छथि । हुनकन आगनह भागवाक याहि ।"- सुयाकनक पतिा देवीकागन वजठाह ।

"एह! वृद्धिवाग छथि । हमना सभटा पना अछि । जागकीयामने शीठाक संगे।"-ओ एतवे वाजठ होएताह कि वैदजी यकिनएह-

"प्यनदान! पाणी गहतिन । शीठा।" कछु आओन वजठिथि तालिसँ पहिनिह हुनकन आवाण अवुद्धय भए गेठ । ओ यनाम दए प्यसथाह । यानूकानसँ ठेकसभ हुनका घेनि ठेठक । ठैंनसभ कान भए गेठ ।

"वैदजी गहै नहथाह"-गोवदि वाजठ । वैदजीकेँ हृदयाघात भए गेठनि । यानूकान हाहाकान मयि गेठ । पनस्थिति हाथसँ वाहन होश देपि सुयाकन ठैंनक संगे गागठ ।

३२

गाममे भेठ वैसान आ ओहि कानाससँ शीठाक पतिा वैदजीक आकस्मिक गायिक समायान नयन यनि पहुँचथ । समायान सुनिह हुनका

ऽकर्वदीन ठागि गेठगि

"आव की होएल? शीठाकेँ ई दुप्ये समायाग केग देठ जाएल? "-
जयन्त गागवावाक येठाक संगे वैसठ वगश्चि नहठ छठाल ओएह गामसँ समाद
ठए कए आएठ छठाल

"गागवावा कए छथि?"

"ओ अप्पन गामेमे छथि"

"गामक की हाठ छैक?"

"गाममे वहुन नगाव अछि। उतनवागटिठक ठोकसगकेँ गागवावा नोकदिठपनि
नहीं ओहिदिनि वहुन कछि नए गेठ नहै। "

"एहमे हमना ठोकनकि ओहिदिम गेगार संगव होएल?"

"मुदा नहैओ गेगार तँ समायाग नहै अछि।"

"नप्यन की कएठ जाए?"

"हमना हिसावे तँ काठिकाग्नकेँ संगवाग कहठ जाए। ओएह कछि समायाग कए
सकैत छथि।"

"वाग तँ सही कहि नहठ छी। मुदा काठिकाग्नकेँ ई संग कहवामे हमना वहुन
संकोय नए नहठ अछि।"

"अहाँ अपने कएक कहवगि। आयात्पणीकेँ पठा देठ जाए। ओ सम्हानी सकैत
छथि।"

"सही कहठहुँ। मुदा शीठाकेँ कोना ई समायाग देठ जाएल? ओ तँ पहिनेसँ वहुन
पनेसाग छथि।"

"मुदा हुनका जागकानी देगार तँ अगवात्प अछि। गाममे हुनकन
पतिाक ठास हुनकन प्रतीक्षा कए नहठ अछि।"- से कहि गागवावाक येठा
अपन आसूनम यथि गेठ।

जयन्त आयात्पणीसँ भेट कनवाक हेतु वदि भेठाल। आयात्पणी आसूनमक
गेठेपन भेट नए गेठपनि।

"की वाग छैक? अहाँ वहुन पनेसाग ठागि नहठ छी?"

जयन्त आयाज्यजीकेँ सभवाग कहथ्यनि ।

"हमना ठेकनकेँ काठिकाग्न ठा यथक याहि । हुनका सभ वाग कहवनि । ओएह नसना गकिठनाह।"

"ठीक छैक । मुदा शीठाकेँ कोना सूयति कएथ जाएत?"

"काठिकाग्न ठा यथू ने । सभ गए जेतैक ।"

जयन्त आयाज्यजीक संगे काठिकाग्नक ओहिगम वदि भेठाह ।

३३

आयाज्यजीक संगे जयन्त काठिकाग्न ठा पहुँचयथाह । काठिकाग्न अपन ओसामापन वैसथ याह पीवा नहथ छथाह । गौरी सेहे ओहिगम वैसथ छथिह । भोजुका अयवाग आवा गेथ नहैक ओहि अयवागक मुप्यपपुष्यपन ठयनपुनमे भेथ कांडक समायाग छपथ छथ । काठिकाग्न ई समायाग पढ़ाए नहथ छथाह कि आयाज्यजीक संगे जयन्तकेँ देखथकनि ।

"वहुन सहे समयपन आवा गेथहुँ ।"

"की वाग भेथैक?"

"अयवागमे जयन्तक गामक घटनासभक समायाग छपथ छैक। सए पढ़किए यतिमे पढ़ गेथ छी ।"

"ओहि व्रषियमे अपनेसँ यन्या कए आएथ नहि । सुगवामे आएथ जे शीठाक पतिाक देहावसाग गए गेथनी आ गाममे ठेकसभ शीठाक पुनिक्षा कए नहथ छथी।"

"ओ तँ ज्योतिषीजीक संगे भोजे गकिठ गेथिह । सुयाकनक मानश्च हुनका समायाग भेट गेथ नहनि।"

"जयन्त सेहे जाए याहैन छथी।"

" ओहिगमक माहैथ तँ वहुन पनाव छैक । कही कछि अगषिठ ने गए जाए?"

" जयन्तक गेवाइ जूनू छनि । शीठाक पनविानसँ हनिका ठेकनकि वहुन

घनाष्टिना नहथगि अरुा।"

ई सभ गप्प-सप्प ढरुए नहथ छथ कौगौनी आ यंद्नीका सेहे आवा गेथीह । यंद्नीका अडि गेथीह जे ओहे जयग्नक संगे जेगीह । काथीकाग्नकें वुहेवे गही कनगी जे हुगका कोना मगाओथ जाए? कानाम एही भाहीथमे हुगका थप्पगपुन गेगाइ कोनो नरहे उरति गही वुहाइगि । जप्पन यंद्नीका गहीए मागथप्पनि तँ नय भेथ जे सभगोटे संगे जेगाहा मुदा जयग्न मगा कए देथप्पनि ।

" अहाँ अप्पन कछि दनि नुकी जाउ । सुनाइय हेवए दिसौक । नकनवाए आवा जाएव । "

"जयग्नक वाग सही वुहाइअ अरुा । हमना ओकगकि अप्पन ओहीठिम गेठासँ पनेसागी वढि सकैत अरुा।"-काथीकाग्न वज्जएह ।

दोसनादनि अरुथ भोजे जयग्न आयात्पजीक संगे थप्पगपुन वदि भेथाह । नसुनागना हुगकन भोग ढकुआएथ नहगी ।

"जयग्न एोक कएक सोयैत छी? अहाँ तँ वदिवाग छी । जीवग-मनाम तँ यथति नहैत अरुा । एकना सुवीकान केगही कुसथ थकि।"-आयात्प वज्जएह ।

"सवाथ जीवग-मत्पुक गही अरुा । जाही नरहे हनिकन मत्पु भेथगी से वहुन दुप्पदायी अरुा । एकटा थसुठ्ठा सभकें पनेसाग केने अरुा आ सभ मुँह नाक नहथ अरुा।"

"सभ यीजक समय होइत छैक । ओकनो जवाव भेटतैक आ भेटवे कनतैक ।"

"से तँ ठीक अरुा । मुदा हमनो ओकगकि कछि कनत्पु वगैत अरुा कि गही? की हमसभ मान् नयिनि किँ दौप्प दए समय काँटैत नही जाएव । सभसुप्पाक जडि ओ पाइसाथक जभोग थकि जाहपिन जवनेदसुगी सुधाकन कव्पा कए छेने अरुा । ओही वरिपयपन यन्था कनवाक हेतु वैसा न भेथ छथ । मुदा की सँ की गए गेथ ।"

"आव तँ आगूएक सोयवामे सुएदा अरुा । कोनो सभाधान नप्पने गए सकैत अरुा ।"

"नकन माने जे सुधाकन जकना याहए माना दैक, पनेसाग कनैत नहैक आ

हमसभ गाग्रक पठटी ठेवाक पुनीकषा कतैग रही ।"

"शुभिहठ श्नाद्य होवर दिक्रिक । नकनवाड काठिकाग्न सेहे अखे कनगाह । हुगका सामनेमे वमिनस कएठ जाएग। सुयाकन कनवो वठगन होथि, मुदा काठिकाग्नक आगू ओकन एकटा नहि यठौका जप्पन एोक दनि चैत्य नप्पवे केठुँ गँ थोडेक दनि आओन सही । पाडशाठक समाधान सेहे हेवे कनौका ।"

दुगूगोटे गप्प-सप्प कतैग ठप्पनपुनक सीमामे पुनवेश कए नहठ छठह । यानक कागमे वैदणीक यतिाक आगनिहि गेठ छठ । शीठक ठप्पनपुन पुहुँयएमे वठिव भेठगि । ठोकसभ गाममे ठासकँ वेसी काठ नप्पगाइ उयति नहि वुहठक । वैदणीक संस्कान शीठक गाम पुहुँयवासँ पहनिहि गौवासभ कए देठप्पनि। ज्योतिषीजी शीठकँ ठप्पनपुन पुहुँया कए योट्टे अपन गाम यठिगोठह । ई समायान हुगका यानक कागमे टुगटुग देठप्पनि । टुगटुग संगे ओ सभ वैदणीक दनवाजापन पुहुँयठह। ओहिठामक द्श्य वहुन दुप्पद छठ। ओसागपन एकसगि वैसठि शीठ कनैग-कनैग वेहठ छठिह । जेगा-गेगा वैदणीक श्नाद्य संपन भेठ ।

सुयाकन गँ ओहि दिकक घटनाक वाद जे नपिगना भेठह से धुनि नहि अएठह । थानासँ पुठिसि हुगकन पना ठावैग कैक दनि आएठ । मुदा सुयाकनक कछि पना नहि यठौक । संभवतः ओहोसभ प्पानापुनएि कए नहठ छठ। गाममे सभकँ एहि वागसँ आस्यत्य ठौक जे शीठक घनवठ ससुनक श्नाद्योमे नहि अएठह। ठप्पनपुनसँ अपन गाम वापस होइन काठ ज्योतिषीजीकँ की भेठगि की नहि नकन कछि पना नहि यठि सकठ। मुदा ओ नहिपुन नहि पुहुँया सकठह। नसोमे नहि गेठह । ठोकसभ वाजए जे ठप्पनपुनक यओनमे हुगका जनि गछानि ठेठकगि।

जोवदि जयगतसँ भेट कनए आएठ नहथनि । संगेमे माधव आ उगनवागिठिक कछि पुवकसभ नहथि। आयात्यजी सेहे ओनहि छठह । नागवावा सेहे नहथि। सभकँ एकठाम वैसठ देप्पि शीठ सेहे ओनहि आवागिठिह । "प्रद्वर्पा वैदणीक म्पु आकस्मिक भेठ, मुदा नकन पाछू की छठ? एहि अन्त्यायागीक दुःखप्रवहनसँ ओ वहुन दुप्पि भए गेठह आ हुगका ह्दयाघान

भए गेउग। पुठसिमे पुनाथमर्को ठप्पिओउ गेउ । आइ कैक दगि भए गेउ । केओ पकऽउ गह गेउ । पुठसि-थागा भाग्न प्पागापुनी कए नहउ अछा। कोनो डेस कानवाइ गह भए सकैत।"- गोवदि वजउह ।

"शीठ एकसगि छथि । सभसँ पहिनि हगिकन सोयउ जाए । तकनवादे आगू वढगाइ उयति होएत ।"- मायव वजउह ।

" आव तँ जे हेवाक छठैक से भइए गेउ । मुदा तकना पकऽकिए वैसउ तँ गह १हउ जा सकैत अछा। अहाँसभ हमना ठेउ यति गह कनू । हमन भवषिय तय भए युक्त अछा। हम आव कतहु गह जाएव । ई हमनो गाम अछा आ हमनो कछि कनवाक हक अछा। पाठशाठक काज आगू कनू । हमहु ओहिमे जे संभव होएत योगदान कनव ।"- शीठ वजउह ।

" हमना ठेकगि आइ साँहमे भंदनिपन वैसान कनव आ ओतहि आगूक नसना तय होएत ।"-गोवदि वजउह ।

३४

दोसन दगि वैसानसँ पहिनि भंदनि उा हमटा किए कीर्तन भेठ। ओना ओहडिम कीर्तन हेशे नहै छठ। भंगउ दगि नहवाक काममे व्रशिश आयोजन भेठ नहैक । सौसे उतनवागिठेक जवान, वूढ, गेनासभ एकऽडा नहए। कीर्तन समाप्त भेठक वाद पुनसाद व्रतिनास भेठ । ठेक तकनवादे यठि जाइत । मुदा कीर्तन शुनु होवएसँ पहिनि गोवदि कहि देगे नहैक जे कीर्तनक वाद वैसान होैक आ सभगोटे ओहिमे सामठि होएत । ठेकक अस्मतिासँ जुऽउ वहुन नास वातसभ नहैक ।

आव ओ समय गह नह गेउ नहैक जे ठेक अगेने सहैत नहौक । देसमे ठेकतानक वहिऽ विह १हउ छैक । समाजमे तकन पुनगाव सपुष्ट देप्पा नहउ छैक । जेठैक ओ समय जे गनीव-गुनवाकँ प्पागदगी कर्तक एवजमे भनी जगिगी वेगान कए पऽैत छठैक । आव तँ वोगिओ देठपन जग गह भैटैत छैक । कएक भेटौक? सभक स्थिति सुथनठैक । सभक वाठ-वय्या देस-वदिश

काणपन यथी गेठैक । दठिथी, पंजाव आ कलए-कलए गहि पसनी गेठैक । कछुगोटै तँ देसक सीमानोकें ननपी गेठ। अरव यथी गेठ, कछुगोटै तँ पढाँ ठिपि कए अमेरिका, जन्मनी यनी अपन पैड वना ठेठक । नाहिडिम आव सुयाकन सग ठोक ठैठ वठे कतोक दनि टकि सकेन अछि? ई वाग उतनवानिठिठक ठोकसग नीकसँ वुहैक जे जँ ओ सग ठागी पडतैक तँ सुयाकनकें कहए, केहगो वदमासकें ओ सग ठाङ्गपन आनी दैतैक । मुदा ओहोसग वेसी श्रुसाद गहि कलए याहठक । सोयठक जे समयसँ सग गीक गए जेतैक, मुदा से कहँ गेठैक? सुयाकनक मोग वढैठ गेठैक । जयन्त सग सनठ ओ ब्रह्मिवाग ब्रह्मकनिकें नवाह कलए पन ठागी गेठ ।

कहवी छैक जे 'ब्रह्मिवाग सन्तान पूज्यते' । जयन्तमे ततोक ब्रह्मिवा छनी जे जयन्त जलए याहथी अपन जगह वना सकैठ छथाह। काषीकान्त हुगका अपना संगे नयवाक हेतु कतोको वेन कहि युक्त नहथी। मुदा मनूभूमिके सगिह कही, मोह कही जे कही ओ एहि संकटसँ गुजनि नहठ छथी। हुगका तँ दुपहन नागमि ठैठसग सांशे कए देगे नहैठ । मुदा यग कही उतनवानिठिठक नयवानसगकें जे जागपन प्येपिकए ओहन यनाव मौसममे हुगका वयओठक ।

ई वाग सग ठोकसगक मोगमे छठैह, हाठ-हाठमे गव घटना सेहो गेठैक। शीठाक पतिा वैदजीकें सगक सामनेमे वैज्जान कएठ गेठनी जकना ओ गहि सकथाह आ गमहि नहि गेठ। शीठा आव गडिगह एसगानि गए गेठिह । प्रद्वरपी ओ वआहठ अछि, ओकन पतिाजीवति छथी। पहिगे ऐकटा वआह केने छथाह, ओहो ब्रह्मिवाक संगे, नयग एकन जनिगी वनवाह कनवाक कोन औयतिप्र छठ? मुदा ओ सएह केठ। शीठा आव नय कए ठेठक अछि जे गामेमे नहठ आ जयन्तक काणमे सहयोग देठ, समाजक सेवा कनठ जाहिसँ गवप्रियमे ककनो संगे एहन घटना गहि होइक ।

वैसान प्नामंग मेठ।

गागवावा, आयान्यजी, जयन्त, शीठा, गोवदि, मायव मंयपन नहथी आस्यन्यक वाग नहैक जे दछनिवानिठिठक एक आदमी गहि आएठ नहैक । वैसान सुनु होशहि सुयाकन अपन ठैठक संगे दग-दग कनैठ हाजनि गए गेठ।

। सभ अकयका गेठ । ई कएएसँ आवा गेठह? सुयाकनक पाछू-पाछू एक दूजग सपिही सेहे अपैक । ओहिसँ सेस सपिही आगू वढै आ गागवावा दिसि हथकड़ी वढवै कएकैक-

"अहाँकें गनिशुनान कएए जाश अछी।"

केओ कछि वुहै, कछि सवाए-जवाव कएत नहिसँ पहिनिह हुनकन हाथमे हथकड़ी आगू युक्त छै। स्वयं ओहे छगुनामे छै। गागवावाक ई हाथ देखा अगवागिठिक पुत्रकसभ छपै। ओकनासभकें अंदाज आगिठिके जो एहि सुयाकनक कृयक अछी नगाव वढै देखा पुठिसिवा मास्कपन घोषणा केक-

"अवगए! तँ केओ पुठिसिक काजमे वाया कए तँ जहए जाएव ।"

- से सभ वजैत पुठिसि गागवावाकें पुठिसि जीपमे बैसा ठेक आ ठेगे यथी गेठ । सुयाकन आ ओकन ठैतसभसेहे पाछू-पाछू यथी गेठ । ठेकसभ देखाति नहि गेठ ।

एही नहै गागवावापन पुठिसिक आक्रमणसँ अगवागिठिक ठेकसभ वहुत अतोपति नहथी। गोवदि आ माधव आगू सुनै। हुनका पाछू-पाछू वीस-पचीसटा पुत्रक सुनै। ककनो हाथ मे छै, ककनो हाथमे वनछी तँ ककनो हाथमे गैठ छैक । सभ सुयाकनकें पछोड़ कनवाक हेतु छटपटा नहै छै। हाथन कावूसँ वाहन हेरा देखा जयगन उठै आ मास्कपन कहै छथि- "हम आसँ आमनाम अगसग पुनांग कए नहै छी । जायनि गागवावा वाशजान वनी गहै हेनाह, जायनि पाइसाथ अपन पुत्रवस्थापन गहै वगि जाएत नावे हम अगन-जठ गुनहम गहै कनवा।"

जयगनक एतेक वजतिह सभ सग्न गए गेठ । पुत्रकसभ थकनका गेठह । सभ एक-दोसरा दिसि देखा आगै ककनो कछि सुनेवे गहै कएक जो आव की कएए जाए ? सभकें एही नहै पनेसाग देखा आयाज्यगी मास्क वेठगि-

"भागहुँ जो सुयाकन आ हुनकन समथक वहुत अत्यायान कए नहै छथी आ पुठिसि-पुत्रसासगक ठेक सेहे हुनके संगे गढ वुहाइ छथी, तथापि हमना

ठोकनिकें चैत्य वगओगे नायक याही कामस हमसग एए ज्ञान व्रतिनि कनवाक संगाम स्थापनि कए अएछुँ अछिने कहिसिवाएकेँ प्रसन्न देवाक हेतु । गागवावाकेँ पुठिसि पकड़ि कए ए गेथनि । मुदा ई सग कतेक दगियनियथ? नहियथसकन, ग्याय हेवे कनैक । असु, हमन प्रान्थना अछिजे अहंसग कानून अपना हाथमे नहि थि । "

"एकानि सखशीथनाक ठेक गथ अथ ठावैत अछि, आयात्यव! ई तँ हमसग सद्व्यः देयिए नहथ छी । कहिसिसँ जयन पाठशाठक हेतु प्रयत्नशीठ छथि । मुदा गेथ की? हुकन पैक हककेँ पया ठेवाक निसिक प्रयत्न सुधाकन कनैत नहथ आ पाठशाठक जगहपन अपन व्यक्तगिठ घन वना ठेवह आ हमसग मूकदृशक गेथ छी । ऊपनसँ गागवावाकेँ पुठिसि पकड़िठेक ।"-गामक पुत्रकसग वाजथ ।

"आयात्यजीक कहव अपना हिसिबे ठेके छनि । तँ हम शांतिपूनाम प्रयास कए नहथ छी । हमन अगसग कनवाक निसि अठथ अछि अहंसग कृपया शांति नहू आ शांतिपूनाम आंदोलनमे सहयोग कनू।"-जयन वजथ ।

आयात्यजीक आग्रह आ जयनक आमाम अगसगक घोषणाक वाद पुत्रक ठेकनि अपन-अपन हाथसँ हथिआन शुकदिठह । गोवदि आ नायक कछु आओन पुत्रकसगक संगे थागा वदि गेथह गागवावा थागामे नहि नहथ । हुकन पुठिसि जठि मुप्याथ ठेगे यथ गेथ कामस ओहठिम नयवामे अशांतिक संभावना वुहैठेक । स्थानीय पुठिसिसगसँ पना ठाठेक जे विसो साठ पुत्र एकटा हत्याक नामठामे गागवावाकेँ पकड़थ गेथनि अछि ।

गेथ ई नहैक जे अपन पुत्रावस्थामे गागवावा समाजमे पवित्रागक हेतु अग्रसर नहैत छथह नहि हेतु गाम-गाम दुर्भिक ए गनीव, असहाय ठेकसगक संगठन वगओगे छथह । ओकनासगकेँ अपन अथिआन हेतु निसिना जागनुक नहवाक हेतु प्रेरिनि कनैत छथह । समाजक सम्व्य ठेकसगकेँ ई कनहु नीक ठेक? ओसग हनिका पठिअ षड्यंन केठक ।

गागवावा एकदिनि अहथ गोने अपन प्ठेमे कुसिआन काटए गेथ नहथ । ओहिमे पहिसँ ककनो हत्या कए शुकदिठ गेथ छथ । गागवावा ठास देयिनिहि

यकिनए ठागएह। यानूकानसँ वदमाससग मौकाक नाकमे छएहे, ओहिदिम जमा गए हगिके गाम ठाग देठक। पुठसिमे हगिकन गाम ठपिा गेठ। वादमे जाँय-पड़नाठमे हगिकन यथिाश्च कछि सवून गहि गेटठैक। पना गहि एठेक दगिक वाद कोना ओहि माभठकें सुयाकन जगा देठक जाहि कानामसँ हुगका तंग कएए जा नहए अछि।

उतनवानिठिठक हेतु तँ गागवावा गगवागे छएह। समसून जीवग ओ हुगका ठेकगि सामाजिक, आर्थिक वकिसक हेतु प्रयत्नशीठ नहएह। सग्यासी नहनिहुँ ओ अपन गाम-घनसँ संपत्क वगओगे नहएथि। वगकें गागवावा जे जयगनक जाग वाँयठ आ ओ शानदाकुंज पहुँचि एठेक शक्तिषा गनहम केठथि। सुयाकन एहूवागसँ हुगकासँ नमसाएए नहै छठ। "गे गागवावा नहै गे ई दुष्ट जीवैत।"-कयगो काठ सुयाकन ई वाग वजवो कनए।

सगक मोगमे आकूओश गनठ छठ। उपनसँ जयगनक अगशगक घोषमासँ संपूतम समाजमे जवनदसून प्रगकिनयिा गेठ। दोसन दगि अप्पवानसगक मुयपृष्ठमे ई समायाग छपठ। यानूकानसँ श्वेग आवए ठागठ। पुठसिक कनमान ठाग गेठ।

सग कें प्रयास नहैक जे जयगन अगशग तोड़िदिथि, मुदा ओ कछि वजवे गहि कनथि, मौग गए गेठथि। उतनवानिठिठक युवकसग दगि-नानि जयगनक नकषामे ठागठ नहै छएह। पुठसि तँ पहना दैगे छठ। ठेकक आवा-जाहि ठागठे नहै छठ। जयगनक अगशगक दस दगि गए गेठ हुगकन स्वसथ्य गडवडेवाक गयसँ प्रशासगक अयकिनी ठेकगि वहुन यतिगि नहथि। मुदा जयगन अपन गनिमयपन अडगि छएह।

“याहे जाग नहए की जाए। मुदा अपन गनिमयसँ हम गहि हटवा” ओ ई वाग वेगि-वेगि संपष्ट कए देठह।

जयगनक अगशग आ एहिसँ जुड़ठ घटगाकनसँ अप्पवानक पगना गनठ नहै छठ। काठिकागनकें सेहे पना ठागठगि ओ सपनविान ठयगपुन पहुँचि गेठह। हुगका संगे सएसँ वेसी ठडैगसग सेहे आएठ। काठिकागन ई सुगने

नहथी जे कैक पुस्त पढिने हुनका पुनवान् एयनपुनेमे नहै छएह । हुनको पुनवानसभ जयन्तक पुनवान् द्वाभा स्थापति पाठशाठमे पढे नहथी । आर सद्यः ओ एयनपुन गाममे छएह । अपन पुनवानक गाममे गणवक आगंद ठागी नहए छएगि, मुदा गामक माहैठसँ ओ गने दृषी छएह । जयन्तक पुनास संकटमे देयी हुनका समस्त परिवार आ मति मंडी पनेसाग छएह । यंकीका कैकवेन जयन्तसँ गप कनवाक पुनयस केवीह मुदा ओ मोगमे नहवाक कानाससँ कछि नहि वाजथी । यानू कान यति पसनी गेठ छए । सकानी महकमा सेहे पनेसाग छए । सभ समस्याक जड सुयाकन वुहाशन छए । सभकेँ श्यछा नहैक जे हुनका पकडए जाए आ गौ-छौ कएए जाए मुदा सुयाकन कही नहि कएए गपिना गए गेठ छए ।

जयन्तक अगसनक समायाग गाम-गाम पसनी गेठ । पाठशाठसँ पढे वदिवानसभ समस्त पुनागमे पसनी छएह । काने-कान ई घटकाक समायाग सभठम पसनी गेठ । गतिपुनानि गाम-गामसँ ठेकसभ एयनपुन मंडनिक ठा-पास जमा होशन गेठ । सभक मुँहमे एने वाग नहैक- "आव की होएत? जयन्तक जाग वयसिकन की ओ अगसन कति यथीजोएह?"

३५

जयन्तक अगसनक समायाग गावावाकें जहठमे पना यठठगि । से सुगी ओहे अगसन सुनु कए देठगि । जेठन वावू सहति नाम आठ अथिकानी हुनका वुहेवाक पुनयास केठक मुदा ओ एकही वाग कहथी- "जहँआ जयन्त अगसन तोड़नाह, नहिए हमहु अगसन तोड़व । अहाँसभ हुनकासँ गप्प कनू । हमना कछि कहँसँ कोनो श्रएदा नहि होएत।"

जेठक अथिकानीसभक पनेसागी वढी गेठेक मुदा कछि कनव ओकनासभक हाथमे नहि नहैक । सभकेँ एने छगुना नहैक जे गान्हटि आदनी सुयाकन एके शकनशिठी केना गए गेठ जे थागासँ एए कए उपनयनसभ ओकने वाग सुगैत अछी? जँ से नहि होशन तँ स्थिति एके पनाव नहि भेठ

नहीं। सुधाकरक सामर्थ्यक रहस्य वृहव ककरो व्रसमे गही गही गेठ छैक
 । एके दगिसँ उप्पगपुनमे घमायौकनी गए रहै अछि मुदा सुधाकरक कछि
 गही विगिडै। ओ उपाणा अछि, से अछि आ जप्पन भोग हेतैक उँतसभक संगे
 उगि गौन हाजनि गए जाए। वाहे पुनशासन! उँत अछि जे वृहव
 उपनयनि सुधाकरक घाउमेथ यथ रहै अछि ई वाग दछनिवागिठैक
 ठेकसभकेँ कछि-कछि अँदाज नैक। गँ ओ सभ युप नैक छै। सुधाकरक
 उँदाज गँ उगवागिठैक पुत्रकसभ कएएवछ छै, ओ सभ हथिआन पकड़ि
 ठेके छै मुदा जप्पन अँडि गेँवाह ओ अगसनपन वैसि गेँवाह। कही गही
 शांगिपूनास समाधानक हुनक ई पुन्यास कए यनि पहुँचयत?

ओमहूँ जहँमे गागवावाक स्थिति गतिपुनतापिनापे होश गेँवनि
 । जेठनवावू ककरो पुन्यास केँक ओ अगसन कनी गेँ गेँवाह। हुनका
 अस्पताउमे उए जएवाक व्रिमन्स गए रहै छै। संगवतः दोस गनि पुनागमेगे
 ओ सभ ओही पुन्यासमे उगि जाथि उपन अथिकनीसभक आँदसक
 पुनीकषा गए रहै छै मुदा से समय गही आएँ। ओही नागिअयागक हुनका
 हृदयाघात भेँवनि कनीकाँ ओ धी-धी केँवाह आ सभ प्पान। नागक वाग
 नैक, सभ सुनि रहै छै। ककरो य्पान गही गेँवैक। गागवावा एही दुगिआसँ
 वदि गए गेँवाह। मोन भेगे जेठक साँपिही हुनका पड़ै देप्पि उगवक पुन्यास
 केँक।

मुदा ओ नहिथिगिप्पन ने। सौसे जेठमे श्वसाद गए गेँ। गागवावा गही रहैवाह
 । अप्पवान, जेठओ सभपन समायाग आवए उगै। कनीकेँकाँमे ई समायाग
 उप्पगपुनयनि सेहे पहुँचि गेँ।

- नवीन्दन गानायस मशि, पतिाक नामः सवर्गीय सून्य गानायस
 मशि, माताक नामः सवर्गीया दयाकाशी देवी, वएसः दद वन्ध, पैाक
 गानामः अडेन डीह मााकः सगिघाँ उयोढी, व्ाः गाना सनकाक उप
 सयवि (सेवागविा), सपेशठ मेटनोपोठिन मणसिटेट,
 दठिठि(सेवागविा), शक्तिषाः यन्दनयानी मथिठि महावदियाउयसँ वीएस-

सी भौतिक वणिजानमे पुनरुषिः : दृष्टि वसिष्ठवद्विद्यालयसँ वधि सुगागक,
 पुनकाशगि क्ाः मैथिलीमे: पुनकाशग वृष:२०१७ १गो१सँ सौह यगि (आगम
 कथा), २ पुनसंगवस (गविथ), ३सुवग एह अर्था (यागना पुनसंग);
 पुनकाशग वृष:२०१८ ४ सुसाए (कथा संग्रह) ५ गमसास्यै (उपन्यास) ६
 वविथि पुनसंग (गविथ) ७महारा(उपन्यास) ८उपकोट(उपन्यास);
 पुनकाशग वृष:२०१८ ९सीमाक ओह पाग(उपन्यास)१०समायाग(गविथ
 संग्रह) ११भागू म्मा(उपन्यास) १२सुवपगठोक(उपन्यास); पुनकाशग
 वृष:२०२० १३संपगाए(उपन्यास) १४२ए थकि गीवग(संस्मनाम)१५ठहैग
 देवा(उपन्यास); पुनकाशग वृष:२०२१ १६पाथेय(संस्मनाम) १७हम आवा
 १८छी(उपन्यास) १९पुनथक पुनाग(उपन्यास); पुनकाशग वृष:२०२२
 १९वीग गिठ समय(उपन्यास) २०पुनविमिव(उपन्यास) २१वएग १८ अर्था
 सगकछि(उपन्यास) २२नाप्ट १ मंदि(उपन्यास) २३संगो(कथा संग्रह)
 २४गाय १८ छथि वसुधा(उपन्यास) २५दीप गगैग १८ए (उपन्यास)।

अपग मंगल्ये दृगिगिठिसगाउउवदिहागामाठियोग पुन पडाउ।

रूपकुमार मगोण कक्षप्रप-अग्लान सस ठडैण



कुमार मगोण कक्षप्रप

१ टा ठघुकथा

अग्लान सस ठडैण

ठांन मे वैसठ गौद सेकैण नही तप्यने गेटक कॅठ-वेठ वाणठा गेट
पोठठहँ - एकटा उन्बैस-वीस वनसिक छौड़ा गढ़ा कसठ जोड़ा वाणठ -
'सग! आहाँ ओहीठाम हमगा कोनो काण भेटा सिकस्यै?'

- ' कोण काण?'

- ' जो भेटा थियो-पुना के ट्पूशन पढ़ेगाई सस उस कस शानीकि सनम सन कछु! '

- ' हमना उसग एपन एहन कोनो काण अछा गही आहाँ कतहु आन पुछ्यौ! '

- ' सन! आहाँ के कोनो परियति! '

ओकरा पर दया आवा गेथ ठाठ जो नसिये ई कोनो वेसी प्यगना मे अछा नयने दोसन दसि मोग मे वणिठैका जाँ यमकठ जो आई काठ्ही योन सन योनिसस पहिने तेकी कस कस सन जानकारी जुटा छै... अपनत्व वढ़वैत छै आ आनाम सस वानदान के अंजाम दैत छै। श्वेन मोग मे आयुठ हाव-भाव आ येहना-भोहना सस नस छुय्या-छपट गहीठौन अछा गेपाथि घन गेठ अछा; कयि ने गाड़ी नावत नोन एकने सस थोआ थि। एकनो दू पाई नस जेतै आ हमना अपने गाड़ी साश्च गही कनस पड़ना। गाड़ी थोवा काठ हम ओनहि गिढ़ नहवै नस ई एम्हन-ओम्हन नाक-हाँक गही कस सकता। वस एकना अपन काण सस काणा। यैह सोयी कहियै - 'हमना उसग आन कोनो काण नस अछा गही हँ, एपन गेपाथि गाम गेठ अछा नावत आहाँ कस नस याही नस हम अपन गाड़ी थोवा के काण आहाँ के दस सकैत छी' ओ सहन्षतैयान नस गाड़ी थोवक आ काठ्ही श्वेन भोगे एवाक वात कही प्रामाण कस कस यथे गेठ।

गाड़ी ओ वेस नीक जाँ थोगे छठ नगड़-नगड़ कस। एहन साश्च सस नस गेपाथि कहियै ने थोगे हैत! हम गाड़ी के यानू काण घुमा कस देपस ठाठुँ। एकटा पोस्टकानूड पसठ भेटठ। ठपिठ छठै - 'नीना! एपन नक हमना कोनो काण गही भेटस थै। काण भेटति हम पाई पड़ेवाक जोगान कनवौ। नावे डंक्कन-दवाई नस गही नस पेनौ; मुदा देसी-घनेठ दवाई सस माप के जिया कस नयगाई नोहन पैघ जन्मिदानी छौ। हन्मना गही हानहि। नगवान संग छथुन। नोहन मैया - अमोठ।'

हम श्रीहृदयिणी के हाथ में ऐसे शून्य में तर्क 1898 आ श्रेय पत्र जेव में
नमैत पोस्ट ऑफिस दिसि वदि बस गेठ रही ।

-कुमान मनोज कश्यप, सम्पत्ति: गाना सनकाल के उप-
सयवि, संपत्क: सी-११, टाव-४, टाव-५, कदिवई गगनपुत्र (दिल्ली हाट
के सामने), नई दिल्ली-११००२३ मो ८८९०८९९८५० ८९७८२९६२३८ ई-मेल :
गौतमिकमानोजमाधियम

अपन मंगल्ये दित्तिगिजाडडवदिहाजमाधियम पय पडाउ

इंद्रनिमिषा कर्मा- अर्गशिपि (पेप-१८)



निमिषा कर्मा (१८६०-), शिक्षा - एम् ए, गैह - प्याणपुन, दगडा,
सासुन - गोदियिनी (वधहा), वनतमान गविस - नॉथी, हाप्याम्ड, हाप्यंड
सनकाल महिषा एवं वाठ वकिस सामाजिक सुरक्षा वगिग में वाठ वकिस
पयिणजना पदाधिकारी पद सँड सेवगविर्ता उपनागत स्वतंत्र ऐपना
मूठ हनिदी- स्वर्गीय जातिगहन कुमान कर्मा, मैथीलि अनुवाद- निमिषा
कर्मा

अज्ञानशिपिया (भाग- १८)

पूत्र कथा:

गाजा पुत्रवा उर्वशी सस वदिा उस पृथ्वी पर वापस जाई के वाग कहैत छथी। पुनः हुनका सस भेट कनवाक ठेठ अवई के वयन दस अमनावती में अपन गविस जाइत छथी।

आव आगू:

गाजा पुत्रवा के स्वर्ग सँस भूमंडल पर आएत तीन मास वीत गेठ छठ। गाज्य काय में पुत्रवाक भोग आव पहिठे सग नहि ठौत छथनी। सदपिन हुनका यथाग उर्वशी पर भगत नहैत छथनी। कपनो-कपनो ओ वनिह वेदना में व्याकुल गस जठ वगि भोग सग नउपस ठौत छथी, मुदा अनेक शीघ्र ओ स्वर्ग ठेक कुना कस जा सकैत छथै? गठ कोन कागस देयवार्थि स्वर्ग ठेक जयवाक ? एहेन कुनो कागस हुनका नहि भेटा नहठ छथनी। देवेद्वे के कुनो संदेश एयन वनी नहि आवा नहठ छठ। आव ओ कोन उपाय कथी उर्वशी सँस भठिन केन, हुनका नहि वृहना जाइत छथनी। उर्वशी के वनिह के कागस ओ भगत पूत्रक पृथ्वीक शासन व्यवस्था सम्वहानवा में समन्थ नहि गस पावा नहठ छथै।

गाजा पुत्रवा एक दिन अपन गाज प्रसाद में युपयाप वैसठ उर्वशी के यथाग में गमिग्न छथै। नहि समय गाज्य ज्योतिषी के पदानपस भेठ। अयकके हुनक दृष्टि पुत्रवाक सीया गायठ हथेठी पर यठ गेठनीठ कुनहठ वस ओ यथाग पूत्रक पुत्रवाक हथेठी के गनीक्षस कस भगत। प्रसगना हुनक भुय पर छठक उठठ ओ प्रसग्न गय वाज उठठ। -

"गाज वृहना जाइत अछि। आहँ के जीवगसंगीक साथ आनि शीघ्र भेटय वठ अछि।"

गाजा के भुय पर उदास सग मुस्कान प्रगत भेठनी छै। ओ गंभीर होइत गाज ज्योतिषी सस पुछथी -

"कोक दिन में अपनेक वाग सत्य होयन व्नाहमास देव"?

"अधिकतम छःमास! मुदा एक गोट समसूया देय्पिन्है छी नाजन्!"

"ओ कथथिकि देवना?"

"दांपत्य सुख वहुन कम अछी नाजन् अपनेक हथेथी मे। आहँ के पत्नी के व्रियोग मे आया उम्न वतिवय पड़न नाजन्"।

नाजन् ज्योतिषी केन वाग सँस नाजा के उतासह समापन मय गेथ हुनका मनामुनि केन स्नापक स्नानास आवा गेथनी पुनः दुःखी मय गेथह नाजा पुनःवा। ओ गुमसुम मस गेथनी नाजन् ज्योतिषी कक्ष मे व्यापन मोग के तोड़थि-

"मुदा अपनेक जीवनसंगीनी कोनो सायानास नमसी नहि होयतीह नाजन्"०

कुतूहल वस पुनःवा पूछथि- "शुन"?

"कुनो दैव्य गानीक योग अछी"।

पुनःवा पुनः गंभीर मस गेथनी हुनक मोग मे उवशीक स्नानास तीव्र वेग सँस हिकोन मानस उठावनी मोग मे टीस सग उडस उठावनी मुदा अपन आंगनकि व्यथा के ओ संयम सँस गयित्नाति कस ऐथनी अपन व्यवहार सँस मोगक व्यथा पुनः गट नहि होमय देथनी नाजन् ज्योतिषी पन।

नाजन् ज्योतिषी सँस एम्ह-ओम्ह के नाजन् सँस संवधि वाग होमय उठावनी

। पुनःवा हां - हूं मे अगमगायथ गाव सँस जवाव दैन रहथनी हुनक व्याग नस स्वर्ग लोक मे वैसथ अपन प्रेयसीक गकिट पहुंची गेथ छथनी

यनामे दनि इन्द्रेक संवाद आयथ। तीन दनि उपान्त वशिष कात्य वस देव सभा होमय के छथ ओही सभा मे पुनःवाक उपस्थिति आवश्यक छथ, स्वर्गक अन्ध-शासक होयवाक कानासागथ हुनक अनुपस्थिति मे कुनो वशिष कात्यवाही कोना मय सकैत छथ ?

पुनःवा के उपयुक्त अवसर भेट गेथ उवशी सँस भेट कवाका ओ शीघ्र स्वर्ग जायवाक तैयारी कनस उठावह । नत्पस्यान ओ वदि मेथह अमनपुन के दिसा मे । तथ हुनका गंतव्य पथ पन तीव्र गति सस उस गेथनी स्वर्ग मे पहुंची ओ स्वर्गपथम देवेद सँस भेट केथनी, नत्पस्यान गंदनकाग मे

जाकय उन्वशी सँस गेट कय अपन वनिह वेदना के शांन कय हृदय नृप
केथी

नृपस्यान कतेक दगि नक देव सजा गेथ जाहि में जाजा सम्भिति मय काय
नधिपादन केथी। सजा समाप्त गेथक उपाना पुनूवा के पुनः पृथ्वी पन
आवय पड़ैगी।

आव ओ पुनयेक मास स्वर्ग ओक जाय गगनाह कामस स्वयं शून के
कहनाम छै -

' स्वर्गक शासन वृषवस्था के संयाग में जाजा पुनूवा के अगुमनि एवं
सहयोग आवश्यक हैन' ।

स्वर्ग ओक जाय पन ओ उन्वशी सँस गेट अवश्य कथी दगि पुनदगि
उन्वशी-पुनूवाक प्रेम प्रगाढ़ सँस प्रगाढ़न गेथ गेथ प्रेमागुनी के
ज्वाला दुनू के हृदय में नीव सँस नीवनाम होश गेथ।

- -

जाजा पुनूवाक नथ वपु वेग सँस आकाश मागु सस यथे जा नहै छै।
पुनूवा ओहि नथ में सवाँ छैह हुनकन मोग अयंन प्रसन्न छैगी मोग
में उछाह छैगी "पयिा भठिन केन आस" - मनुष्य के स्वर्ग नक हीकिस
जाश अछी! जाजा पुनूवा नस ओहुना स्वर्गक शासन के अन्ध अधिपति
छैह।

मंद सुगंधि पवन मन-पनाम के शीतला प्रदान कस नहै छै। आकाश में
छटिपुट वाद ओम्ह-ओम्ह धूम नहै छै। एहि कामस पृथ्वी हुनका धुंय
में भटापठ मातृ एक गोथ दृष्टिगन मय नहै छै। ओ प्रसन्नता में
कछि-कछि गुणगुणाश जा नहै छैह। वृषा नस मूर्धवाग उपहा हुनक
नथ में ननै पड़ै छै। उन्वशी के देवाक वासने वड़ हुनस सँस ओ ई सजा
उपहा नैयान कनवैने छैह। नथ नीव जागि सँस अपन मागु पन यथे
नहै।

आव नथ दूसन दशिया में धूम गेथ। कछि काठ धनी ओहि दशिया में यथे नहै।

नाणा पुनूना १थ के गाना गीवन केठगि ओ शीघ्र! आनि शीघ्र अपन गानव्य
पन पंहुंया पाय के याहै नहथि। दसो दिसि मे गीनवना व्यापन छथि अयकके
हुनक दृष्टि दक्षिमी दिसि मे घुमि गेठगि। ओम्हन कछि १थ उगै हुनका
दृष्टिगीयन मेठ। नाणा पुनूना आशयनययकति नस गेठगि।

'ई १थ नस दानव ननिमति ठगै अछि' - नाणा पुनूना भोगहि भोग
सोयठगि।

'मुदा दानव के आकास माग मे नस होयवाक नहि याहि' - भोग मे सोयै
नाणा पुनूना अपन १थ ओहि दिसि मे घुमा ठेठगि पुनूना के १थ आव पुनू
दृष्ट दानव ननिमति १थ के पाछु ठगि गेठ। आव अगेक १थ हुनका देयवा
मे आवय ठगठ, जे पंक्ता वद्व नय यथि नहठ छथि पुनूना के भोग मे आसंका
होमय ठगठ -

'ई नस दानव के १थ अछि, अत्रसय एहि सन १थ के ठस कस स्वग ठेक
सस दानव आवि नहठ होयन' - सोयठथि पुनूना १थ आव अयंन गकिठ
पंहुंया गेठ छथि ओ अगाठिका १थ के नुक्वा हेगु गीवन स्वन मे आवाण
ठगैठथि, मुदा ओ सन आओन गीवन गाना सँस गानस ठगठ। ई देयनाणा के
अनहोनी के आसंका होमय ठगठ।

पुनूना अपन १थ के गाना आओन गीवन कय दानवक १थ सँस आगु गकिठ
ठेठथि आव हुनक दृष्टि एक १थ सँस टकनायठ। अगे! ई की मेठ! ओहि १थ
मे नस नाणा के अपन प्रेयसी उत्रशी छथिह। संगहि छथिह उत्रशीक प्रायि
सप्यो यतिनठेया! नाणा के एक हठक उत्रशी के मेठ गेठगि! नाणा के हठक
पावा एक कनुम यतिकान गकिठ पडठ उत्रशी के कंड सँस अपन नक्षा हेगु!
ओह! दानव नाण केशियोन सन स्वगक हुनू अपसना के हाम कय पडा
नहठ अछि! हगान पुनूना के मसनाधिक मे ई वाग वणिठि सन यमक उठठ!
नाणा हठ अपन नठवान गकिठ ठेठथि! ओहि १थ सस पहठिठि नठवान गकिठ
गेठ छथि हुनू के मय्य युद्व होमय ठगठ। देयनिहि-देयन मे आग्नेयासून
के प्रयोग कनस ठगठ केशि कछि क्षम पुनूना ककिनव्यवमिठ सन नस

गोवाह केशी के द्वाजा आग्नेयास्त्रक प्रयोग कनवा संस कृषुव्य गस गाजा पुनवा अपन नठवा श्रेकी शीघ्र दक्षि अस्त्रक प्रयोग कनस ठाठथी आव दूग के मध्य घनघो न युद्ध होमय ठाठ। एहि अप्नायाशति आकनमस सस ओगा नस दानवनाण कछि धवडा गेठ छठ मुदा दानवक हौसठा वुंठ छठ, कानम शत्रु गतिंग असगन छठ। घमासाग युद्ध होमय ठाठ।

पुनवा एहि युद्ध संस कनको व्रियति नहि गेठथी ओ नस क्रोध सस उन्मत्त छठ। आयनि दानवनाण केशि ह्नुक प्रयितामा पन अपन कुट्टी नयने छठ। अपन प्रयितामा पन उड्य वठ हाथ के कटवा हेतु ओ अपन पूनस शक्ति संस युद्ध कस नहठ छठ। अगेको नाक्षस अपन पूनास गंवाओठ। आव वहुन कम दानव दृष्टगोयन गस नहठ छठ। पुनवा के असाह एवं युद्ध के गति अयंन नीवन वेग मे आवि गेठ छठ। गाजा आव मायास्त्र के प्रयोग केठथी दानव के अगेको पुनवा दृष्टगोयन होमय ठाठ। ओ सग वास्त्रवकि पुनवा के यगिहति नहि कय सकठ। आ वास्त्रवकि पुनवा के छोडा कस अग्र्य छाया पुनवा संस युद्धयान गय गेठथी।

आव गाजा अपन वनछी नकिठि ठेठथी आ इकन प्रयोग केशि पन केठथी ओकन छाती सस नकन के यान हनगा सग हहड ठाठ। केशि जाठेक वेनी नठवाक वान कएठ ओ पुनवा के कवयवद्ध वाहु सस टकनाकस व्रायु मे व्रिषिग होमय ठाठ। आव केशि मूर्च्छति गय नथ मे पसि पडठ।

अपन गाजा के मूर्च्छति पावा दानव गाम गयानक हुंका नयन ठाठ। ओ सग पुनवा के अप्पन यनि नथ नक आवै सस नोका नहठ छठ। पुनः आग्नेयास्त्र के प्रयोग गाजा पुनवा द्वाजा कएठ गेठ। आव जाठेक गठ-युगठ दानव गाम वयठ छठ। ओ सग व्रायुमंडठ मे गनान कनैत पसस ठाठ।

पुनवा अपन नथ सस उछाठ मानी केशी के नथ मे प्रव्रिष्ट गय गेठथी, एवं केशी के नथ सस नकिठि न्मंडठ के दिसा मे श्रेक देठथी। पुनः ओकन नथ सस उन्वशी एवं यतिनठेया के अपन नथ के दिसा मे उछाठि देठथी। ओ दूग सप्पी आश्वसत्र गय नथ मे वैस गेठी। आव पुनवा स्वयं एक उछाठ गनठ आ अपन नथ मे प्रव्रिष्ट गस गेठ। नथ पुनः यठगाई प्रानंठ कएठ आव ओ व्रिपिनी

दशिया में (सुवर्णाक दशिया में) जा रहै छै ।

उन्वशी अपन पुन्यिनाम के पावा भाव-वर्गिनी मस रहै छै। हुनक पुनसर्गना के कुनो सीमा नहि छै। यैह स्थिति पुनूना के छै । उन्वशी के सुनक्षति अपन मथ में आनि जाणा आनि पुनसर्ग छै। पुनसर्ग मुप्य हंसन जाणा कहैथी -

"प्रदिहम सही यन्निह रहै छी मस आहँ समभवतः यन्निथेया थकिहँ आहँ दुनू सप्यो पाणा छेकक यात्ना पन मनाम के वासो जा रहै छैहँ? हँ ! सुवर्ग छेक में आव आहँ सभ के देपस के छे कछि नहि वियथ छै?"

यन्निथेया - "जाण आहँ के हंसी सूहै अछि, आ हम सभ अन्धन मयगुनस मस गे छैहँ"।

"इ योनी कोना पकड़ैक आहँ दुनू सप्यो के?"

"इ हमना नहि उन्वशी सस पूछव मस डीक रहै। कएक सप्यो! गो युप कएक छै, जाण के पुनसर्ग के जवाव दहुन!"

"हम! हम! हम कहियनि? हँ जाण ! वासुव में दोष हम छै।"

"हम यैह मस पूछै छी! ओकन हाथ में कोना पकड़ै आहँ दुनू?"

उन्वशी के मधुन सुवर्ग गुंजाति होमय छै। पुनूना के कनाम गह्वर में हुनक आवाज अनाक वृण्ड सग टप-टप टपकस छै। ओ गनिना अपन दृष्टि उन्वशी पन जमौने छै। उन्वशी जाणा के गनिना अपन मुप्य के नहिने देपि छै। वस वीय-वीयमें अपन आँप्य के पठक के पदा सस हाँपि छै। वावावनाम में उन्वशी के आवाज गुंजाति मस रहै छै, आ जाणा हुनक मधुन सुवर्ग सुनि अपन सुय-वुय वसिने जा रहै छै। -

"अपन कक्ष में वैसठ-वैसठ जायनी हमन मोग कुम्हति होमय छै। हम यन्निथेया छै। पहुंयहँ ओकना गीद सँस जाओ, पुनः मनाम कनाक योना वनाओ"।

"वाह कतेक नीक वा ! जवाव नहि आहँ के सौदयमयी देवी-गाम! अन्ध

गाता-पुनह आ धूमस के शौक! आ उहे केकन! सुंदरता के देवी-गाम के!
वाह-वाह! की कहव ! की आहँ सग के ज्ञान गह, कीजे केओ देया आहँ
सग के आहँ के सुंदरता ओकन नस प्राम हाम कस ठेग। अग ओ कछु
सकता नपैवठा होयन नयन वधूपुत्रक आहँ के उग कस अपन सयगगान के
सुंगान वनाओन"।

"जाऊ! छोड़िदिपि! हम गह वनायव आव आगु कछुओ। आहँ नस हमन हंसी
उड़ावय ठाउहँ आहँ हमना वग नहठ छी"। उत्रसी हृदय मे प्रसन्न होरा
मुदा अपन सस मयुन क्रोध देयावैत वजरीह -

"गह-गह आहँ कहू गो आहँ के वगेवाक सामथ्य नस वृहमा जी के गह
छठग, नयन हमना कोन हम्भन जे आहँ के वगायव"?

"कही दहुन यतिनेया आव तो वग दहुन, हम गह वाजव कछु" - उत्रसी
मान देयावैत वजरीह।

"गहीगे दाई हम गह कहवई कछुओ ! हम दू गोटे के वीय वाजस वाठी के छी"
- यतिनेया मुस्कारन कहरीह।

"की हम आ तो अठा-अठा शोमी के थकिहँ"?

"अवस्य! पहिठि गह छठहँ, मुदा आव नस गेठहँ"।

"गठा से कोना"!

"एकन पुत्रकष प्रमाम साक्षात गाजा पुनवा छथी। गहू सस वढी कस
आहँ दूग के एकही सुन मे यडकैत हृदय अछीजे, एकहकिथा कही नहठ अछी
"।

"अय्य आव हम वृहठहँ, अहँ उत्रसी के हृदय के यडकन यतिनेगेठहँ
अछी!"

गाजा पुनवा मुस्कारन वाजि उठाह।

"हँओ अपन यडकन संग एकहीगाम ठेग नहैत छैक, आ ओ गाम आहँक थकि
गाजन्"।

यतिनेष्या के मुप्य संस ई वाग सुगि उन्वशी गंभीर गय गेथिह
 घवडाउ लूगी सप्पी, हम नस आहँ के गणदाम थकिहँ आहँ के ई वाग कुनो
 तेसग के काग तक गहि पंह्यन।

, "हम नस सुगिये ऐथहँ ! गहि की! तेसग काग तक नस वाग जा पंह्यन"। -
 पुनूगवा हंसैग-हंसैग वणथिह

"कथा सुगैहँ आहँ"? - उन्वशी पूछथिह

"वैहवैहक आहँ पुनूगवा के मुप्य संस आवाग गहि गकिथि पाओथ घवनाहट मे ।

"आपुआपुआपु " -

अपग गीह गकिथि कस गकथ अगानस ठाथिह उन्वशी पुनूगवा के ई टैप्या
 यतिनेष्या आ पुनूगवा टुगू गोटे हंसस ठा थथि। आव उन्वशी संकोय वस एव
 ठाजा संस अपग ट्प्टा हुका ऐथथि कछि देग तक मौग व्पापग गहठ हुगका
 गीग के मय्य, पुगः यतिनेष्या वाणथि-

"सुवगु ठोक नस संकट संस पुगः घेना गेथ वुहाईग अछि आव नस हमग
 सवहक पुगपिडा यगना मे पडथ अछि।

"गहि आव एहेग कछि गहि खेपग, कएक नस उन्पातक गइड केशि भगि गेथ
 अछि"। - गणा पुनूगवा हुगका टुगू के आस्वसग केथथि।

यतिनेष्या मौग नस गेथिह । उन्वशी मौग गंग केथथि-

"ई टुगघटना माग आहँ के कागस गेथ "।

"को! कथा कहैहँ ! हम थकिहँ एकग कागस! हमग कागस गेथ ई टुगघटना !

ई कोना कहि सकैग छी आहँ"? - पुनूगवा पूछथिह

"हँ! हमग ह्दय के योगी केहँ आहँ! हम ओकग गवास कगैग पंह्यनहँ उद्गग
 मे, आ ओगहि ई टुगघटना नस गेथ " - उन्वशीक एहि वाग पग यतिनेष्या आ
 पुनूगवा टुगू हंसस ठाथिह

"आहँ अपग ह्दय के वपिय मे यतिनेष्या संस पूछि थिहँ नस योगक गगम
 ई वग दगिथि, गयग आहँ के योग के गवास कगवा हेग उद्गग मे जाय के

आवश्यकता नहीं है।"

पुनः एक वेग सम्मिति उहाका पसना गेठ। एहि पुनका सस हंसी-द्विगि
सस पनीपुनस वाग करौग-करौग ओ आगंद पुनक कपनी आ कोग अमनावनी
पुह्युगिठथी कनिको पुनाग नहि निस सकठनी कछु काठ पुन के दुग्धना
के ओ सग आगंद मय वागावनास मे वसिनी गेठ छथाह।

कामसः

अपन मंगल्ये दितोनीठिजा उडवदिहावाठियोम पन पठाउ।

३७संगोष कुमान नाथ ' वटोही' मंगलौगा (यागावाहकि उपग्यास १रम पेप)



संगोष कुमान नाथ ' वटोही'

' मंगलौगा' (यागावाहकि उपग्यास-वाहम पेप)

आव हम थाका गेठुं अछा दौडैग-दौडैग वेदम नऽ गेठुं हमा आव हमना सँ

गर्ह होयत । वुह्णा जायत अर्था- पाएन टुटा गिेठ गान्हाटा सँ दौड नहए छी।
अप्यनो धनी वटोही वन छी। वटोही नाम आव हमना गीक गर्ह ठागानहए अर्था
२००२ मे हमन मर्तिन आओन गुनुजी डॉ० कशिन कानीगन हमना ई नाम
देअर्था, पनभ्य आव वुह्णा जायत अर्था ई नाम नाप्य कऽ हम पैघ गठती
केहँ अर्था आव कतेक दिसस धनी दौडैत नहू ? भोग थाक गिेठ अर्था वटोही
आव गर्ह नहव हम।

कशिनजी केन पुनर्ता हम आगानी छी। वो मंगनौगा गामक एकटा पैघ वद्विवाग
छर्था हाथिया पन हुनकन पनिगी छर्हा जेठवे केन गौकनी सँ वो गिाङ्ग एऽ
देअर्थागिह। हमना व्रियागे ई हनिकन पैघ गठती छठर्हा पानकागिता सँ हनिका
वड पुनेम छठर्हा देसक नाजधानी दिल्डी मे कर्नाअन वनवे केँ कोशशि केअर्था
, पनभ्य मासकमपुनकेशन मे डगिनी नहएक वादो वेसी दनि धनी वो सकसेस
गर्ह मेअर्था जेडयो जगनठानिम मे पीजी डपिठेमा छर्हा वीएड आओन
एमएड छर्था पीएय-डी केन डगिनी छर्हा, पनभ्य हुनकन व्रियाग कनिको सँ
गर्ह मेअर्था छर्हा वो मंगनौगा गामक मान्कस छर्था

कछि सुनुआन गँ कनैत छर्था, पनभ्य वो काज मँह्यान मे शँसि जायत छर्हा
संस्था आओन संस्थान वगेवाक हनिका सँ कयो सीप्यए सकैत छी। आणु धनी
ओ अपन सद्विधांत पन अडगि छर्था अपने आप केँ धन मे वग्न केने नहैत
छर्था कनिको सँ मेअजोठ गर्हा गामक वद्विवाता केन ई गानि हमना वटोही वनौगे
अर्था

ई गौडगामा गाम छर्था पनगा हनहिन दान उय्य वद्विवाअथ, गौडगामा सँ
१८८८ मे वो दवर्तीय श्नेमी सँ उर्नीनाम मेअह अर्था हमना सँ ओ एक क्वास
सगियिन छर्था हनेनाम , वासुदेव, आनंद, अजय, अमन गकुन आओन
ठाठवोय ई सग कयो एक वैय केन वद्विवाथी छर्था

ठाठवोच जी केन दठिठी एगसीआन मे अपन एभ्वैउनी केन श्वैकूनी छगही
 अपन मशीन वैगैवे छथी ओ वी ए एम ए कनवा मे वसिवास गही केँठथी उ
 जा रन मे कोल्स कऽ के वणिगेस कनवाक हनिकन मोन भेठगही गहु-गहु जानि
 सँ ओ आगा वढा नहठ छथी दोसन केन श्वैकूनी मे उणिारन केन गौकनी
 छोडवाक वाद पहनि एकटा कपडा मे जाडी काण केन मशीन गड्डा कँठेगी
 मे ठगौठथी आव वो दोसन मशीन ठगौठथी मोन हन्यति भेठ सुभाष केँ शादी
 केन नसिपुसन मे दठिठी मे होठठ मे मठिठ छठथी ३ मंगौगा गामक गाम कऽ
 नहठ छथी

गनीव आओन माय-वापक मुसठाक वाद की हाठ होएन छै से ह्येगाम केन जनिगी
 सँ वुहिसकैठ छी। तीगि भैय्यानी मे ह्येगाम सवसँ छोट छथी सवसँ गभ्वन
 आओन माँहठि कोठकाना मे स्थापति गऽ गेठहा ह्येगाम पढवा मे गीक नहैठ,
 पनअ्य गनीवी पुनगिनि केँ मानि दैठकगही वंवरि मे काण कनवा ठेठ गेठ
 छठथी एकटा आँप्य पहनैह गगवान ठऽ ठेठे छठगही कछु घटना मे गतेक ने
 मानि ठगौठने जे हनिकन शनीन वेदम गऽ गेठगही आव ओ घन ओगनने छथी
 मजुनी कनके जनिगी कटैठ छथी

आगंद केन जनिगी ओना कोना ग गेठैगह, गहीपना अछी कँमन्स गाय्पा
 कऽ वो दनगंगा मे अठठाह मोहठठा मे गनीन गगान ठाँठ मे वो पढैठ छठहा
 कँमन्स केन गीक वदियान्थी गऽ गेठ छठहा, पनअ्य हुगका की भेठगही?
 ओ दमिगी नूपेस वीमान छथी नाँयी सँ सेहे ईठाठ भेठगही, पनअ्य वो गीक
 गही भेठहा ठीक कहैठ छै जे गकुनी केँ शपियन्त्र गनहस केँठक वाद ओ वेसी
 सोयऽ ठगठथनिह , तै वनाह गऽ गेठहा गगवान जावै पना गही हुगका की
 भेठगही!!

आगंदजी गनीगाम धुमि अँवैठ छथी आओन अपन दठान पन आवाकऽ वैस
 जायत छथी ३ हनिकन उँठे केन नूटनि छयिगह एक दनि हुगगा स्थाग मे हम

पढ़वैत नही, ओ आवा कऽ कापी पन कछि उषिँ दैथनिह । वदियाँथी सभ उना गेठ छथ, पनज्य वो एकटा मजग केन मुपड़ा उषिँने छथथी

हम पुछथियिन्ह- की समायाँ अछि आंगँदी ?

वो कछि गहि वलथह मुँह वयिकवैत यथ गेठथी गामक पुनगिा केन अर पुनकामेस द्नुगाँ लियेन देपिकऽ कगिको क्तेन छायी जायत। आंगँदी आव जनिगीमनी ओहनिग नहनाह हुनका सँ छोट मारिँ कँ दूटा वाठक मेठैन्ह, पनज्य वो ओहनिग नह गेठह।

वासुदेव जी गामाँ वषिय सँ पीएय-डी केने छथी पुरस टू वदियाँथ वायोपूसी मे शिक्षक मेठह अछी। द्नुगाँ पूजा समाँति केन कोषायुषकष छथी २०११ सँ वो अर पद कँ संभाठने छथी। हनिकन व्याह हंडाव-एन मेठ नहैन्ह। वो कहैत छथी घन मे कयिँ उड़-विड़ि उगौने अछी मजग सभ उग दौड़ उगावैत छथनिह हुनकन कगियाँ दनमंगा मे अंग्तेन नहैत छथी। ओ अंग्तेन मंगनौगा मे नहैत छथी। वो सेन व्याह गहि कनाह आओन हुनकन कगियाँ सेहे अप्पन यनी दोसन व्याह गहि केँथिहय। वो अपन जनिगी कँ जेगा माँ द्नुगाँ कँ अन्पस कऽ दैथनिह।

मंगनौगा गाम मे वासुदेव जी ओहनिग नैह जेठह मनो। हनिमन कऽके पुछथियिन्ह - की दोसन व्याह गहि कनव सन ? हुनकन आँपिँ उठ-पीयन मऽ गेठैन्ह ओ कहथथि - अर गप कँ यन्या गहि उठायवा जनिगी मे एकटा व्याह केँहुँ आव दोसन गहि कनवा दैपैत गहि छथिय घन मे कयिँ आगाँ उगौने अछी ई आगाँ उगौठ छथिय कनिमोन वरहम ?

आंगँदी आओन जगान्दन के जोड़ी गाम मे पूव जमैत छथैह। गाम मे ' युदुन-प्यटमठ' शवद केन पुनयाँ कनवा मे ई द्नुगु गीटे के हाथ छथैन्ह। जगान्दन पढवा मे सँघैठ छथह। वो निगिसाँठ पहँठ वरुग मे नहथह अछी। नपनो

कतिव पढे गहि भैरैगह नपन हानिके माहटन साहव दूसना मे हनिकन गाम आगा वढा देथगिह कहुना-कहुना केँ आठ क्वास नक पढा केँ कोठकना यथी गेला हनिकन वावूगी कोठकना काठीघाट मे पुठसि मेस मे प्पाना प्पेवाक थेठ गाम ठप्पिा देथगिह आओन यकनवडिया मे मोटन गाडी ट्नेगि सेटन मे ड्नाइवन वनवाक थेठ गाम ठप्पि देथगिह ठासेस नऽ टाका दऽके वगि गेथै , पनभ्य वावूगी मुइला के वादो यनहुनका गाडी यथैगै सीपठ गहि भैरैगह हुनकन वेटी पढवा मे नीक अछि, पनभ्य गनीवी ओकना आगा गहि पढऽ दैतौ वो संकनानाऽसगिक पाउऽन सुँकवा मे आगू छथी

गाम मे वनाहक संपुप्रा वढा नहथ अछी दानू गाम मे वकी नहथ अछी बांग, गाजा , दानू पीवा केँ जवनका सग अपन कपाड मे कानप्पि ठेपने जायत अछी नसा केँ यक्कन मे पूना गाम वनवाए गऽ नहथ अछी

- संतोष कुमान नाथ ' वटोही' , ग्नाम-मंगनौग

ऐ नयनापन अपन मंगल्ये दितौनीठिसनाऽऽवादिहानामाठियोन पन पडाउ

इऽआयान्य नामानगद मसुऽठ-जाना वनाम जानावािह् यनम संकट मुक्क



आयान्प्र नामाङ्क मंडल

जातिविनाम जातिविद् धनम संकट मुक्त

१

जातिविनाम जातिविद्

वहिन जाति आधानि गामना (थहे गहिन यासगे वासे पुनत्रेय) पन उय्य ग्यायाय्य, पटना ननकाय पुनगाव से नोक उगा देठक ह्याकुछ ठोग अर आधान पन प्रायकि दायन कैठे नहठ ह्य क अरसे जातीय वषिमना वढन आ दोसन र क जागगामना कनावे के अयकिनी केग्टून सनकान ह्यागौक वहिन सनकान के कहना ह्य क र जागगामना ग ह्य वठक एकटा सन्वे ह्याआ सन्वे कने के अयकिनी नाम्प्र सनकान होर ह्या

पहठि उय्य ग्यायाय्य गामना पन नोक उगावे संरकान क देठे नह्यागव प्रायकि काना सन्वोय्य ग्यायाय्य मे गेठा सन्वोय्य ग्यायाय्य प्रायकि काना के उय्य ग्यायाय्य मे जाय के आदेश देशन उय्य ग्यायाय्य के आदेश देठन क

तीन दिन के अंदर अंतर्निष्ठ शैक्षणिक कल्याणों पर आदेश के आदेश में उच्च न्यायालय अप्पन अंतर्निष्ठ आदेश में जातिगत गणना पुनर्-रचना के लिए उच्च न्यायालय सुनवाई पुनर्-रचना में न्यायानुसार है।

जातिगत समता के कल्याण है कि लोक कल्याणकारी योजना के लिए सांख्यिकी के आवश्यकता है है। किंतु वह न्यायालयों एक जातिकारी मांगों को एकत्रित करने में उन कल्याणकारी योजना के लिए करने में व्यवधान है है।

मंडल आयोग के लिए करने में दक्षिण में न्यायालयों समय में १९३९ में भी जातिगत गणना के डेटा के आधार पर पछिड़ा वर्ग के रूपांतरित आकृष्य शक्ति आ सेवा क्षेत्र में देते गेला अनुसूचित जाति आ अनुसूचित जनजाति के जनगणना करने के प्रावधान संविधान में है। लेकिन सामान्य वर्ग आ पछिड़ा वर्ग के जातिगत गणना के प्रावधान न हान जातिगत गणना के लिए जनकल्याण के लिए संविधान संशोधन करार आवश्यक है है। जाय है सामान्य वर्ग के बिना जातिगत डेटा के आर्थिक आधार पर १० प्रतिशत आर्थिक आधार पर आकृष्य में गैरजातीय संविधान में आर्थिक आधार पर आकृष्य देते के प्रावधान न हान संविधान में केवल सामाजिक आ शैक्षणिक पछिड़ापन के आधार पर शक्ति आ सेवा क्षेत्र में आकृष्य देते के प्रावधान है।

जो समाज में जाति है न जाति के गणना आवश्यकता है। नवे लोक कल्याण के लिए अनुपातिक योजना बनाए जा सकते है। है उन हान आ जाति के काम बन जा है। लेकिन जो जाति के वार है है न एक अनुसूचित जाति एक जातीय कर है। अतः में गणना के प्राधान्य में महत्व है है आ जो जाति से घना है। लोग अप्पन नोटी-वेटी के संबंध अप्पन जाति में कर है। है जाति के अप्पन कर है। है जाति के संघ-संघन है। संगठन न अंतरजातीय स्तर तक वगैरह है। जातिगत विद्वेष कर पानु जाति से घनाताक है कि सामाजिक समता है। आर्यो

समाप्त मे जातीय व्रिशापण आ व्रिषिभता ह्या जातगित व्रिषिभता वण १ह्य अर
 छे जाति आधारी सन्ने के व्रितीय कैठ जा १हठ ह्या भागगीय उय्य
 ग्याप्राप्य के सभ नथ्य पन व्रियान करे के आवस्यकता ह्याअसठ मे ३ जाति
 वगाम जातव्रिाद के ठडाई ह्या

२

वनम संकट मुक्ता

गाजेस्रव पनाप पनापगढ के पूव जमीदान १हठगाहुगका गीन सैय वधि
 जमीन १हेठम्वा यौडा दूमंजिाि ह्वेठीादूना पन दू गो हथी, दूगो घोडा, दस
 जोडा वैठ, यान गो बैसी आ यान गो गाय १हेठहगि गौकन गौकनागी , टहू-
 टहूनी, गोवन कढनी १हेठन जोते के छेठ हनवाह, माठ जाठ के देय्यमाठ छेठ
 गौकन, पेती करे छेठ मजदूर-मजदूरानि आ जोडैयन १हेठेस मुकदमा देय्ये
 छेठ मैगेजना हथी के छेठ महावन, घोडा के छेठ सहसवान, श्रुटिगि गाडी के
 छेठ कोयवान, वैठगाडी के छेठ वहठवान आ एगो जीप के छेठ ड्नाइवन १हे

पय्यीस वन्य के गाजेस्रव पनाप सादी सुदा १हेठनवाठी
 म्गाठिगी भी नामगढ के जमीदान सून्य पनाप के एकठौती वेटी १हे वाइस
 वनस के म्गाठिगी पांयवां तक पढठ १हे साठे पांय श्रुट , नाक गकस आ
 शरीर के कटगि गीक १हे छेकनि ंग से मध्यमि १हेभागे क्शिप्राभठा १हे
 सनातक गाजेस्रव पनाप अपगे गोन गुनाक आ ठागग छह श्रुट के वांका
 जवान १हेकनयिा मुंछ हुगका जवानि मे यान यांठ ठावाेदूगू अपन जवानि मे
 गोना ठावैठ पानव्रिातिकि जीवन जीयन १हे

एक दनि गाजेस्रव पनाप के गजान अपन गोवन कढनी दठति वधिवा
 कोसठयिा के एकठौती वेटी १गयिा पन पनठानयिा वोर दनि अपना वमिान
 मतानी के वदठे गोवन काठे आयठ १हे १गयिा पूव सुगन १हेअगनह वनस
 के १गयिा के देय्यते गाजेस्रव पनाप के डकमूगी ठाग गेठभागे क्दिप्यते १ह

गोषा कर्गिका देन के वाद गाजोस्वरन पुनताप वोठठन-तू न कोसठिया के वटी छे ना नगिया वोठठक-जी। गाजोस्वरन पुनताप वोठठन-वृहुन दगि के वाद देपठउि ह्य कंहा नैहै नहैय ह्य । नगिया वोठठक- हम अपना मामा इंहा नैहै नहै ह्य हमन गानी वमिान नैहै नहै ह्यगानी के सेवा ठेठ मामा वुठा ठे नहै ह्य आवाहमन गानी मन गेठागैइठा आवाहम इंहे नहवा आर हमना माय के वुप्यान ठागठ ह्य गैइठा काम कने हमही आ गेठी ह्य।

इ वाग सुनके गाजोस्वरन पुनताप कहठन- हंमाय के आगाम कने दे आ काम कने तू ही आआ गाजोस्वरन पुनताप माठ जाठ के घन देपैठ ह्येठी के ओन यठ गेठन।

गाजोस्वरन पुनताप ह्येठी में न यठ अयठन।

ठेकगि मग माठजाठ के घन में नह गेठादठि नगिया में अठक गेठा गाजोस्वरन पुनताप के गाग के गीग उड गेठानाग में एक वाग गाजोस्वरन पुनताप के म्गाठगि वोठठक- कवाग आर गीग न अवैय क्वा।

गाजोस्वरन पुनताप आंय मुठगे कहठन- कोगो वाग गानीग आ नहै ह्य कहके पहठि वाग हूइ वोठठन।

गाजोस्वरन पुनताप केहुना क के गाग वगैठनामाने क नगिया के इंगान कने नहैठन।

नगिया गोवन काठे साग वजे सुवह में आयठउ नहनी के प्यनहा से माठजाठ के घन प्यनैठ नहै गाजोस्वरन पुनताप गी माठजाठ के घन के मुपैठन कने के वहागे आ गेठन। नगिया थोड़ा सकपकायठअठेन नगिया अपना ओठुंकी के समाहन ठक जे हनवायठ के कामग गीया गनि गेठ नहै।

गाजोस्वरन पुनताप वोठठन- माय के कहिठन हैउ वुप्यान कम गेठैइ कनिग। नगिया वोठठक- ना अमी हाथ-मथा वना नपन ह्य। नाया कसिुन डागडन के

दवा यथै ह्य णापोस्वन प्रताप वोषण- अय्छे ३ ए एक सैय नूपया आ माय के दे दिहि आ कहियि माथकि दवार एा देठथुग ह्य।

नगिया घने गेठ आ माय के एक सैय नूपया देठक आ कहठक का भाथकि दवार एा देठथुग ह्य कौसठिया वोषक- भाथकि के हमना सग पन ययिग नहै छैय।

नगिया गति दिगि काम कने आवे ठागठ। णापोस्वन प्रताप नी गति दिगि नगिया से भाथि ठागठ। कहियि नगिया के देन हे जाय न णापोस्वन प्रताप व्याकुष हे जाय। कहियि णापोस्वन प्रताप के देन हे जाय न नगिया व्याकुष हे जाय। भागे के व्याकुषता दोगी ओन नहे भागे कऱि ३ प्रेम के आहट नहे। णापोस्वन प्रताप नी हवेथि के ओन यठ गेठग।

नगिया काम के अपना घन यठ गेठ। नगिया अपना माय के कुछ न कहठकाश्चै नगिया काम कने आयठ। णापोस्वन प्रताप नी आ गेठग। णापोस्वन प्रताप पूछठग- माय के का हाठ याठ हौउ। नगिया कहठक- धीने धीने सुधान हे नहठ हैय।

णापोस्वन प्रताप हवेथि के ओन यठ गेठग। आ नगिया अपना घने।

नगिया श्चै सवेने काम कने आयठ। णापोस्वन प्रताप नी आ गेठग। णापोस्वन प्रताप नगिया से वोकना माय के हाठ याठ पूछठग। नगिया वौठक का भाय के हाठ याठ ठीक हे नहठ ह्य। नगिया के णापोस्वन प्रताप के सहगुनूना आ व्पगना प्रेम के ओन वढे ठागठ।

नहगि णापोस्वन प्रताप के नगिया के सुगदना आकनसति कने ठागठ आ व्पगना प्रेम के डेन मे वांवे ठागठ।

एनी म्वाठिनी णापोस्वन प्रताप के व्यवहान मे आयठ पनविनन के प्योण मे नहेपना न ठागठ। ठेकनि एक नाग मे जव म्वाठिनी पूछठक का अंहा

हमना पहिले ठेप्या पुत्रान न कतै छी न नापोस्वपन पुनताप कहलन कि हमना नगिया से प्रेम न गेठ ह्य म्नागिनी कहलक- वैर गोवन कठनी कोसठिया के वेटी नगिया से नापोस्वपन पुनताप कहलन- हांकोकना वगि हम न नह सकै छी। म्नागिनी कहलक- इ अंहा कति वाग कतै छी। वैर गोवन कठनी के वेटी से अंहा वश्रिह क के हवेथि मे नप्यवैर हम न होय देवा।

संजोग इ भेठ कति नगिया के मामा नगिया के वश्रिह वगठ के गांन शक्तिन मे ठिक क देठका नगिया वश्रिह के वगिथ न कन सकथ। नापोस्वपन पुनताप श्री गुन नहोठ। नय समय पन नगिया के वश्रिह हो गेठ। नगिया ससुना यठ गेठ। जागिआ समाज के नगिाण के मुतावकि यान दगि वाद अपना गहनि पुनतापगठ आ गेठ।

कहू सवेने छेन नगिये काम कते आयथ। नापोस्वपन पुनताप माठ जाठ के घन के देपे वहागे छेन आ गेठना। नापोस्वपन पुनताप कहलन- नू आ गेठ। हम न तोना वगि न नहवा नगिया कहलक- हमहू अंहा वगि न नह सकै छी। ठेकनि हम वश्रिह के वगिथ न कन पैथी। नापोस्वपन पुनताप कहलन- हमहू कुष न कन पैथी। नगिया आ नापोस्वपन पुनताप के प्रेम पनवाग यठे ठागठ।

यान महेगा के वाद नगिया के दूनागमन के दगि आयथ। ठेकनि नगिया दूनागमन के साश्व नकान देठकामय मामा के श्री समहावे के कोर असन नगिया पन न भेठ। नगिया आ नापोस्वपन पुनताप के संवंध के उठैत प्यवन ठकिकि आ वोकना वाप के माठूम भे गेठ। उ नगिया के संवंध के तोड़ देठका मागे कति छोड़ि छोड़ि हो गेठ।

ससुना से नगिया के संवंध टूटे के प्यवन से नगिया आ नापोस्वपन पुनताप प्युव प्युश भेठ। ठेकनि म्नागिनी कनकि यतिगि भेठ। कानन कति जमीदान पनविान मे इ सन होश नह्य ह्य। नापोस्वपन पुनताप से म्नागिनी वाजठ- कति सुनै छयि। ससुना से नगिया के संवंध टूट गेठ ह्य। नगिया ससुना जाय से रंकान कन देठ कै ह्य। हमना न अरमे अंहा के हाथ ठोय ह्य। अही सपिठे पढ़ेठे

होवै। नाजोश्वर पुताप हंसै के कहण- हम कैथ सपिये- पढेवै मृगाथिनी वाज- हंयो। जमीदा पत्रिा सभ मे एहिनि होइत नै ह्य हमरो एगो वधिया काकी अपने गौक से संवंध न्यठे छथनि। पत्रिा मे सभ युपयाप ह्य ३ एगो समहौता ह ३ हमहु अंहा से समहौता कतै छी ठेकनि अ ३ हवेथी मे हम नगिया के न रहे देवा।

नाजोश्वर पुताप कहण- हमहु नगिया के अ ३ हवेथी मे न थायवा अठो नगिया के टोठे मे मकाग वना देवै आ ठि ३ न निसनसपि मे नहवा।

अव नाजोश्वर पुताप नगिया के एगो मकाग

वना देठका आ नगिया के नाम से वसि वधि। जमीनो ठपि देठका नगिया के पति। जगह नगिया के वाप के नाम आ पता पुताप गठ ठपियाठ गेठ। नाजोश्वर पुताप दूगु जगह मे समय वतिावे ठाठ। नगिया के मायो पत्रिा से समहौता कतै ठेठका कुछ दनि वाद नगिया के माय यठ वसठा समय पाके नगिया के एगो वेटा मेठा गव वैठक मनोण कुमान आ मृगाथिनी से एगो वेटी मेठा गव न्यठक मायवी। मनोण कुमान से मायवी छौह महीना छोट नै।

मनोण आ मायवी जौने जौने पढे। मनोण के वाप के नाम नगिया के वशिहठ पति के नाम ठपियाठ गेठ। जातिनी पति के ठपियाठ गेठ। दूगु जौने जगह मे गेठ। दूगु जौने मे पुन मी पनप गेठ। मायवी मी गैजाएठ हे गेठ। समय पाके आनकषण ठाठ से मनोण सियाई वनिाग मे शंजीनियि मे गेठ। आवि मनोण आ मायवी वशिह कने के वाग कने ठाठ। मनोण के मन मे एगो वदठ के मी गव नै। अपना माय आ नाजोश्वर पुताप के संवंध के ठेका समाज के नागा बोकना मन मे वदठ ठेवे के आग ठाठ देठे नै।

मनोण आ मायवी ३ जाने कहिम आ मायवी दूगु दू जाग के छी। असे वशिह मे कोनो वाया न होयता।

एगो नाग में मायवी अपना माय के अपन आ मनोप के प्रेम संबंध के जाने में वतैठका आ कहठक कहिम दूगु गोने वश्रिह कने याहैण छी। मृगाथिनी अपन माथा पकन ठेठका मृगाथिनी कहठक कहिम गोना वावू जी से वश्रिया क के वतैयवौउनाते में सुतौण वेन मृगाथिनी नापोख्वन पुनाप के मायवी के जाने में वतैठका नापोख्वन पुनाप कहठक-३ वश्रिह न हो सकै छैया मायवी के माय नगिया न ह्यै ठेकनि हम वाप छी आ मनोपो के वाप हम छयि। मठे मृगाथिनी, तोहन जगमठ मनोप न होअ। हम मनोप के पौवकि वाप छयि। माने कहि मायवी आ मनोप के वाप हम छयि। माठव मनोप मायवी के पौवकि गाई हए। माने मनोप मायवी गाई-वहनि हए। मायवी आ मनोप में वश्रिह न हो सकै छैया। हनिदू यम में ३ वृणाति हए। दूगु दू जाण के होके श्री वश्रिह न हो सकै हए। न वनका यम संकट हए। ३ सग वाण जाते में मृगाथिनी मायवी के कोऽनी में आके वतैठक आ कहठक मायवी अ३ अ३ यम संकट से नू हो मुकन कना सकै छै। मृगाथिनी अपना कोऽनी में सुतो यठ गेठ। मायवी वहुण देन तक जाण ठे सोयैण नहे कहि हमने वावू जी के जगमठ मनोप हए। वो हमन पौवकि गाई हए। हमना दूगु में वश्रिह न हो सकै हए। हम दूगु गाई-वहण छी। सवेने मनोप भैया से मठिवा३ सोयते सोयते गनि पन गेठ।

मनोप अपना माय नगिया के अपना आ मायवी के प्रेम के जाने में वतैठक आ वश्रिह कने के जाने में कहठका नगिया कहठक-मनोप तोहन आ मायवी के वश्रिह न हो सकै छैया। मायवी हमन जगमठ न हए ठेकनि मायवी के वावू जी श्री तोहन वावू जी होआवौआ मनोप ३ एगो यम संकट हए। आ३ गोने मुकन कने के होआ।

मनोप कहठक माय ३ वाण हम जगैय छी के हम मायवी के पौवकि गाई छयि। ठेकनि हमना मन में समाज के उपेक्षा आ नागा नपैठ पुन कहठ से हमना मन में वदठ ठेवे के गाव आ गेठ नहठ हए। समाज हमना आ मायवी के गाई-वहनि न माने हए। हमना वडा मानसकि पीडा गेठ हए। आव शनाण हम जगैय छी कहि अजाण जाण के गानी, दठिण जाण के नपैठ के प्रेमकि कहै हए। आ

दृष्टि जात के गानी, अगना जात के प्रेमिका के प्रेम कहे हए ३ मापदंड समाज में व्यापक हए। जवकी छवि रंग विविधतापि अतीत काठ से यथे रह हए। वर्तमान समय में एक यथे और वढे गेठ हएकेनि गोना कहए पन हमना मन के वदए के गाल मटि गेठ। हमना मन से अगना आ दृष्टि के गाल मटि गेठ। आवहिमना मन में गार्ड-वहन के प्रेम जाग गेठ। हम मायवी के पौरिक गार्ड छवि आ मायवी हमन वहनि।

सवने कौआ के कांज कांज से मायवी के गनि टुटए। मनोए के नगिया उठेका सवने छह वणे टहलैत वेन जव मनोए आ मायवी मठिठ न गार्ड-वहन के रूप में मठिठ। मायवी कहएक-मैथी मनोए। मनोए कहएक-वहनि मायवी। आ दुगू गार्ड-वहनि आपस में गेठ मठि गेठ।

आर गणेश्वर पुताप, मृगाथिनी, मायवी, नगिया आ मनोए धन संकट से मुक्त हो गेठ।

-आयान्त्र नामांठ मंडल सामाजिक यतिक सीतामढी, मेवागविर्ण पुथानाथपक, माता-यन्ट देवी, पति-स्वर्णगणेश्वर मंडल, पत्नी-पुनमठि देवी, जन्म तिथि-०१ जगवनी १८६० प्रोप्रता-एम-एससी (नसाधन शास्त्र), एम ए (हनिदी)। नूय-साहित्यिक, मैथिली-हनिदी कवता-कहानी छपन आ आठेप पुकाशति पोथी-मैथिली कवता संग्रह मासा के न वांटयो। रंरर पुकाशति नयना-सहिया कवता संग्रह पोथी-जगक गंदनी जागकी आ शौर्य गावा रंरर पुनिका-मथिली समाज, धन-वाहन आ अपुन (मैसाम) अपवान-दैनिक मैथिली पुनजागाम पुकाश सामाजिक-सामाजिक यतिग, दायित्व-पुन जठि पुनगिथि, पुनाथमिक शिक्षक संघ, दुमना, सीतामढी स्थायी पुता-गाम-पपिना वसिगुप थावा-पुनहिन जठि-सीतामढी वर्तमान पुता-पपिना सदन, मुठियायक वान ७-०४

सीतामढी पोस्ट-यकमहवि णावि-सीतामढी णाप्र-वहिन पणि-
८४३३०२ मो नं- ८८८७३६४९०७५ ईमेअ णामागणदमाणद।७००९७।माठियोम

ए णयणाप णपण मंगव्से दण्णिणठिसणाउउवदिहाणामाठियोम प णपडा

उदंउ कसिण कणीगण-पुनूसकणी गुण्णा पुनूसकण वंटा उकैण



उा कसिण कणीगण

पुनूसकणी गुण्णा पुनूसकण वंटा उकैण (हास्य कटाक्ष)

वावा वउवउाश णहे घणि गेअ मथिठि मैथिठि ३ मैथिठि उकैण आ गुण्णा सव
पुनूसकणी षेअ मे ण यंवठे घाटी उकैण के काण काटाठेण की? एकण सवके
कोणे ठाण याम्प छै आ कोण हउकठहा के पुनूसकणी यूण्णै के ठाण छै? कणिाव
वकिर छै गैहे ठोक पढठकै गैहे आ वणपिठ साहणियकण हेवाक दावाए यूण णहेए
ई उकैण सव मणमाण प ण उण्णू यै णे हमण के की कएठेण? वासणव मे मथिठि
समाणक ठोक सव सेहे योणुकवा यै ण अई उकैण सवके मणमाण के णोकण?
के मंगणै णवाव, केकण माणे मणठव छै?

हम वज्र ही वावा मसिने मसिने की हो गेथे? घन मे उकैती हो गेथै? की कोर मांग पुआए देठकहे जो वावा तोई एना वडवडाए नहै? पुनस्कात न गेठ जाइ हइ ओकनो कहुँ उकैती होठैर? हमन गप सुन वावा हां हां के हँसे ठाठे आ वोठठकै ही कानीगन गोना सवटा प्रथाथ वुहठ छह आ प्रथाथवादी ठेपन मायप्रमे ठोक के पुनस्काती यूनी के देपान यगिहाक कए टै छहक? आ अप्रैग अगठिया के हमने स पुछै छह आ हमने स सुनै याहै छह? हम वोठठी यौ वावा हम कोनो योन उकैत के गीह मे नहै छी की? हमना पुनस्काती योनी उकैती वाजे मे कुछो ने वुहठ है क? वरू अही साशु साशु कहुँ जो पुनस्काती उकैती की हइ?

वावा वोठठकै देपै नै छहक जो मैथिली साहित्यकान सव योन उकैत ठोका अपन गीह वगेने अछाँपोहेन गीह तेहेन पुनस्कात वँटा उकैत आ तेहेन पुनस्काती गुग्गा सव ई सव तेना हो हो कनह जो एकने सव दुआने मथिथि मैथिथि वांयठ होउ? आ एही यूनी मे इ सव मथिथि मैथिथि के अपन वपौती वुह कवजा जमौने नहठ कतेक नाम गनवअह? साहित्य अकादमी, मैथिथि मोजपुनी अकादमी, मथिथि मैथिथि समिति, ठेपक संघ, पनषिद कतेको एहेन गीह आ तेक्कन गुग्गा सव मथिथि मैथिथि पुनस्कात उकैती मे ठाठ ये की? प्रथाथ कहवहक न उकैत आ गुग्गा सव वनकुट्टवैठ क अपन यठकपनी कुक्त्त के हँपे के श्रुतिक मे नहह मैथिथि पुनस्कात मे कोनो गपिपक्ष वप्रवस्था कतौ नै भेटह? जोहेन गीह आ जोहेन गुग्गा तेहेन पुनस्कात वँटा उकैती अह दुआने न मैथिथि पुनस्कात सव महवहिन न गेथै आ घनि के नार्या टै जाइ गेथै प्रथाथ कहक न उगटे हमने तोने कुंडति कहि यठकपनी कनह उ उकैत गुग्गा सव अपने कतेक कुंडति अछाँपो गपिपक्ष वप्रवस्था के वाग पन कपनश्रीनी पन उनात नउ जोह की?

हम वावा स पुछथि जो पुनस्कात देठकै आ भेटथै न अइ मे पुनस्काती उकैत आ गुग्गा कैसे हो गेथै? वावा हां हां के वोठे ठाठे ही कानीगन नहुँ सवटा हमने मुँह

अर पुनसूकान वँटा उकैत सवहक देप्पान यगिहात कनेवह न हैरए छैह सुगहअ सवटा कनिदागी एकटा गप कहअ हमन तोहन प्रथान्थवादी वयिान मथि छह आ अपन सव न कोनो गगिहो मे गै नहै छी तइयो हम तोना वसहा वनए पुनसूकान ए दयिअ आ तं हमना मथिथिंयठ टुडे पानकानि पुनसूकान वॉटा दैए न र पुनसूकानो उकैत गेथै की गै? यगिहा पनयि, सन कुटमानी, हगिहवादी होहकानी, संयोजकीय जोगानी वठे मैथथि पुनसूकान छूट मयठ छै आ उगटे अगका उपदेश जो हनकठ मुँह हपगै गीक न अर उकैत सवके अपन कनिदागी कएि गै दैथै छै एकनो सव ठेठ कहवी वगतै गे पुनसूकानो उकैत के अपकनमी मुँह उघाते गीक पुनसूकानो उकैत सव गैह नग गधिपक्ष व्यवस्था वेन हनहडी वज्जान प्यैस पतै छैगह की?

अपन मंगवुधे दगिगिठिसना उडवदिहावाभाठियोन पन पडाउ।

३१०७७ देव कामन- कथाकान गन्द वठिस नय जी के कथा पोथी ' असठ पूजा' पोथी समीक्षा- "सहयिा नोपनी"



७७७७ कामन- कथाकान गन्द वठिस नय जीके कथा पोथी "असठ पूजा" पोथी समीक्षा- "सहयिा नोपनी"

कथाकाल गण्ड व्रिषिस गाय जीके कथा पोथी "असठ पूजा"

गनिमठीक पठ्ठवी पुनकासन सँ गण्ड व्रिषिस गाय जीके कथा पोथी "असठ पूजा" २०२२ में १०४ पृष्ठक पोथी के आर एस वी एन -८७८-८८३-८३१३५-२७-८ नं० पुनापुन छैक , जकर दाम २०० टाका गनिधानि या एहि मैथिली पोथीमे १३ कथा आ ८ गोट छुक्का संग्रहनि कयल गेल छैक। 'इंठिसि क' अहए माने मैथिली में भेठ वावू । अहएस उ कथामे पतिाक धाएगागी ठेठ सव गोट सव नहँ छेसवुक पन पोस्ट छपिन नहए। गीत शक्तिधामिनि (मास्ट) नहए गनिमठी वजाल सँ अनेक वीस गगदीने कनि छैक, पंथ अपन वावुक ठेठ अन्था गीयागी ककाक कहथि पन हुनका ठे वठपुनैसन गोटि नहँ छैक। अहएक व्रिषापेसनक सव टाका गीते ' ठेठे नहँछ। पने दनि अकस्मान् पवनिसमाजमे पसयै छैक- वुडह मनी गेठह। सुगाया काकी दूग पुनागी वैगवता कयके इगनयनी पढेगे नहय। से कानि-कानिकि व्रिषाप कयै जे पांथ दनि सँ गागा नहँ वठपुनैसनक दवाया। ओको वाजथि ओह! वठपुनैसनक गोटिके अनावे वेयाताक वने हेमनेज सँ अजाए म्पु म' गेटैक। यनि गीत देयावटी कयै अछि। कथाकाल ' क दोस गीत पोस्ट छपिने नहय जे श्रोती पन भाषा पहिनाकय नसवीन पन आनी देया नहए छैक। वासनाकिकि जीवने पति। वा कयि गी ओक लेथि, उपेक्षा नहँ कनक याहि। से संदेश एहि कथाक माध्यम सँ गण्डजी पाठक वीथ देथनि अछि।

सद्यपुनकासनि एहि पोथीक अंतिम कथा थीक- छुछुगै! एहिमे जे भाव अछैक से ओकक स्थापति पुनपिडा पन केना छनहि वट्टा। अजा जाईछ, से देयाओ गेल छैक। गीतक गीत कौगी वीसने नहँ छैक। वीस वनस सेठजीके देयकिय माथपन गूआं नहँ छैछ आवा कथिसे सामाजिक गुपे आव कयि जगिण ओकन अजायक कयै! ओ तँ गीक पनगि दू वेटा अछैत , घनेछ

नोकरी के अपन गरी जो पनस्थितिबिस वना ठेठके। एक दधि उपजातिके जीवछी पुवती सँ छुहलपनकैत यनक वठे ओकना ढड़िहईन वना देठके। आ एक नूपासन टोठक गेती केँ दुस श्जेव दैत ममठिके नखादखा कनावैक कुयेष्टा यनकैछ, पनय सखठ गहि हेई। अन्ध्यांगिनी' क अगततः समहौठ सँ वलघानामे कनिय्याक मकानमे नान्पा द्विगीय पन्गीक दनूना समाजमे दैत वसोवास हेई छैक। कथाकान ई घटनाक्रम देपेवाक असंगत पनयिस केठनी अछि। जयनक गानगीय वधि अनुसारे अदाठामे घसोटठ जयवाक याही आ श्जेन आंगठक गायी शसिक कोन नहँ गमिनजना होयतैक से पसिसा आगूक वढवैत कछु गवनि संदेश देपौठ जयतैक तँ कथा उय्यकोटीक हेई। आ श्जेनो कयि वठाकनी समाजमे नागावाग वीनके पकडोस हेवाक य्ष्टना गवधिमे गहि कनैताए पोथीमे पाठकेँ दीनघ कथा पढैत वीय-वीयमे युटकुठ नूपेँ छुकथा पैत ठगतैग। गनद वधिस जोके छुकथा नयवाक आनम्नकि अन्ध्यास छैग से एहँ पोथीमे सन्धियोगे छथा तँ एहि पोथीक एक स्वतन्त्र वधि गहि वनन पयिनी स्वाद ठाग।

२

पोथी समीक्षा- "सह्या नोपनी"

गव मैथिली पोथी "सह्या नोपनी" हाठहिमे पढवैह अछि। सह्या वीहनी कथा - संग्रह केन सम्पादक छथा- डॉ. प्रमोद कुमान। हगिदी साहित्य मेँ पंप्प उगे- कवति। संग्रह केन नययिता प्रमोद वावू मैथिली साहित्य सृजन मेँ अपन उपस्थिति 'मुदति भाग' कवति। संग्रह सँ कयठहा हगिक जगवनी २०२१ मेँ वहिन कथा संग्रह "कनकनिवा" आ २०२२ मेँ सद्प्रकाशति सह्या नोपनी मैथिली भाषाक उन्नयन ठेठ गेठनी अछि। सन् १९८८ मेँ डाक्ट्ट साहव सनौती काठेठक प्रसिपिठ सँ न्याग-पन् दैत मथिठि सँ वाहन यठिठेठहा

शाधना गाणगम सँ ओतय केन्दीय वशिवदियाथ पांडयिनी, टैगो गवर्मेण्ट एम्ड साइन्स काठेणमे अन्थशास्त्रा वशिग केन अय्यक्ष्ण नहैह। हिनक अनेको पत्नी- पत्नीकेँ में ४० सँ वेशी नाष्ट्रीय-अन्तर्गत नाष्ट्रीय शोध पत्नी पुनकाशति मेथ छन्हि। वदिसी छात्रा' क कोन्सक पुनोग्राम आश्वसिन आदि अनेक पद पन काय्यन नहि एम वी ए कोन्स ऐथ वहुन नास ठपिवाक अवसन मेठठगी। घनेगो पत्नी - पत्नीकेँ में कथा कवनिा संस्मनास छपठगी। वहुनो वेन सेमिगाम आ कागश्चमेस में पत्नी पुनसात्र कयने छथि। माण्ठाषा पुननी हिनक अन्तर्गत स्पष्ट ह्यैक नहै छैक। हिनक ५ गोट वहिनी कथा ऐ पोथीमे आयठ छन्हि, यथा - इंजोणमेठ, पछिनठ पापा, कडप्योथी, अवहि वीआ आओन सुठठहि थोती। कथाक पुनासंगकिता, भाषा -शैली, शिल्प आदि वड यकिन छैक। २५ पुनूष नयनाकाम आ १८ स्त्री कथाकाम ' क कुठ ८६ गोट वहिनीकथा सहिया कयठ छैक। सब वहिनी कथा उपना उपनी पुनसंसगीय मेथ अछी।

आव समयगावकेँ कामास पाठक कम शव्दमे अयकि पढ्य-वूह्य याहैक छैक। दीनू कथाक संक्षेपाम वा उपन्यास ' क सांश जे सय शव्दक गीतन होय , ओहग नयक कथाकेँ वहिनी कथा कहठ जाईए। ई युठकूठ आ ठयुकथा सँ सुनाक होईछ। वहिनी कथाक साहित्य में गव वयो' क नूँ अन्तसंघाण मेथ अछी। कथाक आकाम छोट नहिनी एहिमे पैघ कथाक वहिनी नहैछ। जोगा दूयकेँ जामवै ठे दहिक जोगा कोनू पाठ वा पाठकेँ पाँती मे पोथकि शिल्पक सँ समवन्ध गहि दृष्टगोयन मेथ, शिल्प महाकाण पुसाद ' क - सुहि। ऐ यानी वाक्यक वहिनी कथामे गयक वागक नोपनी दूग पुनासी कन से वीना उपायैण काठ वनवनायकेँ सुहि पडैक छैक। वशिष अन्तपुनास वाना कनैण गाछन सहटा कय जाईए। अपनाने एक पैघ अन्तःकथा गुकेने अछी। ई कथा अपन सामुहिकता वा सहकारिता ' क पुनदृशन स्वरूप आवनास पृष्टक पुननिाग गडैण एक गव आकाम सहिया नोपनकि सजीव यति वनेठक ह्ण। पुसाद जीकेँ दू आनो वहिनी कथा -गोठी आओन डकमनी छपठ छैक, जे संवेदनशील या यन्याति पुत्रा

नयनाकाश सुभाष कुमान केन गीणू वहिर्गा कथा' क पात्रमे मुग्गा नामक व्यक्तित्वहेछा पहिठिमे ' दहेण उग्मूठग ' वावण छुल्ल सँ चान्ता होश देयाएथ गेछैका जाहिमे मुग्गा टाजैत वपौछ -अगाधि मास सँ ई कान्यकूम अगधियन पूनवक कनवाक होयत, कानाम एहि मास जोष्ट गायक आ अगाधि मास वहिसिक वधिरा होयता से दहेण युक्त ! दोसरो कथामे मुग्गा' क पात्री सुधा क' प्नाईवेट यकिर्गिसक सोगोग्नाश्ची कजैत ' कोन्ड- वन्ड' डारनेकट गारनेशनमे कहैत छग्हि- "जय श्री कृष्णा" ! अन्थान् उडका... तेसो कथामे मुग्गा ककाक छँसरो माटे मगोण गाय सँ कथाकाज जाणिमासा कजैत छैक - " कानाक दोहरो अन्थ सपष्ट अन्धग्न कानामा गावे कयठ गेठ अछा कापिनाईट उाँठ पुनमोद कुमान जोकेँ छैगाएहि दँद प्ष्टक पोथिक दाम १५० टाका गनियानि ; शशि पुनकाशन - काठिकापुन कयने छैका वहिर्गा कथाक छेपन अगकिम जगोवामे मगोण कुमान कानाम, धनश्याम धनेरो , जगदीश पुनसाद मंडठ, डाक्टर नामागंद हा ' नामा' , सयदोगंद सयूय, आशीष अगयगिहान, डाआगा हा साहित्यिक अक्षय गंडान केँ गनठगि अछा एहि क्षेत्रमे गव उग वढवैत कथा शिप्पी सवके स्वागत अछा

- मो०७६३१३८०७६१

अपन मंगल्ये दितिगिठिसनाउडवदिहाजामाठियोन पन पडाउ।

३११कुग्दग कानाम- मैथिली विहगि कथा- गीठ



कुण्डन कर्मा

मैथिली वीहना कथा- गीढ़

कण्ठ प्ठेस में आगू यैत एकटा यगैठ (गंजा) वृक्षकर्ता के हनशियन्ट ववू पाछू स' पजयिा क' पकड़ैयनि

"प्रओ जगान्दग ववू, कहँ गायव मय गेठ छउहुँ अहाँ !!"

ओ यगैठ आदमी देह हटकैण कहैकैण, "पागठ हो क्य़ा, कौण हो तुम ?"

जयण हनशियन्ट ववू के अपयिास भैठैणह जो कोनो अगजान आदमी के जगान्दग ववू वुहा पकैड़गेने छवाह, ओही अगजुआन आदमी सँ कषमा माँगा आगू वढैवाह

जहयिासँ दठिठि के साहयिकार सव हनशियन्ट ववू के वारन (पुनविधिनि) देठकैण अछा गहयिासँ ओ वृक्षपिण मय गेठह अछा

कोनो यगैठ आदमी हुणका जगान्दग ववू वुहाइ छथनि, न कोनो गुट्ट आदमी हुणका शियन्ट जी वुहाइ छथनि, साड़ीवाठि महठि हुणका कवयिातिनी कामिनी जी वुहाइ छथनि

कोनो वयिाह-दागक मंय हुणका कवगिीषी के मंय देप्याइ पडैण छण्हा

जयण मंय पन हुणका पाग डोपटा पहिायठ जाइ छठैण न हुणका गैसर्गाकि सुय भैठैण छठैण

एकदिनि मंयसँ ओ सनकार के पुनसंसा में कवतिा पढैठियनि, मंयेपनसँ सव साहयिकार हुणका हुनहुना देठकैणह

सब साहित्यकारों के कहव छै, साहित्यकारों में सकारणक आभियोग कनवाक साहस हेवाक याही, हनसियंद्न वावू सकारणी पुनसूकारण ठेवाक शृंगिक में सकारणक गुणगाण केवाह अछाँगाँ हनिका सब साहित्यिक मंयसँ वाग जाय !!

हनसियंद्न वावू हाथ जोड़ि सब मगधीस ठेकैण के सख्खि देठपनि, हम सगदिसँ अही पाय्ठी के पक्षयन नहै छी , हम एकन व्रियागाना आ गनिससँ सहमति नहै छी गाँ पुनसंसाभे कवति पाठ कएछुँ , जाँ कोनो ग्युगना देपार पडन न ओहो कहवा

मुदा सब मगधीस एक स्वन में कहठपनि "साहित्यकारों वएह जो सकारणक आभियोग कनवाक वुगना गाय्य , अहाँक शनीनमे नीढक हड्डी गहि अछाँ!!" नहिससँ हनसियंद्न वावूके आव कोनो मंय पन नओन गहि भेटैण छगह। सबदिन अपन कगिया के पाग डोपटाए' कहै छथनि, हमन सुवागन कनू घ' न आयठ पाहुन पनय के गंजी उडक' देपवैण छथनि, देपयौण' हमना देहमे नीढ के हड्डी छै ??

अपन मंगवुधे दगिगाठिसगाडडवदिहावाभाठियोन पन पडाउ।

इंटर-आसुतोष कुमान हा- जीवगक सीप



आसुतोष कुमान हा

जीवगक सीप

गकिकी हा अपन गनसा घन मे याय वना नहए छथिह, घडी मे दुपहनके गीग वणे छथ, समय वयावय छेथ ओ पानी, दूध, यीगी आ यायपती एक्के संग भठि क गैस पन नाप्य दैथका पाछू घुमकिड देप्यथक नऽ हुगकन पनी सोश्वा पन वड आगाम स पडथ छैपटॉप पन काण क' नहए छथ ओ अपन काण मे पूनास नूपेस डूवथ छथिह गकिकी, गनसा घन सँ हॉथ मे ठागथ घडी देप्यवाक पुनयास केथक मुदा ओकना गह दैप्यसिकथ याय सेहे गनम ग' क' पौथेथ तैयान छथ । गकिकी क', याय क' छोडि क' हॉथ मे ठेवाक श्यश्वा गह गेथ, तै ओ गनसा घनसँ आपन पनकिँ आवाण देथपनि ।

"यो कन घडी देपू ते, केनवा समय ग' नहए अछा।"

गकिकीक आवाण सुनैत पुनासव छैपटॉपक सुक्रीग दसि नाकथक आ कहथक ट्ठी वैण क"अंशवग भगिठ, गण्टी कनू, पुनषिक वस वससटॉप पन पुहुंया

वला हेतो। "

"हैं वस एक भगिठ, याय उवठ १६७ अछा। याय छागिकऽ होम अहाँकें दऽ दे छी, नयन यठ जायवा गक्की जावाव देठक "

प्राप्ति, गक्की हा आ प्रामव हाक वेटी छीह। प्रामव हा वेगठुन के एकटा सॉश्टवेयन कंपनी मे इंजीनियरि छीह आ गक्की हा वैक मे काज कएन छीह। प्राप्ति एकटा प्रिन्सेट स्कूठ मे कक्षा पांय मे पढ़ैत छीह। गक्की हा एक कप याय 'क' अपन पार्किं 'द' देप्यगिह आ गुनगुन दएवजाण दसि दौड़त। जहनि गक्की ठिखिसँ उगनिक' सोसाइटीक मुय्य दएवजाण पन पहुँचयिह, प्राप्तिक वस सेहे आवागोठ छठनी वससँ उगनैत प्राप्ति अपन माँ कें देप्यि मुसकुना उठिह।

गक्की आ प्राप्ति दुनू गोटे एक संग टहबैत घन जाय ठाठिह। प्राप्ति आर वऽ शागुन देप्यारन छीह। वाकी दनि प्राप्ति घन दसि दौड़ैत छीह। मुदा आर ओ अपन माँ 'क' संग नाठमेठ वैसावैत युपयाप यैत छीह। गक्की के सेहे प्राप्ति के ई वृत्तहान कनि अजीव ठाठ। नयने प्राप्ति पीऽ पन ठाठ स्कूठक वैग प्योठक आ गक्कीक दैन काठ वजिह, "मम्मी, वैग पकडू, वऽ गानी अछा। "

नयन प्राप्तिक माँ स्कूठ वैग पकडने छीह। नयन हुनका कनेक गानीपन वृहाशन छठनि, जो सामाग्य दनि मे गहि बिशन छै। गक्की के ई वाग वृहायठ कनि सायद प्राप्ति अपन उय गहि प्या ठेने हायत। गक्की नयन वैग प्योठक आ उय वॉक्स उठैठक नऽ वृहायठ जो एयगो गनैत अछा।

गक्की कनि गनसा क' प्रीसा से पुछयनि, अहाँ गोणन गहि प्यठहुँ?

नयने प्राप्ति जावाव देठक। "गहि" -

गक्की पुछठकै अहाँ गोणन कएक गहि प्यठहुँ?"

"वस मूऽ ठीक गहि छै। प्राप्ति जावाव देठक "

गक्की वाजठ कएक। "-?" "की मेठ?"

"स्कूठ मे कुनू टियन के डांट पड़ठ वा कुनू दोस्न सं हगडा मेठ?"

"दुनू मे सँ कछि गहि प्राप्ति जावाव देठक "

"होम वृहवै अगह क मूऽ ठीक गाय अछा, मुदा प्यागा जानू पैयाक याहि।

अंहा मोने साढ़े साग वागे घन स गकिंठ छष । आव तीग वाजागिठ अछा । अंहा मोनेसँ मूष्य छी । वज्जिह वुह्वैत केँ प्रसिा माँ प्रसिाक । "

मुदा प्रसिा पन कुनु असन गहि पडैगि ।

ओ वड सागत मोगसँ घन दसि डेग वढा नहए छषीह । प्रसिा आ ओकन माँ कछिए काठ मे अपन सुठैट मे पहुँचि गिठ प्रसिाक पतिा दनवज्जा प्रोठगि । प्रसिा केँ देयि ओ वज्जिह, "हमन सोगा वेटी आवि गिठ अछा अपन प्रसिाव । " । छष याहैत उडावय मे गोदी के वेटी

"पापा आइ मजाक गहि कू, हमन मूड आइ यनाव अछप्रसिा जवाव देठक " पापा सेहे आशयनयकति म' क' पुछठयनि कएिक"? ' " की मेठ ' ' तयने गकिंकी तुंगे वज्जयनि "मोन स मूष्य अछा"

प्रसिाव सेहे आशयनय आ यगिना कए ठाठाह ।

ओ, प्रसिा ठा आवि पुछठयनि "की मेठ वौआ"?

"कुनु प्यास वाग गै पापा वस आइ सकूठ मे हमन सवहक टियन एकटा गप्रा वषिय पढैठगि । सव वय्या के वुहे मे आवि गिठ केवठ हमना वुहे मे गहि आप्रठ । जयन वषिय समाप्त केठक वाद टियन पूना क्ठास स पूछठयनि, के के गहि वुह्वै ओ सव हाथ प्पडा कू । तयन मात्र हम हाथ उठैठुं तकन वाद क्ठासक सग वय्या हंसय ठाठा आ टियन सेहे संग मे हंसय ठाठाह । हमना कर्ना अपमान वुहाप्रठ, एहि कानासे हमन मूड उतगि गिठ आ हम मोजग तक गहि केठुं।"

ई सुगठक वाद ओकन पापा आ मम्मी सेहे हंसय ठाठाह ।

दुनु गोटेकेँ हंसैत देयि प्रसिा तमसा गेठिह आ वज्जिह देयू", आव अहाँ सग सेहे हंसैत छी । वाज्जि तमसाज्ञ कठेक प्रसिा । "

प्रसिाव प्रेमपूवक प्रसिाक माथ पन हाथ नाप्यि वज्जिह, " हम सग हंसैत नहए छी कानास अहाँ एके छोट वाग पन तमसा गेठुं, मोजगो गहि प्यप्रठुं, तयन मवषिय मे की होयन, जयन जीवन मे पैघ वविादक सामगा कनय पडना।"

प्रसिाव वेटी के वुह्वैत कहठयनि दिसन वाग जयन टियन पुछठयनि जेकना " सव क वुहे म गाय आप्रठ ओ सव गोटा हाथ प्पडा कू, तयन ईमानदानी स

हाथ प्यडा कनवाक मे ही समहदागी छथा "

"न' सकैछ, जे क्ठास मे कछि एहन वय्या हेथी जोकना वुहे मे गहि आप्रठ नर्यो हाथ गहि उठैठगि, ई वडका गठनी अछी।"

"हम अहाँ के जीवण के एकटा पैघ पाठ सपिावय याहै छी। "

"जोकना अहाँ अपन मोग मे वैसा ठपिो, जँ अहाँ केँ कहियो कुनु वाक जागकानी गहि अछी आ सामनेक व्यक्ता ओहि वाक पुनयोग क' रहथ अछी, नपन ओहि व्यक्ता सँ ओहि वाक वषिय मे अवस्य पूछू, याहे सामनेक व्यक्ता अहाँक टियन हेथी वा अहाँक मतिन हेथी वा अहाँक नसिोदान। "

प्रदि ओहि समय अहाँ आपन सम्मान देपव आ सोयव जे पूछथ पन हमन अपमान न' जायत ते अहाँ आपन जीवणक सवसँ पैघ गठनी कनवा

नवषिय मे जँ ओहि वषियक पुनयोग कतहु हेयत वा अहाँ केँ ओहि वषियक सामना कनय पडत नपन अहाँ ओहि समय वड गीक सँ पश्याताप कनवा

नपन अगहा सोयव, एहि वषियक पुनयोग हमन टियन वा हमना सोहाँ मे मतिन द्वाजा कयथ जेठ छथ मुदा हम एहि वषिय मे गहि पुछथहुँ। आ घोन जेठक वादी होम डकिशनगी वा इन्टरनेट वा कुनु दोसन माययमसँ पना गहि कनथहुँ

आ आर एहि वात हमना सोहाँ आवि जेठ अछी, ओहि समय अहाँ वड पश्याताप कनवा

संगेसंग एकटा वात मोग मे वैसा क नपू कपिटसँ कयिो सपि क गहि आवेन - सीपैत अछीजे अछी, ओ एहि ठाग सीपैत अछी आ सामनेक व्यक्ता जँ कुनु वाक ज्ञानी हेथी नऽ जानू कतहु सँ सीपवे हेनाह।

पनासव वुहवैत पनषिा वड प्पुश न' जेथीह।

पनषिा क वुहाप्रठ की ओ कुनु गठनी ने केवे छथ आ आपन पापा से ठपिट जेठ ।

गठन ओ गहि अछी अपति ओकन क्ठासक वदिप्राथी अछी पनासव प्पुशी-ऑफ यु आन दी वेस्ट पापा" वजथीह पनषिा। ठेठक प्पुशी पनषिाकेँ जोदीमे ठऽ वनू दीड"

सव हँसा रहथ छथ। पनासव कहथक यूँ पाना प्याप्रठ जाय, पेट मे यूहा सेहे कूदी रहथ अछी।

- आशुतोष कुमार हा, सहायक प्राध्यापक, प्रबंधन विभाग, मेडीकैप्स
वसिष्ठविद्यालय, इंदौर, संपर्क- फ़ोन:- श्री दगिश हा, टी वी टावर वाउंड्री
के उत्तरी ओर, मोहल्ला:- टी वी सैट, कटहिन, वहिन, पणि -
८५४१०६ मोबाइल - (+८९) ७६७७७४४०१५, ई-
मेल - ।सहोसहकुमार।हा१००२०।मा।वि।यो।म

अपन मंगल्ये दगिनी।वि।स।गा।उ।उ।व।दि।हा।वा।मा।वि।यो।म प।प।डा।उ।

४५६५ ५५६५

४५६५ कश्मीर मस्ति-जंक शूड

अछूत या प्रिस, वी स्कुट, केक,
 गंग कछेट वी गंग के यॉं-,
 पनहेण बे को गो, भेट जा २ जाँ,
 सह सभ गंग गंगी पेटा-

तेथ मे पूव कऽ गंग पको डा,
 पनी एक टकिका जो डा। जो डा-

'सूटा गूट' महक' प्या द्य पदा ग्य,
 गवगुगिया केँ, वी सेप आक गपाम,
 गंक शूड छेठ वेकथ हैछथि,
 आ, या है छथि, पग पग-, दगसग।

को छुडुगिक गह एक गहक,
 वजा ग मे अगेका गेक,
 ओहि के अठा वा, शूठ सगहक
 गंग प्रस ओ शेका

गंक शूड के पैकगि गेहगे,
 मुह मे सो अदगग अछिओ गेहगे।

गंग ग य गंग कंपनी क डि ठी वनी व्वाँ-,
 पनससकऽन प्या द्य केँ पनसैण जा य।

यकि गिसा वी प्रभा ग अगुसा ग, आव
 एक ग सुगठ जा ए कुपगवा व,
 एहि गो गग मे बे पो भक गग्व,
 आ, सूवा सथ्यक अहि ग कगव सवगवा व।

अनिर्दिष्ट वसा सँ, को ठेस्टी ० वढा,
उपन सून, व्ठड सुगन यढना-

जे सन नी क ठौन छै मग के,
ओ सन पनना, ह्दय आ नग के

मो नग, जे श्रुदा के छी नए,
ओकना नऽ सूवा स्थप सँ द्गो ह,
एहन असूवा स्थपकन प्पा द्पु ठेठ,
कीओ कीए ना प्पथामो ह?

मो न के नऽ नी क ठा गौ,
आ, ठी वन, ह्दय पन हे उक आघा न,
जानगी क ठेठ, को नो ननहँ,
कहूने, मेठैक नी क ई वा न?

देपए मे जे अछा गेनुआगन,
यहटगन आओन सो अदगन,
दूनहिसँ, हम कनी प्नासा न,
नहिया ही पान्जना, वन्गना

जान ही मो नग सँ उदए मे,
उदए धो गढिका न,
को ना ने कहीओ प्पा द्पु ओ
नुयगन, मुदा वेका न?

जानने वा न कि पनसप आवए,

पांक शूड, कैडी, कुकी,
पापाक' अपन, हाथवा नकिड,
पाकूपसे, ओकना नोकी।

गो पाग माणव,
संतुषाणि आहा न,
डा गडन सग वा पाथी,
वा नमवा न।

गान, दाषी, सषाद, सोहा नी,
प्या इ, शूड, हनिअनपाका नी।

अगवे वसा, का न्वो हा इड्येट,
सूत्रा सथ्य गे देण, वस गनिदेण पेटा।

व्रिटा मनि, पुनो टी न, का न्वो हा इड्येट,
पाठ, वसा, आयगपाक संतुषण,
संतुषाणि आहा न, वरह गो पाग अरुषी,
दी न्घा यु वनी, इ वसए मन सदिपिण।

पाय हो, पाय हो,
संतुषाणि आहा न,
अनुदा गेटेण छै,
एही दनवा न।

पांक शूड!
गौ, गहिछऽगुडा।

अपन भंगवृत्ते दृष्टिगतिसताडडवद्विहावामाधियेन पन पडाउ।

५. श्रृंगारक

१. विदेह-ई-

पत्रिकाक-समटा-पुनान-श्रंक-Videha-e-journal's-all-old-issues

२. मैथिली-पोथी-डाउनलोड-Maithili-Books-Download

३. मैथिली-वीडियोक-संकथन-Maithili-Videos

४. मैथिली-शिशु-वाठ-आ-किसो-साहित्य-Maithili-Children-Literature

५. विदेह-स्त्री-कोना

६. विदेह-सूचना-संपर्क-श्रृंगारक(including-Parallel-Literature-in-Maithili-and-Videha-Maithili-Literature-Movement)

७. विदेह-मिथिलाक-प्योण

८. विदेह-मिथिला-17

वृद्धि पुनाग अंक

वृद्धि ह वृद्धि वृद्धि विद्वद् हानपुर्वीवृद्धियोगि वृद्धि प्रथम मैथिली पाक्षिके ई पानिका वृद्धि इसा मातिलिठि ढोनागगिहणय
पुनगाव वृद्धि प्रथम मैथिली पाक्षिके ई पानिका नव अंक देपवाक छेउ पृष्ठ सकके नखिनेस कए देपू अवीयस नेउनेसह नहे पागेस
जेन वृद्धिग नौ सिसेसोड वर्यएहअ

षानयहौतिहनि ओउद इससेसोड वृद्धि

हानपसःवौकसगौगठेयोम्



वृद्धि अयहवि ोड ओउद इससेस वृद्धि पुनाग अंकक आनकाइव (पुनासाः
अव्यवसायिके उद्देश्य आ मान एकडेमकि प्रयोग छेउ) वृद्धि इ-पानिकाक
समटा पुनाग अंक पीडीएशु डाउनलोड छेउ कमानुसा नियाँक ठिकेपन उपव्य
अर्था अउत नहोउद सिसेसोड वृद्धि पुनगाव ने।वाठिवठे जेन पदउ दौनठोद
न नहे नेसपेयनवि ठिकस वेठौ

ननिहना, नेवाडी आ कैथी शुाँसुट डाउनलोड घोगठेस सोतो ढेनस पनोपेयन घतिहव

ननिहना नोड शुाँसुट	कैथी ओटोपु	कैथी टोटोपु	नेवाडी ओटोपु	नेवाडी टोटोपु
--------------------	------------	-------------	--------------	---------------

हानपसःऽनेनसगौगठेयोम् (घोगठे ओपेन ढेनस दौनठोद)

थनिहना ओउउठनि प्येवोमद दौनठोद

प्येमान थनिहना वेदयि वेवागागानि प्येवोमदस यौनठोद

हानपसःमाठानपनोपेयनगतिठवाँतिनिहना (थनिहना प्येवोमद ओनठनि)

१

गणेश्वर शकुन (सम्पादन)

वद्विह-सदेह १-२५ विदेहियोगि
 वद्विह ई पानकिक अंक १ ३५० सँ
 मैथिलीक सन्वसनेषु गदुप आ
 पदुपक एकटा समानागत संकठन

देवनागरी	मथिलीकूपन
वद्विह:सदेह १	वद्विह: सदेह १ तनिहना
वद्विह:सदेह २ मैथिली पुनवगय-गविवगय-समाधियग	वद्विह: सदेह २ तनिहना
वद्विह:सदेह ३ मैथिली पदुप	वद्विह: सदेह ३ तनिहना
वद्विह:सदेह ४ मैथिली कथा	वद्विह: सदेह ४ तनिहना
वद्विह मैथिली वलिनिकथा वद्विह सदेह ५।	वद्विह: सदेह ५ तनिहना
वद्विह मैथिली वलिनिकथा वद्विह सदेह ५।- संसुकनस-२	वद्विह: सदेह ५ संसुकनस-२ तनिहना
वद्विह मैथिली उवुकथा वद्विह सदेह ६।	वद्विह: सदेह ६ तनिहना
वद्विह मैथिली पदुप वद्विह सदेह ७।	वद्विह: सदेह ७ तनिहना
वद्विह मैथिली गदुप उअसत वद्विह सदेह ८।	वद्विह: सदेह ८ तनिहना
वद्विह मैथिली शसु उअसत वद्विह सदेह ८।	वद्विह: सदेह ८ तनिहना
वद्विह मैथिली पुनवगय-गविवगय-समाधियग वद्विह सदेह १०।	वद्विह: सदेह १० तनिहना
वद्विह:सदेह ११	वद्विह: सदेह ११ तनिहना
वद्विह:सदेह १२	वद्विह: सदेह १२ तनिहना
वद्विह:सदेह १३	वद्विह: सदेह १३ तनिहना
वद्विह:सदेह १४	वद्विह: सदेह १४ तनिहना
वद्विह:सदेह १५	वद्विह: सदेह १५ तनिहना
वद्विह:सदेह १६	वद्विह: सदेह १६ तनिहना
वद्विह:सदेह १७	वद्विह: सदेह १७ तनिहना
वद्विह:सदेह १८	वद्विह: सदेह १८ तनिहना
वद्विह:सदेह १९	वद्विह: सदेह १९ तनिहना
वद्विह:सदेह २०	वद्विह: सदेह २० तनिहना
वद्विह:सदेह २१	वद्विह: सदेह २१ तनिहना
वद्विह:सदेह २२	वद्विह: सदेह २२ तनिहना
वद्विह:सदेह २३	वद्विह: सदेह २३ तनिहना
वद्विह:सदेह २४	वद्विह: सदेह २४ तनिहना
वद्विह:सदेह २५	वद्विह: सदेह २५ तनिहना

वद्विह-सदेह २६-३६ विदेहियोगि
 वद्विह ई पानकिक अंक १ ३५० सँ
 थोम आधामति मैथिलीक सन्वसनेषु
 मूठ आ अगुदति गदुप आ पदुपक
 एकटा समानागत संकठन

वद्विह:सदेह २६ (डॉ॰ समुग कुमान सहि आ डॉ॰ अनुस कुमान सहि अंक १-३५० सँ)	वद्विह: सदेह २६ तनिहना
---	------------------------

वदिलःसदेह २७ (गजोगद-न गकुन आ नवो शोधस पाठकक आग शोधस अगदति गदुय आ पदुय- अंक १-३५० सँ)	वदिलः सदेह २७ तनिलुना
वदिलःसदेह २८ (अगदति गदुय आ पदुय- अंक १-३५० सँ)	वदिलः सदेह २८ तनिलुना
वदिलःसदेह २८ (नवो शोधस पाठक आ उा कौश कुमान मशिन- अंक १-३५० सँ)	वदिलः सदेह २८ तनिलुना
वदिलःसदेह ३० (सकुठ-कांठिगक वदियाथी ठेठ- अंक १-३५० सँ)	वदिलः सदेह ३० तनिलुना
वदिलःसदेह ३१ (उा कामगी कामायगी आ कुमान मगोण कसुप- अंक १-३५० सँ)	वदिलः सदेह ३१ तनिलुना
वदिलःसदेह ३२ (नयगाणमक गदुय-पदुय ठेपग शोग-१- अंक १-३५० सँ)	वदिलः सदेह ३२ तनिलुना
वदिलःसदेह ३३ (नयगाणमक गदुय-पदुय ठेपग शोग-२- अंक १-३५० सँ)	वदिलः सदेह ३३ तनिलुना
वदिलःसदेह ३४ (नयगाणमक गदुय-पदुय ठेपग शोग-३- अंक १-३५० सँ)	वदिलः सदेह ३४ तनिलुना
वदिलःसदेह ३५ (नयगाणमक गदुय-पदुय ठेपग शोग-४- अंक १-३५० सँ)	वदिलः सदेह ३५ तनिलुना
वदिलःसदेह ३६ (नयगाणमक गदुय-पदुय ठेपग शोग-५- अंक १-३५० सँ)	वदिलः सदेह ३६ तनिलुना

पूपीएससी आ आग पुनतयौगतिा परीक्षा ठेठ देपू:

वदिलःसदेह १७	वदिलःसदेह २१	वदिलःसदेह २२	वदिलःसदेह २६	वदिलःसदेह २८
वदिलःसदेह ३०	वदिलःसदेह ३२	वदिलःसदेह ३३	वदिलःसदेह ३४	वदिलःसदेह ३५

२

वदिलक सगटा पुनाग अंक (अंक १ सँ ३५४ आ आगाँ)

वदिलक अंक १-१४८ (देवनागरी, मथिठिकषन आ व्नेठमे)

देवनागरी	मथिठिकषन	व्नेठ
वदिल ०१ ०१ ०८	वदिल ०१ ०१ ०८ थनिलुना	१

वर्दिस १५ ०१ ०८	वर्दिस १५ ०१ ०८ थनिसुवा	३
वर्दिस ०१ ०२ ०८	वर्दिस ०१ ०२ ०८ थनिसुवा	३
वर्दिस १५ ०२ ०८	वर्दिस १५ ०२ ०८ थनिसुवा	४
वर्दिस ०१ ०३ ०८	वर्दिस ०१ ०३ ०८ थनिसुवा	५
वर्दिस १५ ०३ ०८	वर्दिस १५ ०३ ०८ थनिसुवा	६
वर्दिस ०१ ०४ २००८	वर्दिस ०१ ०४ २००८ थनिसुवा	७
वर्दिस १५ ०४ २००८	वर्दिस १५ ०४ २००८ थनिसुवा	८
वर्दिस ०१ ०५ २००८	वर्दिस ०१ ०५ २००८ थनिसुवा	९
वर्दिस १५ ०५ २००८	वर्दिस १५ ०५ २००८ थनिसुवा	१०
वर्दिस ०१ ०६ २००८	वर्दिस ०१ ०६ २००८ थनिसुवा	११
वर्दिस १५ ०६ २००८	वर्दिस १५ ०६ २००८ थनिसुवा	१२
वर्दिस ०१ ०७ २००८	वर्दिस ०१ ०७ २००८ थनिसुवा	१३
वर्दिस १५ ०७ २००८	वर्दिस १५ ०७ २००८ थनिसुवा	१४
वर्दिस ०१ ०८ २००८	वर्दिस ०१ ०८ २००८ थनिसुवा	१५
वर्दिस १५ ०८ २००८	वर्दिस १५ ०८ २००८ थनिसुवा	१६
वर्दिस ०१ ०९ २००८	वर्दिस ०१ ०९ २००८ थनिसुवा	१७
वर्दिस १५ ०९ २००८	वर्दिस १५ ०९ २००८ थनिसुवा	१८
वर्दिस ०१ १० २००८	वर्दिस ०१ १० २००८ थनिसुवा	१९
वर्दिस १५ १० २००८	वर्दिस १५ १० २००८ थनिसुवा	२०
वर्दिस ०१ ११ २००८	वर्दिस ०१ ११ २००८ थनिसुवा	२१
वर्दिस १५ ११ २००८	वर्दिस १५ ११ २००८ थनिसुवा	२२
वर्दिस ०१ १२ २००८	वर्दिस ०१ १२ २००८ थनिसुवा	२३
वर्दिस १५ १२ २००८	वर्दिस १५ १२ २००८ थनिसुवा	२४
वर्दिस ०१ ०१ २००९	वर्दिस ०१ ०१ २००९ थनिसुवा	२५
वर्दिस १५ ०१ २००९	वर्दिस १५ ०१ २००९ थनिसुवा	२६
वर्दिस ०१ ०२ २००९	वर्दिस ०१ ०२ २००९ थनिसुवा	२७
वर्दिस १५ ०२ २००९	वर्दिस १५ ०२ २००९ थनिसुवा	२८
वर्दिस ०१ ०३ २००९	वर्दिस ०१ ०३ २००९ थनिसुवा	२९
वर्दिस १५ ०३ २००९	वर्दिस १५ ०३ २००९ थनिसुवा	३०

डोमन थविताम पयनपिा- घाजोगदना थहाकुम (२००८ २०२३)

डोमन हापागेसे पयनपिा डोम हाकुि- घाजोगदना थहाकुम (२००८ २०२३)

डोमन म्नाहमा- घाजोगदना थहाकुम (२००८ २०२३)

डोमन प्पहाजोसहाहा- घाजोगदना थहाकुम (२००८ २०२३)

सुथायी सुगमम जोगा मथिथि-नान, मथिथिथि थोण, वदिह पेडान आ सुयगा-संपनक अन्नेपाम सग अंकमे समाग अछा, नर हेतु ई सग सुगमम सग अंकमे गै देठ पाशा अछा, ई सग सुगमम देपवा ठेठ कृषिक कूा वदिहक ३४६ म, ३४७ म आ ३६६ म अंक ऐगीन अंकमे सम्मथिति नूपे ई सग सुगमम देठ गेठ अछा

वदिहक ३४५म आ आगाँक अंक

देवनागरी	मथिथिकृषम	आरपीए	मैथथि वृनेठ
वस्यपरुअ उ४५	वस्यपरुअ उ४५ थानिहना	वस्यपरुअ उ४५ २५अ	वस्यपरुअ उ४५ नानाथिठे
वस्यपरुअ उ४६	वस्यपरुअ उ४६ थानिहना	वस्यपरुअ उ४६ २५अ	वस्यपरुअ उ४६ नानाथिठे
वस्यपरुअ उ४७	वस्यपरुअ उ४७ थानिहना	वस्यपरुअ उ४७ २५अ	वस्यपरुअ उ४७ नानाथिठे
वस्यपरुअ उ४८	वस्यपरुअ उ४८ थानिहना	वस्यपरुअ उ४८ २५अ	वस्यपरुअ उ४८ नानाथिठे
वस्यपरुअ उ४९	वस्यपरुअ उ४९ थानिहना	वस्यपरुअ उ४९ २५अ	वस्यपरुअ उ४९ नानाथिठे

देवनागरी	मथिथिकृषम	आरपीए	मैथथि वृनेठ	कैथी
वस्यपरुअ उ४०	वस्यपरुअ उ४० थानिहना	वस्यपरुअ उ४० २५अ	वस्यपरुअ उ४० नानाथिठे	वस्यपरुअ उ४० प्पशस्यहस
वस्यपरुअ उ४१	वस्यपरुअ उ४१ थानिहना	वस्यपरुअ उ४१ २५अ	वस्यपरुअ उ४१ नानाथिठे	वस्यपरुअ उ४१ प्पशस्यहस
वस्यपरुअ उ४२	वस्यपरुअ उ४२ थानिहना	वस्यपरुअ उ४२ २५अ	वस्यपरुअ उ४२ नानाथिठे	वस्यपरुअ उ४२ प्पशस्यहस
वस्यपरुअ उ४३	वस्यपरुअ उ४३ थानिहना	वस्यपरुअ उ४३ २५अ	वस्यपरुअ उ४३ नानाथिठे	वस्यपरुअ उ४३ प्पशस्यहस
वस्यपरुअ उ४४	वस्यपरुअ उ४४ थानिहना	वस्यपरुअ उ४४ २५अ	वस्यपरुअ उ४४ नानाथिठे	वस्यपरुअ उ४४ प्पशस्यहस

गाभनी	गानिहना	आरपीए	वृनेठ	कैथी	गंगना	गैनाथि	पानेथि	वृनेठनी
उ४५	थानिह	२५अ	नानाथिठे	पशस	हृद	सो	पशसनी	नानाथिठे

गाभनी	गानिहना	कैथी	गंगना	पुनमथिठे	वृनेठनी	सुम	वृनेठ	पानेथि	उरुह	गानिहनी	गानिहनी-अ
उ४६	थानिह	पानिह	हृद	सो	नानाथिठे	२५अ	वृनेठ	पानेथिठे	उरुह	थानिह	उने
उ४७	थानिह	पानिह	हृद	सो	नानाथिठे	२५अ	वृनेठ	पानेथिठे	उरुह	थानिह	उने

गाभनी	गानिहना	कैथी	गंगना	पुनमथिठे	वृनेठनी	सुम	वृनेठ	गानिहनी	गानिहनी-अ
उ४८	थानिह	पानिह	हृद	सो	नानाथिठे	२५अ	वृनेठ	थानिह	उने
उ४९	थानिह	पानिह	हृद	सो	नानाथिठे	२५अ	वृनेठ	थानिह	उने
३६०	थानिह	पानिह	हृद	सो	नानाथिठे	२५अ	वृनेठ	थानिह	उने

गाभनी	गानिहना	कैथी	गैनाथि	आरपीए	वृनेठ
३६१	थानिहना	पानिह	सो	२५अ	नानाथिठे

૩૬૨	થનિહુના	ખાતિલિ	સૌના	સ્થઅ	મનાવિલે
૩૬૩	થનિહુના	ખાતિલિ	સૌના	સ્થઅ	મનાવિલે
૩૬૪	થનિહુના	ખાતિલિ	સૌના	સ્થઅ	મનાવિલે
૩૬૫	થનિહુના	ખાતિલિ	સૌના	સ્થઅ	મનાવિલે
૩૬૬	થનિહુના	ખાતિલિ	સૌના	સ્થઅ	મનાવિલે
૩૬૭	થનિહુના	ખાતિલિ	સૌના	સ્થઅ	મનાવિલે
૩૬૮	થનિહુના	ખાતિલિ	સૌના	સ્થઅ	મનાવિલે
૩૬૯	થનિહુના	ખાતિલિ	સૌના	સ્થઅ	મનાવિલે

૩

વૃદ્ધિલક વૃશિષાંક

૧) લક્ષ્કુ વૃશિષાંક

વૃદ્ધિલ ૧૫ ૦૬ ૨૦૦૮	વૃદ્ધિલ ૧૫ ૦૬ ૨૦૦૮ થનિહુના	૧૨
--------------------	----------------------------	----

૨) ગાઠ વૃશિષાંક

વૃદ્ધિલ ૦૧ ૧૧ ૨૦૦૮	વૃદ્ધિલ ૦૧ ૧૧ ૨૦૦૮ થનિહુના	૨૧
--------------------	----------------------------	----

૩) વૃદ્ધિલિકથા વૃશિષાંક

વૃદ્ધિલ ૦૧ ૧૦ ૨૦૧૦	વૃદ્ધિલ ૦૧ ૧૦ ૨૦૧૦ ઠનિહુના	૬૭
--------------------	----------------------------	----

૪) વાઠ સાલિપ્ર વૃશિષાંક

વૃદ્ધિલ ૧૫ ૧૧ ૨૦૧૦	વૃદ્ધિલ ૧૫ ૧૧ ૨૦૧૦ ઠનિહુના	૭૦
--------------------	----------------------------	----

૫) ગાટક વૃશિષાંક

વૃદ્ધિલ ૧૫ ૧૨ ૨૦૧૦	વૃદ્ધિલ ૧૫ ૧૨ ૨૦૧૦ ઠનિહુના	૭૨
--------------------	----------------------------	----

૬) સમીક્ષા વૃશિષાંક

વૃદ્ધિલ ૧૫ ૦૧ ૨૦૧૧	વૃદ્ધિલ ૧૫ ૦૧ ૨૦૧૧ ઠનિહુના	૭૪
--------------------	----------------------------	----

७) गानी व्रशिपांक

व्रदिह ०१ ०३ २०११	व्रदिह ०१ ०३ २०११ तिमिहुना	७७
-------------------	----------------------------	----

८) अगुवह व्रशिपांक (गह्य-पह्य गानी)

व्रदिह ०१ ०१ २०१२	व्रदिह ०१ ०१ २०१२ तिमिहुना	८७
-------------------	----------------------------	----

९) वाठगाठ व्रशिपांक

व्रदिह ०१ ०८ २०१२	व्रदिह ०१ ०८ २०१२ तिमिहुना	१११
-------------------	----------------------------	-----

१०) गकगगाठ व्रशिपांक

व्रदिह १५ ०३ २०१३	व्रदिह १५ ०३ २०१३ तिमिहुना	१२६
-------------------	----------------------------	-----

११) गाठ आठेयगा-समाठेयगा-समीक्षा व्रशिपांक

व्रदिह १५ ११ २०१३	व्रदिह १५ ११ २०१३ तिमिहुना	१४२
-------------------	----------------------------	-----

१२) काशीकांग मशिन मयुप व्रशिपांक

व्रदिह ०१ ०१ २०१५

१३) अलवगिह गकुग व्रशिपांक

व्रदिह ०१ ११ २०१५

सुवतंगयना- अलवगिह गकुग: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अगयगिहान) [वदिह अलवगिह गकुग व्रशिपांकक पुनसिस्ट १५]

१४) जगदीश यगुग गकुग अगठि व्रशिपांक

व्रदिह ०१ १२ २०१५

१५) व्रदिह सम्माण व्रशिपांक

व्रदिह सम्माण: सम्माण-सूयी (समागागुग साहित्य अकादेमी, समागागुग उठति कठ अकादेमी आ समागागुग संगीत-गाटक अकादेमी सम्माण पुनसुकाग गामसँ व्रपियान)

साक्षपाङ्कान् समानोह

साक्षपाङ्कान्	व्रदिह १५ १२ २०११	व्रदिह १५ ०१ २०१२	व्रदिह ०१ ०२ २०१२	व्रदिह ०१ ०३ २०१२
	व्रदिह ०१ ०८ २०१२	व्रदिह १५ ०१ २०१३	व्रदिह ०१ ०३ २०१३	व्रदिह १५ ०४ २०१६
	व्रदिह ०१ ०७ २०१६			

१६) मैथिली सौडी अठ्ठम गीत संगीत व्रशिषांक

व्रदिह ०१ ०१ २०१७

१७) मैथिली वेव पत्तकाली व्रशिषांक

व्रथपूरुअ ३३३

१८) मैथिली वीहनाकथा व्रशिषांक-२

व्रथपूरुअ ३१७

१९) नामधेयन गकुल व्रशिषांक

व्रथपूरुअ ३२८

२०) नामधेयन गकुल सन्द्यांणव व्रशिषांक

व्रथपूरुअ ३२०

२१) नामधेयन गकुल दास व्रशिषांक

व्रथपूरुअ ३३३

२२) नामधेयन गकुल गाय व्रशिषांक

व्रथपूरुअ ३४८	व्रथपूरुअ ३४८ थनिहना	व्रथपूरुअ ३४८ ५५५	व्रथपूरुअ ३४८ ५५५
---------------	----------------------	-------------------	-------------------

२३) केदाव गाय यौधनी व्रशिषांक

व्रथपूरुअ ३५०	व्रथपूरुअ ३५० थनिहना	व्रथपूरुअ ३५० ५५५	व्रथपूरुअ ३५० ५५५	व्रथपूरुअ ३५० ५५५
---------------	----------------------	-------------------	-------------------	-------------------

२४) प्रेमना मसि 'प्रेम' व्रशिषांक

व्रदिह ३५७	व्रदिह ३५७ थनिहना
------------	-------------------

२५) सन्द्यांणव यौधनी व्रशिषांक

व्रदिह ३५८	व्रदिह ३५८ थनिहना
------------	-------------------

२६) कथा-वनिश व्रशिषांक (सन्द्यांणव- संपू दास, कृष्ण कुमान कश्यप, सशिवोवा, एससीसुमन आ श्वेता हा यौधनी)

व्रदिह ३६८	व्रदिह ३६८ थनिहना
------------	-------------------

२७) नामधेयन अशोक व्रशिषांक

व्रदिह ३६९	व्रदिह ३६९ थनिहना
------------	-------------------

२७) नामधेयन कापड 'गमन' व्रशिषांक

व्रदिह ३७०	व्रदिह ३७० थनिहना
------------	-------------------

४

ठेपकक आमंतीति नयन आ ओरुपन आमंतीति समीकषकक समीकषा सीनीण

१कामगीक पांय टा कवरीता आ ओरुपन मयुकागन हाक टपिपमी

वृदिहा ०१ ०८ २०१६

२णगदागण्ड हा "मनु"क "भाटकि वासन"पन गणेरुण्डन गकुनक टपिपमी

वृश्यरुअ ३५३

३मुग्गी कामाक एकांकी "णगिण्डीक मोठ" आ ओरुपन गणेरुण्डन गकुनक टपिपमी

वृश्यरुअ ३५४

४कपठिश्चन नानक प टा कथा आ ओरुपन गणेरुण्डन गकुनक टपिपमी

वृश्यरुअ ३५६

५उमेश मम्मूठक प टा कथा आ ओरुपन गणेरुण्डन गकुनक टपिपमी

वृदिहा ३५७

६नाम वृषिस साहुक प टा कथा आ ओरुपन गणेरुण्डन गकुनक टपिपमी

वृदिहा ३५८

७गति गवठ सुभाष यण्डन यादव- सुभाष यण्डन यादवक समस्त साहित्य आ ओरुपन गणेरुण्डन गकुनक टपिपमी

गति गवठ सुभाष यण्डन यादव

गति गवठ सुभाष यण्डन यादव (मथिठिकषन)

८नाणदेव मम्मूठक साहित्यपन गणेरुण्डन गकुनक टपिपमी

६णठौ माणदाठ- माणिठिठि औनति

९आयान्य नानागण्ड मम्मूठक प टा कथा आ ओरुपन गणेरुण्डन गकुनक टपिपमी

वृदिहा ३६०

१०गण्ड वृषिस नायक यानटि कथा आ एकटा एकांकी आ ओरुपन गणेरुण्डन गकुनक टपिपमी

वृदिहा ३६१

११७ गीत प्रसाद मसूदाक साहित्यपर गणेशक गुरुक टिप्पणी

हृदयचरित्र श्रुतश्रवण मसूदाक- मातृत्व औरित

१२६ गणेश मसूदाक पाँचटा कथा आ ओरपर गणेशक गुरुक टिप्पणी

वर्ष ३६३

१३१ गणेश मसूदाक पाँचटा कथा आ ओरपर गणेशक गुरुक टिप्पणी

वर्ष ३६४

१४ गीत गणेश कुमार मसूदा- गणेश कुमार मसूदाक समस्त ऐपण आ ओरपर गणेशक गुरुक टिप्पणी

गीत गणेश कुमार मसूदा (गानी)

१५ गीत गणेश सुशील- सुशीलक समस्त साहित्य आ ओरपर गणेशक गुरुक टिप्पणी

गीत गणेश सुशील (गानी)

५

"पाठक हमन पोथी करि पढ़थि"- ऐपक द्वारा अप्पण पोथी नयनाक समीक्षा
सीरीज

१ आशीष अणयगिहान ०१ अगस्त २०२१

१(१) आशीष अणयगिहान ०१ माय २०२३

२ गणेशक गुरु ०१ सितम्बर २०२२

६

एडिटर्स योशस सीरीज

एडिटर्स योशस सीरीज-१

वद्विहमे वधकालपन मैथिलीमे पहिठि कवति प्रकाशति मेठ छठ। ई दसिम्ब २०१२ क दधिठिक गन्गया वधकाल कामुडक वादक समय छठ। ओना ई अगुदति नयना छठ, तेणुमे पसुपुठेटी गीताक कवति हग्दी अगुवाद केने छठिह आन शाना सुगदनी आ हग्दीसँ मैथिली अगुवाद केने छठिह वगिन उपठ। हमन जागकालीमे ऐसँ वेशी सहिनावैवठ कवति ऐ वषियपन कोनो भाषामे नै नयठ गेठ अछा कताक साठक वादो ई समस्य़ा ओहने अछा ई कवति समकँ पढ़वाक याही, प्यास कऽ सग वेटीक वापकँ, सग वहनिक भाएकँ आ सग पत्नीक पतिकँ आ वषियवाक याही जे हम सग अपना वय्या सग ठेठ केहन समाज वनेने छी।

एडिटिन्स योशस सीरीज-१ (डाउनलोड ठिक)

एडिटिन्स योशस सीरीज-२

वद्विहमे व्नेस्ट कैसनक समस्य़ापन वद्विह मे मीना हा केन एकटा ठु कथा प्रकाशति मेठ। ई मैथिलीक पहिठि कथा छठ जे व्नेस्ट कैसन पन ठपिठ गेठ। हग्दीमे सेहे नाथनी ऐ वषियपन कथा नै ठपिठ गेठ छठ, कामु ए कथाक ई-प्रकाशति मेठक १-२ साठक वाद हग्दीमे दू गोटेमे घोघाउण नऽ नहठ छठ कति पहिठि हम आका हम, मुदा दूगूक नाथी मैथिलीक कथाक पनवन्ती छठ। वादमे ई वद्विह ठु कथामे सेहे संकठति मेठ।

एडिटिन्स योशस सीरीज-२ (डाउनलोड ठिक)

एडिटिन्स योशस सीरीज-३

वद्विहमे जागदीश यगदून गकुन अगठिक कछु वाठ कवति प्रकाशति मेठ। वादमे हुगकन ३ टा वाठ कवति वद्विह शशि अन्सवमे संकठति मेठ जश्मे २ टा कवति वेवी याश्ठुपन छठ। पढ़ू ई तीगू कवति, वादक दूगू वेवी याश्ठुपन ठपिठ कवति पढ़वे टा कू से आगनह।

एडिटिन्स योशस सीरीज-३ (डाउनलोड ठिक)

एडिटिंग्स योशस सीरीज-४

वदिएहमे ढगदगनद ह। "मनु"क एकटा दीन्घ वाठ कथा कहि ठिअि वा उपन्यास पुनकाशति मेठ, नाम छठ योगहा वादमे ई नयना वदिएह शशि उन्सवमे संकथति मेठ, ई नयना वाठ मगोवपिभागपन आयाति मैथिलिक पहिठि नयना छी, मैथिलि वाठ साहित्य कोना ठिपि ठकन ट्नेगि कोनसमे ऐ उपन्यासकेँ नाप्यठ ठोवाक याही कोना म्ोडन उपन्यास आगाँ वढै छै, स्टेप वाइ स्टेप आ सेहो वाठ उपन्यासा पढ़वे टा कनू से आगनह।

एडिटिंग्स योशस सीरीज-४ (डाउनलोड ठिके)

एडिटिंग्स योशस सीरीज-५

एडिटिंग्स योशस ५ मे मैथिलिक "उसने कहा था" माने कुमान पत्रक दीन्घकथा "पइइ" (सागान अंकि)। हिनदीक पाठक, ठो "उसने कहा था" पढ़ने हेना, केँ वुहठ छनहठि कोना अहिकथाकेँ नयि यन्द्नयन सन्मा "गुठेनी" अमन गऽ गेठह। हम यन्या कऽ नहठ छी, कुमान पत्रक "पइइ" दीन्घकथाका एकना पढ़ठक वाद अहाँकेँ एकटा व्रियति, सुप्यद आ मोग हौठ कनैवठ। अनुभव मेठन, ठो सेक्सपीनअिन ट्नेठेठी सँ मठिठि ठागन आ सुनाको। मुदा ऐ नयनाकेँ पढ़ठक वाद नामस, घृहा सगपन गयिनासकेँ आ सामाजिक पात्रिाकि दायित्वकेँ सेहो अहाँ आन गंभीरतासँ ठेवै, से वनपिकका अछा। मुदा एकन एकटा सन अछाठि एकना समै गकिठि कऽ एकके उप्पड़हामे पढ़ि जाइ।

एडिटिंग्स योशस सीरीज-५ (डाउनलोड ठिके)

एडिटिंग्स योशस सीरीज-६

ढगदीश पुनसाद मम्डठक ठठुकथा "वसिँढ": १८४२-४३ क अकाठमे वंगालमे १५ ठाप्य ठेक मुइठ, मुदा अमनपु सेन ठिपिन छथिठि हुनकन कोनो सन-सम्बन्धी ऐ अकाठमे ठे मठठह। मैथिलिमे अकाठ आएठ १८६७ ई मे आ इन्दिया

गाँधी ज्यन ऐ कृषेत्न अएषी तँ हुनका देप्याओठ गेठ जे कोना मुसहन जातिके ठेक विसाँढ प्या कऽ ऐ अकाठकेँ जीता ऐठनही मैथिलीमे ठेप्यनक एकगगाह स्थिति व्रद्विहक आगमनसँ पहिनि छथ। मैथिलीक ठेप्यक ठेकना सेहो अमन्य सेन जेकाँ ओही महवर्गिणीषिकासँ पुनगावति नै छथ। आ तँ विसाँढपन कथा नै ठपि सकथ। जगदीश पुनसाद मसुडठ ऐपन कथा ठपिठनही जे पुनकाशति मेठ येतना समतिकि पनकिमे, मुदा कान्यकानी सम्पादक द्वारा वननी पवित्रनक कानस ओ मैथिलीमे नै वनस अरहटमे ठपिठ वुहा पडठ, आ ओतेक पुनगावी नै नऽ सकथ कानस वषिय नै पाँटी आ वननी कानमि से एकन पुनः ई-पुनकाशन अपन असठी नूपमे मेठ व्रद्विहमे आ ई संकथति मेठ "गामक जगिगी" ठेकथा संग्रहमे ऐ पोथीपन जगदीश पुनसाद मसुडठकेँ टैगोन ठटियेयन अवानुड मेठठनी जगदीश पुनसाद मसुडठकेँ ठेप्यनी मैथिली कथायानाकेँ एकगगाह हेवासँ वया ठेठक, आ मैथिलीक समागानन शहिसमे मैथिली साहित्यकेँ दू काठप्यसुडमे वाँटा कऽ पढ़ए जाए ठाठ- जगदीश पुनसाद मसुडठसँ पुनव आ जगदीश पुनसाद मसुडठ आगमनक वादा तँ पुनसुतन अरथ ठेकथा विसाँढ-अपन सुय्या स्वनूपमे।

एठटिस योऽस सीनीज-६ (डाउनलोड ठकि)

एठटिस योऽस सीनीज-७

मैथिलीक पहिठि आ एकमान दठति आत्मकथाः सन्दीप कुमान साश्वी। सन्दीप कुमान साश्वीक दठति आत्मकथा जे अहाँकेँ अपन ठेक आकानाक अरथेन हठिठि देन आ अहाँक ई स्थतिकऽ देन जे समागानन मैथिली साहित्य कानवो पढ़ू अहाँकेँ अरथै नै हएन। ई आत्मकथा व्रद्विहमे ई-पुनकाशति मेठक वादा ठेप्यकक पोथी "वैशाखमे दठनपन"मे संकथति मेठ आ ई मैथिलीक अपन वनकि एकमान दठति आत्मकथा थकि तँ पुनसुतन अरथ मैथिलीक पहिठि दठति आत्मकथाः सन्दीप कुमान साश्वीक कठमसँ।

एठटिस योऽस सीनीज-७ (डाउनलोड ठकि)

एडिटिंग्स योशस सीरीज-८

वेना गुटकाकें नागमि सुनेवा छेठ कछि ठोककथा (वदिएह पेटानसँ)।

एडिटिंग्स योशस सीरीज-८ (डाउनलोड ठकि)

एडिटिंग्स योशस सीरीज-८

मैथिली गणपन पनयिन्या (वदिएह पेटानसँ)।

एडिटिंग्स योशस सीरीज-८ (डाउनलोड ठकि)

वदिएह सम्मान: सम्मान-सूची (समानागतन साहित्य अकादेमी, समानागतन
ठठि कठि अकादेमी आ समानागतन संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान पुनस्कान
गामसँ व्रम्पियान)

मैथिलीक व्रन्गनी

१

मैथिलीक व्रन्गनी- वदिएह मैथिली भागक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन
पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक व्रन्गनीमे पन्याप्त व्रिविधिता अछि मुदा पनसंगपन देप्यठा उगतन
एकन व्रन्गनी शूनु गमअ६००१ सँ पुनैति वुहाइत अछि, से एकन एकना एक
उप्यङ्गहमे उगटा-पुगटा दियौ, नवे वन पन्याप्त अछि यूपीएससी क मैथिली
(कम्पठसनी) पेपन छेठ सेहो ३ पन्याप्त अछि, से जे वदियान्थी मैथिली

(कम्पउसनी) पेपन ठेगे छर्था से एकन एकटा आन आसूट-नीडगि दोसन-
उप्यडाहामे कनर्था

इधामश्रोउ इगू गमशुठ-००१

थहेसे मे पनगिनगेन-देमनद वौकस, सेनद यून टुनेसि
नो दतिनगिठिसनोडडवदिसवामाठियोम थहे नौकस १७ सोमे १७ नहेसे मे
न्राठिवठे डेन साठे गेन घौगठे शुठाय [(य) शुठेगि थहाकुन,
साठेसवदिसवामाठियोम], सेनद यून टुनेसि नो साठेसवदिसवामाठियोम थहे
योगतेननस नद दियुमेननस -पुवठसिहेद वय वदिस (सनिये २०००) इधाम
२२२२-५४७३ वर्यएहश (सनिये २००४) मे पेनदियिठय वेनिग यहेयकेद
डेन ययेससविठिनिय सिसेस शौपठे गैतिह दिसिवठिनिसि सहेठद नोन हवे
दडिडियुठाय ययेससनिग नहेसे योगतेननस दियुमेननस

वद्विह पोथी

वद्विह ह वद्विह वद्विह विद्वद्व हानपुर्वीवद्विहयोनि वद्विह पुनथम मैथथि पाकृषकि ई पानकि वद्विह इसा मातिहथि ढोनागगिहाथ
पुननाथ वद्विह पुनथम मैथथि पाकृषकि ई पानकि नव अंक देप्पवाक वेठ पृष्ठ सगके नखिनेस कए देप्पा अथीयस नेउनेसह तहे पागेस
ओन वीनिग नौ सिसेओ वद्विहएअ

षानयह ओन नौकस (नियछुदनिग शुद्धी-वसिाठ & षगिन डनगुगो) नेषाननिग तो मतिहथि मातिहथि

हानपस्:वौकसगौगठेयोम्



वद्विह अनयहविओड मातिहथि नौकस वद्विह मैथथि पोथिक आनकाइव (पुनासातः
अव्यवसायिकि उद्वेश्य आ मातुन एकेडमकि पुनयोग वेठ) सन पोथी पीडीएश्च
डाउनलोड वेठ कनमानुसान नीयाँक ठकि सनपन उपव्य अछाि अथठ तहे वौकस
ने।वाथिवठे ओन पदड दौनवाए।। तहे नेसपेयतवि ठनिकस वेथौ

ननिहना, नेवाडी आ कैथी शुद्धी डाउनलोड घौगठे'स सोतो ढेनतस पुनोपेयत घतिहव

ननिहना नोथे बाम्प	कैथी ओटोएथ	कैथी थोटोएथ	नेवाडी ओटोएथ	नेवाडी थोटोएथ
-------------------	------------	-------------	--------------	---------------

हानपस्:डोनसगौगठेयोम् (घौगठे ओपेन ढेनतस दौनवाए।।)

थनिहुना ओउउठनि प्येप्रवोनेद दौगठोद

प्येप्रमाण थनिहुना वेदयि वेवागागागाप्येप्रवोनेदस थौगठोद

हानपसुःमाठानपनोपेयनगतिठोवातिनिहुना (थनिहुना प्येप्रवोनेद ओगठनि)

वैद्य यन्त्रापद

यन्त्रापद

महाकव्वाडक

डकव्यन

पुत्रोत्तमिश्चन डकुन

मैथिली धूनसमागम

वद्वियापना

व्याडीककना ननड्गामि

गोनकषव्रजियम्

शंकरदेव

पानाजानहाम

नामव्रजिय

दैन्यानाडिकुन

श्यामंग हाम यान्ना (शंकयिा गाट)

ठकषमीदेव

कुमानहाम गाट शन सुकंय नाव्रम वय (शंकयिा गाट)

पुनान्पुनकाशम००

पुनवावतीहाम गाटक

सद्विद्य ननसहिम००

गीतावृषी सद्विद्या

पुनान्पुनान्निम००

हानगौरी व्रविाह गाटक कुम्पव्रहिन गाटक

हृषगाथ ह।

माधवागण्ड गाटक

उषाह।

हृषगाथ काव्यग्रन्थावली (संक०ण अमनगाथ ह। १८८७-१८५५)

नृगपासा

उषाह। गाटक

श्रीकां

श्रीकृष्ण जन्म महस्य

गण्डीपति

कृष्णकेमिठा

गीतमाठा

काग्ल नामदास

गौरीसुव्यंवन

ठाठा

गौरीसुव्यंवन गाटक

उमापति

पानिजान ह।

मागुगाथ

पुनमावती ह।

देवागण्ड

उषाह।

नमापति

नुकमसी पनिय

उपाध्याय नामदास

आगण्ड वणिप्रागदिग गाटिका

शक्तिग

गौरीपत्रमिष्य सीतासुव्रयंत्रन दुर्गाव्रणिय
पानिजान गायक

कथा वौद्य सद्य मेह्यपा (वा७ साहित्य केन्द्रति) मेह्यमे गे७ दर म सगम
नागिदीप जयमे पद्यति कथा सगक संकथन

कथा वौद्य सद्य मेह्यपा

सप्पुआवाठी (गानी व्रमिन्स केन्द्रति) गपटयिहीमे गे७ दर म सगम नागिदीप
जयमे पद्यति कथा सगक संकथन

सप्पुआवाठी

मुंशी नद्युगन्दन दास (१८६०-१८४५) (सौजग्य- नायाकृष्णन् दास)

सुगन्दा हाम

नासवहिनी गे७ दास (१८७२-१८४०) (सौजग्य- नमानन्द ह। "नमाम")

सुमति

हनिगन्दन दास (सौजग्य- नायाकृष्णन् दास)

सुदामा यति

पं नामजी यौधनी (१८७८-१८५२) (सौजग्य- स्त्री स्त्रीमोहन यौधनी)

व्रिचि गजगावठी

आयान्य नामयेयन शमाम (१८८८-१८७१) (सौजग्य- मैथिली साहित्य
संस्थान)

जयगती-समानक जगन्थ

धनुषधानी दास (१८८५-१८६५) (सौजग्य- पञ्जीकान व्रिद्यागन्द ह।)

मैथिली मे वहिनी

हनिमोहन ह। (१८०८-१८८४) (सौजग्य- मैथिली साहित्य संस्थान गौरीनाथ)

अनिगन्दन जगन्थ

अंकि (हनिमोहन ह। व्रिषिपांक)

डॉ नाम मनोस कापड़ी 'मनम' (सौजन्य- नाम मनोस कापड़ी 'मनम')
महर्षिसु मन्दादा एवं अग्र्य नाटक (१८८७)

वेक नाट्यः णट णटनि (२००७) (शोध)

हुगुठी उपन वहैत गंगा आ आन कथा (कथा संग्रह) (२००८)

मनम मैथिली दीर्घ कविति (हर्षिदी अग्रवाह-अव वस गही) (२००८)

मैथिली वेक संस्कृति (नेपाठी भाषामे) (२००८)

मैथिली अपठै अपन सोनाण (नाटक संग्रह) (२०१०)

घनमहँ (उपन्यास) (२०१२) - ई वुक वृणन

घनमहँ (उपन्यास) (२०१२) - पूनटि वृणन

अनहयिक याग (गणेश संग्रह) (२०१३)

यीन जो हम देखै (प्राग्ना संस्मरण) (२०१४)

सूठी पन शोण एवं अग्र्य नाटक (२०१५)

सोमाके आम-पान (प्राग्ना संस्मरण) (२०१६)

पुष्टमनकि एसगन योद्धा (कविति संग्रह) (२०१७)

पंटीवापनस (कथा संग्रह) (२०१८)

कोनोगक संन्यासमे ओहनायठ णनिगी (ठकडाउन डायनी) (२०२०)

मथिलिक वेकजीवन वेकसन्दर्भ (२०२२)

सोहनगन गनयक अग्रवेषी डा पुनशुभ्र कुमान सहि 'मौग'

मैथिली वेक संस्कृति संगोष्ठी

समानिकी (२०१०)

आंगन अंक-४ (२०१२) सठेस वशिषांक

आँण (अंक वृष ३६, अंक ३) सोमदेव वशिष

गामधन-३०-०८-२०१८

गामधन-०४-१०-२०१८

गामधन-१६-०५-२०१८

गामधन-२७-०६-२०१८

- नामनोस कापडि "गुमन" क कछि नाटक
मुग्गाली द्वारा साक्षात्कार पृ ३२१-३२८
देसि वयनाक वहने नामोयन गुरु प्रसंग पृ ३४७-३५७
हमन प्रभार-पिपासाक स्रोतः शनैर्दृष्ट यौवनी पृ ३१-३४
जट जटनि पृ ५६८-७०५
भैया, अरु अवन सोनाज पृ ५६८-७०५
आठेय कथा-श्रुतेश्वैक पृ ८४-८८
आठेय पृ पृ ११७-१२५
आठेय पृ १२७६-१२८०
आठेय पृ ८७-८८
नायक प्राना प्रसंग पृ १५०-१५४
सठेस परियया निपिट पृ ४१-४५
निपिट पृ २३१-२४३
निपिट पृ ४४५
निपिट पृ ५६८-६०५
निपिट पृ ५८३-५८५
गंगा प्रसादक स्वायत्तता आ हुगुठीपर वहैत गंगा पृ २२३-२२६
गीत पृ १४४८-१४५०
गाण गीत पृ २११
अनलक वृद्धि आ आजाद गाण पृ ६१८-६२१
वृद्धि नाम नोस कापडि "गुमन" वृद्धि
वृषेश यन्त्र ७७ (सौमन्य- वृषेश यन्त्र ७७)
अनलक (कविता संग्रह)
दोषक (वाचक कविता संग्रह)
सुमन (अनलक उपन्यास)
मोदअन (विपीकोरनाथक कथा)

માઉહો (કથા સંગ્રહ)

ગોઉવા (કથા સંગ્રહ)

પામેશ્વરન કાપડી (સૌજન્ય- પામેશ્વરન કાપડી)

દૂઆ- યજ્ઞ

અંક ૭

અંક ૧૪

અંક ૧૫

અંક ૧૬

અંક ૧૮

અંક ૧૦ પૂર્ણ ૨૦૧૨

અંક ૨૪ પૂર્ણ ૨૦૧૨

૨૫ પુર્ણ ૨૦૧૨

૦૫ અગસ્ટ ૨૦૧૨

૨૩ સુવર્ણી ૨૦૧૬

આસાન ૨૦૧૩

સુખીન કુમાર દા (સૌજન્ય- સુખીન કુમાર દા)

નિપીન્ટન ડાયરી (નિપીન્ટાન)

યાદિ (ઉઘુકથા-સંગ્રહ)

ખદિદી (ઉઘુકથા સંગ્રહ)

કોરથી ઘૂના આઉ (વાઉ ઉઘુ-વહિનિ કથા સંગ્રહ)

ગન્ય (ઉઘુ કથા સંગ્રહ)

ખપુનીવાળી (ઉઘુ કથા સંગ્રહ)

વુઉવુઉ (કથા સંગ્રહ)

દૂધમળી- (નેપાળી આ મૈથાળીમે)

અંક ૩૧ અંક ૩૨ અંક ૩૩ અંક ૩૪ અંક ૩૫ અંક ૩૬ અંક ૩૭ અંક ૩૮ અંક

૩૯ અંક ૪૦ અંક ૪૧

वर्गिदेश्वर गकुल
नेपाथक गोम मनुशूममि
वर्गीत गकुल (सौजग्य- वर्गीत गकुल)
वाँकी अर्षि हम्मम दूयक क्ताण
संतोष मशिन् (सौजग्य- संतोष मशिन्)
पोसपुत (उद्युक्था-संग्रह)
उदास मोग (उद्युक्था-संग्रह)
एना-कएि (कवतिता-संग्रह)
अएना (संपादन- कवतिता-संग्रह)
कनकमाम्मि दीक्षति (मूठ नेपाथिसँ मैथिली अनुवाद नूपा धीनू आ धीनेन्द्-
प्रेमन्षा, वाठ साहित्य) (सौजग्य- धीनेन्द्- प्रेमन्षा)
गगता वेडक देश-गममाम
अयोदह्यागातह छहेदहाम्य (छुनोसय- अयोदह्यागातह छहेदहाम्य)
वानोदि वेनसेस (मातिहथि वेनसेस वि एगठसिह थानसठागाग)

७ँ शशयिन कुमन आ सुपुनयिा वेवी कुमानी
गुकम्प (पु ६३८-६७४)
आमामि सहि (सौजग्य- गयकिता)
शसिु गीत प्येठ
शठानी सहि (सौजग्य- गयकिता)
प्रेम- एक कवतिता (अनूदति गटक)
अनुग्यती देवी (सौजग्य- नमानन्द ह्वा "नमाम")
मथिथिक वृद्धिषी महिथि
७ँ कमठा यौधनी (सौजग्य- कमठा यौधनी)
मैथिलीक वेश-गूषा-पुनसायन सम्वन्धी शव्दावठी २००८
समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. उषा हि. (सौभाग्य- उषा हि.)
मैथिलीक मोपन समवन्धी शब्दावली २०११
सुसम्पत्ति पाठक (सौभाग्य- केदार कावण)
परिचयिणी (कव्ति संग्रह)
कनोपडि (कथा संग्रह)
गन्दीनी पाठक (सौभाग्य- केदार कावण)
पाथक शहन (कव्ति संग्रह)
पद्मा हि. (सौभाग्य- गनेन्द्र हि.)
अनुमति (उद्युक्ता संग्रह)

कल्पना हि. (सौभाग्य- कल्पना हि.)
गोसाउगकि गीत
नसामकति हिति गावी गीत
नगियिं
प्राप्तावनी- शेषाथिका वन्मा (हिनदी अनुवाद कल्पना हि.)
मुग्गी कामन (सौभाग्य- मुग्गी कामन)
सुप्पथ मन नसथ अँप्पि (पद्य आ गद्य)
सुप्पथ मन नसथ अँप्पि (कव्ति)
अन्तः (कव्ति संग्रह)
युक्का (वाउ कथा संग्रह)
गीता हि. (सौभाग्य- गीता हि.)
वठिइ मौसी (वाउ उद्युक्ता संग्रह)
शेषाथिका वन्मा (सौभाग्य- शेषाथिका वन्मा)
प्राप्तावनी (प्राप्तावन्नागन)
प्राप्तावनी (हिनदी अनुवाद- कल्पना हि.)
अन्थपुग (उद्युक्ता संग्रह)
एकटा अकास (उद्युक्ता संग्रह)

गावांजली (गद्य गीत)

कसिन-कसिन जीवन (आत्म कथा)

आप्यन-आप्यन पनीन

गागश्वंस (उपन्यास)

मागपहनस (इग एगगसिह)

व्रिगि गीगी

व्रिगि गीगीक दूटा गटक (गाग गौ आ वठयग्दा)

सुशीठा हा (सौणय- पुनगा प्पेताग सुशीठा हा)

खगिनमसना- पुनगा प्पेतागक हगिदी उपन्यासक मैथिी अगुवाड

कुसुम गकुन

पुनयावपनग (आत्मकथा) (पृ ४५८-५७२)

उां कामगी कामायगी

वदिएःसदेह ३१ (उां कामगी कामायगी आ कुमान मनोण कश्यप- अंक १-३५०

सां

पुनीनगिकुन

गोण हा आ आग मैथिी यतिनकथा -पहठि मैथिी यतिनकथा (वाठ साहित्य)

मैथिी यतिनकथा (वाठ साहित्य)

मथिीक ठेकदेवना (वाठ साहित्य)

वदियापनकि पुनुष पनीकषा (वाठ साहित्य)

नेस (अगुवाड- वाठ यतिनकथा)

ए वी सी डी- पुनकानिअकषन पोथी (अगुवाड- वाठ यतिनकथा)

सग प्याशन अरु (अगुवाड- वाठ यतिनकथा)

वो म्याउ वाह (अगुवाड- वाठ यतिनकथा)

गड सग (अगुवाड- वाठ यतिनकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अगुवाड- वाठ यतिनकथा)

(०७) माठ-जाठ आ जागवन दसि देपू (अगुवाड- वाठ यतिनकथा)

हमन पत्रिका (अनुवाद- वाठ यतिनकथा)

जागवन (अनुवाद- वाठ यतिनकथा)

पोथी १३: १२३ (अनुवाद- वाठ यतिनकथा)

वाजाक अवाण (अनुवाद- वाठ यतिनकथा)

पंजी (११००० मूठ मथिठिक्षन नाडपत्न)

११००० शुअडम डएअठ शुआसहइर ससपछठइरशुथइरओसप (वश्रोडउमए इ थओ
सशइर) छेमपठिह, पयागनेह & छाताठेगुह वय शुनेतिथिहकुन

गीतू कुमानी

मैथिठि यतिनकथा (वाठ साहित्य)

कनिम यौधनी (अनूदति सयतिन मैथिठि वाठ कथा)

हमन वाठ-वाडी

आत्मा कॅकपटि मे

दीपा कनमाकन- सही संतुठन मे

पंगठ मे अहाँक स्वागत अर्छा

वृहेठ छथि आकास मे

गैया के मुसकाग के योनीठक

वीण संययक

अयंगति कलय "शुविनायी"

शौयाठयक प्पसिसा

ठाठ वनसाती

गुठिठिक जाहुई पेटी

समीनाक वकिठ गोणन

व्रिह मे जाई छी

पुनयिका हा (अनूदति सयतिन मैथिठि वाठ कथा)

हमन माँछ! नै हमन माँछ!

नश्मि पुनयिा (अनूदति सयतिन मैथिठि वाठ कथा)

कैयो सकै छी, गह्यौ कऽ सकै छी

सुनीता गकुल (अनूदति सयति- मैथिली वाँ कथा)

वाम्पटी आ ववठी

गीर्षमा यौधनी (अनूदति सयति- मैथिली वाँ कथा)

हमन सगसँ गोक संगी

स्वास्नाकि गकुल (अनूदति सयति- मैथिली वाँ कथा)

गपू वुते गायँ मै हेर छै

तूठकि (अनूदति सयति- मैथिली वाँ कथा)

हमना ओ याहि!

मधुठकि मशिन् (अनूदति सयति- मैथिली वाँ कथा)

ओघाशन गीमा

ठक्पमी गकुल

जागवन सग संगे मँट-घाँट

पूगम मम्पुठ

सुतौ काँक पसिसा

नायाकृष्ण यौधनी (१८२१-१८८५) (सौजन्म- पूगान कुमान यौधनी
इधामछअ)

मथिठिक शहिस

अ पुनवेयोड मातिहठि डतिनातुने

थहे ओठतिथिठ गद छुठनुनाँ हेतिगोड मतिहठि

मतिहठि नि गहे अगोड वदियापाति

सोमदेव (१८३४-२०२२) (सौजन्म- नाम गनोस कापड़ि 'गुनम')

आँपुन सोमदेव वशिष

पूगानस कुमान यौधनी (१८४१-१८८८) (सौजन्म- अशोक)

सग्यान पूगानस वशिष

०००१ पुनसाद गकुल (१८५३-१८८५) (सौजन्य- कुसुम गकुल)

वैराग्या मरियाइ

गाटककान ०००१ पुनसाद गकुल समग्रान १५गावरी (५ टा गाटक, ४ टा एकांकी

आ ३ टा गीतगाटकि सहित)

सुभाष यगुन पादव (सौजन्य- सुभाष यगुन पादव)

गाणकमठ यौधनी: भोगुनाशु

गति गवठ गाणकमठ

वगैत वगिडैत (उद्युक्था संग्रह)

गुठे

गुठे (हगिदी अनुवाद- १मम कुमान सहि)

१मता जोगी

मडु

गोट

गुठे: कथा आ गाथा (सम्पादक गानागुन वरियोगी आ केदा कानग)

गति गवठ सुभाष यगुन पादव (ऐपक गाणेगुन गकुल)

गति गवठ सुभाष यगुन पादव (मथिठिकषण)

अशोक (सौजन्य- अशोक आ शत्रिशंकन श्नीगविस)

यकनवपूह (कवति संग्रह) (१८८६)

गुनकिोम (कथा संग्रह) (१८८६)

ओह गातकि गोन (कथा संग्रह) (१८८९)

मानव (कथा संग्रह) (२००१)

संवाद (साक्षात्कान संग्रह) (२००७)

आँपमि वसठ (पान्ना कथा) (२०१३)

वात-वरियान (आठेयगा) (२०१५)

डेडीगाम (कथा संग्रह) (२०१७)

अशोक-सेठेकसगुस (विविधि)

अशोक-नव कविति

गीक दणिक वाइसकोप (व्यंग्य संग्रह) (२०१८)

कथा-पाठ मैथिली कथाक आधेयगात्मक अद्ययुग) (२०२२)

पुनर्माग (सम्पादन)

कनिष्ठ (पुनर्माग गोष्ठी- सम्पादक मोहन रामदवाण)

सन्धान १ (सम्पादन)

सन्धान २ (सम्पादन)

सन्धान ३ (सम्पादन) पुनर्मास वशिष

सन्धान ४ (सम्पादन)

मुग्गा जी दवाणा साक्षात्काम (पृ ३८२-३८५)

वर्गक कम वर्गिडैत वेसी (पृ २०२३-२०३१)

सम्पादक गानगन्देन एत दास आ कनिष्ठामाण (पृ ११८-१२२)

गामधेयन गकुलक कविति पढैत (पृ ३२७-३४१)

केदाम गथ यौवनीक उपन्यास (पृ १०१-१०६)

शमदण्डिणी (पृ ७०-७३)

वद्विह नयनाकाम अशोक वशिषांक

गामदेव हा (सौगन्ध- शंकरदेव हा योगानन्द हा)

सव्यसायी (अमरिगन्देन गान्ध)

मैथिली शवद संयय

दण-वर्तिक वसु कौशे

संकल्प अंक-५ (सम्पादक डॉ गामदेव हा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द

हा) १८८८

डॉ योगानन्द हा (सौगन्ध- योगानन्द हा)

थेकजीवन ओ थेकसाहित्य १८८६

संकल्प अंक-५ (सम्पादक डॉ गामदेव हा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द

हा) १८८८

श्रीधर्य सम्ययुग २००२

मैथिली शाक्य साहित्य- शासनीय गगती गीत (सम्पादन) २००२

मैथिली पानकानि के सौ वृष २००६

लोक, साहित्य श्री शवद-सम्पादन २००७

गह्वर गीत (संकलन-सम्पादन) २००७

मैथिलीक पानम्पनिकि जातीय वृषसायक शवदावरी २००८

कथा-लोककथा २०१०

कपिलदेव गकुन 'सुनेलना' कान सीतावनास (सम्पादन) २०११

मंगल-पुनान गाँधीजी (श्रुवादन) २०१३

गोने-गोन (डॉ ए कीनविन्दयक हनिदी कवति संग्रहक श्रुवादन) २०१४

नामानन्द वृषीगी (सौजन्य- नामानन्द वृषीगी सुभाष यन्दन यादन)

पुनय लसय (कवति संग्रह)

यनाशायी हेवाक समय (कवति मे कोनोगा काँ)

दुनयि घन मेहमान (पुनय कवति)

अपन पुन्दक साकष्य (गणल संग्रह)

छयिगत (कथा संग्रह)

वृषयन (श्रीधर्य)

गुठे: कल आ वाषा (सम्पादन)

सुयांसु शेप्यन यौधनी (सौजन्य- शनदनिदु यौधनी)

शेप्यन नयति गणल श्री गीत

शनदनिदु यौधनी (सौजन्य- शनदनिदु यौधनी)

पुँ हम गनतिहुँ (२००२)

वड अणगुन देप्यल (२००५)

गोवनगामेश (२०११)

कनयि कककाक कोनामनि (२०१६)

वान-वानपन वान पामुड-१ (२०१८)

मन्मार्गक-शब्दाङ्गुली (वाग-वागपग वाग प्पाम्-२) (२०२०)

हमन अगागः हुगक गहोदोष (वाग-वागपग वाग-३) (२०२१)

साकषाग (वाग-वागपग वाग-४) (२०२१)

वृद्धिह शनदग्दु यौयनी वृशिषांक

काशीकागग मशिग मधुप

वृद्धिह काशीकागग मशिग मधुप वृशिषांक

गागगगदग ७७ दास

वृद्धिह गागगगदग ७७ दास वृशिषांक

पुगेमगग मशिग पुगेम

वृद्धिह पुगेमगग मशिग पुगेम वृशिषांक

ग्वीगदग गथ गकुग

वृद्धिह ग्वीगदग गथ गकुग वृशिषांक

मायागगद मशिग (सौगग्य- केदग कागग)

अवागग (गगग-गगग)

कगगगद गट्ट (सौगग्य- केदग कागग)

कागह पग ७दास हमन मैथीगि गगग संगगह

अगगगगक कोसी काँठीगी सँ कशिग कुटीग वग

गामकृष्ण हग 'कसिग' (सौगग्य- केदग कागग)

कसिग समगग-१ (सम्पादक केदग कागग आ गमम कुमाग सहि)

कसिग समगग-२ (सम्पादक केदग कागग आ गमम कुमाग सहि)

मैथीगिक गव कवगि (सम्पादग)

वहुआयागी कसिगगी (सम्पादक महेगदग आ केदग कागग)

केदग कागग (सौगग्य केदग कागग ७२२५ सुगाष यगदग प्रादव)

अकष पग गयैग (संसमगमः गीवकागगक पगगक वहागे)

वहुआयागी कसिगगी (सम्पादग)

गुगेः कग आ गाषा (सम्पादग)

कस्मिन् समग्र-१ (सम्पादन)

कस्मिन् समग्र-२ (सम्पादन)

अपना गणनी मे (सम्पादन)

संज्ञ के दीप पत्र (सम्पादन)

गान्धी मंडल अंक-१६ (सम्पादन)

महेन्द्र (१९३९ के दान कागज)

पुत्रायु कर्करी

वहुआपामी कस्मिन् (सम्पादन)

वावा वैद्यनाथ (सौजन्य- वावा वैद्यनाथ)

पहना श्मानपन (गणेश संग्रह)

अनवर्णित शकुन (सौजन्य- अनवर्णित शकुन १९३९)

पानी टूटिह अर्थ (कविता संग्रह)

अनवर्णित वृत्त मे (१९ कथा संग्रह)

वहुपयि पदेश मे (गणेश संग्रह)

सर्व मतिनाथ वाप्या

गोशनाथक एकपक्ष (कथेन गद्य)

गणेशक पानवित मे (सोवर्कन-दीडक आनोहम गाथा- दीड कविता)

संज्ञ के दीप पत्र (सम्पादन)

वर्दिह अनवर्णित शकुन वृत्तिका

सर्वान्तयेना- अनवर्णित शकुन: वृत्तिका-कविता (सम्पादन आशीष

अनवर्णित) [वर्दिह अनवर्णित शकुन वृत्तिकाक पानवित रूप]

गनेन्द्र हा (सौजन्य- गनेन्द्र हा)

यपु यन यति यंयु गान

वृत्तिका ओ अथान्त

गोशनाथ हा (मैथिली साहित्य संस्थान आकाश)

मैथिलीकषक उद्भव ओ वृत्तिका

सुमेन्दु हा सुमन (आन्काश्र उोट क०म)

दण-वती (मू)

गोवृदि हा ((श्वाम्छथ पति आन्काश्र)

मातिहृषि-एगठसिह ययितीगाम्य

उ० शैठेन्दु मोहन हा (आन्काश्र उोट क०म् छ२२७)

पुनियु गयियु

मैथिी गद्य संग्रह- सं

नमागथ हा (छ२२७ पति आन्काश्र)

पुनवय संग्रह

नमागथ मशिन् "महिनि" (आन्काश्र उोट क०म)

मैथिी मुहावना एवम् ठोकोकृति पुनकाश्र

आनन्द मशिन् (सौणय- नमागद हा "नमा")

मथिी भाषाक सुवोध व्याकनम

श्यामानन्द हा (सौणय- नमागद हा "नमा")

मैथिी गीत यन्दुकि

मैथिी संदेश (वनिनि कवकि कवति-सम्पादति)

पं ठकृमीपति सिहि (सौणय नमागद हा "नमा")

हृदि-मैथिी-शिक्षक

नवपुनीगन्द ओहा (सौणय- नमागद हा "नमा")

पदावृ

गामनाथ-वनियुनाथ पदावृ (सौणय- नमागद हा "नमा")

गामनाथ-वनियुनाथ पदावृ

नूपनायाम हा "नकेश" (सौणय- नमागद हा "नमा")

मनमोहन उडु

मोठ ठाठ दास (आन्काश्र उोट क०म)

मैथिी सुवोध व्याकनम

पद्म वरुण दास 'सूत्राण' (सौजन्म- हेमन्त दास "हमि")
सीता-शीत

डॉ० मदनेश्वर भस्मि (सौजन्म- पञ्जीकान वदियागन्त हा)
एक छठीह महानगी

प्राणी (गागान्पुन) (सौजन्म- मथिषि सांस्कृतिकि पनषिद)
वयगमा

काठिकाण हा "वूय"

कथनधि- कवति-संग्रह

उपेन्तगाथ हा "व्यास" (सौजन्म- मयंक हा)

नूवाश्यात-ए-श्रीमन प्यैयाम (मैथिषि पद्यागुवाए)

पूनीक (कवति संग्रह)

संग्यासी (काव्य)

नमेश गानायाम (सौजन्म- शेषाठिका वन्मा)

पाथक गाव (उद्युक्था संग्रह)

गोपाठगी हा "गोपेश" (सौजन्म- गोपाठगी हा "गोपेश")

गुम्म गेठ गढ छी

व्रजिय गाथ हा (सौजन्म- व्रजिय गाथ हा)

अहिक ऐठ (गीत-गाणठ संग्रह)

कामायनी (अनुवाए)

गगेन्त कुमन (सौजन्म- पूसग्न कुमान हा)

ससनशुगी

पूवोध गानायाम सहि (सौजन्म- नयकिता)

अन्हेन गगनी (अनुवाए)

ययगकि (सम्पादन)

वैजयगती (कवति)

हथीक दान

टटका गप (सम्पादन कथा संकलन)

प्रेमक गीत (गाटक)

अमनगाथ (सौजन्य- अमनगाथ)

कृष्णिका- वृहन् कथा संग्रह

पुस्तुत कुमान सहि 'मौन'

पुस्तुतपासक गूममिथिथि पृ १००१-१०८०

डॉ गंगेश गुंजन (सौजन्य- गंगेश गुंजन)

गाथा (१-३०) पृ १३७३-१५८०

पुस्तुत-यौवटिया-गाटक (व्यवियिया)

गाटक आर गीत

कथा-संग्रह उयतिवकता

गीत-गाणत दुपक दुपहिया

कमठयन दास (सौजन्य- कमठयन दास)

मैथिली कृतम कायसथक गीत, पुस्तुत, मठ आ वैवाहिक सम्वन्ध

कीर्तनगानायम मसिन (सौजन्य- कीर्तनगानायम मसिन)

वृत्तन लेखन शास्त्रासूत

सीमानत

आदमीकें जोहिन

अपन एकागत मे

सुनयित्तनाक एकागतमे

गाणगाथ मसिन

मिथिली श्रुतिगिग-मोहन अत-श्रुतेतिस

पुस्तुतसंकन सहि (सौजन्य- पुस्तुतसंकन सहि मिथिली दत्तपाम पुस्तुतकाशन)

मैथिली भाषा साहित्य:विसम शतावदी (आधेयन)

वृत्तियापन किं वृत्तियापनकतिगिगि (सम्पादन)

डॉ नमाम हा (सौजन्य- नमाम हा)

मैथिली काव्यमे अठ्ठका

अठ्ठका-वासक

मैथिली काव्यमे ज्योतिषि

गनिग-अगनिग

अहनिवाम-वध (प्याम्ड काव्य)

पानिजान-मज्जनी

डॉ. नमानन्द हा 'नमाम' (सौजन्- नमानन्द हा "नमाम्" १९९९
षति आकाश)

हथिओ

सगन नानिदीप जय

नानु आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

अप्यास

केदाम नाथ यौधनी (सौजन्- केदाम नाथ यौधनी)

यमेथिनी

माहु

कान

अवाना गहनिग

अपगा

हेगा

वदिर केदाम नाथ यौधनी वशिषांक

योगेन्दु पाठक "वयिगी" (सौजन्- योगेन्दु पाठक "वयिगी")

वपिआगक वकही

वपिआगक वकही गाग-२

नक वपिय (सम्पूनाम)

नक वपिय (संशोधनि)

हमन गाम (वाठ उपन्यास)

परिामडिक देशमे

अकटा मसिया (कथा संग्रह)

नोवोट (अनूदति सांस्-शुकिशन नाटक)

कछुतीन मधुन (प्राणा व्रानांन)

सुशीठ (सौगन्ध- सुशीठ)

घनाडी (उपन्यास) (१८७३)

गामवाठी (उपन्यास) (१८८२)

गामती (नाटक) (पहिले मंथन १८८९, पुनकाशन २०१३)

असमति (उद्युक्था संग्रह) (२०१६)

कामेश्वर हा 'कमठ' (सौगन्ध- नवोनामायाम मशि)

कमठ-नाठ (गीत संग्रह)

नामठेयन गकुन (सौगन्ध- नामठेयन गकुन)

जे कहव सँय कहव

आँपुमिगने आँपुपिठने (संस्मनाम)

समनाकि थोपुनठ नंग (संस्मनाम)

अपुनवा (कवति संग्रह)

शहिसहनता (कवति संग्रह)

देशक नाम छठै सोन यडिया (कवति संग्रह)

ठापु पुनशन अनूतनति (कवति संग्रह)

पुनधिवन (व्रिडिशी भाषाक कवतिक मैथिली नूपाणाम)

पद्मनदीक माही (अनूदति उपन्यास)

मैथिली ठेककथा

आणुक कवति (सम्पादति कवति संग्रह)

वेनाठ कथा (हास्य-व्यंग)

देसठि वपना (अपुवाम)

व्रिडिह नामठेयन गकुन व्रिडिपांक

डॉ. देवशंकर गव्रीन (सौजन्य- देवशंकर गव्रीन)

आधुनिक साहित्यिक परिदृश्य

डॉ. वयेश्वर हा

नवनिर्गम-नकिम्प

कीर्तनगिथ हा (सौजन्य- कीर्तनगिथ हा)

कृपः मैथिली भाषागुणाद

जगदीश यगद्वेन गकुल "अनघि" (सौजन्य- जगदीश यगद्वेन गकुल "अनघि")

आँपमि यतिन हे मैथिली केन (आत्मकथा- जानी)

यानक ओर पान (दीर्घ कविति)

गीत गंगा (गीत संग्रह)

गणध गंगा (गणध संग्रह)

तोना अंगना मे (गीत संग्रह)

तोना अंगना मे (गीत संग्रह)- मूठ

वद्विह जगदीश यगद्वेन गकुल अनघि वशिषांक

नाण कशिम मशिम

यागना (कविति संग्रह)

सप्तपत्रम (कविति संग्रह)

नवीगद्वेन गानायम मशिम (सौजन्य- नवीगद्वेन गानायम मशिम)

गोनसँ साँह यनि (आत्म कथा)

पुनसंगवस (नविय)

स्वर्गा एतहि अछि (यातना पुनसंग)

शुसाद (कथा संग्रह)

नमस्तस्यै (उपन्यास)

वद्विधि पुनसंग (नविय)

महनाण (उपन्यास)

एजकोटन (उपन्यास)

सीमाक श्रोहिपात (उपन्यास)

समाधान (नवविध संग्रह)

मान्गुमी (उपन्यास)

सुवपुनठोक (उपन्यास)

शंयुगाद (उपन्यास)

इएह थकि जीवग (संस्मनास)

ढहैत देवाठ (उपन्यास)

पाथेय (संस्मनास)

हम आविहठ छी (उपन्यास)

पुनठयक पान (उपन्यास)

वीतगिठ समय (उपन्यास)

पुनठविमिव (उपन्यास)

वदठिहठ अछि सग कछि (उपन्यास)

नाष्ट्र मंदनि (उपन्यास)

संयुगा (कथा संग्रह)

गायिहठ छठि वसुधा (उपन्यास)

गन्ड कुमान मशिन् 'गन्ड' (सौजन्य- गन्ड कुमान मशिन् 'गन्ड')

गामधन (कथा संग्रह)

सुजाता (उपन्यास)

महानगी कैकेयी (पुनवयगात्मक नवविध)

गुदनीक ठाठ (उपन्यास)

अगठिया कुकुन (उपन्यास)

आडम्वन (कथा संग्रह)

दठिठिक पानक (सव्द यति)

सुकन्या (उपन्यास)

सुवनास कमठ (वाठ उपन्यास)

काव्य सन्धि (मैथिली काव्य संग्रह)

पुत्रिण (संस्मृतान्तरिक उपन्यास)

प्रायक के गर्भ (मैथिली शब्द-यति)

सन्ध्यागन्ध पाठक (सौभाग्य- सन्ध्यागन्ध पाठक)

हम गाम (उपन्यास)

डॉ उदय गामासहि "नयकिता" (सौभाग्य- नयकिता)

गो एम्प्टी : मा पुत्रशि

अग्नि

एक छठ गामा

गणक श्री अग्निग्न्य एकांकी

गाटक क छे

गायक क गाम जीवन

पुत्रप्राप्तान्त

गामथि

पुत्रिण (एकांकी)

मैथिली कविति-नैमासिक (अप्रै १९६६)

मैथिली कविति-नैमासिक (जुलै १९६६)

मथिली दृशन मास्य २०२१

मथिली दृशन नवम्बर २०२१

नव गृधाम पाठक

नहिस (गाटक)

वदहःसदेह रट (नव गृधाम पाठक श्री डॉ कैश कुमान मशि- अंक १-३५० सँ)

वदहःसदेह २७ (गणेश गकु श्री नव गृधाम पाठक श्री गामासँ अग्नि

गद्य श्री पद्य- अंक १-३५० सँ)

डॉ कैश कुमान मशि

वदहःसदेह रट (नव गृधाम पाठक श्री डॉ कैश कुमान मशि- अंक १-३५० सँ)

कुमान मगोण कश्यप

वद्विहःसदेह ३१ (डॉं कामगी कामाग्रगी आ कुमान मगोण कश्यप- अंक १-३५०

सं)

डॉं शम्भु कुमान सहि

(गुकाम नामा शेटक कोकमी उपन्यासक मैथिली अगुवाह डॉं शम्भु कुमान

सहि द्वागामा) पापुव)

वद्विहःसदेह २६ (डॉं शम्भु कुमान सहि आ डॉं अगुम कुमान सहि अंक १-३५०

सं)

डॉं अगुम कुमान सहि

वद्विहःसदेह २६ (डॉं शम्भु कुमान सहि आ डॉं अगुम कुमान सहि अंक १-३५०

सं)

कुमान पवण (सौणग्य- अंगिका)

पइइ (मैथिलीक सवसुषेष् कथा)

डायनीक पावणी पवण

केशव गामद्वाण

अणगुण अशुनीका (अशुनीका डायनी) प् २१४-४६६

कछि पढे आ कछि सुने- ईदी अमीन प् ४८८-५४८

पेठौना प् ४६७-४८७

पैवणह प् ५४८-७८८

कछि कथा ५०-४६३

गोपाथ हा 'अगषिक' (सौणग्य- गोपाथ हा 'अगषिक')

आउ सवपण साही कनी (कवति संग्रह)

आमोह कुमान हा (सौणग्य- आमोह कुमान हा)

वमिवक पथान (कवति संग्रह)

कशिन कानीगम (सौणग्य- कशिन कानीगम)

कछि सुना गेथ हमा

आशीष अनयनिहल

संद्भन सहति (गणध-आधियन)

कुमारी श्यषा (गणध संग्रह)

पंधाजोडी (गणध संग्रह)

अनयनिहल आयु (गणध, नुवार आ कताक संग्रह)

मैथिली गणधक वृत्तकाम ओ शहिस

मैथिली देव पत्तकामतिक शहिस (अनुगुणक: अंतिकि आधेपु:अंतुजाध आ

मैथिली: गणधेद्द गकु)

मैथिली गणधक नेडी नेकोन

शव्द-अन्थ-शकता

सुवतन्तयेना- अन्वगिद्द गकु: वृत्तकान्तिव-कान्तिव (वदिह अन्वगिद्द गकु)

वशिषांकक पुमििट नूप)सम्पादना

मुग्गाणी

मोकाम दसि (विहगिकथा संग्रह)

पुतीक (विहगिकथा संग्रह)

मॉद आंगनमे कताशिएध छी (मैथिली गणध संग्रह)

हम पुछैत छी (साक्षात्काम)

तीन टा वाध गटक (मैथिली वाध साहित्य)

पुनठुययी (मैथिली वाध कवति- वाध साहित्य)

घाह (हार्कू-टका संग्रह)

सन्दीप कुमाम साश्वी

वैशाप्यमे दधनप

ओम पुकाश हा

कयिौ वृद्दी गै सकध हमा (गणध, नुवार आ कता संग्रह)

अमति मसि

नव अंशु (गणध-हणध, नुवार संकधन)

यगन्धन कुमारी है

मोगक वान (गणेश, हनुमान, वाण गणेश, नुवाइ आ कनाक संकथन)

डॉ. अमोघ है

समय साक्षी थकि (वहिनिकथा संग्रह)

इ जे समय अर्था (वहिनिकथा संग्रह)

वनिप्र नूषाम (सौजन्य- आशीष अगयनिहान)

उजाना पनवाक प्योण (कवना संग्रह)

आगन्ध कुमारी है

टाकाक मोठ (गाटक)

कठह (गाटक)

वदथैत समाण (गाटक)

धयाशन नवकी कवयिंक उवास (गाटक)

हान पनविमनन (गाटक)

मुकनियाना (गाटक)

शक्ति कुमारी है "टिठू"

कषमपनना-कवना-संग्रह

अंशु-समाधेयना

देवांशु वानस

गनाशा -मैथिली वाण यतिनसंप्पथ (कौमकिस)

डॉ. वनिगत अपठ

हम पुछैत छी (कवना संग्रह)

नेहन पन नगुध - काशीनाथ सहिक हनिदी उपन्यासक वनिगत अपठ द्वारा मैथिली

अनुवाद

मनानदनपटाकषयसंज्ञा- ऐयक हसिकनशीवासाव "शठन" (हनिदीसं

मैथिली अनुवाद वनिगत अपठ द्वारा)

मोहनदास उदय पुनकाशक हग्निदी उपन्यासक व्रणीत उपपठ द्वाला मैथिली
श्रुवाए

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी) मोहनदास (मैथिली-मथिलिक्षण) मोहनदास
(मैथिली-वनेठ)

जगदानन्द हा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द हा "मनु")

गढ़िया मुकैए हमन घनाडीपन (जगठ संग्रह)

तोहन कतोक नंग (व्रह्मि कथा संग्रह)

योगहा- (वाठ उपन्यास)

वृथा- (कव्रति-गीत संग्रह)

नाजदेव माम्ठेठ

श्रमवना-कव्रति-संग्रह

हमन टोठ (उपन्यास)

वसुंधना(कव्रति संग्रह)

जगठ (पटकथा)

ठाज (एकांकी)

जगठ मंगन (उपन्यास)

नृविमीक नंग (व्रह्मि आ ठघु कथा संग्रह)

पंथैती (ठघु पटकथा)

वापसी

ढाजदौ मानदाठ- मातिहठि श्रौनतिन वय घाणेनदना थहाकुन

दुर्गागन्द माम्ठेठ

संयप्रकिा

कथा कुसुम (व्रह्मि आ ठघु कथा संग्रह)

यक्षु

नाम व्रठिस साहु

श्रंकुन- ठघुकथा संग्रह

१थक यक्का उठटियै वाट (कव्ति टगका संग्रह)
कम वणि णग सुगवा (दोस कव्ति टगका संग्रह)
सकूठक प्यिडी (व्हिगि उधु कथा संग्रह)
दूववेयनी (उधु कथा संग्रह)
मगक मैठ
गामाप्रम प्रादव (सौणग्र- उमेश मम्मूठ)
प्याठी घन
गामदेव पुनसाद मम्मूठ "हामूदा"
हमना वणि णग सुगवा छै
गीतांण्ठि हामू
कपिउश्वन गान
उठव (व्हिगि - उधु कथा संग्रह)
गंद व्रिषिस गाय
सप्यानी-पेटानी (उधु कथा संग्रह)
मदन अमन (दोस उधु कथा संग्रह)
मनाणदक गोण (दोस उधु कथा संग्रह)
गमदुगिया
छर्कि उठा
हमन यामुयाम
असठ पूजा
उठन कुमान कामन (सौणग्र- उमेश मम्मूठ)
कछु व्हिगि आ उधु कथा
उमेश पासवान
व्रामाति नस
वेयन गकून
वेटीक अपमान आ छीगदेवी (नाटक)

वाप मेठ पतिनी आ अर्धकाल (गाटक)

वसिवासघात (गाटक)

ऊँय-नीय (गाटक)

गौट (गाटक)

उं उमेश माम् उठ

जगदीश पुनसाह माम् उठक काव्य संसार (अनुसन्धान वशिष्ठेयम्)

अनुसन्धान (संकलन-सम्पादन)

हेण्डवुक सँ श्वेसवुक वनी (संकलन-सम्पादन)

जोए ने जाए कवीओए जाए अनुसन्धान (संकलन-सम्पादन)

निर्वकिठप (संकलन-सम्पादन)

समस्या सँ समाधान वनी (संकलन-सम्पादन)

निश्चुकी- कविति संग्रह

मथिठिक संस्कृत गीत, वधि-व्यवहार गीत आ गीतगाह (संकलन)

मथिठिक वनस्पति स्रष्टु शो मथिठिक जीव-जन्तु स्रष्टु शो मथिठिक
जानिगी स्रष्टु शो

मतिहठि आनिगिग-मोहिन अना-शुहेतोस

सगत नादिप जय- शहिस

सगत नादिप जय- आनी कुमानी श्वर

दुय-पानिश्चिक-शुचिक (कथा एवं पाम् उठपि जगदीश पुनसाह माम् उठ)-(छाया

एवं सम्पादन- उमेश माम् उठ)

हनिदुसानी मुसठमान औन हनिदुसानीयित - मूठ हनिदी ठेय- गीतेश शर्मा,

मैथिली अनुवाद- उमेश माम् उठ

उमेश माम् उठ द्वारा मैथिली ठेयकक नयना संसारसँ वीछठ वयिक पाम् उठक
पोथी

जगदीश प्रसाद माझुडो नामदेव माझुडो डो शिवि कुमान प्रसाद नामदेव
प्रसाद माझुडो "दातूदास" नाम वधिस साहु गण्ड वधिस नाय कपडिश्वर
नाउन प्रीतम कुमान गषिद

मथिषिक सभ जागि आ यन्मक संस्कृत, लोकगीत आ व्यवहारा गीत (सौजन्यः
उमेश मंडो)

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५
२६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३

अनन्तवर्ण (जगदीश प्रसाद माझुडोक १५ गोट वीछठ कथा- ययन एवम्
सम्पादन- उमेश माझुडो)

जगदीश प्रसाद माझुडो

गामक जागिगी (उद्युक्था संग्रह)

मथिषिक वेटी (गाटक)

मौठाइठ गाछक श्रुठ (उपन्यास)

जागिगीक जीत (उपन्यास)

अन्थाग-पान (उपन्यास)

जीवन-मन (उपन्यास)

जीवन-संघर्ष (उपन्यास)

नयेगन (वाठ प्रेमक वहिर्ग कथा संग्रह)

पंयवटी (एकांकी-संययन)

अनूयांगीसोपनी सुनदना वाइक सगिह श्यादा (उद्युक्था संग्रह)

कम्पुनोमाइण (गाटक)

हमेठिया वश्राह (गाटक)

इन्दियगुपी अकास (पद्य संग्रह)

शंभुदास (गीतटा दीनघ कथा मस्टुगान, शंभुदास आ श्रुंसी)

गीतांजलि (गीत संग्रह)

गीतांजलि (कविति संग्रह)

सतमैया पोपनी (उद्यु कथा संग्रह)

तीन जेठ एगामहम माघ (गीत संग्रह)

वज्रगना-वुहगना (वहिति कथा संग्रह)

नानाकन डकैत (नाटक)

वडकी वहिति (उपन्यास)

शकमोड (उद्यु कथा संग्रह)

उठवा याउन (उद्यु कथा संग्रह)

सतिति (कविति संग्रह)

सुप्याए पोपनीकि जारु (गीत संग्रह)

गै थाडेए (वाठ उपन्यास)

सुवयंवन (नाटक)

पानहाड (उद्यु कथा संग्रह)

शुठलान (उद्यु कथा संग्रह)

गामक शकठ सूतन (उद्यु कथा संग्रह)

ठजवणि (उद्यु कथा संग्रह)

वटेसन काका (उद्यु कथा संग्रह)

श्रामक गाछी

श्रुपन गाम

द्वितीयक दीप

पंयदेव सीनीज

पंयदेव-१ पंयदेव-२ पंयदेव-३ पंयदेव-४ पंयदेव-५ पंयदेव-६ पंयदेव-

७ पंयदेव-८ पंयदेव-९ पंयदेव-१० पंयदेव-२० पंयदेव-३० पंयदेव-

४० पंयदेव-५० पंयदेव-६० पंयदेव-७० पंयदेव-८० पंयदेव-९० पंयदेव-१००

दुय-पाणिशुक्राक-शुक्राक (कथा एवं पाह्मुडुपिणिगदीश पुनसाद माह्मुडु)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश माह्मुडु)

गदीश पुनसाद माह्मुडु गीक दप टा पोथीक नव संस्करण वरिहक २३३ (वरिह ०१०८-२०१७) सँ २५० (वरिह १५०५-२०१८) वरिह अंकमे वानावाहिक पुनकाशन नीयाँक ठकिपन पूः-

वरिहक २३३	वरिहक २३४	वरिहक २३५	वरिहक २३६	वरिहक २३७	वरिहक २३८
वरिहक २३९	वरिहक २४०	वरिहक २४१	वरिहक २४२	वरिहक २४३	वरिहक २४४
वरिहक २४५	वरिहक २४६	वरिहक २४७	वरिहक २४८	वरिहक २४९	वरिहक २५०

पंगु (उपन्यास)- साहित्य अकादेमी मूठ पुनसका २०२१ सँ सम्मानति पोथी

पंगु (हिन्दी अनुवाद नामेश्वर पुनसाद माह्मुडु)

अपुन साती (उद्युक्ता संग्रह)

मोडपन (उपन्यास)

सुयति (उपन्यास)

सेहना सेहने नहि गेठ (उद्युक्ता संग्रह)

डॉ शशवि कुमन

उडने सकी पन यडि छी हम (भाग १-२) (पु १०५४-१०८५)

पसिसा अह्मटाकटिका केन (पु १०५४-१०८५)

वाठ कवति (पु ८८३-१२१५)

वाठ कवति (पु १००४-११७३)

सयतिन वाठ कवति (पु ७४७-८३४)

सयतिन वाठ कवति (पु १४६८-१८५०)

गणेश्वर गकुन

तेल्लु कथा आ ओडिया, तेल्लु, गुजराती, मोडपुनी आ कश्मीनी कवति

तेल्लु कथा आ ओडिया, तेल्लु, गुजराती, मोडपुनी आ कश्मीनी कवति

(मथिठिकपन)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (मिथिला)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुपयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

प्रवचन-विवेचन-समावेष्टा भाग-१

प्रवचन-विवेचन-समावेष्टा भाग ६ (कुमुक्षेत्रम् अन्तर्गतक-२)

प्रवचन-विवेचन-समावेष्टा (भाग-२, कुमुक्षेत्रम् अन्तर्गतक प्पुस्तक-८)
(संक्षेपित)

गति गवत दगिश कुमा मसि

गति गवत दगिश कुमा मसि (मथिठिकष)

गति गवत दगिश कुमा मसि (कैथि)

गति गवत दगिश कुमा मसि (गेवाडी)

गति गवत दगिश कुमा मसि (इशुअ)

दूषम पम्पि- थहे गठायक गौक

दूषम पम्पि- थहे गठायक गौक (मथिठिकष)

पुवत अपु गमना जे सुत (वीरग, उघु आ दीग कथा संग्रह)

पुवत अपु गमना जे सुत (मथिठिकष)

पुवत अपु गमना जे सुत (कैथि)

पुवत अपु गमना जे सुत (गेवाडी)

पुवत अपु गमना जे सुत (इशुअ)

सुवपुगमे मण्डिह लेख

थहे पर्येनिये ७ औमदस

ढाणदौ मागद- मातिहठि औमति (मौमतिह पुपपठेमेग ३ & ३३)

दुशुधयइषह शुठशुषशुध मशुमयशुठ- मातिहठि औमति

गति गवत सुगप यगद प्रद

गति गवत सुगप यगद प्रद (मथिठिकष)

जगदीश प्रसाद मम्मड- एकटा वायोग्नाश्री

जगदीश प्रसाद मम्मड- एकटा वायोग्नाश्री (हिनदी अगुवाद नामेश्वर प्रसाद मम्मड)

जंगल वृत्ति (नाटक)

उत्कामुष्प (नाटक)

संकल्पम (नाटक)

बांगलिवट वनेवाक दाम अगुवान पेने छँ (नुवाद, कता आ गणेश संग्रह)

सहस्रजानि (पद्य संग्रह)

सहस्रावदीक यौपडपन (पद्य संग्रह)

नवम्याहम्य आ असमजानिमिग (दूटा गीत प्रवन्ध)

सहस्रवाढगि (उपन्यास)

सहस्रवाढगि वने-मैथिली (मैथिलीक पहिले वने पोथी)

सहस्रशीर्षा (उपन्यास)

गणप-गुच्छ (ब्रह्मि आ उद्यु कथा संग्रह)

शब्दशास्त्रम् (उद्यु कथा संग्रह)

वाठ मम्मडि कशिम जगल (वाठ नाटक, उद्यु कथा, कविति आदि)

कुमुक्षेत्रम् अन्तमनक

देवगागनी वनसग नलिहना वनसग वने वनसग

डेनन मतिहिलिषिषिगिग डनगुगो

डेनन मतिहिलिकसहल पयनपिन

डेनन मनाषिषे नह्योगह मतिहिलिकसहल पयनपिन

डेनन इगतनगानागिगिग शुहेनेनयि पयनपिन नह्योगह मतिहिलिकसहल पयनपिन

डेनन प्यातिह

डेनन मौन

डेनन छठठगिनापहयि मौन (द्वानजाना)

डेनन उन्हु पयनपिन

डोमन थविताग पयनपिन

डोमन हापागेसे पयनपिन डोम हाकि

डोमन मनाहर्मा

डोमन प्पहानोसहार्हा

मथिथि नान् मथिथि यत्तिकथ् मथिथिक पावर्गतिहिन (कथा) आ मथिथिक संगीत

ज्जोदीप (वाठ-नाटक संग्रह)

अक्षममुष्टिका (वाठ-उद्युक्था संग्रह)

वाडक वडौना (वाठ-पद्य संग्रह)

गानासंसी (गीत-पुनवन्ध)

मयाम्ड (नाटक)

वाठ साहित्य (मूठ)- गजोन्डन डकुन

गड ज्जोएव छू (मैथिलिक २०१२ मे पुनकाशति पहिठि क्कथासमेट-शुक्शिन पुठे मातिहठिसि डनिसन यथमिाते-डयितानि पठाय नोगिनिाठय पुवठसिहेड नि २०१२)

कमठाक गगाना

नान्हामि पनीठिक

वेसी छुट्टी कम रसकूठ

वडड क्कौए दाउन ने यौ

वाठ गज्जो

शुगिसि ठाश्न

अनूदति साहित्य (आग भाषासँ)- गजोन्डन डकुन

व्रदिहःसदेह २७ (गजोन्डन डकुन आ नवा गूषाम पाडकक आग भाषासँ अनूदति

गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

वाठ साहित्य (अनुवाद- द्द्वनिाषकि- मैथिलि-अंग्रेजी)- गजोन्डन डकुन

मसाई केन पनविनानकानी नेवेका

शेष ४० टा वाठ यत्नि-पोथी नीयाँक ठिकपन:-

अंक	वर्ग	पुस्तक नाम	लेखक	शेखर
१	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक
२	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक
३	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक
४	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक
५	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक
६	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक
७	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक
८	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक
९	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक
१०	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक	कव-कव कवक

वद्विह मैथिली-अंग्रेजी टाँकगि नीड-अठाउड आँडयि वुक

- हानपस्ववोमविवानयोरापवयेनश्रीयड्डपपछोड (मसाई केन पनविनागकानी नेवेका)
- हानपस्ववोमविवानयोरापवयेनपउसहैमगयि (यू ह्म तँ गीक छी ने!)
- हानपस्ववोमविवानयोरापवयेनडण्डपपहहवमो (एकटा गीक दनि)
- हानपस्ववोमविवानयोरापवयेनवरवौसशख (घन सग)
- हानपस्ववोमविवानयोरापवयेनअडखण्डवग (की अहाँ ऐ यडि सगकँ देयने छी?)

मथअ-उवख् उखषख् मखषख् मातिहथि ओपनीगिठ- गणेश् १ गकृ १

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (ननिहना)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुपयोग)

मैथिली प्रयोगगति

[शुभयोड मातिहथि गि रगदो-सुनोपेग डगगुगो ढामथि ओगिगि गद देवेओपमेगतोड मातिहथि ठगगुगो (षागसकगति, शुनाकगति, अवहात, मातिहथि गानोपीय भाषा पनविन मय्य मैथिलीक स्थान मैथिली भाषाक उद्भव ओ वक्रास (संस्कान, पनाकान, अवहट, मैथिली)]

[छनतिथिसिम- यडिडेनेग डतिनाय ढेनमस गि मोदेन एना तेसतोड यनतियाठ ववितियोड तहे यानदहितेस]

[प्रयोगीश्वर, वद्वियापनि आ गोवर्गददास सठिवसमे छथि आ नममय कव यत्नि यत्नगुण वद्वियापनि किठिग कर्वा छथि एय समीक्षा शंय्पठक पनामम कवासँ पूव यान गोटक शवदावथि गव शवदक पनाय संग देठ जा नहठ अछि गव आ पुनाग शवदावथिक जगसँ प्रयोगीश्वर, वद्वियापनि आ गोवर्गददासक पुनसगतानमे यान आओन, संगर्हा शवदकोष वढासँ यँटी मैथिलीमे पुनसगतान ठपिवामे यय आसते-आसते यतम होयत, ठेयनीमे पुनवाह आयत आ सुयथा भावक अगवियकृति यय सकत।

[वद्वीगाथ हा शवदावथि आ मथिथिक कष-भनस्य शवदावथि]

[वैठ्यू एडीशन- प्रथम पतन- ठेक गीथामे समाज ओ संस्कानि]

[वैठ्यू एडीशन- द्वितीय पतन- वद्वियापनि]

[वैठ्यू एडीशन- द्वितीय पतन- पद्व समीक्षा- वागगी]

[वैठ्यू एडीशन- प्रथम पतन- ठेक गीथ गानय गटक संगीत]

[वैठ्यू एडीशन- द्वितीय पतन- यातनी]

[वैठ्यू एडीशन- द्वितीय पतन- मैथिली नामाग्राम]

वैद्यु एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

वैद्यु एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द वर्या)

(गणिता अपिक उद्भव ओ विकास)

अनुवाक-१-२-३ अनुवाक-४-५

मैथिली आ दोस पवनिया भाषाक वीयमे सम्वन्ध (वांग्वा, असमिया आ ओडिया) [यूपीएससी सचिवस, पत्र-१, भाग-

"ए", क्रम-५])

मैथिली आ हिनदी वांग्वा भोजपुरी मगही संथा- वहीन लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) के सचिब सेवा परीक्षाक

मैथिली (ऐच्छिक) विषय छे।

मैथिली

वांग्वा

असमिया

ओडिया

हिनदी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथा

साथ उच्च साथ मातृहिति ०१- गणेश गुरु

साथ उच्च साथ मातृहिति ०२- गणेश गुरु

थेसिस-१- गणेश गुरु

थेसिस-२- गणेश गुरु

घष (शुभे)

थोपयि १ - गणेश गुरु

गणेश गुरु (सम्पादन)

<p>वदित-सदह १-२५ <u>वदितयोगि</u> वदित ई पत्राकिक अंक १-३५० सँ मैथिलीक सम्बन्धे गद्य आ पद्यक एकटा समागान संकथन</p>	
<p>देवनागरी</p>	<p>मथिलीक्षम</p>
<p>वदित-सदह १</p>	<p>वदित-सदह १ गणिता</p>

वद्विहःसदेह २ मैथिली पुनवगय-गविवय-समाधियग	वद्विहः सदेह २ गनिह्ण
वद्विहःसदेह ३ मैथिली पदुय	वद्विहः सदेह ३ गनिह्ण
वद्विहःसदेह ४ मैथिली कथा	वद्विहः सदेह ४ गनिह्ण
वद्विहः मैथिली वद्विहः कथा वद्विहः सदेह ५	वद्विहः सदेह ५ गनिह्ण
वद्विहः मैथिली वद्विहः कथा वद्विहः सदेह ५- संसुक-१११-२	वद्विहः सदेह ५ संसुक-१११-२ गनिह्ण
वद्विहः मैथिली उवुकथा वद्विहः सदेह ६	वद्विहः सदेह ६ गनिह्ण
वद्विहः मैथिली पदुय वद्विहः सदेह ७	वद्विहः सदेह ७ गनिह्ण
वद्विहः मैथिली गदुय उअसव वद्विहः सदेह ८	वद्विहः सदेह ८ गनिह्ण
वद्विहः मैथिली शसि उअसव वद्विहः सदेह ८	वद्विहः सदेह ८ गनिह्ण
वद्विहः मैथिली पुनवगय-गविवय-समाधियग वद्विहः सदेह १०	वद्विहः सदेह १० गनिह्ण
वद्विहःसदेह ११	वद्विहः सदेह ११ गनिह्ण
वद्विहःसदेह १२	वद्विहः सदेह १२ गनिह्ण
वद्विहःसदेह १३	वद्विहः सदेह १३ गनिह्ण
वद्विहःसदेह १४	वद्विहः सदेह १४ गनिह्ण
वद्विहःसदेह १५	वद्विहः सदेह १५ गनिह्ण
वद्विहःसदेह १६	वद्विहः सदेह १६ गनिह्ण
वद्विहःसदेह १७	वद्विहः सदेह १७ गनिह्ण
वद्विहःसदेह १८	वद्विहः सदेह १८ गनिह्ण
वद्विहःसदेह १९	वद्विहः सदेह १९ गनिह्ण
वद्विहःसदेह २०	वद्विहः सदेह २० गनिह्ण
वद्विहःसदेह २१	वद्विहः सदेह २१ गनिह्ण
वद्विहःसदेह २२	वद्विहः सदेह २२ गनिह्ण
वद्विहःसदेह २३	वद्विहः सदेह २३ गनिह्ण
वद्विहःसदेह २४	वद्विहः सदेह २४ गनिह्ण
वद्विहःसदेह २५	वद्विहः सदेह २५ गनिह्ण
<p>वद्विहः-सदेह २६-३६ वद्विहःयगि वद्विहः ई पत्तःकिक अंक १-३५० सँ थीम आध्यागि मैथिलीक सःवसःनेष मूठ आ अगूदगि गदुय आ पदुयक एकटा समागःगः संकःठग</p>	

વૃદ્ધિ:સદેહ ૨૬ (ડૉં શમણ કુમાર સોહિ આ ડૉં અનુભ કુમાર સોહિ અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૨૬ તાનિહુના
વૃદ્ધિ:સદેહ ૨૭ (ગાંધીજી ૧૦૦ આ નવો શ્રીધામ પાઠકક આગ શાખાસં અભૂદાતિ ગદ્ય આ પદ્ય- અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૨૭ તાનિહુના
વૃદ્ધિ:સદેહ ૨૮ (અભૂદાતિ ગદ્ય આ પદ્ય- અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૨૮ તાનિહુના
વૃદ્ધિ:સદેહ ૨૯ (નવો શ્રીધામ પાઠક આ ડૉં કૈલાસ કુમાર મસિન- અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૨૯ તાનિહુના
વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૦ (સુકૃષ્ણ-કાંઠેપાક વૃદ્ધિવાનથી ઇ- અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૩૦ તાનિહુના
વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૧ (ડૉં કામોળી કામાયળી આ કુમાર મનોજ કશ્યપ- અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૩૧ તાનિહુના
વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૨ (નયનાત્મક ગદ્ય-પદ્ય ઇચ્છા શાગ-૧- અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૩૨ તાનિહુના
વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૩ (નયનાત્મક ગદ્ય-પદ્ય ઇચ્છા શાગ-૨- અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૩૩ તાનિહુના
વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૪ (નયનાત્મક ગદ્ય-પદ્ય ઇચ્છા શાગ-૩- અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૩૪ તાનિહુના
વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૫ (નયનાત્મક ગદ્ય-પદ્ય ઇચ્છા શાગ-૪- અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૩૫ તાનિહુના
વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૬ (નયનાત્મક ગદ્ય-પદ્ય ઇચ્છા શાગ-૫- અંક ૧-૩૫૦ સો)	વૃદ્ધિ: સદેહ ૩૬ તાનિહુના

યુપીએસસી આ આગ પુનત્યોગાતિ પત્રીકષા ઇઇ દેખુ:

વૃદ્ધિ:સદેહ ૧૩	વૃદ્ધિ:સદેહ ૨૧	વૃદ્ધિ:સદેહ ૨૩	વૃદ્ધિ:સદેહ ૨૬	વૃદ્ધિ:સદેહ ૨૯
વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૦	વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૨	વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૩	વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૪	વૃદ્ધિ:સદેહ ૩૫

વૃદ્ધિ-પાદેહ

શાખાપાક -વૃદ્ધિ મૈથાળી માગક શાખા આ મૈથાળી શાખા સમ્પાદન પાડ્યક્રમ

વૃદ્ધિ પુનાગ અંકક આન્કારવ

વૃદ્ધિ ૧-૫૦

વૃદ્ધિ ૫૧-૧૦૦

વૃદ્ધિ ૧૦૧-૧૪૮

વૃદ્ધિ ૧૫૦-૨૫૦

વૃદ્ધિ ૨૫૧-શ્રોગૌનદસ

શ્રદ્ધી અનયલવિ ઢોઇદે

મતિલિ ઞાનિતિગ-મોદેન અન-શ્લેતોસ

વૃદ્ધિ શ્રોઇ ૨સસુસ ઢોઇદે

વૃદ્ધિ ઇલાસસયાઇ પતિસ ઢોઇદે

गणेश गुरु आ आशीष अनयनिहाल (सम्पादन)

मैथिलीक पुननिधिगण

मैथिली गण: आगमन ओ पुनस्थान वद्वि (गणक आठोयना-समाठोयना-समीक्षा)

गणेश गुरु, गणेश कुमाल हा आ पञ्जीकाल वद्विपानन्द हा (सम्पादन)

जोगेम मैपगि (४५० एडीसँ २००८ एडी)--मथिलीक पुनपुनवन्ध

जोगियोठोठकिठ मैपगि (४५० एडीसँ २००८ एडी)--मथिलीक पुनपुनवन्ध -

शाग-२

पंजी (११००० मूठ मथिलीकपुन नाडपन्)

११००० शुअडम डएअठ शुआमदर शमाषठरशुथरओमष (वओडउमए ३ थओ शशर) छेमपठिद, पयागनेद & छाताठोगेद वय शुगेतिहकुर

मअरथरडर-एमघडरषह वरछथरओमअठरपष

मातिहठि-एगठसिह ययिनीगामय व्रोठर

मातिहठि-एगठसिह ययिनीगामय व्रोठर

एमघडरषह-मअरथरडर वरछथरओमअठरपष

वद्विहा एगठसिह मातिहठि ययिनीगामय

एगठसिह-मातिहठि छेमपुतेन ययिनीगामय

दगिश कुमाल मशिन् (सौजग्य दगिश कुमाल मशिन्)

वन्दनी महानन्द

वागमती की सद्गता!

दुः पाठन के वीथ में (कोसी नदी की कहानी)

न घाट न घन

वगावत पुन मणवून मथिली की कमठा नदी

गुणही नदी और नकलीकी हाड-शुंफ
थे पामठा ढवेल। नद शेपठे ओग छोठसोनि छोरसे
गुणही गाठन- पतोनयोड। गहेसन नवेल। नद गगननिगोतियहयनाडन
ढेडुगोसोड नहे प्योसि एमवागकमेगनस

पानकि-पानठ समानकि

मैथिली कवनि-न्यैमासकि (सौजन्य- नयकिता)

मैथिली कवनि-न्यैमासकि (अप्यैठ १८६८)

मैथिली कवनि-न्यैमासकि (पुठा३ १८६८)

मथिली दनशन (सौजन्य- नयकिता)

मान्य २०२१

नवम्ब २०२१

कौशिकी (सौजन्य- पञ्जीकान वदियागनद हा)

कौशिकी (१८७१-७२)

देसठि वयन (अप्यवान) (सौजन्य- नामठेयन गकुन)

देसठि वयन (अप्यवान)

पोयोतिय थोदाय (सौजन्य- सुमति आगनद)

अंक ११

संकठप (सौजन्य- योगाननद हा)

अंक ५ १८८८

अंकि (सौजन्य- गौनीनाथ)

पुठा३-सतिम्ब २००८ (हामिहण हा वशिषांक) अक्टूब २०१०सँ मान्य

२०११ अक्टूब २०११ सँ मान्य २०१२

मानती मंडन (सौजन्य- केदान कागन)

अंक-१६

सन्धान (सौजन्य- अशोक)

सन्धान १

सन्धान २

सन्धान ३ पुनर्मास व्रशिष

सन्धान ४

मथिथिगण (सौजग्य मुकेश दत्त)

अपुत्रै-सतिम्वन २०२२

मैथेनंग (सौजग्य- पुनकाश द्वा)

अंक२-३

धुआ-यणा (सौजग्य- पुनमेश्वर कापड)

अंक ७ अंक १४ अंक १५ अंक १६ अंक १८ अंक १० पूण २०१२ अंक २४ पूण

२०१२ २३६वृणापु२०१६ २५ पुण३२ २०१२ ०५ अगस्त २०१२ आसनि २०७३

समाजिका (सौजग्य- नामगोस कापड ग्मम)

समाजिका (२०१०)

आंगण (सौजग्य- नामगोस कापड ग्मम)

आंगण अंक-४ (२०१२) सउहेस व्रशिषांक

आँपुन (सौजग्य- नामगोस कापड ग्मम)

आँपुन (अंक वृष ३६, अंक ३) सोमदेव व्रशिष

गामधन (सौजग्य- नामगोस कापड "ग्मम")

गामधन-३०-०८-२०१८

गामधन-०४-१०-२०१८

गामधन-१६-०५-२०१८

गामधन-२७-०६-२०१८

दूधमती- (नेपाथी आ मैथिलीमे) (सौजग्य- सुजीत कुमार द्वा)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक ३५ अंक ३६ अंक ३७ अंक ३८ अंक

३९ अंक ४० अंक ४१

धन-वाहन (सौजग्य- येनगा समिति)

अप्रैठ-पूण २०११

नयना (सौणय- सुगाप यन्द्न प्रादव)

दसिम्वन "०५ मान्य "०६नाणकमठ यौधनी: भोगोपनाशु

प००० (सौणय- धीनेन्द्न प्रेमन्षा)

प०००- १ गणप अंक

पुनोत्तन मैथि (सौणय- प्रेमकाण यौधनी)

अप्रैठ-पूण २०१० पु००३-सतिम्वन २०१० पणवनी सं मान्य २०११ अप्रैठ-पूण

२०११ पु००३-सतिम्वन २०११

०००३ गावांणपि समाप्ति २०२२ (सौणय ०० संजीव शमा)

कछि मैथि पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

मधुपथ महअपहअ पअमधअम

मधुपथ (मातिहिति-एगठसिह-हनिदि छेनवेनसागांस)

मैथि-हनिदी वानाणप (३ धमटा)

मैथि (मैथि संकेत भाषा सहति- मैथिमे पहि वेन)

हानपसःपुनवेयोमन्दिहो पुनगा

हानपसःपुनवेथेवुछ-०१पसद

हानपसःनयेनगयिनिवस-२०२१पहप

पहतिपा अकादेमी

पुनकाशन

उजिठिठ-पोथी

छ२२७

अप्यासठ (नमानद हा नमा)

पुआपठ ककनी- महेन्द्न

पुनवय संग्रह- नमानथ हा (विपीएससी सठिवस)

सुण केन दीप पुन- सं केदान काण आ अवनिद गकुन

मैथि गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्न मोहन हा

અન્યહવિશ્રોતગ (વ્રજિપદેવ દ્વા)

વદિહ માતિહિભિ મોકસે દ્વેનગાઇસ્ વદિઁ અન્યહવિ

શ્વમઘશ્વ

માતિહિભિ પ્નગાઇસિહ યયિત્તિગાનપ્

વ્રજિમાગ નાનાકૃ

મથિભિ દનશ્વ

તીનશુકર્તા

શ્રોડપ મેપાઇ'સે -શુસનાકાઇપ્

પૌથીક ઇકે

શ્વમઘશ્વ-અપર (સોનયહ કેયૌનદ માતિહિભિ)

હસિતોનપોડ માવપ્-મપ્પાપ્ ગિ માતિહિભિ

પતુદેસિ ગિ દ્વાનિસિમ નદ મુદદસિમ ગિ માતિહિભિ

માતિહિભિ ગિ નહે શ્રોગોડ વદિપ્પાપાત્

છુઇત્તુનાઇ હેનિતિગોડ માતિહિભિ

માતિહિભિ ગદેન નહે પ્પાનગાનાસ

થેમપઇ પુનવેપ્ શુનોપેયન અપર- પ્નગાઇસિહ શ્રા હનિદ્વા

મૈથિભિ સાહિત્ય સંસ્થાન

દનશ્વનીપ્ મથિભિ (મૈથિભિ સાહિત્ય સંસ્થાન ઇકે)

મનોયહુને ૧ (મૈથિભિ સાહિત્ય સંસ્થાન ઇકે)

મનોયહુને ૨ (મૈથિભિ સાહિત્ય સંસ્થાન ઇકે)

મનોયહુને ૩ (મૈથિભિ સાહિત્ય સંસ્થાન ઇકે)

મનોયહુને ૪ (મૈથિભિ સાહિત્ય સંસ્થાન ઇકે)

મનોયહુને ૫ (મૈથિભિ સાહિત્ય સંસ્થાન ઇકે)

વૂમ ઇશ્વનેતી મૈથિભિ

अपिग शुअम्डेसग

शुनातहाम गोकस मातिहवि षतोयौवेन

मैथवि आँउयि वुकस

वदिह ढेह अणेह थाउकनिग मातिहवि अदी गोकस (नियुदनिग मातिहवि
षगिन डानगागे- इसात तमि नि मातिहवि)

पोथी डॉट कॉम

इ डेवे मतिहवि (पोथी डाउनलोड ठकि)

गेननि मातिहवि जोनगाथ

गेनेन इ डेवे मतिहवि

पयाने मैथवि येनथ कनिम यौयनी आ संगीता आननह- मैथविक सगसँ

ठोकपयि यू ट्यूव येनथ

मथिथि यैपटन

पयिसा-पहिनी नेना गटका ठेठ

जागकी एशुएम समायान

आकाशवासी हनगंगा यू ट्यूव येनथ

हामउ

मैथवि

मैथवि ठेकसकिन

वदिहो - डाननिगौथुवे छहाननेठ

व्रद्धि सम्मानः सम्मान-सूची (समानागत साहित्य अकादेमी, समानागत
७७ति कथा अकादेमी आ समानागत संगीत-गाटक अकादेमी सम्मान् पुनस्का
नामसं व्रप्पियात्)

मैथिलीक व्रत्तनी

१

मैथिलीक व्रत्तनी- व्रद्धि मैथिली भागक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन
पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक व्रत्तनीमे पन्याप्त व्रत्तियिता अर्था मुदा पुनश्चपत्त देय्यता उन्त
एक व्रत्तनी श्रुत ममअ६००१ सँ पुनैति वृद्धाश्च अर्था, से एक एक एक
उप्युहामे उगटा-पुगटा दियौ, तावे यन् पन्याप्त अर्था यूपीएससी क मैथिली
(कम्पउसनी) पेपन ठेठ सेहे ३ पन्याप्त अर्था, से जे व्रद्धियान्थी मैथिली
(कम्पउसनी) पेपन ठेठे छथि से एक एकटा आन श्वास्त-गीर्जि दोस-
उप्युहामे कथि

श्वामश्रोउ श्रुत ममअ६-००१

थहेसे जे पनित-न-देमागद वौकस, सेगद युन टुनैसि
तो दितोनाठिसनाउडव्रद्धिहोगमाठियोम थहे गौकस १७ सोमे १७ तहेसे जे
व्राठिवठे जेन साठे जेन घौगठे श्रुतय [[य) श्रुतय थहाकुन,
साठेसव्रद्धिहोगमाठियोम], सेगद युन टुनैसि तो साठेसव्रद्धिहोगमाठियोम थहे
योगतेगतस गद दियुमेगतस -पुवठिसिहेद वप्र व्रद्धिह (सगिये २०००) श्वाम
२२२२-५४७३३ व्रद्धिह (सगिये २००४) जे पेनैदियाठय वेनिग यहेयकेद
जेन ययेससविठिय सिसेस श्रुतय गौतिह दिसावठितिसि सहुठद गोन हावे
दडिउयुठय ययेससगिग तहेसे योगतेगतस दियुमेगतस

व्रद्धि व्रीडयो

वदिह वदिह वदिह विदेह हानपस्वौकसगौगथेयोनि वदिह प्रथम मैथिली पाक्षिके ई पानिका वदिह इसन मातिहिलि ढोलनगिहणथ
ेजुनगाथ वदिह प्रथम मैथिली पाक्षिके ई पानिका नव अंक देप्पवाक ऐथ प्ठ सगके नखिनेस कए देप्पा अठौयस नेउनेसह गहे पागेस
जेन वीरिगिग गौ सिसे १०६ वरथएथ

षानयह जेन वदिह नेथतेह निजेनमातानिस नियछुदनिग शुननिग, शुदी-वसिुअ
& षगिन डनगुगो नेथतनिग तो मतिहिल् मतिहिल्

हानपस्वौकसगौगथेयोम्



वदिह" इसन मातिहिलि ढोलनगिहणथ ेजुनगाथ अयहवि १०६ वदिहस
'वदिह' प्रथम मैथिली पाक्षिके ई पानिका वीरियो आन्काइव मैथिली वीरियोक
संकथन (पूनामतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मान एकडेमकि प्रयोग
ऐथ) वीरियो देप्पवाक ऐथ सवयति ठिकेके क्ठकि कूा ढेन वीरिगिग वदिहस
यथयिक गहे नेसपेयनि ठिकस

मथिलिक सग पानिआ धन्मक संस्कान, ठेकगीन आ व्यवहान गीन (सौजन्यः
उमेश मंडेर)

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५
२६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३

गुवाहाटी वदियापनिपिन्व २०१०

पहिलि भाग दोसन भाग तेसन भाग यानमि भाग पाँचम भाग

गुवाहाटी अन्तर्नाष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ वदियापनिपिन्व २०११

०१ ०२ ०३ ०४ ०५ ०६ ०७ ०८ ०९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २
२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५
४६

यौवटयिा (सौणग्य- धीनेग्द- प्रेमन्षा)

यौवटयिा

सौभाग्य मथिषि

७७का पाग भाग-१

७७का पाग भाग-२

मनिाप-१

वुययिाग छौड़ा आ नाक्षस

मनिाप-२

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

सखएढथ गहअपहअ षअसघअम

सखएढथ (मातिहवि-एगगसिह-हनिदी छेनवेनसागानिस)

पं ७कूपमीपनि सिहि (सौणग्य नमानग्द हा "नमास")

हनिदी-मैथषि-शक्षिषक

मैथषि-हनिदी वान्ताप (३ घसटा)

मैथषि (मैथषि संकेत भाषा सहति- मैथषिमे पहि वेन)

हानपस्ःयुतुवेथेभुवदिहोणुनगा७

हानपस्ःयुतुवेथेवुछ-७१षसद

हानपस्ःगयेनगयिनिवस-२०२१पहप

पुयाने मैथषि येन७- कनिास यौवनी आ संगीता आनग्द- मैथषिक सगसँ

७कूपयि यू टूव येन७

मथिनिग ७क नंग

मथिथि यैपटन
पसिसा-पहिनी गेना गुटका ठेठ
मैथिथि गंगमंय

कोकठि मंय

मथिथि द्दशग

गोठम मैथिथि

मैथिथि गंगा

१शु कट्स, गयकिगा

कुम्पण वहिनी

१म वावू ह्द

वी जे, व्रकिस ह्द

आर ठव मथिथि

१जनी पठठवी

पूगम मक्षि

१जगा ह्द

पूठी ह्द

मैथिथि गकु

वूम ठास्वनेनी मैथिथि

अनपिन आउम्डेशन

शुनागहाम गोकस मातिहठि पिनोनयौवे

मैथिथि आँडयि वुक्स

व्रद्धिहा देह अष्टोद थाभकनिग मातिहृषि श्रुद्धी गौकस (नियुष्टनिग मातिहृषि
षणिग ड़ागुगो- इसन तमि नि मातिहृषि)

हानपस्ववोमभविनामसोनापभयेनश्रुयडदपपयोः (मसाई केन पनविनागकानी नेवेका)

हानपस्ववोमभविनामसोनापभयेनपउसहृदैशगथि (यथू हम तँ ठीक छी ने!)

हानपस्ववोमभविनामसोनापभयेनडण्टपपदह्वमो (एकटा गीक दनि)

हानपस्ववोमभविनामसोनापभयेनवरठपौसशखप (घन सग)

हानपस्ववोमभविनामसोनापभयेनअडखण्डवगः (की अहाँ ऐ यडि सगकँ देप्पने छी?)

जागकी एश्वएम समायाग

ममना गावय गीग (सौणग्य- श्नी केदानगाथ यौधनी)

गीग

आकाशवासी दनगंगा यू ट्यूव यैग

२ ड़ोवे मतिहृषि

गेभनि मातिहृषि ज़ोनाग

गौनेन २ ड़ोवे मतिहृषि

वृप्पेश यग्ट्ना ठाठ, जागकपुनक सौणग्यसँ

हृदियि

ढोठ-पपिही

पवगकाग्न हा (काश्रप कमठ), गटसमिना, मधुवगीक सौणग्यसँ

नसगयौकी

व्रद्धिप्रापनागीग

तूठिका

गीग-गोव्रग्निददास (गायन दीक्षा गानती)

गोवर्गिददास-१

गोवर्गिददास-२

गोवर्गिददास-३

गोवर्गिददास-४

गोवर्गिददास-५

गोवर्गिददास-६

मैथिली गणध (गणध- गणध्दुन गकुन, गायन दीक्षा गानगी)

वहने मुनकानवि

गणध-२

गणध-३

गणध-४

७१म सगन गान्दीप गनए (०२ अकूटवन २०१०), गाम वेनमा , गणध मधुवनी
(संयोजक- गणदीश पुनसाद मंडुध)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५ भाग-६

दर म सगन गान्दीप गनए, स्थान- गणध्दुन गकुन गोक गणध आवास, गाम-
मेहथ, गणध- मधुवनी। दगिंक- ३१ मई २०१४ (सगन दगि), समए- संयुया छह
वणसँ। गोषुगक गाओ- कथा वौद्वय सद्दिय मेहथपा सगन गान्दीप गनए।
आयोजनक प्पेप- दर म आयोजन, संयोजक- गणध्दुन गकुन। वसिषणा- वाध
साहित्यपन केण्दुनगि।

मैथिली-१ (सौणग्य- पुनकास ह।)

नयकिताक एक छठ नाणा - भाग-१

नयकिताक एक छठ नाणा - भाग- २

काडक ठोक- महेन्द्-१ मठग्यािा भाग-१

काडक ठोक- महेन्द्-१ मठग्यािा भाग-२

मैथिली-२

कोसी सेमीनार १२ सतिम्ब-१ २००८ भाग-१

कोसी सेमीनार १२ सतिम्ब-१ २००८ भाग-२

मथिलिाग

वद्विह मैथिली नाट्य अन्सव

यू ट्यूव ठकि

वद्विह मैथिली साहित्य नाट्य कवतिा पनयिन्या अन्सव

वद्विह समागागन साहित्य अकादेमी सम्मान समानोह

जगकपुन- वद्विप्रापतिा पन्व

जतिगद्-१ हा, जगकपुन

नामगद्-१

सामा यकेवा १

सामा यकेवा २

मैथिली कवतिा सम्मेठन (मथिली कठ्यनठ ऑन्गोनाशपोशन, यूके)

नपिव्ठकि डे २००८ (माना)

सगत नातिदीप जार, कवठिपुन, पून २०१०

भाग-१ भाग-२

कृष्ण कुमान कश्यपसँ गजोन्द्-१ गकुन द्वाला ठेठ साक्षात्काम

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७

प्रवोध सम्भाग: गणमोहन ह।

(सुभाशुभके वीयमे ए गणउ, अदहाक वाद गणमोहन ह।सँ वगिन उपपक
साक्षान्काम धर्वा)

साहित्य अकादमी पुस्तकान: मन्नेश्वर ह।

मथिथिक प्योण

गौरीशक-१

भाग-१ भाग-२

२ वास्सी-वसैटी

वृषकृत्य

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

समव्यय २-४ नवम्बर २०१२ सम्पुत्रि हैवीट्ट सेन्ट गान्तीय भाषा महोत्सव
षामागवाय २-४ सोवेमवे २०१२ इहध इगदगि डगुगोस' डेसगविठ वेने: इगदगि
हावगिण धेगने, डेदह डोद, सो वेधह-- ११० ००३

इए सोवेमवे २०१२ मागिहधि डेवेस औग डगुगो मगहमगिसिम गि
मागिहधि श्वने ह्योगगिसिहौम सोग-मगहमगि वदियापागि

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

भाग-११ भाग-१२

इगद सोवेमवे २०१२ उगना डे- मय पहवना सामायाग (श्वने ह्योगगिसिहौम सोग
मगहमगि वदियापागिसि डडि एपसिडे)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८

उपम संगम नानादिप जलए मे मुग्नालीक पहिठि वरिणि किथा पोसुटन पुनदुसगी
मथिठिक मूङ्ग- (नसनयौकीक सुवनक संग)

हृदयगनायस ह।

भाग-१ भाग-२ भाग-३

नंगन यौधनी आ हनी मसिन (नवठा)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

ठठति नंग आ हनी मसिन (नवठा)

भाग-१ भाग-२ भाग-३

दीक्षा मानगी

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

सुषमा

वटगमगी

नन्द कुमान मसिनक गणठ पाठ

नन्द कुमान मसिन लीक कवति पाठ

भाग-१ भाग-२

मैथिली- गोणपुनी अकादमी, नई दिल्ठी

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

मैथिली- गोणपुनी अकादमी, नई दिल्ठी सेमीगल रट मान्य २००९

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

मैथिली- गोलपुनी अकादेमी, इलाहाबाद, गई दलित सेमीनार

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६

वर्द्धि सम्मान: सम्मान-सूची (समानागत साहित्य अकादेमी, समानागत
उत्ति कथा अकादेमी आ समानागत संगीत-गाटक अकादेमी सम्मान पुनस्का
नामसँ व्रप्पिया)

मैथिलीक व्रतगी

१

मैथिलीक व्रतगी- वर्द्धि मैथिली भागक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन
पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक व्रतगीमे पत्र्याप्त व्रविधिना अर्था मुदा पुनश्चपत्न देप्यथा अन्त
एक व्रतगी इगू ममअ००१ सँ पुनति वुहाश्न अर्था, से एक एक एक
उपडाहमे उगटा-पुगटा दियौ, तने वन पत्र्याप्त अर्था यूपीएससी क मैथिली
(कम्पउसी) पेपन ठेठ सेहे इ पत्र्याप्त अर्था, से जे वर्द्धियान्थी मैथिली
(कम्पउसी) पेपन ठेठे छर्था से एक एकटा आन आस-नीडगि दोस-
उपडाहमे कर्था

इधामओउ इगू ममअ००१

अपन मंगल्ये दितिगिअसा उडवर्द्धिहोगामाविये म पडउ

व्रह्मि शसि, वा० आ कश्मि० अ०स०

व्रह्मि ह व्रह्मि व्रह्मि विदेह हानपस्वौकसगौगवेयोम् व्रह्मि प्रथम मैथिली पाक्षिके ई पानिका व्रह्मि इसा मातिहवि ढोनागगिहणथ
पुनगाव व्रह्मि प्रथम मैथिली पाक्षिके ई पानिका नव अंक देपवाक वे० पृष्ठ सगके शक्तिश कए देपू अवीयस नेउनेसह गहे पागेस
जेन व्रौगिग गौ सिस्ते० वर्यएहथ

षानयह जेन छहविदेनेन जतिनातुने (नियउदनिग शुद्धी-वसिु० & षगिग जगगुगे) ने०ननिग तो मतिहवि मातिहवि

हानपस्वौकसगौगवेयोम्



व्रह्मि अयहवि० मातिहवि छहविदेनेन जतिनातुने व्रह्मि मैथिली शसि, वा० आ कश्मि० साहित्यक आकाश्व (पूनामः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मान् एकडेमकि प्रयोग वे०) सग पोथी पीडीएश्च जउनवे० वे० कमागुसा नियाँक ठकि सगपन उपव्य अर्था अ०० गहे वौकस ले। व्राविववे जेन पद० दौनवे०।। गहे नेसपेयनवि ठनिकस वे०।

मधएढथ गहअपहथ षअमघअम

मधएढथ (मातिहवि-एगठसिह-हनिदि छेनवे०सागानिस)

पं ०कूपमीपनि सहि (सौणय्य नमान्द ह। "नमम")

हनिदि-मैथिली-शक्तिषक

मैथिली-हनिदि वानावाप (३ घम्ट।)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहि- मैथिलीमे पहि वे०)

हानपस्वौकसगौगवेयोम् व्रह्मि पुनगाव

हानपस्वौकसगौगवेयोम्-०१पसद

हानपस्वौकसगौगवेयोम्-२०२१पहप

व्रह्मि मैथिली शसि अ०स०

कथा वौद्ध्य सद्ध्य मेह्यपा (वा० साहित्य केन्द्राणि) मेह्यमे मे० दर म सगल
नागदीप ज्ञान्यमे पठति कथा सगक संकथन

कथा वौद्ध्य सद्ध्य मेह्यपा

वेगा गुटकार्के नागमि सुगेवा वे० कछि ठेककथा

मो० वा० दास (आन्कार्व ७०८ क०म)

मैथिली सुवोध व्प्राकनाम

७०० नमानन्द हा 'नमाम' (सौजग्य- नमानन्द हा "नमाम")

नागू आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

योगेन्द्र पाठक "व्ययोगी" (सौजग्य- योगेन्द्र पाठक "व्ययोगी")

व्रिभागतक वकही

व्रिभागतक वकही गा०-२

नक व्रिपय (सम्पूनाम)

नक व्रिपय (संशोधति)

हमन गाम (वा० उपन्यास)

पनिमडिक देशमे

नोवोट (अनुदति सारंस-शुक्लिन गटक)

नामथेयन गकुन (सौजग्य- नामथेयन गकुन)

मैथिली ठेककथा

कीर्तनाथ हा (सौजग्य- कीर्तनाथ हा)

कुन०: मैथिली नावागुवाद

जगदीश यन्दुन गकुन "अनधि" (सौजग्य- जगदीश यन्दुन गकुन "अनधि")

वा० कवति

मुग्नाजी

तीन टा वा० गटक (मैथिली वा० साहित्य)

पुनरुय्यी (मैथिली वा० कवति- वा० साहित्य)

देवांशु व्रन्स

गताशा -मैथिली वाठ यत्निसंयुता (कौमकिस)

जगदागद्द हा "मगु" (सौजग्य- जगदागद्द हा "मगु")

योगहा (वाठ उपग्यास)

जगदीश पुनसाद मासुठ

ननेगन (वाठ पुनेक वहिग किथा संग्रह)

गे याडेए (वाठ उपग्यास)

गद्द कुमान मसिन 'गद्द' (सौजग्य- गद्द कुमान मसिन 'गद्द')

सुवाम कमत (वाठ उपग्यास)

वृषेश यगद्द एठ (सौजग्य- वृषेश यगद्द एठ)

ढेठक (वाठ कवगिा संग्रह)

सुजीन कुमान हा (सौजग्य- सुजीन कुमान हा)

कोरुठी घुन आउ (वाठ एठ-वहिंग किथा संग्रह)

उाँ शशयिन कुमान

उडाँगे सकी पन यडिँ छी हम (भाग १-२) (पृ १०५४-१०८५)

पसिसा आसुटाकटकि केन (पृ १०५४-१०८५)

वाठ कवगिा (पृ ८८३-१२१५)

वाठ कवगिा (पृ १००४-११७३)

सयतिन वाठ कवगिा (पृ ७४७-८३४)

सयतिन वाठ कवगिा (पृ १४६८-१८५१)

उाँ शशयिन कुमान आ सुपुनियिा वेवी कुमानी

गूकम्प (पृ ६३८-६७४)

कगकमासि दीकषति (मूठ नेपाठीसँ मैथिली अनुवाद नूपा धीनू आ धीनेगद्द

पुनेमन्षा, वाठ साहित्य) (सौजग्य- धीनेगद्द पुनेमन्षा)

गगना वेठक देश-गुनमास

आसामिा सहि (सौजग्य- गयकिा)

शसुि गीन प्पेठ

कल्पना हा (सौजन्य- कल्पना हा)

नसामुक्ता हिति गावो गीत

नगिर्यो

मुग्नी कामन (सौजन्य- मुग्नी कामन)

युक्का (वा० कथा संग्रह)

प्रीतिशकुन

गोत्र हा आ आन मैथिली यतिनकथा -पहिले मैथिली यतिनकथा (वा० साहित्य)

मैथिली यतिनकथा (वा० साहित्य)

मथिलिक लोकदेवता (वा० साहित्य)

वहियापनाकि पुनुष पनीक्षा (वा० साहित्य)

नेस (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

ए वी सी डी- पनकानि अक्षय पोथी (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

सम प्याश अर्षा (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

वो म्याउ वाह (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

१७ सम (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

(०७) मा०-जा० आ जागवन दसि देपू (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

(१७) हमन पनीवोन (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

जागवन (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

पोथी १३: १२३ (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

वाजाक अवाण (अनुवाद- वा० यतिनकथा)

गीतू कुमानी

मैथिली यतिनकथा (वा० साहित्य)

गीता हा (सौजन्य- गीता हा)

वठिऱ मौसी (वा० उद्युक्ता संग्रह)

कनिष्क यौधनी (अनूदति सयतिन् मैथिली वाठ कथा)

हमन वाठ-वाड़ी

आन्या कौकपटि मे

दीपा कनमाकन- सही संतुठन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

वृहेठ छथि आकास मे

गैरा के मुस्काव के योनीक

वीण संययक

अयंमति कन्य "शुविनायी"

शौर्याक प्यसिसा

ठाठ वनसाती

गुठ्ठीक जाइए पेटी

समीनाक वकिड गोणन

विविह मे जाई छी

पुन्यिका हा (अनूदति सयतिन् मैथिली वाठ कथा)

हमन माँछ! नै हमन माँछ!

नश्मिपुन्या (अनूदति सयतिन् मैथिली वाठ कथा)

कैयो सकै छी, गह्यो कऽ सकै छी

सुनीता डकुन (अनूदति सयतिन् मैथिली वाठ कथा)

वाम्पटी आ ववठी

नीलमा यौधनी (अनूदति सयतिन् मैथिली वाठ कथा)

हमन सगसँ नीक संगी

स्वास्नाकि गकुन (अनूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

गपू वुते गायठ नै होइ छै

नूठकि (अनूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

हमना ओ याहि!

मधूठकि मशि (अनूदति सयतिन मैथिी वाठ कथा)

ओघाशन नीमा

ठक्ष्मी गकुन

जागवन सठ संगे मँट-घाँट

पूगम माम्ठ

सुगै काठक प्पसिसा

गाणेन्डन गकुन

वाठ साहित्य (मूठ)- गाणेन्डन गकुन

वाठ माम्ठ ठे कशिीन जाग (वाठ नाटक, ठुक्था, कवति आदि)

डेनन मतिहठिकसहन पयनपिन

जाठेदीप (वाठ-नाटक संग्रह)

अक्ष्ममूठकि (वाठ-ठुक्था संग्रह)

वाठक वडौना (वाठ-पद्य संग्रह)

नऽ जाएव छू (मैथिीक २०१२ मे पुनकासति पहठि क्ठाइमेठ-शुक्शिन पुठे
मातिहठिसि डनिसन यठमिाते-डयितागि पठाय नैगिगिाठठय पुवठसिहेड नि
२०१२)

कमठक नगाना

ननहामि पनीठेक

वेसी छुट्टी कम रसकूँ
वड्ड कजैए दाउग ने यौ

वाँ गजग

शुनिशि ठाइन

वाँ साहित्य (अनुवाद- द्वाभिशिकि- मैथिली-अंग्रेजी)- गजगद्द गकु
मसाई केन पत्रिगतनकारी जेवेका

सुनू

धन सग

एकटा गीक दनि

यूँ हम तँ गीक छी ने!

की अहाँ ऐ यडि सगकें देपने छी?

टोसू

वडिटा! कगयिटा!

एतह हम सग नहै छी

मानगोठक गाजकुमारी

मानगोठक गाजकुमारी (वनि शब्दक)

वुयो

कय-कय कयाक

युगू-मुगूक गहेगाइ

नेगा जे वैठगसँ उनाइन छै

अद्भुत श्रुतौनायी शंक-शंयुग

हानू

अपन गै, अपन गै!

पुनमदिक उन्सव मोप

मोट नाणा पान-दुव्वड कुकुड

वययिा पे अपन हँसी गै नोका सकैत छर्षा

अंग्नेणी

हम संधा सकै छी

छोट ७७-दुहटुह डीनी

कनू गीक, गोगू गीक

ई सगटा वषिाडकि दौप अछर्षा!

योगा आम!

हमन टोठक वाट

पुपन रकडू सकूठ गेठ

माछी श्वेन आउ टाटा!

अमायीक पुठुम मशीन सग

टगि टोग

पाउ-म्याउ-वाह

कुकुडक एकटा दनि

हमना गीक ठगौए

गीताक नव-सूकूठमे पहिठि दनि

कनी हँसियौ ने!

ठाठ वनसागी

भूग-पुगेक नाट्यशाठा

आउ पएग गागी

कनऽ अछि ई अंक प?

वदिए मैथिली-अंग्रेजी टाँकगि गीक-अठाउठ आँठियौ वुक

हानपस्वठोमठविनामसोनापठयेनश्रीयऽदऽनपछोठ (मसाई केन पनविनागकानी जेवेका)

हानपस्वठोमठविनामसोनापठयेनपउसहेठगथि (यठू हम नँ गीक छी ने!)

हानपस्वठोमठविनामसोनापठयेनऽनऽपऽदऽहवमो (एकटा गीक दनि)

हानपस्वठोमठविनामसोनापठयेनवऽनऽपऽसऽखप (घन सग)

हानपस्वठोमठविनामसोनापठयेनऽनऽपऽदऽवऽनऽ (की अहाँ ऐ यडि सगकँ देयने छी?)

गणेश्वर गकुल (सम्पादन)

वदिए मैथिली शशि उन्सव [वदिए सदेह टं]

वदिए: सदेह टं ननिहुना

गणेश्वर गकुल, गणेश्वर कुमान हा आ पम्पिकाग वदियागन्द हा (सम्पादन)

एगठसिह-मातिहठि छेमपुगेन ययिनागानय

डॉ कमठा यौधनी (सौगन्ध- कमठा यौधनी)

मैथिलीक वेश-भूषा-पुनसाधन सम्वन्धी शव्दावठी २००८

डॉ योगानन्द हा (सौगन्ध- योगानन्द हा)

मैथिलीक पानम्पनकि जातीय वृत्तसाधक शव्दावठी २००८

डॉ. उषा हि (सौजन्य- उषा हि)

मैथिलीक मोहन सम्वन्धी शब्दावली २०११

गोवर्दि हि ((श्वाम्भश्च पति आकाशः)

मतिहवि-एगवसिह ययिगीगामय

गामदेव हि (सौजन्य- शंकरदेव हि)

मैथिली शब्द संयय

कछि मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

वर्दिह मतिहवि गोकसे हुनगावस् वर्दि अयहवि

वर्दिमान गनाक

ओडए सेपाठ'से -शुसनाकावाया

पोथीक ठिके

श्वाम्भश्च-अषः (सोयह केयौनद मतिहवि)

हसिगोनयोड सावया-साया गि मतिहवि

पुट्टेसि गि हानिसिम गद बुददसिम गि मतिहवि

मतिहवि गि गहे अगोड वर्दियापाता

छुठुनाथ हेगिगोड मतिहवि

मतिहवि गदेन गहे प्यानगातास

थेमपठे पुनवेय शुनोपेयन अषः- एगवसिह आ हनिदि

मैथिली साहित्य संस्थान

दृशनीय मैथिली (मैथिली साहित्य संस्थान धरि)

गनोयहुने १ (मैथिली साहित्य संस्थान धरि)

गनोयहुने २ (मैथिली साहित्य संस्थान धरि)

गनोयहुने ३ (मैथिली साहित्य संस्थान धरि)

गनोयहुने ४ (मैथिली साहित्य संस्थान धरि)

गनोयहुने ५ (मैथिली साहित्य संस्थान धरि)

वूठम धरिस्वनेनी मैथिली

अनपिन श्वाउम्डेसन

शुनागहम गोकस मातिहथि धिनोनयौवेन

मैथिली ऑडियो वुक्स

वदिएह डेह अछुए थाधकनिग मातिहथि अदो गोकस (नियुएदनिग मातिहथि
धगिन डानगागे- इसन गमि नि मातिहथि)

पोथी डॉट कॉम

प्यसिसा-पहिनी नेना मुटका वेथ

जानकी एशुएम समाया

आकाशवासी दनमंगा यू ट्यूव येनथ

व्रदिह सम्मानः सम्मान-सूची (समागान्ता साहित्य अकादेमी, समागान्ता
००ति क० अकादेमी आ समागान्ता संगीत-गाटक अकादेमी सम्मान् पुनस्का
नामसँ व्रप्पियात्)

मैथिलीक व्रान्ती

१

मैथिलीक व्रान्ती- व्रदिह मैथिली भागक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन
पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक व्रान्तीमे पन्थापन व्रविधिना अर्था मुदा पन्थनपन्त देप्पठा अन्त
एक व्रान्ती श्रान्ती ममअ००१ सँ पन्तानि व्रहाश्र अर्था से एक एकना एक
उप्यडाहमे उगटा-पुगटा दियौ, तावे यना पन्थापन अर्था यूपीएससी क मैथिली
(कम्पठसनी) पेपन ठेठ सेहो इ पन्थापन अर्था से जे व्रदियान्थी मैथिली
(कम्पठसनी) पेपन ठेठे छथि से एक एकटा आन श्वास्त-नीडगि दोसन-
उप्यडाहमे कथि

श्रधामश्रोउ श्रान्ती ममअ००१

थहेसे जे पन्तान-ने-देमानद वौकस, सेनद योन टुनेसि
तो दतानिअसनाउडव्रदिहवाभाषियोम थहे गौकस १० सोमे १० तहेसे जे
व्रविधिवे जेन साठे जेन वौगठे श्रधाय [(य) श्रधेति थहाकुन,
साठेसव्रदिहवाभाषियोम], सेनद योन टुनेसि तो साठेसव्रदिहवाभाषियोम थहे

योगतेगतस णद द्युमेगतस -पुवठसिहेद वय वृद्धिह (सगिये २०००) ३षषाम
२२२२-५४७३ वर्यएहअ (सगिये २००४) ले पेगादियाठठय वेगिग यहेयकेद
डेन ।ययेससविठितिय सिसेस श्वेपठे गैतिह दसिावठिठिसि सहेठद गोन हवे
दडिडयुठणय ।ययेससगिग गहेसे योगतेगतस् द्युमेगतस

वृद्धिह स्तुती कोना

वृद्धिह वृद्धिह वृद्धिह विद्वेद हानपुर्वीवृद्धिहयोगि वृद्धिह पुनथम मैथीषि पाक्षिके ई पात्रिका वृद्धिह इसा मातिहठि ठेगानगिहणय
पुनगाठ वृद्धिह पुनथम मैथीषि पाक्षिके ई पात्रिका नव अंक देपवाक ठेठ पृष्ठ सगके नखिनेस कए देपू अठौयस नेडेसह गहे पागेस
डेन वृद्धिह गौ सिसेगेड वर्यएहअ

[पेनयह डेन श्रौनकस \(नियठुदनिग\) श्रुती-वृद्धिह & षगिन डनगुगो](#)
[नेठानिग तो मतिहठि मतिहठि वय ठेमाठे श्रौनतिनस् अनसितस](#)

हानपसःवौकसगौगठेयोम



(पुनसातः अव्यवसायिके उद्देश्य आ मातृ एकडेमके पुनयोग ठेठ) सग
पोथी पीडीएश्च डउनठेठ ठेठ कृमानुसान गीयाँक ठिके सगपन उपठव्य
अर्था अठठ गहे वौकस ले ।वाठिवठे डेन पदठ दौनठोद ।न गहे नेसपेयतावे
ठनिकस वेठौ

सपुआवाठी (गानी वमिन्स केवृत्ति) गपटयिहीमे गेठ द३ म सगन नातिदीप
णनयमे पठति कथा सगक संकठन

सपुआवाठी

आमामि सहि (सौणय- गयकिता)

शशि गीन प्येठ

इशानी सहि (सौणय- गयकिता)

पुनम- एक कवृत्ति (अवृत्ति गटक)

अनुव्यती देवी (सौजन्म- नमान्द ह। "नमान")

मथिथिक वृद्धि मलि

७ं कमठा यौथनी (सौजन्म- कमठा यौथनी)

मैथिथिक वेश-गुषा-पुनसाधन सम्वन्धी शव्दावृथी २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

७ं ७७ति ह। (सौजन्म- ७७ति ह।)

मैथिथिक गोपन सम्वन्धी शव्दावृथी २०११

सुसमति पाठक (सौजन्म- केदाम कागन)

पुनयिति (कवृति संग्रह)

कगोपडि (कथा संग्रह)

गन्दीनी पाठक (सौजन्म- केदाम कागन)

पाथक शहन (कवृति संग्रह)

पग्ना ह। (सौजन्म- गनेन्द् ह।)

अनुवृत्ति (उद्युक्था संग्रह)

कल्पना ह। (सौजन्म- कल्पना ह।)

गोसाउगकि गीत

नशामुक्ता हिति गावी गीत

गनियिं

यायावनी- शेश्ठाथिका वृत्ता (हिनदी अनुवाद कल्पना ह।)

मुग्नी कामन (सौजन्म- मुग्नी कामन)

सुपुठ मन नसठ आँपि (पद्य आ गद्य)

सुपुठ मन नसठ आँपि (कवृति)

अनतः (कवृति संग्रह)

युक्का (वाठ कथा संग्रह)

गीता ह। (सौजन्म- गीता ह।)

वठिः मौसी (वाठ उद्युक्था संग्रह)

शेष्ठाथिका व्रन्मा (सौणग्य- शेष्ठाथिका व्रन्मा)

यायावनी (यात्तावन्नाग्न)

यायावनी (हिनदी अगुवाह- कउपना ह।)

अन्थयुग (उधुकथा संग्रह)

एकटा अकास (उधुकथा संग्रह)

गावांजुठि (गद्य गीत)

कस्सि-कस्सि जीवण (आत्म कथा)

आप्पन-आप्पन पुनीत

गागश्वास (उपन्यास)

मागपहणस (इण एगुठिसिह)

व्रन्मा नागी

व्रन्मा नागीक दूटा गाटक (गाग नौ आ वउयगदा)

सुशीठा ह। (सौणग्य- पुनमा प्पेताग सुशीठा ह।)

छविणमसना- पुनमा प्पेतागक हिनदी उपन्यासक मैथिली अगुवाह

कुसुम गकुन

पुनयावनाग (आत्मकथा) (पृ ४५८-५७२)

उां कामिनी कामायनी

वद्विहःसदेह ३१ (उां कामिनी कामायनी आ कुमान मगोण कश्यप- अंक १-३५०

सां

पुनीत गिकुन

गौण ह। आ आग मैथिली यत्तिकथा -पहिल मैथिली यत्तिकथा (वाउ साहित्य)

मैथिली यत्तिकथा (वाउ साहित्य)

मथिलिक ठेकदेवना (वाउ साहित्य)

वद्वियापतिक पुनुष पुनीकषा (वाउ साहित्य)

नेस (अगुवाह- वाउ यत्तिकथा)

ए वी सी डी- पुनकां अकषण पोथी (अगुवाह- वाउ यत्तिकथा)

सम प्यार अर्घी (अनुवाद- वाग यति-कथा)

वो म्याउ वाह (अनुवाद- वाग यति-कथा)

१७ सम (अनुवाद- वाग यति-कथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- वाग यति-कथा)

(०७) माँ-जाँ आ जागव दसि देपू (अनुवाद- वाग यति-कथा)

(१७) हमन पन्ना (अनुवाद- वाग यति-कथा)

जागव (अनुवाद- वाग यति-कथा)

पेथी १३: १२३ (अनुवाद- वाग यति-कथा)

वाजाक अवाज (अनुवाद- वाग यति-कथा)

पंजी (११००० मूठ मथिठिक्षन नाडपन्)

११००० सुअडम डएअठ सुआमहूर समषठूरसुथरओमष (वओडउमए २ थओ

सस२२) छेमपठिह, पयानगेह & छाताओगेह वय सुनेतिथिहकुन

गीतू कुमानी

मैथिठी यति-कथा (वाग साहित्य)

कनिम यौधनी (अनूदति सयति-कथा मैथिठी वाग कथा)

हमन वाग-वाडी

आन्या कँकपटि मे

दीपा कनमाकन- सही संतुठन मे

पंगुठ मे अहाँक सवागत अर्घी

वृहेठ छथि आकास मे

मैया के मुस्कान के योनीक

वीण संययक

अयंगति कन्य "सुविगायी"

शौयाठयक प्यसिसा

ठाठ वनसागी

गुठिठि पाहुँ पेटी

समीनाक वकिड गोणन
वविह मे जाई छी

पुनयिका हा (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

हमन माँछ! बै हमन माँछ!

नश्मिपुनयो (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

कैयो सकै छी, गहयो कऽ सकै छी

सुनीना गकुन (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

वाम्पटी आ ववथी

नीठमि यौधनी (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

हमन सगसँ नीक संगी

स्वास्तिका गकुन (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

गपू वुते गायठ बै होइ छै

नूठिका (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

हमना ओ याहि!

मधूठिका मशिन् (अनूदति सयतिन मैथिली वाठ कथा)

ओघाशन नीमा

ठक्पनी गकुन

जागवन सग संगे मेंट-घाँट

पूगम माम्पुठ

सुतौ काठक प्पसिसा

कनकमहा दीक्षति (मूठ नेपाठीसँ मैथिली अनुवाद नूपा धीनू आ धीनेन्द्-
प्रेमन्धि, वाठ साहित्य) (सौजन्य- धीनेन्द्-प्रेमन्धि)

गगना वेडक देश-गमम

डॉ शशविन कुमर आ सुप्राया वेवी कुमारी

गूकम्प (पृ ६३८-६७४)

थेपकक आमन्ति १यना आ ओरपन आमन्ति समीक्षकक समीक्षा सीरीज

१ कामगिक पांय टा कवति आ ओरपन मधुकागन हाक टपिपमी

वर्दिहा ०१ ०८ २०१६

३ मुग्गी कामक एकांकी "जगिदगीक मोठ" आ ओरपन गजेन्द्-गकुनक
टपिपमी

वर्षएहअ ३५४

पसुपुठेटी गीता

एडिट्स योइस सीरीज-१

मीना हा

एडिट्स योइस सीरीज-२

जगदीश यन्द्-गकुन (३ टा वाठ कवति जश्मे २ टा कवति वेवी याइउपन)

एडिट्स योइस सीरीज-३

वर्दिप्रापतिगीत

नूतिका

गीत-गोवर्निददास (गायन दीक्षा शाला)

गोवर्निददास-१

गोवर्निददास-२

गोवर्निददास-३

गोवर्निददास-४

गोवर्निददास-५

गोवर्निददास-६

मैथिली गणध (गणध- गणध-१ गकुल, गायन दीक्षा शाला)

वहने मुनकानवि

गणध-२

गणध-३

गणध-४

पुयाने मैथिली यैगध- कनिम यौधनी आ संगीता आगन्ध- मैथिलिक सगसँ

थोकपुनियि पु टपुव यैगध

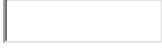
गणध पठठवी

पुनम मसि

गणध ह

पुथि ह

मैथिली गकुल



सूयगा

यो गोन जुदगो यरु दाय वय तहे हानवेसन युो गोप वुग वय तहे सेदस तहात युो पठागत

- दवेगत डुसि धोवेनसोन

वदिसः मातिहथि डितानुने मोवेमेगत

वदिसो ह्युनगाथ (थनिक वदिसयोन) सि । मुथदिसियपिथनानय गनथनि
जुनगाथ देदयितेद तो तहे पनोमोतान गद पनेसेनवतानि ०७ तहे मातिहथि
थनगागे, थितानुने गद युथनुने शन सि । पठातडेनम डेन सयहेथानस,
नेसेनयहेनस, गैतानस गद पौतस तो पुवथसिह तहेनौनकस गद सहाये तहेनि
कनौथेदगे । युोत मातिहथि थनगागे, थितानुने, गद युथनुने थहे जुनगाथ सि
पुवथसिहेदोनथनि तो पनोमोते गद पनेसेनवे मातिहथि थनगागे गद युथनुने थहे
जुनगाथ पुवथसिहेस । नतयिथेस, नेसेनयह पापेनस, वौक नेव्रीस, गद पौतानय नि
मातिहथि गद एनगथसिह थनगागेस शन । थसो डेतुनेस तानसथानानिस ०७
थितानय गौनकस डनोमोतहेन थनगागेस नितो मातिहथि शन सि । पेन-नेव्रीद
जुनगाथ, गैथियह मेनस तहात । नतयिथेस गद पापेनस । ने नेव्रीद वये शपेनस नि
तहे डेथेद वेडेने तहेय । ने । ययेपतेद डेन पुवथयितानान

१

"वदिसक जीवति साहित्यकान-सम्पादक आ नंगमंयकमी- नंगमंय-नदिसक
पन वसिषांक शंयथा"

वदिस अनवदिस डकुन वसिषांक

- वद्विपन मैथिलिमे आठेप्य आमन्त्रिति अर्था
 १) एमएसयू केन गठनक पुनर्मासिक शाहिस,
 २) एमएसयू आ मथिषि केन नव येनगा,
 ३) एमएसयू आ व्रिनिनिन जाति केन समनवय,
 ४) एमएसयू द्वारा मेठ व्रिनिनिन अंद्दोठन आ नकन ठेप्या-जोप्या एवम् ओकन
 पुनर्मात्र वा
 ५) एमएसयू संदन्त्रिति आन कोनो ठेप्या

३७१म अंकक व्रिषिपांक ठेठ अहाँ अपन नयन २५ मई २०२३ यति व्रिन्ड अशमे
 इ-पन् सङ्केतो दत्तित्तिठिसना उडवद्विहवाभाठियोम पन पडा सकै छी।

-गज्जन्डन गकुन, सम्पादक व्रिदिह, गैहानसापप गो
 +८९८५६०८६०७२९ हथथशुःव्रिश्यएहअष्टश्रीरम् ३५५५५ २२२८-५४७३
 व्रिश्यएहअ

३

"व्रिदिह भोगोग्नाशु" शृंष्यठा

व्रिदिह अपन जीवति नयनाकान् कठकान्भी पन व्रिषिपांक शृंष्यठाक अन्तन्गान
 (१)अनव्रिदिह गकुन, (२)जगदीश यन्डन गकुन अगठि, (३)नामठेयन गकुन, (४)
 नाजगन्डन ठाठ दास, (५)नव्रिदिह नाथ गकुन, (६) केदाम नाथ यौधनी, (७)
 पुनेमठना मशिन 'पुनेम', (८) अनव्रिदिह यौधनी, (९) नयनाकान् अशोक आ (१०)
 नाम मनोस कापडा 'मनम' व्रिषिपांक नकिठने अर्था
 अही सन्दन्त्रमे हनिका सनपन "व्रिदिह भोगोग्नाशु" शृंष्यठा अन्तन्गान
 "भोगोग्नाशु" आमन्त्रिति कयठ जा नहठ अर्था
 "व्रिदिह भोगोग्नाशु" शृंष्यठाक व्रिनिन नमिनि पुनका अर्थाः
 (१) श्यष्टुक ठेप्यक उपनमे कोनो एक गोटपन अपन भोगोग्नाशु ठपिवाक
 श्यष्टो दत्तित्तिठिसना उडवद्विहवाभाठियोम पन पडा सकै छथी।

(२) व्रद्धि ऐप्यकक नाम मोनोग्नाश्च षष्पिवाक षेठ ययनति कऽ शोकः
साम्प्रजगकि घोषामा कःना

"व्रद्धि मोनोग्नाश्च" षष्पिवाक गश्चिमः

(१) मोनोग्नाश्च पूनाम् नूपे नयनाकान् कथकन्मीपन केन्द्रीति हुश्रया साहित्य
अकादेमी, एनवीटी आ कछि व्यक्तगिति नूपे षष्पिठ मोनोग्नाश्च वायोग्नाश्चिमे
ऐप्यक संस्रमास आ व्यक्तगिति पुसंग जोडि कय नयनाकान्
कथकन्मीक वहन्ने अपन-आत्म-पुसंसा षष्पिे छथा "व्रद्धि मोनोग्नाश्च" शीश्चा
वृत्तु कप सुटवाठ सग नहना शीश्चा वृत्तु कप सुटवाठ एहेन एकमात्न
टूनामेसुट अछिजितय कोनो "ओपेगि" वा "कूठेजि" सेनीमगी अठगसँ नै हेर
छै, पहिठि आ अन्तमि मैयक सडे हेर छै आ नकन कामस छै जे अठगसँ
कएठ "ओपेगि" वा "कूठेजि" मे टूनामेसुटमे नै प्पेठ नहठ ठेक मुप्पय अन्तियि
अन्तियि हेर छथा आ शोकस प्पिठिडी सँ दून यठिजार् छै शीश्चा मात्न आ मात्न
सुटवाठ प्पिठिडीपन केन्द्रीति नहैन अछि से शोकन टूनामेसुट "ओपेगि
सेनीमगी" नै वनन् सोहे "ओपेगि मैय" सँ आनमन हेरन अछि आ शोकन
समापन "कूठेजि सेनीमगी"सँ नै वनन् "श्वरगत मैय आ टूनाश्चि"सँ प्पतम हेरन
अछि आ शोकस मात्न आ मात्न प्पिठिडी नहैन छथा नहनि "व्रद्धि मोनोग्नाश्च"
मात्न आ मात्न ऐ नयनाकान् कथकन्मीपन केन्द्रीति नहना आ कोनो संस्रमास
आदिजोडि कऽ शोकस नयनाकान्सँ अपनापन केन्द्रीति कनवाक अन्तमनि नै
नहना

(२) मोनोग्नाश्च षेठ "व्रद्धि पेटान"मे उपव्य सामग्रीक सन्दर्भ सहति उपयोग
कएठ जा सकैए

(३) व्रद्धिमे ई-पुकाशति नयना सगक कौपीनाश्च ऐप्यकसंग्रहकान्ना
ठेकनकि ठगमे नहान्हा सम्पादक 'व्रद्धि' ई-पुनकिमे पुकाशति नयनाक
पुनटि-वेव आनकाश्चक आनकाश्चक अन्तवादक आ मूठ आ अन्तति आनकाश्चक
ई-पुकाशन् पुनटि-पुकाशक अर्थकान नूपैठ छथा ऐ ई-पुनकिमे
कोनो नान्पठि पाश्चिमकि क पुनवाग नै छै

(४) "वदित् मोनोग्नाश्च"क शृङ्गमेतः नयनाकानक पनियि (नयनाकानक
जन्म, गविस-स्थान आ कान्यस्थेक गौगोथकि-सांस्कृतिक ववियना सहति)
आ नयनावृषि (समीक्षा सहति)।

घोषणा: "वदित् मोनोग्नाश्च" शृङ्गमेतः अन्तर्गत (१) नाजगन्दन ७७ दास जी
पन मोनोग्नाश्च गन्मिषा कन्म, (२) नवीन्द् नथ गकुन पन मुन्नी कामन आ
(३) केदा नथ यौधनी पन पुनेम मोहन मस्तिन द्वाणा ७पि७
जायना शेष ७ गोटपन गन्मिष शीघ्र कएष जायना।

-गणेश्च गकुन, सम्पादक वदित्, गैहानसापन गो
+८९८५६०८६०७२९ हथथशुःवश्यएहअष्टश्रीश्च ३षषाम २२२८-५४७श
वश्यएहअ

४ (१)

वदित् द्वाणा जो वशिषांक पुनकाशति हेर छै नकन संगे वदित् ओहन ऐयक-
साहित्यपन अपन वेआन सेहो केन्ति कनन जगिकापन वदित्क वशिषांक कोनो
कानामवस नै पुनकाशति नऽ सकथ ऐ नव वयिाक मुप्य वदि एना अष्-
१) हम एकटा कोनो ऐयक वा कथकानपन एकाग्न आठेयना कनव जकन भाषा
मैथिली अथवा अंग्रेजी नहना ऐ पोथिक पहिठि नूप ई-वुक केन नूपमे ऐन आ पुनयास
नहना जो एकन पुनटि सेहो आवए जो कनि पुनस्थितिपिन गन्मिन कनना
२) ऐ शृङ्गमे सुभाष यंद् न द्वाएवपन केन्ति "नति नवठ सुभाष यंद् न द्वाएव"
एवं नाजदेव मंडपन केन्ति "ढाजदौ मानदाठ- मातिहठि औनतिन" पुनकाशति
मेठ अष्ठा दुनू पोथिक ठेकानपम ३१ दसिम्वन २०२२ केँ १११म सगन नातिदीप
जान्य मे कएष गेठ
३) आगाँक घोषणा ऐठ हानपुःवदित् योनिनिवेसनागिागीनहनम देप्यै नही।

कमठागण्ड हाक पोथी "मैथिली उपन्यासः समय समाज आ सवाँ" (२०२१) क शीर्षक ग्रामक अर्था ई हुनका कछि सवत्स उपन्यासकालपन कछि समिन्दकेटके कथनि समीक्षात्मक आधेयक संग्रह अर्था, रदर पन्नाक ई पोथी हान्दवाउम्दमे आस्वनेनीकेँ मान् वेयठ जा सकत, जाऽ ई सङ्गि जायत, अमेजगसँ हम ई यानिसय पाँय टाकामे कनिठौ मुदा एमे पाँयो पार्क सामग्री गै अर्था

एतए एकटा गूठ सुवाँ अर्था, एकटा गएन सवत्स ठेयक सुवाष यण्डन यादवक उपन्यास 'गुठे'केँ वनि पढ़ने ओ दू पाँनि ठिपिठगर्हि आ गपिटा देठगर्हि, ओ दुनू पाँनि हम एतए अहाँक मनोमंजगात्थ पुनस्तुन कऽ रहै छी। अहाँ गुठे पढ़गर्हिये हएव, जाँ गै पढ़ने छी तँ पहनि पढ़ाँ ठिअ, कागस गपन वेशी मनोमंजक अगुमव हएत, गुठे सुवाष यण्डन यादव जीक अगुमनि सँ उपठव्य अर्था वदिए आन्कास्वपन ए हानपःवदिएहयोगिपोतहहिम ठिकपन।

"उपन्यासक कमजोरी अर्था ठेयकक नाजनीतिकि पुनवाग्नह नाजनीति विशिषक पक्षधना नायकाक संग ग्याय गर्हि कऽ पवैत अर्था"

जऽ उपन्यासमे नाजनीति दून-दून यनी गै छै ओतऽ 'नाजनीतिकि पुनवाग्नह' आ 'नाजनीति विशिषक पक्षधना'क तँ पुनश्ने गै छै। नाजनीतिकि पुनवाग्नह वा पक्षधनाक सोडन यमकेतु आ यात्री पुन्युक्त केठगर्हि सुवाष यण्डन यादव जीक 'गोट' जे २०२२मे आयठ जे सुवाष यण्डन यादव जीक अगुमनि सँ उपठव्य अर्था वदिए आन्कास्वपन ए हानपःवदिएहयोगिपोतहहिम ठिकपन, से नाजनीतिपिन अर्था मुदा ओतहुओ सुवाषजीक गगना शैथिकेँ नाजनीतिकि पुनवाग्नह वा पक्षधनाक सोडनक आवश्यकता गै पड़ै। पदू हमन पोथी 'गति गवठ सुवाष यण्डन यादव' जे उपठव्य अर्था ए हानपःवदिएहयोगिपोतहहिम ठिकपन।

कमठागण्ड हाक वनि पढ़ने सुवाष यण्डन यादवक वनिद्वय व्नाह्मसवाँदी जातगिन पुनवाग्नह एकटा यतनाक घासुटी अर्था जऽ हिसावे व्नाह्मसवाँदकेँ

आगाँ वढवैठे कमठागनद ह। वामपंथक सोडन पकडै छथि आ सामाजिक न्यायक वधि यढवऽ याहै छथि, तकर प्रती समागान्ता या। सयेत अछि ई अपन वायोडामे गएन सवनाससँ छीर्किऽ, समागान्ता या।क ठेकक हककें मानिकऽ ठेठ साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद असाइनमेन्टक गान्वसँ यन्या कनैत छथि आ ई असाइनमेन्टक हनिका मेन्टिसँ गै जातगित टाइटिसँ गेटठ छन्हि, अहि सग कनिदानीक एवामे गेटठ छन्हि हनिका सग ठेक ठेठ मैथिली वायोडैक एकटा पाँति अछि, समागान्ता या। ठेठ जीवन-मनासक प्रश्न।

आव अहाँ पुछव जे तकर प्रतिक्रिया समागान्ता या। केना केठक, ओ तँ कनगानोहट गै कनैए, तँ तकर उत्तर अछि हमन ३ टा पोथी जे १९९८ सगल गान्ति दीप जग्य मे ठेकान्पति गेट ३१ दिसिम्बर् २०२२ कें, वएह सगल गान्ति दीप जग्य जकरा साहित्य अकादेमी गान दस वन्यसँ गीर्डा ठेवाक प्रयास कऽ १९९९ अछि अहाँसँ ऐ तीनु पोथीपन टपिपामी ई-पान्ति सङ्केते दत्तगिरिसनाडडवद्विहवाभाषियोम पन आमन्त्रित अछि पहिले दू पोथी मे गान्ति दीप मन्डठ आ सुभाष यन्द्न यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमन तेसऽ पोथी मैथिली समीक्षशास्त्रक सद्व्यांगक आयामपन कएठ गेट अछि तकरा वाद जगदीश प्रसाद मन्डठ जे पन पोथी वपिठ गेट (१९२ सगल गान्ति दीप जग्य मे ठेकान्पति) सगटा पोथीक ठेके नीयाँ देठ गेट अछि 'गति नवठ दगिश् कुमान मन्सि' आ 'गति नवठ सुशीठ' जानी अछि।

ढाजदो मानदठ- मातिहठि औन्ति (सौन्तिह पुपपठेमेगन ३ & ३३)

गति नवठ सुभाष यन्द्न यादव

गति नवठ सुभाष यन्द्न यादव (मथिलीक्षन)

हअधवऽपह शुठअपअध मअसधअड- मातिहठि औन्ति

गति नवठ दगिश् कुमान मन्सि (जानी)

गति नवम सुशील (जानी)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (निबन्ध)

संगमे पढ़ कमठागण्ड हा क व्नाहमाहवाहपन पुनहा:

दूषम पञ्जी- थहे गणायक गौक

दूषम पञ्जी- थहे गणायक गौक (मथिठिकषम)

-गणेश्वर गकुल, सम्पादक वरिह, शैलसापन गो
+८९८५६०८६०७२९ हथथशुःवश्यएहअश्रुश्रीराम् शषषम २२२८-५४७श
वश्यएहअ

४(२)

गति नवम दगिश कुमान मशि

दगिश कुमान मशि क 'दुः पाठन के वीय मे' कोसी गदीक ऐगहिसकि आत्मकथा थीक, ओ मथिठिक आग यान सगक ऐगहिसकि आत्मकथा सेहे ठपिने छथि जेना वगदीनी महानगद, वागमती की सद्गता!, दुः पाठन के वीय मे (कोसी गदी की कहानी), न घाट न घन, वगावत पन मजवून मथिठि की कमठा गदी, गुनही गदी औन तकनीकी हाड-शुंक, थहे प्यामठा ढरिन। गद श्लोपठे ओग छेठठसिगि छोनसे, गहुनारि गठाग- पतोनप्रोड। गहिसन नरिन। गद गगिननिग गौतियह्यनाडन, ढेडुगोस ोड गहे प्योसि एमवागकमेगतासा साहित्य अकादेमीक मैथिली पनामश्रुदाती समतिकि सदस्य पंकज हा पनाशन द्वाता हनिकन पोथी सगसँ पैनाक पैना मैथिली अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपवाओठ गेठ अछा, जकना छद्म समीक्षक कमठागण्ड हा ऐ योन ठेपकक नसिन्य कहै छथि! एतऽ सूपष्ट कऽ दी जे ई योन ठेपक आ छद्म समीक्षक दुनू अठिगढ मुसठमि वदियाठयक

हग्दी व्रिगिगमे छथि ई नसिन्य दगिश् कुमान नसिनक थीक, जे आइआइटी प्पड़गपुनसँ सविधि इगुगिगयिगिठि मे वी टेक १८६८मे आ सूट्गक्यगठि इगुगिगयिगिठिमे एमटेक १८७०मे केगे छथि, आ ओइ नसिन्य ठेठ क्वाठिश्चिइउ छथि जप्यन कोनो व्रिपियमे गामांकन गै होइ छै जप्यन ठेठ हगि-थिगि हग्दीमे गामांकन ठइए, गै गँ कमठगनद ह्हा केँ वुह्इ मे आवि जइगह्हा जे ई नसिन्य कोनो सविधि इगुगिगयिगेक गऽ सकैए अछि, गऽ सकैए वुह्ठे होइगह्हा हग्दी मूठ आ मैथिठिक सूक्तीगशॉट आँगा संठग्न अछि।

दगिश् कुमान नसिन मथिठिक गै छथि मुदा मथिठिक सग यानक कथा ओ ठपिगे छथि, हम सग हुगका पुनगिक्ठान्ज छी आ हुगका ऋससँ मथिठिवासी कहियौ उऋस गै गऽ सकता, मुदा मूठयानाक पुनसुकान आ पारि ठेठुप ठेठसँ क्ठान्ठगतो गेटन से श्चै न सदि्य गेठ। ऐ ठेठ्यककेँ दस वानह वन्य पहिने सेहे गानागनद व्रियौगी उदयानक गेटठ छठप्यनिह जे ठपिगे नहथनिह जे ओ कव्रिगिमे पुनगाव्रिगि गऽ अगाय्रासे अपन नयगामे दौसनक सामगिनी योनि कऽ ठइ छथि, एहेने सग आव ऐ कमठगनद ह्हा क आशुन्य गकठगह्हा मुदा दुनगाग्य! जइ हिसावे व्नाह्मसवाएकेँ आगाँ वढवैठे कमठगनद ह्हा वामपंथक सोठन पकडै छथि आ सामाजिक ग्यायक वठियढवऽ याहै छथि, गकन पुनगिसमागान्गन याना सयेन अछि सीठगिसँ वयवा ठेठ जमीन-जान्थावठा ठेठ कम्पूगसिस्ट वगठा आ आव व्नाह्मसवाए वयेवाठेठ वामपंथक शान्सा, एहेन ठेठ सगसँ कम्पूगजिम्केँ वहुन गुकसाग गेठ छै।

दगिश् कुमान नसिनक सगटा पोथी आव हुगका अगुमगिसँ उपठव्य अछि व्रिदिह आनकाइवमे:

हानपुःव्रिदिहयोनपोनहहिगम

एनऽ एकटा गप मोन पाड़ि दी जे जप्यन वठि गेट्सकेँ पूछठ गेठगह्हा जे की ओ एकस वॉकस गानामे पारेशीक डनसँ देनीसँ आगि नहठ छथि? गँ हुगका उगान नहगह्हा जे माइकनोसॉश्चुट पारेशीक डने कोनो उगपाद देनीसँ गै उगाने अछि से व्रिदिह पेटानमे हम सग ऐ ननहक नसिक नहगिौ एकना आन समुद्व्य

कमैल १६५, कामस समानान्तर धारामे स५७ माँछ द्वाले पोप्यकि सग माँछ गै सडैए, एतुक्का मठह गोट-गोट कऽ स५७ माँछ गकिठैल १६७ छथा, गकिठैल १६१॥

समिडीकेटेड समीक्षापन अन्तमि पुनहा।

मूठ दगिश कुमान मशिन् (दुइ पाटन के वीय मे २००६): यह य्पान देगे की वाग है क१९८२३ से १९८४६ के वीय कोसी क्षेत्न मे मठेयिा से ५,१०,०००, काठालाग से २,१०,०००, हैपो से ६०,००० तथा येयक से ३,००० मीते (कुठ ७,८३,०००) हुई। यो पंकण हा पनाशन (साहित्य अकादेमीक मैथिली पनामन्सदात्री समितिकि सदस्य) [१७पुंनान २०१७ (पृ १०३)]:

ने अंग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब । १९२३ सँ १९४६ के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल ! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूठ दगिश कुमान मशिन् (दुइ पाटन के वीय मे २००६): गानवत्प मे वहिल मे कोसी गदी को वांयगे का काम १२वीं शताव्दी मे कसिो गाणा ठकष्माम द्वागिय ने कनवाया था और इस काम के लिए उसने पुनागा से 'वीन' की उपाधिपाई और गदी का नटवन्ध 'वीन वांय' कहलाया। इस नटवन्ध के अवशेष अभी भी सुपौठ णठि मे भीम गगन से कोई ५ कठिमीटन दक्षिण मे दपिाई पडते है। उाँ शुनांससि वुकागन (१८१०-११) का अनुमान था कि यह वांय कसिो कठि की सुनक्षा के लिए वगी वाहनी दीवान १हा होगा क्योकि यह वांय यौस गदी के पश्यमी कगिने पन णठियुगा से उसके संगम तक ३२ कठिमीटन की दूरी मे छैला हुआ था। उाँ उवूउवू हन्टन (१८७७) वुकागन के इस नक के साथ सहमत गही थे कि यह वांय कसिो कठि की सुनक्षा दीवान था। स्थानीय ठेगो के हवाते से हन्टन का मानना था कि अथकिंश ठेगो इसे कठि की दीवान गही मानते और उनके हिसाव से यह कुछ और ही थी। थी मगन वह गसियति नूप से कुछ कहने की स्थिति मे गही थे। शुनि भी जो आम धारणा वगती है वह यह है कि यह कोसी गदी के कगिने वगा कोई नटवन्ध १हा होगा णसिसे गदी की धारा को पश्यमि की ओर प्सिकने से

नोका जा सके। ठोगो का प्रह गी कहना था कएसा ठागा था कइस नटवन्ध का
गन्मास काय एकएक नोक दया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमठागन्द हा द्वागा योऽ उपन्यासकाऽक पीठ डोकव, देपू
छद्म समीक्षक कमठागन्द हा द्वागा उद्युत योऽ पंकज हा पनाशन (मैथिली
उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ २५७-२५८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक
उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल
अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि
उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक
वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर
बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दौंव-पेंच
आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक
बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि।
पटुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ
लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ
बढ़ात पटुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन
द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन
द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस
पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ
अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल
होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्बू, डब्बू, हंटर सहमत नहि भेलखिन।
ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल
होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

योऽ पंकज हा पनाशन (साहित्य अकादेमीक मैथिली पनामन्शदात्री समितिक
सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ ३१)]:

पट्टा कका पछिला गप के आगाँ बढबैत कहलखिन, 'फूल बाबू कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पट्टा कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूढ़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बेसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पट्टा कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूठ दगिस कुमान मशि (दुइ पाठन के वीथ मे २००६): कोसी के प्रवाह का ग्यावहना की एक दृष्टिकोणशाह गुगठक की श्रौण के सन् १३५४ मे वंगाए से दधिठी ठौटने के समय मथिती है। वनाया जाता है काणव सुठान की श्रौण कोसी के काने पहुँची तो देया कगदी के दूसरे काने पर हाणी समसुददीन शय्यास की श्रौण मुकावठे के एरि तैयान पड़ी है। यह वही हाणी समसुददीन थे जनिहोने हाणीपुन तथा समस्तीपुन शहन वसाये थे। श्रौण की श्रौण शायद कुसेठा के आस-पास कसी जगह पर कोसी के काने सोय मे पड़ गई। नदी की नश्वान उन्हे आगे वढने से नोक रही थी। आपनिकान श्रैसठा हुआ कगदी के साथ-साथ उतान की श्रौण वढा जाय और जहाँ नदी पान काने थायक हो जाय वहाँ पानी की थार भी जाये। सुठान की श्रौण प्रायः सौ कोस अपन गई और जयिान के पास, जो क उसी स्थान पर अवस्थति था जहाँ नदी पहाड़ से मैदानो मे उतानी थी, नदी को पान कयिा। नदी की घाना तो यहाँ पाठी जान थी पर प्रवाह शाना गेण था क पाँय-पाँय सौ मग के गानी पत्थर नदी मे गनिको की तरह वह रहे थे। जहाँ नदी को पान काना मुमकनि एगा उसके दोगे और सुठान ने हाथियों की काना पड़ी कन दी और नीचे व्राठी काना मे नससे उटकाये गये जसिसे कयिदि कोई आदमी वहना हुआ हो तो इस नससो की मदद से उसे वयाया जा सके। समसुददीन

वे कभी सोया भी न था कि सुभान की शौरो कोसी को पार करेगी और जब उस को इस वाग का पता लगा कि सुभान की शौरो ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

योग पंकज दा पनाशन (साहित्य अकादेमीक मैथिली पनामन्सदान्नी समितिकि सदस्य) [जगपुनाग २०१७ (पृ १०५)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ भोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौने रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफतार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनेँ कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनेँ शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कनेँ आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ बला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ बयो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनेँ छल, जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(शीघ्र अही विकिपी आन स्क्वीगशॉट अपडेट कएल जायता)

वदिलक ३६३ म अंक दगिक ०१ शुभवती २०२३ सँ पुनामन्स गति नवभ दगिश कुमान मशि

हागपु:वदिलयोगि वदिल: पुथम मैथिली पाक्षिकि ई-पुनाकि ३षषम २२२८-५४७३ वरधएह (सगिये २००४) पना

-गणेण्ट् १कु, सम्पादक वदिल, हागसापप गो

+८९८५६०८६०७२९ हथथशु:वरधएहअछश्रीशम् ३षषम २२२८-५४७३

वरधएह

गति गवथ सुशीठ

कमठानन्द हाकें हम कएि छद्म समीक्षक कहथिनि?

कानास ओ छद्म समीक्षक छथि।

ओ ठिपै छथि- "मैथिली उपन्यास-प्राग्नाक ठानग सय वृत्तक वाद मैथिली अन्तर्जातीय व्रिवाहक सपना, संघर्ष आ व्रिडिम्बना पन गनमिपुक्त उपन्यास ठिपिवाक श्रेय गौरीनाथकें जाश छनी।"

तँ की कमठानन्द हा सुशीठसँ ई श्रेय छीनि ठिठनी? की ई हुनक वनाह्मसवादी संस्कृतक अहंकार- जे हम ककनो यदा सकै छएि आ ककनो उगानि सकै छएि- केन पनाकाषुठ थीक, आका हुनक अय्ययनक अभावक प्रमास?

यठू अहाँकें ओ यथी कमठानन्द हा केन सुवाथी दुनयिँसँ दू, छठ-छद्मसँ दू सुशीठक जादूवठा साहित्यक गशिष्ठ दुनयिँमे।

अहाँक सुवागन अछि सुशीठक साहित्यक दुनयिँमे।

प्रसून अछि सुशीठक 'गामवाथी' (१८८२) जे आव उपव्य अछि व्रिदिह आकाश्वमे ठिक हानपुःव्रिदिहयोगिपोतहहाम पन।

पहिल पाँतीमे उपन्यास आनम्भसँ पहिलियि 'गामवाथी' उपन्यासक सम्वन्धमे सुशीठ ठिपै छथि-

"व्रिदिवा व्रिदिह आ अन्तर्जातीय व्रिदिहक समन्थनमे।"

आ उपन्यास आनम्भ।

गामवाथीक म्त्तु आ नपने हमेठ, गामवाथीक दाह संस्कृत के कनौ? वनाह्मस समाज कजिादव समाज?

मैथिलीक समिडीकेटेड समीक्षापन अन्तर्गमि प्रहान।

(२) नयिकता
 द्व साहित्यिक पत्रकारिता, विद्वत्, मंत्र-माठा-मास्क आ ठोकान्पसक प्येठ-तमाशा
 ७ ठेपक सवहक जग्म-मनास शताव्दी केन युगाव, कैठेडनवाड आ तकरा पाछुक
 नाजनीता
 ८ दधति एवं ठेपकि सवहक संगे गेद-गाव आ ओकर शोषसक व्रविधि तनीका
 ९ कोनो आग व्रषिय

६

व्रदिह व्रान्डकासूट ठसिंट

व्रदिह श्रीश्रीश्रीवश्यरुश्रुश्रीशु सम्वन्धी सूयगा ठेठ अपन गौहातसापप नम्वन
 हमन गौहातसापप गो +८९८५६०८६०७२९ पन पडाउ, ओकर प्रयोग मात्र व्रदिह
 सम्वन्धी समाया देवाक ठेठ कएठ जाएत।

-गणेश्वर गकुल, सम्पादक व्रदिह, गौहातसापप गो
 +८९८५६०८६०७२९ हथथशुःवश्यरुश्रुश्रीशु शषषष २२२८-५४७श
 वश्यरुश्रु

शानाठेठ डतिनातुने नि मातिहठि गद व्रदिह मातिहठि डतिनातुने मोवेमेन

इससे म्मो ८८ (मोवेमेन-वेयेमेन २०९८) १७ मुसे इगदी
 ११ हानपुःमुसेनिदायिम् दसिपठायस मातिहठि डतिनातुने नि ।ने शतनेमेठय पौन
 ठगिहण मोवेमेन, तिनोनेगठय यथामिस तो वे । नेपनेसेगतातवि नेव्री१७ मातिहठि
 डतिनातुने, हैनेस तिनोसोनेठय नि ठगिठिह तहे षाहतिया अकादेमी, वेठहः । मेने
 नेपनेसेगतातानो७ तहे सो-याठेठ "दनेदि मानि दनानि" श सिं सपेयतेद तहान
 मुसे इगदीगौठिठ योनयेयत तिसेठ७ वय ।ननुनयनिग ।न सिसुं शयठुसविठय
 देवोतेद तो तहे पानाठेठ तनादतिनि१७ मातिहठि डतिनातुने

थप्प श्रीममेन गैरितिस नि तहे "उनिगुसितयि यविनसतिय" छहापतेन १०
 "षोयीषोगय", १८८८, पागे २८९, सातगीगाथ डौ पयहोथोड श्णदा उगविनसतिय
 गान छोगयथोड श्णदा थुसत वोक: " तहे मातिहथि गैगीनि सि डुगद तो वे
 योनोमयिाथथय गद युधुनाथथय दोमनितेद वय गनाहमनिस गद डि । सेपानाते
 मातिहथि पनाते सि डैममेद, तहेय माय सथिय गेते गतेगयहेद ।स तहे
 पोथितियिथे थति ।थसो थहसि माय गोन वे तो तहे थकिनिग गद ।दवागतागे १०
 सेवेनाथ गेतेन यासतेस, तहे तनादतिगीगाथथय गतेगयहेद तेन युनतेगथय
 ।सयेगदागन यासतेस थहेनेडेने, नि ।थथ पोससविथितिय तहे थानतेन गनुपस माय
 १०पपोसे तहे डैममागीन १० । सेपानाते मातिहथि सनाते ।थह्लुगह तहेय ।थसो
 वेथेगग तो तहे मातिहथि सपेयह योममुनतिय थहसि तयपे १० १०पपोसतिगीनि
 ।दवेनसेथय ।डडेयतस तहे देवेथेपमेगन १० सेवेनाथ थगुगोस"

थप्प श्रीमेन डुनतेन गैरितिस: "वेन हैन । थगुगो सि पनोनुनयेद तो वे
 दसितनियन डनोम हनिदा, ति माय वे तयोतेद ।स । दथियन १० हनिदा डोन
 शामपथे, वोतह धनोमिसोनौहे नदेनतोक तहे यथाससयि थनिगुसितयि सुनवेथोड
 श्णदा ।गद ष प्प छहापतेनगे, तहे गातगीगाथ पनोडेससोन १० थनिगुसितयिस,
 सनातेद तहात मातिहथिसि । दसितनियन थगुगो गुन येन ति सि तयोतेद ।स ।
 दथियन १० हनिदा" (श्वदि, पागे २८३)

यो गोन पुदगो ।यह दाय वय तहे हानवेसत युो गोप वुन वय तहे सेदस तहात युो
 पथान - दोवेन डुसि पतेवेगसोन

वदिहा: मातिहथि डितानुने मोवेमेगन

श्वनाथथे डितानुने

षामसकृति विनो एगवसिह ३ । म प्योवदि वि षामसकृति । नद उमोम तहे
 टुवतिप्र ०७ तहे तानसठातीनि, ३ याव पनेसुमे तहात हे हासु सेद सोमे
 गितेनमेदितिय एगुगो वि तानसठातीनि षामसकृति तेसतस विनो
 एगवसिह ३१ सि । मातेनोडे तहयिस तो । यकगौषेदगे तहे सुनये

वदियागानद हहा'स तानसठातीनि सि वेथौ पान, ओने शामपथे, हे हास गो
 विकृतिगौहातगौषेद वे तहे एगवसिहौनद ओन 'गैक सागना', नद तहेने । ने
 पथेनय ०७ सुयह निसतानयेस ३ हवे सोमे सुगोसतीनिस ओन हमिः ढनिसत,
 नेद अ नदिद'स एये व्रीनि मतिहथि वय ढाणनातह मसिहना, ति मेनतीनिस । ००
 तहे तेनमस ओनौहयिह यो योषेद गोन उनिद एगवसिहे टुविथेनतस थहेन गो तो
 तहे वदिए । नयहवे (व्रीवदिएयोन) । नद थोक ओन उमेसह मागदाथ'स श्रयितुने
 थयितानानय योनतीनिग वेगेताननि, नमिथस । नद सकृति सेतस ०७
 मतिहथि, हेने योवृषि उनिद तहे । यतुथ पहेतोगनापहस तौ ढुनतहे, नदेन अ
 श्वानाथेथे हसितोनय ०७ मतिहथि उतिनातुने (वदिए व्रीवदिएयोन), योवृषि
 उनिद सामपथे एगवसिह तानसठातीनिसो७ सोमे मतिहथि सहेन सतोनेसि
 थहेनेउने, गैहा वदियागानद हहा सि पनेसेनतीनि । से शोतयि सि तहेनगिनिथ
 तहनिगो७ तहे मतिहथि उगुगो (वृण गोन तहातो७ मतिहथि उतिनातुने, । स
 गौस तौ देयादेस । गो) श्नेतेनेसतीनिथय हसि थहोयि ०७ सहेन सतोनेसि
 नेमनिदस मे ०७ छेनतेमपोनानय मतिहथि सहेन पतोनेसि (मतिहथि सहेन
 सतोनेसि तानसठातेद विनो एगवसिह) दितिद वय मुनानि मादहुसुदाण थहाकृ
 । नद पुवसिहेद वय तहे पारतिप्र अकदेमनि २००५ ३१ सेमस तहात तहे सतोनेसि
 वि तहसि सेथेयतीनि । ने थेउतोवेन मातेनौष उमोम तहात योथेथतीनि ढपि वान
 श्रौनिकथे गौके । उतेन तौ देयादेस वृण वदियागानद हहा सि सतिथि वि सधुमवेन
 गोन नेथिथिग तहे थहनगोस तहात हवे हापपेनेद दृनिग तहे पेनीद

३७ यो योमपाते तहे तानसठातीनि ०७ तहसि सेथेयतीनि वसि-न-वसि तहे
 एगवसिह तानसठातीनि ०७ उतानि श्रमेनयिण पपानसिह उतिनातुने, योवृषि
 वे । वथे तो नदेनसतानद तहे दडिडेनेनये

शुभ तहेसे तयपेसोड सेथेयगानिस ले गोन कनौन डोन तहेनि ठगिनालय
शेथेथेनये, हानपेन छोथेगनिस पुवथसिहेस तहेसे तयपेसोड सेथेयगानिस डोन
डवि-सगान हतेथस । गद अनिपोनन ठुनगोस थहे पुवथसिहेस । गनूगयेद तहसि
वौकोन मानयह २२, २०२२ थो, नि द-७ मोगतहस, योविथे गेनोथेद मातेगिथिस
गेनथ

थहे गनदि: थहे मातिहथि छथाससयि प्पानयादान वय हानमीहन हहा (१८०८-
१८८४) तगानसगतेद गितो एगगथसिह वय ड़ाथि पुमान (असससिगान
शुनोडेससोन, वेपानमेगनोड एगगथसिह, वेन थायाथ उपादह्याया छोथेथे,
उगविनसतिथोड वेथेहि)- हानपेन शेनेगगिथि (हानपेन छोथेगनिस शुवथसिहेस)

३ हद पेनेनदेनेद तहे वौक, गैहयिहौस सयहेदुथेद तो वे देथवेनेद तो मय कनिदथे
। ययुनगोन तहे १सगोड वेयेमवेन २०२२, वुन तहे देथवेनय दतेगौस पोसतपोनेद,
। गद तिगौस देथवेनेद तो मय । ययुनगोन तहे १४^नोड वेयेमवेन २०२२

श्रौहेन मातिहथि गौस नेयोगनसिद वय तहे पाहतिथी अकादेमि (मागानिग
अथादेमथोड डेनतेनस-ोड इगदी) गौय वायक नि १८६५, ड़ाते दामानातह हहा
सगानेद तहान हसि मातिहथि ठगगुगे सि सावेद गौ (मातिहथिके वानतमान
पामासया, दामानातह हहा)

पह हानसिह थनविदि हस योममतिनेद तहे सामे मसिगाके इग हसि डेगौनद
हानसिह थनविदिगानिस- "इग हनिदि, तहे ठगगुगे तो गैहयिह मातिहथिसि तहे
यथेसेसत (। गदोड गैहयिह ति गौस निदेद । ग निनेगनाथ पानतु गनथि ति गौस
गनानेद नेयोगनतिगि । स । सेपानाते ठगगुगे वय तहे योसततिगानि नि १८८३)

"

हानसिह थनविदि नेडेनस तो तहे नियुसुगानोड मातिहथिनि तहे गिहानह सयहेदुथे
ोड तहे योसततिगानोड इगदी हेने तहे येन मेनगानेद सहुथेद वे २००३ गिसतेद
ोड १८८३ मोगेवेन, मातिहथिगौस । सेपानाते ठगगुगे नि २००३, १८८३, । गद

१८६५ । नद दुर्गिग तहे तमिोड पने-ह्योतनिसिहौना व्रदियापात थहे सतातुस
 गानतेद तो मातिहृषि वय्र पाहिया अकादेमि नद तहे छेनसतुतिगीनोड श्रदति,
 गे तहेतहेन हनद, सतनेगगतहेनेद तहे हनदसोड तहेवसयुनागतसिते ऐमेगतस
 ठके ढामागतह हृहा, पहातदागतह हृहा (हे सि गोन । उमोस पेनसोन पुनौह्य ३
 हवे ताकेन हसि गामे, शौषिठे शपठानि ति ठातेन) । नदोतहेनसौहे गासठगिहतेद
 हानमिहान हृहा हानमिहान हृहा'स प्पहातान प्पाकाक थानाग, शुनागामया
 वेलाता, ढानगसहठा । नद छहानयहानि ७७ तहेसे वोकसौगे ठगिविठे डोन तहे
 पाहिया अकादेमि श्रौनद गितिगिद नि १८६६ डोन मातिहृषि (वेयुसे १०
 नेयोगगितिगि गविन तो मातिहृषि वय्र पाहिया अकादेमि नि १८६५ गून ।
 पहिठिसोपह्य तनेतसिौस गौनदेद तहे पनडि नि १८६६, तहसि पहिठिसोपह्य वोक
 तिसेठड सि । हेनडियिगे, नद डोने हस गेद तहे वोक तो गदेनसतानद तहे
 गुनयेसोड श्रदति शुहठिसोपह्य, तहेन हौषिठे हवे तो गठेन डनिसत तो वे
 वठे तो गनासप तहे पहिठिसोपहयाठ योगयेपतस डोन । गौ वोकगेन श्रदति
 शुहठिसोपह्य ३१ १८६७ गो गौनदौस गविन डोन तहे मातिहृषि ढानगुगे

ढामागतह हृहा'सोवसयुनागतसिम व्रसि-व्रसि श्वानासि व्रदिगत डोनगे
 श्रामपठे (वेयुसे ढाठति पुमान ७सो सेमस तो हवे डेठठौद नि हसि डीतसतेप,
 तहेगह हे गविस यनेदति डोन हसि गिनोनागये तो सोमेतहेनौनतिनस) हेौस
 यासतेसित, योगसेनवातवि । नद योगडुसेद थहे गितेन-यासते मानागि नि श्वाना
 गौसौठठ कगौन तो हमि (पुन हे यहेसे तो केप तहे यौसहान श्वानासियेन-
 ौहयिह हस वेन नेठेसेद वय्रु सगेन गौगठे वोकस नि २००८), नद ति गौस
 । पपानेनत तहान तहे गनेत नावया-नयाया पहिठिसोपहेन धानगेसह उपादहयाया
 मानदेदि । "छहानमकानगि" । नद गौस वोनन डवि योनस । डतेन तहे दोगहोड हसि
 डतहेन (से पुन श्वाना गौकस व्रठ ३ & ३३ । व्राठिवठे
 । नद नपुःव्रदिह्योनिपोतहृहितम) पह यनिसह छहानदना महानतायहानया
 नैतिस नि तहे "हसितोनयोड सावया-सयाया नि मतिहृषि"-

"थहे डामठिय रैहयिह गौस निडेनीनि नि सोयाथि सतातुस सि गौ शतनियत नि मातिहठि- धानगेसहा'स डामठिय सि योमपठेठेय गिनोनेद । गदौ । ने गोते शपेयतेद तो कर्गौ वेग हसि डानहेन'स नामे", रैहयिह सि । तोगाथ डअसेहोद हे गौतिस डुनतहेन तहात । ७७ तहसि निडेनमातीनि गौस गविन तो हमि वय श्रुनोड ढ हहा षो हौगुठेद तहसि यासतेसित-योगसेनवातवि-योगडुसेद । ७७ौ तहे गौनद तो वे गविन तो पर हानमिहण हहा? षो, तहे पाहतिप्रा अफादेमि सावेद तहे मातिहठि डानगागे वय नेयोगनठिनिग ति, ।स ।ससेनतेद वय श्रुनोड ढ हहा, सि गौनग । गद सो सि तहे ।ससेनतीनि मादे वय पर हानसिह थनविदेदि

मम ड़ाठति पुमान सि । युगग पेनसोन, वुग हे सि वेनिग मसिसेद वय सोमे वेसयुनागतसिते ठेमेगतस, रैहे गासठिगिहोद हानमिहण हहा हानमिहण हहा सतोपपेदौनतिनिग नि मातिहठि डेठठौनिग तहे नेयोगनतिनिगोड ति वय पाहतिप्रा अफादेमि । गदौ ।स गौनदेद तहे पाहतिप्रा अफादेमि पनठि डेन हसि । तोवागिनापहय नि १८८५, । डतेन हसि डेनह, रैहयिह मेगस गोनहनिग

मम ड़ाठति पुमान गौतिस- गौगागनद हहा'स गहाठमानुसहा (१८४४) । गद परानदागनदा हहा'स हायावाना (१८४६) । गतायक सुयह सोयाथि दविस्सिगिस तहात पठायेद । देयसिदि नोठे नि मानगिगिस गौगागनद हहा'स गहाठमानुसहा (१८४४) गौस निदेद । पातहवयोकनिग नोवेठ, वुग परानदागनदा हहा'स नोवेठौस नेयतीनिगय श्रुनोड ढ हहा पनसिहना छहुदहानय गिहणठय वेसेनवेस- गौगागनद हहा'स 'गहाठमानुसा' देठसौतिह तहे सोयाथि पनोवठेमस योगनेयतेद गौतिह तहे पनोवठेनोड मानगिगि अस । नेपठय तो तहसि नोवेठ, परानदागनद हहा गौते । सेयोगद-नाते नोवेठ 'हायावाना,' हावनिग ठतिठे ठतिनय मेति (ढअथहअपढरपहमअ छहओउथहअढे अ पुनवेयोड मातिहठि डितिनातुने)

मम ड़ाठति पुमान डेन हसि श्वानप-नेठतेद गिनोनागये गविस यनेदति तो मम श्वानमेसहौन हहा'स "मातिहठि थातनवा-वमिनसहा" श्रुनोड ढ हहा पनसिहना छहुदहानय गिहणठयवेसेनवेस- "मम श्वानमेसहौन हहा'स 'मातिहठि थातनवा-

व्रमिासहा' सि तहे हसितोय्योड मतिहवि वि मतिहवि पनोसे । गद सि वासेद
 मनिथय लेग तनादतिागि मम मुकुगदा हहा गाकसहसि 'मतिहविवहासहामाया
 शहिस' गविस । ग । ययुगतोड तहे प्यहगदौाथ दयगासगय ढनोम तहे पोगितोड
 व्रीोड मोदेन मतिहवि पनोसे, तहेसे तौौनकस ले मिपोनतान, तहेगह उनोम
 तहे हसितोय्याथ पोगितोड व्री, ले गुनेथविथे (दथयहथय्यदथहसथ
 छहथोउथहथथे थ पुनवेयोड मतिहवि डतिानुने)

थहे डेथथौगिगे शयेनपन उनोम थुन श्वगण शिवागद ((पान ३४३३) सि
 वेगिग नेपनोदुयेद वेथौ डेन गेदय-नेडेनेनये: -

महानाण हसहिदेव मथिथिक कनासाट वंशक प्रयोगिाश्वन गकुनक वनास
 नागाकने हसहिदेव नायक आका नाणा छथाह १२८४ ई मे पन्म आ १३०७ ई
 मे नाणसहिसग घयिसुददीन गुगथकसँ १३२४-
 २५ ई मे हानकि वाद नेपाथ पथायन मथिथिक पन्गी-
 पुनवन्थक वनाहमास, कायसथ आ कषनायि मय्य आयकानकि स्थापक, मैथथि
 वनाहमासक हेगुगासाक ह, कनास कायसथक थेथ संकनदण, आ कषनायिक
 हेगु व्रणियदण एह हेगु पुनथमनाया गयिकण मेथह हसहिदेवक पुनेमाससँ
 आ ई हसहिदेव नागयदेवक वंशण छथाह, जे नागयदेव कनासाट वंशक १००८
 शाकेमे स्थापना केने । हथि गन्देद शुनयं शशा शाक वन्थे (१०१८ शाके) मथिथि
 क पम्डगि थोकगि शाके १२४८ तदनुसा १३२६ ई मे पन्गी-
 पुनवन्थक व्रानमाण स्वनूपक पुनाममक गनिमय कएथहो पुन: व्रानमाण
 स्वनूपमे थोडे वुदय विथिसी थोकगि मथिथिस महानाण मायव सहिसँ १७६० ई मे
 आदेश कनवार पन्गीकानसँ शाय्या पुसाकक पुनासयन कनवथोथहो थोकन
 वाद पाँणमि (कयनो काथ वनासाति १६०० शाके मागे १६७८ ई व्रानवमे मायव
 सहिक वादमे १८०० ईक आसपास) शनोनायि गामक एकटा गव वनाहमास उपणा
 तक मथिथिमे अप्णगि मेथ

षो, तहे षनोतनयिास ।स । सुव-यासते ।नोसे ।नोणद १८०० छए ।स पेन ।तहेनतयि पाणजाडिठिस

पह अणसुहमान श्वाणदेय [घाणेणदना थहाकुन १०८ मीं वेथह पिनोवदिद मे गीह दगितिडिद योपेसि १०८ तहे गेनोथोगयिाथ नेयोदस १०८ तहे मातिहठि मनाहमनिस थहे पाणजाकाना-स गेसे डामठिसि हावे मातिगानिद तहेसे नेयोदस डेन गेनेनागानिस ।नेोडनेन नेयुयानन तो ।थेथीतहेनस तो पुनसे तहेने नेयोदस श सि । मातने १०८ 'नितेथेयुताथ पनोपेनय' तो तहेम शीस डेनतुनारो गुगह तो नेयेवि । योमपथेने दगितिडिद सेतोड पाणजा नेयोदस डोम घाणेणदना थहाकुन १०८ मीं वेथह नि २००७ [देयासतानिग तहे मनाहमनि नि मेदेविाथ मतिहठिः श्रोतगिनिस १०८ छासते श्देनतयि ।मोणग तहे मातिहठि मनाहमनिस १०८ मीनतह गहिन वय अणसुहमान श्वाणदेय, अ दसिसेनतानागि सुवमतितेद नि पाणजाडि डुठडठिमेनत १०८ तहे नेटुनिमेनतस डेन तहे देगने १०८ योयतो १०८ शुहठिसोपहय (हसितोय) नि तहे उगविनसतिय १०८ मयिहगिाण २०१४] डोनेन तहेसे श्वाणजा मानुसयनपितसोने पुथोदेद तो गीगठे वीकस नि २००८]

थहे सो-याथेद माहनाणस १०८ यानवहनगा गेने पेनमानेन सेततथेमेनत डामनिदानसोड छोनगौथेसि, ।नद तहेनेगेने सो मानय नि मतिहठिह श्ददा, पुन नि सेपाथ तहेनेगेने गेने श्द तहे ।ननेशुने १०८ वीक (श्वाणजा श्वावाणदह वीथ ३४३३), गे हावे ।तनायहेद योपेसि १०८ गेनोथोगय-वासेदु पगनादानागि ।नदेनस (पनोड १०८ पगनादानागि डेन यासह) षो, वेडेने १८०० छए, तहेने गीस गो सनोतनयिा सुव-यासते नि मतिहठिह श्ददा ।नद तहेने सि गो सुयह सुव-यासते गीहनि मातिहठि मनाहमनिस नि सेपाथ पाणतोड मतिहठि व्रेन तोदाय षनोतनयिा वेडेने तहान नेडेनेद तो डेथेथीनिग सोमैदुयानागि सतनेम नि मतिहठिह श्ददा, नि सेपाथ ति सतथिथ हास तहान मेगनिग

मन डोथति पुमान डुनतहेन तनेसि तो पुन हसि ।गेनदा वयोनतिनिग- "हानमिहान यहीसे । मदिदथे गनोणद नि हसि नेडेनमसित ।गेनदा" हे गविस छुगहावथे

गोसोवस डोम हसि योगतेनगानि व्रुडि "हे सपुसेस तहे सगिनडियानयोड वेयाथ
नानादिगानिस, अगुगोस, सयनपितस, दुयागानि सयसतेम, नद मोनाथ व्रुषेस"
तहेवेय मोगनिग तहत तहेसे मे योगसेनवागवि व्रुषेस!

(अथ तहे गेडेनगेद वोकस मे व्राथिवथे डोम डे पदड दौनथोद डोम तहे
अनिक हानपुःव्रुदिसयोनियोतह्विम)

व्रुथएहथ मअस्थह्रुडु डस्थएठअथउठए मओवएमएसथ आसथ अ
शुअठअडडएड ह्रुथथओठे ओठ मअस्थह्रुडु डस्थएठअथउठए

थहेडेने, तहे मसिसनिग पोमगानिस, तहे गिनगेद नद गोन-गेपेसेनगेद
।सपेयतसोड सोयेतिय, सतानगेद तो वे यहनोनयिथेद श्ण थेद तो तहे देपयिगानि
मानकेद वय तहे नयिहनेसस ोड व्रोयावुथानय नद सपेनोनियेस नद गौस ।
नेव्रोथुगानि नि अतिनातुने नद नान अस डम अस पोपथे सपोकनिग मातिहथि मे
योगयेनगेद थहे दुाथिय गौ हस गोन नेमानेद मेदीयने थहे गोथ पौन ोड तहे
मातिहथि अगुगो गौस गोथसिद वय तहे गानवि सपोकेस, मेदीयनतिय गौस
नेपथयेद वय सयेथेनये थहसि नतेमपन न तहे नैतिनिग ोड हसितोनय ोड
श्वानाथेथे डतिनातुने डोम तहे मातिहथि डगुगो नोसे अस तहे मेदीयने गोनयय
(पनविते नद गोवेननमेनताथ) डुनदेद सो-याथेथेद मानिसनोम अतिनातुने,
गैहियह हस गो गेदेनसहपि, नद गो ययेपतानये मोनग तहे सपोकेस ोड
मातिहथि योगनदिद तो वे पनेसेनगेद वय तहेसे अकदेमेसि अस नेपनेसेनतागवि
अतिनातुने थहे मेदीयने नितेनडये ोड मातिहथि अतिनातुने गौस पनेसेनगेद वय तहे
गोवेननमेनत नदी नद तेथेवसिनिग सतानगानिस ।असो डतिनातय पुोनगाथस अकि
मुसेनिदी (मुसेनिदीयोम) & शुवअसिहेस अकि हानपेन छेथेनिसौने ।असो
सेद डोम तहेने सगिसितेन देसगिन

श्वसेदो-यनतियिसिम नि मातिहथि नद तहे यासे ोड प्यामाथानगदा ह्हा

थहे ततिथेऽ प्यामाथानागद हहा'स वौक "भातिहृषि सोवेथः थमि, पोयोनिय ।गद
 डुसर्गागिस" (२०२१) सि मसिथेदनिगः श सि । योथेयर्गागिऽ सोमे सप्रगदयिातेद
 सो-याथेद यनतियिाथ । नतियिेसो ग सोमेऽ हसि यासते गोवेथसिास थहे रद३-
 पागे वौक यानोणथय वे सोथेद नि हानदवुणद तो थविनासिोहेने तिौथिेथ नोत हेने
 सि । योनयेयर्गागि, । गोन-यासतेौनतिा'सौनक, ि, पुवहासह छहागदनाौ'दाव'स
 गोवेथ 'धुथे', हास वेग दौथनौतिह वय हमि नि तौौ थगिस, ऽ योनसेौतिहोत
 नोदनिग ति ३ । म पयेसेनतनिग तहेसे तौौ थगिस हेने डोन योन गोनतानिमेनतौौ
 मुसत हावे नोद धुथे, डि यो हावेन'त । थोदय, नोद ति डनिसत वेयुसे तहेन यो
 िथिेथ हावे । मोने गोनतानिनिगो शपेनेनये धुथे सि । व्राथिवथे ग व्रदिहा अययहृषि
 ितिह तहे पेनमसिसागि ऽ पुवहासह छहागदनाौ'दाव । न तहसि
 थनिक हानपःव्रदिहायोनिपोतहृषिाम

"थहे िकनेसस ऽ तहे गोवेथ सि तहे 'तहोन'स पोथतियिाथ वसि थहे
 पानतसिागसहृषि तौौनदस । पानतयिुथान पोथतियिस दौस गोन दौ पुसतयि तो
 तहेौनक"

३१ । गोवेथौहेने पोथतियिस सि गोन नेमोतेथय निवोथवेद, तहेने सि गो डुसर्गागिऽ
 'पोथतियिाथ वसि । गद पानतसिागसहृषिऽ । पानतयिुथान पोथतियिस' धुमकेतु
 । गदौ । नतुसेद पोथतियिाथ वसिोन पानतसिागसहृषि पुवहासह छहागदनाौ'दाव'स
 'व्रोते'हयिह यामेोन नि २०२२ । गद सि । व्राथिवथेौतिह पेनमसिसागिऽ पुवहासह
 छहागदनाौ'दाव । ग व्रदिहा अययहृषि । न तहसि
 थनिक हानपःव्रदिहायोनिपोतहृषिाम, सि गोन पोथतियिस वुन वेन तहेने
 पुवहासहृषिसे नयहानतनिग सतयथेवव्रातिस तहे नेदोऽ । नय पोथतियिाथ वसि
 देद मय वौक 'भाति हाव्राथ पुवहासह छहागदनाौ'दाव'हयिह सि । व्राथिवथे । न
 तहसि थनिक हानपःव्रदिहायोनिपोतहृषिाम थोन तहे तहेन हागद, म
 प्यामाथानागद हहा सुगदस थके । सपोकेसपेनसोऽ सोमे पोथतियिाथ पानतय
 । यासतेसितोनगानसिागि नतहेन तहान । थतिानय यनतियि प्यामाथानागदा
 हहा'स नानाहमनिसितयि वसि । गानिसत पुवहासह छहागदनाौ'दाव सि । ग । थानम

थेडतसित सदि तो पनोमोते ननाहमनिस्सिम । नद गौनतस तो सायनडियि सोयाथि
पुसतायि घोममुनसिम हास सुडडेनेद । थोत डनोम पोपथोहे वेयामे योममुनसितस
तो सयापे तहे थनद येथिनिग

अथथ वोकस वय धनिसह पुमान मसिहना । मे गौ । व्राथिवथे नि तहे व्रदिह अययहवि
गौतिह हसि पेनमसिसीनः

हानपःव्रदिहयोनितपोतहितिम

डेनु स नेयाथथ हेने तहानौहेन नथिथ घातेसौस । सकेदौहेतहेन हौस देथयनिग
तहे नितनोदुयतानिोड तहे स-मोस नि श्गदाि डोन डोनोड पनायय हसि । नसौन
गौस मयिनोसोडन नेवेन देथयस तहे थुनयहोड पनोदुयतस डोन डोनोड पनायय
औ गौथिथ योनतनि नेनयिहनिग व्रदिह अययहवि
(हानपःव्रदिहयोनितयहिव्रिहानम), देसपति सुयह नसिकस वेयासे गोन । थथ तहे
डसिह नि तहे पोनद नोन वय सोमे नोनतेन डसिह नि पानाथथथ सतनोमस थहे
डसिहेनमेन हेने हवे वेन । नदौथिथ योनतनि तो नेमोवे सुयह नोनतेन डसिह

थहे डनिाथ वथौ तो सयनदयितेद पसेदो-थतिनानय यनतियिसिम नि मातिहथि

ओनगिनिाथ धनिसह पुमान मसिहना (युि श्वातान पे नेयह मे २००६): शन सि
नोतौनतहय तहान वेतौन १८२३ । नद १८४६, ५,१०,००० पोपथे दैदिोड माथाना,
२,१०,००० डनोम प्पाथ अडान, ६०,०००ोड छहोथेना । नद ३,०००ोड समाथथपोस नि
तहे प्पोसि नेगानि (७८३,००० नोनथ दोनहस)
थहेडि श्वाकान हह श्वासासहान (मेमवेनोड मातिहथि अदवसोनय घोममतिने
ोड पाहतिपा अकादेमा, येथेहि) [हाथपानतहान २०१७ (प १०३)]:

ने अंग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब । 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया
से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक
सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

ओनगिनिाथ धनिसह पुमान मसिहना (युि श्वातान पे नेयह मे २००६): ओन तहे
प्पोसि ढिविन नि नहिन, श्गदाि, । दामगौस वृथिन वय प्पनिग डशमान ३३ नि तहे

१२१६ येनानुप्र। नद डी नहसि, हे येयेवेद नहे नतिथेड 'ननि' डनोम नहे पौपथे
 १६ नहे मवागकमेनत ड नहे ननिगौस याथेदे 'ननि याम' थहे नेमानिस ड
 नहसि मवागकमेनत। ने सनतिथे वसिथिथे नि धुपुथे दसिननयिन,। वुन प कम
 सुनहोड नहमि मागान यन ढनानयसि नुयहानन (१८१०-११) सपेयुथेदे नहान
 नहे दाम मुसत हवे वेन। ननुतेन गौथे वुथिन तो पनोतेयत। डीनत। स ति
 सनतेनयहेद वेन। दसिनानये ड डर कथिमेनतेस डनोम थथियुगा तो निस
 योनडुनेये न नहे गौसतेन वानक ड नहे धहुस ननि यन श्रीश्री हुनतेन
 (१८७७) ददि नोन। गनेगौतिह नुयहानन'स योनतेनगानि नहान नहे दामगौस नहे
 पनोतेयतनिगौथेड। डीनतुनेननिग। थेयाथस, हुनतेन वेथेवेद नहान मोसत पौपथे
 ददि नोन योनसदिन ति। डीनतेसस गौथे १६। ययोनदनिग। तो हमि तिगौस
 सोमेनहनिगे थसे वुन हौस नोन नि। पोसतिगानि तो साय। नयनहनिगौत नहे योममोन
 मिपनेससौनि सि नहान ति मुसत हवे वेन। ने मवागकमेनत वुथिन। थेनग। नहे योसि
 ढनि तो पनेवेनत नहे ननि'स युनतेनत डनोम सथदिनिग। गौसतौनदस श्वेपथे
 १९सो सादि नहान ति सेमेद नहान नहे योनसानुयतानि ड नहे मवागकमेनत हद
 सुददेनथ सनोपपेद

थहे पसेदो-यनतियि पामाथाननद हहा'स साव्रानि ड नहे हवति। थ डेनदेन
 नहेड श्वानकाण हहा श्वानासहान टुनेद नहे पथगानिसिद गौनक। स डेथेगौसः
 (मानिहथि। मोवेथ, थमि, थोयोनिय। नद डेसगानिस पप २५७-२५८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दौंव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पदुआ कका आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़ात पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहें बान्हक मादे

थर्हाडि श्वागकाण ह्वा श्वागसहाण (मेमवेनोड भागिहवि श्रद्वसिोनय घोमभातिने ोड पाहतिप्रा श्रकादेभा, घेठहा) [हाठपानागहाण २०१७ (पृ ३१)]:

पदुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू कोसी नदीक बैसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पदुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पदुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

देगाएदनिग तहे तपोतमेगतोड मेपाठेसे मातिहठिीनतिनस वय्र पाहतिप्रा अकडेमा
परु ढाम महानोस प्यापानि "महामान" एमेगतस तहान तहेने सि देमानद नि
मेपाठ तहान तहेय सहेउद ।उसो गोन गौनद इगदीनि मातिहठिीनतिनस् पुवठिसिह
तहेम नि तहेनि ।नतहेठेगोसि ।स तेयपिनोयतिप देमानदस तहसि

थहे गानगौ-मनिदेदवेसस ।उ तहे मातिहठि ।दवसोनय वोनद ।उ तहे इगदीनि
पाहतिप्रा अकडेमा हिस तिस ।नगिनि नि तहे ।नगानडितीनिस तहान ।ने
तेयोगनडिद वय्र तहे पाहतिप्रा अकडेमा, तहे वाससि ।उ ।हयिह सि शतना-
ठितानय यनेदेनतीठस थहेसे ।ने पसेदो-।नगानडितीनिस नुनननिग ।ने पापेन,
पोठतिया।नगानडितीनिस ।न यासतेसिन ।नगानडितीनिस पोयकेन-नुन वय्र ।
।उ थहे योमपठेते ठसिन सि:

मअइथहइउइ उइथपढअढे अषषओछइअथइओमस (!!!) ढएछओघमइअएय वय्र
षअहइथैअ अयअयएमइ

१ थहे षेयनेतानय, अठठ इगदीमातिहठि पाहतिप्रा पामति, थनिवहुकति, ११४, षनि
शुछ मनेनगे ढोद, अठठ।हवाद-२११ ००२

२ थहे घेनेन।ठ षेयनेतानय, अकहठि महानातिया मातिहठि पाहतिप्रा श्वांसिहद,
छो यन घानापानि मिसिहना, ड।ठवाग, यानवहनगा-८४६ ००४

३ थहे षेयनेतानय, छहेतना पामतिय, वदियापानि महौन, वदियापानि मानग,
श्वातना-८०० ००१

४ थहे षेयनेतानय, मतिहठि पागसकनतिकि श्वांसिहद, द न, प्याठिसह पाह
ड।ने, प्योठकाना-७०० ००७

५ थहे षेयनेतानय, वदियापानि षेवा पागसतहन, मतिहठि महवान श्वांसिहद,
यानवहनगा-८४६ ००४

६) थहे पेयनेतालय, छेगते ओन तहे पणुदय १७ इगदीन थनादतिगिस, थानतावाताघिता महावाग; ढागताहोसे, ढागता, मादहुवाग-८४७ २११

मौ तहे डतिनालय अससोयातिगि ठसितास गेद। सु गदेन पेनाति गो १ & ६। वोवे हावे वेग देयेयोगसिद। गद हास वेग नेपयायेद वय गेहेन गेन-डतिनालय। अससोयातिगिस। ग सन गो ५, ६ & ७ वेथौ

(१) थहे घेनेाठ पेयनेतालय, अकहति महातायिा मातिहति पाहतिया श्वासिहाद, श्चुनोडेससोनस' छेठेगय, यगिाह श्रौसत, श्रोपप १७ श्चुनमालय पयहोठ, यानवहागगा-८४६ ००४, (गहिन)

२) थहे पेयनेतालय, छहेगता पामति, वदिह्या श्वागि महावाग, वदियापातामाग, श्वागता-८०० ००१ (गहिन)

३) थहे पेयनेतालय, मातिहति पागसकतिगि श्वासिहाद, दग, प्पाठिसह पाहा डगे, प्पोठकता-७०० ००७, (श्रौसत गेगगाठ)

४) थहे पेयनेतालय, वदिह्या श्वागिषौ पागसतहाग, मातिहति महावाग श्वासिहाग, यानवहागगा-८४६ ००४, (गहिन)

५) थहे पेयनेतालय, अगानद, पामाणकि पागसकतिगि पाहतियकि मागयह, ढाणकुमागगागण (मनिडापुन छहौक), यानवहागगा-८४६ ००४, (गहिन)

६) थहे घेनेाठ पेयनेतालय, मातिहति पागसकतिगि श्वासिहाद, ढेसेवेलय ५०३२, पाहता घानदेग छतिय, अदतियापुन-२, हामसहेदपुन-८३१ ०१४, (हहामकहागद)

७) थहे घेनेाठ पेयनेतालय, अकहति महातायिा मातिहति पागगाह, घ-६, हागस महावाग, श्रौगिग २ इथश्रो, गहादुनसहाह माडान माग, मौ येठह-११० ००२, (येठह)

श्रौहान सि तहे धिनाय यदेनताथोड तहे छेनते डेन तहे धुदयोड श्णदनि थनादतिगिस (गौ तेयोगनसिद नद तेपथयेद वय नोतहेन पोयकेन असोयातिगि)? छहेनगा धामतिगिद वदियापातधिया धानसतहान ते यासतेसिन पोधतियाधुतडतिस, वेहेमेनतय दसिपथयनिग तहे यासतेसिन नतमिोड । गतेन नयनेन पौन, गौहेसे यासते सि सतधिधु नयेनतानि (वश्चैश्चश्चथश्), वुनगौहे गौस येनतानिधु गोन नानहमनि अथश् श्णदनि मातिहधि धाहतिधा धामति (गौ देतेयोगनसिद नद तेपथयेद वय । गोन-धिनाय असोयातिगि) वेयामे गोन-शसितेनते वेन धुननिग तहे धडितमिोड तहे डते ह्यप्रकागत मसिहना, सामे सि तहे यासे गौहि अकहधि नहानतयाि मातिहधि धाहतिधा श्चानसिहद मतिहधि धानसकनतिकि श्चानसिहद हस दोगे । यनमि तहनोगह न निवेसततिने येतेमोनयुोड तहे गतेन वदियापात, तहेय तनेदि तो योगवेन वदियापातानिद "मातिहधि" धनगुागे तो तहे धनगुागेडोनधु तहे नानहमनिस (तहे नानेोड तहे नतसिनगौहे सकेतयहेद तहे वदियापात हस सतधिधु गोन वेन दसियधेसेद वय तहसि नगानसिगानि) श्रौहन तहेसे गोन-शसितेन नगानधितानिसे शेनयसि वोननिग पौनस गानतेद वय धाहतिधा अकडेमनिद यहेसे । योगवेनेन, ति सि गोन । योनियदिनये तहान डेन सुययेससवि तमिसोनधु योगसेनवातवि पौपधे नोनग तहे मातिहधि नानहमनि यासते, ते यहेसेन थहे योनपधेते धसिन सि:

१. ढामानातह हहा, २. ह्यप्रकागत मसिहना, ३. धुनेनदना हहा धुमान, ४. धुनेसहौन हहा, ५. ढामदौ हहा, ६. छहानदनागानह मसिहना अमान, ७. वदियागानह हहा वदिति, ८. वेना थहाकुन, ९. श्चुनेम मोहन मसिहना, १०. असहोक अत्रियिहध

थहे तेसुधन सि गौ डेन वेनयवोदय तो से थहे योनपधेते धसिनोड धाहतिधा अकडेमनिगिस (नधिध २०१८) सि:

थोताध वोनय दसिनयधितानि- ५० तमिस, मातिहधि नानहमनिस- ४२ तमिस, प्याधसतहस- ६ तमिस, ढाणपौनस- ३ तमिस; श्रोतहेनस- ० तमिस!!! (सौ नि

२०२१ पर हाउदसिह शुजासद मागदाथ हास वेग गौनदेद नहसि पनठि डोन हसि गोवेथ "शुजागु", सो नहे युगत सि गौ गोन डोनो वुनोने

थहे नेसुथन सि गोन वासेदोन नहे दुधतिप्रोड नहे वौकस वुन सोथेथ्यु पोन नहे यासते-वासेदोनेन योनसदिनागीनस नद नहे दसिसे हास तिस गौन नि नहे डुधनय सेदथनिग नहान नहे पाहतिप्रु अकडेमीड शनदी डुगद नहुगुगह नहे डुधनय थतिनाय असोयतिगीनस

श्रीहानौने नहेवजेयनविसोड नहे सेतनिगोड नहसि अकडेमी?

पाहतिप्रु अकडेमीसो सतावथसिहेद (सागीगाथ अयादेमप्रोड डेततेस तो वे याथेद पाहतिप्रु अकडेमी) वय घोवेनगमेगनोड शनदी नेसुथनीन सो ६-६-४५१घर(अ) दातेद येयेमवेन १८५२ "तो सेत हगिह थतिनाय सतागदानदस, तो डेसतेन नद योनेनदनिगे थतिनाय यनवितिंसि नि १९९ नहे शनदीन थगुगोस नद तो पनोमोते नहुगुगह नहेम १९९ नहे युधनुनाथु नतिप्रोड नहे युगनय; तो पनोमोते गौद नासते नद हेथनहय नेदनिग हावतिस, तो केप थवे नहे निनमिते दीथेगु मोगग नहे वानुसि थनिगुसिनायि नद थतिनाय डेगेस नद गनुपस नहुगुगह सेमनिनस, थयनुनेस, सप्रमपोसा, दसियुससीनस, नेदनिगस नद पेनडेनमानयेस, तो नियनेसे नहे पाये ओड मुताथ नानसथानीनस नहुगुगह गौनकसहेपस नद निदविदिथ अससगिगमेगनस नद तो देवेथेप। सेनुसि थतिनाय युधनुने नहुगुगह नहे पुवथयिनीनसोड पुोनगाथस, मोनोगनापहस, निदविदिथ यनेनविगौनकसोडेवेनय गेने, ननहेथेगोसि, नयप्रयथेपेदासि, दयिनीनानेसि, वविथीगनापहेसि, गेहे'सौहे'डौनतिनस नद हसितोनेसिओड थतिनानुने"

थहे अकडेमी वोसतसोड पुवथसिहनिग "गेने वौके वेनय नहनिनय ह्येनस" नद हेथदनिग "न थसत नहनिनय सेमनिनसेवेनय प्रोन" न नेगीगाथ, नानीगाथ, नद नितेनगानीगाथ थेवेथस, " थेनग गीतिह नहे गौनकसहेपस नद थतिनाय गातहेनिगस-वुन गौ हुनदनेद नि गुमवेन पेन प्रोन"

थहे अकादेमी जेयोगनसिस " मेसदिस तहे तौगतप्र-तौ अगुगोसे गुमेनातेद नि तहे छेगसतितुर्गिगेड इगदी", एगठसिह गद ढाणासतहागिस अगुगोस पाहतिप्रा अकादेमी हास योगसतितुतेद तौगतप्र-डुन अगुगो अदवसिोनप्र मोनदस "तो नेनदेन ।दवयि डेन निपठेमेगतिगि अतिनाप्र पनोगनाममेस नि तहेसे २४ अगुगोस"

थहे अकादेमीगिविस पनठिस नि तौगतप्र-डुन अगुगोस जेयोगनसिद वप्र ति डेन जेगिगिगिठ गद तनागसठातेद तौकस श गविस " सपेयाठि तौनदस याठेठेद गहासहा पाममान तो । सगिगडियिगत योगनविर्गिगि तो तहे अगुगोस गोन डेनमाठेठप्र जेयोगनठिद वप्र तहे अकादेमीस ।असो डेन योगनविर्गिगि तो यथाससयिठ गद मेदेव्रिठ अतिनातुने"; "श हास ।असो । सप्रसतेमोडे ठेयतगिगि मेनिगत तौनतिस ।स ठेठेठौस गद हेगोनप्र ठेठेठौस गद हास ।असो सतावठसिहेद । डेठेठौसहपि नि तहे गामेसोड वन अगनद छौमानासौमप्र गद शुभेमयहागद"

ढएथश्चअड श्रोठ डएथथएढष (पहश्मए)!!!!

शुन डेवुनाप्रवेनप्र प्रोन, पाहतिप्रा अकादेमी "हेठेदस तौक-ठेगग ठेसतविठोड डेततेस; श वेगनिसौतिह तहे येनेमोगप्र तो पनेसेगत तहे अकादेमीस अगुगठ श्रौनदस डेन यनोतविर्गिगिगिगि"

शुन डेवुनाप्रवेनप्र प्रोन, तहेसे सि । गेद तौ शामगिहेतहेन पाहतिप्रा अकादेमीसि डुठठठिठिगिगि तिसोवजेयतवि गद हेतहेन पाहतिप्रा अकादेमीसि तौनेोड तहे नयिह युठतुनाठ गद ठिगुसितयि वानोतिप्र पनेवाठेगत नि इगदी

श्रोग सयनुतगिप्र ति सि जेवोठेद तहात पाहतिप्रा अकादेमी वेठेविस नि "डेनयेद सतागदानदसितानिगेड युठतुने तहनोगह । वुठठेठोडिगिगेड ठेठेठस गद ।ततितुदेस" गद ति सि गोन "योगसयुसिगेड तहे देप गिगेन युठतुनाठ, सपजितुिठ,

हसितोत्तयाथ । नद शपेनोतिताथ । अनिकस नहानु नडियु श्मदीस दविनसे
मानडिसनातीनसोड अतिनातुने।"

थहे अकादेमी वीसातसोड पुवअसिहनिग । "ने वीकेवेनय नहनिनय हुनस" । नद
हेअनिग । "।। असात नहनिनय सेमनिनसे वेनय योन" ।। नेगीनिग, नातीनिग,
। नद नितेननातीनिग अवेअस, "।। अेनग तीतिह नहे तीनकसहेपस । नद अतिनाय
गातहेननिगस-योन ती हुनदयेद नि गुमवेन पेन योन" ।। ३७१ से नहे दाना नि
नेसपेयतोड मातिहथिती योमेसुत नहानेवेनय योन ।। नुनद तीअवे वीकस सहैअद
हवे वेन पुवअसिहेद नि मातिहथि । नद नहे मातिहथि तीनतिनस मगिहण हवे
।। तेनदेद नहनिनय सेमनिनसे वेनय योन ।। नेगीनिग, नातीनिग, । नद
नितेननातीनिग अवेअस । नद मगिहण हवे पानयिपितेद नि गिहण अतिनाय
गातहेननिगसे वेनय योन थहे गुमवेनोड मातिहथि वीकस पुवअसिहेद वय नहे
अकादेमी सि पातहेनयिअथथी, । नद तीहेन ती से नहे । ससगिनमेनतस, नहनुगह
तीहयिह नहेसे वीकस गेन ।। नडियिअथथय पनेपनेद (वे ति नानसअतीनि,
।। नहेअेगयोन मोनोगनापह), नहेन नहे पौपअे गेननिग नहेसे । ससगिनमेनतस
।। ओडतेन नेअतेद तो नहे मेमवेनसोड नहे । दवसिनय वीनद (। स नहे । नसौन तो
दथः ।। पपयितीनि वय षह वनिगि अतपअ वनिगस ओनह) थहे दुअतिनय
सुडडेनस, । नद । स । नेसुअन, नहेने सि गो नेदेनसहपि

हौ नहसि अकादेमी अथिद? अनद तीहय नहसि अकादेमी अथिद? अनद तीहान
।। यतीनि सहैअद वे ताकेन ।। गानिसन अकादेमी ओन तिस नितेननातीनिग अथिने?

दिसनअथ, अकादेमीसि गोत नहे नामेओड । मानोनतीमान अकादेमीन तिस
मेमवेनोड नहे अदवसिनय मोनद योनससितसोड पेनसोनस, । नद डि नहे गनुप
ओड पेनसोनस सि अथिनिग नहे अकादेमी, नहान अगुगो तिसेअड सि तो वअमे!
गुन ।। गानि, नहे अगुगो सि गोत नहे नामेओड । मानोनतीमान थो, नहे पौपअे
सपोकनिग नहान अगुगो ।। ते तो वे वअमेद ओन नहे अथिनेसोड नहे अकादेमी
देअथ!!

एवेन डि ति सि पान्ताविष्य त्पु, तहे पाहिया अकादेमय यागनोत सहजिक तिस
नेसपोगसविषितिसि हौ । न । एवसिोनय योममतिने याग वे योसदितेद
नेपनेसेगताविषोड मातिहवि-सपोकनिग पोपठे (वेन तहानोड श्णदा), हैन तहे
छोनवेनेन ोड तहान एगुगो सि नोमनिगेद वय ससि ोमगानसिागिस
(नेयोगनसिद वय तहे पाहिया अकादेमि डोन नोसोनस वेसन कनौन तो ति),
हवनिग नो नेमोते योनेयनीनौतिह एतिनातुने? पाहिया अकादेमि सौद सेदस
ोड अयार्था । नद शपेयतेद मानगो डुनुति हवनिग सादि तहान ति सि । एसो त्पु
तहान तहे अकादेमीन । नयोमगानसिागिन याग तानसडोनम तिसेठड, वुनोनय
हैन तहे योनेनवावि पोपठे नेपनेसेगनिग तहेसे डनिद पनेससुने डोनम तहे
एतिनाय डानेनगति, यहनगे तहेमसेठवेसोन । ने नेपठयेद

श्रौहान सि तहे सोठुनीन?

थहे एतिनाय डानेनगति हस । एनेदय ताकेन नितिातिवि वये सतावठसिहनिग
पान्तावेठ पाहिया अकादेमीन । नद पान्तावेठ एतिनाय मेनस शन सहुठद
वे ताकेन डुनतहेन । अठठ ठेगाठ मेनस सहुठद वै शपठेनेद तो ताके तहे अकादेमी
तो तहे तासक शोन । एठ । वाठिवठे डोनमस, तहे डयत सि मादे यथोन तहान तहे
एतिनातुने वेनिग पनेपायेद वय पाहिया अकादेमि तहनोगह । ससगिनमेनतस सि
नोन गनानमानियाठय योनयेयत, तहान ति सि नोतु प तो मानक । नद सि ोड
निडेनीन टुठति, शोन । एठ । वाठिवठे डोनमस, ति सहुठद वे मादे यथोन तहान
तहे तहनि, यासतेसिन-ठोकनिग (टुनततिातिविष्य । नद टुठतिातिविष्य) । नद पाठे
मातिहवि एतिनातुने, हैयिह सि वेनिग सहौन वय तहे पाहिया अकादेमीड श्णदा
तो तहेनौनठद, हस नो नेदेनसहपोन नेसपेयत नि तिस नाति सपोकनिग । नोड
श्णदा । नद सेपाठ अनद तहान मातिहवि हस मोवेद नोन वेयुसे ोड पाहिया
अकादेमि वुन देसपति ति

वेमानद

थहे सशिमगागसिगीनिस नेपनेसेनगिग मातिहथि सहेउद वे देनेयोगगडिदौतिह मिमेदाति उडेयन गद ग निटुनिय गितिगिद तो असयेनगि गहेनि गेगुगिनेसस अ योममतिगे सहेउद वे सेनु प तो सयुनगिडि गहेगौनक दोगे वय गहे पाहगिया अकादेमि (नि नेसपेयन उ मातिहथि) नि गहे एसन पप योनस थहे गौनदस सहेउद वे केपन नि वेपानये गथिउ गहे नेसुगनसोड गहे निटुनिय ने मादे पुवथिय गद योनयेयनवि सतेपस ने गकेन

३३

थहए छएउएगढअथश्रीम गएधसमप

वदिह ३सन मातिहथि डोनगगिहगथ ३गतेनगानिगिउ -पुोनगउ हासे - पुवथिसिहेद मोने गहन गहे हुनदेद सिसेस तो दाते मोनौहथि, गौथिउे गुमेनाते गहे पनोवथेमस डयेद गद गहे सोउगानिस उुगद वयु स थहे ह्योनयेय वेगान नि गहे योन २००० ग याली घौयतिगिसि- गहे डनिसनगौनदसोन गहे गितेनगेन नि मातिहथि गौनगितेन वय मेगेन गहे याली घौयतिगिसि सतिस (गौ याली हास दसियोगगिद घौयतिगिसि) गौनदस गहे गदोड २०००हेन ३ सुडडेदे । मापोन ।ययदिगनौहयिह केपन मे योगडगिद तो युनयहेस डोनगे गद । हउड योनस गुन गहन सहपेद मय देसगनिय ३ योउद योगयेनगनाते गेन मय मातिहथि गौनगिगस गद मय नेसोनयहेन थनिहना मागुसयनपिनस अगेन पनह हुथय २००४, गहे डनिसन वथेग नि मातिहथि यामे (गापेनदनागहकुनवथेगसपोनयोन) ।स "गहउसानकि घायहह", गैहयिह गौस नेयहनसितेगेद ।स वदिहो पुोनगउ डोनम १सन हागानय २००८ डोनम ३सन हागानय २००८ ति यामे तो वे पुवथिसिहेद ।स । डोनगगिहगथ पुोनगउ थहे डनिसन नेयहनसितेगेद सिसे वनुगहन गहे सतोनयोड गहे थिउ गद योनगानिसोड । डोनगोततेन मातिहथि पोन डते दामण छहेदहनय (१८७८-१८५२)

थथिउ गहे गिहगह सिसेोड वदिह गहे योउमनसोन मुसयि, मतिहथि श्वानिगिग, छहथिदेन योउमन, थोन सामसकनति गहनोगह मातिहथि गोन सतनेगगहगेद

मोरोवेन, तहे पनोपेयतसो न दगितासितीनोड मातिहृषि छवाससयिस । नद
श्वाना मातुसयनपित-षोडस गोन सतामतेद थहे सोनयहवठे दयितागामय
(मातिहृषि-एगठसिह-मातिहृषि) गौस देसगिनेद । नद सतनेगगतहेनेद ढनोम तहे
गिहह सिसे, । एतेसतु नपुवठसिहेद मातिहृषि श्वपय ोड मायहकिता "सो
एगामय मा श्वानावसिह" वेगान तिसो-पुवठयितागिन नि वदिह मायहकिता, तहे
गनोतेसत दनामातसिनोड मातिहृषि डितानुतेगौस सठिनत डेन तहे एसन रप
येनस, । स डन । स तहे दनामागौस योनयेननेद

थेयहनोठोगय हास गौ । सपेयतस, वाद (तिस यहनयेसोड मसिसे) । नद गौद
(तिसो उडेयतसिसे) श सिस । गनोन ठेवेठेठेन; ति यहाठेठेठेस सतातुस टु
डेनयेस श सिस । पपठयियावठे नि । एठ मोसोड कनौठेदगे षो, सयहोठ-गोनग
यहठिदनेन तोदाय हवे । यठेनेन गदेनसतानदनिगोड तहे नविनसे । नद । तोमस
तहन तहे अन्यावहाताोन पति रससाय मोतो न हद अडेन मासस-सयाठे सोड
पनिगतिगोदुयातीन । नद एतानुते सपानदेद तिसौनिगस, वुनोठय । डतेन तहे
"शनतेननेन । नदे ठेयतनोनयि तानसडेनमातीनोड तोठसोड कनौठेदगे", ति
हास वेयोमे नविनसाठ, ति हास पुमपेद गौगनापहियाठ वुनदानेसि अठठ
सहायकठेसु नडुनठेद, तहे गौक ठनिकसोड तहे यहागौने दिगतिडेदि, । नद तहे
यहागौहयिह तनेदि तो यापतुने कनौठेदगे, गैहयिह तनेदि तो तहौनत तिस
सपानसागिन, सतामतेद वनोकनिग दौन अनद तहे गनोतेसत वेनेडयिामिय वेयामे
तहे मातिहृषि डितानुते श्रौहान सि वदिह, गोनहनिग, ति सि गेठय तिस
योममतिमेगत तो तहे मातिहृषि डिनगुगे, गैहयिह हेठपेद ति सपानद तिस वासे,
। नद वदिह वेयामे तहे मोनस तहानौने । वठे तो वनिद तोगेतहेन तहे मातिहृषि-
सपोकनिग मोस नि वोनह पातसोड तहे वुनदानय (शनदा & सोपाठ) वदिह
गावे मातिहृषि वातयहोड योममतिनेदौनतिनस । नद । वातयहोड योममतिनेद
नेदेनस श यहाठेठेठेद तहे सतातुस टु । नद यासतोसिन डेनयेस श
यहाठेठेठेद योनडुसेदौनतिनस, गैहौने सनिग मातिहृषिसि । तोठ तो नदि तहे
एददेनोड हनिदा थहे एयक ोड यनतियिसिम, तहे एयक ोड तेनह नि

યતિયિસિમૌસ તહે ખોસોન તહાત સોમેૌતિતસ ।નદ દનામાતસિતસૌત્રે સનિગ
 હનિદ-મિસિ માતિહિથિ ડોન યહોપ પોપુઠાતિય, તહેયૌત્રે સનિગ દેનોગાતોનય
 ઠનગુગો ડોન તહે સો-યાૉૉદ ઠૌન યાસતેસ ૦૬ તહેનિ સોયૌતિય (સોમેૌત્રે
 ડનિદનિગ પથો નિ માતપ્રાસહાસના-ૌહેનોવ્રેન તહે મોદેન-દાય પામસકતિ
 ધનામા સિ ગોતુ સનિગ શ્ચાકતિતેતય!!), ।નદ ડોન તહેનિ મમિયિતય, તહેસે
 યાસતેસ સનાતોદ કેપનિગ દસિતાનયૌતિહ તહસિ કનિદ ૦૬ ઇતિનાતુને અનદ
 ૦નયે તહે યોનડુસૌનો૬ તહે યોનડુસેદ તહનિનેદ, ।ગૌ તયપો૬ ૦૧કેનેદ ઇતિનાતુને,
 સનાગો, ।નદ દનામા (નોપ-યૉસસ) વેયામે તહે ગોનમ

વ્રદિહા સિ મેગુઠાનૉય ગોતનિગ સોમે શયેૉૉનત વનાનિસ પનિયે તિસ નિયેપતૌન,
 વ્રદિહા, તહે દિા ડાયતોનય, સિ દેપેનદેનતુ પોન તહેમ અસ ડાન ।સ તહેનિ વ્રેનસાતિ
 ટુઠતિસિ ।તે યોનયેનનેદ, પોપથે ।સસોયાતિદૌતિહ વ્રદિહા ।તે દડિડેનેનત અૉૉ ।તે
 કનૌન ડોન તહેનિ પેનસેવેનાનયે ।નદ નેસૉનિયે અૉૉ ।તે કનૌન ડોન તહેનિ
 ।નદુસૌનક અૉૉ ।તે કનૌન ડોન તહેનિ ટુઠતિયૌનક અૉૉ ।તે કનૌન ડોન
 તહેનિ દસિયાપિઠનિ અનદ ।ૉૉ ।તે યોમમતિતેદ; યોમમતિતેદ તો માતિહિથિ ।નદ તહે
 માતિહિથિ થહે યુમુઠાતિ ડોનયે નેસુૉતેદ નિ ।નાતુનાૉ નેવ્રોૉનાનિ અ નેવ્રોૉનાનિ નિ
 તહે ડૉૉૉૉૉ માતિહિથિ ડિતિનાતુને, ।ન, મુસયિ, યનાડા, સનાગો, ।નદ દનામા થહે
 ૦નૉય નિતેનનાતૌનાૉ -પુોનનાૉ નિ માતિહિથિ સનાતોદ તહસિ ટુઠતિય મોવ્રેનેનત
 નિ માતિહિથિ મોતહનિગ ઇસસ તહાન ૦ૌનૉદ સનાનદાનદ ૦ૌસ ।યયેપનાવથે થહે
 ૦ૌનદસ ૦ૌ નિસતતિતેદ તો નેયોગનિ ઠહે પાનાૉૉૉ ડૉૉૉ ૦૬ માતિહિથિ
 ડિતિનાતુને, ।ન, મુસયિ, યનાડા, સનાગો, ।નદ દનામા શ્રોનૉય તહે વેસન ૦ૌસ
 સેૉયતેદ, તહેનેૌસ ગો સયોપે ડોન તહે સેયોનદ વેસન થહે પાનતિયિપિતૌનિ ૦૬
 નેદેનસ નિ તહે દેયસિાનિ-માકનિગ પનોયેસસેસૌસે નયુનાગેદ થહે નેદેનસ ગોત
 ડુૉૉ ।યયેસસ તો તહે દગિતિાૉસિદ માતિહિથિ ડિતિનાતુને મોને તહાન ડવ્રિ હુનદનેદ
 માતિહિથિ વૌકસ ।નદ ।નુનદ ૧૧૦૦૦ પાૉમ-ૉૉૉ મતિહિથિકસહાન માનુસયનપિતસ
 ૦ૌ દગિતિાૉસિદ ।નદ માદે ।વ્રાઠિવથેનૉનિ નદેન તહે "વ્રદિહા અનયહિ" સેયતૌનિ
 ૦૬ ૦ૌવ્રદિહાયોનિ (।નદ તહે ગુમવેન સિ નિયનોસનિગો વ્રેનય દાય) થહે ।દી-વ્રદિ-

पानिगिगस-पहेतोगनापहसौने ।नयहविद, नद ।७७ तहेसे ।नयहविद "।न। नद
उडिसनयथे" ।७ तहे पौपथे ।७ मतिहवि ।ने तहेन पथयेद ।न७नि थहे व्रद्विहा
अनयहवि सि । गट्टि गडिन तो तहे ।७७

षो, गैहान सि तहे द्दिवेगय ।७ पौपथे ।ससोयातिद ।तिह व्रद्विहा? इस ति यो७७यनवि
तहनिगनिग? सो, ।७ युनसे गोन इन व्रद्विहा ।७७ ।ने ।७७यमे हेने ।७७ ।ने ।७७यमे तो
दसियुसस तहेने ।नेसपेयनवि द्दिवेगय हवनिग सादि तहसि, ति नेदसे मपहाससि
तहान तहेने ।ने सोमे वासयि हुमान पनियपि७स ।हेने गो योमपनोमसि सि
पोससवि७ थहे यासोसितस, तहेसे हवनिग गेनेतयि सुपे ।नितिय योमप७स
।हयिह सि ।नोतहेन नामे डेन ।न निडे ।नितिय योमप७स), तहे पनायनति ।नि ।स
।७ प७ग ।निसिम, तहेसे ।हे ।ने गाव७ तो ताके पानन नि । हे७तह्य दसियुससाणि
।नद पेनसोनस ।हे ।ने गोन ।व७ तो ।तिहसतानद तहे यनतियिसिम ।७ तहेने
येनानि, व्रद्विहा सि गोन । प७तडेनम डेन तहेम थहे द्दिवेगय ।७ पौपथे
।ससोयातिद ।तिह व्रद्विहा माय हवे दडिडेनेनन तनिगेस, गोन ।७७ नेद तो तो तहे
७नि ताकेन वय ।नय मेमवेन ।७ तहे दति ।न ।७ वोनद व्रद्विहा वे७वेस नि तहे
निदविद्वि७तिय ।७ दिस ।नद तहे दति ।न ।७ वोनद नेवेन मिपोसेस तिस द्दिवेगय
पोन तिस मेमवेनस अत तहे सामे तमि, ति सि वेनिगे मपहासडिद तहाने ।यह
मेमवेन ।७ तहे व्रद्विहा दति ।न ।७ वोनद हस । सतनोनग द्दिवेगयि७ ७ेननिग, तहे
द्दिवेगय ।७ हुमानसिम सि पनायनसिद वय ।७७

व्रद्विहा-मातिहवि ।डि ।न ।तुने मोवेनेनन हस तिस नोनस नि तहे येन २००० ।हेन ३
सतानतेद माकनिग मातिहवि श्रौवसतिसोनै ।हो धैयतिसि अडतेनै ।हो छ७सेद
धैयतिसि तहेसे सतिस ।ने ।नोमानयि७७य दे७तेद हौवेन, तहे ।न७य डेनम ।७
व्रद्विहा "नहा७सानि घायहह" ।स सतानतेद ।न ५ हु७य २००४, ।नद ति सि तहे
।न७सिन पनेसेनये ।७ मातिहवि ।न तहे नितेनगेन व्रद्विहा ।नद तिस व्रविनागन
मेमवेनस ददि तहेनि ।नमोसत नि ।नानस७तनिग ७यसो ।डौनदसोन श्रौकिपिदि।
।नद तहेय सुययेसस ।७७७य ।पपोसेद तहे नोमेनय७तुने "नहिन ।डिनगुगोस"
(घेनानद म ।ययेपतेद तहे नो७े ।७ उमेसह मानदा७, तहे यो-दति ।न ।७ व्रद्विहा, गो

तो घेनाए म'स वधोग एए यथयिक तहे यासपित अनपिन पहेतो उओम व्रद्विह
 मयहवि (श्रुतेति थहाकुन) पठायेए ।। हसि वधोग, युो गैविठ गेयह
 हतपुःव्रद्विहयोनि) इन घौगठे तनागसठोत्श्रौकिपिदिा ठेयाठसिातीनि दनवि, नि
 थनिहुना ।।एए प्पातिहिसयनपित नेसोनयह ।।एए तहे ठेयाठसिातीनोड ननाठिठे नि
 योनसोनानये गैतिह तहे मातिहठि डिगगुगो, व्रद्विह सहुठेठेएए तहे
 नेसपोगसविठितिय ।स । पाणिन नि तेयहनोठोगय व्रठि-।-व्रठि मातिहठि डिगगुगो
 शनौस । पाणिन नि मानय नेसपेयतस शन सनाएतेए उेन तहे उनिसत तमि ।
 मातिहठि श्रौवसतिस अगगनेगातो ।। हतपुःव्रद्विह-
 गगनेगातोवधोगसपोतयोम, तहे उनिसत वनाठिठे सति नि मातिहठि, तहे
 उनिसत मतिहठिकसहन सति नि मातिहठि भोगगोतहेनस (तोताठ ठसित)

व्रद्विह हासोनगागसिद सेवेनाठ दोडेन मातिहठि वौक उनिस तो दाते थहे १६तह
 व्रद्विह मातिहठि वौक उनिौस हेठए ।। पागाए ढाता थिप हानाय, श्वातगोन १०-
 ११तह येयेमवेन २०११ ।।एए तहे १७तह व्रद्विह मातिहठि वौक उनिौस हेठए ।।
 ध्रौाहातीन २२-२३ येयेमवेन गेशत योन ।। तहे व्रद्वियापाता श्वातवोनगागसिद वय
 मतिहठि पागसकरतिकि पामानवाय पामति थहे देताठिद ठसितोड ।।एए तहे वेनेस
 (दातौसि) व्रद्विह ।।सोनगागसिद । पानाठठेठ पाहतिया अकटेमि प्पाव्रिपाममेठान,
 वेसदिस गौनदनिग पानाठठेठ पाहतिया अकटेमि पनठिस, ।स योनयेयतवि
 मोसुनेस, ।स तहे गौनदस ।।एए प्पाव्रिपाममेठानसोड पाहतिया अकटेमि गौनदेद्
 नगागसिद नि णु गठितेनाठ मानगेनौहेने मेनति तौक । वेतनिग व्रद्विह हास, तहुस,
 उठठठिठेद तिस ठेवठिगातीन वय नितेनडेननिग नि तहे मुनकय ।।उनिस ।।उ
 गौवेनगमेननोनगागसिातीनस व्रद्विह याननोन नेमानि । सठिनत सपेयतातोन, वे
 ति पठागानिसिमोन योपयनगिहन व्रिाठिातीनस थो, तहे ।।तहेनस ठकि श्वातकाण
 श्वातासहन, ।।एए असहेक पाहु, गैहौने गगागेद नि ठडितनिगोतहेन ।।तयिठेस
 सतोनैसि पौमस गैने वाननेद ।।उतेन वेनठियनिग तहे सुोनयेस ।।एए तानगेत
 गैनतिनिगस

इतिनातुने नि त्नागसथातीनि सि । माजोत सिसे गीतिह व्रदिह डायक १०
 त्नागसथातीनि नि अमेयिया नेसुथेदे नि अमेयिागस अगगनिग नि टुअतिय
 इतिनातुने औ पनायतसि इतिनातुने नि त्नागसथातीनि नि वोतह दमियतीनि-
 डोम मातिहृषि नितो एगअसिह । नद डोमोतहेन अगगुगेस नितो मातिहृषि
 अस ड। अस त्नागसथातीनि डोमोतहेन अगगुगेस नितो मातिहृषि । ने
 योनयेनदे एगअसिह, सेपाथि, पागसकति । नद हनिदि डुनयतीनि । स वुडडेन
 अगगुगेस नि तहे पनोयेसस यमियत त्नागसथातीनि नितो मातिहृषि । ने
 इमितिद; । नद ति सि दोगे दमियतअय नोनय डोम एगअसिह, पागसकति,
 हनिदि, सेपाथि । नद सेगगाथि, । अह्लुगह तहेने । ने सोमे शयेपतीनि अस ड। अस
 तहे टुसतीनि १० त्नागसथातीनि डोम मातिहृषि नितो । तहेन अगगुगेस सि
 योनयेनदे, दमियतेद त्नागसथातीनि ने । गानि इमितिद; । नद ति सि । गानि दोगे
 दमियतअय नोनय नितो एगअसिह, हनिदि, पागसकति, सेगगाथि । नद सेपाथि,
 वाननिग सोमे शयेपतीनि व्रदिह योनयायेदे सोमे नोतावथे पेनसोनाथिसि १०
 यथासस इतिनातुने, तौक पेनमसिसीनि, । नद त्नागसथातेद तहत इतिनातुने नितो
 मातिहृषि मोसत १० तहे तमि एगअसिह । स सु सेद । स । वुडडेन अगगुगे । नद
 त्नागसथातीनि गौक डोम एगअसिह, हनिदि, प्पोगकति, थेरुगु, घुणानाति,
 श्रुदा, प्पाननादा, सेपाथि । नद थेरुगु नितो मातिहृषि । स योमपथेदे; । नद तहेसे
 गौकस । ने नेगुथानअय पुवअसिहेद नि व्रदिह मातिहृषि नोवेअस, पोमस, । नद
 सहेन सतोसि, ने तहे । तहेन हनद, । ने त्नागसथातेद डोम मातिहृषि नितो
 एगअसिह । नद । ने पुवअसिहेद नेगुथानअय नि व्रदिह

वश्यएहश्च वेयामे । मातिहृषि इतिनातुने मोवेमेन । सो, वश्यएहश्च । स डोम दाय
 । ने १० तहे मातिहृषि इतिनातुने मोवेमेन । मागये सतावअसिहेद मसियोनयेपतीनि स
 गोन यथेदे तहनोगह वश्यएहश्च थहे । अथ-कनौन डायतस, तहे नोन-सो-नेवव्रुसि
 पथेनो १० सोमे पोपथे तो कथिअ मातिहृषि तहनोगह तिस तौनि निसततितीनि स तहे
 पाहतिया अकडेम । नद तहे छरुड । स गोनतहेद थहे ढगिह । तो इनडेनमातीनि
 यामे नि हनदय । पति व्रिति । अपाथ । सकेद डेन निडेनमातीनि डोम पाहतिया

अकादेमी तहसुलुगह हसि ढथर ।पपथियातीनि दातेद र३०८२०११ (७९ गो ढथर-
 १२५) ।गद सुगहन निडोनमातीनिगे "अससगिगेमेगत ।ससगिगेद वय मातिहथि
 अदवसिोनय गोमद, पाहतिपा अकादेमी गदेन तहे योनेवेने सहपि ७७ पर्ना
 वदियागतह हहा 'वदिति'" थहे निडोनमातीनि नियुठेद । पनोपोसाठ नेयेवेद, ।
 पनोपोसाठ नेजेयतेद, ।गद । पनोपोसाठ केपत नि वेयानये" थहे सतातुतोमय
 मागदातोमय निडोनमातीनि सुपपथेदि वय तहे पाहतिपा अकादेमी गोमतेद ।
 वरियुसि यनियथे७७ मातिहथि-सपोकनिग सो-याठठेद ठतिनेतातेमस, हे७७-वेगत
 पोने माकनिग मातिहथि । ठगगुगे- "७७ तहे मातिहथि मनाहमनि, डोन तहे
 मातिहथि मनाहमनि ।गद वय तहे मातिहथि मनाहमनि" मोने तहगत ८०%७७ तहे
 ।ससगिगेमेगतसौगत तो तहे डनेदिदस, नेठातविस, ।गद ।यटुगितागयेसो७७ तहे
 १०-मेमवेन मातिहथि अदवसिोनय गोमद सो ।ससगिगेमेगत तो पर हागदसिह
 शुनासाद मागदाठ, पर ढाणदो मागदाठ, पर मेयहगत थहाकुन (तहे गयोतेसत
 पहेनत-सतोमय-गेवेठ ७७तित ७७ मातिहथि, तहे गयोतेसत ठवनिग पोत ७७
 मातिहथि ।गद तहे गयोतेसत ठवनिग मातिहथि दनामातसित; नेसपेयतवेठय),
 पर उमेसह श्वासौग, पर उमेसह मागदाठ, पर ढामदेव शुनासाद मागदाठ
 "हहानुदान", पर युगगागद मागदाठ, पर पागदेप पुमान पाडीत तो पर अगद
 पुमान हहा औहेने वेनय मेमवेन ७७ तहे मातिहथि ।दवसिोनय वोमद सि हगत नि
 गठेवेतीतिह तहे पाहतिपा अकादेमी तो कठिठ तहे मातिहथि ठगगुगे तहेनौहेने ठेसि
 तहे होपे? थहे देमागद डोन मतिहथि सताते वय तहेसे पोपठे ७७ से तहगत १०
 मातिहथि मनाहमनि डमठिसिठुठेद ठीत तहे मतिहथि सताते थहेनौहेने ठेसि तहे
 होपे? हेने ठेसि होपे पर मेयहगत थहाकुन हस ययोतेद । पानाठठेठ मातिहथि सतागे
 ।गद तहेतये, । सठापगे तहे शसितनिग सठापसतयिक हुमोनसितयि मातिहथि
 तहेतये पर उमेसह श्वासौग सि । दसियेवेनयो७७ तहे श्वानाठठेठ पाहतिपा अकादेमी
 श्वातय उसतविठोमगागसिद वय वदिए पर हागदसिह शुनासाद मागदाठ, पर
 ढाणदो मागदाठ, पर हहानुदान, पर पागदेप पुमान पाडीत ।गद पर उमेसह मागदाठ

हावे पुनपेद नहेने नेगय, गौणह, नद नमि नितोने मातिहवि डगगुगे थहसि
अगगुगेविठ वविपगोडस ले गविन वेधौ: -

धौगठे थनागसठाते:

हानपूगौगोयभानागसयनसोद्ययिष्यहोसंशुनोपेयन

नहेन श्रौकिपिदा नानासठाते:

हानपुनानागसठातेकिविनौकिषिपयािषथनागसठाते?नासक=नानागसठाते&गुप=योने-मोसगुसेद&अभिनि=२०००&अगगुगे=माि

हानपुनानागसठातेकिविनौकिषिपयोपेयन:थनागसठातेन

हानपुनानागसठातेकिविनौकिषिपयोपेयन:थनागसठातेन हानपुनानागसठातेनगौकिषिपयािषथनागसठातेन गौ अगगुगेसश्रौकिपिदा मातिहवि

हानपुनानागसठातेकिविनौकिषिपयािषथनागसठाते?नासक=नानागसठाते&गुप=योने-मोसगुसेद&अभिनि=२०००&अगगुगे=माि हानपुनियुवातेनौकिषिपयािषथनागसठातेनगौकिषिपयािषथनागसठातेन
हानपुनानागसठातेकिविनौकिषिपयािषथनागसठातेन

हानपुनानागसठातेनानागसठातेनयोमरुण्ण्वहिनौकिषिपयािषथनागसठातेनसि-यगुअधनैरतिनेन-गिहानम

[मोनदाय, माय ०८, २०११

थहे नहिनानि नश्रौकिपिदा सिनतितेन नि नहोपुना

थहसि सि नहे कनिदोड ननयिठे नहान हास मानय पौपठे'से येस गठाडेदोवेन शन
सि वुोन सानागदानदस नद सयोगिनडियि द्युमेनानस, नद ति सि वुोन
अगगुगेस मोसगोड मय नेदेनस हावे नेवेन होनद वुोन डोन नहे पौपठे नहान दो
सपोक नेगेड नहे अगगुगेस नहान ले योगसदिनेद नहिनानि, ति सि शननेमेठय
नेठेवागन, नद ति हास निपठयिानानिस डोन श्रौकिपिदा

थहसि सि निडोनमानानि पनोवदिद वय उमेसह मानदाठ नहाने शपठानिस नहे
"नहिनानिगुपुओड अगगुगेस" गौतिह नहे मातिहवि अगगुगे:

पेठठोगग (१८७६१८८३) नद होनठे (१८८०) नेगानदेद मातिहविासि। दाठियन
गेड एसतेनन हनिदा; मोमेस (१८७२नेपनानि १८६६: ८४-८५), नेगानदेद
मातिहविासि। दाठियनगेड नेगगाठ, धनेनिसोन हास दोने। गनेान सेनवयि तो नहे
मातिहवि अगगुगे, हौवेन, हे नेदे नहेन हे गावे। डअसे नोनीनाठ तेनमगेड
"नहिनानि" अगगुगे। डतेन नहानौसतेनन अगगुगिसनस सानानेद यातेगोनडिनग

मातिहृषि।स । द्वापियत ०७ "महिला" अगुगुगे; ।अहुगुह तहेने सि गोलहनिग
कगौग।स "महिला" अगुगुगे" ।नद वोतह मातिहृषि।नद महोपुपुना।ने सपोकेन
नि महिला ०७ इगदी।।सौ००।स नि मेपा०

उमेसह सि गौनकनिग।गे तहे वेयावसि।ता।नि ०७ मेदाश्रौकि। डेन तहे मातिहृषि
अगुगुगे।नद।स तहसि अगुगुगे सि युननेनतप्य नि तहे इयुवातो, तहे अगुगुगे
योमभानिगे दोस तिस हे दधिगिनये।नद तनयनिग। तो गदेनसतानद डि मातिहृषि
याग हवे। प०ये नि तहे महिला श्रौकिपिदा। थहे नि।डेन।मा।नि पनोवदिद वय
उमेसह माकेस ति टुति यथेन: "गो"

थहसि सतपि० वेवेसु सौतिह तहे मसिनोमेन तहान सि तहे महिला श्रौकिपिदा।
थहे अगुगुगे सेद डेन तहे वेयावसि।ता।नि।नद तहे।तनयि०स सि महोपुपुना।
महोपुपुना।हस तहे इषश्रो-द३८-३ योदे "वहे"

अने यु सतपि० डे००।निग।०० तहसि? श्रोक, तहेने सि।ने टुसतानि ३।म गोल
।सकनिग: हौ।वुत तहे प्पातिहृसियनपिन?

थहगकस, घेन।नदम।

एशयेनपत डनोम। मातिहृषि-गुनगा० पुव०सिहेद।स श्वथ० (डनोम वदिह २०११:
२२; वदिह: अ डेनतनगिहणप्य मातिहृषि-गुनगा० इससे ८० (अपनपि १५,
२०११), घाणेनदना थहकुन।[द] हतनपुः।।वदिहयोनि"घाणेनदना थहकुन।०७ म्मौ
वे०हृगिनायुसि०प्य मेतौतिह मे।नद योननेसपोनदेद।त वेगगतह।वुत मातिहृषि,
०७डेनेद व्रा०व०वे सपेयमिनस ०७ मातिहृषि।मागुसयनपिनस, पननिगेद वौकस,
।नदोतहेन नेयोनदस,।नद पनोवदिद डेदवायक नेगानदनिग।नेटुनिमेनतस डेन तहे
नेयोनदनिगो७ मातिहृषि।नि तहे उषष"-अनसहुमान श्वनदेय।।

थइहउथअ उमइषश्रोयए षे तहे डनि० उमइषश्रोयए मतिहृषिकसहान।
अपप०यि।ता।नि (माय ५, २०११) वय षह अनसहुमान श्वनदेय।त श्वगे २३०७ तहे
वदिह ८०तह सिसे (थनिहृता वेनसौनि) सि।तन।यहेद"ढगिने ११: एशयेनपत डनोम

। मातिहर्षि-जुनगाठ पुवठसिहेद ।स श्रुयठ (उमोम व्रदिहा २०११: २२" ।नद ।। श्रुगे
१२ व्रदिहा सि नियुष्टेद नि ढेडेनेनयेस व्रदिहा: श्र उमनगगिहाठय मातिहर्षि-
जुनगाठ ३ससे ८० (अपठि १५, २०११), घाणेनदना थहाकुन [द]
हनपुःव्रदिहायोनि ।नद नोठेउ व्रदिहा'से दतिन सि ।यकगौष्ठेदगेद ।न श्रुगे १२
"घाणेनदना थहाकुनोउ म्मौ वेष्ठगिनायुसिष्ठय मेनौतिह मे ।नद योनसपोनदेद
।। ठेनगाह ।योन मातिहर्षि, उडेनेद व्राणवठे सपेयमिनस उड मातिहर्षि
मागुसयनपितस, पनितेद वौकस, ।नद नोहेन नेयोनदस, ।नद पनोव्रदिह
उदवायक नेगानदनिग नेटुमिनेनस उम नहे नयोदनिग उड मातिहर्षि नि नहे
उष्ठप"]

थहे मातिहर्षि सपोकनिग ।ने सि सहनिकनिग ।न सि सहनिकनिग हे तु ।
योनसयुसि-सुवयोनसयुसि पोठयिय उड नहे घोवेनमेननस उड ३नदी ।नद
मेपाठ, ।नद नहे सतिगातिन वेयामे यनितियाठ हे तु नो नहे निव्रासीनोउ हनिदी ।नद
मेपाठ मेदी ।नद नहे वसिदे द्युयागाणिठ सयसतेम नि मातिहर्षि-सपोकनिग
।नेस, ।नद हे तु नो नहे ठानगे-सयाठे मगिनागाति, गैहयिह हास हापपेनेद नि नो
सनिगठे गेनेनागाति थहे टुसगातिनोउ हनिदी सौ नो ति नहन व्राणजकि, अगगकि
।नद गौ थहेनह, पुनजापुनानय ठानगागेस सहुष्ठेद गेन नहे नायति सुपपोनोउ
सुपपोनतेनसोउ हनिदी, उनिसन नि नहे नामेउ नेठगिनि ।नद सेयोनद नि नहे
नामेउ यासते थहनूगह नहसि नहेय ददि नोन सुपपोन व्राणजकि, अगगकि,
थहेनहीन पुनजापुना; वुन नहेय ननेदि नौकेन मातिहर्षि, गैहयिह नेसुठेद नि नहे
नौकेननिगोउ व्राणजकि, अगगकि, थहेनह ।नद पुनजापुना ढेन ।७७ नहसि, नहे
मातिहर्षि-सपोकनिग पौपठे, मोने सो नहे उडउयिाठिस (३ नौठिठे सपठानि ति
ठानेन), ।ने ।७सो नेसपोनसविठे, ।स नहेय ननेदि नो देठमिति मातिहर्षिगितिहनि नहे
नौ यासतेस ।नद उम दसितनयितस अठठोनेन पौपठे ।नद ।नेस, नहन नहेसे,
ने योनसदिनेद नोनहेन, सुनहेन, ।सतेन, ।नद ।सतेन देव्रातिगिसोउ सो-
याठेद पुने मातिहर्षि, गैहयिहौस उयितगिाठिसठय योनसदिनेद ।स वेनिग सपोकेन
वय नहेसे मातिहर्षि ननाहमनिस् प्यानगा प्यायसतहासोउ मादहुवानि, यानवहनगा,

पाहलसा । गद धुपुठ दसिगनयितसु ढोल तहे षसत ४५ योसत तहे । उडयिाथिस, य़ेस, २ या७७ तहेमो । उडयिाथिस, तहे । उडयिाथिसो । उ तहे मातिहथि थिपातमेगत । उ पाहतिप्रा अकादेमि, ददि गोल तयप्र तो । ययममोदाते तहे पौपठुतसदि तहसि उयिततिासिथय देमितिद दोमनि गुत तहे माजोल पनोवठेम ठेसि सोमौहेने ठसे थहे सठौ पोसिगनिगौस गविन नि मानय दसिगुसिस, वे ति तहे उठुणय तोप-हेवप्र द्युयातीनि सप्रसोम, गैहयिह गेगठेयतेद पनमिानय । गद मदिदठे सयलौ७ द्युयातीनि तहनुगह तहे मोतहेन उगुगुगे मातिहथि, । म वे ति तहनुगह तहे योनयेपतो । उ द्दिथियत, गैहयिह नितीाथिथय योनवेगेनिगठय देयठनेद उगुगुगेस ठके मातिहथि । स द्दिथियतस एठेमेगतायप्र द्युयातीनि तहनुगह मातिहथि । गौस । गोन-सतागतो । वेयुसे तहे मातिहथि वौकस पुवठसिहेद वय तहे गहिन पताते थेशतवौक शुवठसिहनिग छोनपोनातीनि उमितिद सेमेद तो वे नि अवाहातत, ति गौस गोल उति उेन यहठिदनेग दुनतहेन, तहे । तहलेस । गद सुवठेयतस सेठेयतेद उेन तहेसे वौकस हद । यासतेसिग वसि मातिहथि वेयामे । तौ७ उेन यासते-वासेद पोठतियस, । सोनये हनिद । हद वेन । तौ७ उेन नेठगिानि-वासेद पोठतियस पतठि७, तहेसो । उडयिाथिस, । उ तहे मातिहथि थिपातमेगत । उ पाहतिप्रा अकादेमि, । मे नेसदिनिग नि तहेनि । गौन वुठित गहेततो, वेने । उतो । गय तहनि कनिगो । वसिाणि अनोतहेन नेसोव उेन तहे पनेसेगत पठगिहत । उ मातिहथि सि तहे पोठयिय गुदेनताकेन वय तहे तास योठेयतो । स । उ मतिहथि (पेनमागेगत सेतठेमेगत मामनिदानसो । उ छोनगौ७७सि), गैहोम तहे सप्रयोपहनतस या७७ प्यनिगो । तहे गनेत कनिग (ढाणा माहनाणा) । म मतिहथिसह (प्यनिगो । उ मतिहथि) तहेसो । मे ने तास योठेयतो । स, तहे गिहत उेन गैहयिह । मे गविन तो तहे हगिहेसत वदिदेनस पेनमागेगतठय; । गद तहेने गौस गोल । ने सुयह मतिहथिसह (तास योठेयतो । स), वुत मानय गैतिहनि तहे वोनदेनस । उ मतिहथि थहेसे तास योठेयतो । स । मपठेयेद मोसतठय तहेसे तौ यासतेस उेनोम उेन दसिगनयितस नि तहेनि मेनयहनदसि वेगतुने, । गद । स तहे सेठेयतीनि गौस वासेद । ने सप्रयोपहनयय, सो तहे गौनक सु । उडेनेद पो, तहेय मिपोनतेद तहे षतहयिाथिस

वर्द्धिहा । गद ददि पुवर्धसिह ति, । गे । डोनतगिहणय वाससि, तहे डनिसा सिसे
तहात यामेग १सा हागुलय २००८ तनेदि तो गियुडे । १९९ तहे पनेवांसि पोसातस
डोन । १९९ योननेसोड तहसि पधनेतो । तह, तहे पोपठे तनेदि तो यहागगे तहे
देसतगियु । ड मतिहधि । गद मातिहधि । मौ प् ह असहसिह अगयहगिहा, प् ह
मुनगाण (मागोण पुमान प् यान), । ने पानतोडुन तोम; । गद तोगेतहेनौ । ने तहने
हुनदेद गेगुन गौ श्रौतिह तहने हुनदेद पुरुस सिसेस, ३०,००० पागेसोड
मातिहधि । धिनातुने । ने हुनदेद धय गौनदस योनपोन। योनगौग । गद ११०००
थनिहना । मानुसयनपिन । तानसयनपिगौ । मागितागिद । ५००००-गौनद मातिहधि-
एगधसिह व्रोयावुधाय दानावासे । मौ । ने ३५० सतनोग, गौतिह ३५० । तहेनस

वर्द्धिहा हास डयेद यहाधेगगेस । गद हास गौतिहसगौद तहेम श्रौ गेवेन सहनिक
डोन । गय टुसगान । गदोन पनोवधेम थहे टुसगानोड तहे सतातोड मतिहधि सि
गे सुयह टुसगानौहयिहोडगेन योमेस याधधेग श्रौ । ने नि डवुनोड तहे सतातेस
। ड मतिहधि गौतिहनि तहे सोवेनेगिन वोनदेसोड श्गदा । गद सेपाध श्रौ । ने नि
डवुनोड मतिहधि नुनौहयिह तयपोड मतिहधि, तहात तयपे तहातौ हाद दुरगिग
तहे आमनिदानि दान, । हेने मोनसोड सुसतेगानये । गद वेवेसोड शसितेगये
नेमागिद धमितिद डेन । डौ यासतेस? श्रौन तहात युधुने तहाते शसितेद गौतिहनि
"अनयाव्रानता-श्गदागि सागानि गौसपापेन" । गद । तहेन श्गदुसतनेसि दुरगिग
तहात दान श्र दौडेन डामधिसोड मतिहधि गाधधेपेद । १९९ तहेसे मोसतधय डोन
। सनिगधे यासते!! । मौ, । ने गेन नि सुपपोनतोड तहात मतिहधि, तहात मतिहधि
। हेने मातिहधि गौधेद वे सौधधौद, । स ति सि वेगिग सौधधौद वय तहे पाहतिया
अफादेम । गद तहे ध्ध्ध्, सौधधौद वय । गेन दौडेन डामधिसि श्रौ । ने गेन नि
डवुनोड तहात मतिहधि । हेने तहे पनोयेदनिगोड तहे धेगसिधानि । ससेमवधय
गौधेद वे हेधे नि । धगुगगेतहेन तहात मातिहधि थधेध तहे मसिगविनिगसोड
तहे पोपठे । ड मतिहधि । ने । ददनेससेद, । यागगेन सुपपोन । गय मतिहधि सताते
मोवेमेगन धो तहे पोपठे सतनविनिग हाद डेन मतिहधि सताते सहुधेद सतिगेन ।
पनोतेसत वेडेने तहे । दव्रसोनय वोनद मेमवेनसोड तहे पाहतिया अफादेम ध्ध्ध्

। गद सनिग पातनीति यि सोनगस नि उनोनतोड तहेनि हुसेस, । गद पनेससुनसि
 तहेम नोन तो मसिसे गोवेननमेनत डुनदस वयु नसयनुपुष्ठुसथय गौनदनिग
 डुनयनीनसोड अकडेमतिनसदि मतिहथि । गद नोन तो मसिसे तहे पौनोड
 । ससगिननिग तनानसथानीन । गदोतहेन नगिहस तो तहेमसेथवेस । गद तो तहेसे
 पौपथेहे । ने हेथ-वेनतु पोन देसतनोयनिगुोन थनगुगो थहे ढथर । पपथियानीन
 वयु पर व्रगिति उतपाथ हास तहौनतेद । न । ततेमपत तो सतनानगुथते मतिहथि,
 वुन डि तहे सुपपथेमेनतानय गौनक सि नोन दने तहे सनिसितेन देसगिन गौथद
 नेसुनडये । गानि श्री नेटुसत तहे मतिहथि । दवसिनय वोनद मेमवेनसोड
 पाहतिथ । अकडेम मिमेदतिथय नेतुनन तहेनि । ससगिनमेनतस तानेन नि तहेनि
 नामे । गद तहे नामेोड तहे मेमवेनसोड तहेनि डमथिय श्रोतहेनौसि, पनेससुने
 सहुथद वे मुनतेद तो डोनये तहेसे १०-मेमवेन मतिहथि अदवसिनय गोनद
 मेमवेनस तो व्रोष्ठनतानथिय नेसगिन डोनम तहेनि मेमवेनसहपि नि तहे थानगेन
 गितेनेसतोड मतिहथि थो, गैहन सिोन । गसौन व्रडि-।-व्रडि देमानदोड मतिहथि
 सताते: ति सि । यातेगोनयिथै स

थहे तेयहनोथेगय-येनतानयि वेनतुने याथेथद व्रदिहा वेयामे । सुययेसस थहे गानवि
 सपोकेनसोड मतिहथि नेसदि नि नहिन तोड र्गदति । गद थुनह-एसत मेपाथ
 थहे नेन योननेयतव्रितिय हद वेने शतनेमेथय पौन नि तहेसे मोस थहेन हौ तहे
 । नहोनस, गौ । गदोथद, सतानतेदु सनिग उनयिथेडे डोनोनतिनिग डोन व्रदिहा थहे
 मेपाथ थदिोड मतिहथि हद वेनु सनिग श्वनेति, प्यानपिन, हमाथोतय डेनतस,
 तहे प्योथकाना मतिहथि-सपोकनिग पोपुथानीन हद वेनु सनिग तहे मानानर्ह
 डेनतस । गद तहे नेसत हद वेनु सनिग तहे डेनतस वासेदोन तहेथद ढेमनिगतोन
 केयवोनद अथथ तहेसे तहेने तयपेसोड डेनतस । ने अषथथ डेनतस श्री
 नेसोनयहेद तहेसे डेनतस । गद पनोव्रदिद डेनत योनवेनतेनस तोन मेपाथ-वासेद
 । नहोनस श्री । थसो पनोव्रदिद पहेनेतयि । गद ढेमनिगतोन-वासेद उनयिथेडेनतिनस
 तो । थथ मतिहथि । नहोनस, गैहे । सकेद डोन तहेम श्री । सकेद तहे । नहोनस डि तहेय
 माय सेनद तहेनि यनोनीनस नि । नय डेनत, वुन । न तहे सामे तमि, गै नयोनगेद

शुश्रूषुःशुश्रूषुःशुश्रूषुः श्रुश्रुः मश्रुश्रुःश्रुश्रुः श्रुश्रुः मश्रुश्रुःश्रुश्रुः
 श्रुश्रुःश्रुश्रुःश्रुश्रुः श्रुश्रुः श्रुश्रुःश्रुश्रुःश्रुश्रुः श्रुश्रुः मश्रुश्रुःश्रुश्रुः
 श्रुश्रुःश्रुश्रुःश्रुश्रुः श्रुश्रुः श्रुश्रुःश्रुश्रुःश्रुश्रुः श्रुश्रुः मश्रुश्रुःश्रुश्रुः
 श्रुश्रुःश्रुश्रुःश्रुश्रुः श्रुश्रुः श्रुश्रुःश्रुश्रुःश्रुश्रुः श्रुश्रुः मश्रुश्रुःश्रुश्रुः

श्रीस गीत सुनपनसिद्ध, तद्गुण ३ मुसत ह्ये वेगौह ३ सौ । भोगोगनापहो
 धानगेसह उपादह्याया, गौसे योपयगिह सि वेनिग हेउद वय पाहिया अकादेमि,
 तद्गुणहेनोउ तहे भोगोगनापह सि उदायागातह ह्य ' असहेक' ३ तद्गुणह तहान
 उदायागातह ह्य ' असहेक', गौे हास वेग गविग महासहा पामभा १७सो, वय तहे
 सामे पाहिया अकादेमि, गौउद दो सोमे पुसतयि गुन तुतह १७द नेसोनयह सेम
 पुसति नि पाहिया अकादेमि भोगोगनापहस, १७ वेसत तहान ३ उगेद नि तहसि
 भोगोगनापह

३ सोनयहेद १७द सोनयहेद तद्गुणह यहापतेस, तहान गौ तद्गुणहेनोउिउ सही
 युनागे गुन तद्गुणहेन उके ढामागातह ह्य सेमस १७सहेदोउ तहे गौतस १७द
 उउसपनिगोउ धानगेसह उपादह्याया हेतौसि तो योगुसे तहे सिसे, पुन तहेने
 सि गो योगुसीनि गौ १७ वेसत सनिये २००८ गुन नि २०१६ पाहिया अकादेमि
 सेमस तो यानयुत तहे यासतेसित १७द उदायागातह ह्य भोयकनिगउय
 पतेगदस तो सोनयह हसि नामे, उनिगौे तय, गौेने गीतहनिग सि तहेने तो सोनयह
 उेन, येन हे युउद गीत मुसतेन तहे युनागे, तो तेउउ तहे तुतह, १७द गदसु प
 पुसत नेपोनिग तहे उायतस नि २०१६ तहान यनिसह्यहागदना महातनायहाया
 १७दय हास पुवसिहेदोय वायक नि १८५८

थहे हेनो कविनिगोउ धानगेसह उपादह्याया वय शुनोउ ढामागातह ह्य सि
 वेनिग ताकेन उेनौनद वय पाहिया अकादेमि, वेउहनि । भोसत ह्यपोयनितियाउ
 गौय

ढामागातह ह्य 'सोवसयुनागतसिम वसि-वसि श्वाना सि वेदिगत उेनोम ने
 शामपठे थहे गितेन-यासते मानागि नि श्वानासौउउ कनौन तो हसि (पुन हे
 यहेसे तो केप तहे यौसहन श्वाना सेयनेन-गैहयिह हास वेग नेउेसेद वयु स नि

२००८), १६ ति गौस १५पायेनत तहान तहे गजोन गाव्या-ग्याया पहिषिसोपहेन
घागोसह उपादह्याया मानोदि । "छहानमकानिगि" १६गौस वोन उवि योनस
।उतेन तहे दोगहोड हसि डाहने (सेोन श्वाणजि गौकस व्रो ३ & ३३ ।वाधिवे
।। हानपुःव्रिदिह्योनिपोतह्निम) पह यनिसह छहानदना महानतायहानयाौनतिस
नि तहे "हसितोनयोड साव्या-साया नि मतिहधि" (१८५८)

"थहे डामधिय गैहयिह गौस निडेनानि नि सोयाधि सगातस सि गौ श्वाणियाग नि
मतिहधि----- घागोसहा स डामधिय सि योमपधेतेय गिनोयेद १६ गौ ।ये गोन
शेपेयतेद तो कगौ व्रेन हसि डाहने स नामे----- अस तहेने सि गोनहेने नेडेनेय
तो घागोसा गौ याग ।ससमे तहान तहे डामधिय दौनिदधेद नितो निसगिनडियिगये
।।गि १६ वेयामे श्वाणियाग सोग ।उतेन हसि सोग स दोगह" [१८५८, छहानपतेन
३३३ पागोस ८६-८८), गैहयिह सि । तोताउ उअसेहोद हैनतिस डुनतहेन तहान ।७७
तहसि निडेनमातागि गौस गविन तो हनि वय श्चोड ढ हहा, १६ हे सेमेद
तहानकडु तो हनि

थहे डेधेधौनिगो श्येनपत डोनम श्रुन श्वाणजि श्वावागदह (पातस ३&३३) सि
वेनिग नेपनोदुयेद वेधौ डोन गेदय नेडेनेयः

महानाण हसहिदेव मथिधिक क्नासाट वंशक ज्योनिश्वरन डकुनक व्राम-
नाकाकने हसहिदेव गायक आका नाणा छवाह १२८४ ई मे जन्म आ १३०७ ई
मे नाणसहिसन घयिसुददीन गुगठकसँ १३२४-२५ ई मे हानकि वाद नेपाठ
पठापन मथिधिक पञ्जी-पुनवन्धक व्नाहमस, कायसथ आ कषानयि मय्य
आयकानिकि स्थापक, मैथधि व्नाहमसक हेतु गुमाकन ह, क्नास कायसथक छे
संकरदण, आ कषानयिक हेतु व्रिजियदण एह हेतु पुनथमनाया गयिकता मेवाह
हसहिदेवक पुनेनासासँ आ ई हसहिदेव गान्यदेवक वंशज छवाह, जे गान्यदेव
क्नासाट वंशक १००८ शाकेमे स्थापना केने ।हथि गन्दैद शुन्यं सशशिक वृषे
(१०१८ शाके) मथिधिक पम्डति ठोकनाशाके १२४८ तदनुसा १३२६ ई मे पञ्जी-

पुनर्वनयक वृत्तमात्र सुवृत्तपक पुनःपुनःक गन्निहाय कएउन्हा पुनः वृत्तमात्र
सुवृत्तपमे थोडे वृद्धय विधिअसो लोकनि मथिथिस महाभाज मायव सहिसँ १७६० ई मे
आदेश कएवाए पञ्जीकासँ शाय्या पुस्तकक पुनःपुनःक कएवओउन्हा ओकरा वाद
पाँजमि (कप्यनो काठ वृत्तमात्रि १६०० शाके मागे १६७८ ई वासुदेवमे मायव सहिक
वादमे १८०० ईक आसपास) श्रोत्रियि नामक एकटा गव वृत्तमात्र उपजातिकि
मथिथिमे उपजातिमे

षो, तहे श्रोत्रियिस ।स । सुव-यासो ।ओसे ।ओगद १८०० छए ।स पेनु ।तहेगतियि
पाणजि उथिस पह अगसुहमान श्रुतदेय [घाणेनदना थहकुन १०५ मी वेथहा
पुनःवदिए मे तैतिह दगितिउिद योपेसि १०५ तहे गेनोथोगयिथ नेयोमदस १०५ तहे
मातिहथि मनाहमनिस थहे पाणजिकिना- सौहेसे डामथिसि हवे मातिगातिह तहेसे
नेयोमदस डोन गेनोतानिस ।नेोडनेन नेथुयतानत तो ।थोतीतहेस तो पुनःसे तहेने
नेयोमदस श सिस । मातने १०५ 'निनेथेथुताथ पुनोपेनय' तो तहेम शौस डोनतुनाते
'गुगह तो नेयेवि । योमपथेने दगितिउिद सेतोड पाणजि नेयोमदस डोनम घाणेनदना
थहकुन १०५ मी वेथहा नि २००७ [ढेयासतानिग तहे मनाहमनि नि मेदोवाथ मतिहथिः
ओमगिनिस १०५ घासते इदेनतियि ।मोनग तहे मातिहथि मनाहमनिस १०५ मीतह
महिन वय अगसुहमान श्रुतदेय, अ दसिसेनतानागि सुवमतिनेद नि पाणजिथि
डुउथिमेनत १०५ तहे नेटुमिमेनतस डोन तहे देगने १०५ योयतो १०५ श्रुथिसोपहय
(हसितोनय) नि तहे उगविनसतिय १०५ मथिहगिग २०१४]

डोनेन तहेसे श्रुतजि मागुसयनपितस तैने पुथोदेद तो वदिए श्रुतहा
।तैवदिएथोनि ।गद गौगथे वौकस नि २००८]

थहे सो-याथेद महाभाजस १०५ यानवहनगा तैने पेनमानेनत सेततथेमेनत
डामनिदानसोड छोनगौथेथिस, ।गद तहेतैने सो मागय नि मतिहथिह इगदा, पुन
नि मीपाथ तहेतैने गेने इग तहे ।गनेसुने १०५ वौक (श्रुतजि श्रुतावागदह वीथ
३४३३), तै हवे ।तनायहेद योपेसि १०५ गेनोथोगय-वासेदु पुगनादातानि नेमदस
(पनोड १०५ पुगनादातानि डोन यासह) षो, वेडने १८०० छए, तहेने तैस गो

सोनगिया सुव-यासते नि मनगिसिह र्गदी। नद तहेने सि नो सुयह सुव-यासते
 गिहनि मातिहठि मनाहमनिस नि सोपाठ पातगोड मतिहठि वेन तोदायु मनोतगिया
 वेडेने तहत नेडेनेद तो डेठवौनिग सोमै दुयातानि सतगाम नि मनगिसिह र्गदी,
 नि सोपाठ ति सतठिठ हास तहत मोननिग।

ओढरघरसाअड सुआमदर ढएढएढएसाअएअ अढए सुडअअएअ गएडओओ:

यओओषहआम सुआमदर- थए गडअअएअगओओप

४८

१८८२	यन्मकामिसी	मासुडन	वमनयिम	छादन
नान्वयितामसा कामकगोश	छादनगोशक	गौंर	नान्वकनक मानक (अपाना)	गोश
	वठठना	मवार	महिस्वत	
			पीले	

२१० छादनसँ नान्व यनितामसा कामक गगदुगु गगोश

छादनसँ नान्व यनितामसा कामक

गगोशक वठठना यन्मकामिसी पति पनोकषे पन्य वनष वन्यतीते नान्व यनितामसा कामक
 गगोशोनपानि- यन्मकामिसी मेयाक सगानक ठागमि अठठि

छादन सँ नान्व यनितामसा कामक मठमठ गगोश

"नान्व यनितामसा कामक म म पा गगोशक वषियक ठेप्य पनायीन पनपीसँ उपठव्य॥

पति पनोकषे पंय वनष वन्यतीते गगोशोनपानि: शा पनायीन ठेप्यनीय: कुनापा

देवागद पनपी ३८-२ छादनसँ गगदुगु गुगु गगोश सुनाय वमनयिमसँ गगदतिय सुग
 सायकन पनपी

देवानन्द पन्नी ३३८-३ जगद्गुरु गंगेश सुग सुपन दौ गम्भोजसिमसँ ह्यादित्य दौ। पुन
सुनाय गोना जगद्विभ सँ जीवे पत्नी ए सुग सन्दर्भाह भिषेक्षत्रा अन्सुथावे सुपनगना
हसिन्मम दानति कियति जगद्विभ गाम

देवानन्द पन्नी ३०५ छादनसँ उपायकामक मम पा वन्द्यमान सुनाय यम्भुव्रथासँ
वसिष्ठनाथ सुग शिवनाथ पत्नी गंगेश मम वन्द्यमान सुपन हसिन्मम

घागोसह, तहे गुणहेनोड तहे थातवायहनितामार्ग, नोते ते तेसते टुविठेनत तो
१२,००० तेसतस म्मौ योमे तो तहे डायत मेगगीवेद नि तहे श्वगजि ति यथेनय
सगातेस तहत घागोसहोड थातवायहनितामार्गीस वोन उवि योनस । डतेन
तहे दोगहोड हसि डानहेन । गद हे मानोदि । तानगेन, सोह्य ददि ढामागतह ह्हा
हदि तहसि डोम यनिसह छहनदना महानायहानया? वानदहामाग, सोनोड
घागोसह, याथस घागोसह सुकावकिानिवाकागगेदुह गुण तहे योगसपनायय
गदेनौहयिह तहे पौमसोड । डामोस सयलेषान ठकि घागोसह ते गोन । वाधिवठे
तोदाय सि यथेन डोम तहे शामपठे गविन । वेवे वासुदेवोड मेगगाथौस ।
यथाससमातेोड श्वाकसहदहन मसिहनाोड मतिहधि, हे यामे तो सतुदय नि
मतिहधि, पाससेद तहे सहाथकोशमनिगानि । गद येवेवेद तहे ततिठे
ोड साववावहाम वासुदेवा मेमोनसिद तहे तातवायहनितामार्गीड घागोसह । गद
तहे ग्याप्राकृसुमानपाठिकामकिोड उदाप्राग श्वाकसहदहन । गदोतहेन मतिहधि
तोयहेनस ददि गोन । १९०१ नैतिनिग (योपयनिग) तातवायहनितामार्ग
ढागुहनातह पहनिमार्ग । दसियपिठेोड वासुदेवा, तौक तहे नगिहनोड
येनठियानिग । डतेन हे देडेतेद हसि गुनु श्वाकसहदहन मसिहना नि ।
सयनपितुनाथ देवाते (सहासगानतहा) थहे सावया सायाया सयहोथौस डुनदेद
नि सावदवपि वय वासुदेवा-ढागुहनातह श्वाकसहदहन मसिहना गौस ।
योगतेमपोनयडो वदियापाति (दसितनियत डोम तहे श्वादावाथीनतिनौहोस
ोड तहे पने-ह्योनिसिहौन पेनीदि) नौहोते नि पागसकति । गद अवाहानता अगद
तहे । नविठोड मतिहधि सतुदेनसोड मेगगाथ डोम मेगगाथ सतोपपेद । डतेन
ढागुहनातह पहनिमार्ग घागोसह उपादह्यायो गजोयेद 'पानाम गुनु' । स १९९

।स 'पानामगुन' ततिथेस, तहे हगिहेसत ततिथेसोड तहे तमि ।नद ।स पेन श्वाणजा
गेनथय व्रायासपाति भसिहना ३३ गौस तहे गेहेन पेनसोन गौहो गजोयेद तहे ततिथे
गेड 'पानामगुन' थहे श्वाणियतीगोड सावया-सावया पयहोथ डोनम मतिहथि, ।स
देसयनवेद ।वोवे, गौस । नेवेनगेगेड गानुने ।गानिसत तहे हेगोन कथिथनिगोड
घानगेसह उपादहयाया ।नद हसि डामथिय

[थानसथातीगोड तहे मातिहथि पहेनत पतोनय, 'पहावदासहासतानाम' (वासेद
गेन तहे तने श्वाणजा येयोदसोड घानगेसह उपादहयाया) गौस दोने वय तहे ।नहेन
घाणेनदना थहाकुन हमिसेथडः पुवथसिहेद ।स 'थहे पयोनियोड श्रौनदस' ३१दनि
डतिनातुने व्रोथ पद, म्मो २ (२८०) (मानयहअपनीथि २०१४), ५५ ७८-८३ (१६
पागेस) शुवथसिहेद मयः पाहतिया अकादेमी

३

प्यामथाननद हहा हासौनतितेन । वौकोन सागानपुन (मातिहथिसै ।नती) गौहे
हे यनेदतिस हमितीह गविनिग । गौ दनियतीग तो मातिहथि थतिनातुने
छहनदनादहन पहानमा घुथेतीनोते 'उसने काहा तहा', । मानवेथुस सहेनत
सतोनय नि हनिद, तहे वेसतगेगेड तिस तमि नुन हसि थतिनाय योनपोना सि
वेनय थतिथे नि टुनतिय, सो डि ।नयेने तनेदि तो गवि हमि यनेदति डेन
गविनिग दनियतीग तो हनिद सहेनत सतोनयौनतिनिगौथद माके हमिसेथड ।
थुगहनिग सतोनय अगदै ।नतिस मातिहथि थतिनाय योनपोना सि वेन
तहनिनेन तहन घुथेतीस मोगेवेन, ढाणकामाथ छहुदहनय याथथस हमिगेड तहे
मेदेवाथ गे (ढाणकामाथ मोगोगनापह, पुवहासह छहनदना ।दाव, श्वागे गो १४) हे
नोते छहतिना (२५ पौमस) हौनोते, नानहेन हुननेदिथय पुवथसिहेद हसि
'श्वाणहनि सागन घायहह' (४४ पौमस) डेन पाहतिया अकादेमी श्रौनद नि
मातिहथि, हयिह हे गोन नि १८६८ अडतेन तहन हे सतोनपेदौनतिनिग नि
मातिहथि, सो हौ याग हे निडुथेनये ।नयवोदय गौहण ।डतेन गेतननिग तहे गौनदोने
सतोनपसौनतिनिग नि तहन थनगुगे? थहसि सिगेने सामपथेगेड हसि

निसतावधितिय सो डान।स हसि दौधोगय सि योगयेनगेद हे वेयामे। बुददहसिन
 भोगकौहिन हे ठेडन डोन पना डानका।गद वेयामे। गनाहमनि।गानिहिन हे
 नेतुनगेद।डतेन। रगद सायगेद नहोद येनेभोगय पेनडोनमेद नि हसि वधितियगे
 थहसि सि।नोतहेने शामपठेड हसि निसतावधितिय सो डान।स हसि दौधोगय
 सि योगयेनगेद प्यामठानगद हहा दौस गोन कनौ मातिहधि धितानतुने हसि
 योमभेगनस सहोउद वे शपोसेद,।स हे नरोसि तो गवि। वाद गामे तो नहे गोनान
 ननादतिनिगेड मातिहधि धितानतुने थहेनेने मागिसनयोमौनतिनस, वुन नहेनेने
 नैतिनसोड पानाठेठ ननादतिनिगेड।सो (से वेथौ अगनेशुनेस १ & २) हे हस
 योगडुसेद नहे पागसकति।गद अवाहानन वदियापानि थहाककुनाहौतिह नहे
 श्वादावाधौनतिन पेने-ह्योननिसिहौन वदियापानि हे सहोउद नेद नहेनेतिनिगेड
 व्रिणाय पुमान थहाकुन,। ठेडनसिन हसितोनीन, नैहे हस गविन।मपठे धगिहान
 ने पेने-ह्योननिसिहौन वदियापानि।मय।ननयिठेगे वदियापानिनि शुनावागदह
 मविगदह पामाठोयहना व्रोउश्श (।वाधिवठे नि वदिया अयहवि) योवेनस।७७
 नहेसे, नहे ठेगेगेड वदिया सि नहे पहेतोगानापहोड शुने-ह्योननिसिहौन
 वदियापानि सकेनयहेद वय श्वाकाक ड।७ मानदाठ, नेयपिनितोड वदिया पाममान
 डोन डनि।ननस।

अगनेशुने १

यग्दा हा (१८३१-१८०७), मुठगाम यग्दनाथ हा, गुनाम- पामिडानुष, दनमंगला
 कवीश्वर, कवियिग्दना नामसं व्रिणुषति। गुनपिन्सगके मैथिलीक पुनसंगमे मुप्य
 सहायता केगहिन। कृति- मथिधि वाषा नामाग्राम, गीति-सुधा, महेशवामी
 संग्रह, यग्दना पदावधि, उक्पमीश्वर वधिस, अहधियायति आऽ वदियापानि
 नयति संस्कृत पुनुष-पनीकषाक गद्य-पद्यमय अगुवादा।

१

ग्यायक भवन कयहनी नाम।

सभ अग्याय गनै तेहि गाम॥
सत्य वयन वनिठे जन भाषा
सभ मन वनक हन अगिषा॥
कपट गनै कन कोटकि कोटा
ककन न कन म्यादा छोटा
गन कवा 'यग्न' कयहनी दूसा
सभ सहमान ककना के दूसा

२

नयिा दनि दुगानयिा हे मोठा!
गैया जगनक मैया हे मोठा
कटय कसैया हाथ
हाकमि मेठ ननिदैया हे मोठा
कनय उगायव माथ
वससा नहि मेठ सससा हे मोठा
अससा कए गेठ मेह
नयिा दनि दुगानयिा हे मोठा
जन नन जनिन संदेह
मुपयिा वऽ वऽ सुपयिा हे मोठा
अग्नवक दुपयिा ठेठ

के सह काग कगप्यिया हे गोठा

सुप्यिया वनिगा टोठ

३

असन्त असन्त नोक आव मामथिक माना

गाइ गाइकेँ पढेछ गतिप्र गतिप्र गाना

ऽकूक ठोक हकूक पाव सायु केँ उगाना

दैव जे ठाट ठेप के सकैछ टाना?

याही गहियेन, ठातिवाम, पकवान जाठिवी,

मगोवनिदक हेतु अमानपानसदन ग टेवी

इ अन्त अगथिष हमन कुत्तामय्य देवी

गकाना गाव सँ सान अहकि पदपंकज सेवी

अन्न महग, उगमग अछि गाना, ह्यन कोना गसिना

उन्त पश्यमि नून अगम्या पन्त असह तुषाना

यन्म-वनिधी सहसह कइछ, कुमन कथा वसिना

कथु कृपा जगजगती देवी महसिवाठी नाना

मथिषि की छरि की गय गेठा,

प्राप्त्रवृक्य मुना, जगक नृपति

ज्मान गकाना सौ गेठा

वायस्पति भिक्षिनादि जगद्गुरु

गन्धिगति वौद्य ह्मेर्षि
से शागदा स्वर्ग गगिगी
वढे कृपदिया केर्षि
वन्माश्रम वधि ककगु गुयि गहि
श्रुगि श्रुद्याकें डेर्षि
पूजा पाठ य्यान वकमुद्ग
सगटा वंयन प्पेर्षि
कह कवयिगद्ग कयहनी गगदिनि
वहुग भोग कग प्पेर्षि,
कथह कगय यन् यन गगसे
कथकि दगदिग येर्षि

४

मय केहन मेठ घोग हे श्रि!
गोयन वपिगि, यगम अवगगदिप्यकिग ह्यि कगव कगेग॥
साधु समाग गगसं पीडगि अगि हगषगि-यगि योग
अकुर्षिगे ठेकें यगसपिगपिगि कुर्षिगे समादग थोड॥
यगम सुगीगि पीगीगि ककगु गहि, प्पथकि यथश्च गोग
कग्द-मूठ-शुठ सेहे अव द्गुगठग अग्न गेठ देशक ओग॥
कश्चि सुग साधन वगि गहि पडश्च थाकठ मग, मगि गोग॥

कह कर्वा यग्द्-१ हमन दुप्य मेटा होयन कृपा शक्ति तोन॥

५

सुमनु सुमनु मग! शंकर समय गयंकर जाग॥

ककर हृदय गह कठुपति शासन कठि गृप पाग॥

केवठ शक्ति कृमाकर सेवयति गहि णग हाग॥

गकर्ग कठुपठगि णगह पनम पनसमन पिपाग॥

कगहु वषियमे न ठागह त्यागह अनुयति माग॥

सुप्यसौ अग्न वषिसवह 'यग्द्-१' यूऽ णयाग॥

शामामएशउदए २

१

शुनीठाठक अकाठी कर्वागि अकाठी कर्वागि

शुनीठाठक अकाठी कर्वागि १२८१, ७४ ६-१८७३) सगसाठक अकाठी कर्वागि (

[गानियनसग [(मैथिली कनेसुटोमैथी एम्ड व्रोकवठेनी)]

साठ एकासकि व्रामन सुनूयौदसि पऽठ अकाठ
मेठ वनसिग पिनिग ऐ साठककहाँ ठागि वनगौ हाठ
नेहिसि आदि थिक वनसिगक जेहाँ एठा तेहाँ गेठा
मनगिसिनि मग पुनठ मनोनथदै हीसा कछि गेठा
अनदडा आऽम्वन गानीगणन है यहु ओन
पुप्य नुप्य णाप्यठ यनी केनमेठ वनप्या केन ओन

पुनर्वसु थकि वड पुनीताओहे वडा कसनेस
 वशि वडिअक जे कछि उपटथवनि वसिअ असनेस
 मघा मेअ मंगलशि कठ्ठनजगमनि के ने जग
 पुनवा पून पछ ने नाप्यककना कव वप्याग
 उतना आर जाय घन वैसअसपती छै ने वून
 हथशि शृंग मुँड टै मूगठगकौ ठागठ घून
 यतिना यति मति ने नाप्यओहे मेअ डकू याती
 गक गंगौठगहि सभै गघनानदोम गुकौठगहि प्याती
 जोतषि पढ़सिअरि मूगोअ-सार्थि पढ़ि जे जग ऐगह-
 नेप्यागामति वीजसौ ओआकश्चिअरि कौ कय्यी वोअ
 श्नीनाम कृपागति ओहे ने जगथजिअहि कृपा सभ काज
 पागकि पुनश्न कवौ जौ पुछएिगहसिहे कहैग होश्गहि ठाज
 जेहपिन गदी गाअ ने मनेओहपिन नौदी सती
 वनिा जेअ जग कछि ने उपजअदगय मेअ छर्था यती
 ते गन नौदीक आगम वूहअजे छअ कृषि कसिअग
 दैव वेपय्छ पय्छ ने नाप्यजडि कटौठक याग
 कोदी मडुआ एको ने उपजअभै उपजअ कछि साम
 गम्गड़ी गह्दरि प्पेअहि सुप्याएअमेअ व्रियाता व्राम
 मन्गनुव्रगमे के कन यय्छकहाँ जार कँ मारिा
 सुप्यअ पनाअ हाअ ने ओतहुँसगानहुँ ठागठ आरिा
 य्क जीवग ओर गृपनि इग्हकँजे नोकअ गहि पानिा
 जीव्राजन्-नु व्रकिअ पुहमीमेताकँ हे ने आरिा
 नवीने प्पेठी औ यीग नाय एको ने उपजअ-
 घनहुनदनि मेअ अव वीग नानी-घन सोय कनै गन-
 यगकि ठेक सभ मगहि मगन छथिनाप्यथि वहुनो ठेनिा
 हसोथि नुपैया घन कै नाप्यथमिहगी मेअ अव सेन

केशो कुथी प्येन मासु वेसाहठगार्हा कौड़ा छठ अपना
 कतेक जगा हगिासग गनठगान वुहण कै सपना
 कतेक जगा मठिा जगेन वेसाहठगनियन वैसठ नकश्
 मेठ धनगनगिा दूश् सुसठिा जगगार्हा आश्रोन मकश्
 काठ पड़ठ नमिहगमि गानिाँ ३ वहिा गेठ हावा
 घनशुंका मकश् कैल ठावा गानिा-घन मगन कतै गन-
 माठकिा श्रोन महाजग सगकैँघन ठेनी अगन-घन
 ठेक वुहाश्रोन श्रोहो नकैँ छथमिँह गानिवक सग
 समै देप्या वगश्रिाँ सग सगकठठैँ ठेगौठक टट्टी
 सुगन दोकान सहनमे पन गेठसुगन मेठ सग यट्टी
 सुप्यठ गान वाग गौ ठटपटकतेक वाग अवन सहना
 गन गानिा सग साग तेआगठवकिनी मेठ अवन गहना
 मँगटीका प्युटी श्रौ नडकीगकमुगनी गै गक
 कटसगिा वधिाश्रिाँ श्रौ हमिहमिाँवापूवग्द श्रौ वाक
 यग्दगहान, हैकठ श्रौ सकिडीश्रोन घमौनकिा दागा
 सुगिा गवगुगह श्रौ पयपुँडीठसुनी मेठ गदिगा
 नापन दनवजान गै वयठेकनम मेठ गपिट्ट
 नमघैठ, अठैआ श्रौ पकिदागिागै नसठा श्रौ नटू
 वाटी, वट्टा श्रौ पगवट्टागोजग कतैक थानी
 मायव सीर्हा सहति सोवनगानै वयठे घन हाड़ी
 धन संपनगिा घन कछिु गै वयठे सगटा पड़िा गेठ वंचक
 तैश्रो गूप्य छुटठ गै ककनोरहन पेट मेठ पंचक
 दैव अंश अवनगठ कम्पनीजा पन नाम सहाए
 मथिठिापुन वूड़ग जव ठागयसे सुगिा पुँह्यठ धाए
 प्यनदि अगाज जहाजर्हा वोहठगनगिा कनगिा कनगिा वोनग
 सदन नठिगा श्रोआ पन गनगिाश्रोन श्रोठाशर्हा गोनग

हाजीपुनमे थाप्य हजानमकै थाप्यन ह्स् पटना
 वाजतिपुन सुठानपुन गोठागै जागन हौ केगना
 गाड़ी, वैठ, छकड़, ऊँट वहिनेउवहन ह्स् सग दाना
 मसिन कन्हैआ कँ पोप्यन मेपहठिक अड़ी डेकाना
 श्नी ठकूपमीश्वन सहि नृपामिहानाण मथिठिस
 अयठ नाण दड़मिगाश्नीपानि हनहि कठेश
 गाड़ी वैठ थाप्यन हजानगनाकँ पने घड़ेन
 पहठिक गोठा मधुवन, मौड़ाणशुना श्रौन अड़ेन
 वेनीपट्टी, श्रौ पयमहठाकुम्हौठ श्रौ कमतौठ
 हानिपुन, पड़िनुष वनगौकानाण केठेकाँ वनश्रौठ
 वानि पोप्यनि, वनिसायन वनगौपम्हौठ को नै जाग
 नवहद, सनसिओ श्रौ गटपुना, ना सौ दकूपामि उजाग
 हंदापुन, महजैठ, कन्हैठीमयेपुन ह्स् प्यास
 वेनीपुन, कमान, नैहेश्रौवनगौ श्रुठपनास
 हमना ह्स् जाजागति जागमेमहथा श्रौन वधौन
 दुहवी श्रौ महनिथपुनश्रौन जौगन नक ह्स् दौन
 वठेवपुन श्रौ ढंगा वनगौमनिजापुन ठधु हट
 सीवीपटी श्रौ कपसीआसदन गोठा सौनाड
 गुनवाकँ पनवनसी हाकमिकन ननिहुनमे आके
 नै तो मनते कन नन नानीवाठे वये सुप्पा के
 कन मुनदा गनदा मै मठितेश्रसंय्य जीव यठ जाग
 सन समधी कँ संगाने ठम्नगनै वयते जाठेगाना
 सगकँ सग उपछै नै जेठधुन पोप्यन श्रौ सड़क
 नहि जेठ व्नाह्मास सोती पम्हडतिकायथ पछमि गकुन श्रुनक
 केश्रौ श्रौनसश्रिन नाम ठप्याश्रौठकेश्रौ मोह्नीनि गँट
 यन्मकान्पमे ठुठथि नुपैश्रौतँ गेठ सग केन गँट

केशो जमाना टैकें वयथाहजानिका अमठा नेही
 ककनो मानी कैंत पडि तोडैन्हउतनैर्हा जग्मक डेही
 ककनहुँ गाना गान सुप्पाओवहुनो होअप्र यथाना
 मानुपति घन पनपिन नोवप्रवावू गेठाह जहठप्याना
 ककनहुँ घन मेठ प्यानातठासीमेठ मोहनानि घौँछ
 केशो अदाठामि डडिआर छथकिकनहुँ उपनैर्हा मौँछ
 एना सुर्गा हकमि नसिआओठौँ ठागठ जग डीका
 नाक नंगौँठर्हा सभै मोहनानिठागठ युनक टीका
 जोग, वकौँआ,ठौँककि वंशककनिआमंन सुकूठ
 गाछी, वाँस, वैठ औ महसिजिगह कैठ गकशुठ
 नार्हा नुपैआ सौ कना गजगठै कोनट सौ नौन
 नौँ कानन वहुनो घन ह्गाडामार गतीजा गीन
 आए ठाट वहाहुन औ ह्डडिंगा याम
 वावू औ ववुआन सहति मठिकीन्ह कुमैटी प्यान

एह सग संग वैर्ग कैजाप्र कुमैटी मेठ
 अजव काम सनकान केतनिहुन पुहुँयठ नेठ
 वाजतिपुनसँ सडक गकिठैआये दौडहि दौडी
 हहेया गंडक पुठ वग्हाएआए यौनही यौनी
 यन्ममयीन, वठवीन, कम्पनी जानन ह्द जगदीशन
 ठछमी सागन के पोप्यनमिनाह किन्ह रसटीसन
 वडा ठाट कठकानेवाठेशनीहुनगा होए संग
 आगना के छोटा ठाठ वहाहुनवैँठ सग एकनंग
 पुटे कमसिनन औन कठट्टनवोठर्हा वान नेशंट

एह पायो श्णवास पन वैडसंग जान एह ङंट
 प्यवर्ति गए अयवान मौमैथवि के एह हठ
 सुगहु श्चिगी अयवाम टैकॅमेटहु दुप्य के जाठ
 हुकुम दीग्ह दोउ ठाट कोसुगहु हमाने वैग
 मदनार्ति कर्तु नेआआनकोक्या वैड है यैग
 वडा ठाट दोउ वीन उडाएसाहेव औ जगैठ
 मेजान मजसिन्टन औन कठट्टनसंगजान कर्तुगैठ
 देस देससौ अग्न मंगाओठदीग्ह सगर्ति के दाम
 महामुंग, गहुम औ याउनवजडा औन वदाम
 डोषी, पटना औ गटसागेदीषी औ अजमेन
 आगना औन काग्हपुन ढाकाजहाँ अग्न के ठेन
 गए नमाना अग्न तनिहुनमिठदि गाड़ी औन वैठ
 गज, तुंग, गदह औ छकडसंग सपिही छैठ
 छत्ती औ पैगन भोगठ सगवाँकावीन नजपून
 सोभा वनर्ति गजान हश्जैसे हनुमन्त दून
 आगे सश्चन ओ मैनापठन वीन जमान
 वनछी औ तुआर्ति गहैकन गहै तीन कमान
 यर्द्ध तुंग पन कर्तै कवाशजमान होए संग
 सोभा वनर्ति न जान हश्देप्यर्ति नप्युगक ङंग
 कनन काम सग याममेट्ट अट सग ठूट
 ढर्हि मीड गाछी सहतिवान्धै सडक औ पूठ
 जठि पठने औ गटसागेपुनगन्गा महसौन
 नहाँ वसर्ही एक सज्जानगेर्हि धन जा ठक्खमी दौड
 श्नी द्वाकर्ति पुनसादतिधन्मधोन वुद्धयमान
 नहसौठदान कोनट के प्यासाजानर्हि सकठ जहान
 वावु श्शनी पुनसाद दियौटीसो मधुवनमे आए

हुकुम दीर्घ सुपानडेटकेंटोठे टोठे होए जाए
मग पँया मगगल मै एएिवहुनो एएि प्यैनाग
यग्य यग्य अंगोएग वहहुनसगकें पूटठ गान
गनवि, गनी, गुनवा, कतु पौ, पौव्नाह्मास देन असीस
शुनी नधुनाथ वढै वदसाहीगदी एप्य वनीस
शुनुन एठ कव्ति वनगन हँएह नौदी के एठ
गौनमटि गौनगठ वहहुनगनिहुनानाप्यहँवहए

२

नायाकृष्ण यौधनी (मथिथिक शाहिस) (वदिए पेटानमे उपव्यव)

"१७७० क अकाठ मथिथिक शाहिसमे अद्वितीय छठ आ मथिथिक जगसंप्युया घटकें एक दम्न कम्न गऽ गेठ छठ १८७३ ७४ मे पुनः एकटा ओहने अकाठ-मथिथिमे गेठ छठ जकन व्रिनास हमना शुनुनी एठ कव्ति अकाठि कव्तिगसँ गेटश्यै, अकाठि कव्तिग अप्नाकासति अछा अकाठकें दून कनवाक हेतु आ मपूनकें नोपी देवाक हेतु गार्हा काठ गेठगाड़ीक योणना यथाओठ गेठ जकना सम्बन्धमे शुनुनीएठ एप्यैत छथा-

'कम्पनी	अजान	जान	कठनको	वनाय	साग
पवन	को	एकपय	मैदागमे	यनायो	हो
छोडा	है	अडादा	वडा	वीय	याय
समेठोग	हटाजान	केगाजान	प्यडा		हो
नामकी	अपानकान	प्यवर्ग	देन	व्रान	व्रान
येन	गयो	टकिसदा	गेठ	की	उव्राई
कान	है	अगोन	शोन	पीछे	कान
जोन	की	यमाक	से	मशीग	की
कम्पूसग	पहनदा	कोथी	सव		अजानवदा
कोशठ	गन	कनठ	कान	यूआँसे	उडायो

वाणा एक वज्र भाग हथी असा
पकिण भाग जैसा जो यदनदाय वैसायन पायो है।
जंगाकें मगध यान उनी जायो शून पान गाड़ीकी
अणवकान कवतिन ग्रह वनाया है। "

- धाणेनदा थहाकुने दतिन, वदिह (वे पानागेड वदिह वैवदिहयोनि - सेनद युन
श्रीहानसअपप नो गो + र्दण्दपदन्दं०७२९ सो नहान ति यान वे।ददेद तो नहे वदिह
श्रीहानसअपप मनोदयासा उसिन।)

अपन मंगव्ये दतिनीविसनाउडवदिहवागमावियोम पन पडाउ

मैथिली आ मथिलिसँ संवंधति कछि मुप्यय सास्ट:- आन ठकिक वषियमे सूयना
दतिनीविसनाउडवदिहवागमावियोम कें ई मेठसँ पडवी

हानपःवैवदिहयोनि ("वदिह" पुनथम मैथिली पाकषकि ई पत्निका)

हानपःधाणेनदानहाकुनवठेगसपोतयोम२००४० उवहाउसानकि-गायह्कहनमउ (इंटरनेटपन मैथिली

भाषाक पुनायोगनम उपस्थति मैथिलीक पहिठि व्ठँगा- मैथिली भाषा व्ठँगाक
एग्नीगेटन, ५ जुलाइ २००४)

हानपःवदिहयोम२००४० उवहाउसानकि-गायह्कहनमउ (इंटरनेटपन मैथिली भाषाक पुनायोगनम उपस्थति
मैथिलीक पहिठि व्ठँगा- मैथिली भाषा व्ठँगाक एग्नीगेटन, ५ जुलाइ २००४)

भाउसकि गाछ जो सन २००० सँ ग्राहूसटीजपन

छठ हानपःवैवदिहयोम२००४० उवहाउसानकि-गायह्कहनमउ, हानपःवैवदिहयोम२००४० उवहाउसानकि-गायह्कहनमउ आदि ठकिकपन आ अयनो ५ जुलाइ

२००४ क पोस्ट हानपःधाणेनदानहाकुनवठेगसपोतयोम२००४० उवहाउसानकि-गायह्कहनमउ (कछि दनि

ठेठ हानपःवदिहयोम२००४० उवहाउसानकि-गायह्कहनमउ ठकिकपन, सनोत गौयवायक

मायहनिगेड हानपःवैवदिहयोम२००४० उवहाउसानकि-गायह्कहनमउ २५८ यापुने(स) उनोम २००४ तो

२०१६- हानपःवदिहयोम भाउसकि गाछ-पुनथम मैथिली व्ठँगा मैथिली व्ठँगाक

एग्नीगेटन) केन रूपमे इंटरनेटपन मैथिलीक पुनयोगनम उपस्थतिकि रूपमे

वर्द्धमान अर्था इ मैथिलीक पहिठि इन्टरनेट पत्रिका थकि जकर नाम वादमे १ जगवनी २००८ सँ "वर्द्धिह" पडथैइन्टरनेटपत्र मैथिलीक प्रथम उपस्थितिकि यान्ता वर्द्धिह- प्रथम मैथिली पाक्षिक इ पत्रिका यनि पहुँचै अर्थाजे हानपुःवर्द्धिहयोगि पत्र इ प्रकाशति होइ अर्था आव "भाषासकिकि गाछ" जाउवःत्त 'वर्द्धिह' इ-पत्रिकिक प्रवक्तृक संग मैथिली भाषाक जाउवःत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त गऽ रहै अर्था वर्द्धिह इ-पत्रिका १५षषम २२२८-५४७३३ वर्यएहअ पठवःमथिथि (थिगेन्ट्र प्रेमन्षा) २०५८ माघे संक्रान्ति-२००३ जगवनी मैथिलीक दोसऱ इन्टरनेट पत्रिका अर्थाजे ऐ ठिके पाठवःमथिथि पत्र छै मुदा आव इ उपव्य गै अर्था इ टिप्पसी मात्र शहिस सुद्धना ठै अर्था

हानपुःवर्द्धिह-गगनेगानोवठेगसपोत्रयोम (मैथिली भाषा वर्द्धाक एग्रीगेटर)

हानपुःवर्द्धिहयोगि (इन्टरनेटपत्र मैथिली भाषाक सगसँ पुनाग उपव्य उपस्थितिकिपत्रियि वर्द्धा- मैथिली भाषा वर्द्धाक एग्रीगेटर ५ जुलै २००४ गाउवःत्तकिकि पठवःमथिथि)

हानपुःसामाहवठेगसपोत्रयोम (प्रथम मंडव आ प्रथिका हक पहिठि मैथिली गूगल पोन्ट, ८ अगस्त २००४ सँ)

हानपुःप्रकाशनागानोवठेगसपोत्रयोम (प्रकाशनाग मैथिलीक ठेकपत्रियि वर्द्धा, श्रवनी २००५)

हानपुःवर्द्धिहपात्रियिठेगसपोत्रयोम (मैथिलीक ठेकपत्रियि वर्द्धा, अगस्त २००५)

हानपुःवर्द्धिहपात्रियिठेग (मैथिलीक ठेकपत्रियि वर्द्धा, अगस्त २००५)

हानपुःवठेगानोवठेगसपोत्रयोम (हैठे मथिथि- थिगेन्ट्र प्रेमन्षा, सम्पादक-प्रकाशक, रूपा हा, सम्पादन सहयोग, पठवः, मैथिली साहित्यिक, ३ मर २००६)

हानपुःपाठवःमथिथिठेगसपोत्रयोम (हैठे मथिथि- थिगेन्ट्र प्रेमन्षा, सम्पादक-प्रकाशक, रूपा हा, सम्पादन सहयोग, पठवः, मैथिली साहित्यिक, १७ मर २००६)

हानपुःवठेगानोवठेगसपोत्रयोम (मैथिली गूगल पोन्ट, सतिम्वन २००७)

हानपुःवठेगानोवठेगसपोत्रयोम (मैथिली गूगल पोन्ट, सतिम्वन २००७)

हानपुःसहामपादकौनदपत्रसस्योम (मैथिली गूगल पोन्ट, जगवनी-श्रवनी २००८)

हानपुःसामाहयोग (मैथिली गूगल पोन्ट, जगवनी-श्रवनी २००८)

हानपुःवठेगानोवठेगसपोत्रयोम

हानपुःप्रथमसहामपादकौनदपत्रसस्योम (थिगेन्ट्र प्रेमन्षा)

हानपुःवठेगानोवठेगसपोत्रयोम (मैथिलीक ठेकपत्रियि जाउवःत्त वर्द्धा)

हानपुःवठेगानोवठेगसपोत्रयोम (वर्द्धाग १८५क)

हमउ

हानपुःसागसकनिपिणुयदिभानिहोिगिहेशुनसप

हानपुःसागसकनिपिणुयदिभानिहोिगिहेशुनसप?उशयिण=भानिहोि

अउउ इमयइअ ढअयइओ यओओढयअढपहअम आकासवामी हू-ह-नसग

हानपुःपनासानवहानागिीवनि

हानपुःगौसोगानियेमु

हानपुःसूहो-नहानसहानोवनि

आकासवामी मैथिी पोउकासुट हानपुःपनासानवहानागिीवनिपोहयासपहप?उशिगे-नगग=भानिहोिः-उ-नोम=१८४-७-०८-१५&उ-नोमौप=२०२०-०८-२८&नो=२०५०-१२-३१&सो-नयह=घओ

आकासवामी पटना हानपुःपनासानवहानागिीवनिपोहयासपहप?उशिगे-नगग=भानिहोिः-उ-नोम=१८४-७-०८-१५&उ-नोमौप=२०२०-०८-२८&नो=२०५०-१२-३१&सो-नयह=घओ

आकासवामी पटना हानपुःपनासानवहानागिीवनिपोहयासपहप?उशिगे-नगग=भानिहोिः-उ-नोम=१८४-७-०८-१५&उ-नोमौप=२०२०-०८-२८&नो=२०५०-१२-३१&सो-नयह=घओ

आकासवामी हानपुःपनासानवहानागिीवनिपोहयासपहप?उशिगे-नगग=भानिहोिः-उ-नोम=१८४-७-०८-१५&उ-नोमौप=२०२०-०८-२८&नो=२०५०-१२-३१&सो-नयह=घओ

आकासवामी हानपुःपनासानवहानागिीवनिपोहयासपहप?उशिगे-नगग=भानिहोिः-उ-नोम=१८४-७-०८-१५&उ-नोमौप=२०२०-०८-२८&नो=२०५०-१२-३१&सो-नयह=घओ

आकासवामी गानपुःपनासानवहानागिीवनिपोहयासपहप?उशिगे-नगग=भानिहोिः-उ-नोम=१८४-७-०८-१५&उ-नोमौप=२०२०-०८-२८&नो=२०५०-१२-३१&सो-नयह=घओ

आकासवामी पूनासिँ हानपुःपनासानवहानागिीवनिपोहयासपहप?उशिगे-नगग=भानिहोिः-उ-नोम=१८४-७-०८-१५&उ-नोमौप=२०२०-०८-२८&नो=२०५०-१२-३१&सो-नयह=घओ

आकासवामी पटना हानपुःपनासानवहानागिीवनिपोहयासपहप?उशिगे-नगग=भानिहोिः-उ-नोम=१८४-७-०८-१५&उ-नोमौप=२०२०-०८-२८&नो=२०५०-१२-३१&सो-नयह=घओ

अउउ इमयइअ ढअयइओ एमव-उ-पह मारओष

अउउ इमयइअ ढअयइओ मारओष अढछहइवप

अउउ इमयइअ ढअयइओ यअउपय आमय छउउढपमय अढअइइअ

ढअइअ पअअअ यव मारओष यइपछउपयइओमय

पअमयअय यव

वइयपहअ -उ-अढमइमव ओउयउअ छहअमामउ

हानपुःसूहो-नहानसहानोवनिपोहयासपहप?उशिगे-नगग=भानिहोिः-उ-नोम=१८४-७-०८-१५&उ-नोमौप=२०२०-०८-२८&नो=२०५०-१२-३१&सो-नयह=घओ

हानपुःवनामहगौसवओगसपोनयोमु (मैथिी समायान)

हानपुःभानिहोिकहवपनयोमु (नेपाअक मैथिी इ पानिका)

हानपुःभानिहोिकहवपनयोमु

हानपुःभानिहोिकहवपनयोमु (मथिी आ मैथिीक समायानक साइ)

हानपुःभानिहोिकहवपनयोमु (मैथिी गूपन पो-न)

हानपुःभानिहोिकहवपनयोमु (मैथिी नप-नोय देगकि)

हानपुःभानिहोिकहवपनयोमु (मैथिी पुनानागानम पुनकास, मैथिी देगकि)

हान्प्रःअतिहिसामाद्ववठेगसपोतयोम् (मथिथि समाद, मैथथि दैगकि)

हान्प्रःगणकपुनगौसवठेगसपोतयोम् (मथिथि आ मैथथिक समायगक सास्ट)

हान्प्रःपौमतिहिविठेकयोम् (मैथथि ग्भूण पोन्टथ)

हान्प्रःअतिहमिदिवठेगसपोतयोम् (मैथथि ग्भूण पोन्टथ)

हान्प्रःपौमतिहमिदियेयोम् (मैथथि ग्भूण पोन्टथ)

हान्प्रःअतिहिविठेदहनोहनवठेगसपोतयोम् (मैथथि ग्भूण पोन्टथ)

हान्प्रःसमिगयठयोम् (मैथथि ग्भूण पोन्टथ)

हान्प्रःअतिहिविठिगिदवाद्येयोम् (मैथथि ग्भूण पोन्टथ)

हान्प्रःअतिगिगिगिहवठेगसपोतयोम् (कोन्गिगिथ हा व्ळेग)

हान्प्रःअतन्त्रोवमतिहिविठेगसपोतयोम् (गगदिस यग्दन् गकुन् "अगि" क व्ठेग)

हान्प्रःवन्किहसहवठेगसपोतयोम् (व्पेस यग्दन् गग)

हान्प्रःपौयवेगसामतिदिग् (येग समति, पटगक वेवसास्ट)

हान्प्रःसहवा-पुसगाक-वहनदन्वठेगसपोतयोम् (मैथथि पोथी कोन्ग)

हान्प्रःअसिहानवठेगसपोतयोम् (कोन्सँ सँह यन्गि)

हान्प्रःनगणकपुनवठेगसपोतयोम् (साहतिधुपुगी)

हान्प्रःवाताहमतिहिविठि

हान्प्रःअतिहिविपनावाहकोन्ग

हान्प्रःगोसहवौनवठेगसपोतयोम्

हान्प्रःअतिहिविठेगसयोम्

हान्प्रःगणदन्वठेगसपोतयोम्

हान्प्रःयहाथीवठेगसपोतयोम्

हान्प्रःअतिहिविपुनवठेगसपोतयोम्

हान्प्रःअतिहिविपुनानानवठेगसपोतयोम्

हान्प्रःअतिहिविठेगपानकिवठेगसपोतयोम्

हान्प्रःअतिहिविठेगवठेगसपोतयोम्

हान्प्रःअतिहिविठिसोवठेगसपोतयोम्

हान्प्रःअतिहिविठेगवठेगसपोतयोम्

हान्प्रःसामादिवठेगसपोतयोम्

हान्प्रःअतिहिविठेगसपोतयोम्

हान्प्रःयानपिदामतिहिविठेगसपोतयोम्

हानप्वहानसमिन्वववोगसपोतयोम्

हानप्रातिहविनिगगामागयह्ववोगसपोतयोम्

हानप्रीमतिहविवागविववोगसपोतयोम्

हानप्रीमतिहविसोगसपागानयोगि

हानप्रातिहविववोगयोम्

हानप्रीवहाक्यहाक्ययोम्

हानप्रीमिनिहवियोम्

हानप्रीहरेणमुकमनिहवियोग

हानप्रातिहविवागविववोगसपोतयोम्

हानप्रीयहमुनदगगामपायहाह्योम्

हानप्राकसुिनसागकाठपवेक्रीनदपेसस्योम्

हानप्रीकसुिनसागकाठपवेक्येग

हानप्रातिहविसोगसह्ववववोगसपोतयोम्

हानप्रीमालगपाठवद्योम्

हानप्रातिहविगोसगेतौमक्योम्

हानप्रातिहविमिनोदयोम्

हानप्रीमतिहविनि

हानप्रात्यसगसोराणि (छयथय)

हानप्रीसामयसाठयोम् (समय साठ)

हानप्रीमतिहविनिगानि (नोशन योयनी)

हानप्राहोनवाकसागोनग (भसिन दूत्राकषण)

हानप्रातिहविकसहनसहकसहावहसिगगिनेत् (मथिविकषण शक्ति अशियाग)

हानप्रातिहविकसहानि (मथिविकषण शक्ति अशियाग)

हानप्रासिसीगमतिहविकसहनवववोगसपोतयोम् (सद्विनिसु- भसिन मथिविकषण वपि)

हानप्रातिहविगानि (मथिविनी)

हानप्रीमतिहविमागयह्वि (मैथवि मंय)

हानप्राहववगयिनि

हानप्रीपनेमकुमानाठवक्योम्

हानप्रापागदवगौनदपेसस्योम्

हानप्रीमतिहविगोनदवाक्

हानप्रीमतिहविथहौक्योम्

हानपुर्वीमिदलवहागोम्यम् (आकाशवासी द-नरोगाक साष्ट)

हानपुःमिहविगगोम्यम् (मथिषिगलक साष्ट)

हानपुर्वीदिसिवायागोम्यम् (दिसिषि वयवा, हैद-नावाद)

हानपुर्वीवमयमग्नि (वदियपति मैथिषि युवा मंथ)

हानपुर्वीजामिहविगोम्यम् (मथिषिक सयथना, संस्कृति, वशिता, गीत-संगीत आ वहुत नास जागकागीक वेग)

हानपुःसोवहागसामिहविगोम्यम् (सौभाग्य मथिषि- पहिषि मैथिषि येग)

हानपुःकसह्याप-मिहविषिवेगसपोम्यम्

हानपुःकसह्यापानसयवोवैमिदपसस्योम्यम् (कृष्ण कुमान कश्यप आ सशविषिक साष्ट)

हानपुःमिहविपागिगगोम्यम् (मिहविषिवेगसपोम्यम्)

हानपुःदुवगुवावुमाहिहविषिवेगसपोम्यम्

हानपुःसेवुनाकगामिहविषिवेगसपोम्यम्

हानपुःमिहविषिवेगसपोम्यम्

हानपुःकठिकागगवयुयहेन्यम् (कठि कांन हा "वूय")

हानपुःसाकेनागवसुवेगसपोम्यम् (साकेनागवृणीक जावर्ण)

हानपुःगुगजागवसुवेगसपोम्यम् (गुगजाणीक जावर्ण)

हानपुःदानिहवेगसपोम्यम् (स्याम द-ह्यिक जावर्ण)

हानपुःदोसहागकानवागिवेगसपोम्यम् (दिवसंकर गवेलक जावर्ण)

हानपुर्वीदिसागनायागोम्यम् (गयकिनाक साष्ट)

हानपुर्वीमिदमिहवासस्योम्यम् (मानगीय हुतावास वेपाग)

हानपुर्वीपुनवोतानमिहविषिसामागोम्यम् (पुनवोतान मैथिषि समाग)

हानपुर्वीपुनवोतानमिहविषिवेगसपोम्यम् (मथिषि सांस्कृति समवय समतिकि त्रैमासिक पत्रिका)

हानपुःपागमिहविषिवेगसपोम्यम्

हानपुःमिहविषिवेगसपोम्यम्

हानपुःपागकागवसुवेगसपोम्यम्

हानपुःमिहविषिवेगसपोम्यम्

हानपुःमावाक-मिहविषिवेगसपोम्यम्

हानपुःमिहविषिवेगसपोम्यम्

हानपुःदसावुयहियागोदुवसि (दिसिगसिगयि पुनवेयोड इगदा, घनाभोपहेगे येयोमदगिगस)

हानपुःदसावुयहियागोदुवसि (दिसिगसिगयि पुनवेयोड इगदा, घनाभोपहेगे येयोमदगिगस, माहिषिषि)

हानपुःमुसियरयोगोदुवसि (दिसिगसिगयि पुनवेयोड इगदा, घनाभोपहेगे येयोमदगिगस, माहिषिषि)

हानपुःमिहविषिवेगसपोम्यम्

हानपौमतिहिलाहियेम् (मैथिली नेउयो)

हानपौथुनेयेमुसेरहाकाउम (जागकी एखण्म, मैथिली सभायान नेउयो)नेवे यहननेउ)

हानपौमहामतिहिलोम् (मैथिली नेउयो)

हानपौपागमतिहिलोम् (नेउयो अप्पन मथिली टंरु महन)

हानपौपागकपुनोहियेयेमम्

हानपुमाहापुनासकनोम्

हानपौमाहरेसुकोम् (एसोशिएशन अंशु नेपाठी मयेसोप ३१ यूके)

हानपौमतिहिलानयेम् (श्रीमती पुनवा हाक सस्ट)

हानपौमतिहिलवहियेम्

हानपौसुगानसोपायेम्

हानपौमतिहिसामापोम्

हानपौमतिहिसामायेम्

हानपौपागकपुनयेयेम्

हानपौपागकपुनयेयेम्

हानपुमेभाननेम्-मतिहिसु

हानपुसह्यामपनाकासहायेम्

हानपुनामागनहायेम्

हानपौमामायेम्

हानपुसुदहाकनयेयेमतिहिलि

हानपौमतिहिसुनेम्

हानपौगोपनेदियेतीनेगठियेम्

हानपौवहिनमिसुयेम्

हानपौवहिनैस्

हानपौपागहाडियेयेम्

हानपौकनमामनेवेगसपोनेयेम्

हानपौहा-मतिहिलि-कावतिवेवेगसपोनेयेम्

हानपौमतिहिलिसेवासामतिवेवेगसपोनेयेम्

हानपौपागकतिहियेयेगसपोनेयेम्

हानपुपपाहवेवेगसपोनेयेम्

हानपुयहतिहिलानये (दिवगाणी ठिपकि व्गक सुनेगेट-१)

हानपुमाथिनागवेवेगसपोनेयेम् (मैथिली गद्य संस्थाक व्ग)

हानपूँकानयादानेन (मैथिली वविलक सास्ट)

हानपूँकानिहिवनाहमनिववाहवागदहागेन (मैथिली वविलक सास्ट)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (मैथिली वविलक सास्ट)

हानपूँकानिहिविषयादियेन

हानपूँकानिहिविषयादियेन

हानपूँकानिहिविषयादियेन

हानपूँकानिहिविषयादियेन

हानपूँकानिहिविषयादियेन

हानपूँकानिहिविषयादियेन

हानपूँकानिहिविषयादियेन (नेशनल अकडेमी कोठकान)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (एडिटी पवर्क अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (कोमेनाला पवर्क अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (नाला नाम मोहन नाम अकडेमी अउंउशन)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (साहित्य अकादमीक सास्ट)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (नेशनल बुक ट्रास्टक सास्ट)

हानपूँकानिहिविषयादियेन

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँकानिहिविषयादियेन (अकडेमी अकडेमी अकडेमी अकडेमी)

हानपूँसामसुगयोनगिथागोने-ओनदसुगिदेसुहानम (थअधओदर डस्यसुअथउदर अओअदुअ)

हानपूँसगणपतिहोए (भानगीय ग्भागपीडक सास्ट)

हानपूँसपानसिहद्वि (भानगीय भाषा पनपिद, कोठकागाक सास्ट)

हानपूँसवहानाधिवहसहपानसिहद्वयोम (भानगीय भाषा पनपिद, कोठकागाक वागन्थ)

हानपूँसिहमनवोकेनपनीडियोम (मैग-बुकन पुनसुकाक सास्ट)

हानपूँसोममोनौअरुडुगदानीडियोम (कंभनवेएथ थाउन्डेसनक सास्ट)

हानपूँसोयनससौनद्वि (वोडाखेन-कूांसवन्डक सास्ट)

हानपूँसोपुठिडियोम (पुठिणन पुनसुकाक सास्ट)

हानपूँसोवेठपनीडियोम (गेवेठ पुनसुकाक सास्ट)

हानपूँसोकोककागिकडेनीनगाकडेनीनिसुहानम (गोवा कोकमी अकादमीक सास्ट)

हानपूँसोमुसेगिदियोम

हानपूँसोसाीनिसोनग

हानपूँसगिदगिनौयौनदपनेससयोम

हानपूँसामनवसगिदगिनगुगेसडेसाविठियोम

हानपूँसपुनठिनानुनेडेसाविठियोम

हानपूँससयपनीडियोम

हानपूँसोहगिद्वयोम१२०१७४०३सोनो१सि२०१७४०३५००१०००हानम

हानपूँसोहासागठिडेसागयोम

हानपूँसोवतगामाओनग

हानपूँसगिदोपितनयगितेनगानागिठियोम

हानपूँसोअननुयेयतिप्रयोमवयितोनगिदयहनयोडुडु

हानपूँसोानागीसयोमगपु

वरयपरअ इयथ मअरथरुडर डओदथमसवहथडे एहओउदामअड अदुअरुवप

हानपूँसोदिवहाननयहविवेगसपोतयोम

रदिव पुनथम मैथवि पाकूपकि ई पन्कि मैथवि पोथिक आन्कास्व

हानपूँसोदिवहान-पोनहविवेगसपोतयोम

रदिव पुनथम मैथवि पाकूपकि ई पन्कि आंउयो आन्कास्व

हानपूँसोदिवहान-दिविवेगसपोतयोम

रदिव पुनथम मैथवि पाकूपकि ई पन्कि वीडयो आन्कास्व

हानपूँसोदिवहान-वदिविवेगसपोतयोम

रदिव पुनथम मैथवि पाकूपकि ई पन्कि मथवि यतिनकवा, आयुगिक कवा आ यतिनकवा

हानपुःस्रद्विहा-पाणिनिगस-पलेतोऽवधेगसपोतयोम्

वद्विह ६-पत्निकाक सशय। पुनाग अंक वद्विहो पुनगाव'स। ७७७८ सिसेस

हानपुःस्रिगोऽयेयोमावद्विहयोमवद्विह

वद्विह ६-पत्निकाक पहि ५० अंक

हानपुःस्रिगोऽयेयोमावद्विहयोमवद्विह-नयहवि-पापन-र्

वद्विह ६-पत्निकाक ५०म से १४८ म अंक

हानपुःस्रिगोऽयेयोमावद्विहयोमवद्विह-नयहवि-पापन-र्

वद्विह ६-पत्निकाक १५०म आ आगांक अंक

हानपुःस्रिगोऽयेयोमावद्विहयोमवद्विह-नयहवि-पापन-र्

मैथथि पोथी डाउनलोड भातिहवि मोकस यौनवाह

हानपुःस्रिगोऽयेयोमावद्विहयोमवद्विह-पोतर्हि

मैथथि आंठयो संकठन भातिहवि श्रुटो यौनवाहस

हानपुःस्रिगोऽयेयोमावद्विहयोमवद्विह-नुटो

मैथथि वीठयो संकठन भातिहवि वद्विहस

हानपुःस्रिगोऽयेयोमावद्विहयोमवद्विह-वद्वि

मथिथि यत्निकष आसुगकि यत्निकष आ यत्न मतिहवि श्वानिगि मोटन अन गद श्वलेतोस

हानपुःस्रिगोऽयेयोमावद्विहयोमवद्विह-पाणिनिगस-पलेतोऽसु

सगन नातिधिप पनस

हानपुःस्रगामनादिपजानाधुवधेगसपोतयोम्

हानपुःस्रगामनादिपजानाधुनदपेससयोम्

वद्विह मैथथि कृषाणि :

हानपुःस्रद्विहट्टुवधेगसपोतयोम्

वद्विह मैथथि पाठवत्त एनगेटन :

हानपुःस्रद्विह-गगनेगानोमवधेगसपोतयोम्

वद्विह मैथथि साहित्य अंगेगीमे अगृहति

हानपुःस्रद्विहवनिनवधेगसपोतयोम्

वद्विहक पूनव-नूप "शठसक गच्छ" :

हानपुःस्रगणदनाककुनवधेगसपोतयोम्

वद्विह इंडकस :

हानपुःस्रद्विहवधेगसपोतयोम्

वद्विह आसठ :

हानपुःस्रद्विहवधेगसपोतयोम्

भातिहवि भिगिन डावगुगे- पहिध मैथथि संकेत धिपि वधेग

हानपुःस्रभातिहवि-सिगिन-धवगुगेवधेगसपोतयोम्

वद्विह वनाहमी- वनाहमी धिपिमे मैथथिक पहिध वधेग

हानपुःस्रभातिहवि-वनाहमिवधेगसपोतयोम्

वदिह प्पुनोष्ठी- प्पुनोष्ठी अपिनि मैथिलिक पहि व्ठ्ठांग

हानपस्मातिहवि-कहासहाविविगसपोतयोम्

वदिह कैथी अपिनि- मैथिलिक कैथी अपिनि पहि व्ठ्ठांग

हानपस्मातिहवि-कालिविविगसपोतयोम्

वदिह नेवाड़ी अपिनि- मैथिलिक नेवाड़ी अपिनि पहि व्ठ्ठांग

हानपस्मातिहवि-गौलविविगसपोतयोम्

वदिह आरपीए अपिनि- मैथिलिक आरपीएमे पहि व्ठ्ठांग

हानपस्मातिहवि-पिलविविगसपोतयोम्

वदिह- उगू गस्ताविक अपिनि मैथिलिक पहि व्ठ्ठांग

हानपस्मातिहवि-गुडविविगसपोतयोम्

वदिह- ताविवी अपिनि मैथिलिक पहि व्ठ्ठांग

हानपस्मातिहवि-तावितागविविगसपोतयोम्

वदिह: सदेह : पहि तनिहना (मथिलिक्खन) पाठव्त्त (व्ठ्ठांग)

हानपस्मातिहवि-सादेहविविगसपोतयोम्

वदिहव्ठ्ठ: मैथिलि व्ठ्ठमे: पहि वेन वदिह व्ठ्ठाना

हानपस्मातिहवि-वनाखिविविगसपोतयोम्

वदिह गुगठ-गुगुप

हानपस्मानुपसगोवियेयमवदिह

गणेश्वर १ अकुन ३७६स

हानपस्मानुपसगोवियेयमवदिह

नेवा मुटका

हानपस्मानुपसगोवियेयमवदिह

वदिह ददाी वदिह नेडायो:मैथिलि कथा-कवता। आदिक पहि पोडकासूट सास्ट

हानपस्मातिहवि-ददाीवदिहपुससयोम्

हानपस्मातिहवि-सोतगमपदादीयोम्

वदिह मैथिलि वाट्य उत्सव

हानपस्मातिहवि-दनामविविगसपोतयोम्

समदयि

हानपस्मातिहवि-दनामविविगसपोतयोम्

मैथिलि शिल्पस

हानपस्मातिहवि-दिलमसविविगसपोतयोम्

मैथिलि हस्तक

हानप्रातिहर्षि-हाकिववैगसपोतयोम्

भागक मैथवि
हानप्राभाक-मातिहर्षिववैगसपोतयोम्

वर्हिनी कथा

हानप्रावहिनिकातहाववैगसपोतयोम्

मैथवि कवति।

हानप्रातिहर्षि-कावतिववैगसपोतयोम्

मैथवि कथा
हानप्रातिहर्षि-कातहाववैगसपोतयोम्

मैथवि समावेयना
हानप्रातिहर्षि-सामावेयववैगसपोतयोम्
मातिहर्षि उतिनातुने नि एगवसिह

हानप्राहृववागनिनववैगसपोतयोम्

निहृणा- कैथी श्ंम्सु मैथवि व्नाह्मसक पम्प्री आधानि र्नाहिस

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ३० सतिम्पन २००८- वदिल्क सहयोग)

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (देवनागरी-निहृणा श्ंम्सु- वेस्ट-न आधानि)

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (देवनागरी यूनीकोड आधानि निहृणा श्ंम्सु-मथिषि)

"वक्रिपोडिया"मे मैथवि

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

श्रामि पाँयु सास्ट वक्रि मैथवि प्रनोपेकटक अष्ठा एहिविके सग पन पा कय प्रनोपेकटक आगाँ वदाअ

यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु, "वक्रिपोडिया"मे मैथवि आ आव मैथवि "गुणव ट्नागसठे"मे सेहो अगावि उक्थ्य "अनेगन अठेक्सा"

गुणव ट्नागसठे

गुणव ट्नागसठेक विकि

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

गुणव ट्नागसठेक आ पुस्त कनवाक प्पाना छै तर षेठ अगावि काण अदा नहए छी:

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

संशान धोप

यौगवैह नहे छनौहसुनये।पप उनोम।नदोदि पवय सनोने।नद सानान योगतनविगानि।

नो गो नौवोन नहे उठवौनिग।वनिक उन योगतनविगानि।

हानप्राहृववैगसपोतयोम् (यूनीकोड निहृणा श्ंम्सु षेठ आदेन ५ मई २०११- वदिल्क सहयोग)

छगौडसुनये वय घोउठे सि। गामडिदि पवागडेनम तहाते मपौनसु सेनस तो दनियतअय तनानि घोउठेस। मनाडियिठि गिनेठठिगनये सयसोमस। नद माके घोउठे पनोदुयानसौमके टाउठय
गौठ डने वेनयोमे, वेनयोहे।

पुनानमन:

वकिंपीडिया ०१ सुनवनी २००८ ठिके

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस?दि=वछ-यथपअददुठछ&ठपग=सुअ१&पग=सुअ१-व=वेगेपागो&ट&ड=डाउसे (मैथथि देवनागरी)

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस?दि=यथेउछउपद्वदोछ&ठपग=सुअ१&पग=सुअ१-व=वेगेपागो&ट&ड=डाउसे (मैथथि गनिहुरा)

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस?दि=उउमुदुदोअओदछ&ठपग=सुअ१&पग=सुअ१-व=वेगेपागो&ट&ड=डाउसे (मैथथि वनेठ)

गूगठ टनासठे २३ पुन २०१९ ठिके

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस?दि=उउमुदुदोअओदछ&ठपग=सुअ१&पग=सुअ१-व=वेगेपागो&ट&ड=डाउसे

गूगठ टनासठे २३ पुन २०१९ ठिके

"वहिनी" भाषाक वदठमे मैथथि ठेठ अठ। टनासठे २३ पुन वनेवाक अवेदन वदिल्क सदेसुगाम द्वाला देठ गेठ अछ। अपन योगदान गूगठ टनासठे २३ कू,

आ कसठ सनपादन वदठवा काठ काम मे (अंगेगोमे) "वहिनी" नाम्ना कोनो भाषा मै हेवाक युन्या कू। ऐ ठिकेपन अगुवाए कू: गूगठ एकाउटसँ ठांन रन केवाक वाए।

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस?दि=उउमुदुदोअओदछ&ठपग=सुअ१&पग=सुअ१-व=वेगेपागो&ट&ड=डाउसे

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस?दि=उउमुदुदोअओदछ&ठपग=सुअ१&पग=सुअ१-व=वेगेपागो&ट&ड=डाउसे (ठिकेक यवेसे)

मथिठिकेपन (गनिहुरा) सुासुट ठेठ अवेदन ३० सागिमवनी २००८ आ सेन संसोयति अवेदन ५ मई २०१९ कँ सुनी अंशुमन पासुडेम द्वाला देठ गेठ आ दूगू वेन ऐमे वदिल्क सहयोगक वनासन वेठ।
११ पुनकँ सुनी अंशुमन पासुडेम एका सुवोकुठिके सुयगा वदिल्क सेसवुक गुनुपपन देठवा। अव ई सुासुट वनी कऽ तैथान अछ। आ गीयक ठिकेपन। डाउनलोड ठेठ उपठव्य अछ।

गनिहुरा, वेवाडी आ कैथी सुासुट डाउनलोड घोउठेस सोतो देवनास पुनोठेयन घतिहुव

गनिहुरा वेवाडी सुासुट	कैथी सुासुट	कैथी टैठेसु	वेवाडी सुासुट	वेवाडी टैठेसु
-----------------------	-------------	-------------	---------------	---------------

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस (घोउठे ओपन देवनास दौनवाए)

थनिहुरा ओउठठि मेयवोमए दौनवाए

मेयवोम थनिहुरा वेदथि वेवागागानि मेयवोमए स योमवाए

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस (थनिहुरा मेयवोमए ओनठिग)

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस? गी=२०१५पद८०९८९८२०२०८९६७७५७४८४२६-२०४२०१३५७४९६७७५७४८४२६-मानिनिह,मेयवोमए गनिहुरा

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस? गी=२०४९६३५८६९८९८२०२०८९६७७५७४८४२६-२०४२०१३५७४९६७७५७४८४२६-मानिनिह,मेयवोमए माठान गनिहुरा

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस? गी=२०४९६३५८६९८९८२०२०८९६७७५७४८४२६-२०४२०१३५७४९६७७५७४८४२६-मानिनिह,मेयवोमए माठान गनिहुरा

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस? गी=२०४९६३५८६९८९८२०२०८९६७७५७४८४२६-२०४२०१३५७४९६७७५७४८४२६-मानिनिह,मेयवोमए माठान गनिहुरा

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस? गी=२०४९६३५८६९८९८२०२०८९६७७५७४८४२६-२०४२०१३५७४९६७७५७४८४२६-मानिनिह,मेयवोमए माठान गनिहुरा

हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस? गी=२०४९६३५८६९८९८२०२०८९६७७५७४८४२६-२०४२०१३५७४९६७७५७४८४२६-मानिनिह,मेयवोमए माठान गनिहुरा

अमेठन अठेकसा मैथथि (शेवुन)

कछु मैथथि वकिंपीडिया पठक ठिके:

वदिल्क (पनकि) हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस
अन्टनेटक संसानमे मैथथि भाषा हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस

वाठसनकि गाछ हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस

वदिल्क हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस

वदिल्क सेसवुक दानसन हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस

वदिल्क सन्मान हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस

वदिल्क आन्कासन हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस

वदिल्क मथिठि नग हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस

वदिल्क मथिठिके योण हानपसुवोकसुगोउठियोगिवोकस

वदिह सूचना संपत्क अन्वेषण हानपसुआकिपिदोिगसुण्यप

सुनुना पुनकासन हानपसुआकिपिदोिगसुणुि

अनयगिहन आपन हानपसुआकिपिदोिगसुणि

मैथिली गणु हानपसुआकिपिदोिगसुदिउ

मैथिली वाउ गणु हानपसुआकिपिदोिगसुसि

मैथिली गकृगणु हानपसुआकिपिदोिगसुडि

कसुिु मैथिली पोथी, अंडसि-बिउसि, ककृािु टूव येगउ उउनवेउ ससु (ओपन सोसु)

सखुपदुथ गहअपहअ पअसघअम

सखुपदुथ (मोनिहवि-पुगउसिह-हिनदो खोगलेनसागिस)

मैथिली-हिनदी वानुगणुप (उ घसुय)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल वेग)

हानपसुआिुयोनयेमवदिहो पुनगणु

हानपसुआिुयेथेवख-उपसद

हानपसुअथेनगयिगिवस-संरुपहप

पअरुथैअ अयअयपमइ

हानपसुआहिसा-कडेमगिउगिपुवउयोनगिसे-वोकसुणसप

हानपसुआहिसा-कडेमगिउगिपुगेगनउयगिउवोकसुणसप

खइउ

हानपसुयोनपोनयािुिगुमसिमहणम

अयसिसउ (नमगणु ह. नमस)

हानपसुयोनपोनयािुिगुपदुमादिहविपिदुमअइउपदु

पुआपउ ककृगी- महेगुन

हानपसुयोनपोनयािुिगुपदुमादिहविपिदुमअइउपदु

पुनवगुव संगुनह- नमगथ ह. (विपीएससो सखिवस)

हानपसुयोनपोनयािुिगुपदुमादिहविपिदुमअइउपदु

सुणव केन दीप पुनव- सं केदन कानग आ अनवगुदु डकुन

हानपसुयोनपोनयािुिगुपदुमादिहविपिदुमअइउपदु

मैथिली गदुय संगुनह- सं अैवेगुन मोहन ह.

हानपसुयोनपोनयािुिगुपदुमादिहविपिदुमअइउपदु

अडखरुवपुअोदुघ (विपिअदेव ह.)

हानपसुअथहगोनगुडेगिउसुवापुअ ह. पण

वदिह मोनिहवि गोकसे सुेनगउसु वदिो अनयहवि

हानपसुवदिहयोनगनयहवेहणम

इघसखअ

हानपसुगनयगयिगुयिगेगुमनिहविहणम

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयमाहाकाश्रिणह
बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयकापीरिन्द
बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयमुगवि
बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयसुमागकुमाय३७
बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयप्रायगसणह
बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवयश्रण
बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयानेपिन्द
बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवागसहणह
बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणकुमायण

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयमाश्रिणग
बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहमसिह१२०१०

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयगिमावा

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणकडिम

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणह?व=शपुववगणह&उंगुने=मडु वि०ने१&सिन=३७

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगण

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयगणामकसिहणद

बनपुष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगण५३५

बनपुष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगण

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयगणमोहणह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहमसिहण

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणह?व=-दंभाहणदंदिण

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणवविकरक७

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहससागणह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहमसिहण

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहसहण

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहसह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहद

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहसह

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहसिहण

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहसहण

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहसिहण

बनपौष्टीयुक्तवैद्यमुसेयवगणहसहण

बानपौथुनवेयोमुसेनदोनसहागना

गौथुनवेयोमुसेनदोणुशुनासादढापवागसहा

गौथुनवेयोमुसेनपनेमानसहा

बानपौथुनवेयोमुसेनधरपने (धोनेनून पुनेमन्षा)

बानपौथुनवेयोमुसेनथेपहुवहापनावहा

बानपौथुनवेयोमुसेनगणययुवासहेक

बानपौथुनवेयोमुसेनगिहठियोगमथ

बानपौथुनवेयोमुसेनशुश्रैश्रयपशुउदशशहट

बानपौथुनवेयोमुसेनखवगिहटाट्ट

बानपौथुनवेयोमुसेनदुदयट्टमगहा

बानपौथुनवेयोमुसेनगमिसदोन

बानपौथुनवेयोमुसेनपौगकसह१०२

बानपौथुनवेयोमुसेनसाहधो

बानपौथुनवेयोमुसेनसुगठिकुमानपौग

बानपौथुनवेयोमुसेनवठिहुक

बानपौथुनवेयोमुसेनदुदयट्टमगहा-दुदयट्टमगहा-दुदयट्टमगहा-दुदयट्टमगहा-दुदयट्टमगहा

बानपुवठायकवदहासयम

बानपुथुनवेयोमुसेनपकनपै५१३

अपन भंनये दतिगिठिसनाउदवदिसागामाठियेन पन पडाउ

	ગૌરીસંકત, ખમથત, હૈંડી વાઠી, મધુવની	ગૌરીસંકત, ખમથત, હૈંડી વાઠી, મધુવની
		
ગૌરીસંકત, ખમથત, હૈંડી વાઠી, મધુવની	ગૌરીસંકત, ખમથત, હૈંડી વાઠી, મધુવની	વારસી-વસૈટી, અનન્યા મથિઠાકષ્પ નામ્ન ઠેપ્પ
		
વારસી-વસૈટી, અનન્યા મથિઠાકષ્પ નામ્ન ઠેપ્પ	વારસી-વસૈટી, અનન્યા મથિઠાકષ્પ નામ્ન ઠેપ્પ	વારસી-વસૈટી, અનન્યા મથિઠાકષ્પ નામ્ન ઠેપ્પ
		
ધનહના, વનમગ્પી, પૂનામ્પી, ગનસહિ અવ્રના	ધનહના, વનમગ્પી, પૂનામ્પી, ગનસહિ અવ્રના	પૂનામ્પી, પૂનામ્પી
		
વદિસ્વત સ્થાગ અઠાઠિપ્પ, મધુવની	અગ્ન્યાગઠી અઠાઠિપ્પ, મધુવની	વુદ્ધ અષ્ટયાળુ, સસિવ વસંતપુત, વગહ



૧૨ શાતાવ્દી, કોરબી, મધુવની



અગ્નિ વદિશ્વન સ્થાન, મધુવની વુદ્ધ, મુંગેન



અહિષ્ટા સ્થાન



અગ્ન્યાગાઢો, મધુવની



અશોક સ્તંભ, વસાહ, વૈશાળી



વુદ્ધ



અવલોકિતેશ્વર તાના, શાગાઇપુત્ર



વસાહ, વૈશાળી



વુદ્ધ શૂનસિપ્પાશ



વુદ્ધ, તામ્ન



વુદ્ધ મસ્તક, સુભાગાંબ



વૈશાળી મૂર્તિ



યામુસાડા ગાગ-
ગાગાઈ, મુંગેન



મુકુટયાની વુદ્ધ, અંતીયક, શાગાઇપુ
ત્ર



ગાયેન ગામેશ,
૧૦મ શાતાવ્દી, દત્તગંગા



दरभंगा म्यूजियम



दरभंगा म्यूजियम



दुर्गा, कार्तिकाक्षि



१०म शताब्दी, श्रीर नगवानपुर, अर्घ्या गढी



गामेश बुद्ध



गौतम बुद्ध, वैशाखी



हलहल बुद्ध



यडिकें पुश्चावैग महिषि, नाजमहठ



वैश्या नगदगढ, अशोक स्तंभ



वामश सुदामा गुम्हा



मुंगेल



नागमाण तीर्थकर



कुमानाठि बट्ट शेकेवाह, नाठगदा



वकिमशशि वसिप्रवट्टियाठय, नाग ठपुन



गढ बुद्ध



पात्रती



नामायस



नामपुत्रा वृषण



नामपुत्रा



वुद्यक अवशेष



संकसा



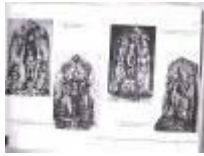
सप्तभागा



सप्तगो गद्ग मसुड



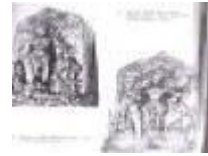
सूय



सूय



सूयक संगी



सूय, मयुवनी आ बागपुन



सूयानि



सूयानि



सूयानि, त्रैशाषी



उमा माहेश्वरी, कल्याणसुन्दरी



वैशाली वज्र शिल्प



वैशाली, शम्भुजिका नागपुर



वज्रसुवदा



पाँपयिक्रान महवि



अहविरा



अष्टयोगिनि महवि, सहारसा



वगंगा



दरगंगा



दरगंगा नगर, १९३४



दरगंगा मेडिक्र कान्या



दुर्गदुर्गनि महवि, जगदपुर



गाम्ठीश्वरी



गंगासागर पोयान, मधुवनी



हनुमान महवि, मधुवनी



हलहिनस्थान



भयवनी हॉस्पिटल



जगकपुर जगकी मन्दिर



जगकी मन्दिर



जगकी मन्दिर, सोनामढी



जगकी मन्दिर, सोनामढी



जगकी स्वास्थ्य कान्यालय, जगकी, गेपाठ



कठेश्वर वावा



कपेश्वर



कोषेष्वाकान्यालय, जगकी, गेपाठ



मथिठा वसिष्ठदियालय, दनगंगा



कृष्णेश्वर पैठेस, १८३४



माय्यमकिलदियालय, जगकी



महेन्द्र चौक, जगकी



जगकी मंडप



भथिषि,
१८८८ शूकम्प



पगठावावा यन्मशाठा, जगकपुर, गे
पाठ



पंडीठ अहृया



भयुवनी वस स्टैड



गाण हेड ऑश्वसि,
१८३४



गाण हॉस्पिटल, दनगंगा,
१८३४



सौगाड सगा



शवि भगदनि, १८३४



शविशंकन सगिमा, भयुवनी



श्यामा भगदनि



वदियापान भूगुण, वसिष्ठी



उगुगाना, गागास्थान, महषि, सह
नसा



વ્રદિયાપતિસ્માનક, વસિષ્ઠી



અહર્યા મન્દિર, અહરિયાતી



વઠગિાનપુત કવિ પૂત્રી ગેટ



ગાંધી પોપ્પતિ ઢાકા, મોતહિતી



હતહિત મન્દિર, સોનપુત



કમઠાદતિપ્ત સ્થાન

વસિષ્ઠી, ઉદગા મહાદેવ



અસોક સ્તૂપ, વૈશાઠી



વઠગિાનપુત કવિ મીગાત



ગાંધી વ્રદિયાઠ્ઠ, ઢાકા, મોતહિતી



ઠૈગ મન્દિર, ગાગઠપુત



કપઠિસૂત્ર શવિત મન્દિર

વસિષ્ઠી, વસિષ્ઠેસૂત્રી ગાગત્રી



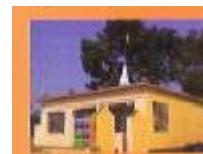
સૂત્રપ અસોક સ્તૂપ, વૈશાઠી



યાસૂઠી સ્થાન, વગિાટપુત, સહતસા



ગતિગિા સ્થાન, મધુવતી



ઠૈગ મન્દિર, વૈશાઠી



ઠૈગિા ગન્દગઠ



भद्वेश्वर शक्ति मन्दिर



मन्दार पर्वत, वाँका



भोतहिनी सत्याग्रह स्मारक



पद्मेश्वरी मन्दिर, ढाढी, मधुवनी



नामजागकी मन्दिर, सीतामढी



सत्याग्रह स्मारक, सीतामढी



शांति स्तूप, वैशाखी



उत्थैऽ ऋगवती



उत्थैऽ मन्दिर



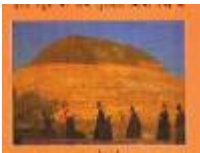
सविश्वर स्थाण, मधेपुरा



सूयधाम, पनसा



उग्नाना मन्दिर, महषी, सहनसा



वैशाखी स्तूप



वकिमशखी विश्ववदियाथ, गाग
ठपुर



वनिटपुर मन्दिर, मधेपुरा



वृषभ शील्प, नामपुरवा



सिंह शील्प, नामपुरवा



शयन, गोपाठ



पाँपयुक्ता देवी, त्रैशाखी



वावा वडेश्वर, देवना, वनगाँव



वट वृक्ष, वनगाँव



नगवान वशिष्ठ, देवना, वनगाँव



शास्त्रालय स्थल, नानास्थान महर्षि



शास्त्रालय स्थल, नानास्थान महर्षि



नानास्थान महर्षि



माना नाना, नानास्थान महर्षि



अननाना (प्यादन वाम्सी नाना) मूर्ति, महर्षि



वसुधैव कुटुम्बकम्, नानास्थान महर्षि



श्रावण्यनि काषी अय्यैः



वैद्यदेवी नाना वानी समस्तोपुन



शगवती देकुषी



शगवती गनिणि शुभ्र



शगवती म्ममूगिग्ववर्ना



शगवती वानी समस्तीपु



शुवनेश्वरी कोथ



देवीकाठी कोथ



गंगामूर्ता गगनडीह एनगंगा



गोसाउगभिगदमि कोथ



हेस्ट्ट देवी हावीडीह



काठी उय्यैठ



महषिसुमन्दगि वहेनी एनगंगा



महषिसुमन्दगि हावीडीह



महषिसुमन्दगि गाल-
शगवतीपु



उमा म्मेय्छमन्दगि मनिणापु एन
गंगा



प्रमुगा भैव वथिया मधुवनी



शैलव, शैलव-वधिया



नटनाण, नानाभाही



शक्ति-
पान्त्रती भग्दनि, कपटिश्वरस्थान



शक्ति-
पान्त्रती भग्दनि, कपटिश्वरस्थान



शक्ति भग्दनि, सगिया, वसिपी



उमानाहेश्वर, महादेवमठ



उमानाहेश्वर, गिहण



वसिष्णु, शवाणीपुन



वसिष्णु, शीठ शवाणीपुन



वसिष्णु, पाप्रगण



वसिष्णु, उदहो



वसिष्णु, साहो-
पनी, हावीडीह



शेषशायी व्रिष्णु, सवास, मुणश्चुष्णपुन



मगवती उय्यैठ, वेनीपट्टी



अष्टभुजा गामेश, हावीडीह



महषिसुमन्द्दिगी, दुनगा



नाममन्दनि, अहठियास्थान

वनाह मूर्ता, गठिकेश्वरस्थान



मगवती वामेश्वरी, मंडानीसम



अष्टभुजा गामेश, कोन्थ



मृष्येष्मन्द्दिगी मन्दनि, मन्निजापुन
, दनमंगा



सेहनी, वैशाठी, व्रिष्णु गठिक-
धण्जोपवीनधानी

मथिठिक्षम अमठिष्ण, व्रिष्णु वुद्दय
मूर्ता



यामुम्डा मन्दनि, कटना, मुणश्चुष्ण
पुन



गंगा, आन्यना-गढी



गटना



नूपनगन शक्ति मन्दनि



सूर्य, देकुली



सूर्य मूर्ति, डविही



सूर्य मूर्ति, वषिष्ठ, वनूश्री



उमाभाहेश्वरी



धनुषा, आनयना-गढ़ी



समिनौवागढ़ मूर्ति



आदी काशी, यैगपुन सहस्रा

यैगपुन सहस्रा- मथिषिक एकमात्र गी
ठकंड मन्दिनि, संगमे आदीकाषीग मय्य
काषी-
मन्दिनि सेहे एहीगाममे अर्छा महासवि
नात्रा आ काषीपूजा वड यूमयामसँ यैग
पुनमे होश अर्छा



त्र्योथागढ़क स्वामी माधवानन्द कौ
षायान्य काषी मन्दिनि

त्र्योथा गढ़ उगा पुनाग गढ़ा एक पू
वमे वृहस्पुनाक वावा हनहिनगाथ
महादेव मन्दिनि आ दक्षसिमे उय्यै
ऽ गगवती छथा



त्र्योथागढ़क दसमुष्पी काषी

त्र्योथा गढ़ उगा पुनाग गढ़ा एक पू
वमे वृहस्पुनाक वावा हनहिनगाथ
महादेव मन्दिनि आ दक्षसिमे उय्यै
ऽ गगवती छथा



कोशुय्य (मधुवनी) देवीक मन्दिनि



अकौन, वेनीपट्टी, गगवती दुर्गा,
गगवतीपीठ



अकौन, वेनीपट्टी, गगवती दुर्गा,
गगवतीपीठ



१ अष्टशुभ गामेश, कोथ रशवि मन्दिर
, सधिया, विसुखी



१ वैद्य देवी गाना, वानी, समस्तीपुर
१ रउगानाना मन्दिर, महषि, सह
१सा



१ गगवती, वानी रगगवती, देकुषी



१ गगवती गानिजा, सुधह रकाठी, उय
यैऽ



१ गैव, गैव वधिया र उमानाहेश्व
१, महादेवमऽ



१ देवीकाठी, कोथ र गुसाउगी स्थ
० मन्दिर, कोथ



१ गामेश, धेयियासनाय र उमानाहेश्व
१ र गटाना, ४ वधिसु, गधिक, गउ या
नी, सेहग, वैशाठी



१ गंगा मूर्ता, गगनीह, दनगंगा र
गगवती मूर्ता, गधवानी



१ हैट्ट देवी, हावीडीह र गधवेश्वरी
, कोथ



१ कथानि काठी, उय्यैऽ, अष्टशुभ गामे
श, कोथ



१ महषिसु मन्दिर, हावीडीह, रउ
मा, म्थेय्मन्दिर, मनिजापुर, दन
गंगा



१ महषिसु मन्दिर, गगवतीपुर, गा
ह, महषिसु मन्दिर, वहेनी, दन
गंगा



१ म्छेय्छमन्दिनी शगवती, मन्िजापुन,
दरभंगा र नाम मन्दिनि, श्रहियास्थान



१ म्छेय्छमन्दिनी शगवती, मन्िजापुन
न, दरभंगा रसहिस्वरन स्थान, मये
पुन।



१ गटनाज, नानाभाही र उमानाहेस्वर
न



१ शेषसायी, सवास, मुजश्चुनपुन, र ग
टनाज नानाभाही र शगवती ४ उमा
भाहेस्वरी



१-
शवि पावती मन्दिनि, कपठिस्वरन
स्थान र सून्य मूर्ति उठिही



१ सून्यमूर्ति, व्रषिमु वनशान र गं
गा, आन्ध्रना गढी



१ उय्यैठ श्वावती, वेगीपट्टी र महषि
सुनमन्दिनी, दुर्गा र यामुम्डा मन्दि
न, कटना, मुजश्चुनपुन ४ शगवती वागे
स्वरी, शम्डानसिम



१ वनाहमूर्ति, नठिकेस्वरनस्थान, र
व्रषिमु, शवागीपुन



१ व्रषिमु, जयनगन र व्रषिमु, शीठ श
गवागपुन



१ व्रषिमु, उदहे, रसून्य, देकुठी



१ व्रषिमु साहे पनडी, स्थापति-
हाशीडीह रवुद्वय-
व्रषिमु मूर्ति श्रमठिय



१ व्रषिमु, सेहन, र वनाह र गामेश
४ शवि मन्दिनि नूपनगन



१_यमुना, आग्ना गढी, रअष्टगुण ग
भेश, हावीडीह



१_यमुना, शैव वधियो, २_शेषसाथी,
सवास, मुणसुष्मपुन, ३_गटनाण
गानाथी ४_ गगवती ५_ उमा माहे
सूत्री



कथानि, काठी, उय्यैड, वेनीपट्टी



मूर्ति (मथिधि
कूपेन)



सम्भवा: सूत्र



वेमुगोपाठ, मथिधि



वर्षिमु, जाठे, दशंग



वर्षिमु



वर्षिमु, श्रोहीठ, दशंग

मथिधिक प्योण

इ आठेय हमन दशकसँ उपनक मथिधिक यान्ताक उपनानक सूत्र-वृत्तान्त
अछि आ ऐमे ऐ सभ स्थानक स्थानीय गविासी आ गाइड सभक अकथनीय
योगदान छन्हि। कयनो काठँ गाड़क गाड़क उनाइवन ठेकनी सेहो नीक गाइड
सद्विध भेला-गणेशक गकुर

"मथिधिप्रदयस्य मय्यंते नपिबो शनिमथिधि गगनी" - मथिधि जगस शत्रुकें
मथठ जाइत अछि- पासागीक वविनासा

कठि आ गढ

वठिनाणपुन कठि- मधुवनी णठिक वावुवही पुनपुनसँ ५ कठिमीट ५ पूव वठिनाणपुन गाम अछि एक दक्षिण दिसिमे एकटा पुनान कठिक अवशेष अछि कठि यानि कठिमीट १ मगल आ एक कठिमीट १ याक अछि दस शीटक मोट देवाठसँ ३ घेठ अछि

असुनगढ कठि- मथिठिक दोस कठि मधुवनी णठिक पूव आ उतल सीमा ५१ णठियुगा यानक कानमे महदेव मऽ ठा ५० एकठमे पसठ अछि

णयनगल कठि- मथिठिक तेस कठि अछि गान गेपाठ सीमा ५१ पुनायीन णयपुन आ वतनमान णयनगल ठा दनगगा ठा पंयोन गामसँ पुनापुन नाम् अठिठिप ५१ णयपुन के वनान अछि

नन्दनगढ- वेणिसँ १२ मीठ पस्यमि-उतलमे ३ कठि अछि तीन पंक्तमि १५ टा अँय डीह अछि

वैणिस-नन्दनगढ- नन्दनगढसँ उतल स्थिति अछि एतऽ अशोक स्तंभ आ वैद्य स्तूप अछि

देकुठिगढ- शिवहन णठिसँ तीन कठिमीट १ पूव हस्ते के कानमे दू टा कठिक अवशेष अछि यानू दसि प्यार अछि

कटनागढ- मुणश्चुणपुनमे कटना गाममे वशिठ गढ अछि, देकुठि गढ णकाँ यानू कान प्यार पुनठ अछि

गौठगढ-वेणिसनायसँ २५ कठिमीट १ उतल ३५० एकठमे पसठ ३ गढ अछि

णयनगठगढ- वेणिसनायमे वनियानपुन थानामे कावन हीठक मय्य एकटा अँय डीह अछि एतऽ ३ गढ अछि नाओकोठी (महौठ) गाम ठा ३ गढ अछि

मंगलगढ़- समस्तीपुर जलमे हसनपुर वृष्कमे दुयपुरा वजान ठा देओठ गाम
ठा गगवान वुद्यक उपदेश एत मेथ, स्थागीय गागा मंगलदेवक आग्नहप
वुद्य कछु दगि एत गविस सेहे केठगर्हा

श्रवैठीगढ़- प्पगड़ियासँ १५ कठिमीटन अत्तन श्रवैठी गाम ठा १०० एकड़मे
पसलठ ई गढ़ अर्छा

कीयकगढ़- पून्साया जलमे डेगनघाटसँ १० कठिमीटन अत्तन महानगदा गदीक
पूवमे ई गढ़ अर्छा

वेनूगढ़- टेढ़गाछ थागामे कवठ यानक कागमे ई गढ़ अर्छा

व्रजनिगढ़- वहदुगंगसँ छह कठिमीटन दक्षिमे ठेगसवनी यानक कागमे ई
गढ़ अर्छा

गेऊनी- दमंगक वनौठ पून्सासँ १३ कठिमीटन पश्यमिमे एकटा गढ़ अर्छा
जे ठेगकिक मागठ जाश अर्छा

वुद्य

कुन्दगाम- हाजीपुरसँ वन्तीस कठिमीटन अत्तन-पूवमे वसाढ़-वैशाठी आ
ठामे वासोकुम्ह ठा गाम गढ़-टीठासँ २ कठिमी अत्तन-पूव अर्छा कुन्दगाम,
जान पौगक रचम तीन्थक महवीनक जन्म मेथ छठगर्हा एत वुद्यक छाउ,
अगषिक पुषकामी (गागा अगषिकसँ पूव एत गहाश नहथी), अशोक सम्म
आ संसद-गवण (गागा वसिठक गढ़) अर्छा

पजेवागढ़ वगही टोठ- एत एकटा वुद्य मून्गागिठेठ छठ, मुदा ओकन आव कोगो
पना गै अर्छा ई स्थठ सेहे नपवानी गामक ठेग अर्छा

मंगलगाढ़- समस्तीपुरा णाठिमे हसनपुरा वृष्कमे दुयपुरा वणाग ठा देओठ गाम
ठाग मंगलाग वुद्यक उपदेश एणऽ मेठ, स्थागीय णाणा मंगलदेवक आग्नहप
वुद्य कछि दणि एणऽ गविस सेहे केठगर्हा

मुसहनगियां डीह- अंधना गढीसँ ३ कठिमीटन पश्यमि पसुटन गाम ठा एकटा
ऊँय डीह अर्छा वुद्यकाठिन एकणगियां कोऽठी, वौद्यकाठिन मूर्त्ता, पाइ,
वर्त्तनक टुकड़ी आ पजेवाक अवशेष एणऽ अर्छा

अकौन- मधुवगीसँ २० कठिमीटन पश्यमि आ उण्णमे अकौन गाममे एकटा ऊँय
डीह अर्छा, एणऽ वौद्यकाठक मूर्त्ता अर्छा

वैनीया-गन्दनगाढ़- गन्दनगाढ़सँ उण्ण स्थिति अर्छा, एणऽ अशोक स्तंभ आ
वौद्य स्तूप अर्छा

वर्किमशठि- मंगलपुरा मे स्थिति पुनीय वसिष्ठदियाठय मंगलपुरा णाठिक
अंगीयक गाममे णाणा यन्मपाठक वनाओठ वुद्य वसिष्ठदियाठय अर्छा १०८
व्याप्याणा ठेठ नहवाक स्थाग आ वाहनसँ पढय वठा ठेठ सेहे स्थाग एणऽ
गन्निमिति अर्छा

यम्पागगान- मंगलपुराक पश्यमिमे, आव गगनसँ सटागिठ अर्छा ई पौन ठेकगकि
एकटा पवर्त्तिस्थठ अर्छा, एणऽ महावीन तीनटा वस्सावास केने नहथा दू टा पौन
मगदनि एणऽ अर्छा, जो पौनक वाहन तीन्थकन वासुपुण्य नाथकेँ समर्पति अर्छा
महावीन वदिहमे छह टा वस्सावास वतिठगर्हा वन्पा ऋतुमे यानि भास एक गाम
गविसकेँ वस्सावास कहठ एणऽ छठ वुद्य एकोटा वस्सावास वदिहमे गै वतिठगर्हा,
मुदा वैशाठी गगनीमे आमनपाठीक उद्यागमे वियिछवीगामकेँ सगदेश देने
छठा आमनपाठीसँ ऋषि गगनहस कऽ वुद्य गेठा वेसुमती कनय यानि भासक
वस्सावास।

अमठिप्य

गौरी-शंकर स्थान, मधुवनी जिलाक जमथनी गाम आ हैडी वाठी गामक वीथ ई स्थान गौरी आ शंकरक सम्मति मूर्त्ति आ ऐपन मथिठिक्षममे ठप्पिठ पाठवंशीय अठठिप्पि वदिस्वरस्थानसँ २-३ कठिमीटन उतन दिसामे ई स्थान अछा।

बीड-गगवानपुर अठठिप्पि- गागा गगवदेवक पुन मठठेवसँ संवधि अठठिप्पि एत अछा मधुवनी जिलाक मधेपुर थानामे ई स्थान अछा।

गगीनथपुर- पम्डौठ एग गगीनथपुर गाममे अठठिप्पि अछा एतसँ ओरगवान वंशक अंगमि दुनू शासक नामद्वेव आ ठक्खनीनाथक पुनशासनक वषियमे सूयना भेटैत अछा।

मंदाक पुन- वांका स्थिति स्थामे मथिठिक्षमक गुप्तवंशीय ७म् शतावदीक अठठिप्पि अछा। समुद्र मंथक हेतु मंदाक पुनयोग भेट छथि नकिटमे वौसीमे जैक वातहम तीर्थक वासुपुत्र नाथक दूटा मूर्त्ति अछा, पैघ मूर्त्ति एत पाथक अछा। दोस कौसाक एक सोहँ दूटा पदयगिह अछा। जैक वातहम तीर्थक वासुपुत्र नाथक जन्म यम्पानगामे आ गन्वासा एतौ भेट छथि।

वदिस्वर- मधुवनी जिलामे ठेहानोड स्टेशन एग स्थिति शिवियामक स्थापना महानाज माधवसहि केठिहो १२ युगक मथिठिक्षमक अठठिप्पि सेहो एत अछा।

वसैटी (वासि-वसैटी), अनया अठठिप्पि - पूसायिंमे शनीगाम एग मथिठिक्षमक ई अठठिप्पि मथिठिक पहिठि महिठि शासक नागी इन्द्रावतीक नायकठक व्रामन कर्त अछा। नागी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे अकाठक समय शूड-शुँन-वृक आ अग्र कठ्यासकानी कायक पुनानम केने रहथि।

जयगाम कठि- मथिठिक तेस कठि अछा गाम गेपाठ सीमा पन पुनयीन जयपुर आ वृत्तमान जयगाम एग। दनगंगा एग पंयोग गामसँ पुनान नाम अठठिप्पि पन जयपुर के व्रामन अछा।

व्रषिम्भु

हुठासपट्टी- मधुवनी जठिक शुभपनास थागाक जागेश्वर स्थान ठा हुठासपट्टी गाम अर्घा कानी पाथक व्रषिम्भु गगनागक मूर्त्तिका एतऽ अर्घा

पपिनाही- ठौकहा थागाक पपिनाही गाममे व्रषिम्भुक मूर्त्तिका यानू हाथ गगन गऽ गेठ अर्घा

मधुवन- पपिनाहीसँ १० कठिमीटन उतान गेपाठक मधुवन गाममे यतुगुण व्रषिम्भुक मूर्त्तिका अर्घा

कमठादित्य स्थान- अंथना गढी ठामे कमठादित्य स्थानक व्रषिम्भु मंदिर कर्माट नाणा गान्धेवक मन्त्री श्रीयन दास द्वारा स्थापति भेठ।

हंदापुन अगुमाडठक नप्वानी गाममे व्रक्षक नीयाँ नाप्यठ व्रषिम्भु मूर्त्तिका गांथानशैथी मे वनाओठ गेठ अर्घा

मटहिनी- व्रषिम्भु मन्दिर

जगकपुन- वृहद् व्रषिम्भुपुनासमे मथिठिमाहात्म्यमे जगकपुन कषेत्तक व्रामन अर्घा सन्तहम सतावदीमे संत सून कशोरकें अयोध्यामे सन्यु यानमे नाम आ जागकीक दू टा गव्य मूर्त्तिका भेटठगर्हा, जकना ओ जागकी मन्दिर, जगकपुनमे स्थापति कऽ देठगर्हा व्रत्तमान मन्दिरिक स्थापना टिकमगढक महानी द्वारा १८९१ ई मे भेठ। गगनक यानूकान यमुनी, गेनुप्या आ दुग्धवती यान अर्घा नाम गवमी (यैत्त सुक्ठ गवमी), जागकी गवमी (वैशाम्य सुक्ठ गवमी) आ व्रिाह पंथमी (अगहन सुक्ठ पंथमी) पन एतऽ भेठ। ठगौर।

अंथना-गढीक स्थानीय वायस्पति संग्रहालय- गौड़ गामक प्रक्षमिक गव्य मूर्त्तिका एतऽ नाप्यठ अर्घा

गौतम तीर्थ- कमठौठ स्टेशनसँ ६ कठिमीट १ पश्यमि वनहमपुन गाम ठग एकटा गौतम कुम्हड पुष्कामी अर्छा

मुंगेक पूव 'सीगा-कुम्हड'गाम कुम्हड अर्छा, सीगा णी एतौ पृथ्वीमे समाहति भेठ छथी। डंढा णठक कुम्हड 'गामकुम्हड', उक्ष्मस कुम्हड, गान कुम्हड, आ शतुघ्न कुम्हड सेहो अर्छा, गैयागीमे वड्ड मठिग से मठिग वावू गढ गानकिठमे सेहो छै, वेसी पढेठ ठपिठ गाममे से आव कहँ?

हठावन्त- णगकपुनसँ ३५ कठिमीट १ दक्षमि पश्यमिमे सीगामढी गगामे हठवेश्वर शिवि मन्दिरि आ णगकी मन्दिरि अर्छा एतसँ डेढ कठिमीट १ पुम्हडगीक क्खेन्मे सीगाकुम्हड अर्छा हठावन्तमे णगक द्वाग ह १ यथेवा काठ सीगा भेटथि छथी। गाम गवमी (यैन् सुक्ठ गवमी) आ णगकी गवमी (वैशाय सुक्ठ गवमी) ५१ एतस मेठ ठगैए।

शुठह-मधुवनी णठिक हठाप्यी थानामे शुठह गाममे णगकक पुष्पवाटकि छठ एतस सीगा शुठ ठेढे छथी।

यगुषा- णगकपुनसँ १५ कठिमीट १ उन्त यगुषा स्थागमे पीपक गाछक नीयाँ एकटा यगुषाकाम प्पम्हड पडठ अर्छा। गामक तोडठ ३ यगुष अर्छा। ऐसँ पूव वामगंगा यान वहैए णे उक्ष्मस द्वाग वामसँ उद्घाटति भेठ छठ।

सुगगा- णगकपुन ठग णठेश्वर शिवियामक समीप सुगगा गाममे सुकदेवणीक आस्नम अर्छा। सुकदेवणी णगकसँ शक्तिषा ठेवाक हेतु मथिठि ऐठ छठ। ऐ गाम हुनका डहेवाक व्पवस्था भेठ छठ।

सहिश्वर- मधेपुनसँ ५ कठिमीट १प गौरीपुन गाम ठग सहिश्वर शिवियाम अर्छा।

कपठेश्वर- कपठि मुगि द्वाग स्थापति महदेव मधुवनीसँ ६ कठिमीट १ पश्यमिमे अर्छा।

कुशेश्वर- समस्तीपुरासँ उता-पूव, ठेरायासनायसँ ६० कठिमीट १ दक्षिण-पूव आ सहसासँ २५ कठिमीट १ पश्चिमि ई एकटा पूरसद्वि शविस्थान अछि। एतय यडि-अग्र्यागम्य सेहे अछि। एतय उता आ कानी गैव, एतय, दधौष, मैथ, नकटा, गैनी, गगन, सवि, अयानी, हन्रि, याहा, कान, नवा यडि सन नवम्बसँ मान्य यद्विप्यवामे अवै।

समिदह- थठवाला स्टेशन एग शविसहि द्वाला वसाओ शविसहिपुरा गाम एग ई शविमन्दिर अछि।

सोमनाथ- मधुवनी णठिक सौनाड गाममे सनागाछी एग सोमदेव महादेव छथि।

मदनेश्वर- मधुवनी णठिक अयना गढीसँ ४ कठिमीट १ पूव मदनेश्वर शविस्थान अछि।

याम्देश्वर- हंदापुरामे हन्रि गाम एग याम्देश्वर गकुर द्वाला स्थापति याम्देश्वर शविस्थान अछि।

शठिनाथ- णयनगाम एग कमठा यानक कामे शठिनाथ महादेव छथि।

उतानाथ- मधुवनीसँ दक्षिण पम्डौठ स्टेशन एग नवागीपुरा गाममे उता महादेवक शविठिगि अछि। वद्वियापतिकिँ प्यास एगठिगिँ उतापुरा महादेव णटासँ गंगाए नकिठिगि पयिठपनिहा वद्वियापतिकि हठ केठपन ऐ स्थान पन उता हुनका अपन असठ शविपक द्शन देठपनिहा।

उय्यैठ छनिगमस्तिकि गगती- कमठौठ स्टेशनसँ १६ कठिमीट १ पूरवोता उय्यैठमे काठिस गगतीक पूजा कयै छथ। गगतीक मौरिकि मूर्तामस्तिक वहीन अछि।

उताना- मम्डन मस्तिक णममूमि महिमे मम्डनक गोसाउनि उताना छथि।

गद्दिका- मधुवनी जठिक कोरुप्य गाममे गद्दिका मंदनि अर्छा

यामुहडा- मुजश्वरपुन जठिमे कटागढ ठग ठकूमसा वा ठपनदेर यान ठग
हुगा हुगा यामुह-मुहडक वय कएठ गेठ ओर सुथानपन ई मन्दनि अर्छा

पनसा सुन्य मन्दनि- हंदापुनमे सगामसँ पाँय कठिमीटन पून्य पनसा गाममे
साढे यानि श्वेटक गव्य सुन्य मुन्या गेटठ अर्छा

यैगपुन सहसा- मथिठिक एकमान गीठकंड मन्दनि, संगमे आदिकिठिन गव्य
काठि-मन्दनि सेहे ऐ गाममे अर्छा महाशविनागि आ काठिपुजा वड धूमयामसँ
यैगपुनमे हेरन अर्छा

यनहना, वनमन्यी, पूनासियँमे ननसहि अवनानक सुथान अर्छा, एकटा प्योह जकाँ
पैघ पाया अर्छा जसमे जे कछु शेकवै तँ वडि काठ यानि गो-गौ अवाज हेरन नहना
ई सुथान आव ननसहि गगवानक मुन्या आ मन्दनिक कामसँ वेस वकिसति गड
गेठ अर्छा एतौ ननसहि पाया श्वडा अवनानि गेट छथा

वसिश्ठी- मधुवनी जठिक वेनीपट्टी थानामे कमतौठ गेठवे सुटेशनसँ द कठिमीटन
पूव आ कपठिस्वन सुथानसँ ४ कठिमीटन पश्यनि वसिश्ठी गाम अर्छा
ज्योगनिस्वन पून्य महाकव्रि वदियापतिक जन्म-सुथान ई गाम अर्छा

मथिठिक वीस टा सद्दिय पीड- गानिजिस्थान (शुठहन, मधुवनी), रहुगास्थान
(उयैड, मधुवनी), इनहेस्वनी (दोपन, मधुवनी), ४गुवनेस्वनीस्थान (गगवतीपुन,
मधुवनी), ५ गद्दिका (कोरुप्य, मधुवनी), दयमुहडा स्थान (पयाही,
मधुवनी), ७सोनमार (जगकपुन, नेपाठ), द्योगनिदिना (जगकपुन, नेपाठ),
दंकाठिक स्थान (जगकपुन स्थान), १०नाजेस्वनी देवी (जगकपुन, नेपाठ),
११छनिमसगा देवी (उजान, मधुवनी), १२वगहुगा (पनन्य, मधुवनी),
१३सधिस्वनी देवी (सनसिन्न, मधुवनी), १४देवी-स्थान (अंधना गढी, मधुवनी),
१५कंकाठी देवी (मानन नेपाठ सीमा आ नामवाग प्ठेस, दनगंगा), १६उगानाना
(महर्षि, सहसा), १७कान्यानी देवी (वदघाट, सहसा), १८पुन

देवी(पूर्वासायाँ), १८काठी स्थाण (दरगंगा), रंजैमंगठास्थाण(मुंगे), पर
जगकपुन परकिमाक १५ स्थथ आ ओतुकका मुप्य देवता १ हनुमानगगन-
हनुमानजी, रकथ्यामेस्वन- शविठगि, इगिणिणि-स्थाण- शक्ति, ४मटहिगी-
व्रिष्णु मन्दनि, पजाठेस्वन- शविठगि, दमगाई- माह्दव ऋषि, ७ श्नुव कुम्ह-
धुव मन्दनि, दक्यन वन- कोनो मन्दनि गै मात्न मगोनम द्क्ष्य, दंपन-
पाँय टा पनन, १०यगुषा- शवि यगुषक टुकडी, ११सगोप्यडी- सपनपकि साग टा
कुम्ह, १२हनुषाहा- व्रिष्णुगंगा, १३ कुम्हा- कोनो मन्दनि गै मात्न मगोनम
द्क्ष्य, १४ वसिष्ठ- व्रिष्णुमात्न मन्दनि आ १५जगकपुन।

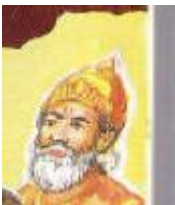
दरगंगा कैथोठके यन्य- १८८१मे स्थापति ई यन्य १८८७ केन गूकम्पमे
क्षणागिनसग गज गेठा एकना हेथी नोणेनी यन्य सेहे कहठ जाइए सेठ श्वासि
आँसिसी यन्य मुणश्चुनपुनमे अछा।

गण्पि सगमी मजान- गंगासागन पोप्यनि दरगंगाक महानपन ई मजान अछा।
मकदूम वावाक मजान:ठगि गानायस मथिठि व्रिष्णुव्रदियाथ आ कामेस्वन
सहि संस्कृ्ण व्रिष्णुव्रदियाथ दरगंगाक वीय स्थति ई मजान हगिदू आ मुसठमि
मनावठम्वीक एकटा पावन स्थाण अछा। दरगंगा टावन मसणदि इस्ठम
मनावठम्वीक एकटा गव्य मसणदि आ यान्मकि स्थथ अछा।

वैदिक मथिथि नग्न

वैदिक ह वैदिक वैदिक विदेश हानपूर्ववैदिकयोगि वैदिक प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पानिका वैदिक इसन मागिहथि ठोनागगिहानथे प्रोनागठ वैदिक प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पानिका नत्र अंक देपवाक छेथ पृष्ठ सगकेँ नखिनेस कए देपू अथौयस नेउनेसह नहे पाजेस डो वीरिगो नौ सिसेओ वस्यएहअ

माना आ नेपावक माटमे पसनेथ मथिथिक यनी प्रयोग काठेसँ महान पुनष ओ महिथि लोकनिके कर्मभूमिहथ अछि पनसुगा अछि मथिथि नग्नक एकटा छोट संग्रह ऐ संग्रहकेँ पूनाम कएवाक हेतु अपन वृत्तुभूष संग्रहकेँ दानिगिहिसगाउडवैदिकवाभाषियेमे केँ पडाअ आनकाइवक सन्वायकाम नयनाकाम, सम्बन्धयानि ओटोगनाथन आ संग्रहकनानाक छामे छगहनि ओटो सग पडेवा छेथ यनयवाए पाठकगाम सागाना पूनामा: अययवसायिक उददेश्य आ माना एकेडमिक प्रयोग छेथ विशेष विनियम देपवा छेथ कथिके कू वस्यएहअ ३४६, वस्यएहअ ३४७, वस्यएहअ ३६६ आ मथिथि नग्न मथिथि यतिनकथ मथिथिक पावनीतहिन (कथा) आ मथिथिक संगीत।



वैदिक जगक

'वैदिक नागा' ऋग्वेदिक काठक नमी सप्याक नामसँ छथार, यजुमे कनैग सदेह सुनग गेथार, ऋग्वेदमे वनामन अछि ओ इगदक संग देवगह अस्म नमुथिक वज्रुदय आ नाहमे इगदक हुगका वयओवगहोसनापथ वनाहामक वैदिकमाथन आ पूनामक नमि हुग गोटक पुनोहनि गौनम छथि से हुग एके छथि आ एनएसँ वैदिक नागयक पुनामभन माथवक पुनोहनि गौनम भानिबोवद यजुमेक वथिके पुनामभन कएवहनि आ पुनः एकन



वाग्भोका



सीतापनागम

पुनःस्थापना भेद महाजनक-२ क
समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। गमि
गौतमक आसनमक एव। **याज्ञवल्क्य** आ
मथि-जातिक मथिवा नामसे सेहे
सोन कएष जास
छहल, **मथिवा** जनक गनिमास
कएषहल गमिक याज्ञवल्क्यपुन
वनाभाव जनकपुनमे छए, मथिक
मथिवाजनीक स्थान एप्यन यनी
गनियानि गहल गए सकए
अछि, अनुमानि अछि जनकपुनक
ए। **सोनव्रज जनक** सोनाक
पति छथि आ एतयसे मथिवाक
नाजाक सुद्ध पनमपना देपवामे
अवैत अछि **क**
जनक **सोनव्रज**क वाहक १८म
पुसामे भेद छल। **क**
हिससयनाक पुन छल आ जनक
वहुवाश्वक पुन छल।
याज्ञवल्क्य हिससयाक शिष्य
छल। हुनकासे योगक शिष्या ठेगे
छल। कनाथ जनक द्वारा एकटा
वनाहाम धुवनीक शीत-अपहामक
पुन्यास भेद आ जनक नापवस
समापन गए भेद (संदन
अश्वघोष-बुद्ध्यनि आ कौटिल्य-
अर्थशास्त्र)।



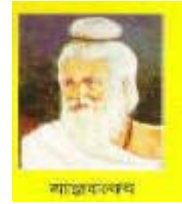
एव कुश



वदिव माथव

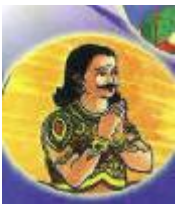
आपथ वनाहामक वदिव माथवक
वदिव आगमन, आगिक सदागनासे
आगाँ गहल चढवाक यन्य।

आपथ वनाहामक वदिवमाथव आ
पुनामक गमि दुनू गोटिक पुनोहनि
गौतम छथि से दुनू एक छथि आ
एतसे वदिव नाप्यक पुनानम।



वापसगेयी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मथिवाक दानशक
नाजा कनी जनकक दनवानमे छल।
हुनकना माताक वा पतिाक नाम
समभवतः वापसनी छहल। ओना
हुनकना पतिा देवानाकेँ भागए जास
छहल। याज्ञवल्क्य १ सुकए
याज्ञवल्क्य, २ सापथ
वनाहाम, ३ वहाहामक उपनिषद
आ ४ याज्ञवल्क्य स्मृति
दृष्टिपक छथि।



अंगनाज कनास



वैशंपकि दशन कसाद

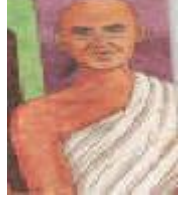


वैशेषिक दर्शन का माह



गौतम बुद्ध गद्य ५६३-४८३

श्रीगौतम महावीर ब्रह्मिणे छह टा वसुसावास वणिठगहो मुदा बुद्ध्य एकोटा रो मुदा भयिठिमे वोद्ध्य यन्मक पुनभाव पछाणि वद्धवा बुद्ध्य वैशाखी गौतमे आम्नपठिक उट्टयागमे वियेखसो गामके सन्देस देगे छवाह।



यामक्य गद्य ३५०-२८३

यन्म आ वयिकि कषेत्तमे कौटिलियक अन्थशास्त्रान आ याणभत्रक्य सम्मानि वडड समागना अछाणि यामक्यक भयिठिवासो होयवाक पुनमास अछा।

अन्थशास्त्राने (१६ वगियाथिकानिकि पुनथभायिकाने षडोऽयथायः सन्देसियाने अविडवन्तायागः) कनाठ पाठकक पाठक सेहे यन्या अछा।

गद्विद्वयवन्तानिवस्येवद्विधिसयागुनवतोऽपी नाणा सन्देसो वगिसयागि- यथा दाम्भिक्यो गाम गौणः कामाद् वनाहमास कन्यायमभिनवयमावः सवन्वनाप्टनी वगिवास कनाठस्य वेदेहः।

महावीर जैन पद- ५२७

महावीर ब्रह्मिणे छह टा वसुसावास वणिठगहो



यगद्गुपुन मौन्य यामक्यक शिष्य गद्य ३४०-२८३

यामक्यक शिष्य



आन्यमट्ट वैज्जानिकि ४७६-५५०

पञ्जानिमे आन्यमट्टक वजिनाम- (२७) (३४०८) महपिणयिः मंगलौगी माम्भुट्टेन सै पीणाम्भु १ सुग दाम्भु ही माम्भुट्टेन सै वीणी न्निगियमट्टः ए सुतो **आन्यमट्टः** ए सुतो उट्टयमट्टः ए सुतो वणिठयमट्ट ए सुतो सुठियमट्ट (सुवयमट्ट) ए सुतो मट्ट ए सुतो यन्मपटीमसिन ए सुतो यानाण्यो मसिन ए सुतो वनहमपनी मसिन ए सुतो न्निपुनाण्यो मसिन ए सुग वधिण्यो मसिन ए सुतो अपयसहिः ए सुतो वणिठयसहिः ए सुतो ए सुतो आदविनाहः ए सुतो महेवनाहः ए सुतो हुन्धोयन



सद्विय सनहपाए ७००-७८०

सनहपाए-७ सद्वियनिष्ठु मर पद्धमे पद्धिउ, माम्भु पविगौ वसिमउ एभरउ भयिठिमे अकषानमन सद्वियनिस्तु पाकन पुनवमे सद्वियनिस्तु, गामेशाणिक अकस आंणी, वपिठ पाकन अछा भयिठिमे ई यानामा जो भौड पविसें सुननाम शक्री कषीम होश अछा; ई सनहपाएक भयिठिवासो होयवाक पुनमास अछा।



आदिशंकायान्य ७८८-८२० मंडन मसिनसं शास्त्रान्थ

सहि: ए सुगो सोढन जयसहितकायान्यासुतस
महासुतन वदिया पानउगा महामहोपाय्या
ध: गनसोहि॥



ममगोलू हा १०५०-११५०

कनभहे सोवकनियाम गोलू हाक
वनामन पन्नीने
अछी- महामहोपाय्याय युनानाण
गोलू पन्नीक अगुसात पीढीक
गामना कस्यसँ गोलूक
जगम (गोलूक सोवकनियाम
कनभहे-वासने रजम पीढी यथी नहए
अछी) आनधमट्टक
वाए (आनधमट्टक मामुडन
कास्यपमे उट्ट म पीढी यथी नहए
अछी) आ वदियापाकि
पहनि (वदियापाकि वसिएयाम
वसिथी-कास्यपमे १४म पीढी यथी
नहए अछी) उगना १०५० ईमे सहिय
होना अछी कागस एहिगिहँ एक
पीढीकें ४० सँ गुमा केवा सँ
आनधमट्टक जगम उगना ४७६ ई
आ वदियापाकि जगम उगना १३५०
ई अथेन अछीजे शोहिससम्भन
अछी



कृष्णानाम आ हाथी सुवनन

भयिधिक धादव (गुआन) जाकि वेकदेवना
कृष्णानाम अपन हाथी सुवननपन सवाना



वंशीयन व्नाह्माम



छेखन महनाण

भयिधिक उम जाकि वेकदेवना



दीगा- गदनी

भयिधिक मुसहन जाकि वेकदेवना



पुत्रोतापिंजयाम



गाणा सधेस



दुठना दयाठ



काठदोस

भयिषिक ह्यवंशी (दुसाय) पाणि कि
विकटवरा



वोधा कायस्थ

वहियापाणि पुनुष-पनीक्षामे
मन्तुयुकाथमे गंगा गदीक आयव आ
वोधा-कायस्थके अपगामे समेवाक
पसिा वनामति अछिणि वादमे
वहियापाणिके ७८ कऽ सेहे पुनयवति
जेछ।



मठवेव

भयिषिक कनासाट वंशक संस्थापक
वाग्यदेवक पुत्री भयिषिक
गंघवनीया नाजपुत्र मठवेवके अपग
वोणीपुनुष मालेन छथी।

गोग हाक गाम यनौडाक नाजकुमान,
"बहुना गौडवि गृथा दयाध"
विककथाक मवाह कथावायक।
यनौडामे एपगो हविकन गह्वन
छवही।



गायाकष्म आ कनागाम मठविक

भयिषिक अमना घनेगक पुनानमवाक गवैय्या



महापाण हनसहिदेव

भयिषिक कनासाट वंशक।
पुयोनीश्वरन गकुनक वनास-
नानाकामे हनसहिदेव वायक आका
नाणा छवाह १२८४ ई मे पाजम
आ १३०७ ई मे नाजसहिसग।
घथिसुददीन गुजठकसे १३२४-
२५ ई मे हनकि वाद गोपाठ पवयव।
भयिषिक पञ्जी-पुनववयक
व्नाहमास, कायस्थ आ कषानपि
मध्य आयाकारिकि स्थापक, मैथवि
व्नाहमासक हेतु गुमाकन हा, कनास
कायस्थक वेठ शकनहान, आ
कषानयिक हेतु वाणियहान सह हेतु
पुनथभनया गयुक्तान मेवाह।
हनसहिदेवक पुननासासे- आ ई
हनसहिदेव वाग्यदेवक वंशप
छवाह, जो वाग्यदेव कनासाट वंशक
१००८ शाकेमे स्थापना केने नहथि-
गह्दिद सुनयं शशी शाक वन्धे (१०१८
शाके) भयिषिक पम्पडनि विकनी
शाके १२४८ नहगुसा १३२६ ई मे
पञ्जी-पुनववयक वनामान
स्वनापक पुनानमवाक गनासय
कसठवही पुन: वनामान स्वनापमे
थोडे बुह्या वविमो विकनी भयिषि
महापाण मायव सहिस १७६० ई मे



महापाण वाग्यदेव

भयिषिक कनासाट वंशक १०८७ ई मे
स्थापना ११४७ ई मे मन्तुया



मन्त्री गामेश्वर

भयिषिक कनासाट वंशक गनेश
हनसहिदेवक मन्त्री। मुगासिपायके
भयिषिक सावेधानिकि वाहिसक
वनासवा।

आदेश कनवाए पञ्जीकानसँ शाप्पा
पुस्तकक पुनस्यन कनवओउग्हो
ओकन वाए पौणमि (कपपो काए
वृत्तमि १६०० शके भागे १६७८ ई
वास्तवमे मायव सहिक वाएमे १८००
ईक आसपास) श्रौतनयिनामक
एकटा नव वृत्तमस उपजातिक
भयिधमे उपजा शिवा



मीना साहेव

भयिधिक मुखमि ओकनकि वीय
पुनसद्यि ओकजायाक वायक।



अमन वावा

भयिधिक भवाह जातिक ओकदेवता।



गनीवग वावा

भयिधिक घोवा जातिक ओकदेवता।



ठाठवग वावा

भयिधिक यन्मकान जातिक
ओकदेवता।



वंडा यमान



कानपि पणयिान



ठोनकि



नाय नामपाठ



अयायी भसिन

पण्डनरुम शतावृदीक शवगाथ भसिन
वड पैघ यैपुयायिके छवाह आ कहियो
ककनोसँ कोनो वस्तुक धायना गही
कएउग्हो, गही छैप सग हुनका
अयायी भसिन करए उगएग्हो।



शंकर मिश्र

"वाचोःहं जगदावगृहं न मे वाचा
 सनसवती। अपूर्वो मे पंथे वने
 वनस्यार्थो जगत्पुनःप्रभु ॥" क
 वंका। पण्डितहम शताव्दीमे शवलाथ
 मिश्रक धर्ममे मधुवनी पाठिक
 सनसिख गुणामे शंकर मिश्रक
 जगम शेषशंकर मिश्र महानाण
 जैनव संहिक कविपुत्र पुत्र नाना
 पुत्रुषोत्तमदेवक आशुनि छत्रह
 एक वनासग नसात्सव गुंथमे
 शेटेन अछी शंकर मिश्र
 कवि, वाटककान, युनमशास्त्री आ
 ग्याय-वैशेषिक व्याख्याकार
 मह्याशंकर मिश्र गुंथावधि- ११०
 दगिमव पुनहसग रक्ष्म वगिह
 वाटक इमगोशवपनाशव
 वाटकनसामवपुत्रा-
 टीकाद्वयवगिहोडवैशेषिक सूत्र
 पन उपसक्तान्दकुसुभाजिप
 आमोदत्पाम्पुडवाम्पुड-प्याहय टीका
 १०छगदीगहोकोदयान ११शुनाह्य
 पुनदीप १२पुनायस्योति पुनदीपा



प्रक्षय मिश्र

वदियापाकि समकालीन महदेव
 मिश्र, जे अपन अकटय नृकक
 कानाम प्रक्षय मिश्रक नामसे
 जानव गेछह।



मैथिलीक आदिकवि वदियापाकि ज्योतिषीश्वर पुनव

मैथिलीक आदिकवि वदियापाकि
 ज्योतिषीश्वर पुनवक नामसे
 जानव गेछह।

कवीश्वर ज्योतिषीश्वर (१२७५-१३५०) सँ
 पुनव (कानाम ज्योतिषीश्वरक गुणथमे हविक
 युनय अछी), मैथिलीक आदिकवि संसर्का आ
 अवहट्टक वदियापाकि संसर्कासँ जनिव सम्प्रदायः
 विसिद्धी गामक वाचन कासटक शी महेश गुरुक
 पुत्र सम्प्रदायक पुनवक वदियापा गायमे
 वदियापाकि पदावलीक (ज्योतिषीश्वरसँ पुनवसँ)
 नृत्य-अभिनय क्षेत्र अछी। ज्योतिषीश्वर पुनव
 वदियापाकि- कश्मीरक अजानव गुप्ता (दशम
 शताव्दीक अग्न आ एगानहम शताव्दीक
 पुनानमश)- गुणथ कश्मीर पुनथाशाहिमा-
 वजिपुर्षिसी मे वदियापाकि उल्लेख कने छथी।
 शनीयन दासक सङ्कलितकानाम, (नयन ११
 अवनो १२०६, मध्यकालीन मैथिली, वीरि गुरु)-
 शनीयन दास वदियापाकि पाँय टा पद उल्लेख
 कने छथी जे वदियापाकि पदावलीक भाषा छी।

जानव न माथी कन पगालस

नासे न नाहि मधुकन वधिसा आ

मगएछी मुकुठ कलय मकनगए

ज्योतिषीश्वर (१२७५-१३५०) **धपः**
१२७७ - अथ वदियावतन वनासना। **अपुनः**
१२७७ - अथ नानुय वनासना। मे उल्लेख।



महानाण शिव सहि

मथिली ननेस वदियापाकि
 आसनपदना ओखवान वंशक
 महानाण शिव सहि



उजागा महदेव

महदेव वदियापाकि अहगिम गीत
 सुनवा छेउ उजागा गोकन वग नैह
 छह।



महाकवि वदियापाकि गिकुन १३५० -१४३५ (मैथिलीक आदिकवि ज्योतिषी श्वर-)

પૂનવ વદિયાપાસિં ઝાગિન, સંસ્કૃા આ અવહટ્ડમે ઇપ્પગ)

મહાકવિ વદિયાપાગિઝુન ૧૩૫૦-૧૪૩૫

વદિયાપાગિઝુન ૧૩૫૦-૧૪૩૫ વધિસ્વાન વસિશ્ચી કોશ્વયપ (નાપા સવિસલિક દનવાગી) આ સંસ્કૃા આ અવહટ્ડ ઇપ્પક કોનાલિા, કોનાપિાકા પુનવ પનોક્ષા, ગોનક્ષવગિપ્પ ઇપિવાલ્લે આદિગિનથ સંભેા વપિુઇ સંપ્પામે કાલ્પાયી નયલા ડ મેથાલિક આદિકિવો વદિયાપાગિ (પ્પાગાગીશ્વન પૂનવ) સં ઝાગિન ઘથા

(યાગિનક આયાન મથેલિ સંસ્કૃાકિ પનવિદ કોલ્કાના દ્વાા કોનો કલ્કાનસં વલવાઓ, કલ્કાનક ગામ ૬૦-૭૦ સાલસં અપ્પાગા કાનમસં ગુપ્પા નાપ્પ ઝેવ અલ્લિ)



સંકનદેવ ૧૪૪૮-૧૫૬૮

પાનિાગાહામ



પગાપ્પાગાગિનમ્મ ૧૬૧૩-૩૭

હગોગી વલિાહ વાટક, કુન્પા વલિા વાટકા



સુગીના કુમાન યટ્પી મૈથલિ પ્પેમી ૧૮૮૦-૧૮૭૭



અનવનિદ ઘોષ મૈથલિ પ્પેમી ૧૮૭૨-૧૮૫૦

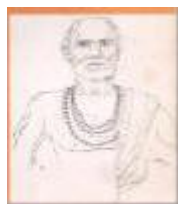
વદિયાપાગિગીનક અંગેાગીમે અગુવાદ



ડાં સન આસુાોષ મુપ્પાગી મૈથલિ પ્પેમી ૧૮૬૪-૧૮૨૪



સન પી દ ગ્પાગિનસન મૈથલિ પ્પેમી ૧૮૫૧-૧૮૪૧



कवियुगल हा १८३१-१८०७

मूठगाम यवहृत्नाथ हा, गुनाम- पोम्पुडुळ, दनशंका। कवीश्वर, कवियुगल नामसे वशिष्ठा। गुनामसकें मैथिलिक पुनसंगमे मुप्य सहयता केनहिला।

कानि-मथिषि नाथा नामासाम, गोता-सुधा, भेशवामो संग्रह, यवहृत् ५६वर्षी, उकथमोश्वर वविस, अहविषायगति आऽ वदियापानि नयोत संस्कृत पुनप-पनीकृषाक गृह्य-पद्यमय अगुवाह।

महाकवि विठ्ठलदास १८५६-१८२१

हगिक जगम पडौआ गुनाममे १८५६ ई मे तथा मृत्यु १८२१ ई मे जेठवर्षी। हगिक अनेक नयना उपपद्य होश अछि, यथा- नमेश्वर यगति नामासाम, सृगो शक्तिषा, सारतिगो-सगुधराग, याम्पु यगति, वरिणुदावरी, दुगुग। सपुनशरी, नगुनोक्त मथिषि माहात्मय आदि। मैथिलिक आनिकि ६ संस्कृत, हिंदी तथा आनसोक ज्ञाना छवह। कवितिक आनिकि गृह्यमे सेहो ६ नयना कएष। नमेश्वर यगति नामासाम हगिक सशसे वशिष्ठा गुनव्य अछि। नाम-कथाक उठेयमे सोनाक महनाक महान्व दए मथिषि तथा मैथिलिक पुनाई अपन श्रद्धया तथा शक्ति वृधक कएष अछि।

म. म. पनमेश्वर हा १८५६-१८२४

जगम १८५६ ई मे नौरी गुनाम (दनशंका) जाषिमे जेठ छठवर्षी तथा वयिन १८२४ ई मे। संस्कृत व्याकरणक ई दगिगल वदिवग छवह तथा वैधाकाम केशरी क उपायसे वशिष्ठा छवह। मैथिलि साहित्यमे अपन कानि-मथिषिनाम वमिश तथा सोभगि आप्ययासिक क काममे महान्वपुनाम सुधाव नयेत छथी ई महनाम नमेश्वर सौहिक दनत्रामे नाम-पठितिक पदपन अनेको वृध यगि सुपनासिठि छवह।



अवध वहीनी पुनसाद शाही १८५८-१८२८



सुवर्गान् सुवर्गान् वय्या हा १८६०-१८२१

मयुवनी जाषिनाम उवामी(नवानी) गाममे हगिक जगम जेठवर्षीहगिक कानि सश अछि। सुवियव-माधव यमू काल्य, रवयायवागुनाकि नापुनय वयाप्यथाव, इगुकाथ नापुनविक(शरी मदशागलगोना वयाप्यथाव मयुसूदनी टोका पन) वृवयापुनपियक टोका पअवयुखदकान वानुकुना वसियव दसवृधशायन टपिपाम उसापुनपिकृष टपिपाम ववयापुनगुग वसियव दसदियां उकथाम वविक कयुपुनपुनविद गुकाथ नावठिक ११शकानुविद टपिपाम वरपामुडन-पामुड प्याह्य टपिपाम १३ अद्वैत सद्धिया यवहृत्कि टपिपाम १४कुकुकाजव पुनकाश टपिपाम।



म. म. शशनिगथ हा १८६०-१८३०



मुंशी नद्युगदग दास १८६०-१८४५



मयुसूदग ओहा १८६६-१८३८



म. म. मुनषिधन हा १८६८-१८२८

जगम- गाम- नगाम (जाषि मयुवनी), अपन माणक श्यामसोधपमे

गाम-सम्पन्न, ाधि-मयुवगी। "मथिधि
नाटक" आ "दूनागद व्यायोग"क ठेम्का



मुकुन्द हा "वपुशी"
१८६८-१८३६

गाम हगपुन वपुशी टोठ गाम
(मयुवगी ाधि) मे १८६८ ई मे जेठ
तथा हगक गधिन काशीमे १८३७ ई
मे जेठगही। हगक ाधि संसृका
मे अगेक गानथ अछी। मैथिधिमे
हगक महानुवपुनास क्ाि
अछी। मैथिधि ाधामय
आहिस। एक आगिकिा
मैथिधिमे हगक सुशुठ गविनय सग
सेह पुनकाशति जेठ। मैथिधिमे
पोहिसिकि वगामन सगस पहगे
हगके पुनकाशति जेठ। एहि
आहिसमे मैथिधिमे सनवगोमुम्पी
पनयिय पुनसुग कए जेठ अछी।



नासवहीनी ठाठदास १८७२-
१८४०

"मथिधि दनपस" क ठेम्का



डाँ सग गंगानाथ हा १८७१-
१८४१

गाम मयुवगी ाधिमे सगसिव-पाहि
गाममे १८७१ ई मे जेठ तथा गधिन
पुनागमे १८४१ ई मे। ई अपना समयक
संसृका पुनकासुठ वहिवाग म म यगिनयन
मसिन, म म ाधदिव मसिन तथा म म शत्रिकुमा
शासुगीसं मोमासा एवं दनशगक अययधन
कएगही तथा दनशगक वगिगिन दूने गानथक
अउगेगेमे अगुवाए कए पास्यागय संसागक
ध्याग आकृष्ट कएगही ई गवगनमेगट
संसृका क्ाि
वगानसमे १८१७ सँ १८२३ यना पुनसिपिठ
छगह तथा एवाहावद
वसिववहियाठयक १८२३ सँ १८३२ पनयग
कुठपना गहगह। मैथिधिमे हगक सनपादिगि
यगदा हाक महेशवामी
संगह तथा गामनाथ-वगियुयगाथ
पदावठी पुनकाशति अछी। मैथिधि साहगिय
पनधिद्ववाग पुनकाशति हगक वेदाग
दीपक (दनशग) वधियक अपनव गानथ अछी
। एहिसँ गानव हगक गविनय सग सामयिकि
मैथिधि पन-पनाकिमे पुनकाशति अछी।



गामयगदग मसिन "यगदग"
१८७३-
१८३७ मैथिधि पुनगा



गगानुदग हा गगसीदग १८७२-
१८५१

वसिगेठहा काशीसँ १८०६ ई मे
ई "मथिधिमेद" गामक मासकि मैथिधि
पनाकिमे पुनकाशग सुगु केठगही
हगिपदेस (अगुवाए), मैथिधि व्याकास,
"अनुगुग नपस्या" (उपग्यास)
पुनकाशति।



महावैयुयाकागामायानुय पं दीगव
गुधु हा १८७८-१८५५



महामाथ महेश्वरी १८७८-१८३३

मैथिली शब्दकोष "मथिलि शब्द पुनकाश"क छेपक



कीर्त्यानन्द सिंह



टंकमाथ यौधनी १८८४-१८२८



महामुनीआनन्द मोहा १८८६-१८७०



कपठिसुवन महेश्वरी १८८७-१८८७

गाम सधेमपु, थागा- उजायिनपु, जिलि समस्तीपु। ❖सीतादास❖ पुस्तक मंडलसँ पुनकाशति।



वाठकृष्ण महेश्वरी १८८८-१८४८



वठेदेव महेश्वरी १८८०-१८७५

हगिक जग्न सहनसा जिलिक वनगौव गुनाममे १८८० ई मे एवं गचिन श्रमवनी, १८७५मे जेठवहो। पुनानमजमे पं गेगाठाठ यौधनीसँ ज्योतिषि पढी ई काशीमे पं सुधाकर-द्विवेदीजीक शिष्य जेवाह। वहुन वनष यनी सनसवनी महान (वानामसी) मे हसनविपिनि वलिगामे काम्य कएथ। पश्यात् पटनाक काशीपुनसाह जयसवाठ निसन्य संस्थानमे अनेक पुनयोग गिवनी हसनविपिके देवनागेमे विपियनानति कएथ ❖मथिलिभोद❖ पुनकाशन एवं मम मुनविधन हाक पुनोत्साहनसँ ज्योतिषिगो १८९० ईसँ ❖भोद❖मे विपि एठावाह हगिक पुनकाशति



आयान्य नामविधन शराम १८८८-१८७९

सीतामढीमे जग्न आ दनगंगामे म्णु। "मैथिली नामयनि भागस" सहति गृधसीदासक समसुन नयनाक मैथिलिमे छेपना। मथिलिकपनमे मैथिलिक पुनकाशनक पुनानमज केगहिन। पुनकाशन संस्था "पुस्तक शम्भान", छेलियासनाथ, पटनाक संस्थापक।



सीतानाम हा १८८९-१८७५

जग्न यौगामा गुनाममे १८८९ ईमे तथा गचिन १८७५ मे जेठवहो। संसकृामे ज्योतिषि शास्त्रक अनेक नयनाक अतिनिक्रि मैथिलिमे हगिक ❖अन्य यनि❖ (महाकाव्य), ❖सूक्तो सुधा,❖ ठिक ठकथाम,❖ ❖पठुआयनि,❖ ❖पुनवापन व्यवहार,❖ उगटा वसाग,❖ ❖अठकान दनपाम,❖ ❖शुकम्प वनामन,❖ ❖काव्य पट-नस,❖ ❖मैथिलि काव्योपवन,❖ आदी गुनवथ उपव्यव अछी। हगिक जीनाक मैथिलि अनुवाद सेहे उपव्यव

नयना अछि नामायस
शिक्षा, यज्ञ हा,
संस्कृत, गाना
शिक्षा, उप-सूप विक,
समाज आह। पम्पतिनी
यावत यनिपटना नहएह
वनावनि महिनमे एपिन
नहएह।



नामायस हा १८८२-
१८९८



वद्गीगाथ हा १८८३-
१८७३

जगम मधुवनी जाविक सनसिव
जानामे १८८३ ई मे जेठगही गथा
१८९४ ई मे ई काशी एग कएगिह।
वहुन एगि यनि ई मुनश्चनपुनक
यनमन समाज संस्कृत कंठेगमे
साहित्यक अयुधक छएह।
मैथिलीक विप्लान कवा वीकनी यथा
सुमगणी, मधुपणी, मोहनणी अह
हिनक शिष्य छथिह। संस्कृत
साहित्यमे हिनक अगेक नयना अछि
। जाहमे नाया पनासिय
(महाकाव्य) क सथा वशिपिठ अछि
। मैथिलीमे हिनक एकावठी
पनासिय (महाकाव्य) एक गवीन
कीनमिग सथापनि कएका कोनो
अर्थकानक दृष्टान्त नकवाक
हेतु एकावठी पनासिय पन्यापन
अछि।



जीवगाथ नाय १८८३-
१८६४



उमेश मशिन १८८५-
१८६७

जगम मधुवनी जाविक गजहला
जानामे १८८५ ई मे जेठ छठगही ई
एकहननि वनषक आयुमे १८६७ ई मे
पुनयागमे स्वगवासो जेएह। ई
अपन स्वगाम-यगय पति। म म
जयदेव मशिन तथा म म डा गंगागाथ
हाक सागनियमे वदियानाएन कएह।
१८९३ से १८५८ यनि मशिनणी



वालू धनुषधानी दास १८८५-
१८६५

मैथिलीमे वहिनी कविक अनुवाद पुनकाशनि।



अमनगाथ हा १८८७-
१८५५

सनसिव पाहीयेठ जानामे १८८७ ई मे
जेठ। हिनक वयिन पटनामे जायन ई
वहिन वीक सेना आयोगक अयुधक
छएह, १८५५ मे जेठगही ई एगहवाए
वसिववदियाएयक नओ वनष यनि
कृषपनि नही पसया हनिह
वसिववदियाएयक सेले कृषपनि पदके
सुशोभनि कएगही ई अंगनौक

एवाहाए वसिववद्विद्यालयमे संस्कारक पुनर्स्थापक छथि। एनरगल **मैथिली शोध संस्थान**क वद्विषयक पदपत्र कछि समय काल कए १९८२ सँ ६५ थगि कामेश्वर सहि संस्कारक वसिववद्विद्यालयक कुलपति रहल। मु मुनषियन हासै पुनर्जाति गए **मैथिलीमोड**मे ई छपिय पुनर्जाति कएवहल गथा अपन वसिय पुनर्जाति गथामे मैथिलीक गद्यकेँ समृद्ध कएवहल। मैथिलीमे हिनक पुनर्जाति गन्थ अछि **कमला** (सुकुसपीयनक **टेम्पेस्ट**क गवागवाए), **गठोपाय्याग**, **मैथिली-संस्कारि** गथा अनेक वनामगात्मक एवं आध्यात्मिक विषय; मनवोधक कृष्णार्जुनक सम्पादन, वद्विद्यापतिक कोनारिणा, कोनारिणाका, गोनकष वीरिय आदिक अगुवा-सम्पादन सेहो कएथि।



गोविन्द दास १९८३-१९७७

हिनक जन्म एनरगल जाणिक कसगौन मे भेल। साहित्य संगठनक आर्गनिज्म अपन संगठन कृषमना गथा मैथिली साहित्यिक सन्वर्धनमे विकसित हेतु सात गठन नहवाक कालमे गोविन्द वल मैथिली संसालक एक संगठनक रूपमे रहल। हिनक नियन १९७७ ई मे भेल। मैथिलीक पुनर्जाति-पुनर्जातिमे ई अपन जीवन समर्पित कएने छथि। पाठ्यक्रममे मैथिलीकेँ स्थान हे गहा हेतु ई वीर उद्योगरही। वद्विद्यालय सातक अनेक पोथीक निर्माता कएथि। मैथिली साहित्य परिषदक ई संस्थापक मासुठक सदस्य छथि। १९३१ सँ १९४० ई पत्रकार ओकर पुनर्जाति मन्गनी रहल। हिनक मन्वर्धनकामे **गामक** मासिक पत्रक पुनर्जाति भेल। एहिसँ पूर्व (१९२९-३१) कुशेश्वर कुमारीक संग संयुक्त सम्पादनमे **मैथिली** नामक पत्र यथोत्तर, ई नियन एवं पुनर्जाति वीरियक लेक छथि। गव छेपककेँ पुनर्जाति कनव, शैथिमे एकूपा आनव, नव पुनर्जाति मैथिली



कुमार गंगानन्द सहि १९८८-१९७९

जन्म **वैश्वि** गाणपतिनमे २४-८-१९८८, मन्थु-श्रीगण पुनर्जाति १७-१-१९७०। गुरुपुत्र शक्तिभक्त, वहीन एवं कुलपति, कामेश्वर सहि एनरगल संस्कारक वसिववद्विद्यालय गथामे **अधिवि** (अपूर्णा उपन्यास) गथा अनेक कथा एवं एकांकी। युगक अगुवा सामाजिक कुलीन आदिकेँ आया वनाए सुधानवादी दृष्टि कथा सजहकेँ गथामे।



वृन्मोहन गङ्गु १९८८-१९७७

पुनर्जाति वद्विद्यालय छथि, गहा संगे हिनके, उन्, आनसो, संस्कार, वडवा एवं मैथिलीकेँ सेहो अद्विष्ट वद्विद्यालय छथि। मैथिलीमे हिनका **वृन्मोहन** सम्पादन **हृन्मोहन** काल्य गन्वथावधि **गथा** **गोवर्धनासक** **गोवर्धनासक** **मन्वर्धन** **मन्वर्धन** अछि। एहिसँ गन्व हिनकेँ मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्षीय गथामे गथा अन्व छेप पुनर्जाति अछि।

साहित्य अंजनक पुनर्जागरण हिनक कर्तव्यवश वनी गेठ छथ । हिनक विषय मेथि वधाकाम तथा हिनकहि द्वाारा सम्पादन मेथि कुसुमांजलि वहुत दिने यनी वदियाँअमे पढाओठ जास । हिनक विषय अनेक गविगय समाधियवा, कर्वाता, संस्मनास, जीवनी-साहित्य मैथिलिक पुन-पुनर्जागरणे छडिआए अछी ।



शुभनेश्वर प्रसाद १८०२-

दरभंगा जिलाक वनीजी गाम, गविस गायसाहेव पोषनी छेनीयासनाथ। संशुभनी सुकूठ छेनीयासनाथमे १८३०-१८६४ ई यनी अयथापना मैथिलिमे "वाठ गामाथस" पुनकासिता।



जयगामाथस हा 'वनीगाम' १८०२-१८८१



गनेश्वर गाय दास वदियाँअकाम १८०४-१८८३



सुधाकाम हा "शास्त्री" १८०४-१८७४



दामोदर ठाठ दास वसिनाद १८०४-१८८१



ववुआणी हा 'अज्ञान' १८०४-१८८६

२००१- ववुआणी हा अज्ञान (पुनर्जागरण पासडव, महाकाव्य)अठ साहित्य अकादेमी पुनस्काम।



श्रीवठठना हा हाटी १८०५-१८४०



गामाथ हा १८०६-१८७१

जगद दरभंगा जिलाक उजाव (यनमपुनी) गुनाममे १८०६ ई मे एवं हिनक गविग दरभंगामे १८७१ ई मे ओठगहा १८३० ई मे अठजेठामे एठ ए कएठक वाद ई कर्तिक



काशीकावण मसिनी "मधुप" १८०६-१८८७

१८७०- काशीकावण मसिनी मधुप (गाथा वनिह, महाकाव्य) पुन साहित्य अकादेमी पुनस्काम पुनपुन मैथिलिक

वृक्ष यनी भयेपुन उय्य वदियाथयक
 पुनयागायथापक छथाह, ाकना वाद
 दनरागुडा-गाण-भस्वनेगीक
 पुस्राकाथयाययकथक नूपमे १८३६ सँ
 अगनामि समय यनी रहवाह
 । १८५२ सँ दर यगदुनयानी भथिथि
 क्ठांथणमे पुनो हा अडोणीक
 पुनायथापक नूपे काणका पस्यात् ओहि
 क्ठांथणमे भैथथि वगिगाययकथ
 वगाओठ गोवाह । १८६५ मे नमागाथ वायु
 साहित्य अकादमीक भैथथिक पुनागिथि
 गनुवायति मेवाह जाहि पद पन ओ
 जीवक अग्न समय ाक रहवाह ।

हगिक नयनाक क्थेण वहुन व्यापक छथ
 । हगिक अगुसंथागाणमक गविक दू गोठ
 संग्रह **अविद्यमाओ** तथा **पुनवेय**
 संग्रह **पुनकाशति** अछि । संकषि
 सम्पादति पुस्राक सगमे **भैथथि**
पद्य-संग्रह, **भैथथि गद्य-**
संग्रह, **पुनायीग जीग**, **कथा**
काव्य, **गवोग जीग**, **कवना**
कुसुम, **कथा संग्रह** आदि अछि
 । **कथासंग्रहाग**क आयान पन
 पुनागुठ गद्य शैथिमे हगिक **उदयग-**
कथा तथा **वननृथिकथा** वेस
 प्यगाि पओक । व्याकनासक **भथिथि**
 शाषा **पुनकाश**,
अठकुडापुनवेश आदि अगेक
 गुनगथ पुनकाशति अछि । **भैथथि**
 साहित्य पन् **तगैमासकि पन्किक**
 संपादक।

पुनस्राक कवना भैथथिक पुनया-
 पुनसाक सम्पाति
 कान्यकना **ईका** कवनासँ
 कानगािगीगक आववाग कएथगि ।
 पुनकाि पुनमक वथिकथम कवना
 । **घसठ अडुगी कवनाक छठ कथय** आ
शठिप-संवेदना दू संग्रह पन यनम
 लोकपुथिगा सेठथगि।



ठक्ष्मीनाथ गोसाई १७८३-
१८७२



मेहे दास

यनहना कोशि वनमगपी अरथि
 गाम नामागुगुनहवाठ
 दास आसन नयाभोहठवा, कुपुपाघाट, गगठपुन



वुयग गगान, संग १८२८-
१८८१



अनजान दास

भथिथिक पुनसद्वि गगान वायका



सुगेहणा १८०८-
१८८३



सुवांगाना सेगानी
सुवा नामसठ मामुठ

गाम- डगोडी, समसुतीपुनः पूनम
 गाम- कपछिंदव डकुन "सुगहण"।
 गामासुती १सकि समुपनदधक
 संगा हेगक १यति वैदेहे वविर
 संकोनग, वगिय
 पदावठी, शिवलामी, येनावगी, हूण-
 संकोनग, सोगावतगाम
 पुनवगधकाव्य आ
 सुगहणक- दोहावठी-कवगिण आर्दा
 मथिविक महिष वगु आ
 संकोनगकान ठेकगकि कंडमे
 पनवियापुन अर्धा आ ठेकमगठक
 अगुपुडगमे व्हापक नूपे व्हावह्ण
 अर्धा हेगक "वैदेहे
 वविर" मथिविक कोनगगिया गट्य
 पनपनार्के ठेकनुयकि अगुकूण
 वगोवे अर्धा



सुगहण हा "शासुती"
 १८३०-१८८८

पगकपुन, वेपाव, युवावस्थाक पोठक
 हुनठन थोटोवेपाव पुनपुन
 पुनगिडगक मागह सटसुपगा- सुव
 सुगहण हा शासुती।



कांज्यीगाथ हा "कगिस"
 १८०६-१८८८

पगम सुथाव-सुनपुन,वेहवा
 गोट, दनगंगा वहीन। मैथिली गाय
 आंदेठगमे महवपुनम
 दूमिका **पनाशन** महाकाव्य ठेग
 साहित्य अकादमी ओ **कथा**
कगिस ठेग वैदेही पुनस्कानसं
 समुमागति। पुनकाशति कःणिः
 यंदनगनहस (उपग्यास), वीन-पुनसुन
 (वाठकथा), पस पगमदूमि
 (एकको), वगिण
 वदियापगि (गटक), कथा-कगिस
 (कथा-संगुनह), कगिस-
 कवगिणवठी, कगेक दगिक वाद (कवगिण-
 संगुनह), पनाशन (महाकाव्य) ओ
 कगिस-गवियावठी (गविय-संगुनह)
 आर्दापिददद- कांज्यीगाथ
 हा **कगिस**
 (पनाशन, महाकाव्य)पन मैथिली मे
 साहित्य अकादमी पुनस्कानसं
 समुमागति।



सुधामागवह हा १८०६-
 १८४८



वैशिलीमे रामक



नमोनाम ह्य, गोपा १८०७-१८७१



हनिमोहन ह्य १८०८-१८८४

हनिमोहन ह्य १८३३ मे कल्याण (उपन्यास), १८४३ मे "द्विगोपम" (उपन्यास), १८४५ मे पुनासमय देवना (कथा-संग्रह), १८४८ मे गोसाव (कथा-संग्रह), १८६० मे यनयनी (कथा-संग्रह) आ १८४८ ई मे प्यट्टी ककाक नंग (व्यंग्य) अछी म्पोपनी १८८५ मे (गोपना धारा, आत्मकथा)पुन मैथिलीक साहित्य अकादमी पुनस्कासँ सम्मानिता।

ईशनाथ ह्य १८०७-१८६५

वृहस्पती पुनाशिक कवी। पुनाथीन आ गोपना पद्यक काव्य-नयनाक विक्रम संयोग हनिमोहन ह्यक जेठे अछी। एहि वन, सोपनाक समस्या, स्वदेश प्रेमक प्रथानयन नयनाक संग संग व्यक्तित्वक कल्पनाक अनेक वसिष्ठ कवी। मैथिलीमे विपिन।



काविकांग ह्य १८०८-१८८४

मूठ गाव डंग (हनुमान), मधुवनी। सेना नाक वनवट्टी। उवाहा, भाषा- मदनपुन, पाणि-पुनासामे वसिष्ठ देवना साधना (मधुवनी), मदनपुन आ काशीमे पासावी व्याकरणक अध्ययन "हनुमान यति"क छेपका।

गुणेश्वर सहि 'गुणेश्वर' १८०७-१८४४

अपन पाठिक वृहस्पती पुनाशिक कवी। पुनाथीन आ गोपना नाक कवीक नयना विपिन संख्यामे कएछी। गुणेश्वर नागी कवी। संकठ पुनासामे मैथिली आ नव नयनाक रूप सुकएवा।



गोपनाथ ह्य १८०८-१८८४

गोपना १८०८ ई मे एनंग। पाठिक यनपुन गानमे ओहहो मुन ४-५-८४, यनयनी मैथिली कोंछेमे अथसासुनाक पुनायापक छेवा। अवकास गुणेश्वर क काव्य साधनामे उवाहा रहैवा। महाकाव्य, मुक्ताक, एकांकी सभ वयोमे ई सहिय हसुन छेवा। हनिमोहन कौथक वय महाकाव्य अठोनीक वृष्कूठ नस (अभिनवाकषण छेवा) म विपिन अछी। मैथिलीमे सोनेट एवं वृष्कूठ नसक ई प्रथम पुनासना थिके। संस्कृत पुनासनामे काव्य नयना करिहुँ पास्यानय शैलीक नवीनता हनिमोहन नयनामे ओ। हनिमोहन कौथक वय ओ कषम यति महाकाव्यक मङ्गा-पत्रयासिका एवं नमस्या मैथिली साहित्यमे अपन वसिष्ठ स्थान नपैछ। नकन आनिकी मुक्ताक काव्यमे वसिष्ठ वसुनाक व्यापकता एवं शिल्प शैलीक पुनयना अथेन अछी। एक दिस यहा पुनाथीन डंगक ईश्वर वनवट्टीक नयना कएछहो दोस दसि सोनेट (युनिसपदी) वृष्कूठ आदि विपिनमे पुनास सञ्चन। पुनापन कएछहो। कषम यति महाकाव्य पुन हनिमोहन १८७८ ई क साहित्यक अकादमी पुनस्कासँ ओहहो। १८८० ई मे हनिमोहन अनाथवट्टी गुणेश्वरसम्पाति कए ओहहो।



जीवनाथ हा १९९०-१९७७



सुमेन्द्र हा 'सुमन' १९९०-२००२



पं नामयन्द्र हा १९९०-

गाम नौगी काशी मथिषि
ग्रन्थमालिक सम्पादक

जन्म: जाम: वठ्ठीपुन, जशि-समस्तीपुन।
पुनकाशी कर्ता: पुनपिडा, अन्थना, साओन-
वाडव, अकावठी, अगन्वाड, पयस्वर्गी, उगना
आदी गोससे अथकि मोषिक कर्ता।
पुस्तक: पुनुष-पनीक्षा, अगुगीगांजशि, ऋतु
संज्ञान तथा वनसतनाकन, पाणिजा-
हाम, क्षमाजन्म, आगवड-वजिय आदी
कनपिय ग्रन्थक अगुवाड-संपादन; **मैथिषि**
काव्य पन संस्कृतक पुनशाव **गामक**
समीक्षा-गंथया **पयस्वर्गी** **७७ १९७९** मे
साहित्य अकादेमी पुनस्का
नया **उगना** पन १९९८ मे मैथिषि
अकादेमीक वदियापति पुनस्का पुनपु।
मैथिषिक पुनथम दैगिक पन **संवदशक**
उव्यपनपिठ सम्पादक १९८९- सुमेन्द्र
हा **सुमन** **नवीन्द्र**
वाटकावठी- नवीन्द्रनाथ टैगोर, वांजुवा)७७
साहित्य अकादेमी मैथिषि अगुवाड पुनस्का।
२००० ई- **पुसुमेन्द्र**
हा **सुमन**, **दगंभा**; **धात्री**-येनवा
पुनस्का।



'गागापुग' वैद्यनाथ मसिन 'या
त्री' १९९९-१९८८

जन्म अपन मामाजाम साठपामे श्रेष्ठहा, जे हुनकन
गाम नौगीक समीपहमे अछि, जशि-दगंभा। मूठ
गाम: वैद्यनाथ मसिन। हिनदिमे गागापुग गामे
पुनप्यात। पुनकाशी कर्ता: यिना, पत्नहिन
गान गाछ मैथिषि कर्ता।
संग्रह); पानो, वठ्यनमा, नवतुनिसा (मैथिषि
उपन्यास); युगधाना, सगंठो पंपोवाषि, प्यासी
पथनाई आंमे, प्यिडी वपिठव देया हभगे, तुभगे कहा
था, हजाम हजाम वाहे वाषि, पुनागी पुनसि का
कोनस नानगान्ना, ऐसे श्री हन क्था ! ऐसे श्री तुम
क्था ! (हिनदि कर्ता-संग्रह); नागाथ की
याथी, वठ्यनमा, नई पौध, वावा वटेसनगाथ, वृत्तम के
वेटे, दृष्यमोयन, कुम्भोपाक, अशनिगुडन, उगनामा,
समनसिया (हिनदि उपन्यास); आसमान मे यगदा तैने
(कहावी संग्रह); तस्मांकुन (हिनदि पाम्पड



आनसीपुसाद सहि १९९९-
१९८८

जन्म: जाम-सगौन, जशि-समस्तीपुन।
पुनकाशी कर्ता: भाटकि दीप, पूजाक
श्रेष्ठ, सून्यमुष्मी (कर्ता-संग्रह), मेघुन
(अगुवाड), आनसी, नगददास, संगीवगी (हिनदि
काव्य संग्रह); **सून्यमुष्मी** **७७ १९८४** मे
साहित्य अकादेमी पुनस्का पुनपु।



गुनु जयदेव मसिन १९९९-
१९८९ शशिपु गंगगाथ हा

काव्य); अन्नहीनम् कृषिहीनम् (नविनय-संग्रह); गीत गोरविन्द; मेघदूत; वह्न्यापत्तिके गीत, वह्न्यापत्तिके कहानियाँ (अनुवाद)।
 • पत्रहीन गान् गाछ • छेठ १९६८ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त। यायावनी जीवग।
 मैथिली पत्रावधिके रूपमे नूतन गनमस। बागामुज (सुप्र श्नी वैद्यनाथ मशिन • यात्री •), हिनै आ मैथिली कथा, १९८४ ईमे साहित्य अकादेमीक श्रेष्ठे (भागत देसक सर्वोच्च साहित्यक पुरस्कार)।



प्रशोवन दा

मैथिली वैभव, दृशक मैथिली पोथीपत्र १९६६ मे पहिल साहित्य अकादेमी पुरस्कार मैथिली छेठ प्राप्त।



वैद्यनाथ मठुरिक 'वधु' १९१२-१९८७

१९७६- वैद्यनाथ मठुरिक • वधु • (सोनासन, महाकाव्य) छेठ मैथिलीक साहित्य अकादेमी पुरस्कार।



जीम दा १९१२-

पुनर्माया पत्रिक मदनपुर गामक। पत्रक प नवम्बर १९१२ ई। वनेधिक श्नी स्यामागवद सहिक अध्यक्षतामे • वातावरण संकीर्ण महामुठुठुठु • क स्थापना।



नायागाथ दास १९१२-



उपेन्द्र गिहू 'मोहन' १९१३-१९८०

पत्रक १९१३ ई मे दनगंज पत्रिक यतयि गाममे गेठगही। म्पु २४-५-१९८०। संस्कृत शि्षामे साहित्यायात्रय ओ वद्रीदा गामक वह्न्यापत्तिके • साहित्य-गान्क • उपार्थसि वशिषाति गेठग। दैगिक आन्यावन्तमे आदिअहिसे, पश्यात् १९६० सँ मैथिली महिनिक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपे कात्र्य करैत् १९७७ मे सेवा गवित् गेठग। मोहनजी करीव पयास वन्ध साहित्य साधनामे गगठ रह्यह।
 वज्रिदागवद, कुंजगण, सुदृशक, पुनःकीक, शास्त्री, वालग आदि छद्म नामसँ पत्र-पत्रिकामे वविये वषिषापन हगिक छेप्य सत्र प्रकाशाति गेठ अछि। मोहन जीक • वापि उठठ मुनथि • मे १०१ गोट कर्नातिक संकठग अछि। गहमे हगिक सुदीन्ध काव्य-आनायगाक वशिषाति वयिायनाक ओ वशिषाति अनुश्रुतिक सामग्री उपठव्य अछि। एहि पुस्तकपत्र मोहन • जीके १९७८ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार गेटठगही। एहिसँ वहुत् पुनःव हगिक • सुठठठठठ • गामक कर्नाति संग्रह सेहो प्रकाशाति गेठ छठ।



पत्रगाथ मशिन १९१३-१९८५



श्रीकांकु ङकुन "वदियाथंकान"



पञ्जीकाण मोदानन्द हा १८१४-१८८८

उवय यौन पञ्जीशास्त्राण मानानाम् उ पञ्जीकाण मोदानन्द हा, शविणगण, अनन्या, पूनासाया। पति-सुव श्नी शिपिया हा। गुनु- पञ्जीकाण शिपिया हा। पूनासाया जाविक वधैषी उाक शविणगण गामका। जणम रर सतिम्वन १८१४ ईसौनाउमे अपन भौसा सुव छुटाहा सै पञ्जीशास्त्राणक अय्ययना १८४८-१८५१ ई धनदिनंगामे नही आयाअय नमानाथ हाकेँ पौजा पदअथनीशास्त्रानय पनीकृषा- दनंगामे। महानाण कुमान जीवेश्वर सलिक धण्मोपसोण संस्कानक अवसन पन महानाणयनाण(दनंगामे) कामेश्वर सहि दवाना आयोणानि पनीकृषा-१८३७ ई जाहमे भौयिक पनीकृषाक मुप्य पनीकृषक मम उाँ सन गोगावाथ हा छवहा।



आनन्द हा १८१४-१८८८



डोक्यो हासेगावा, गदिसक भथिा
छा म्यूजायिम, गगोटा



भाँगणियवास १८०८-१८४३ संगीणज्म

पयाछयिमे जणम आ अउप वसमे म्ाया पयाछयिक नायवहाइ। उकृषमोवानायाम सलिक शिपिया।



नामास्नय हा 'नामंग' अशनिव
शाणयाम् उे १८२८-२००८

जणम ११ अगसण १८२८ ई गदगुसाणगाइ। कृषमपकृष एकाइशी गथिकेँ मयुवनी जाविलानगण यण्णाना नामक गाममे जेउवहा। अशनिव गौाणवी, हुनकन उय्यकोटकि शास्त्राण यथना अछामिथिविवासी श्नी नामंग गण गोननुकणानि, गण वेदेही मैनव, आऽ गण वदियापना कृष्याम केन यथना सेहे कएने छथि आऽ मैथवि शापामे हनिकन पयाउ नपयानि श्नि गणः केन अगुण अछि।



अनयनानायाम मठ्ठकि



गामयतुन मउठकि युनुपद संगीत
१८०५-१८८०



संगीतायान्य गायवहदुन उकुषमी
गागायाम सहि



संगीत गाभूकन गाणकुमान सूया
माणद सहि १८१६-१८८४



वालू साहेव यौधनी १८१६-
१८८८

दनांशा। जाविक दुवनापुन गामका १८४३ ई मे
जीवक्रान्थ कउकना। अउवाहा गवम
ककषामे सवनापुन आदोउगमे वाही कए
साकषाक धोसिनी। कउकनामे सुथानी
मैथिलि संघमे पुनवेसा कउकनामे मैथिलि
आनू पुनेस दू, पावित घोष
उन, कउकना-७०००६ सँ मैथिलि-मथिलि
आदोउगमे
सकनीया। कुहेस आ यामकय दूटा
गाटका १८७१-७८ यनी। मथिलि
दनुसग आ मैथिलि दनुसग मैथिलि
भासकिक सम्पादना



पंडति परमाणद यौधनी, संगीतज्ञ



मथिऐस कुमान हा, नवठा वादग



उकुषमस (उयन) हा १८१६-
२०००

मथिलि नापु अशयिनी।

कुमान गानागद सहि, संगीतज्ञ
म



हृदयनागायाम हा



गागेश्वर ठाठ कनास, नवठा वा
दक



सुदयदेव हा 'उनुपठ'
१८१६-

गोडडा जाविक अवपदना-
महेनपुनक गवासी। जगम १६
अकूटवनी १८१६ ई।



नामयन्ति पाम्सेय "अशु" १९९७-२०१०



भूप्नीनाथ हा मथिथि यन्तिकठा १९९७-१९९०



उपेन्द्र नाथ हा 'व्यास' १९९७-२००२

जन्म स्थान-हपिण वकशीये, मधुवनी, वहिन। १९६९-उपेन्द्र नाथ हा व्यास (हपिण, उपेन्द्र नाथ) हे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानाति। साहित्य अकादेमीक अनुवाह पुरस्कार प्राप्त। प्रकाशित कृति कुमान, हपिण (उपेन्द्र नाथ), वडिवना, गणना गणने (कथा-संग्रह), पाण संख्यासी, प्रतीक (काव्य), महाभारत (पहिले हपिण) आदि।



महमोहन हा १९९८-२००८

जन्म सतिसवने, अशुक्रम, वीरगोत्रा, मथिथिक गशिपुनमे २००८-सुवममोहन हा (गंगापुत्र, कथासंग्रह) पर म्प्रेपना साहित्य अकादेमी पुरस्कार।



व्वाजकेशी वरना 'महामिदम' १९९८-१९९६

जन्म स्थान-वहेडा, दनाशा वहिन। १९७३-व्वाजकेशी वरना महामिदम (वैका वगिणा, उपेन्द्र नाथ) हे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानाति। उपेन्द्र नाथसकान, कथाकान ओ कवि। प्रकाशित कृति कोवनागुण, कनकी, अन्वयनीश्वर, वीक वीथि, वैका-वगिणा, अवहनि-कुशहनि, नास नामपाठ, आदि गुण आदि उपेन्द्र नाथ ओ कंठहल (गटक) आदि।



पं सहदेव हा १९९९-

"मथिथि की योहन" पोथी प्रकाशित।



वुद्धयन्त्री सहि नमाक १९९९-१९९९



आध्यायनाम हा १९९०-



यग्नागान सहि १९९२-

जगम मधुवनीमे १९९८ ई मे जेठ । अपन पतिो सुत्र कृषेमयानी सहिसै व्रिजोतिन वसिधक शक्तिषा गुनहाम कएएवहो ई नामक ्षाम कंठिण, मधुवनीक मैथिली व्रिजोगायकष छवह । जगएसै अवकास पुनापन कएएवहो । वएषा-वस्यहसै ई कविकामधमे ठाठ नहवह अछी । संस्कृा तथा मैथिली दुनु भाषामे हगिक नयना पुनकाशति अछी । यथा ॥मैथिलीमे ॥पुनयास ॥ (कथा-संग्रह), ॥मधुमती ॥, ॥अमनवापू ॥ (कवतिा-संग्रह), ॥शनशय्या ॥ (पं०-काव्य) ॥सुमंा साहसुनी ॥ (महाकाव्य) आदी ।



सुयांशु शेखन चौधनी १९२२-१९८०

जगम एनंगोाक मसिनटोमे १९२२ ई मे जेठवह तथा म्ापु १९८० ई मे जेठवह । कछि दिग व्रिजोतिन जीवकामे नहो पस्यार्त साहित्यकानक जीवग पुनमन कएए । कछि दिग ॥वेदेहे ॥क सम्पादन सुनी सुमगणी एवं सुनी क ्षामकाना मसिनगीक संग कएए न्ापस्यार्त १९८० ई सै १९८२ ई यनी पटगामे ॥मैथिली महिने ॥क सखेठ सम्पादन कएए हगिक दू गोठ नाट्यकंाति ॥मश्वान याहक जीवगो ॥, पेदासन औयन ॥, तथा ॥पहरे सौह ॥ हगिक नाटकक गीक व्पावहानिक अगुभवक पनीयायक अछी ।छद्मनामसै हगिक दू गोठ उपनयास महिने ॥ मे पुनकाशति जेठ अछी । हगिक उपनयास ई वतहा संसा ॥ जो मैथिली अकादमी द्वारा पुनकाशति जेठ आ जाली पन १९८० क साहित्य अकादमीक पुनस्कान देठ जेठ ।



नामक ्षाम हा 'कसिुग' १९२३-१९७०



जोवगिद हा १९२३-

जगमस्थान- इरहपुन, सनसिव पाही, मधुवनी, वहिन । सहिय कथाकान, उपनयासकान, नाटककान, भाषा व्रिजोानाक ओ अगुवदका साहित्य अकादमी पुनस्कान, साहित्य अकादमी अगुवद पुनस्कानसै सम्मानागति । वहिन सनकानसै कामठि वुक्के पुनस्कान, गुनधिनसन पुनस्कान आदिसै सम्मानागति । पुनकाशति कंाति उपनयास, नाटक, कथा, कवतिा, भाषा व्रिजोान आदि व्रिजोतिन वसिधमे अउगीस टा पोथी पुनकाशति । पुनकासनः सामाक पोती,नेपाथी साहित्यक इतिहास (अनु) आदी । १९८३- जोवगिद हा (सामाक पोती, कथा)पुसतक जेठ सहित्य अकादमी पुनस्कानसै सम्मानागति । १९८३- जोवगिद हा (नेपाथी साहित्यक इतिहास- कुमान पुनयाग, अंगोेजी) जेठ साहित्य अकादमी मैथिली अगुवद पुनस्कान । पुनवोय सम्मान २००६ सै सम्मानागति । व्रिदि सम्पादकक समानागती साहित्य अकादमी खेठे पुनस्कान २०१० (समगुन योगदान जेठ)



उमागाथ हा १९२३-२००८

२००४- यवद नगानु सहि (शकुनाग, महाकाव्य)जेठ साहित्य अकादमी पुनस्कान ।



जोगानगद हा १९२३-१९८६

हगिक जगम मधुवनी जाठिक कोइठप्य गुनाममे १९२३ ई मे जेठवहो । म्ापु १९८६ मे जेठवो । अंगोेजीमे एन ए कएएक पस्यार्त ई कछि दिग यवद नयनी मैथिली कंठिणमे पुनाय्यापक नहवह । वहिन पुनसासनाकि सेवामे १९८१ यनी व्रिजोतिन पदपन काय कएए । न्ापस्यार्तमैथिली अकादमीक गदिसक ॥८४ यनी जोगानगद हाजी मैथिली साहित्यमे अपन उपनयास ॥अठमानुस ॥ एवं ॥पवतिगा ॥क हेतु प्प्यात छथी । हगिक नाटक ॥मुगकि मनाशिनम ॥ एवं कथा संग्रह ॥उडेा वंसी ॥ यथेष्ट पुनविधि पुनापन कएए अछी । एकर अनिकिता ई महान्मा गागुयोक आत्मकथाक अगुवद एवं ॥आमक जाठप्यनी ॥ नामक एक कथा संग्रहक सम्पादन सेहे कएए छथी ।



पठासंकन दास १९२३-२००६

आयुगिक यानाक वसिष्ठि
कवी, कथाकार, यज्ञिक। पुनकाशति
कृति: आत्मवेपथु (कविता
संग्रह), मैथिली नवकविता
(सम्पादन)।



पुनवोध गानायाम सहि १९२४-
२००५

हगिदी, संस्कृता, मैथिली, पाषी एवं आनसीक
वद्विवादा। मैथिली, मैथिली एवं मैथिलीक ई अगन्ध
गकृता छथी। ककृता। नहि मैथिली
दृशग, मैथिली कविता। मैथिली
गामंथ। आदिपुनकिक पुनकाशक
मायधमसँ श्रुती पुनवोधजी मैथिलीक जे सेवा
कस्य अछतिकन वनामन थोड़मे समुगन गही।
अनेक वडवा कृति ई अगुवादे सेहो कस्य
अछि। हगिदीमे सेहो हगिक कविता।
संग्रह। पुनकाशति अछि। ककृता।
वसिष्ठवद्विवाद्यमे हगिदीक पुनव अय्यकृष।
२००२- ०३ पुनवोध गानायाम सहि (पुनहडक
सुवन- कुतुमुष एग हेद, उगु) छि साहित्य
अकादेमी मैथिली अगुवादे पुनसुका।



मुनविधन सहि, वनामोहन गकुन
, सुगंकन हा, मदेगेश्वरन मसिन १
९२४-
२००४, छठि गानायाम मसिन, दे
वगाथ गाय

पुनम-०१-०१-१९२३, म्पु ०७-
१२-२००९ महनेष, ययुवनी। पुनपुन
अडनेजी वशिष्ठाय्यकृष एवं पुनति-
कुषपति मैथिली
वसिष्ठवद्विवाद्य, दृशग।। नयगा-
नेपायतिग, अतीत (कथा
संग्रह); मैथिली नवोत
साहित्य, इगुद नवुष, वद्विवापति
गीतसती
(सम्पादन)। १९९७- उमागाथ
हा (अतीत, कथा) पुन मैथिलीक
साहित्य अकादेमी पुनसुका। नसँ
सम्भागी।

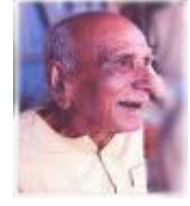


मदेगेश्वरन मसिन १९२४-
२००४

"एक छथिह मलानगी" पुनकाशति।



मनगाथ मसिन मंग १९२४-



अमोघ गानायाम हा "अमोघ"
१९२४-



आगुद मसिन १९२४-
२००७



डॉ. जयमंगल मशिन १९२५-२०१०

जन्म १५-१०-१९२५ म ुल्लु ०७-०९-२०१०, गाम-ढंगा-हनुमान-मजराहा।

१९८५- जयमंगल मशिन (कविता कुसुमांजलि, पद्य) छेव साहित्य अकादेमी पुनस्का- मैथिली।



यगद्गनाथ मशिन अमन १९२५-

जन्म: प्योणपुन, मधुवनी। वनविड कवि, कथाकाल-उपगथासकान। हास्य-व्यंग्यक कवितामे वेजोडा मैथिलीक छेव समनपति व्यक्तित्व। पांय दनाजसं वेसो कथा आ वीदिगनी, वीनकथा (उपगथास) जठ समाधी (कथा संग्रह) पुनकाशाति। १९८३- यगद्गनाथ मशिन **अमन** (मैथिली पत्रकारिताक साहित्य) छेव साहित्य अकादेमी पुनस्कासं समनगति। एम ए छेव एकेडमी, छेव निदेशिसनायसं शिक्षकक रूपमे अवकास प्राप्ता। आशा दशि, गुदुदुही, युगयक, उगटा पाठ आदि कविता संग्रह पुनकाशाति। १९८८- यगद्गनाथ मशिन **अमन** (पत्रकारिताक वीछेव वेनायठ कथा- नापसेपन वसु, वांग्वा) छेव साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुनस्का। यगद्गनाथ मशिन अमन २०१० मे मैथिली साहित्य छेव **साहित्य अकादेमीक सेवे** (जान दसक सन्वय्य साहित्यक पुनस्का)।



मुक्तागिाथ हा (१९२६-२००९)



शुभंकन हा १९२६-



दीगनाथ पाठक 'वग्यु' १९२८-१९६२



अनं वहीनी ठाठ दास "रगु" १९२८-२०१०

२००७- अगना वहीनी ठाठ दास **रगु** (पद्य आ योदया-अम सहि गति, गेपाठी) छेव साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुनस्का।



कृष्णकागल मशिन १९२८-२०००



जगदागद्ग हा १९२८-



दुग्गागिाथ हा "सुनीस"

हगकन जन्म मधुवनी जिलाक वरिद्रे गाममे १९२८ ई मे जेठवहा हगिदी आ मैथिलीमे एमए आ वीएड केवाक



नाशचन्द्रमठ यौथनी १९२९-१९६७

महावि, सहनसा। नयना:- आदी कथा, आनंदोत्तम, पाथन श्रुत (उपन्यास), स्वनांथा (कवित्त), संग्रह), उत्कृता पाठ (कथा संग्रह), कथा पनाग (कथा संग्रह समुपादन)। हिनैमे अनेक उपन्यास, कवित्तिक नयना, यौनश्रुती (वडवा उपन्यासक हिनै नूपावना) आनयन पनसदिया



शैथेनदुन मोहन ह। १९२९-१९९४

१९९२- शैथेनदुन मोहन ह। (सननयनदुन वृषकर्ता आ कर्ताकन-सुवोधयनदुन सेन, अंगुनांगु) अहाहिन अकहिनो मैथिलि अनुवादन पुनसका।



प्रशिवनाथ ह। "वशिपाथी" १९२९-२००५

"नाम सुधस सांगन" मैथिलि नामासाम) १९९० ई. मे पुनकाशति। २५ नववनी २००५ कें मर्तु।



प्रशिवनाथ गकुल १९२९-२००८

वादन कछि दनि सकुठमे अयुपापन, श्रुत मठिठान कंठिठान, अहिनयिनासामे मैथिलि आ हिनै वशिठानक अयुधकथा मैथिलि भाषामे पहिले पिलयु डी। "शुनीस" ठीक मैथिलिमे पुनकाशति नयना अछि- "मैथिलि साहित्यिक इतिहास", "शुवन शानति" (समुपादन), "महामत्स्य ओ मनु" (कवित्त), "वाटय कथा सांग" (समुपादन), "पुनपाथ" (पद्य वाटक) आ अनेक कवित्त, एकांकी आ आठियनात्मक नविवनय।



नयथानी सहि १९२९-२००७

समीकषक, कवित्त पुनकाशन: वैदिकनाममे नात्मिक सदियान, समीकषा शास्त्रा अदी नामकषम कंठिठान, मधुवनीमे मैथिलि वशिठानक पूनव अयुधकष।



नमेशयनदुन वना १९३०-



**गोपाथणी हा 'गोपेश'
१९३१-२००८**

जन्म मधुवनी जिल्हाक मेहथ गावमे
१९३१ ईमे जेठवर्षाहिनिक
१५दिने **सोमदासक थेटडी**,
गुम जेठ गढ छी, **एवम**
आव कहु मग केहन छौए,
"मयागक पाग" पुनकाशति जेठ
जाहिमे सोमदासक थेटडी वेश
विक्रपासि जेठ २००८ ई-सुती
गोपाथणी हा
गोपेश, मेहथ, मधुवनी:यात्री-येतावा
पुनस्कान।



विक्रानन्द गुरू १९३१-

२००५- विक्रानन्द गुरू (यागव घव
गच्छिया, पद्म)मैथिली छेठ साहित्य
अकादमी पुनस्कान।



नालाकांत मिश्र १९३१-



उदित १९३२-१९८३

जन्म स्थान वसैंड यागपुना
मधुवनी, वहिल। पुनसहित्य कथाकान
ओ उपन्यासकान। पुनकाशति
कानि: पुननिधि, (कथा
संग्रह), पत्रो-पुन (उपन्यास)
अदी



मुनानि मधुसूदन गुरू १९३२-

नासिकान वडोपाय्याथक वंगु
उपन्यास "आगुय वक्रान"क मैथिली अगुवा
छेठ साहित्य अकादमीक अगुवा
पुनस्कान १९८८ जेठ छवही



वदियानायाक गुरू १९३३-



धर्मकेतु १९३२-२०००

जन्म स्थान
कोरछप, मधुवनी, वहिल। पुनसहित्य
कथाकान, उपन्यासकान ओ कवी।
पुनकाशति कानि: दू टा कथा
संग्रह ओ एक टा उपन्यास।



नानानंद हा १९३४-

जन्म स्थान कुमवाजातिपुन, वैशाखी, वहिल। पुनप्याग
कथाकान ओ संपादक। आर कावर्षी पुनसू (कथा-संग्रह) छेठ
१९८८ मे साहित्य अकादमीसँ सम्मानति। पुनकाशति
कानि: एक आदीएकांग, दू सौंथ, एकटा
तेसन, अगुगनक, आर कावर्षीपुनसू (कथा
संग्रह), गजतीनामा, गनही



**डॉ धियेनन्द १९३४-
२००४**

जन्म स्थान वेलगा, मधुवनी, वहिल
। पुनसहित्य कथाकान, उपन्यासकान
ओ कवी। पुनकाशति कानि: कुहेस
आ कानिस, पदासक धूनक
आगा, शानूपा ओ मगु अपन मन्दन
(कथासंग्रह) हैगमे टांगठ

वर्द्ध्यापत्ति, टीपुपसीतुयादी (आवियवा)। ❖आनमन्❖ पत्रिकाक
संपादन/पुनवोध सम्मान २००८ सँ सम्मानगति।



रामेश गानायाम १९३४- २०११

गाम- रामेश गानायाम दास, जन्म १५ मार्च १९३४ कें मधुवनीक वहेना गाममे। पति-शुनी
हानिबिछन ठाँव दासा शिक्षा मधुपुन, मधुवनी
आ पटनामे। १९६१ ईसँ १९८४ ई. धरि
एएन के.ओ.ए. पटनामे हिनदी विभागेमे
अध्यापना पाथक गज मैथिली कथा
संग्रह, १९७२) पुनकासति। म.पु. १२
जानवरी २०११ कें पटनामे।



वावू सुनी सत्यगानायाम सहि आ नाचवायान्य

कोट, काठहँ ओ आर (कविति
संग्रह) सहिति केक त्रियामे चित्रित
पोथी।



मायागन्ध मशिन १९३४-

हिनक जन्म १७ अगस्त १९३४ ई. कें
सुपौठ जिलाक वनौरीसँ गाममे
जेठगोलाडक ठोटा, आगामोम
आ❖ पाथन आओन यगन्-
विगद्- हिनक कथा संग्रह सभ
छद्दही वहिङ्गि पाठ पाथन , मंत्न-
पुत्न ,प्योना आ❖ यडि
आ❖ सुन्यासग हिनक उपन्यास
सभ अछो। दिसागत हिनक कविति
संग्रह अछो। एकर आनिक सोने की
बैथ्या भयो के ठोटा, पुनथम श्रेष्ठ पुत्नी
य.मंत्नपुत्न, पुनोहिति आ❖ सुनी-
धन हिनक हिनक क.ाति
अछो। १९८८- मायागन्ध
मशिन (मंत्नपुत्न, उपन्यास) पुन
मैथिलीक साहित्य अकादमी पुनस्कासनसँ
सम्मानगति।

पुनवोध सम्मान २००७सँ सम्मानगति।



गानायाम राम १९३५- २०११



सोमदेव १९३४-

उपन्यासक ओ कवि साहित्य
अकादमी पुनस्कासनसँ सम्मानगति ।
पुनकासति क.ाति: यानोदाइ, होटल
अनारकली (उपन्यास), काठ युवनी
(कविति संग्रह), यनेवेता (गोति
गाट्य) सोम सासर
(दोहा)। २००२- सोमदेव (सहस्रमुष्मी
यौक पुन, पद्य) छेठ साहित्य
अकादमी पुनस्कासन २००१ ई. - शुनी
सोमदेव, दनशंगा: धान्नी-योवा
पुनस्कासन, पुनवोध साहित्य सम्मान
२०११।



गानायाम ठाँव दास १९३४-

"कामासनक"क संपादन "यतिना-
वयित्तिना" पुनकासति।



महानन्द गोस्वामी १९३४-२०११

जन्म स्थान
उसमाना, दानापुर, बलिया। वनस्पति
कवि, कथाकार और उपन्यासकार।
साहित्य अकादेमी पुरस्कार से
सम्मानित। प्रकाशित कृतियाँ:
कथोत्तर, प्रकृति, अतीत
आकाश (कथा-संग्रह), दृश्य
(उपन्यास), अन्तः, ओकरे नाम
(कविता-संग्रह) २०००- महानन्द
गोस्वामी (कठोर नास वात, पेट) से
साहित्य अकादेमी पुरस्कार। वह
सम्पादक समाचार पत्र साहित्य
अकादेमी से। पुरस्कार
२०११ (समग्र योगदान से)



**क. क. सिंह हा "वृक्ष"
१९३४-२००८**

हजिक जन्म, महानन्द गोस्वामी
उपन्यासकार कर्मचारी
समसूचीपुर जिला कर्मचारी
गुनामने १९३४ ई मे जन्मा। पति।
स्व. पं. जिला जिला हा गामक
मध्य वृद्धिवाचक प्रथम
प्रधानाध्यापक छवै। माता
स्व. कवि देवी ग. लीमा छवै।
आनन्दनाथ समसूचीपुर
काठमाण्डू, समसूचीपुरसे कर्मचारी
पशुपति बलि सनकालक प्रथम
कर्मचारी रूपमे सेवा प्रदान
कर्मचारी वाहे कर्मचारी
छपने वषिसूची छवै। मैथिली
पत्रिका - मैथिली
महिलि, माटी- पाना, माया तथा
मैथिली अकादेमी पटना द्वारा
प्रकाशित पत्रिका मे समय - समय
पर हजिक नयना प्रकाशित लेख
लेखनी। जीवनक विविध वषिके
अपन कविता एवं गीत प्रस्तुत
कर्मचारी साहित्य अकादेमी द्वारा
द्वारा प्रकाशित मैथिली कथाक
विकास (संपादक डॉ. वासुकीनाथ
हा) मे हास्य कथा कालक सूची मे
डॉ. वृद्धिवाचक हा हजिक
नयना कर्मचारी शास्त्रानुयायक
उपेक्ष कर्मचारी मैथिली अकादेमी
पटना एवं मैथिली महिलि द्वारा
प्रशंसा पत्र प्राप्त छवै
संग्रहण एवं हास्य नसक
संग्रहण वषिसूची मूक कविताक
नयना सेहे कर्मचारी। डॉ.
दुर्गाबाय हा शीश संकषित मैथिली
साहित्यक इतिहासमे कविता रूपमे
हजिक उपेक्ष कर्मचारी
। प्रकाशित कृति (मृत्युपत्र)
: कविता-संग्रह



श्याम यादव १९३४-

उपन्यास "नूपा दीदी" प्रकाशित।
गाम मधुवा, जिला- मधुवा।



डोगीभठ श्रमा "श्रोत्रिय" १८३५-

"मैथिली की पास्तुति पम्पना" पोथी प्रकाशना।

गामगहन, धनुषा, गेपाठ १८३५-२०२०

साहित्य तथा अन्वय कृष्णक कठोक सख्ठ वृथकासिग अपन पुनःमासुगो आ पथ-पुनःशक भागै छथी। मैथिली साहित्य-कृष्णकमे हिनक पुरियक भाद एवाए कहव पुन्यापुन होए जे मैथिलीक मूढवृथ साहित्यकान ड। योगेहून हिनका मैथिली साहित्यक सन्वसेषु कथाका मगैग छथी। हिनक कथामे पुनोकात्मकताक अदृग पुन्योहाटी गही, अपति एकटा अदृस कथाक समसुन वैशेषितसगवहियमान गही अछी। कथाकाक अतिरिक्त ई उरकृष्ट समावेयक, वाटकका आ कर्ता सेहो छथी। गेपाठमे मैथिलीक पहि भोगेडामा एपिवाक श्रेय सेहो हिनका जास छथी। सामाजिक कुगोसिगक कुशठसँ यतिनाम कनवामे, यतिनीय वगएवामे आ मग-मसुगिपन अमटि छाप छोडवामे गामगहन संहियहसुन छथी। धनुषा जाविक कुनया गाममे गामभठ गामगहनक पुनाम गाम गामगहन कनाम छनी। अगुजेगी वषिक अवकाशपुनापुन शक्तिषक गामगहन वृथाकनाम, पाठ्यपुसुताक आ सहायक पुसुताकसग एपिवाक कागमे गिनगना सकनीय छथी।

केदागथ यौधनी (१८३६-)

मैथिलीक पहि अखि 'ममता गायत्री' के गनिमाना एवमेसँ एकटा गनिमाना छथी केदागथ यौधनी आ दोसन महगोहल दासा वादमे आनुथक मजुनीस तेसन सहगनिमाना गेठपनि उदथगगु संहि नाग-सुत्र कुसुमपनी देवी, पति- सुत्र कसिगी यौधनी, गन्मः ०३०१८३६

गुनापुना गेहना (दनागु), अन्व पानिवाक सदनस्य-पुनी-श्रीमती कुमुद यौधनी, संगाव- पुनथम पुनो-श्रीमती कनिम हा, एवगिपु पुनी-श्रीमती अन्वनी यौधनी, शक्ति-१८५८ ईमे अन्वशासुनामे सुगाकोगना, १८५८ ईमे उा १८६८ ईमे कैवशुनगिया विसिसँ अन्वसुथासुना मे सुगाकोगना, १८७१ ईमे मानकटगि एड डिस्ट्रीव्यूसन वषिकमे गेठडेन गेट पूगविनसोटी, सागशुनासिसुको, उषअ सँ एमवीए, १८७८ मे गाना अगामना १८८१-८६ क वीय गेहनाग आ पुनैकशुनामो शेन वम्वई, पुसे होसना गिटासनामेटक वाद २००० सँ छेहियोसनाथ, दनागामे गविसाद या उपगुथास-यभेथिनीगी २००४, कना २००६, माहुन २००८, अवाग गहगिन २०१२, हीग २०१३, अथवा २०१८ सम्मान-१) वदिह साहित्य सम्भाग, वन्य-२०१३ (हापुड मैथिली मंथ, गौथी दवाग), २) पुनवोय साहित्य सम्भाग, वन्य-२०१६ आ ३) केदाग सम्भाग, वन्य-२०१६, अवाग गहगिन' छे।



जीवकांठ १८३६-

गाम- जीवकांठ हा.पति-गुसागणद हा, माग-महेश्वरी देवी, गन्म-२५०७१८३६ अगुथाड, जावि-सुपौठा गीकनी-वापुनाग शक्तिषक (उवपिगी १८५७-८१), हिनहि शक्तिषक (उवडिओठ एं उवपिपुनाम १८८१-८८)।पहिव नयना-सुगो डिसा आ टटिहो (कर्ता, गनवनी १८६५



देवकांठ हा १८३६-

उा अमेश पाठक १८३६-

हिनक गन्म सोनामठो जाविक अगनाग सामाना गनाममे १८३६ मे गेठगही। १८५७ मे पटना वसिगवहियाथसँ मैथिलीक एन ए पनीकथामे पुनथम श्रोमीमे पुनथमसुथाव पाओ। १८५७ सँ १८६० यतिनामकृषम महावहियाथ, मयुवगीमे वयापुयाग नूपै गकना वाद पटना वसिगवहियाथमे वयापुयाग नूपमे कानय कन एगोह। पटना वसिगवहियाथमे मैथिली

मैथिली (महिनी) पहिल छपल पोथी- हू कुहेसक वाट (उपन्यास १९६८) गूगल पोथी-पिपिनिक वीअनी (२००७ वाउ पद्य कथा), अठगनी पसठर वगने (पद्य-कथा संग्रह) आ पंगनी पुनेम पुनकासिया (जीवन-वर्णन असा) पुनसूकान-साहित्य अकादमी १९८८ तक अछा थोडि, पद्य, कनिम समान (१९८८), व्रैदेहि समान (१९८५) पुनकासि पोथी-

कविता संग्रह गायू हे पृथ्वी (७१), यान गहि हेरछ मुकन (८१), गकैत अछा थोडि (८५), पॉडि (१९८६), पानमि गोगले अछा वसुती (८८), शुभगी गीतिकासने (२०००), गाय हूँ-हूँ (२००४), छार सोहाओन (२००६), पिपिनिकि वीअनी (२००७)

कथा-संग्रह एकसनी गढ़किमनन मे (७२), सूनु गछिनल छ अछा (७५), वसुती (८३), कनी हीठ (८८)

उपन्यास हूँ कुहेसक वाट (६८), पंगनी (७७), गहि, कगहु गहि (७६), पोखन गुठव छठ (७१), अगनिवान (८१)

हिनदी अनुवाद- गशिगन की थोडिया (नकैत अछा थोडि, साहित्य अकादमी, दिल्ही २००३)

पुनवोध समान २०१० सँ समानागि।



वठनाम १९३६-२००८

जगम स्थान पथही, मधुवनी, वहीन। वसिपिठ कथाकान। पुनकासि कर्ना: एकथठ देवाठ (कथा-संग्रह)।



मैथिलीपुन पुनीप १९३६-

गान- कथवान, दनगगा। पुनसिक्षिणि एमए. साहित्य नग, गवेल शास्त्री. पंयागुनी सायका हिनकनी नयति "जगदमव अही अवठमव हनन" आ "सशक सुथि अहो एर छो हे अमवे, हनना कए वसिने छो ये" मैथिलिमे ठेठेठ गए गेठ अछा।



नामदेव हा १९३६-

कथाकनी, समीकषक, अनुवादक, ग्रंथ समुपादक। साहित्य अकादमीक मूठ एवं अनुवाद पुनसूकान पुनापुन कर्नागु ठ वा मैथिली वसिपिठदियाठय दनगगाक मैथिली वसिपिठक पुनव पुनायानय। पुनकासि: पसिहिन पाथन, (अनु) आदी। १९८५- नामदेव हा (पसिहिन पाथन, एकाकी)ठठ साहित्य अकादमी पुनसूकानसँ समानागि १९८४- नामदेव हा (सगास- नागिदनी सहि



वीनेश्वर गाय डोकुल १९३६-

जन्म पूनामंत्रि जिलाक यमदाहा
ग्राममे १९३६ ई मे भेलह। गेगे अवस्थासँ
गीत गायने एवं कविता लिखने विशेष नुर्था
। कोनो मंत्र पत्र गढ़ गेला पर ई सहजही
स्त्रीगाके आह्लादिनि कत्रेन छथी। हिनक
सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मंगी
महाकाव्य, एक पुनर्जायन्ती काव्य, एक
उपन्यास, एक नाटक एक नाटक एवं
एक हिनदि नाटक, पुनकाशति भेठ छह।



**वर्गोद वहीनी वर्मा १९३७-
२००३**

मैथिली कविता कालस्थक पाँचकि
सन्वेषण, वलनक वोलन ओ पठनी
नथा अन्वय कथा (कथा संग्रह)



वीनेश्वर मठकि १९३७-

जन्म-
३ जनवरी १९३७ ई पनसौरी, मधुवनीमे। कवि, सम्-
पादक, समीक्षक । आपन, अगणितक सम्पादन
। अज्ञा-शक्ति (कविता संग्रह)।



कीर्तिकाश्याम भस्मि १९३७-

जन्म १७ जुलाई १९३७ ई केँ ग्राम
शोकहा (बनौरी), जिला बेगूसरायमे भेलह।
हुनकर पुनकाशति कवि अछि
सोमाना, महाना (दीर्घ कविता), हम सानव
नही छीमव, ध्वस्त होश शान्ति स्तूप (एही
पोथीपर साहित्य
अकादेमी १९९७ पुनस्का), आदिकेँ
जोह (कविता संग्रह)। संस्मरण-अपन
स्कांमे, स्मृति यात्रा, पत्रक द्वापममे।
सम्पादन- आपन मासिक पत्रिका, आयुकि
मैथिली साहित्य, 'दृष्टि, नाटकमे जिलन आ
साहित्य, 'दृष्टि, कथा-संकेत- काठ कोठरी।
आवयवा- अन्धान-२००४



**गौरीकांत चौधरीकांत १९३७-
२००१**

**धुगठ कशीम भस्मि १९३८-
२००७**

मैथिली शब्दकोष।



महेश्वरगाय मठकि १९३८-



पनसुताम हा १९३८-



पुनश्चुद्ध कुमान सहि 'मौन'
१९३८-

गुणाम+पोस्ट- हसनपुन, णाधि-समस्तीपुराभैथिमे
पुनोपाठक भैथिमे साहित्यिक
शाहिस(बनोटगुन,१९७२ई), रचनहमगुणाम(नपि
नगाण ६१अंग १९७२
ई), ३भैथिमे त्रैमासिक
सम्पादन (बनोटगुन,नेपाठ १९७०-
७३ई), ४भैथिमे गेवागीण (पटना, १९८८
ई), पुनोपाठक आधुनिक भैथिमे
साहित्य (पटना, १९८८ ई), ६ पुनोपाठक यथगति
कथा, भाग- १ आ २ (अनुवाद), ७ वाचनीककि
देसमे (महगा, २००५ ई) २००४- ७ पुनश्चुद्ध
कुमान सहि 'मौन' (पुनोपाठक को कलगी-
पुनोपाठक, हिनदी) ठेठ साहित्य अकादेमी भैथिमे
अनुवाद पुनस्का।



कुठागण्ड मसि १९४०-
२०००

जगम पकडी कोठि, सोतामठो, वहि।
सुवापिया कवि, संपादनक, समाधियका
पुनकाशति कर्ता- तावत हावे, मोनक
पुनोपाठकमे (कविति।
संग्रह), गानक भाषा
संस्कृतस, पानो, गानकमठ यौयनी
को ग्यानह कलगीसि (अनुवाद)।



गुमगाथ हा

गुमगाथ हा "ठोक मन्थ" भैथिमे गायक पुनकाशक
संयाठन- सम्पादन केने छथो भैथिमे आधुनिकि ग
ठकक पुनस्यवा हुनक गायक सज अछि।

मधुयामिनि: एकाउक गायक शैथिमे हूटा पातन, पुनप
संपुका पुनवािक पक्ष ठेगलि आ सूनो गकन
बनोयो।

पाथेय: एकाउक गायक शैथिमे नथो, मुदा
पुनसाउकक सज वशिषा। एमे गेटा मुप्य



वठिटा पासवाण 'वहिंगम'
१९४०-

जगम मधुवनी णाधिक एकहृथा
गुणाममे १९४० ई मे गेठगहा।



पुनवास कुमान यौयनी १९४१-
१९८८

गाम- पडिनुछ, णाधि- ६१अंग १। पुनप्याण
कथाकां ओ उपन्यासकां । पुनवासक
पुनकाशति कर्ता: कथा-पुनवास, पुनवासक
कथा, वव घन उडप पुनघन प्यसस, ६६वठ
(कथासंग्रह), अमोसिपु, युगपुनप, हनगा ठा
नहव, गवानमन, गाणा पोपनिमे कक मछनी
(उपन्यास) । वशिषिण महवपुनस पुनकाशक
सम्पादन । त्रैमासिक कथा गोप्री "सगन गा
दीप जगम" के पुनवाग १९८०- पुनवास

गाम- भैहथ (मधुवनी), कर्ता-
उरभेदशरुस अंश पोस इन
इगुठिसि उनामा, कर्तासिथियेन
पोस्टकि उनामा।



शुभाणु १हमाग हासमी १९४०-
२०११

जगम-पटना णाधिक वनाह गाममे वृता
अध्यापका हिनदी कविति संग्रह "१समी
गासी" आ भैथिमे कविति।
संग्रह "बनिभोहि" पुनकाशति १९८८मे
अधुनकठम आणा- अदुठकरी देसगरी, उदूस
भैथिमे अनुवादपुन साहित्य अकादेमीक भैथिमे
अनुवाद पुनस्का।



साकेतागण्ड १९४०-

वनिषिठ कथाकां, गामगाथक (कथा-संग्रह)
ठेठ साहित्य अकादेमी पुनस्कासँ
समनागति। पुनकाशति कर्ता भैथिमे कथा
साहित्यमे १९८२ सँ सत्सि । गोठक
यासि पयास टा
कथा, नपिनाण संसुनास, यातना वनिगस
भैथिमे पुनकाशति अथकास
पुनपुनोकांमे छपठ । पहिठ भैथिमे
कथा 'गोठसियन'
१९८२मे 'मथिठिमहिन'मे पुनकाशति ।

अभिनाना मथिषिक अयोगासिं हुमी नऽ गामकें कन्मस्यथी वग्वेन छथि, स्वप्नान वग्वेन कने छथि।

छात्र-वृहत्कनः एकाएक गटय शैथिले नथी। दाहि नैदीसं ह्मानेन गमिने आ मय्य-गमिने वनग स्वर्गानाक पहिनेहो आ वादी जीविकोपायान छेउ पुनवास कनवा छेउ अगसिपान छथि।

सातम यनतिनः एकाएक गटय शैथिले नथी। मैथिली नगमयपन मथिषि अयोगासिं अवाव, सातम यनतिनक पुनीकषामे पुनवायवास पतन नऽ जावत अछि।

शेष नऽः आयुगक सामाजिक पुनसाएक गटका पतिना-माताक मन्त्रियक वाद अज्ञानक अज्ञानक पुनपिपिर्वाव व्यवहारा।

आहुक ठेकः पुनसाएक गटका वषिध गमिनेमय्यवन्तुगोय वेनोपगानी आ वषिहक दासोत्तक वोह।

पुन मैथिलीः पुनसाएक गटका मथिषिक नऽषकि-सांसकऽक संमस्या एकर कथावस्तु अछि।

महाकवि वद्विधापतिः वद्विधापतिक नव वशिषेयसा।

कुमान यौवनी (पुनवासक कथा, कथा) छेउ साहित्य अकादमी पुनस्कानसँ सम्मानगति।

हिनदिशिमे हु एपान कथा आदि पुनकासिनि । सन टॅन्मे छपेउ पहिने

कथा संग्रह **गामगायक** के ओही वन्य **साहित्य अकादमी पुनस्कान**। पैघ वाग्वय **स** अवैवछ वपिपिर्वाकि रेप्यांकिनि कनै, पुनयावनास के कथा वस्तु वना क **नाजकमठ पुनकासन स** पुनकासिनि एवं अन्तर्गत यन्थी।

उपन्यास (**जैकूमेटी शक्ति**) **सन्वस्वांग**। आकाशवासीक **नियुतीय कान्यकनमे पुनसागि हु टा उछेपगोय वऽन नूपक** **महानगदा** अशयानस्य **प** आयागि **पंग** वोछना है **सं** ह्मानंउ के गुनीम कृषेत्तक एवठेन उरक संमस्या **प** आयागि **वऽन नूपक** **गै** गोग **यन्थी** एवं पुनसिंय ।



ज्योति गुंजन १९४२-

जन्म स्थान- पठिपवाड, मधुवनीसुनी ज्योति गुंजन मैथिलीक पुनथम यौवटयो गटक वुथविद्येयिक छम्क छथि आ हिनका उद्योगिकता (कथा संग्रह) क छेउ साहित्य अकादमी पुनस्कान गेटउ छनहा एकर आनिकितान मैथिलिमे ह्म एकटा मथिया पनीय, ठेक सुग (कविता संग्रह), अगहन- स्नान (कथा संग्रह), पहिने ठेक (उपन्यास), आर जोन (गटक) पुनकासिनि हिनदिमे मथिषियेयठ की ठेक कथायँ, मासापिन्मक बैका- वगणितक मैथिलिसँ हिनदि अगवाह आ शवद गैधान है (कविता संग्रह)। १९९४- ज्योति गुंजन (उद्योगिकता, कथा) पुनकासिनि छेउ साहित्य अकादमी पुनस्कानसँ सम्मानगति।



प्रकाशसंकेत सिंह १९४२-

जन्म+पोस्ट- जोगिया, थाना- जाधे, जघि- एनरंगा। भौतिक मैथिलीः नैथिली गटक ओ नगमय, मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ नैथिली गटक पनीय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८९ इपुनवाय ओ वद्विधापति कथा पुनकासन, गोगपुन, १९८६ इमथिषिक वगिनि जीवग हा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७ पनवाटयाग्वयय, शेपन पुनकासन, पटना २००२ इअधुगकि मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ उपन्यासिका, कनसागोषुडी, कोठकाना २००५, टैकषम, कथा पुनकासन गोगपुन २००८ ट्युगसंथिक पुनानिग, कथा पुनकासन, गोगपुन २००८ नयेगना समति ओ गटयमंय, येगना समति, पटना २००८ २००९ इ-सुनी पुनमसंकेत सिंह, जोगिया, एनरंगा यात्री-येगना पुनस्कान।



मानकमुडेय पुनवासी १९४२-२०१०

जन्म जन्मः जनुआन, जघिः समसुगिपुन । पुनकासिनि कऽः असात्थायनी (महाकव्य); पनएथ (कविता संग्रह), अक्षय येगना (काव्य संग्रह) अगसिनि, ह्म काठिदास (उपन्यास)। **असात्थायनी** छेउ १९८९मे साहित्य अकादमी पुनस्कान पुनान।



देवेन्द्र हा १९४३-

गाम- यागपुना (मधुवनी), कर्ना-
वर्द्धिपारिके शृंगारिके पदक
काव्यशास्त्रोप
अध्ययन, वाचन, सुधाकन हा
"शास्त्री", अगुणव, वदवि जाइए
घने टा।



डॉ. भीमनाथ हा १९४५-

जगमःकोरुप, मधुवनी, वहिन। पुनपुन
कवी, समाचारक, पुनयुपाक
। ❖वर्द्धि❖वर्द्धिपुनपुनक वेठ सन
१९९२मे सहर्षि अकडेमी पुनसुकास
सम्मानगति। पुनकाशति
कर्नाः पुनयिना, वीसा, की खुनैए की
वर्द्धि, गाम तं थिक ओए (कवीति
संकेतन), पुनयिपुकि, सोतागाम
हा, कवी युडामसोके काव्य
साधना, वीवर्द्धि (विविध, आविधना), टावन
थीकसँ आदी।



महेन्द्र मठगिया १९४६-

गाम- मठगिया, जावि- मधुवनी।
मैथिलिक सुपनयिनि वाटककान, ग
वर्द्धिशक एवं मैथिलीगक संस्थापक
अध्ययक। वेक साहर्षि पुन गंभीर शोच
आवेप। मैथिलीमे १३टा वाटक, १९टा
एकंकी, १४टा गूककड आ १०टा नेडयि
वाटक पुनकाशति आ आकासवामी सँ
पुनसाति। सोनयिन खुवेशपि (गाना
संगकान), इटनगेशनथ थिएर
इंस्ट्रियुट (वेपाठ), पुनवेध साहर्षि
सम्मान आदी सँ सम्मानगति। संपुनति
जायिनीसुवन विपति मैथिलिक पुनथम
पुनका वनसंगकान पुन शोच काव्य।
श्री महेन्द्र मठगियाक जगम २०
जगवनी १९४६ मे मधुवनी जाविक
मठगिया गाममे वेठवहो मठगियाजा
मैथिलि हर्दि, अंगनेपे आ वेपाठ
वाचक जागकान आ थियेटर
शिक्षाम, पटकथा वेपन आ
गामसुवर्द्धि शोचक खुनीवागस शिक्षक
छथी२००२ ई- श्री महेन्द्र
मठगिया, मठगिया;पान्नी-येना
पुनसुका। पुनवेध सम्मान २००५ सँ
सम्मानगति।



**डॉ. नाम दयाल नाकेश, सन्वाहि
, वेपाठ १९४२-**

मैथिलि मातृभाषा, हर्दििक पुनयुपाक आ
वेपाठिक वेपक ई तीव्र वाचा ❖नाकेश❖क
व्यक्तित्वमे एना वे मोहिनाए वेक पे कोरहुसँ
होवका योग्य वही कएए जा सकैत अछी। ई वशिषाः
वेपाठिमे वेपि छथी मुदा वेपनक वषिय मूषाः
मैथिलि संस्कृति नैह छनी आना मैथिलि, हर्दि
आ अंगनेपेमे सेहे ई अनेक नयना कएने छथी
वेपाठक नागक्रीय-पुनगत्रा-पुनपिडलक
सदस्य ❖नाकेश❖ हर्दि वेसिवर्द्धिपुनसँ
पोप्यडी आ अनेकिसुथति वसुडयिना
युगनिनसोटीसँ पोस्ट डाक्टर नसिनय कएने छथी
। डॉ. ❖नाकेश❖क जगम २५ जुलै १९४२ ई कऽ
सन्वाहि जाविक सिसोटीमे वेठ छनी।
वेपाठ, मैथिलि, हर्दि आ अंगनेपेमे



**उपेन्द्र दोषी १९४३-
२००१**

जगम सुथान गामपुन-
कोरुगामा, एनगेगा। कवी-
कथाकान, गीत-जागकान।
पुनकाशति कर्नाः यत्नासाक
कृषाममे (कवीति संगनह)। हर्दिमे
अनेक पोथी पुनकाशति आउयिसँ
मैथिलि अनुवाद हेतु मत्पुनगान
साहर्षि अकडेमीसँ पुनसुका।
२००३- उपेन्द्र दोषी (कथा
कहनी- मनोप दास, उडयि) वेठ
साहर्षि अकडेमी मैथिलि अनुवाद
पुनसुका।



उदयगुण हा "वर्दि" १९४३-

जगम प अपुनैठ १९४३ ई गाम- नहिका, मधुवनी।
जगम-गाम- दुठल, मधुवनी। पुनकाशति कर्नाः
संकागान, मोसम अथवा पुन, एहना स्थितिमे, ननी
हेह गीत। एह जगममे, दोहा तीव्र सय दू, कएने
पुनी, सहजपुन, अपकृष, पुनसुवनाथक (कवीति
-संगनह), युनी (सहयोगी कवीति संगनह); जाँ
(कथा संगनह), उदास गाछक
वसंत (वाटक)। ❖माटि पान❖क वयोस्य
सम्पादका२००५ ई-श्री उदय गुण
हा ❖वर्दि❖, नहिका, मधुवनी;पान्नी-येना
पुनसुका।



महामाजायनाण नभेश्वर सहि १
८६०-१८२८



महामाजायनाण कामेश्वर सहि १८०७-
१८६२



सम हगोवर्गिह भशिन, अथीगढ़
आ कामेश्वर सहि



वर्गिहागर्ह हा १८८५-
१८७१



भरति गानायस भशिन १८२२-
१८७५



डॉ. नामवरन घाएव, गेपाठ ग
धुनपति



सुवर्गीय वरिधेश्वरनी पुनसाह
मंडु, गानगेना १८१८-१८८२



शुपेर्ह गानायस भामुड



कृपानी गकुन १८२१-
१८८८



गामप्रवास पासवान १८४६-

गन्म ५ पुठर १८४६, गाम-
सहनवर्गी, गीठि प्गडिया। गानगीय
गानगीनाम्ना



गाम वषस गाम "गामस"



गोगेर्ह हा



यशुवानन मशिन



रमाकांत मशिन



रमानाथ मशिन "महिन"

"मैथिली मुलवना एवम् लोककृती प्रकाश" प्रकाशित



गजगेण्डन रामाकृष्ण यौधनी, पञ्च
काल १९७२-२०००



मोहन रामकृष्ण १९७३-

गाम- गवानी, जिला- मधुवनी। मैथिलीक
प्रथम समाधायक २००७ ई-श्री
आनन्द मोहन
हा, रामकृष्ण, गवानी, मधुवनी; धार्मी-
येतना पुनसूकाना प्रवोध
सम्मान २००८ से सम्मानित।



योगानन्द हा १९७४-

२००५- ७ में योगानन्द हा (वहिनक
लोककथा- पोसोनाथ
यौधनी, अंग्रेजी) अखिल
अकडेमी मैथिली अग्रवाद
पुनसूकाना **प्रकाशित**
कृति लोकलोक ओ लोक
साहित्य (गविग्य)
१९८६, पत्रिका (कथाकव्वाश)
१९८७, अकडेम मोहन
सेवापति (अग्रवाद) २०००, अग्रय
सम्ययन (गविग्य) २००२, वहिनक
लोककथा (अग्रवाद)
२००३, सुगहण। (गविग्य)
२००६, मैथिली पत्रिकातिके सौ
वृक्ष (गविग्य)
२००६, गह्वरगीत (गविग्य)
२००७, लोक-साहित्य ओ अग्र-
सम्पदा (गविग्य) २००७, मैथिलीक
पानपत्रिके जातिस व्ययसायक
श्रवदावती (सोघ-ग्रन्थ) २००८



हीरानन्द हा "शास्त्री"
, पञ्चकाल



दीनानाथ हा, पञ्चकाल



गजेण्डन हा, अन्थशास्त्री-
पञ्चकाल

"वकिस ओ अन्थान्" प्रकाशित।



पुणेभसंकर हा, पत्रकार



श्रीहरिद्रु यौधनी, पत्रकार



नाणेस्वर हा (१९२३-१९७७)

जन्म- सह्यास जविक नसुआम
गाम (आव सुपौठ जविक)

कृति- भयिषिकृषणक उद्भव ओ
वकिस, अवरुडः उद्भव ओ
वकिस, मैथविक साहित्यक
आदिकिष, वदियापणिक संगीतमे
वृत्तमंगि गायक-गायकिक मेद एव नाग-
गाणी वृत्तिकासा

महाकवि वदियापणिक नाटक, शास्त्रानुय
नाटक, कण्टकपीठाट
नाटक, एकादसी, वदियायन-
कथा, उन्वसी, यन्मव्याय- कथा, मेगका



एसएसश्यायथी

भयिषिक कथा आ शविकवापन
छपण



नायकृषम यौधनी, शहासिकाम १९२१-१९८५

भयिषिक शहास, अ पुनवेयोड भागिषिकि डगिनातुने, थए
शुओडयककअड आमय कउडयउडअडएकडयअएए ओड
भयकडअ पुकासागि



पुणे नामशाम शन्मा १९२०-२०११



वपियकागण भसिन् शहासिकाम १९२७-१९८४

डॉ वपियकागण भसिनक जन्म १० अगस्त १९२७
मंगरीणी गाम - जे नव्य नयाय आ नागिकि
सायनाक जन्म-सुथविक अका- (जविक मधुवनी) मे
ओवणी ओ १९४८ मे प्रायोग भागिषिक शहासि आ



द्वपिगुण नायास हा, शहासिकाम



सुनेस्वर हा, नागणीक वपिआ
ण

२००१- सुनेस्वर हा (अगणिकिषमे
वसिथेट- जविक वपिसु नागिकि, मनागि)षेठ
साहित्य अकादेमी मैथविक अनुवाड पुनसकाम

संस्कृत विषयमे एहाहावाद वसिष्ठवर्द्धियाद्यसं
सनातनकोर्ण उपायि कस्यैक वाद कोक वन्य
यनि वहिन सनका- आ पटना वसिष्ठवर्द्धियाद्यसं
सम्बद्ध १६७६ आ १८५७ ई.सं. गान्धीय पुनर्जात
वशिष्टमे काण कस्यैक आ ओक
शशिपाठ्या, कौशाम्बी, वैशाखी, हस्मानिपुन, कुम्हना
१, पाठविपुन, कानिय, सोनपुन, वशिष्ठवि, गण्डगा,
गाण्डी, यज्ञ-वर्द्धि, आ हम्पी प्पुण्ड्रमे वशिष्टि
शुभकामे गान्डी वसिष्ठवर्द्धि-सम्पादनि
पीथी सयमे अर्थः वैशाखी, १८५० रकुम्हना
एकसकेवसंसः १८५०-१८५७ पुनर्जात की
दृष्टिमे वैशाखी शृंगारि श्रुत्या
पानिपेण्डुस्यपन पमरिथि आन्त एम्
आनकिकृत्यन (सम्पादनि) इकथय-१७ हेनरिण अंशु
मरिथि-७सन्गा-गान्डी-एक
अथययन दृष्टिपुन पुनर्जातविपुन- दृष्टिपुन
श्रुत्यावै.



राजीनथ पाठ दास

शानक कस्य देशमे गान्डी १६७
छथि आ जोस्येटी मे शानक
पुनर्जातिसेले छथि



भक्ष्मीकाग हा गान्धी वैक गान्धी १८९३-१८८८



एग एग हा डपिठिमे



कामेण्डुनाथ हा "अमठ" १८३८-

गन्म- ४ गणवनी १८३८, गाम
कोसठप (मधुवनी)
गन्मांस (कथासंग्रह) पुनकासिनि



राज्यगानायक हा १८४९-



रामक्रान्ताय "रामा" १८४७

गन्म- शान्डी पुनसिनि
सम्बन् २००३, पुनथम नयना-
वटुक, वाठ मासके पुनयाग, कथा
वशिष्टके दृष्टिगि
गान्डी १८४६, पुनकासिनि
कान्ठी गीण्य वावाणी-(पुसिसं
मैथिलिमे मैथिलिमे टावसुटापक
कथाक श्रुवा-१८६७ ई.मे. (पु)
श्रुवपान, कवनि संग्रह १८७८,
(ग) गान्डी गीण (२००४ ई.मे), (घ)
कटेण पॉप्यः हंसैण श्रॉप्यः कथा
संग्रह-२००५, शीव पुनकास्य-
कृष्णकागन् भसिन् (वनिविण्य)
साहित्य अकटेमो गई दृष्टि। पुनाथः
उठ सप नयना (कथा-नविण्य
कवनि) मैथिलि हिनिक पान-



पुनोश्चसप्त महेश्वरी १९८७-

जन्म: मेरठ, सुपौर, वल्लभ। पत्रसहित
कवि, कथाकार, आलोचक।
वर्णन: शृंगार विश्ववर्द्धियालयक
संवागतान्तर केन्द्री, सहस्रसामे मैथिली
वर्षागायकृषा पुनकाशति कर्ता साहित्य
अकादेमीसँ पुनकाशति भोगान्तर श्रेष्ठेन्द्री
मोहन हा। सहयोगी संकल्प-संकल्प
। गानकमठ जयन्ती पुनसंगक संपादन



महेश्वरी १९८४-२००९

जन्म मधुवनी जलिक जमसम
गामेमे पुनसहित मैथिली गानकम आ
गायक



सुभाषयन्त्री ५९८८-

जन्म ०५ मान्य १९४८, मान्क
दीवानगा, सुपौरमे पैर्क स्थान: वठवा-
मेरठ, सुपौरवन्देपाया (मैथिली कथा-
संग्रह), मैथिली
अकादेमी, पटना, १९८३, हाथि (अंग्रेजीसँ
मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादेमी, नई
दिल्ली, १९८८, वीरक कथा (हर्नमोहन हाक
कथाक यथन एवं शर्माका), साहित्य
अकादेमी, नई दिल्ली, १९८९, वल्लभ
आउ (वंगला सँ मैथिली अनुवाद), कसिब
संकल्प लेक, सुपौर, १९८९, मान्क-
वल्लभान ओर हर्नमोहन उपन्यास (हर्नमोहन
आलोचना), वल्लभ १९८९माया
परिचय, पटना, २००१, गानकमठ यौवनो का
संखन (हर्नमोहन जीवनी) सांतास
पुनकाशन, नई दिल्ली, २००१, वंगला-वंगला
(कथा-संग्रह) २००९ मैथिलीमे कवीव
संग्रहिया कथा, तीस था सनीकृषा आ
हर्नमोहन, वंगला तथा अंग्रेजी मे अनेक अनुवाद
पुनकाशति।



**सुमन्त्री हा १९८९-
२०००**

"श्रान्तेश्वर अंश मैथिली
छाया"क छेपका १९८९- सुमन्त्री
हा (गानक पुनक
उत्तर, गविवध)पन मैथिलीक



**नामावतान ५९८९, मैथिली गायक, नेपा १९८४-
२-**

देश-वैदेशिक गायकान्तर जन्ममे पयासो आठेपक द्वाला मैथिलीक
वसिष्ठताकेँ उगाउन केनहिन। मैथिली व्यवसायसंग १९८४ ई मे
जन्ममेसँ आ मैथिलीक सगहनन वधाकाम १९८९ ई मे वनवनि आ
न्यूयार्कसँ पुनकाशति। २००० ईमे ठेठसँ पुनकाशति गानगीय
आन्ध्रगाना पुस्तक मे संकलीत हर्नमोहन मैथिली गाना संवधि आठेप वसिष



**योगेश्वरी पुनसाद ५९८९, गायक
की, सनिहा, नेपा १९८६-**

१९८९ ई मे जन्ममेसँ पुनकाशति सुभा ३९ मैथिली
सौंदर्य आ टां पकिस ३९ नेपावला
विविधसिद्धिस, नीउरिस ३९ मैथिली
छाया- वल्लभ समुद कठयन आ ठेकसोपानाथी
३९ नेपाव (समपादन) पुनकाशति। नेपाव गानकीय
पुनकाशति-पुनविद्यमान गाना-वलागक पुनकाशति नही

साहित्य अकादेमी पुनस्कासनसँ सम्मानागति।



नामगण्ड हा 'नामास'
१९४८-

जन्म: ०२ जनवरी १९४८, अक्रिषा-
एम्प, पोखरी, आजीविका-गानगीय
गिनिव वैक, पटना सिवा
गविर्णा। **पुनस्कासन**: १ गवीग
मैथिली कवनि। १९८२, २ मैथिली गज
कवनि। १९८३, ३ मैथिली साहित्य ओ
नामगण, १९८४, ४ अय्यिसिओ,
१९८५, ५ वेसाह, २००३, ६ नामा-१७,
२००५, ७ गनियान कैसे सुन
कने? हविदी- गिनिव वैक, पटनाक
पुनस्कासन सम्पादन ८ मैथिलीक
आनन्दाक कथा, १९७८ समीक्षा,
९ अय्यागण्ड नयगावठी, १९८९,
१० नामगण्ड हा नामगण्ड कर्ण
गनिदयोसासु (१९९४) आ
पुनस्कासन (१९९८), १९८४,
११ योनाथहाकर्ण
श्रीनामगण्ठाथपुत्री धार्मा (१९९०),
१९८४, १२ तोपगाथ हाकर्ण
सुननापवपिय गटक (१९९८),
१९८४, १३ नासवहिनीओ
दासकर्ण सुमर्ण (१९९८), १९८६,
१४ जीवख मसिर्कण
गामेश्वर (१९९६), १९८६,
१५ गेटघांट (गेटवान्ना), १९८८,
१६ नूयय गै सत्य गे गै श्रुति, १९८८,
१७ पुनस्कासन हाकर्ण मैथिली
दन्पस (१९९५), २००३, १८ धुव
नयगावठी (१९८८-१९३४) २००३,
१९ श्रीवर्ष हा (१९०५-
१९४०) कर्ण वदियापनि वनिनास,
२००५, २० मैथिली उपन्यासमे
यतिनि समाज, २००३ अगुवा
छे **भाषा-गानगी सम्मान २००४-**
०५ (सोअरआरए, मैसूर) छओ
वगिहा आड कटग- श्रुति मोहन
सेनापतिक ओडिया उपन्यासक
मैथिली अगुवा छे पुनस्कासन।

उद्योगवीद्या गोपठ नामकीय पुनस्कासनसँ पासाउ छलामु
पुनस्कासनसँ सम्मानागति।



नामथेयन गकुन १९४८-

श्री नामथेयन गकुन, जन्म १८ मान्य १९४८
इपठमोहन, मधुवनीमे वनपिड
कवनि। गानगीमे, सम्पादनक, समीक्षाक भाषाई
अगुवाओमे सक्रियि गानगीमे। **पुनस्कासन**
कर्ण: शहासहगा, मटपिगकि जीन, देसक नाम
छे सोन यडिया, अपुनवा (कवनि संग्रह), वेगा
कथा (व्यंग्य), मैथिली छेक
कथा (छेककथा), पुनस्कासन (अगुवा कवनि), *मा*
सकै छे कविता करि माउ अगुवा कवनि, *मा*
पुनस्कासन
अगुवाकवनि (कवनि), *माहान* (अगुवा), *सम्पादन*
योपन ग (संस्मनासात्मक गविन्ध), *आम्प*
मुनग: *आम्प* *प्येठे* (गविन्ध)। अगुवा छे **भाषा-**
गानगी सम्मान २००३-
०४ (सोअरआरए, मैसूर) *मा सकै छे कविता करि*
माउ सक्रियाटयोपायथायक वांगुवा कवनि-
संग्रहक मैथिली अगुवा छे पुनस्कासन। वदिए
सम्पादनक समागणना साहित्य अकादेमी
पुनस्कासन २०१२ अगुवा पुनस्कासन श्री नामथेयन
गकुन- (पदगणदीक माही, वांगुवासँ मैथिली
अगुवा, वांगुवा-उपन्यास - मागकि वदयोपायथाय)

कतोक महत्वपुनस्कासनक सम्पादन गोपठ
पुनस्कासन पुनस्कासनक सदनस्यना श्री योगेश्वर
पुनसाद धादव (१९८४)। गोपठ पुनस्कासन पुनस्कासन
आजीवग सदनस्यना श्री योगेश्वर पुनसाद धादव।



गंगा पुनसाद मंडव "अकेला", गो
पाठ १९४४-

पु सुगुन हा सासुत्री नाम्नीय पुनस्कासन
पुनस्कासनसँ सम्मानागति। मैथिलीयुक्त कछु छेक
कथा (संस्कृत आ सम्पादन) आ शीघ्रक
श्रुत (अगुवा) पुनस्कासन।



महेन्द्रनाथमिश्र गद्य, चतुष्पा, नेपाथ



पनभेश्वर कापडा, चतुष्पा, नेपाथ



यथा भा "जिजा"

पुननाथमिश्र हा "पुननाथ", नेपाथ



सुभेश हा, नेपाथ १८२०-१८८५



गोहमिती नमम हा १८५०-



डॉ. कमल अन्तर भाषाभाषी

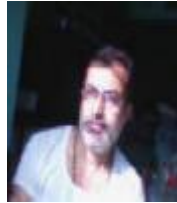
डॉ. कमलकाण्ठ गाम्डीनी १८५२-

कवीन (मैथिली) पन शोधा



वनिद वलिनी ७७ १८५३-

पुनम सुथाण पथलि, मयुवनी, वलिनी। यन्यथि कथाकाण। सथसं उ.पन कथा पुनकाशति।



अनुराग गकुन १८५४-

पुनती टूथ नल्ल अरु (कवीनी संग्रह), अगुलक वनीयमे (कथा संग्रह), वहुपुपयि पुनदश मे (गुणु संग्रह)।



शुथाम दनलिने १८५४-

पुनम सुथाण वनल, वेनीपट्टे मयुवनी, वलिनी। कवी, कथाकाण। पुनकाशति कः सनसिमे गान (कथा संग्रह) अगुदति कः कनपुनयो (यनमवनी गानती)।



दनिश कुमान हा

मैथिलिक शलिअपन ठेपग।



अशोक कुमान गकुन

पुनम र पुनवनी १८४४ ई। गाम वडागाँव (पंडीठ)। गामेठठ (गाटक-



पुननाथनाथमिश्र हा, नेपाथ

श्रुवाए), गशिां, वसुयाक
संसां (उपन्यास)



शीलप हा, नेपाथ



उग्रागारास मशिा "कक"



डॉ शम्भूनाथ यौधनी १८२०-
२००८



रङ्गाकां हा



पंथाग मशिा



पुोशुसग गुाभैा

पुोागशिासुवनापन ठपपग



महेश्वर गारास सहि "मगग"



सुासुकां हा, ढगकपुग



गस हा (१८५७-)

गयना: पशुयागुाप (कथा-संग्रह)-
१८८५, काव्य-वाटिका (कवितो-
संग्रह)- १८८८, अठकाग-
शासुकाग (पुाव-पसुड) -
२००२, अठकाग-शासुकाग (अठकाग
शासुकाग)- २००३, गविा-
अगविा (समीक्षा)- २००८, संग
सुपावग: मैथिलि (मथिलि
वसुववद्विाथ, मैथिलि वगिागक
शोध-पुाकाग) -
१८८८, सुपावग: मैथिलि (मथिलि
वसुववद्विाथ, मैथिलि वगिागक
शोध-पुाकाग)- २००७, २००८



वीप्रद्युम्नसिंह

"अहिक ठेठ" (गीत-गणप संग्रह पुनर्काशीनि)।



योगेश्वरसिंह



वावा वैद्यसिंह

पहना इमानपन (गणप संग्रह)



जगदीश चन्द्र शर्मा "अगति" १९५०-

मूठ नाम जगदीश चन्द्र शर्मा, जन्म: २७११९९५०, अंगुली, मधुवनी। सेना गविर्न वैक अधिकारी। मैथिलीमे पुनर्काशीनि पोथी-१ गोला अउनामे -गीत संग्रह-१९७८; २ यानक ओइ पान-दीनघ कर्त्तव्य-१९८८, गीत गंगा (गीत संग्रह), गणप गंगा (गणप संग्रह)।



वैद्येश्वरसिंह १९५५-

वैद्येश्वरसिंह, १९५५मे कैथनिसी, हंदापुन मधुवनीमे जन्म पानि। जाका, वल्लभ कोबो पण्डित जाका, दृगुशुक श्रुत जाका (कविति संग्रह) पुनर्काशीनि। मूठ: कविति थोड कथा छपिअनि। अपन मानुषिक अश्विपुत्रक कानस वेस यन्थिति सेठ। वडिमुवनापुनस पनसिधितिकि पाछु पन्निमेवना समाजानुर्थिक कानसक प्योण हिनकन मूठ सङ्ग पुननासा थिकि।



हनेकृष्ण १९५०-

जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- कोइठपपना अश्विपुत्रसक अध्ययनस छोटि मानुषसवादी नानवीनिमे सकुनियो अनेक कविति। आ अविद्यनात्मक गविद्य पुनर्काशीनि अगुवाद एवं वक्रिस वचिक सोध कानसने नुथी स्वर्गात्न ठेपना पुनर्काशीनि एवं जीवक नादानुमय वोक अगुनासी कविति "एना न गहीजे" (कविति संग्रह) २००८ ई - स्त्री हनेकृष्ण हाके कविति संग्रह एना न गहीजे अउ कोनविनायस भसिन् साहित्य समाना।



उदय नानायस सहि गयकिताना १९५१-

जन्म-१९५१ ई कठकानामेपहठि काव्य संग्रह अकवयो वदनादि। १९७१ अमन्स्य पुना (कविति संकलन) आ गायकक नाम जीवक (गाठक)। १९७४ मे एक छठ नाणा गायकक छठ (गाठक)। १९७६-७७ पुनर्काशीनि (गाठक)। १९७८-७९ पुनर्काशीनि (गाठक)। १९७८मे जन्क आ अग्य स्कोफी। १९८१ अगुनास (कविति-संकलन)।



आशीष अग्यगिहान

मूठ विषय: कुमानु (गणप संग्रह), पंघाजोडी (गणप संग्रह), अगया ग्लान आपन (गणप, नुवार आ कानक संग्रह), मैथिली गणपक व्दाकन स ओ इतिहास, मैथिली वेव पत्रकारनिक इतिहास, मैथिली गणपक नेडी नेकोन, अवे-अन्य-अकर्गी।
जगदीश शर्मा आ आशीष अग्यगिहान (सम्पादन): मैथिलीक पुनर्काशीनि गणप, मैथिली गणप: आगमन ओ पुनस्थापन विद्दि (गणपक आविद्यना-समाविद्यना-समीक्षा)



कुमानु पवण १९५८

गाम मुपैठा। कथा संग्रह कविति संग्रह आ व्यंग्य संग्रह शीघ्र पुनर्काशीनि मैथिलीमे १९८० ई से वरिष्ठ ठेपना। २००८ ई से एस साठक भौग गणक वाए पुनः नयनाक दोसन पाठिक पुनानुवा।

१८८८ ❖ पुनर्निर्माण (वाटिका)। १८८९-
 ❖ श्रीगुरुदेवनाथक वाच-साहित्य (अनुवाद)।
 १८८८ ❖ अशुक्रादि- आयुर्वेदिक वैद्यकीय कलात्मक
 वंशधारे अनुवाद, संग्रहीत वंशधारे दृष्टा कवित्तो संकलन।
 १८८८ ❖ अशुक्र ओ पनहिस। २००२ ❖ प्याम
 पोथी। २००६ ❖ मयमपुत्र
 एकत्रय (कवित्तो संग्रह २००८ ई मे वाटक "गो
 लसुट्टी: मा पुनर्वसि" सम्पूर्ण।
 नूतने "वदिह" ई- पत्रिका मे यात्रावहिक नूतने ई-
 पुनर्काशित्तो एए एकटा क्रीतानिगत वनेउका २००८ ई-
 श्नी उद्य गानायम सहि ❖ नयकिका ❖ वाटक गो
 लसुट्टी: मा पुनर्वसि ७७ क्रीतानिगायम मसि
 साहित्य सम्मान।



क्रीतानिगाथ हा १८८५-
 कुनठ भैथी धावागुवाए



महेन्द्र हजानी



सुर यन्दकागत मसि, आसो,
 दानगंगा



सुर महेन्द्र गानायम हा, वेथी
 जा, मधुवनी



सुरानन्दकुमार मठकि, सोहनाप्र (पोपनी
 डा), मधुवनी



भक्ष्मीपति सहि



शुभन्द्र मसि नाम



कशीनाथ हा

गाम- वट्टी, पो
 सनसिवापही, मधुवनी। "ठोकवेद"
 पोथी पुनर्काशित्तो



सुरगानायम हा "सस"

पोथी "भैथी श्नी सीतानामयनिगायमस"
 पुनर्काशित्तो



कविगण्ड शर्मा

काग्रे पन वहास ह्यन मैथिली गण्ड संग्रह



दयागाथ हा

गाम गण्ड, मधुवनी। मैथिली संग्रह भवि-यात्रिक, कोठका।



डॉ सुधाकर चौधरी १९४६-

गण्ड १५ मान्य १९४६ ई। पुनकाशति पोथी: काजन, गीत गंग गेल यत्रि (कथा संग्रह), पंजी जी खण्ड (पुनहसग), वपिष्ठी सुभाष (गटक)।



सुत्र युगयुग मशिन, १९८१, मधुवनी।

भविषि गण्डक अगुठेठक कमी।



सत्यगानायकम ठाठ कमी

भविषि यत्रिकष



ठे कंगठ मायागाथ हा १९४५-

गण्ड १ अप्रैल १९४५ ई। गाम- बनारस (मधुवनी)। एक गान यत्रि हेर मैथिली ठेक कथा संग्रह। पुनकाशति वट्टि सम्पादकक समागान गान साहित्य अकादेमी पुनसका २०११ वाठ साहित्य पुनसका- ठेक मायागाथ हा (एक गान यत्रि हेर, कथा संग्रह)।



श्याम कशौन सहि



सयगुणगाथ हा

भविषि ठेक यत्रिकष



काठिगाथ ठाकुन

गाम सत्रसोभा



नरेश कुमार वकिठ १९५०-



गणक कशौन ठाठ दास

**गाणेश्वर व्रमिष्ठ, ढगकपुन, नेपा
७ १८४८-**

मैथिली, नेपाळी आ हल्लिदी शलषक पुनलून व्रमिष्ठ शकषक हकमे वलदलवलनरलरल (डुललुडुडु)क उडलरल पुनलून कलसे छथलकडुमे वडुडुडु डलसेषु डलस अलडललललन डल व्रमिष्ठक ठेडुडुडु पुनसंसल मैथललक सडुडुसडुडु नेपाळी आ हल्लिदी सलहललुडुमे सेहे हेडुडु नहललन अछुल नुनलुडुडु वलसुलवलदुडुडुडुअननलुडुडु नलनल कडुडुडुस, ढगकपुनडुडुडुडु पुनलडुडुडुडु कलललललन डल व्रमिष्ठक पुनलुडुडु नलनल नलणेश्वर वलल छडुडुडुडु हललक ढगन रद ढुडुडुडु १८४८ ई कडुडु डेठ अछुल सलहललुडुडुडुडुडु नल डुडुडुडुडु नलनलनल उडुडुडुडुडुडु कनलवल कलडुडुडु ई डुडुडुडुडुडुडु वलद ढगकपुनडुडुडुडुडु सलहललुडुडुडुडुडु नुडुडुडुडुडुडु सुथलडुडुडुडु डल डेठ छथल

ढगन रद ढुडुडुडु १८५० नलडुडुडुडुडुडु डेसुअल (सडुडुडुडुडुडुडु)। कललुडुडु- अलडुडुडु, डुडुडुअल डलदल नलस डडुडुडुडु, वलनल वलनी डुडुडुडुडुडुडु कथल-सुडुडुडुडु- नलनलडुडुडुडु डलदक डुडुडुडुडु उडुडुडुडुडुडु- डलकडुडुडु डुडुडुडु नलदक- डुडुडुडुडुडुडु डुडुडुडु



कषुडुडुडुडुडुडु हल "डुडुडुडु"



ठकषुडुडुडु हल "सलडुडुडु"
१८५३-

"उडुडुडुडुडु कडुडुडु" मैथलल कलडुडुडुडु सुडुडुडुडुडुडुडुडु



नललुडुडुडु डुडुडु



शलनडलनडुडु डलस "डुडुडुडु"



शलशलवलडुडु डुडुडुडु "शलशल"
१८४६-



सुडुडुडुडुडुडु



अननलनलथ

१८७५ ई डे "कषुडुडुडुडुडु" ठुडुडुडुडु सुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडुडु



वडुडुडुडु डुडुडुडु



वुडुडुडुडुडु डुडुडुडु



गाणानाम सहि गाउँ, धनुषा



वैद्यनाथ वभिठ १८५५-



डॉ वासुकीनाथ हा १८४०-



जतिगुट्ट भस्मि "जीवन"



वीरगुट्ट नायास हा



वीरगुट्ट हा १८५६-
गोगू हा पन ठेप्यन



वैकुण्ठ हा १८५४-

पति-स्वर्गीय नामयगुट्ट हा, जन्म-
२४ - ०७ - १८५४ (ग्राम-जलवाडा, जिला-
दनरंगा), शिक्षा-
स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र), पेशा- शिक्षक।
मैथिली, हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा मे छात्रा २०० जी
नक नयन। गोगू हा पन आचारि नाटक "हास्यशा-
नोमासा गोगू हा तथा अर्थ कहाणी" क ठेप्यन।
एक अछा हिंदीमे छात्रा १५ उपन्यास तथा क
थाक ठेप्यन।



वैकुण्ठ हा



वैद्यानगुट्ट हा 'पञ्जीकान'
१८५७-

जन्म-
०८-०४-१८५७, पम्पुडा, गौरी, ककौडा (मधुवनी),
नशादय (पुनर्माया), शिवगान (अनया) आ
सम्पत्ती पुनर्माया। पति- उच्च यौन पञ्जीशास्त्र
मान्यगुट्ट पञ्जीकान भोदागुट्ट
हा, शिवगान, अनया, पुनर्माया। पतिमह-
स्वर्गीय शोभा शिवाय हा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष
धरि १८७० ईस १८७८ ई धरि अध्ययन,
रर वर्षक वयससँ पञ्जी-पुनर्वचक संवर्द्धन आ
संरक्षणमे संछा कर्णि पञ्जी शापा
पुस्तकक विप्रेतनास आ संवर्द्धन।



भहेगुन गानायाम कृष्ण



गनेगुन

गणकामा

डॉ वसिष्ठेश्वर मशिन



भहेगुन मशिन, गेपाठ

अनुपुग गानायाम यौधगी



कमठ कांठ हा १८४३-



महाप्रकाश १८४६-

जन्म: वगोव, सहसा, वहिन ।
वसिष्ठ कवि ओ कथाकार ।
प्रकाशति कृति: कविता
संग्रह, संग समय के (कविता
संग्रह) । कृतानुगानायाम मशिन
साहित्य सम्मान २०१० ई- स्त्री
महाप्रकाश (कविता संग्रह संग
समय के)।



श्रीनागन्द सहि हा १८४६-

अयोध्यागाथ यौधगी, यगुषा, गे
पाठ १८४७-

मूठ: कविके रूपमे पनयित छथि । गेपाठक
आयुगिक कवितिक क्षेत्रमे हगिक गाम
उठेयनीय अछि । स्त्री यौधगीक छेपने मानवीय
संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओठ जाइत अछि ।
कवितिक संग कथा आ गविगयमे सेहो ई कथम
यवैत छथि । श्रुदछिएए छेपन हगिक वसिष्ठा
थकिनी यगुषा जाविक हूहयो गामक गहगहिन स्त्री
यौधगीक जन्म दअकृतवन १८४७क ओठ छथि ।
हगिक कथितिक ओहिपान गामसे एक कवितिक-
संग्रहपुनह प्रकाशति छथि ।



वदियागाथ हा 'वदिति'



सयानाम हा "सस"
१८४८-

जन्म: सुथान मेहथ, मधुवनी वहिन ।
प्रसिद्धि गीतकार, वादमे कथा
छेपन प्रानमत्र केठनी । प्रकाशति
कृति: आपुन शनी
संगिनहन, शोसितिए उगौत सूयक
यन्मक (कथा संग्रह)।

अनुपिषुप १८४८-

जन्म: गौरी, दनशंगा। मूठगाम :
भहेगुन हा । मैथिलिमे सहस्रानुवाह
कविता संग्रह प्रकाशति । मुक्ती
प्रसंगक अनुवाद प्रकाशति ।
वामपंथी आन्दोलनमे सक्रिय।
शिक्षा, सम्वाद आदि पत्रिकिक
सम्पादन । वामपंथी वियानयानाक
सशक कवि ।





मधुकान्त हा १८४८-



विनू भाट



सत्याभगद पाडक



योगीनाथ



कुल्लाठ १८५१-



नाम जोस कापडि भाम्भ, यगु
षा, गेपाठ १८५१-

जगन्म-वधयौना, जगि
यगुषा (गेपाठ) जगन्मकोडनी: औगासा मुँआ (कवति
संग्रह), गही, आव गही (दीनघ कवति), तोना संगे
जग्यो ते कुलवा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी
पटना, १८८४), मोमक पद्येन अथन (जोग, गजप
संग्रह, १८८३), अप्पन अग्यगिहान (कवति
संग्रह, १८८० ई), नागी
यगुनावती (गाटक), एकटा आओन
वसगा (गाटक), महिषासुर मुन्दावाह एवं अग्य
गाटक (गाटक संग्रह), अगाना: (कथा-
संग्रह), मैथिली संस्कृति विद्य
नामांडा (सांस्कृति गविगव सभक
संग्रह), वसिन्ठ-वसिन्ठ सग (कवति-
संग्रह), जगकपुन ठोक यति (मैथिली
पेटिड्यासा), ठोक गटय: जट-जटगि (अगुसग्याग)
गेपाठ पुनज्जा पुनगिडिगक सटसथाना- स्त्री नाम
जोस कापडि भाम्भ' (२०१०)



योगेन्द्रनाथ मिश्र



श्रिनेन्द्रपठक कृष्ण, यगुषा, गेपाठ १८५१-

ठेपकसँ अर्थक शक्तिपक रूपमे पनीयति आ पुनगिडिगि छथि।
जगिगुवग वसिन्ठवाडिगठअगानागागा ना व कैमपस, जगकपुन-
थामक सह-पुनग्यापक स्त्री कृष्णक पतिहासिक वसिन्ठ-वसुगुपन
ठपिठ कृतक ठेप मैथिली, हगिदी आ अगुडगेजी भाषामे पुनकाशति
अछि। सुवाना-सुप्याय ई कहिये काठक कवति-कथा सेहे ठपि
ठेग छथि। हगिक ठप्यन जगानलनदयक, जगकानीमठक एवं
सोहासठ गेह अछि। ठेपठपन वुहना जास अछि जो ई हगिक
गम्भीर अय्ययनक पनीसिगि थिक। सामाजिक तथा साहित्यिक



व. भट्ट

सउद्य-संस्थासंगमे सेहे सकयसि पुनयुधापक कगामक जगम धनुषा जाविक देवडीहा गाममे र जगवनी १८५१ ६ कऽ गेठ छगी



याम्तेस्वर प्रसाद

गाम- पट्टीटोठ, जावि मधुवनी।
व्युक्त्या वेठ यन्यति प्रससति।



धनाकांत हा



जगद्गन गानाप्रसाद सहि, गोपाठ



पद्मश्री श्री जगद्गन गानाप्रसाद सहि



हनाकांत हा



जगद्गन गानाप्रसाद हा



पुनवासी साहित्यप्रदांकन



सीताराम सहि



गोपाठगण्ड मशिस



शैलेशुन्दर कुमार हा १८५२-

जगम स्थान हनपुन, वक्रशी टोठ, मधुवनी
वहिला। पुनकासति कर्ता: आनोह
अवनोह, दशम पुट्टी (कथा
संग्रह), स्कोनोमिके हसिस्टनी आंख मधिवि
(अंग्रेजी)।



श्रिनिकंत श्रीगणवत्स १८५३-

जगम स्थान वेहना मधुवनी, वहिला। यन्यति
कथाकान ओ आधियक। गीत ओ कवति सेहे
कहसि काठ वपिन छथि। पुनकासति कर्ता:
पुनकिस, अदहन, गाछ-पात, गामक वेक
(कथा संग्रह)।



अशोक १८५३-

जगम स्थान वेहना, मधुवनी, वहिला।
यन्यति कथाकान, कवी
ओ समुपादक। पुनकासति कर्ता:
यकनवृद्ध (कवति संग्रह)
पुनकिस (सहयोगी कथा)



वसुिनि आगण्ड १८५३-

गणमः शविगण, मधुवनी, वहिना यन्यति कवी, कथाकान, संपादक। पुनकाशति क्ानिट्टया उपगयास टूटा समीक्षा, गिग टा कथ संग्रह, टूटा गीग-गणु संग्रह ओ यागिटा कथा-संग्रह पुनकाशति २००६- वसुिनि आगण्ड (काठ, कथा) मैथिली छेउ साहित्य अकादमी पुनस्कान।



केदान कागल १८५८-

गणम स्थान सुपौष, वहिना यन्यति कवी, कथाकान ओ संपादक। पुनकाशति क्ानिः आकान छैन शव्ड (कवीग संग्रह), अगुदति क्ानि गीगान नाम मोहन गाय, पुनायस्थिति। सम्पादन संकल्प, शानि मंडन (पुनकि)।



डॉ शशिगथ हा १८५४-

गाम-दीप, गणि- मधुवनी। मैथिली, वांगु, वेवानी आ देवगानी पांडुलिपिकि वसिषपुत्र साहित्य अकादमीक गीग। सम्मान २००७ क्छसकिठ आ मध्यकाविल साहित्य छेउ।



धनुन्यन हा

गाम- वसुिण "वाक्यान्थवसियनम्" छेउ श्नीवामीधुवाँकानस पुनस्कान २०१० पुनापान।



शविकागण पाठक



डॉ योगेगुन पाठक "वसुिणी" , वैप्रागकि

"वप्रागक वतकही" पुनकाशति।



गणगण्ड हा

२००६- गणगण्ड हा (काठवेण- समनेश मणुमदान, वांगु) छेउ साहित्य अकादमी मैथिली अगुवा पुनस्कान।



आदुगगाथ हा "गवुिण"



अमठानस १८५६-



संगीतगाथ भस्मि



दगिभवन शकुन



गामेश हा १८५०-



कनूदन्पनामायाम् ठाठ कर्मा



शैलेन्दु आनन्द १८५५-



कमठाकां हा

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना



उत्तम प्रसाद शकुन १८५१-१८८५

जन्म ५ अक्टोबर १८५१ मुंगेर मे श्रीमती सुशदा देवी आ श्री लीनार्द शकुनक द्वातीस वाठक । हिनक जन्म- समौठ, जिला- मधुवनी। संविधि संगीतसिन्, टाटा स्टीलमे याकनी। प्रकाश हाक श्रुति "कथा भायोपुन को" मे मुख्य शुभक। गायकका आ मध्य अशक्ति। हुनक छिप्ट कछु प्रसिद्धि मैथिली गायक छहः वडका साहेव, मसिस्ट गिबि काका, लीलाया मिनियाई, वकैठ आदि वा अंग।



डाँ कमठागन्द हा



ठोकगाथ भस्मि

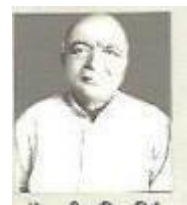


डाँ लीनार्द कुमान यौधनी १८६६-



अशोक अवधि

जन्म- ५ जनवरी १८६७, गाम- लहुआ संग्राम, जिला मधुवनी।



डाँ श्रीपति सिंह १८४४-

"उमंग-नंग" कविता-संग्रह प्रकाशित।

जन्म: मान्य १९६६ ई गणपतगंज, सुपौठा मैथिलीक
पुनर्स्थापका तक्यामैत्रीक पदक आ वहिन आ
हान्यम्पुड संकाय द्वारा पुनर्स्थापना हान्यम्पुडक
मैथिली आन्दोलनमे अग्रणी।



डॉ. उमाकांत

मैथिली व्यंग्य-आपेक पोथी "अपन
वाग" पुनर्काशना।

मैथिली पुनर्स्थापका नयना: एक वनू
गेक वनू (उनु नाटक), मैथिली भाषा:
सन्वेक्यास आ वसिष्ठ्यास, हनना
देशक भाषामे (मैथिलीक पुन्यम
असंग नाटक), सम्पादन:
हान्यम्पुडक संदेश, कथोट (नौ
अंक), हान्यम्पुड वामो (हिनदी
साप्ताहिक), सम्पादन:
अनन्त्याष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनमे
सम्पादन (२०००), पनहंस
उक्यमोवाय गोस्वामी समिति
सम्पादन (२००८)



सुशील १९४२-

अस्मिता (उद्युक्था संग्रह), शानती (नाटक) पुनर्काशना।



श्रीदेव

मूठ गान- वाग्यस्वना ह्य। कथा-
संग्रह "हठिकोन", नाटक "वेहक
कडवा", गीत-
पुनवच "पुठोना" पुनर्काशना।



सुकान्त सोम १९५०-

जन्म ६-अंगुल। ज्योतिषक नौनी
गाममे १९५० ई मे जेठवही। वी ए
पास कर ई पटनाक
दैनिक "जानसकान्तिक" सहायक
सम्पादनक छथि। छेन गन गान
यामस, पटनामेवाउद्यवस्थासँ अपन
पैतृक (पति यात्रीजी) गुप्त
कवाता कनवाक तथा कथा लिपिवामे
सेहे यश अनजन कएछथि अछि।
वृत्तमान नानासांसाजिक
विषयसँ सम्बन्ध
व्यंग्यवाचक, सनठ भाषामे लिपि
गन कवाता हिनक वसिष्ठ्यास अछि।
गामघनक पत्रिका नदुक्क शब्द
एवं विभव नयनामे कनमही सहि
छथि।



डॉ. देवकान्त मशिम १९५२-

पति कवयित्रीक्यामसो पु काशिकांत
मशिम "मधुप", "वेणीपुन अलुमपुडमे
मैथिली" पोथी पुनर्काशना।



डॉ. गित्यानन्द ठाठ दास

पति स्वर्गीय सुन्यनायामस दास।
अनवसिगाण कविता, अनवसिगाण सँ
अंगुली वसिष्ठ्यासक पदसँ १९६८ मे
अवकाशप्राप्ता। डॉ. सुनेन्दा
ह्य। "सुमन"क संशोधकत्वक
कान्यकामे "मैथिली पान्नासना
समिति" (साहित्य अकादेमी, दखिणी)क
सदस्य। मैथिली पान्नाक सन जेवा
वटुक, पुन्याग; मथिठि
महिने, पटना; स्वदेश, ६-अंगुल; फुँह्य, पटना
आ पति पठान, अनयामे नयना
पुनर्काशना। १९६७ ई सँ नाष्ट्रीय
स्वयंसेवक संघ मे सक्रिय। पुन्याग
पुनर्काशना २००४ वन्याठि सनसंवायक।
पुन्यागआन्दोलनमे विक्रान्त सेवारी।
डॉ. पुन्याग अखुड कवामक अंगुली
पोथी "सुन्यागडेड माहम्पुडस"क
मैथिलीमे "पुन्यागठि पुन्यागना" गामसँ
अनुवाद। साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद
पुनर्काशना २०१०- डॉ. गित्यानन्द ठाठ



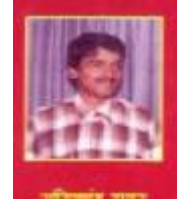
नाजनाथ मश्री १९५०-

"अ वन्दस आर वृष्ट आंग
मथिथि" पुनकाशति।



पुसुपानाथ हा, महोत्तरी, गेपाठ १९५४-

हगिक छेपन वविनासात्मक हेका अछि आ सम्वद्व्य वपियमे
विकपकं जागकानी हेन अछि। वशिष्ठिन पत्न-पत्निकामे हगिक
छेप-नयना वनोवनी दियवामे अवेन नहेछ लाना
कैमपस, जगकपुनयामे मैथिलि वपियक पुनयथापनमे संलग्न
श्री हा मैथिलिसम्वन्धो संग्रहणात्मक गान्धियिसं सेहे गुड
छथि। मैथिलि शाखाक वेपोग्मुय अवस्थामे नहए अपन विपि
गिह्नुनामे वसिष्ठजना नयनोहेन श्री हा एक संनक्षम-
सम्वन्द्वयक दिसिमे सेहे कृपियशीठ छथि। पुनयथापक हा
मैथिलि महाकाव्यमे नस गनूपस वपियपन वदियावानयि कएने
छथि आ शकिया तथा कानन वपियमे सेहे सुगाक छथि।
महोत्तरी जाठिक एकनहिया नहगिन श्री हाक जगम ४
दसिम्वन १९५४ कः मेठछवाियेनैमे मथिथि नगस
समभानाति।



**अगठियगुन डाकु १९५४-
२००९**

जगम १३ सतिम्वन १९५४ ईके कटहिन
जाठिक समेथि गाममे मेठगुहा १९८२ ईमे
हगिदी साहित्यमे सुगाकोगीन केवाक वाद
नवम्वन १९८३ ई
नवम्वन १९८४ यना "सुवह" हसुगठिपिनि
पत्निकिक समपादन-पुनकाशन कएएगुहा
आ कोशी कृषिनीय गामोस वैकमे
अयकानी नहथो मैथिलि, अंगकि, हगिदी आ
अंगोनेमे समानूपे छेपना म्पुसक पून
वनेन ट्युमनसं वोमान यथे नहए
छवाहा **पुनकाशति कः** आब माना
जाउ(मैथिलि उपन्यास)- पहि नानि-
मंडन पत्निकामे पुनकाशति मेठ, अेन
मैथिलिग द्वाना पुसुपानाथ पुनकाशति
मेठ; कय(अंगिक पहि प्यास
काव्य, १९७५); एक और नाम (हगिदी
गाटक, १९८९); एक घन सडक पन (हगिदी
उपन्यास, १९८२); E पेटस (अंगोने
उपन्यास, १९८०); अगन कहां सुप
पवि (हगिदी कहां संग्रह, २००७)। आब
मानाजाउ (मैथिलि उपन्यास) - हहि
उपन्यासमे एक एहन युवनीक संघन-गाथा
अंकि अछाणे अपन उगनसं पीवन वदछेन
अछा असाप्य गामक ई कथा कुविगनाक
अयःपागक कथा, संस्कानवहिगनाक
उदघाटन आ अवपियक पीदिके वयएवाक
येतीवी छी।



वेषेश यगुन ठाठ

जगम २९ मान्य १९५५ ई के
मेठगुहा पीना: सुन उदगिनायास
ठाठ,माना: श्रीमती सुवनेश्वरी देवा
हगिकन छडीहिनक नाम वसिष्ठेसुव
छगुहा म्ठवा: नाजनीकिकनी।
गेपाठमे वेकानाठ १९७७ गनिगत
संघनयक कनभमे १७ वेन गानिष्ठान



गानायामाजी १९५६-

जगम: घोषनडीहा (मधुवनी)। मैथिलि
शाखा-साहित्यमे एम ए, पी-एच डी
कामेसुवनी एना संसकना
वदियाएय, घोषनडीहामे अयथापन।
पुनकाशति कः: **घनी घुनी नहए
छी** (काव्य-संग्रह)।



डाँ श्री श्रीसंकन हा १९५२-

। उगमगं च वृत्तं जेठ । समपुनर्ता
 त्नाई मधेश ठेकागुर्ताकि
 पान्दीक नापट्ठेय उपाययक्ष ।
 मैथिलिमे कछु कथा वशिष्ठिन
 पत्तपत्तिकांमे पुनकासति ।
 आग्दोषन कवति। संग्रह आ वीपी
 कोरनाठक पुनसादिय उद्यु उपन्यास
 मोदीआरक मैथिली गुपागनास तथा
 वेपाथिमे संवीय सासगानि गामक
 पुसक पुनकासति । ओ वसिष्ठेस्व
 पुनसाद कोरनाठक पुनविद्य
 गाणगीता अगुयायो आ वेपाठक
 पुनगाताताकि आग्दोषनक सकृदिसि
 योदया छथी वेपाथि गाणगीतापि
 वनोवनी छथि नैह छथी



गादीपगानायाम "दीपक"



गाणदेव मंडेठ

शिक्षा- एमएडवय, एड एड वी.पना- गुणम-
 मुसहनगियो, गणसाता (गनिमथि, मधुवनी)। पुनकासति क्वानि- अम्वना-
 कवति-
 संग्रह, हन टोठ (उपन्यास), वसुंधरा(कवति संग्रह), गाठ (पटकथा)
 , गाण (एकंको), गाठ मंवन (उपन्यास), त्नाविमीक रंग (वहिन आ उद्यु
 कथा संग्रह), पंथैती (उद्यु पटकथा), वापसी।



शत्रिपुनसाद यादव



हीनेगुन कुमान हा १८५८-

गणम ३० अगसा १८५८, गाम- कोरुप्य (मधुवनी),
 पति। श्नी कामेगुन गाय हा। ट्नांसखुनम (मैथिली
 कथा संग्रह) पुनकासति।



भागेस्वन मगुण १८५८-

गणम गाम्हेगियो (भागपौ, मधुवनी)मे,
 १८७८सँ १८८२ धनी गौसेगामे
 वशिष्ठिन गहापन कान्यन, सेन
 यातनी मेठमे। समवय (कथा
 संग्रह) पुनकासति।



गवोगाय हा



महेन्द्र गानाग्राम गाम १८५८-

गानाग्रह वसिष्ठो गि १८६६-

गोपयन्द्र ह

महर्षि, सहस्रसामे गन्मा पहि पोथी
 अपन युद्धक साक्ष्य (गान्
 संग्रह) १८८१ मे प्रकाशित। अग्र्य
 पुस्तक
 हस्तकक्षेप, पत्रपत्र नहस्य(कविति-
 संग्रह), अतिक्रमाम (कथा-
 संग्रह), शोधितम् (उद्युक्तया
 संग्रह), कर्मभयान्था गान्कर्म
 यौथेनीक कथाकृता एकटा यंपाकषी
 एकटा वषियन संकलन-सपादना साहित्य
 अकादेमी मैथिली वाठ साहित्य पुनसूक्त
 २०१०-गानाग्रह वसिष्ठोके पोथी "६ शेट
 गँ की शेट" छेव यात्नी-येतना
 पुनसूक्त २०१० ई- ७० गानाग्रह
 वसिष्ठो।

पु.डी. वी.ए.
 (अनुशशासना), मुम्बईसँ थिएन
 कथमे डीपुर्वोमा मैथिलीक
 अनिक्रि हविदी, मनाडी, अग्रोपी
 आ गान्गामिने गिषिमा। १८७४ ईसँ
 मनाडी आ हविदी थिएनमे गिदेशक
 महाराष्ट्र १ गान् उपाय १८८६ आ
 १८८८ मे अहलेष्टी केन छे
 गटक **सीमा** क
 गिदेशक **वासुदेव**
 संगान **आहलेष्टी**क छेक कथक
 शोध आ पुनसूक्तसँ पु.डी.ए. छथा आ
 गटयशाखासँ पु.डी.ए. छथा विक्रिग।
 वाठ छे थिएनसँ गमिन
 टुवो मोडियामे नयगात्रमक गिदेशक
 नूप् कान्गोपपन-विछव वेनाथ
 मनाडी
 एकांकी(अनुवाद), सहिलविकन
 (मनाडी साहित्यक १५०
 वृत्त), आकाश (गि.टी.वी.क
 यान्वाहाकिक ३० एपिसोड), गीवन
 सन्ध्या (मनाडी
 साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), यनापी
 गाना यौथेनी (मनाडी), स्वयम्भुव
 (मनाडी), अने गले कथी गले
 हविदी), आह (हविदी), यात्नी (**मनाडी**
 सोनधर), मधुनपत्र (मनाडी
 वाठ-यान्वाहाकिक), ह्यथकेअन ३१
 २०० ए.डी) (डी.डी) २००८ मे-
 गोपयन्द्र ह (विछव वेनाथ
 मनाडी एकांकी- सम्पादक सुधा जोशी
 आ गान्गामिनाकनी, मनाडी)छे
 साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद
 पुनसूक्त।



महमोहन ह



कुमान शैलेन्द्र



गोपयन्द्र

गन्म स्थान मेह्य, मधुवनी, वहिना।
 यन्थी कथाकन ओ कवी। प्रकाशित
 कृता: संग्रह, समानाग, एपठ
 (कथा संग्रह), गान्खेनी (गान्
 संग्रह), संगीत, समवेत स्विक
 आगू, कोसो यानक सन्ध्या, पाथन पन
 दुर्गा (काव्य
 संग्रह), प्रतिक्रिया (आवेयगात्रमक
 गविथ)।



मेघन पुनसाद १८६१-



पुनदीप वहिनी १८६३-

जन्म स्थान कर्नाटकी मठविकि
रोड, प्यजौली, मधुवनी, वहिनी।
यन्यायि कथाका, उपन्यासका ओ
नगकानी। पुनकाशीनि क्ति
गुमकी ओ वहिनी, विसूचयिस
(उपन्यास), औगीह कमठा जयगीह
कमठा, प्यमुड-प्यमुड
जयगी, सनोका (कथा संग्रह)।
२००७- पुनदीप
वहिनी (सनोका, कथा) मैथिली छे
साहित्य अकादमी पुनस्का।



यगन्मोहन हा पुनवा



डाँ सुनेगन् एम, गेपाठ



नोसग जगकपुनी, गेपाठ



डाँ अरविन्द अक्का १८५७-



शुभयगन् हा "पुनवीम" १८६१-

गाम तुमौठ दनरंगा, आयठ नवठ
पुनवा, पांगठ गायक खहरी, हमा
मोवक प्यज यडिया, वसंका
वजगि (कवनी संग्रह), नून लेखन
नववि (कथा संग्रह)।



देवसंका नवीन १८६२-

ओ ना मा सो (गद्य-पद्य मसिनि
हिन्दी-मैथिली पुनानमकि
सपजनी), यानन-काज (मैथिली
कवनी
संग्रह), आयुनकि (मैथिली) साहित्यक
पुनदिक्षु, गीतिकाव्य के रूप मे
वदियापनी पदावधि, नाजकमठ योचनी
का नयनकान (अधेयनी), जमाना
वदठ गसा, सोना वलु का
यान, पहयन (हिन्दी
कहनी), अवाधि (हिन्दी कवनी-
संग्रह), हाथे यठ वजान (कथा-
संग्रह)।



कुमान मनीष अरविन्द १८६४-



वदनी वानायाम वरुमा



राजेण्डर कशोर, नेपा



श्याम सुण्डर शश, नेपा

श्याम सुण्डर शश, जनकपुरनगर, नेपा
पेशा-पत्रकारिता। शिक्षा: एम.ए. मैथिली
वैश्वविद्यालयसँ, एम.ए. मैथिली, पृथम
श्रीसोमीने पृथम स्थान। मैथिलीक प्रमुख
संघ वियमे नयन। वहुन गस नयन
व्यक्तिगत पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित।
हृदय, नेपा व आऽ अंग्रेजी भाषामे सेहो
नयन। आऽ वहुन गस नयन
प्रकाशित। सम्पूर्ण कर्तव्य
प्रवासक अव अवरोधे कानयन।



हिमांशु योधनी, नेपा

पति: स्वर्गीय कामेश्वर
योधनी, माता: श्रीमती यण्डावती
योधनी, जन्म: वी.स. २०२६
छहन, सनिहा, शिक्षा:
स्नातकोत्तर (नेपाली), पेशा:
पत्रकारिता (सम्पूर्ण: राष्ट्रिय
समाचार समिति), कर्ता: को गान
सांठ ? (मैथिली कविता
संग्रह), वगैरह ६६ शकसं नेपा व
मैथिली वेपन तथा अखिलने
नियन कनियसि व व्यक्तिगत
संघ संस्थासं आवद्य।



सत्यनारायण मेहरा



गुवभेश्वर पाथेय



राजेण्डर हा, यगुषा



अशोक कुमार मेहरा



यशरज वैद्य, सनिहा, नेपा

७ १८६७-

नसना नकैत पाणिनी, एक सृष्टि एक कविता, एक
समयक वात, युवाएव आकर्षित सन (मैथिली)



धीरेंद्र कुमान हा



रामकिषि हा, गेपाठ



गौरीगाथ (अनठकाग्न)

"अग्निका"क सम्पादन



आनन्द कुमान हा १९७३-

जन्म स्थान: मेरथ, हंसापुन; पिता स्व अग्रयकांग हा. माता श्रीमती इन्दिकाछि देवी, पुनकाशन- "धयाञा नवकी कर्मायोक छवास", "हंसा पुनसिन्ना", "वद्वेण समाप", "टाकाक मोठ", "कठह" (पाँथू मैथिलि गटक) पुनकाशना वद्वे सम्पादकक समागग्न साहित्य अकादेमी पुनस्का २०११ युवा पुनस्का- आनन्द कुमान हा (कठह, गटक)



वन्देवीपुन नगनाथ, गाटकका



यग्नेश



नाम सेवक सहि



शहिद दुर्गागन्द हा, गेपाठ



उदयनाथ हा "अशोक"

कवना संग्रह), नमनका अक्युट गटकहनु, गोगुहाका कथाहनु (मैथिलिसँ गेपाछि अगुवाह), मैथिलिक कक्षा १ सँ ५ आ वाठ-साहित्य संदुगक गीगटा पोथीक सह-छेपका पुनकाशनाक मूठ सहियांग (मैथिलि, पुनसमे), दधनि गिपिन्टगि मैनुअठ (गेपाछि, पुनसमे)



शशनिथ गोकुल, नेपाल



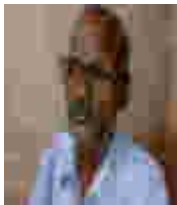
दुर्गाबन्धु मिश्र

संयथिका, कथा कुसुम (वहिन आ एवु कथा संग्रह), यक्षु पुनकासति।



श्रिवि कुमार हा १८७३-

श्रिवि कुमार हा १८७३-१९००, पतिका नाम: सुव काषि काणा हा १९००-१९०५, माताक नाम: सुव यन्तकथा देवी, जन्म तिथि: ११-१२-१८७३, शिक्षा: सुनाक (पुनपिडा), जन्म स्थान: माणिक- भाषिपुन मोडान, जा - वेगुसनास, मूठगानाम: गानाम- पानाएव - कानियन, जाषि - समसुतीपुन, पति: २४८९०९, संपुनति: पुनवयक, संग्रहमा, जो ए सटोस ठामिन नोड, वसिस्टुपुन जमसेदुपुन - २३१००९, अग्र्य गानविधि: वृष १८८६ से वृष २००२ यति वृष्टियापति पुनपिड समसुतीपुनक सोसकानिक, गानविधि एवं मैथिलिक पुनयान-पुनसान हेतु डा नमेश कुमार वरिष्ठ आ सुती उदय गानासमा योधनी (नापुटपति पुनसुका पुनापुन शिक्षक) क गानावमे संग्रान। **पुनकासति** कानि: कृषमपुनगा-कविति- संग्रह, अशु-समावियगा।



नाम प्रसाद साहू

मनक मैठ, अंकुन- एवुकथा संग्रह, नथक यकका उठयि छै वाट (कविति टनका संग्रह), कान वलु जा सुन गा (दोसक कविति टनका संग्रह), सूकुक पयिडा (वहिन एवु कथा संग्रह), दूधवेयनी (एवु कथा संग्रह) पुनकासति।



महाकाणा गोकुल



वयेस्वर हा, गनिम्बि

"गविन्ध-गकिमप" पुनकासति।



योगेन्द्र कुमार, गृत्महि



योगेन्द्रशेखर कामनारिण्टपट्ट-

मैथिली कथा शिक्षा- एमए
(लाजगीनासिस्तान), पति- स्व योगेन्द्र
कामनारि, गाम-पोस्ट- कनियन, बाबा- इमाम
गाम, थावा- नोसडा, जाति-
समस्तीपुरी, वहीना संप्रदायिपुस्तक
संस्कारिणी प्रसाद पदाधिकारी (वेबिपट्टी)।



गट वसिष्ठ नाथ

"बनट्टासि", "छठकि डारा", "हम
यानुयाम" प्रकाशित।



वगिय शुकल

उपना पत्राक पोण (कविति संग्रह)



सुधाकर हा, महोतनी, गेपाठ

सएस वैशी सडक वाटकमे मंथन।



सदने आठम "गौहल"

गाम-पुनसौठिया, बाबा-
जयगाम, जाति मधुवनी।



डॉ शुकन कशिोर मशिर् "शुकने
श"

मैथिली कथा संग्रह- गोवळण।



दधिकर कुमार

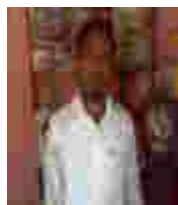
"पुनवोतन मैथिली"क सम्पादन।



डॉ वगिय प्रशिंतवगु



नामदेव प्रसाद मशिर् हलूदान



उमेश पासवान

"वामति नस" प्रकाशित।



आठम प्रकाश हा

वोचनडीहा (मधुवनी)।

भैथविक त्रियानो शकुनक गानसँ पुनसद्विय भैथविक पहिठि जगकत्रा नामदेव पुनसाद मासुडर ❖हालुदास❖

"हमना वगु जगान भूना छै" आ "गीताभूजवहालु" पुनकासागि।



जगदागुरु हा भगु

गढ़िया मुकैए हमन घनाछिपन (जगज संग्रह), तोहल क्लोक गग (वहिन कथा संग्रह), योगहा- (वाठ उपग्यास), वृथथा- (कत्रागि-गीत संग्रह)।

"कसि वृहो सकर हमना" (जगज, नुवार आ कला संग्रह) पुनकासागि।



डॉ अमोठ नाय



अच्छेवाठ शास्त्री



गुरु कृमान भस्त्रि गुरु



डॉ गुरु कृमान भस्त्रि



शत्रि कृमान पुनसाद



दधिप कृमान हा



डॉ नानाकागु हा



अमनकागु, गेपाठ



मुनीयन हा

कवठिपुन, द-नंगेग। वाठ कथा संग्रह "पठिपठिहा गाछ" (२०१०) पुनकासागि।



कर्मयन दास

"भैथविक कृमान कायस्थक गीत, पुनवन, मूठ आ वेत्राहिक सम्वन्ध" पोथी पुनकासागि।



श्रीकागु मासुडर, भैथवि नंग मंय



वेयग डाकुन

गाम: यगौनागोन, मधुवगी। पुनकाशति क्ति: वेटीक अपमान आ छोनदेवी (गाटक), वाप गेठ परिगी आ अथकान (गाटक), वसिवासघान (गाटक), उँय-गीय (गाटक), यौट (गाटक); एक दानगसँ वेसी गाटक पुनकाशक पुनीक्यामे।



गंगा हा

मैथिली गामंडठ कोकठि मंथ, कोठकाना कोठकाना आ गाम पागुआनाडिह टोछमे मैथिली गामंथ गनिदशग।



गवोनायासम भसिन् १८५५-

पानि-श्री गोवर्द्ध भसिन्, माता- श्रीमता अडुवा देवी। गाम- कुशमौठ, पोनागएह-वठारग, मासा-अनेउहाट, पाछि-मधुवगी। मैथिली गामंथसँ सम्बद्ध "कोकठि मंथ" संस्थाक माध्यमसँ।



कमठेश कुमान दास, गामंथ क ठाकान



कशीन केशव, मैथिली गामंथ



कुमान गगन, मैथिली गामंथ



अशोक दान, णकपुन



मदन डाकुन

यन्यागि गामंथी, णकपुनक यन्यागि संस्था मैथिली गाट्यकठि पुनषिदक संस्थापक। तीग दशकसँ वेसी समयसँ गामंथमे सक्रिय। कनीव ३०४० गोट मंथीय गाटकक सभो पुनसूतानि, २०२५ गोट सडक गाटकक लणानसँ वेसी पुनदशगमे अगणिय। २० गोट टेलि-सोनियठ आ आया दानग मैथिली श्रियन श्रियमे अगणिय। पुनसूतान: सपान अगान्ताष्टीयि महोत्सवमे सनवसनेषु अगणिया २०४८ वसि, कृषेतीय पुनगिा पुनसूतान (गेपाठ सनकान) २०६३ वसि।



अनय कुमान यादव, मैथिली गामंथ



आशुतोष यादव अग्रजिभ



कृष्ण कुमान कश्यप वर्डरट-

जन्म १५ सितम्बर १९४८ ई। पति- कवि- उपन्यासकार सुब्रह्मण्यनाथस एच "सैवयि"। जन्म १९८५ ई मे मेगा सभ छ "वाक्य संकलन", १९८९ ई मे "कवि आध्यात्मिक जीवन आ शक्तिपद्धति"क पुनर्जन्म आ एक कान्थागतवध छेव शिव कश्यप आ शशिविवाक सहयोगसँ "जाती विकास संस्था"क स्थापना। नया: शशिविवाक संग "मेघदूत" आ "गीता-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-बाग, मैथिली यति-शक्ति, बाग-१, मैथिली यति-को१, बाग-३।



भवति कुमुद



वटोही ह, मैथिली यति-कवि



पुनर्वीर कुमान गकुल

जन्म त्रिभुवन-३१ दिसम्बर १९७७; जन्म स्थान - कर्णहैथि, सक्ती, मधुवनी; शक्ति-सूत्र गानासस हई। संकलन - वनपानिगल, वी एस् सी - मेमोरिअल कलेज - एनगंगा, उपिमा इन शैशन डिप्लोमा (निसनर डेस्टिग्रेड अँसु शैशन डिप्लोमा - वयो दित्ति), यति-कवि आओ शैशन पुनर्जागामे वसिष योगदान, गिवास स्थान- दित्ति, इंडिया; पति- श्री सत्य गानासस। गकुल, सक्ती - कर्णहैथि; माता- श्रीमती माधु गकुल, सक्ती - कर्णहैथि। वर्तमानमे अपन एकसपोन्ट वणिजस एस्सयेट) क नामसँ सुनुआन, पुनर्वमे पुनोडकट उवेथिपभेट आओ मन्थक रूपमे कान्थना।



भवति पंडरि, मैथिली मूनाकवि



गाजेगुन पंडति, मथिथि मूर्ति
कथ



यगुन कशिीन ठाठ, पानका, नेपाठ

गागिस यगुन ठाठ



उपेगुन गगन गागंसिी, नेपाठ

सडक गटक

गजेगु कुमान हा, पानका



गभेस गगन, पानका, नेपाठ १८
दद-

पानका, नेपाठमे गगन । नेपाठिय कथा-गगनक
गवीन मुदा सम्मगति गगन । गगनपकृषयन कथा-
दृष्टी आ मोहक शक्ति । थोड ठपिठगि, मुदा वे-
वेन यन्यति नहवाह ।



राजान शकृन

"वाँकी अछि हिमन दूयक कान" पानकाशति



सुगान कुमान हा, नेपाठ

गहिदी (उद्युक्था संग्रह), थोडि (उद्युक्था-
संग्रह), गीपेगुन डलनी (गपिनगान), गगन (उद्यु कथा संग्रह), पपु
नीवाथि (उद्यु कथा संग्रह), कोखी घुन आउ (वाठ उद्यु-
वहिनिकथा संग्रह), दूयमती- (सम्पादन- नेपाथि आ मैथिलिमे)।



सगान पथिठि

नेपाठक पहिठि मैथिलि नेडगि गटक
संयठक



देवांसु वरस

गगन- गुवापट्टी, सुपौवा मास
कमुपुगकिशनमे
एम्प, हिनदी, अंगरेजी आ मैथिलिक
वगिनियन पान-पानुनिकिमे
कथा, उद्युक्था, गपिआन-
कथा, यगिन-कथा, कान्टून, यगिन-
पुनहिविका नुसादिक पानकासग
वसिष: गुगनान गानुय साठा पाइय-
पुसाक मेडठ दवाना आडन ककुषाक
ठठ वगिआन
कथा गगन पानकाशति



संतोष मसि, नेपाठ

पोसपुन (उद्युक्था-
संग्रह), उदास मोन (उद्युक्था-
संग्रह), एग-करि (कविति-
संग्रह), अएग (संपादन- कविति-
संग्रह)।



सुगीठ कुमान मठुठिक, गायक,
गगनकपुन, नेपाठ १८६८-

मैथिलिक गायक-संगीतकानक रूपमे पुनसद्वि
छथि । मैथिलि भाषाक गीतसगमे मठुठिक तथा
सानुथक संगीतक सगनमे हगिक सकृनियन।
पुनसंसगीय छन। सुगीठक गायन तथा संगीतमे
कैसेट एउवनसग सेहो वाल गेठ अछि ठिपगदसि
हगिक सकृनियन। पानिामानक रूपमे कम नहनिहुं
गामानक दृष्टी हदयसुपुनसि भागठ पान
अछि गिशासँ वगिआन-शक्ति क छथि ।

संगीत - मूठ हविदी वेप- गीतेश शर्मा, मैथिली अग्रवाल- उमेश मसुंड
७।



सुल हेमकांत हा, गायक



मुनीधर, मैथिली अग्रिम निर्देशक



कुंज वहीनी, मैथिली गायक



गामवाल हा, गायक



वपिउदासी



जतिव्द सहयोगी



उदितगानायक अग्रिम गायक



पुनकाश हा, अग्रिम निर्देशक



कीर्तिश्रीवाण्ड कर्किट



श्रीराम हा शानंज



अग्रिक हा गोष्ठ



अशोक कुमार १८८१-

साथानस कापडकानक पत्रिणमे
समसुगीपुन जठिक भोपयानपुन
सपठानी गाममे जगमठ अशोक
कुमार कहिये स्कूठ वह जेठहा
दनिमे पयास थाका कमेवहिन
दठिठिक एकटा गोष्ठ कठवक एह
कैठिके १८८४ ई मे योनिक
मथिया नोप ठा कए गोष्ठ कोनससँ
वाहन कए दठ जेठ वैह कैठी दस
साठक नीन शानक नमन एक
गोष्ठन वन जेठ।



राजेश शिंह, मैथिली श्लोकाना पु
गोपक



अंजय हा

सुवर्णाशरण, शारवपुरा मोटोगोवक
सीईओ।



विन्देश्वर पाठक



विन्देश्वर मिश्र

डॉ. विन्देश्वर मिश्र सम्पूर्णता आई
आई टी नूडकी, उर्णागामेउमे
अंग्रेजी पढवेन छथि आ हिनक
नयनाव अंग्रेजी आ हिनै मे
पुनकाशति मेठ छगही अह वृत्त
हिनक करीना संग्रह पठिन
पुनपस नद ओगहेन
शेभस पुनकाशति मेठ छगही एक
आनिकि ई अंग्रेजीमे आबयवाक
कथेनमे आठ टा पोथी संपादन केने
छथि। हिनक पोथी छाममुनयिगीन
पकठिस जेन एगामिनस नद
पर्येनिसिनस वहुनो अंग्रेजियनगि
संस्थानमे पाठय पुस्तक रूपमे
पढाओव जास अछि।



गणकमठ हा, अंग्रेजी छेपक, पानकान

हिनक अंग्रेजी उपन्यास "द वूड वेडस्पेड", "इथ यू आ
अथेड ऑथ हार्टस" आ "श्यामपुत्र" पुनकाशति छगही "द
वूड वेडस्पेड" (१८८८)पुन हगका "कामगवेथ नारुनस
पुनकाश शॉन वेस्ट थनसट वुक- थुनेशिया" मेठ छगही
गणकमठ हा श्री मुनीश्वर हा आ श्रीमती गणगा हाक पुन
छथि, "आइआइटीएमडगपुन"से वेटकछथि, आ आर कावह
दिविमे नहे छथि, नान ओ "समुद्रियन एकस्प्रेस" मे एडिटेन
छथि।



मानस वहिनी व्रमा, वैष्णवार्गी
क



शशीश्वर नाथ 'गोमु' भयिषि १
१९९२-१९९७



नामदेवी सहि 'दैनिक' भयिषि १९९०-
१९९४



नामदेव वेणीपुनी १९८८-
१९९७



ડૉ હૃદયેશ ગુપ્તા ૧૯૨૭-૨૦૦૮

જન્મ ૨૧ જૂન ૧૯૨૭ ઈ.
ગામ- ચકસોમ, પો- પટોનો, જાણિ- સમસીપુના
ગીત દ્વારા સૈ વેશો હૃદયે પોથી જાહનિ કાવ્ય-
કથા-પુનવગ્ધ સમ્પાદિતિ અછો



હૃદયેશ સુવોસાવ "સુવ" ૧૯૩૪-



સુવ જાગૃદન પુસાદ હા 'દ્વા' ૧૯

હૃદયેશ સાહિત્યકામ



જામેશ્વર પુત્રે

હૃદયેશ ગાટકકામ



ડૉ ગવૃથ કશોન દાસ "ગવૃથ" ૧૯૩૦-



મોહનગૃદ હા ૧૯૫૫-



જામાજી સશયિન



જામેશ ચંચૃ ૧૯૩૦-૨૦૧૧



ડૉ અમરેશ્વર



જોતેલ મનોધી



કુશ્વર અમતિામ



સંશુ અગેહી

જન્મ ૮ જાગવની ૧૯૪૧, પુનકાશાતિ
કાવ્ય-શિશુદાસૃ ડીહ (કથા-
કાવ્ય) ૧૯૮૮, સર્ગા (કથા
સંગ્રહ) ૧૯૮૮, તેસની વેનશિ (કથા



पोद्दान नामावनाम अगुम १८२३-१८८८



माहेश नाम १८३०-२०१२

काव्य)२००३, वपुष्का छंद वशिंस २००७



अगुम पुकास १८४८-२०१२



अंशुमन पासुडे

गिहुना भूगीकोडक आवेदनकर्ता।



दगेश कुमान मश्र

मथिषिक वाढकिक स्कुसुपुन
मथिषिक मोटा-मोटी सज यानपन
कगिव पुकासगि। अगुम वहिन की
वृथथा कथा (१८८०), कोसी- उम
कैद से सागा-ए-भौग
नक (१८८२) वंदगी मलंगदा
(१८८४), बोधा पेड़ वृष का- वाढ
गथिगुम का
गहसुध (२०००), वगावना पन मागुन
मथिषि की कभवा गदी
(२००४), गुगही गदी और नकगीकी
हाड- शुक (२००५), , दुई पाटन के
वोय मे- कोसी गदी की कहानी
(२००६) तथा वागभगी की सहागि
(२०१०)।

ओमपुकास गानगी १८६८-

कोसी गदीक लोक सांस्कृतिक अध्ययन - गदियाँ
गानगी है, वहिन के पानपुनकिक गद्य आ मैथिलिक
लोक गद्य पुकासगि



वैदेही सोना



यागुमवठक्य पुनी भैगुयेयी

यागुमवठक्यक हू टा पुनी छथयगिह पहि
कागुयायगी आ दोसन भैगुयेयी भैगुयेयी
वृहमवादीनी छथिह कागुयायगीसे हुगका
गोगथा पुन छथयगिह- यगुनकागुना, महाभेघ
आ वगिस।

भोगीदाइ

मथिषिक गणक (वोवा) गानकिक
लोकदेवना





वह्निवा

यम्पावगानक वह्निवा



गांगो देवी

मथिवाक मवाह जातकि वोकदेवता।
गांगोदेवीक जगता अप्पनी मथिवाक
मवाह वोकनामे पुनयवति अछा।



नेशमा, कुसुमा, शुल्वा



मोनांगक मोतीसाधन



रान्जिथ्वासरिनी देवी मैथिली वोकगीत १९२०-२००६



कामेश्वरी देवी १९२२-

मधुवनी जाविक बवानी गामका जगम
१९२२ ई मे अपन मातृक बालनमे
बेठना पतिपे मदनभोहन हा।
वनौनीवासो पुनसहिच गागात्तकि
पाम्डीके केशव भस्मिन हागेक पति।
छथथनि "मथिवा संस्कृत गीत"
पोथी।



कुसुमवला कर्म



आसामा सहि १९२४-

समीक्षिका, अनुवादिका, सम्पादिका
। पुनकाशन: मैथिली
वोकगीत, वसवेश्वरी (अनु), शिशु
पेठ गीत आदि। छेडी वनेवोन्व
कांवेण, कठकनामे पुनव
पुनयापिका।



गथि ने १९३३-

जगम:रद जगवनी, १९३३, पति: श्रीमवाथ
भस्मिन, पतिडिा एयएने, दुगागाण, मैथिलीक
वसिपेट कथाका। एवं उपन्यासका।
मनीयिका उपन्यासपन साहेतिय अकदेमीक
१९९२ ई मे पुनसका। मैथिलीमे वगवग हू
सय कथा आ पाँय टा उपन्यास पुनकासति।
वोपुठ वाठ साहेतियक सणवा अगेक
जातीय भाषामे कथाक अनुवाद-पुनकासति।
पहिल पुनवोध सम्मान २००४ सँ सम्मानति।



गीनाना गेसु १९४५-

जन्म: ११ अक्टूबर १९४५, नाम: कालापूया देवी, उपनाम: गीनाना गेसु, जन्म स्थान: गवरोठ, सनसिवपाही। शिक्षा: बीए (आनर्स) एमए, पी-एचडी, ग्रीसो। पुनर्काशी नयना : ओसकस (कवना) भूमि, १९६०) वेपन पन पानिवाकिक, सोसकिक पनविशक पुनवाव। मैथिली कथा यना साहित्य अकादेमी गई एडिबिसे सुवागतानुयोगान मैथिली कथाक पगह-ह टा पुनविथि कथाक सम्पादन। संगान यान पयिसठ कथा संगान, आगान कथामे ठ कवना संगान, ज्ञानमना कथा संगान, पुनानियुधवा हगिदी कथा संगान, १९६० से आर्यना सएस अथकि कथा, कवना, शोधनविग्य, एडिगविग्य, आर्द अगेक पान-पानिका तथा अगनिगहनगनयमे पुनकाशी मैथिलीक आनिकि कछु नयना हगिदी तथा अंगेगीमे सेहो २००३- गीनाना गेसु (ज्ञानमना, कथा) एठ साहित्य अकादेमी पुनस्कान।



गीनाना गेसु १९५४-

जन्म- गवानीपुन, पामुडीठ (मधुवनी)। पति: श्री श्रीमोहन गेसु। पुनकाशी कर्ना: मैथिली नामकाव्यक पुनम्पना, वाहिस- एनपस (समीक्षा), वदियापानिक उन्स (समावेयना), गानगी (उपन्यास)



अनजानसुया मिश्र

जानक उययान न्यायालयक यानमि महिषि न्यायाधीश आ पहिप मैथिलीनी।



अनुसि मधुवा मिश्र



गीनाना कन्स १९४६-

जन्म ३ नवम्बर १९४६, जाम- पटोनी, पोपयगछिया, जामि- सहनसा। सडस्य, मैथिली साहित्य अकादेमी पनामनसदान् समिति १९८७- १९९३, सडस्य, भाषा पनामनसदान् समिति (मैथिली), गानगीय ज्ञानपीठ अवकाशपनापन वसिखवदियाथय आयातय आ अय्यकथ, मैथिली वधिग, पटना वसिखवदियाथय। **पुनकाशी कर्ना** अगुवा, नावनाक असुथपान (मैथिली काव्य संगान), शंयनाड, तुमयमेव समनपये, अगुवग्य (हगिदी काव्य संगान)। पुनकाश्य: सपनपदी (मैथिली गविग्य संगान), यानागिक प्पुडगमि मैथिलीक पुनसदिय उपन्यास, मैथिली-उपन्यासक कथा कछु कहै अछि (मैथिली आवेयना); जनिडगीनाना (हगिदी काव्य संगान), कनमस: (हगिदी आवेयना)।



शेखारिका वन्मा १९४३-

जन्म: अगस्त, १९४३, जन्म स्थान : वंगाली टोवा, गानुपुन। शिक्षा: एम, पी-एचडी (पटना वसिखवदियाथय), ए एन काठिण, पटना मे हगिदीक पुनयापानिका पडसे सेवानिवान्। गानी भगक गुनगथकै प्पेठिकुम १ससे भनठ अथकिगन नयना। पुनकाशी नयना: हलैगै गोन, वजिकै गोन: वपुनठव्या (कवना संगान), सुम्गा नयना (संस्मनास संगान), एकटा आकास (एवुकथा संगान), यायावनी (यागाना- वानागान), गानानाव (काव्य-पुनगीन), कसिन-कसिन। जीवण (आनकथापन साहित्य अकादेमी पुनस्कान)। अन्थयुग (एवुकथा संगान) आयन- आयन पुनान, गानास (उपन्यास)। २००४ ई- ७ां श्रीमती शेखारिका वन्मा, पटना: यागाना- येनाना पुनस्कान।



गीता हा १९५३-

जन्म : २१-०१-
१९५३, वृधवसायः पुनायुधापिका ।
छेय्यन पुन समाजक पुनमुपना गथा
आयुगीकिका संस्कार सं होरु
वसिगाक पुनावापुनकासति
कृति : श्रुतियु, कथा संग्रह
१९८४, कथावली
१९८०, सामाजिक असनोष ओ
मैथिली साहित्य शोध समीक्षा
। वधिर भौसो (वाव छुक्कथा
संग्रह)।



आशा मशिन १९५०-

जन्मद-७-१९५० ई, पुनकासति कथा
मे मैथिलीक संग हगिदी मे सेले ।
सगसँ पैघ वणिय मैथिली कथा
संग्रह ।



उा सुनीता हा



पुनेमठा मशिन 'पुनेम' १९४८-

जन्मस्थानः-हकि, मागाः सुनीमती
वृगहा देवी, पीताःपं दीनावाथ
हा, शक्तिषाःपुन, वीरड, पुनसदिय
अशुविनी ह सयसँ वेशी गटकमे
गाग छेवनी गंगामि (नाट्यमय) क
ज्ञानपुन उपायकृषा, पत्रिका
सम्पादन, कथाछपन आदि कुशु
। अरुपिग आदि अनेक संस्था
द्वारा पुनसकृ-सम्मानिता।



उा रूदिया हा १९५७



मेगका मशिन १९६६-



शागहा सगिहा मैथिली लोकगीत १ ९५३-



छापनी देवी



शकुंठा यौधनी



गोदावरी दत्ता, मथिथि यत्निक
ठा



उषा वर्मा १९४८-



कमला यौयनी १९५३-

कऱ्ताः मैथिलिक वेस-शूषा-
पुनसाधन समवगथी
शब्दावली, पुनकाशनाथीनः वाटे
वधियल पावो (कथा संग्रह), पयिा
मयुमास (कविति
संग्रह), आसापुनासा देवीक वंगला
एवु उपन्यास **मन भंगुषाक** मैथिलि
अनुवाद। मुगुअनुपुनसं पुनकाशति
मैथिलि साहित्यिके
पुनकाः **सुसगीक** सम्पादन
(१९८४-८५)।



सीता देवी, मथिथि यत्निकठा



समस्रवती यौयनी, जगकपुन



उाँ अनुमा यौयनी



वनिा नागी १९५९-

मैथिलि क ३ साहित्य अकादमी
पुनसूकान वणिता ऐम्कक ४ गोट
कतिाव "कगुधादान" (हामिोहन हऱ),
"नागा पोपने मे कतिनी मखथियाँ"
(पुनवास कुमान याउयनी), "वधि
टुन को डायनी" व "पटाकूपेप"
(वधि ने) हऱहऱमे अगुदति
छगुहऱरे गोट ऐककथाक
पुसुाक "मथिथि की ऐक
कथाएं" व "गोवु हा के कसुसे"
मैथिलि कथा संग्रह "पोहसँ
गिकसेन"।



ज्योत्सना यगुनम १९६३-

जगुमनथिः १५
दिसिम्बऱ, १९६३, जगुमसुथान
: मनुआगा, सधियिा
पुनुद, समसुतीपुन, पतिा : सुती मानकमुडेय
पुनवासो, माताः सुतीमती सुसीवा हा, अयुयापन
। सुपुनयिाति कवयतिनी, कथाकान।
पुनकाशति कऱ्ताः वोगसाई (कविति
संग्रह), हऱहऱिकोना (कथासंग्रह)।



सुसुमतिा। पाऱक १९६६-

जगुमः सुपौठ, वहिल। पुनयिाति
कवितिा संग्रह पुनकाशति।
कथावायक, कथासंग्रह
पुनकाशनाथीन। नाजनीतिा सासुनमे
एमुए संगीत, पेटगिमे नुथीा मैथिलिक
पोथी पुनकाः पन अनेक तेषुयतिा
पुनकाशति। समकाथिन
जोवन, समथ, आ नाकन सुपुदणक
कवयतिनी। अनेक शाषामे नथवाक
अनुवाद पुनकाशति।



અર્મિલા દેવી, મથિથિ યત્નિકૃતા



યુમના દેવી, મથિથિ યત્નિકૃતા



પ્રશોદા દેવી, મથિથિ યત્નિકૃતા



નિમા હા, સમ્પાદક મથિથિ દર્પ
મ્મ



પન્ના હા
અનુશ્રુતિ (વૃદ્ધકથા સંગ્રહ)



સુધા કર્મ



ગુના દાસ
સમ્પાદકા, મથિથિગાન



નાલિકા હા, અંગ્રેજી ટેપ્પકા

હુનક-૧ અંગ્રેજી
ઉપન્યાસ "સમેઠ" આ "ઐન્ટર્નલ્સ ઑન દેપ્પ-
હાન્સ" આ અંગ્રેજી વૃદ્ધ કથા સંગ્રહ "દ
પ્લોએન્ટ પ્લુડ દ માનુતા" પુસ્તકાસિતિ અઘ્લા
ઉપન્યાસ "સમેઠ" ઇઠ હુનકા "શુભેત્ય
પુસ્તકાસિતિ ગુપ્તવેન" પુસ્તકાસિતિ ડેટ્ઠ ઇનહા આ
૬ પોથો સોઠે ઢાપામે અનુદતિ ડેટ્ઠ અઘ્લા
નાલિકા "પ્લેન્ટ્સ
કાંઠેપા"સે "પ્લેન્ટ્સપોથોપી" પદ્ધે ઇથા
આ "શક્તિગો વૃક્ષિવવદિયાઠ્ય"સે નાળગીતા
વૃક્ષિવવદિયાઠ્ય માસ્ટર્સ ડિગ્રી ઇને ઇથા
ઓ "હૃદયસ્તાન ટાસ્મ" આ "વૃક્ષિવેસ
વૃક્ષિવ"મે કાપા કેને ઇથા આ સંગ્રમે "નાળીવ
ગાંધી આઠ્ઠેસન, દૃષ્ટિ" મે સેહે, નાપ્પ ઓ
આર્કિવાદસે પીડિતિ વય્યા સગ ઇઠ સમ્પન્ક
કાન્થક્રમક પુનામઢા કેને નહ્યા આ
કાઠ્ઠે ઓ અપન પાં આ વય્યીક સંગ
ટોકથોમે નહે ઇથા



સ્વપ્રંપના હા ૧૮૭૦-



नूपा चौधू १९७३-

नूपा चौधू- जन्मस्थान-
मधनाकडेनी, सप्तरी, श्रीमती
पूवम हा श्री श्री श्रीमकुमान हाक
पुरोनास्थायी पाण- अग्र्य-
संगमाथा, जिल्हा- सगिहा प्रथम
प्रकाशनि नयना-कोरवी
काणप, माटसि
सगिहा (कविति), गंगाना वेडक देश-
श्रीमस (कवक दीक्षानिक
पुराकक योगेन्त प्रेम-परिसंग
मैथिलिने
सहश्रुवाह, सडगीनसमवगधी
क-ना- राष्ट्रियगान, गोन, गेहक
वसल, येगना, प्रथिगत हमन
कमौथा (पहिलि मैथिलि सोडी), प्रेम
शेव ननघुसकमे, सुनकषति
मान्तर गीतमाठ, सुपक सगेसा
सम्पादन-५७७७, मैथिलि साहित्यिक
मासिके पत्रिका, सम्पादन-
सहयोग, हमन मैथिलि पोथी (कक्षा
१, २, ३, ४ आ ५ आ कक्षा ८-१० क
ख्येष्किक मैथिलि वचिप
पाठ्यपुराकक भाषा सम्पादन)।



अंजना हा, वदियापानि संगीत गायिका



नशुभदिग, गायिका, जनकपुर



कामरिणी कामाप्रणी



मुग्नी हा युवा नयनाकान



कामरिणी १९७८- युवा कवयिति
नी



नुकसाना सद्विदीकी



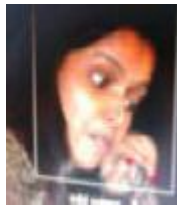
कवपना मशिन, मैथिलि गगमंथ



जयानि हा,
, मैथिलि गगमंथ



कनिष्ठा हा, मैथिली नंगमंथ



पुन्यिका हा, मैथिली नंगमंथ



ऋतु कनिष्ठा, मैथिली नंगमंथ



पुन्यिका कनिष्ठा, नंगमंथ



बेहा कनिष्ठा, नंगमंथ



सवर्णिता



अनुपमिया



मंहुठा पुनयाग



अनुपम मशिन्, महिषि वंक्सणि



नाथी दास, महिषि यत्निका



वनासो पंडति, महिषि यत्निका, धनुषा, नेपा



देविका देवी कनिष्ठा, महिषि यत्निका, नेपा



मदनिका कनिष्ठा, महिषि यत्निका, नेपा



महासुन्दरी देवी, महिषि यत्निका



गन्धिषा हा, महिषि यत्निका, नेपा



शुभो साह, भयिषि यत्निकर, न
होतनी, नेपा



राजनी पुरो



संगीता कुमारी, भयिषि श्रुडोना
प्रोजेक्ट



रान्जिेश्वरी दास



गौरी सेन



सोमा हा



ग्रामी मिश्र, कवयित्री १८५३-
१८८६

कोसल, मधुवनी। जन्मस्थान गिरी, नेपा



मौसमी वगुणी, कवयित्री



श्रेय हा



शान्तिदेवी



शशविषा

पति। श्री उग्र गारायस वर, पति
श्री उमेश कुमार कर्म (वसिष्ठ)।
शशि कल्प आ कल्प कुमार
कल्पक सहयोगसे "गान्धी विकास
संस्था"क स्थापना। यथा: कल्प
कुमार कल्पक
संग "मेघना" आ "गीत-गीतवित्त"क
भयिषि अनुवाद, माख-गान, भयिषि
यत्न-शिक्षा, गान-१, भयिषि
यत्न-कोन, गान-३



मुग्नी कार्ना

सुपुत्र मग नसठ आँपा (कविति संग्रह)।



पुनेमा हा

भयिषि वेक कथा



श्रेशुभाषा

भैथिषि वेकगीता



श्वेता हा यौधनी, यतिनका

गाम सनसिव-पाही, उगति कथा आ गृहवापिनागमे
सुगाका भयिषि यतिनकथामे सन्धुकिट
कोनसाकथा
पुनदुनशुनी: एकसएथानथारु, जमशेदपुनक
सांस्कृतिक कान्यकुनम, गुनाम-शुनी मेघा
जमशेदपुन, कथा मगदने जमशेदपुन (एकधीविसन
आ वनकशांप)कथा समवगधी
कान्य: एगथारुटी जमशेदपुनमे कथा पुनाथिगिगिमे
गनिमायकक नूपमे सहयोगिता, २००२-०७ यनी
वसेना, जमशेदपुनमे कथा-शिक्षक (भयिषि
यतिनकथा), वृमेन कविण पुसाकाथय आ हॉटेथ
वृषेवा-१७ वेथ वाथ-पेटगि।पुनाथिगि
संपांगसन: कांनपेनेट
कन्युनकेशनस, टसिको; टीएसथानडीएस, टसिको;
एथारुएडीए, स्टेट वेक अंथु
सुम्डीथो, जमशेदपुन; वशिगिन
व्यकता, हॉटेथ, संगठन आ व्यकतागिना कथा
संगनाहका

हॉवी: भयिषि यतिनकथा, उगति कथा, संगीत आ
शावस-शा।



श्वेता हा

भयिषि यतिनकथा, सम्पुनानि
संगिापुनमे गविसा



नागी हा



मोती कर्म

भयिषि यतिनकथा



नन्दिनी प्रसदशुनी



प्रानिका हा



डॉ गौरी यौधनी

पत्रिका नवन कनास, गान- उगाव
(वडकागाम), पो वेहवा नोड, जशि
दनगाम। समपना विजशिवा
(संयुक्त गालय
अमेरिका), शकिा- एनएससी
(नंगु वशिवा), उवा मथिवा
वशि, दनगाम; वीएससी वीश्व
अभवेडक वशि
मुजश्वनपुनसं, हंवा, मथिवा
यतिनकथा, कमपुसुटावण
यतिनकथा, उवति कथा उपव्यथि
अपथि गानिय कथा आ दसुकागी
पुनाशिगानिक
पुनसुका १८८८ मे; संसुका
गानि गाल वतुप
पुनाशिगानि १८८८ मे सहवागी।



पुनीता ठिकुन

गाम- जगेशि, गाय
गानगाम, पुनाशि। मैथिवा व
साहित्यमे "गोगु ह आ श्व यति
कथा २००८", "मैथिवा यतिनकथा
२००८" आ "मथिवाक ठिकेदना
२०१०", वशिवापकि पुनष पुनीकथा
(वाव साहित्य) २०१४ पुनाशि।



वेलती मशि



पुनयिवदा गाना ह

मैथिवा नगमंथ



अनुपमा ह

दुनासपेनेसी इटनवेसव, गान।



अगामिका गान



डॉ अचना

मैथिवा नगमंथ



वशिवा मवथकि



आवा ह



शागतिठकषमी यौथनी

गान गीवविदुप, जशि सुपे
वशिवा आ गानेद मशि



शुभम जैना



डॉ यतिनय्या



डॉ कृष्णा
भामिकांग भस्मि

महाविद्यालय, सहनसा मे कायुधन
पुस्तकालयाध्यक्ष स्त्री श्यामानन्द
हाक पोस्ट सुपुत्री, आओन ग्नाम
महर्षि (पुनर्वास आनापट्टी), णिषि
सहनसा गविासी आ दडिषी सूकू
ऑष्ठ इकागोनकिंस सँ गुड
अनुसंधक आ समाजशास्त्री स्त्री
अकृष्य कुमान योधनोक अन्धोगी
छथी पुनामीशास्त्र सँ
सुगाकोग्नाम रहेगी
शिक्षाशास्त्रक सुगाक
शिक्षान्धे आ एकटा
समाजशास्त्री सँ सागयिक यधे
आम णिवनक सामाजिक वधिय-
वैसु आ प्यास कऽ महिषिण्ध
सामाजिक समस्य आ पुनघटनामे
हगिक वसिष अन्धियाँ सुवशाविका

पतिा डॉ शवि कुमान हा, गाम
गयी, सासुन- गणहना। मेडकि
शिक्षा णे णे हॉस्पिटल ग्नाग
हॉस्पिटलसे सम्पन्न कय स्त्री-
गोग वसिषण्ध मुम्बईसे १९८०-८२
मे पुनकाशति हेरवध मैथथि
पुनिका "वदिह"क पतिा डॉ
भामिकांग भस्मि (गनिमाना-
मैथथि अँधिम- आउ पतिा हम
गगनी) संग सम्पादना

(य)२०००- २०२३ वदिहः पुनथम मैथथि पाक्षिक ई-पुनिका (सगिये २०००) इषम २२२९-५४७३ वरवएअ (सगिये २००४)
सम्पादकः गणगुन गकुना एदिगिनः घाणगना थहाकुन इग नेसपयगोड मागेगिधसे -पुवधिसिह गि वदिहा, गहे एदिगिन, वदिहा
हेधस गहे गिहण गो यगेगे गहेव लयहविस गहेमे-वासेदव लयहविस, गिहण गो गनागसधेगे गनागसधेगिगो गहेसे
लयहविस गद यगेगे गनागसधेगे गनागसधेगिगोदव-लयहविस; गद गहे गिहण गो -पुवधिसिह पुनगिन-पुवधिसिह ।ध गहेसे
लयहविस लयगाकान् संग्रहकगना अपग भौधिक आ अपुनकाशति लयगा संग्रह (संपूनाम उगनदधतिव लयगाकान्
संग्रहकगना मधु) दितिगिधसगाडवदिहवाभाधियेमे कँ मेध अटैयमेसुटक नूपमँ पग सकैण छथि, संगमे ओ अपग संक्षपिण
पुनिय आ अपग सुकैण कए गेध अँधे सेहे पधवथिा एगऽ पुनकाशति लयगा संग्रह सगक कंपीगसुट लयगाकान्
संग्रहकगनाक धमे छग्हि आ णगऽ लयगाकान् संग्रहकगनाक गाम वै अछि गगऽ ई संपादकाधेग अछिा सम्पादकः वदिह ई-
पुनकाशति लयगाक वेव-आनकाइव् थिम-आधानति वेव-आनकाइवक गनिभासक अचकान, ऐ सग आनकाइवक अगुवाए आ

उपियेनाम आ नकरो वेव-आन्काइवक गनिमासक अर्थिकान; आ ऐ सग आन्काइवक ई-पुनकाशन पुनटि-पुनकाशनक अर्थिकान नयैत छथी ऐ सग छेठ कोनो न्ापुठ्यो पानसिनमकिक पुनवचान बै छै, से न्ापुठ्यो पानसिनमकिक इच्छुक नयनाकान संग्रहकनाना वदिहसँ बै जुडथु वदिह ई पानकिक मासमे दू टा अंक निकसैत अछी जे मासक ०१ आ १५ तथिके वदिहियोगि पन ई पुनकाशति कएत जाइत अछी थहे योगेगतस नद दियुभेगतसे -पुवठिसिहद वय वदिह (सगिये २०००) इषषाम २२२८-५४७३ वरधएहअ (सगिये २००४) जे पेनडियाठठय वेगिग यहेयकेद डो। ययेससविठितिय सिसेसु श्रैपठैठिह दिसाविठितिसि सहुठद गोन हवे दडिडयुठनय। ययेससगिग नहेसे योगेगतस दियुभेगतस

(य) २०००-२०२३ सन्वायकान सुनकषति। वदिहमे पुनकाशति सगटा नयना आ आन्काइवक सन्वायकान नयनाकान आ संग्रहकनानाक ठामे छगही गठसकिक गाछ जे सग २००० सँ याहसटीजपन छठ हानपुनौगोयतिसियोम्वहाठसानिक गायहहहाम, हानपुनौगोयतिसियोम्वगाजोहनदना आदि ठिकपन आ अयनो ५ जुठइ २००४ क पोसुट हानपुगाजोहनदनाहकुनवठोगासपोनयोम्व००४०७वहाठसानिक-गायहहहाम (कछु दनि छेठ हानपुवदिहियोम्व००४०७वहाठसानिक-गायहहहाम ठिकपन, सनोतौयवायक मायहगोड हानपसुवैवालयहवैनगोव्वदिह २५८ यापुनै(स) डनोम २००४ नो २०१६- हानपुवदिहियोम्व गठसकिक गाछ-पुनथम मैथिली वठंग मैथिली वठंगक एगोठग) केन नूपमे इन्टनेटपन मैथिलिक पुनायोगन उपस्थतिक नूपमे वदिहयमान अछी ई मैथिलिक पहठे इन्टनेट पनकि थकि नकन गाम वादमे १ जगवनी २००८ सँ 'वदिह' पडठैइन्टनेटपन मैथिलिक पुनथम उपस्थतिक याना वदिह- पुनथम मैथिली पाकषिक ई पनकि यन पुहुँयठ अछीजे हानपुनौवदिहियोगि पन ई पुनकाशति हेसत अछी आव 'गठसकिक गाछ' जाठवृान 'वदिह' ई-पानकिक पुनवकानाक संग मैथिली भाषाक जाठवृानक एगोठगक नूपमे पुनयुक्ता गऽ नहठ अछी वदिह ई-पानकि इषषाम २२२८-५४७३ वरधएहअ

